प्रकाशक—
श्री मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव
ज्ञानमण्डल, काशी।

मुद्रक—
माधव विष्णु पराड़कर,
ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशी। ४६२१-८८

विषय-सूची ।

मानचित्र

ॐ

प्रस्तावना

विविध देशोंमें नये युगोंका आरम्भ।

ऐसा देख पडता है कि जब किसी देशमें पुराने युगके अन्त और नये युग, नयी सभ्यता, नयी जाति, और उसके जीवन-निर्वाहके नये प्रकार, के जन्मका समय आता है, तब कोई बड़ी देशव्यापिनी ऐतिहासिक घटना होती है, कोई महायुद्ध होता है, कोई नया नगर बसाया जाता है, मानव समुदायमें कोई नया भाव, नया क्षोभ, नयी सनसनी, नया उत्साह, पैदा होता है, कोई शूर वीर महापुरुष बड़े कर्म करता है, और साथ ही साथ कोई महाज्ञानी, महाकवि, उस ऐतिहासिक घटनाका वर्णन प्राय पद्यमय महाकाव्यमें करता है, और उस ग्रन्थमें अपने समयमें उपलभ्यमान इतिहासके साथ साथ मानवोपयोगी अन्य सब ज्ञानसे भर देता है। वह ग्रन्थ नयी सभ्यता और नये साहित्यका आधार हो जाता है, और उस जातिकी नस नसमें उस काव्यकी बातें भीन जाती हैं। पुरानी पुश्तकी संचित संपत्तिको पाकर नयी पुश्त नये भवन उद्यान बनाती है, नये भोग विलास करती है, नये सुख-दु ख सहती है। जिन जातियों, कौमों, के पास ऐसी प्राचीन पवित्र मूल पुस्तक है, उनको इस्लाम धर्ममें 'किताबी', किताबवाली, ग्रन्थवाली, अर्थात् पढी लिखी, सभ्य, समर्याद, शिष्ट, 'शायिस्ता', और आदरके योग्य, कहा है।

अज्ञेभ्यो ग्रन्थिनः श्रेष्ठा. ग्रन्थिभ्यो धारिणो वराः।
धारिभ्यो ज्ञानिन श्रेष्ठाः ज्ञानिभ्यो व्यवसायिनः॥ (मनु)

अपढ़से ग्रंथ रखनेवाले, उनसे स्मृतिमें धारण करनेवाले (हाफ़िज़), उनसे अर्थ जाननेवाले, उनसे ज्ञानके अनुसार कर्म करनेवाले, अच्छे।

नये साहित्योंका आरम्भ।

भारतवर्षके संस्कृत साहित्यका आरम्भ वेद, इतिहासात्मक रामायण और महाभारत, तथा कतिपय पुराणोंसे होता है। महर्षि वेदव्यासने, प्रायः ३००० वर्ष ईसासे पूर्व, पुरातन महर्षियोंके सूक्तोंका संग्रह और संस्करण करके चार ग्रंथोंमें संकलन किया, जो चार वेदोंके नामसे प्रसिद्ध हुए। वेदव्यासके समयसे पूर्व महर्षि वाल्मीकिने आदिकाव्य रामायणकी रचना की। वेदव्यासने महाभारत और पुराणकी रचना की। इन ग्रंथोंमें इन दोनों महर्षियोंने मानव इतिहास तथा जगत्‌की सृष्टि-स्थिति-लयका रूप दिखाया। यहूदी साहित्य, बाइबलके पूर्वार्धसे, जिसको 'तौरेत' भी कहते हैं, आरम्भ हुआ। इसमें महर्षि मूसा (प्रायः १५०० ई० पू०) से लेकर ऋषि मल्की।(प्रायः ४०० ई० पू०) तकके इतिहास और धर्म आदि विषयके लेखोंका संग्रह है। चीन देशके साहित्यका आरम्भ ऋषि लाओ-त्से (६५० ई० पू०) के लिखे उपनिषत्के ऐसे 'ताओ' नामके छोटे ग्रंथसे, तथा ऋषि कङ्फुत्से (६०० ई० पू०) के किये 'शे किङ्' नामके पुराण इतिहास तथा सूक्तों और कविताओंके संग्रहसे हुआ। बौद्ध पाली साहित्यका आरम्भ 'त्रिपिटक' नामक ग्रथसे हुआ, जिसमें महर्षि बुद्धदेव (६०० ई० पू०) के सूक्तों, दर्शन और धर्मके विषयके उपदेशों, और उनके पूर्व जन्मोंके 'जातक' नामके इतिहास-स्थानीय आख्यानों, का संग्रह, बुद्धदेवके शरीर छोड़नेके थोड़े ही वर्षोंके पीछे, उनके स्थापित किये हुए संघके स्थविरोंने किया। प्राकृत साहित्यका आरम्भ 'आगम' नामक ग्रंथसे हुआ, जिसमें महर्षि महावीर जिन (६०० ई० पू०) के उपदेशों, तथा आख्यानादिकों, का संग्रह, उनके शरीर-त्यागके पीछे भद्रबाहु (४०० ई० पू०) ने किया, जिसकी पुन संस्कृति और पूर्ति देवर्धिगणि (४०० ईसवी) ने किया। अरबी साहित्यका आरम्भ 'कुरान' और 'हदीस' नामक ग्रंथोंसे हुआ जिसमें महर्षि मुहम्मदके सूक्तों और उपदेशोंका संग्रह, उनके शरीर छोड़नेके थोड़े ही वर्षोंके पीछे, उनके

अनुयायी विद्वानोंने किया। जापान देशके साहित्यका आरम्भ 'खोजिकी' और 'निहोंगी' नामक ऐतिह्य-संग्रहोंसे (७०० ई०) हुआ। फ़ारसी साहित्यका आरम्भ महाभारतके ऐसे वृहदाकार 'शाहनामा' नामक पद्यात्मक इतिहासके ग्रंथसे हुआ, जिसको दानीश्वर (७०० ई०) के 'खुदाईनामा' नामक कुछ पुरानी भाषामें लिखे अपूर्ण और अपरिष्कृत कथा-संग्रहकी बुनियाद पर फ़िर्दौसी महाकवि (१००० ई०) ने लिखा। हिन्दीसाहित्यका आरम्भ पृथीराज रासौसे हुआ जिसको चांद महाकविने (१२०० ई०) रचा।

ऐसे ही ग्रीस देशके साहित्यका आरंभ (ईसासे पूर्व प्रायः १००० वर्ष) होमर नामक महाकविके बनाये 'इलियड' और 'ओडिसी' नामक महाकाव्योंसे, और हीसियड नामक कवि (ईसासे पूर्व ८०० वर्ष) के बनाये 'थियोगोनी' नामक काव्यसे (जिसमें सृष्टिका और देववंशका वर्णन है) होता है। इलियडकी कथा रामायणकी सी है। इलियम नगरके, जिसको ट्राय भी कहते हैं, राजाका एक बेटा, पैरिस, ग्रीस देशके एक नगर, मैसीना, के राजा आगामेम्ननके भाई मेनिलेयसकी पत्नी हेलेनको चुरा ले गया। इस कारण ग्रीस देशके कई राजाओंने मिलकर इलियमपर चढ़ाई की, उसका नाश किया, हेलेनको वापस लाये। यही कथा इलियडका विषय है।

ग्रीस देशका आदि कवि।

होमरका समय अनिश्चित है। कोई ईसासे ११०० वर्ष पूर्व, कोई ८०० पूर्व कहते हैं। इलियम या ट्रायके युद्धका समय प्रायः ईसासे पूर्व १२०० वर्ष कहा जाता है। एक प्राचीन वेदी सज्जनने तो यहाँतक विशेष निश्चय कर लिया है कि ठीक ११८४ ई० पूर्व बताते हैं। इलियम नगरके भग्नावशेष, ज़मीनके नीचे दबे हुए, पुरातत्त्वके गवेषकोंको मिले हैं। इसी समय, अर्थात् १२०० ई० पू० के आसपास, या इससे कुछ पहिले, ग्रीस देशके प्रधान नगर ऐथेन्समें थीसियस नामका प्रसिद्ध महापराक्रमी

वीर राजा हुआ। उसने ऐथेन्सका जीर्णोद्धार किया, उसको बहुत बढ़ाया, बसाया, और ग्रीसका श्रेष्ठ नगर बनाया, जैसे कृष्णने प्राचीन कुशस्थलीका जीर्णोद्धार करके द्वारकाके नये नामसे नगर बसाया। ग्रीस देशके राज्योंके इतिहासका आरंभ इसी समयसे स्थूलरूपसे माना जाता है।

रोम देशका साहित्य।

जैसे ग्रीस देशके उपलब्ध इतिहासका आरम्भ १२०० ई० पू० में ऐथेन्स नगरके थीसियस-कृत जीर्णोद्धारसे होता है, वैसे रोम-राज्यके इतिहासका आरम्भ रोम्यूलस कृत रोम नगरके शिलान्याससे होता है, जिसका समय ७५४ ई० पू० निश्चित है। रोमसाहित्यका आरम्भ यों तो प्राय. २५० ई० पू० लिखे हुए कई नाटकके ग्रन्थोंसे होता है, किन्तु इसका प्रसिद्ध महाकाव्य ईनियड है, जो प्रायः ५५ ई० पू० लिखा गया। यह काव्य इलियडके जोड़का माना जाता है, और इसमें रोमके निर्माता रोम्यूलसके आदि वंशकर्त्ता ईनियसके चरितका वर्णन है। यह ईनियस इलियम नगरके निवासी थे, और युद्धमें बड़ी वीरतासे लड़े थे, पर नगर-के पतनके पश्चात् वहाँसे भाग कर इटली देशमें आ बसे थे।

यूरोपके इतिहासपर इन दोनों साहित्योंका प्रभाव।

ग्रीस और रोमका इतिहास, उनके महापुरुषों और वीरों और राजोंके चरित, सुकृत भी और दुष्कृत भी, उनके ग्रन्थकारोंके ग्रन्थ, यूरोपमें बहुत ध्यान और आदरसे पढ़े पढ़ाये जाते हैं। यूरोपकी वर्तमान राज-नीतिक और बौद्ध उन्नतिमें यह अध्ययन एक विशेष हेतु है। यूरोपके देशोंमें जो कानून, व्यवहार धर्म, आजकाल प्रचलित है, उसके मूलतत्त्व प्राय. सब रोम राज्यकी व्यवहार-नीति और शासन-पद्धतिसे ही लिये गये हैं।

इन दोनों देशोंमें दर्शन, राजनीति, इतिहास, काव्य, नाटक आदिके उत्कृष्ट ग्रन्थकार हो गये हैं। पर कालके प्रवाहमें, परस्पर युद्धकी क्रोधाग्नि

में, राष्ट्रविप्लवोंमें, अधिकतर ग्रन्थ लुप्त हो गये। जो बचे हैं, उनमें प्लूटार्क कृत वीर-चरितका बहुत ऊँचा स्थान है।

इस ग्रन्थका अभिप्राय।

प्लूटार्कने पचास अलौकिक पुरुषोंके चरित लिखा। इनमें एक आर्टाज़र्क्सीज़ को छोड़ कर, सब या ग्रीक या रोमन हैं। ग्रन्थकर्त्ताका अभिप्राय यह था, जैसा उन्होंने स्वयं थीसियसके चरितके आरंभमें लिखा है, कि एक ग्रीसके विशिष्ट पुरुष और एक रोमके अलौकिक व्यक्तिके जीवनका वर्णन करके दोनोंकी तुलना, समीक्षा, सम्प्रधारण करें, कि इनमें क्या समानता क्या विशेषता, क्या गुण क्या दोष, थे। और उन्होंने प्रायः ऐसा ही किया भी है।

विशिष्ट व्यक्तियोंका और मानव-इतिहासका सम्बन्ध।

यह प्रसिद्ध ही है कि किसी भी देशका इतिहास मानो उस देशके विशिष्ट विशिष्ट व्यक्तियोंकी जीवनीकी धारा ही है। भीष्मने युधिष्ठिरसे कहा है,

कालो वा कारणं राज्ञः राजा वा कालकारणम्।
इति ते संशयो मा भूद् राजा कालस्य कारणम्॥

एक पक्ष कहता है कि काल ही राजाको, विशिष्ट पुरुषको, उत्पन्न करता है। दूसरा पक्ष कहता है कि विशिष्ट पुरुष ही, राजा ही, कालको बनाता है। एक पक्ष बड़ेसे बड़े कृती पुरुषको युगोत्पादित काल कृत ही मानता है। दूसरा उसको युग-प्रवर्त्तक काल-कारक जानता है। भीष्मका निर्णय है कि महापुरुष कालकारक युगप्रवर्त्तक है। मनुने भी ऐसा ही कहा है, और विस्तरसे।

कृतं त्रेतायुगं चैव द्वापरं कलिरेव च।
राज्ञो वृत्तानि सर्वाणि, राजा हि युगमुच्यते॥
कलिः प्रसुप्तो भवति, स जाग्रद् द्वापरं युगम्।
कर्मस्वभ्युद्यतस्त्रेता, विचरंस्तु कृतं युगम्॥

राजाका वृत्त अच्छा है तो उसका समय भय अच्छा हो जाता है। बुरा है तो बुरा। यदि राजा अपने भोग विलासमें लगा हुआ, राजाके सच्चे धर्म-कर्मकी ओरसे प्रमत्त, मानो सो रहा है, तो देशमें अन्याय दुराचार मनमाना फैलता है और चारो ओर कलियुग हो जाता है। यदि राजा जागता है, देखता है, पर न्याय नहीं करता, तो द्वापर, परस्पर भय संशय, कलह फैला रहता है, और द्वापरयुगका सा समय होता है। यदि वह अपने कर्त्तव्यमें उद्यत रहता है तो त्रेताका सा समय होता है। और जब वह चारो ओर घूम घूम कर न्यायका स्थापन करता रहता है तब सत्ययुगका राज्य होता है।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। (गीता)

अवतारवाद भी एक दृष्टिसे इसी पक्षको पुष्ट करता है। पर गभीर दृष्टिसे देखनेसे दोनों पक्ष अविरुद्ध जान पड़ते हैं। अवतारवादका सिद्धात जो पुराण शास्त्रोंमें कहा है, उसीसे यह विरोध परिहार हो जाता है। जब, धर्मकी ग्लानि और अधर्मका अभ्युत्थान, (कालके प्रवाहसे, युगके धर्मसे), हो जाता है, तब साधुओंके परित्राण और दुष्टोंके विनाश और धर्मके पुनः संस्थापन (और नये युगके प्रवर्त्तन) के लिये अपना आविष्कार (एक युगके अतमें, दूसरे युगके आदिमें) करता हूँ—ऐसा कृष्णने कहा है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥ (गीता)

देवी शक्तिने भी ऐसा ही कहा है—ऐसे ही जब जब दानवोंकी ओरसे तुम देवताओंको बाधा पहुँचेगी तब तब मैं अवतीर्ण होकर दुष्टोंका संक्षय करूँगी।

यदा यदा हि वो बाधा दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्॥ (सप्तशती)

महाभारतके आश्वमेधिक पर्व (अ० ५४) में और विस्तारसे कहा है,

> बह्वीः संसरमाणो वै योनीर्वर्त्तामि सत्तम ।
> धर्मसंरक्षणार्थाय धर्मसंस्थापनाय च ॥
> तैस्तै रूपैश्च वेषैश्च त्रिषु लोकेषु भार्गव ।
> अधर्मे वर्त्तमानानां सर्वेषामहमच्युतः ॥
> धर्मस्य सेतुं बध्नामि प्रजानां हितकाम्यया ।
> तास्ता योनीः प्रविश्याहं चलिते चलिते युगे ॥
> यदा त्वहं देवयोनौ वर्त्तामि भृगुनन्दन ।
> तदाहं देववत्सर्वमाचरामि न संशयः ॥
> यदा गंधर्वयोनौ वा वर्त्तामि भृगुनन्दन ।
> तदा गंधर्ववत्सर्वमाचरामि न संशयः ॥
> नागयोनौ यदा चैव तदा वर्त्तामि नागवत् ।
> यक्षराक्षसयोन्योस्तु यथावद्विचराम्यहम् ॥
> मानुष्ये वर्त्तमानेन कृपणं याचिता मया ।
> न च ते जातसंमोहा वचोऽगृह्णन्त मे हितम् ॥

भागवतमें यही अर्थ संक्षेपसे कहा है,

> सुरेष्वृषिष्वीश तथैव नृष्वपि
> तिर्यक्षु यादःस्वपि तेऽजनस्य ।
> जन्माऽसतां दुर्मदनिग्रहाय
> प्रभो विधातः सदनुग्रहाय च ॥ (१०-१४-२०)

अर्थात्, अधर्ममें डूबते हुए, विविध योनियोंके जीवोंको भवसागरके पार उतारनेके लिये, मैं उन उन योनियोंमें जन्म लेकर धर्मके सेतु युग युगमें बाँधता रहता हूँ। और जिस योनिमें जन्म लेता हूँ, देव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, मनुष्य, नाग, पशु, पक्षी, मत्स्य, आदि, उसीके अनुरूप वर्ताव करता हूँ। मनुष्य जन्म लेकर मैंने दुष्टोंसे बहुत प्रार्थना की कि

धर्मके मार्गपर चलो, पर उन्होंने मोहके वश नहीं माना, इस लिये उनका संहार करना पड़ा।

निष्कर्ष यह कि कालके प्रवाहसे, प्रकृतिके अंतर्गूढ़ काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर प्रभृति दुष्ट भावोंके विकास और अति वृद्धि होने पर, मानव संसारमें राजस तामस आसुर प्रकृतिके जीवोंकी बहुतायतसे सज्जनोंको जब पीड़ा अधिक होने लगती है, तब ईश्वरकी एक सात्विक-राजस कला, श्रेष्ठ प्रभावशाली जीवके रूपमें, उत्पन्न होकर दुष्ट-निग्रह शिष्ट-संग्रह धर्म-प्रग्रह करती है।

> स्वशांतरूपेष्वितरैः स्वरूपै-
> रभ्यर्द्यमानेष्वनुकम्पितात्मा ।
> परावरेशो महदंशयुक्तो
> ह्यजोऽपि जातो भगवान् यथाग्निः ॥

(भा० ३-२-१५)

हिरण्याक्ष-हिरण्यकशिपु, रावण-कुम्भकर्ण, शिशुपाल दंतवक्र, दुर्योधन-दुःशासन प्रभृति भी विष्णुके पार्षद, प्रतिनारायण, ही हैं। संसारके नाटकका तत्त्व ही द्वंद्वोंका युद्ध, सुख-दुःखकी, पुण्य-पापकी, रौद्र-करुणाकी तीव्रता और उनका विमर्द है।

> यद्यद्विभूतिमत्सत्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
> तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम् ॥ (गीता)

इतिहासका लक्ष्य।

मानव वंशके सम्पूर्ण, भूत, भवद्, भविष्य, इतिहासको करतलामलकवत् हथेलीपर रखनेवाली, सर्वसंग्राहिणी, सर्वव्यापिनी, सर्वव्याख्यायिनी पुराण दृष्टि, प्लूटार्क आदि पाश्चात्य इतिहास-लेखकोंके हृदयमें तो उदय नहीं हुई। पर प्लूटार्कका आशय और विश्वास भी, उतनी स्पष्टता और निश्चितिसे नहीं तो भी, यही निकलता है जो पुराणोंका है, अर्थात्

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥
धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते ॥ (म. भा.)
धर्म एव हतो हंति धर्मो रक्षति रक्षितः ॥
नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव ।
शनैरावर्त्तमानस्तु कर्त्तुर्मूलानि कृन्तति ॥
यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत्पुत्रेषु नप्तृषु ।
न त्वेव तु कृतोऽधर्मः कर्त्तुर्भवति निष्फलः ॥
अधर्मेणैधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति ।
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति ॥ (मनु)

महापुरुष और वीरपुरुषका भेद ।

महापुरुष और वीरपुरुषमें भेद है । महापुरुषमें धर्मवीरता, युद्धवीरता, ज्ञानप्रौढ़ता, सभी होना आवश्यक है । साधारण व्यवहारमें वीरपुरुष शब्दसे प्रायः केवल युद्धवीर समझा जाता है । प्लूटार्कके चरितनायकोंमें ठीक ठीक महापुरुष तो कम हैं, पर वीरपुरुष प्रायः सभी हैं । और सभी 'इतिहास बनानेवाले' हैं । उनके जीवनका सम्बन्ध अपने देश और समाजके सामूहिक जीवन और इतिहाससे घनिष्ट रहा । उनके चरितोंका प्रभाव समाजपर बहुत पड़ा । इस दृष्टिसे वे 'राजा कालस्य कारण' इस प्रवादके कुछ न कुछ पोषक समर्थक उदाहरण हुए ।

काव्यका उद्देश्य ।

उनके चरित पढ़नेसे, काव्यके जो उद्देश्य कहे हैं, उनमेंसे 'व्यवहार विदे', 'निर्वृतये', 'उपदेशयुजे', सिद्ध होते हैं । मनुष्योंके सामूहिक वैयक्तिक व्यवहारका ज्ञान होता है, स्वयं कैसे अवसरपर कैसा व्यवहार करना चाहिये इसका उपदेश मिलता है, और उत्तम रोचक मनोहर कहानी पढ़ने सुननेसे जो आनन्द मिलता है वह भी प्राप्त होता है ।

इस ग्रन्थके गुण ।

इन्हीं कारणोंसे इस ग्रन्थका पश्चिममें बहुत आदर है। एक राज्य, द्वि राज्य, गण राज्य, संघ-राज्य आदि शासनपद्धतियोंके, राजनीतिकी ऋजु और कुटिल बहुविध गतियोंके, साम, दान, दण्ड, भेदके प्रयोगोंके, संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रयके प्रकारोंके, उदाहरण, आँख खोल कर पढ़नेवालेको, इस ग्रन्थमें बहुत मिल सकते हैं। 'युधि-(ष्ठि) स्थिर'ताके साथ 'धर्म राज'ताके सुफल, और 'दुःशासन' के साथ 'दुर्योधन' के कुफल, भी दिखाये हैं। समग्र मानव इतिहास, मनुष्यकी सत् असत् वृत्तियों, पुण्यात्मक पापात्मक भावों, रागद्वेषों, के विलसितोंका ही एकमात्र वर्णन है। प्लूटार्कके ग्रन्थमें जिस भावका सबसे अधिक बार अभिधान होता है, वह ईर्ष्या मत्सरका दुष्ट भाव है। परस्परकी ईर्ष्यासे विशिष्ट प्रभावशाली व्यक्तियोंने अपने समाजको और एक दूसरेको कितनी हानि पहुँचाई है, इसका निरूपण इस ग्रंथमें बहुत मिलता है।

प्लूटार्ककी जीवनी ।

प्लूटार्कका जन्म ग्रीस देशके कीरोनीया नामक नगरमे, प्राय सं० ४५ ई० में हुआ। मृत्यु भी वहीं सं० १२० ई० में हुई। इनके जन्मसे पहिले ग्रीस देश पराजित होकर रोमराज्यके अधीन हो चुका था। इन्होंने ईजिप्ट (मिस्र) देशमें भ्रमण किया, और रोममें भी कुछ काल बसे और ग्रीक इतिहास और शास्त्रोंपर व्याख्यान देते रहे। रोम राज्यकी ओरसे कीरोनीयामें प्राड्विवाकके ऐसा कुछ अधिकार भी इनको मिला। ग्रीक ज्ञान विज्ञान काव्य साहित्यका रोमनगरमें कई शताब्दियोंसे बहुत आदर हो रहा था, और रोमकी लाटिन भाषाके आदिम नाटक प्रभृति ग्रंथ ग्रीक ग्रन्थों-के अनुकरणसे ही बने थे। प्लूटार्कने पचास उपलब्ध चरितों और तुलना-ध्यायोंके सिवाय और चरित भी और तुलनाध्याय भी लिखे जो अब लुप्त हैं। कुछ और निबन्ध भी सदाचारके उपदेशके विषयके इनके मिलते हैं।

इस अनुवादका जन्म।

अन्य विषयोंके ग्रन्थों और अन्य कार्योंमें मन लगा रहनेके कारण मैं इस ग्रन्थको पहले नहीं पढ़ पाया था। इधर वृद्धावस्थामें मैंने प्रायः पाँच वर्ष हुए आद्योपान्त पढ़ा। बहुत अच्छा जान पड़ा। तबसे मेरे मनमें था कि इसका अच्छा अनुवाद, सुपठ सुबोध रोचक, हिन्दीमें हो जाता तो एक प्रामाणिक बहुादृत बुद्धिवर्धक और आख्यायिकाके ऐसा मनोग्राही ग्रन्थ हिन्दीके सरस्वती-भाण्डारमें आ जाता।

सम्वत् १९८७ (सन् १९३० ई०) में जब महात्मा गांधीजीने नमक-सत्याग्रहका उपदेश देशको दिया, तब यद्यपि काशी-विद्यापीठका स्वरूपतः कांग्रेससे सम्बन्ध नहीं है, तौ भी देशभक्तिसे प्रेरित होकर अधिकांश अध्यापक और अध्येता उस निःशस्त्र आध्यात्मिक युद्धमें सम्मिलित होकर कारावासमें चले गये। काशी-विद्यापीठका कार्य प्रायः उस सम्वत्के अंत तक, जब कुछ दिनोंके लिये महात्मा गांधी और कांग्रेस महासभासे और अंग्रेजी गवर्मेण्टसे सुलह हो गई, बन्द रहा। जो अध्यापक कारावासके बाहर रहे उनको विविध विषयोंपर ग्रंथ लिखनेके लिये कहा गया। श्री मुकुन्दीलाल हिन्दीके विशेषज्ञ और अध्यापक थे। इनको प्लटार्कके ग्रंथके अनुवादका काम सौंपा गया।

अनुवादके बारह चरित नायक।

इन्होंने तथा इनके सहकारी श्री राजवल्लभसहायने पचासमेंसे बारह, छः ग्रीक और छः रोमन, नायकोंके चरितोंका अनुवाद किया है। इनके नाम और जन्म मरणके वर्ष (जो प्लटार्कने नहीं दिये, पर जिनका पता अन्य ग्रन्थोंसे चलता है) ये हैं।

थीसियस (ग्रीक)—	(प्रायः) १२००	ई० पू०
रोम्युलस (रोमन)—	(७७५–७१५)	,,
थेमिस्टाक्लीज़ (ग्रीक)—	(५१४–४४९)	,,

थैमिलस (रोमन)—	(४४७–३६५)	ई० पू०
ऐजेसिलेयस (ग्रीक)	(४४०–३६०)	,,
पाम्पी (रोमन)	(१०६–४८)	,,
सिकन्दर (ग्रीक)	(३५६–३२३)	,,
सीज़र (रोमन)	(१००–४४)	,,
डिमीट्रियस (ग्रीक)	(३३७–२८३)	,,
ऐण्टोनी (रोमन)	(८३–२७)	,,
डायन (ग्रीक)	(४०८–३५३)	,,
मार्कस ब्रूटस (रोमन)	(८५–४२)	,,

संवत् १९८८ के पौष मासमें सत्याग्रह आन्दोलनके फिर शुरू हो जानेके कारण विद्यापीठ अनिश्चित कालके लिए बन्द कर दिया गया। ऐसी अवस्थामें अनुवादका काम समाप्त हो जानेपर भी विद्यापीठ उसे प्रकाशित नहीं कर सका। निदान ज्ञानमण्डलने एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ समझकर इसे प्रकाशित करनेका भार अपने ऊपर ले लिया, अतः अब यह उसीकी ओरसे प्रकाशित किया जा रहा है।

मूलकी और अनुवादकी भाषा।

प्लुटार्ककी भाषा बहुत परिष्कृत है। अल्पतम शब्दोंमें अधिकतम अर्थ रक्खा है। दूसरी भाषामें उसका आशय पूर्णतः प्रकट करनेके लिये कुछ विस्तार करना पड़ा होगा। इस हेतुसे मूलका चतुर्थांश होने पर भी ग्रन्थ बहुत बड़ा, साढ़े छः सौ पृष्ठोंका, हो गया है। मैंने अनुवादक महाशयको एक ही परामर्श दिया, कि भाषा और शैली ऐसी लिखियेगा कि ग्रन्थ कहानीके ऐसा रोचक हो। कहाँ तक यह अभीष्ट पूरा हुआ, इसको पाठक सज्जन ही निर्णय कर सकते हैं। यदि उनको रुचा तो अवशिष्टका अनुवाद भी करने और छापनेका प्रबन्ध किया जायगा।

भगवान्दास।

ॐ

ग्रीस और रोमके महापुरुष।

१—थीसियस

थीसियस कई बातोंमें रोमुलससे मिलता-जुलता था। दोनोंकी उत्पत्ति ऐसे व्यक्तियोंसे हुई थी जो विवाह-सम्बन्धमें नहीं बँधे थे। इनके वंश आदिका भी निश्चित पता नहीं चलता। इन कारणोंसे साधारणतः लोग इन्हें देवताओंसे उत्पन्न मानते हैं। शारीरिक बलके ही अनुरूप इनमें मानसिक बल भी था। एकने रोमका निर्माण किया, दूसरेने अथेंज़को बसाया—और यही दोनों संसारके सर्वप्रसिद्ध दो बड़े नगर हैं। स्त्रियोंके अपहरणका दोष दोनोंपर आरोपित होता है; दोनों ही घरेलू आपत्तियों तथा पारस्परिक द्वेषके शिकार हुए हैं और जीवनके अन्तिम दिनोंमें दोनोंको ही अपने देशवासियोंका क्रोध-भाजन बनना पड़ा।

थीसियसकी वंशपरंपरा इरेक्थिअस तथा एटिकाके सर्वप्रथम निवासियोंसे आरंभ होती है। उसकी माता पेलॉप्सके वंशमें उत्पन्न हुई थी जो पेलॉपनेससके सभी नरेशोंसे शक्तिशाली माना जाता है। कारण यह बतलाया जाता है कि उसके पास विशाल सम्पत्ति तो थी ही, उसने अपनी लड़कियोंकी शादी प्रसिद्ध पुरुषोंके साथ करके अपने लड़कोंको भी आसपासके प्रधान राज्योंमें सर्वोच्च पदपर प्रतिष्ठित करा दिया था। उसका एक लड़का पीथिअस ट्रोज़ानियनोंके एक छोटे नगरका शासक था। यह अपने कालका सर्वप्रसिद्ध विद्वान् और बड़ा बुद्धिमान् मनुष्य समझा जाता था।

संतानकी कामनासे प्रेरित होकर ईजिअसने डेल्फीमें देववाणी करायी तो उसे अथेंज पहुँचनेके पूर्व किसी स्त्रीके साथ रहनेका निषेध किया गया। पर यह देववाणी गोलमटोल थी, इसमें कोई बात स्पष्ट रूपमें नहीं कही गयी। इस कारण वह इससे असन्तुष्ट होकर ट्रोजन चला गया। वहाँ उसने इस अस्पष्ट वाणीकी चर्चा पीथिअससे की। उसने इस अस्पष्टतासे लाभ उठाकर ईजिअसको समझा बुझाकर अपनी लड़की ईथ्राके साथ रहने पर राजी कर लिया। कुछ कालके अनन्तर जब ईजिअसको मालूम हुआ कि साथमें रहनेवाली लड़की पीथिअसकी कन्या है और इसके अतिरिक्त जब उसे उसके गर्भवती होनेका भी सन्देह हुआ तो वह एक कृपाण और एक जोड़ा पादत्राण एक पत्थरके नीचे, जिसमें इन चीजोंके ठीक ठीक अँट जाने लायक छिद्र था, ढँक कर चला गया। यह बात उसने इस स्त्रीके अलावा और किसीपर प्रगट नहीं की। जाते समय वह उसे यह आदेश दे गया कि यदि तुम्हें पुत्र उत्पन्न हो तो उसके इस पत्थरके उठाने योग्य हो जाने पर इन चिह्नोंके साथ उसे गुप्त रूपसे मेरे पास भेज देना और उसे यह समझा देना कि लोगोंकी आँख बचा कर यात्रा करे क्योंकि पेलसके पुत्रोंका, जो बार बार मेरे विरुद्ध उठ खड़े होते हैं और स्वयं पचास भाई तथा मेरे नि संतान होनेके कारण मुझसे घृणा करते हैं, मुझे विशेष भय है।

कुछ लोगोंका तो कहना है कि ईथ्राको जब पुत्र उत्पन्न हुआ तभी उसका नाम, पिता द्वारा पत्थरके नीचे चिह्न छिपाये जानेके कारण, थीसियस पड़ा, पर औरोंके मतसे अथेंजमें ईजिअस द्वारा पुत्र रूपमें स्वीकार किये जाने पर यह नाम पड़ा। थीसियसका लालन पालन पीथिअसकी अभिभावकतामें हुआ। उसने इसकी देख भाल तथा शिक्षाके निमित्त कॉनिडस नामक एक शिक्षक नियुक्त कर दिया था जिसके निमित्त आज भी अथेंजवाले थीसियस-जयन्ती मनानेके एक दिन पहले भेड़का बलिदान करते हैं। उस समयकी प्रथाके अनुसार युवा होनेपर प्रत्येक पुरुष डेल्फी

जाकर अपने सिरके प्रथम बाल देवताको चढ़ाता था। इस कार्यके निमित्त थीसियस भी वहाँ गया था और उसीके नामपर एक स्थान 'थीसिया' के नामसे अबतक प्रसिद्ध है। उसने अपने सिरके केवल आगेके बाल कटवाये थे, इस कारण इस प्रकार बाल कटवानेका नाम 'थीसियस' पड़ा। एबेंटी लोग पहले इसी प्रकारसे बाल बनवाते थे; कुछ लोगोंका अनुमान है कि बाल कटवानेका यह ढंग इन्होंने अरबों या मीसियावालों-की देखा-देखी अख्तियार किया था, पर यह ठीक नहीं मालूम होता। बात यह है कि ये तथा अन्य देशोंके लोग तलवार और भालेसे ही युद्ध करनेके आदी थे। पास पास खड़े होकर युद्ध करनेमें इन्हें इस बातका भय रहता था कि शत्रु कहीं बाल न पकड़ लें। यही कारण है कि सिकन्दरने भी अपने सेनानायकोंको मकदूनियावालोंकी डाढ़ी मुँड़वा देनेकी आज्ञा दी थी।

ईथ्राने कुछ कालतक थीसियसके पिताका नाम छिपाये रखा। पीथिअसने उसके सम्बन्धमें यह बात फैला दी कि उसका जन्म वरुणदेव (नेपच्यून) से हुआ है। कारण यह था कि ट्रोजनवाले वरुणदेवके बड़े भक्त थे, वे फसलके प्रथम फलोंको उसे ही अर्पित करते थे और उसीके सम्मानमें अपनी मुद्राओंपर त्रिशूलकी छाप भी रखते थे।

थीसियसके शारीरिक बल, साहस और प्रतिभा इत्यादिका विचार कर उसकी माता उसे पत्थरके पास ले गयी। उसने उसके पिताका नाम बतला दिया और उसके रखे हुए चिह्नोंको लेकर समुद्रमार्गसे ईजिअसके पास अथेंज़ जानेका आदेश किया। उसने पत्थरको आसानीसे उठाकर चिह्नोंको निकाल लिया पर माता तथा नानाका अनुरोध होते हुए भी अधिक निरापद समुद्री राहसे जाना स्वीकार न किया। उस समय अथेंज़ जानेका स्थल-मार्ग संकटोंसे पूर्ण था, मार्गमें सर्वत्र डाकू और हत्यारे भरे हुए थे। उस युगके लोगोंकी भुजाओंमें शक्ति, पैरोंमें फुर्ती और शरीरमें बल अधिक होता था। वे क्लान्तिका तो नाम ही नहीं जानते

थे, फिर भी प्रकृतिके इन उपहारोंका उपयोग मानव-समाजके कल्याणके निमित्त न होकर औद्धत्य, अमानुषिकता, निर्दयता और हाथमें आयी हुई चीज़ोंके साथ मनमानी करनेमें ही हुआ करता था। औरोंके प्रति सम्मान, न्याय, मनुष्यत्व आदिके भाव, जिनकी सब लोग प्रशंसा करते हैं, उनकी दृष्टिमें कमज़ोरी और कायरताके लक्षण थे। हरकुलीज़ने इन देशोंमें भ्रमण करते समय ऐसे नरपिशाचोंमेंसे कईका तो नाश किया पर कुछ उसकी नज़र बचा कर भाग निकले और कुछने रो कलप कर अपनी जान बचा ली। इसके अनन्तर वह स्वयं आपत्तियोंके जालमें फँस गया और लीडिया जाकर उसने हत्याओंके प्रायश्चित स्वरूप 'ओंफेल' का दासत्व स्वीकार कर लिया। उस समय लीडियामें अमन-चैनका राज्य था पर यूनान और उसके पार्श्ववर्ती देश ठगों और डाकुओंके क्रीड़ास्थल हो रहे थे क्योंकि अब कोई इनका दमन करनेवाला नहीं रह गया था। पीथिअसने प्रत्येक डाकूका ठीक ठीक ब्यौरा, डाकुओंकी शक्ति और नवागन्तुकोंके प्रति उनकी निर्दयता बतला कर समुद्रमार्गसे ही जानेका थीसियससे पुनः अनुरोध किया, पर वह ये बातें सुनकर ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। मालूम होता है, वह बहुत दिनोंसे हरकुलीज़की कीर्तिसे अनुप्राणित था। वह उसे बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखता था और उसके कार्योंका वर्णन विशेषकर ऐसे व्यक्तियोंके मुखसे सुनकर, जिन्होंने स्वयं उसे कार्य करते देखा था या उसकी बातें सुनी थीं, कभी तृप्त नहीं होता था। वह हरकुलीजके भावोंमें इतना रँग गया था कि रात्रिमें उसीके कार्योंका स्वप्न देखता और दिनके समय उसके ही अनुरूप कार्य करनेकी स्पर्द्धासे उत्तेजित होता था। इन दोनोंमें परस्पर रक्तसम्बन्ध भी था। इसीसे उसे यह बात बहुत खटकती थी कि हरकुलीज तो सभी स्थानोंमें बेखटके जा सके, स्थल और जलमार्गको दुष्टोंसे सुरक्षित रख सके और मैं साहस दिखलानेका मौका आनेपर भी अपने कार्यों द्वारा उच्च वंशका प्रमाण न देकर और साथमें चिन्हस्वरूप पादत्राण तथा तलवार होनेपर भी, उन्हें न प्रकट कर अपने प्रसिद्ध पिताके सिरपर कलंकका टीका लगाऊँ।

इन्हीं भावों और विचारोंसे प्रेरित होकर उसने अपनी यात्रा आरंभ कर दी। उसने यह पहले ही निश्चय कर लिया था कि मैं यों ही किसीको कोई क्षति न पहुँचाऊँगा, हाँ, यदि कोई मुझे नुक्सान पहुँचानेकी चेष्टा करेगा तो उसका प्रतिकार मैं अवश्य करूँगा। सर्व प्रथम एपिडॉरसके निकट पेरिफेटिजके साथ उसका मुकाबला हुआ। वह आयुधके रूपमें एक गदा अपने पास रखा करता था। थीसियसने द्वन्द्वयुद्धमें उसे मार गिराया और उसकी गदा ले ली। जिस प्रकार हरकुलीज अपने कन्धेपर व्याघ्रचर्म लिये चलता था, जो इस बातका परिचायक था कि उसने कितना बड़ा जन्तु मारा था, उसी प्रकार थीसियस भी उस गदाको, जो उससे पराभूत हो चुकी थी पर जो अब उसके हाथमें आनेपर अजेय हो गयी, शस्त्रके रूपमें अपने पास रखने लगा।

पेलॉपनेससके डमरूमध्यकी ओर बढ़ने पर उसने साइनिसको मारा। यह दो वृक्षोंकी डालियोंको झुका कर उनके बीच मुसाफिरको बाँध देता था और तब डालियोंको छोड़ देता था जिससे मुसाफिरकी देह बीचसे फट कर दो हिस्सोंमें बँट जाती थी। इसी तरीकेसे न मालूम इसने कितने मनुष्योंकी हत्या की थी। थीसियसने वध करनेका यह ढंग नहीं सीखा था, फिर भी उसने इसको इसी तरीकेसे मार डाला। इसके मारे जाने पर इसकी परम सुन्दरी कन्या पेरिगुनी भाग कर शतमूल (एस्पैरेगस*) की झाड़ियोंमें जा छिपी। वह उन पौधोंसे भोले भाले बच्चोंकी तरह शरण देनेके लिए प्रार्थना कर रही थी और यह प्रतिज्ञा भी कर रही थी कि यदि मैं बच गयी तो तुम्हें कभी नहीं काटूँगी और न कभी जलाऊँगी। जब थीसियसने उसे सम्बोधित कर उसके साथ सम्मानपूर्वक वर्ताव करनेकी प्रतिज्ञा की तो वह उसके पास चली आयी। थीसियससे मेलानियस नामक एक पुत्र भी उसे उत्पन्न हुआ। कुछ कालके अनन्तर यूरिटसके पुत्र डायोनियसके साथ उसका विवाह हो गया। कहा जाता है

* Asparagus

कि स्वयं थीसियसने यह विवाह कराया था। मेलानियसका पुत्र आयोक्सस आर्निटस्के साथ केरिया चला गया। उसके वंशमें यह प्रथा चली आती है कि स्त्री या पुरुष कभी उक्त पौधेको नहीं जलाते बल्कि उसकी पूजा और सम्मान करते हैं।

क्रोमियोनमें फीआ नामक एक भयानक जंगली शूकरी थी, जिसकी उपेक्षा किसी प्रकार नहीं की जा सकती थी। थीसियसने अपना सीधा मार्ग छोड़कर और कुछ दूर जाकर उसका वध किया जिसमें यह न समझा जाय कि वह निरी आवश्यकतासे ही प्रेरित होकर महत्वपूर्ण कार्योंका सम्पादन करता है। उसका यह भी ख्याल था कि वीर पुरुषोंको दुष्टों और आततायियोंका दमन तो उनके द्वारा आक्रान्त होनेपर, किन्तु जंगली जानवरोंको उन्हें स्वयं खोजकर करना चाहिए। कुछ लोगोंका मत है कि क्रोमियोनमें फीआ नामकी एक लालची और निष्ठुर लुटेरिन थी। उसके नीच कर्मोंके कारण लोग उसे शूकरी कहा करते थे, अस्तु। मेगाराके पास साइरोन नामक एक प्रसिद्ध डाकूको भी थीसियसने, चट्टानसे लुढ़काकर मार डाला। इसके सम्बन्धमें कहा जाता है कि शायद ही कोई मुसाफिर इससे बच पाता। घमंड और मस्तीसे प्रेरित होकर यह अपने पैर मुसाफिरोंके सामने फैला देता था और उन्हें धोनेकी आज्ञा देता था। जब वे पैर धोने लगते तो वह उन्हें ठोकर मारकर चट्टानसे समुद्रमें गिरा देता था। मेगारावालोंका कथन है कि साइरोन डाकू या उपद्रवी न था, बल्कि इस प्रकारके लोगोंका वह दमन करता था और सज्जनों तथा न्यायी मनुष्योंके साथ उसकी मैत्री और रिश्तेदारी थी। यदि वह डाकू होता तो यह कभी संभव न था कि ईआकस और सार्ईक्रिअस जैसे महान् पुरुष उसके साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करते। उन लोगोंके कथनानुसार थीसियसने साइरोनको इस यात्रामें न मार कर मेगारावालोंका नगर ईल्यूसिस लेनेके बाद मारा था। इल्यूसिसमें उसने सर्सियानको मल्लयुद्धमें मारा। कुछ और आगे बढ़ने पर, इरीनिअसमें उसने डेमास्टीज-

का वध किया। यह आगन्तुकोंको अपनी चारपाईके आकारमें बलपूर्वक बढ़ा कर मार डालता था। थीसियसने इसके वधमें भी इसी तरीकेसे काम लिया। थीसियसने यह कार्य हरकुलीजके अनुकरणमें ही किया। हरकुलीज़ अपने आक्रमणकारियोंका बदला उन्हींके तरीकेसे चुकाता था। थीसियसने फिर एंटियसको मल्लयुद्धमें, साइक्नसको द्वन्द्व युद्धमें और टरमेरसको, जो मुसाफिरोंको अपने सिरसे सिर टकरा कर मार डालता था, सिर चकनाचूर कर मार डाला। इस प्रकार थीसियस दुष्टोंको उन्हींके तरीकेसे दण्ड देनेके कार्यमें अग्रसर हुआ।

कुछ और आगे बढ़ने पर वह सेफिसस नदीके पास पहुँच गया। वहाँ फाइटेलिडी जातिके कुछ लोगोंने भेंट होनेपर उसे नमस्कार किया। वहाँ उसने शुद्धियज्ञ, जो उस समय प्रचलित था, करनेकी इच्छा प्रकट की। उन लोगोंने सब कार्योंका विधिपूर्वक सम्पादन कराया और देवताओंकी भेंट चढ़ानेके अनन्तर आतिथ्य-सत्कारके निमित्त उसे अपने घरपर निमंत्रित किया। इस प्रकारका प्रेमपूर्ण व्यवहार इस यात्रामें उसके साथ अभीतक कहीं नहीं किया गया था।

आठवीं जुलाईको वह एथेंज़ पहुँचा। इस समय राज्यमें बड़ी गड़बड़ मची हुई थी, दलबन्दी और फूटका बाज़ार गर्म था। ईजिअस और उसका परिवार भी इसी अव्यवस्थाका शिकार हो रहा था। मीडिया नामकी एक महिला, जो कारिन्थसे भागकर आयी हुई थी, अपनी युक्तिसे ईजिअसको सन्तान उत्पन्न करने योग्य बनानेकी प्रतिज्ञा कर उसके साथ रहने लगी थी। थीसियसको वह पहलेसे जानती थी पर ईजिअसको उसकी कुछ भी जानकारी न थी। ईजिअस एक तो स्वयं बूढ़ा था, दूसरे नगरकी दलबन्दी और फूटके कारण, उसका हृदय द्वेष, सन्देह और भयका क्रीड़ास्थल हो रहा था; इस कारण मीडियाने भोजनमें विष मिलाकर थीसियसको मार डालनेके लिए उसे बड़ी आसानीसे राजी कर लिया। भोजमें शामिल होने पर थीसियसने अपनेको स्वयं प्रकट करना उचित न समझा; वह कोई

ऐसा अवसर प्रस्तुत करना चाहता था जिसमें उसका पिता स्वयं ही उसे पहचान ले। इस विचारसे उसने मेजपर रखे हुए मांसको काटनेके बहाने अपनी तलवार निकाल ली। ईजिअसको अपनी तलवार पहचाननेमें देर न लगी। उसने ज़हरका प्याला नीचे गिरा कर फौरन अपने पुत्रको गले लगा लिया। उसने नागरिकोंको एकत्र कर उनके सम्मुख थीसियसको पुत्र रूपमें ग्रहण किया; नागरिकोंने भी उसकी महत्ता और बहादुरीके कारण बड़े आनन्दके साथ उसका स्वागत किया।

पेलसके लड़के इस आशासे शान्त थे कि ईजिअसके निस्सन्तान मरनेपर राज्याधिकार हमें ही प्राप्त होगा। पर थीसियसको उत्तराधिकारी रूपमें स्वीकार होते देख कर वे आपेसे बाहर हो गये। उन्होंने ईजिअसके विरुद्ध लड़ाई घोषित कर अपनेको दो हिस्सोंमें बाँट लिया। एक हिस्सा तो, जिसमें स्वयं पेलस भी था, नगरकी ओर बढ़ा और दूसरा हिस्सा शत्रुपर दोनों ओरसे एकाएक टूट पड़नेके विचारसे एक ग्राममें घात लगाये छिपा रहा। दूसरे दलके साथ एगनस जातिका लियो नामक एक नकीब था। उसने विश्वासघात कर थीसियसपर यह सब भेद प्रकट कर दिया। थीसियसने आक्रमण कर इन लोगोंको मार गिराया। इसका समाचार मिलते ही दूसरा हिस्सा भी भाग खड़ा हुआ। इसी समयसे पेलेन जातिके (पेलसके वंशके) लोग एगनस जातिके साथ विवाह या और किसी प्रकारका सम्बन्ध नहीं करते और 'लियो' शब्दसे घृणा होनेके कारण नकीबोंको किसी भी घोषणामें इस शब्दका उच्चारण नहीं करने देते, यद्यपि देशके अन्य सब भागोंमें इसका उच्चारण बराबर किया जाता है।

थीसियसने वीरताका कोई न कोई कार्य करते रहने और लोकप्रियता सम्पादित करनेके विचारसे मैराथनके साँडसे, जो टेट्रापालिसके लोगोंको बहुत हानि पहुँचाया करता था, लड़नेके लिए प्रस्थान किया। वह इसे परास्त कर जीते ही शहरसे होकर ले गया और फिर डेल्फीके अपोलोदेवकी वेदीपर बलिदान कर दिया। हेकेल द्वारा इस यात्रामें थीसियसके

स्वागतकी कथा भी बिलकुल निराधार नहीं मालूम होती, क्योंकि पूर्वकालमें आसपासके स्थानोंके लोग एक दिन एकत्र होकर देवराज जुपिटर हिकेलिअसको पूजा चढ़ाते और हीक्लेके प्रति सम्मान प्रकट करते थे। कहते हैं कि इसने थीसियसकी विजयके निमित्त मनौती मानी थी। पर उसके विजय-लाभ कर लौटनेके पूर्व ही इसकी मृत्यु हो चुकी थी। इसलिए थीसियसने ही कृतज्ञता स्वरूप मनौती पूरी की और लोगोंको उसके प्रति सम्मान प्रकट करनेका आदेश दिया।

कुछ ही दिनोंके बाद क्रीटके दूत तीसरी बार कर वसूल करनेके लिए आ पहुँचे। करका कारण यह बतलाया जाता है कि एटिकामें जब कुछ लोगोंने छल करके एड्रोजिअसको मार डाला, तब उसके पिता माइनोजने अथेन वालोंके साथ लगातार युद्ध कर उनके नाकों दम कर दिया। देवताओंने भी क्रुद्ध होकर उनका देश वीरान कर दिया, महामारी और दुर्भिक्षके कारण लोग और भी त्रस्त थे। उनकी नदियाँ भी इस समय सूख चली थीं। तब देववाणी द्वारा आदेश हुआ कि यदि तुम माइनोजको सन्तुष्ट कर सको तो तुम्हारी सब तकलीफें दूर हो जायँ। निदान प्रति नवें वर्ष ७ पुरुष और ७ कुमारियाँ कर स्वरूप भेजनेकी शर्तपर दोनों राष्ट्रोंमें सन्धि हुई। कथाओंमें यह भी वर्णित है कि ये लोग नृवृषभ* द्वारा या भूलभूलैयाँमें, जिसमेंसे निकलनेका कोई रास्ता नहीं मिलता था, डालकर मार डाले जाते थे (यह नृवृषभ भी एक विचित्र ही जीव बतलाया जाता है। कहते हैं कि इसका आधा शरीर मनुष्यका और आधा वृषभका था, इसके स्वभावकी भी यही हालत थी)। क्रीट निवासी इसे सत्य नहीं मानते। उनके कथनानुसार यह भूलभुलैयाँ एक वन्दीगृह थी जिसमेंसे कैदियोंके निकल भागनेकी गुंजाइश न थी। माइनोजने एड्रोजिअसके स्मारकके तौरपर कुछ खेल कायम किये थे, इनमें जो विजयी होता था उसे ये ही नवयुवक, जो भूलभुलैयाँमें क़ैद रहते थे, पारितोषिक स्वरूप दिये जाते थे। इन खेलोंमें सर्वप्रथम आनेके

* Minotaur

कारण प्रायः टॉरसको ही पारितोषिक मिलता था। यह बड़ा ही घमंडी था, दया तो इसे छू भी नहीं गयी थी। अरस्तूके कथनसे भी यह मालूम होता है कि अथेंसके युवकोंका वध नहीं किया जाता था, वे अपना शेष जीवन गुलामीमें व्यतीत करते थे।

जब तीसरी किस्तकी बारी आयी और नवयुवकोंके पिता चिट्ठी डाल-कर अपने पुत्रोंको भेजनेके लिए बाध्य हुए, उस समय ईजिअसके विरुद्ध शोकसन्तप्त जनतामें असन्तोषकी लहर फैल गयी। उसके सम्बन्धमें लोग यह भी कहने लगे कि जिसके कारण यह दंड सबपर पड़ा है वह स्वयं इससे बिल्कुल मुक्त है और जारजको लाकर उत्तराधिकारी भी बनाता है पर हमारे न्याय्य पुत्रोंकी हानिपर कुछ भी ध्यान नहीं देता। थीसियसपर इस बातका गहरा असर पड़ा। उसने यह बात अनसुनी न कर चुने जाने वाले नवयुवकोंमें अपना नाम बिना चिट्ठी डाले ही पेश कर दिया। थीसि-यसके इस कार्यकी सभी लोग प्रशंसा करने लगे। ईजिअसने इस सम्बन्ध-में उससे बहुत अनुनय-विनय की पर इसका कुछ असर होते न देख शेष नवयुवकोंका चुनाव करनेके लिए चिट्ठी डाली। कुछ लोगोंका कथन है कि अथेंसवाले चुनाव नहीं करते थे; मायनोज स्वयं आकर उनका चुनाव कर लिया करता था। इस बार उसने सर्वप्रथम थीसियसको ही चुना। उनमें यह शर्त पहलेसे ही तै थी कि अथेंसवाले अपने ही पोतपर नवयुवकोंको भेजा करेंगे, उनके पास किसी तरहका हथियार न होगा और नृवृषभके मार डाले जाने पर कर लेना बन्द कर दिया जायगा।

कर-प्रदानके गत दो अवसरोंपर नवयुवकोंके सकुशल वापस आनेकी कोई आशा न होनेके कारण अथेंसवालोंने पोतके साथ मृत्यु-सूचक काला पाल दिया था। इस बार थीसियसने अपने पिताको अपनी शक्तिका विश्वास दिला कर पोतपर एक उजला पाल भी रखवाया जिसका उपयोग थीसियसके कुशलपूर्वक लौटने पर किया जाता। चुने हुए शेष नवयुवकों-को लेकर थीसियसने अपोलो देवकी पूजा की और छठी अप्रैलको पोतपर

आरूढ़ होगया। आज भी अथेंजवाले उक्त तिथिपर अपोलो देवकी पूजाके निमित्त अपनी कुमारियोंको भेजते हैं। यह भी कहा जाता है कि डेल्फीकी देववाणी (आरेकिल) ने थीसियसको रतिदेवी (वीनस) को अपना मार्ग-दर्शक बनानेके निमित्त आवाहन करनेका आदेश दिया था। उक्त देवीके नामपर जब थीसियस समुद्र-तटपर एक बकरीका बलिदान कर रहा था, तो वह बकरी एकाएक बकरेके रूपमें परिवर्तित होगयी।

कई इतिहासकारों और कवियोंका कथन है कि क्रीट पहुंचनेपर एरि-एड्नी थीसियसपर आसक्त होगयी। उसने थीसियसको तागेके प्रयोगसे भूलभुलैयोंके चक्करसे निकलनेकी तरकीब भी बतला दी। वह वृषभको मार कर उक्त रमणी और अथेंजके नवयुवक बन्दियोंके साथ वहाँसे वापस आया। फेरीसाइडीज़का कहना है कि उसने भागते समय क्रीटके सभी पोतोंके पेंदोंमें छेद कर दिया था जिसमें वे उसका पीछा न कर सकें। डेमॉनका कथन है कि उसने माइनोजके सेनापति टारसको, अथेंजके लिए प्रस्थान करते समय, बन्दरके मुहानेके पास ही सामुद्रिक युद्धमें मार डाला। फिलोकोरसके अनुसार यह कथा इस प्रकार है—माइनोजके कायम किये हुए खेलोंमें यह आशा की जाती थी कि पहलेकी तरह टारस ही पारि-तोषिक प्राप्त करेगा। उसके इस सम्मानसे लोग बहुत जलते थे; उसके आचरण और व्यवहारोंके कारण उसका पदाधिकार भी घृणाका विषय हो गया था। पसिफीके साथ अत्यन्त घनिष्ठताका भी उसपर दोषारोप किया जाता था। इन्हीं कारणोंसे जब थीसियसने द्वन्द्वयुद्धमें शामिल होनेकी इच्छा प्रकट की तो माइनोजने उसे फौरन स्वीकृति दे दी। उन खेलोंमें स्त्रियाँ भी दर्शक रूपमें शामिल होती थीं। एरिएड्नी भी वहाँ उपस्थित थी। वह थीसियसका वीरोचित सौन्दर्य, शक्ति और युद्धकौशल देखकर उसपर मुग्ध होगयी। द्वन्द्वयुद्धमें थीसियसने सभी प्रतियोद्धाओं-का मान-मर्दन कर दिया। माइनोज भी उसपर, विशेष कर टारसके पराभूत होनेसे, बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बन्दियोंको तो लौटा ही दिया,

अधेंज़को भी परमुक्त कर दिया । हाइडेमस-लिखित कथा और भी विचित्र है । उसका कथन है कि यूनानसे साथ, एक शर्त थी जिसके अनुसार कोई पोत पाँच आरोहियोंसे अधिक लेकर किसी स्थानसे नहीं जा सकता था । सिर्फ जेसनके लिए यह प्रतिबन्ध न था क्योंकि उसे आरगो नामक वृहत् पोतका अध्यक्ष बनाकर समुद्री डाकुओंके दमनका कार्य सौंपा गया था । एक बार डीडेल्स नामक एक व्यक्ति क्रीटसे भागकर अथेंज़ चला गया । माइनोजने अपना युद्धपोत लेकर उसका पीछा किया पर तूफानसे उसका पोत बहकर सिसिली चला गया और वहीं उसका देहावसान भी होगया । उसकी मृत्युके बाद उसके पुत्र ड्यूकेलियनने, जो अथेंजवालोंसे लड़ना चाहता था, डीडेलसको वापस माँगा और इनकार करनेकी हालतमें उसके पिता द्वारा प्राप्त सभी प्रतिभू लोगोंको मार डालनेकी धमकी दी । इस क्रोधभरे संवादका उत्तर थीसियसने नम्रतापूर्वक यह दिया कि डीडेल्सके साथ हमारा निकटका रक्त-सम्बन्ध है, हम उसे कैसे समर्पित कर सकते हैं ? थीसियस तब तक चुपके चुपके एक जहाजी बेड़ा तैयार करता रहा—इसका कुछ अंश तो एक ऐसे ग्राममें तैयार कराया गया जहाँ बहुत कम लोग जाते-आते थे और शेष अंश उसके नाना पीथियसने तैयार कराया । बेड़ा तैयार हो जाने पर उसने डीडेल्स और कुछ क्रीटसे निर्वासित लोगोंको मार्गदर्शकके तौरपर अपने साथ ले लिया । क्रीट वालोंको इसके वहाँ पहुँचनेका कुछ भी पता न था । वे तो पोतोंको अपने ही पोत और आरोहियोंको मित्र समझ रहे थे । बन्दरगाहपर अधिकार कर वह नासस इतनी शीघ्रतासे पहुँच गया कि किसीको मालूम भी न हुआ । भूलभुलैयोंके द्वारपर युद्ध हुआ जिसमें ड्यूकेलियन अपने रक्षकोंके साथ खेत रहा । अब राज्याधिकार एरिएड्नीके हाथमें आगया । उसने थीसियससे सन्धि कर ली ।

एरिएड्नीके सम्बन्धमें कई कथाएँ प्रचलित हैं जो परस्पर मेल नहीं खातीं । कोई कहता है कि थीसियससे परित्यक्त होने पर उसने फाँसी

लगाकर आत्महत्या कर ली, कोई कहता है कि परपुरुषपर आसक्त हो जानेके कारण थीसियसने उसका परित्याग कर दिया। एक दूसरी कथा जो सबसे अधिक प्रचलित है, इस प्रकार है—एक बार थीसियसका जहाज तूफानसे बहकर साइप्रस चला गया। गर्भवती एरिएड्नी भी उसके साथ ही थी। समुद्रके विक्षुब्ध होनेके कारण वह एरिएड्नीको तटपर उतार कर जहाजको सँभालने लगा। दैवयोगसे उस समय तूफानका एक झोंका आया और जहाजको पुन बहा लेगया। वहाँकी औरतोंने एरिएड्नी-के प्रति बड़ी दयालुता दिखलायी और आश्वासन देकर उसका दिल हलका करनेका प्रयत्न किया। थीसियसकी लिखी हुई कहकर जाली चिट्ठियाँ भी उसे दी गयीं। प्रसव पीड़ा आरंभ होनेपर शीघ्रतापूर्वक उन्होंने सब चीजोंका प्रबन्ध कर दिया, पर प्रसवके पूर्व ही उसका देहान्त हो गया। इसके कुछ ही काल बाद थीसियस वहाँ वापस आया। स्त्रीकी मृत्युसे उसे बहुत शोक हुआ। जानेके पूर्व उसने वहाँके निवासियोंको एरिएड्नी-की पूजाके लिए काफी द्रव्य दे दिया और उसकी दो प्रतिमाएँ—एक चाँदीकी और दूसरी पीतलकी बनवा दीं। सितम्बरकी दूसरी तारीखको एरिएड्नीका दिन मनाया जाता है जिसमें एक आदमी लेट कर वाणी आदि द्वारा प्रसववेदनाकी नकल करता है। कुछ नक्सियन लोगोंका कहना है कि एरिएड्नी नामकी दो औरतें थीं जिनमेंसे एकका विवाह नक्सस द्वीप-निवासी बक्सके साथ हुआ था और दूसरी थीसियस द्वारा हरण की गयी थी जो उससे परित्यक्त होनेके उपरान्त नक्सस चली गयी। दोनों स्त्रियोंके लिये अलग अलग दो त्यौहार मनाये जाते हैं, पहलेमें खुशी मनायी जाती है और दूसरेमें शोक।

क्रीटसे लौटती बार थीसियस डेलस नामक द्वीपमें ठहरा। द्वीपके देवताकी पूजा करनेके बाद उसने एरिएड्नी प्रदत्त रतिकी प्रतिमा उसी मन्दिरमें स्थापित कर दी। यहाँ उसने अथेंज नवयुवक बन्दियोंके साथ नृत्य भी किया। डेलसवालोंमें इस नृत्यकी प्रथा अभी जीवित है। इसमें

भूलभुलैयाँके घुमावके अनुकरणमें नाचनेवाले भी घूमते और मुड़ते हैं। इस नृत्यको यहाँवाले भारस-नृत्य कहते हैं।

एटिकाके तटके पास पहुँचने पर ये लोग खुशीके मारे आपेसे बाहर हो रहे थे। सकुशल लौटनेकी सूचना देनेके निमित्त उजला पाल उड़ानेकी बात न तो थीसियसको ही याद रही और न कर्णधारको। फल यह हुआ कि नैराश्यमें ईजिअसने चट्टानसे समुद्रमें कूद कर अपने प्राण दे दिये। फैलेरम बन्दरमें पहुँच कर थीसियसने वह मनौती पूरी की जो यात्राके समय मानी थी और सकुशल लौटनेकी सूचना नगरमें भेजी। नगरमें प्रवेश करने पर दूतने अधिकांश लोगोंको राजाकी मृत्युके कारण शोकमग्न देखा; कुछ लोग इस सुसमाचारको सुनकर प्रसन्न हुए और पुष्पमाला आदि द्वारा उसका स्वागत करने लगे। उसने मालाओंको अपने दंडमें लटका लिया। जब वह लौट कर समुद्रतटपर पहुँचा, उस समय थीसियस देवताओंकी पूजा कर रहा था। विघ्न पड़नेके भयसे दूत बाहर ही खड़ा रहा। राजाकी मृत्युका समाचार पाकर सब लोग रोते पीटते नगरकी ओर बढ़े। तभीसे इस तिथिपर होनेवाले शान्त्युत्सवमें लोग दूतको माला न पहना कर उसके दंडको पहनाते हैं और घबराहट तथा शोक इत्यादिके सूचक शब्दोंका उच्चारण करते हैं।

थीसियसने अपने पिताकी अन्त्येष्टि क्रिया करनेके पश्चात् ७वीं अक्तूबरको सूर्यदेव (अपोलो) की पूजा की क्योंकि इसी दिन उसने अपने साथियोंके साथ नगरमें प्रवेश किया था। इस दिनके उत्सवमें दाल पकानेकी प्रथा इसी समयसे आरंभ होती है क्योंकि उन लोगोंने यात्रामें जो कुछ रसद बच गयी थी सबको एक ही साथ पका कर एक ही साथ भोजन किया था। जैतूनकी डालमें ऊन लपेट कर और उसमें तरह तरहके फलोंको लगा कर जलसमें ले चलनेकी चाल भी इसी समयसे चली।

• जिस जहाजपर थीसियस और उसके साथी लौटे थे उसमें तीस डाँड लगे हुए थे। अथेंजवालोंने इसे डेमेट्रियस फैलेरसके समयतक

बचा कर रखा था; हाँ, जो पुराने तख्ते सड़ जाते थे उनके स्थानमें नये लगा दिये जाते थे।

शाखोत्सव* जिसे एथेन्सवाले अब भी मानते हैं, थीसियसका ही चलाया हुआ है। उसने चिट्ठी डालकर चुनी हुई कुमारियोंको पूरी संख्यामें अपने साथ न लेकर दो परिचित नवयुवकोंको ले लिया था जो साहसी और वीर तो थे पर देखनेमें सुन्दर और औरतोंकी सी शकलवाले थे। उनको गर्मी और धूपसे बचाकर बराबर स्नान कराया गया और तरह तरहके तेल-मसाले लगा कर उनका रंग साफ और चमड़ा चिकना कर दिया गया। उन्हें स्त्रियोंकी चाल और बोलीका भी अभ्यास कराया गया। इन उपायोंसे उनमें इतना परिवर्तन हो गया कि कोई उन्हें देख-कर उनके पुरुष होनेका सन्देह नहीं कर सकता था। ये दोनों नवयुवक क्रीट जानेवाली कुमारियोंके साथ कर दिये गये थे। वापस आनेपर थीसियस और ये दोनों नवयुवक जिस वेश-भूषामें जलूसमें सम्मिलित हुए थे, आजकल वही वेशभूषा इस उत्सवमें शाखा धारण करनेवालों-की रहती है। इसमें औरतें भी शामिल होकर बलि-पूजा आदि कार्योंमें साहाय्य प्रदान करती हैं। औरतोंका यह कार्य उन माताओंके अनुकरणमें चल पड़ा है जिनकी सन्तानें चिट्ठी डाल कर चुनी गयी थीं। उस समय नवयुवकोंको आश्वासन देनेके लिए लोगोंने कथाएँ भी कही थीं, इसलिए इसमें भी पुरानी कथाएँ कहनेकी चाल चली आती है। इसी स्थानपर थीसियसके सम्मानमें एक मन्दिरका निर्माण कराया गया जिसमें पूजा आदि चढ़ानेके निमित्त उक्त नवयुवकोंके परिवारसे करस्वरूप कुछ द्रव्य लिया जाता था।

एटिकाके लोग पहले जहाँ तहाँ पृथक् पृथक् रहते थे। ऐसे अव-सरपर भी, जिसका सबसे समान रूपसे सम्बन्ध होता था, उनको एकत्र कर सकना कठिन था। इसके अलावा उनमें परस्पर मतभेद और

* Oschophoria

एड़ाइयाँ भी प्रायः हो जाया करती थीं। ऐसी हालतमें थीसियसको एक जगहसे दूसरी जगह जा जाकर लोगोंको समझाना-बुझाना तथा शान्त करना पड़ता था। इन बुराइयोंको दूर करनेके विचारसे उसने एटिका-निवासी सभी लोगोंको एकत्र कर एक नगरमें बसाया और उन्हें एक जातिका रूप दे दिया। साधारण तथा निर्धन लोगोंने उसके इस विचारका हृदयसे स्वागत किया। अमीरों तथा बड़े लोगोंको उसने यह सुझाया कि इस शासनमें कोई राजा न होगा, प्रधानाधिकार जनताके ही हाथमें रहेगा। मैं तो सिर्फ युद्धोंका संचालन और विधानोंका संरक्षण किया करूँगा, और सब बातोंमें सबका समान हक होगा। इस प्रकार समस्त सुझा कर उसने कुछ लोगोंको अपने पक्षमें कर लिया; शेष लोगोंने उसकी महती शक्ति, और दृढ़ निश्चय आदिका ख्याल कर जबर्दस्ती मनाये जानेकी अपेक्षा स्वयं उसकी बातोंको मान लेना अच्छा समझा। उसने भिन्न भिन्न नगरोंकी राजकीय सभाएँ तोड़कर सबके लिए एक सामान्य परिषद् और न्यायालयकी स्थापना की और राज्यका नाम 'अथेंस' रखा। सबके लिए एक ही उत्सवकी योजना की जो पान-अथीनिआ (संयुक्त अथीनियनोंका उत्सव) कहलाता है। उसने मिटोदिआ (प्रवसितोंका भोज) नामक एक और त्योहार चलाया जो १६वीं जुलाईको अब भी मनाया जाता है। वह अपने राजकीय अधिकारोंका परित्याग कर पूर्व प्रतिज्ञाके अनुसार स्वायत्त राष्ट्रमंडलकी स्थापना जैसे महाकार्यके सम्पादनमें प्रवृत्त हुआ। नगरकी वृद्धिके विचारसे उसने बाहरके लोगोंको वहाँ आकर बसने और समानाधिकारका उपभोग करनेके लिये आमंत्रित किया। बहुसंख्यक लोगोंके आकर बस जानेपर भी उसने समाजमें किसी प्रकारकी अव्यवस्था नहीं उत्पन्न होने दी। सर्वप्रथम उसीने सर्व-साधारणको रईस, कृषक और कारीगर, इन तीन श्रेणियोंमें विभक्त किया। उसने धर्म, शासकोंका निर्वाचन, न्यायकी शिक्षा तथा वितरण और धार्मिक कार्योंका संचालन रईसोंके जिम्मे किया। सम्मानके लिहाजसे रईसोंका

पद सबसे बड़ा हुआ था, कृषकोंको सबसे अधिक लाभ था और कारीगर संख्यामें सबसे अधिक थे—इस प्रकार तीनों श्रेणियोंमें समानता बनाये रखनेका उसने यथासाध्य प्रयत्न किया। अरस्तूका यह भी कथन है कि लोकसत्तात्मक शासनकी ओर प्रवृत्ति होनेके कारण सर्वप्रथम थीसियसने ही अपने राजकीय अधिकारोंका परित्याग किया था।

थीसियसने सिक्का भी चलाया जिसपर मेराथनके सॉड या टॉरसके स्मरणमें, जिसे उसने पराभूत किया था, वृषभकी छाप रहती थी। कुछ लोगोंका यह भी खयाल है कि कृषिकी तरफ लोगोंका ध्यान आकृष्ट करनेके निमित्त यह छाप रखी जाती थी। इस छापके ही कारण यूनानी लोग वस्तुओंका मूल्य वृषभोंकी संख्यामें ऑंकते हैं। इसके बाद उसने मेगाराको एटिकामें मिला लिया और जिस जगहपर दोनों देशोंकी सीमाएँ परस्पर मिलती हैं वहाँ एक भारी स्तम्भ खड़ा कराया। थीसियसने हरकुलीजकी देखा-देखी वरुणदेवके सम्मानमें इस्टमीयन* खेलोंको आरंभ किया।

फिलोकोरस तथा अन्य कुछ लोगोंका कथन है कि थीसियसने आमेज़नोंके विरुद्ध युद्धमें हरकुलीजके साथ यूक्सीन समुद्रकी यात्रा की थी और अन्तियप उसे पारितोषिक-स्वरूप मिली थी पर बहुतेरे इतिहासकार इस बातका खंडन करते हैं। वे कहते हैं कि उसने हरकुलीजके कई वर्ष बाद अपने बेड़ेके साथ यह यात्रा की थी। बायनका कथन है कि थीसियस उसको धोखेसे लेकर भाग गया था। बात यह हुई कि जब थीसियस तटपर ठहरा तो आमेज़नोंने मानवप्रेमी होनेके कारण थीसियसके लिए कुछ उपहार भेजा। थीसियसने अन्तियपको, जो उपहार लेकर आयी थी, अपने पोतपर आनेके लिए आमंत्रित किया और उसके जाने पर पोत खोल दिया। एक दूसरे लेखकके कथनानुसार थीसियस कुछ कालतक अपना पोत समुद्रतटके पास इधर उधर घुमाता रहा। उसके साथ उसी पोतपर तीन

* Isthmian

और अर्थीलियन नवयुवक थे जो परस्पर भाई थे। तीसरा भाई सोलून अन्तियपपर आसक्त हो गया। उसने और हिर्मासर तो अपनी आसक्तिकी बात प्रकट नहीं की, पर अपने एक घनिष्ट मित्रसे सब हाल कह दिया और उसीके द्वारा अन्तियपके पास अपना प्रणय-सन्देश भेजा। अन्तियपने उसके अनुरोधको बड़ी दृढ़ताके साथ अस्वीकार कर दिया पर समझदारीसे काम लेकर थीसियसपर यह बात प्रकट नहीं की। नैराश्यमें सोलूनने समुद्रके पास एक नदीमें कूदकर अपने प्राण दे दिये। जब थीसियसको उसकी मृत्यु और उसके घातक प्रेमका पता लगा तो उसे बहुत शोक हुआ। इसी शोककी हालतमें उसे सूर्यदेवता (अपोलो पाइथियस) की पुजारिनका आदेश स्मरण हो आया। उसने इसे आदेश दिया था कि जब कहीं विदेशमें तुम्हें शोक या मानसिक कष्ट हो तो वहीं एक नगर बसा कर, अपने कुछ साथियोंको नवनिर्मित नगरके शासकके रूपमें रख देना। इसी आदेशके अनुसार उसने वहीं एक नगरका निर्माण किया और अपोलोके नामपर उसका नाम पाइथोपोलिस रखा एवं उसके पाससे बहनेवाली नदीका नाम अपने मृत साथीके सम्मानमें सोलून रखा। शेष दो भाइयोंके हाथमें उस नगरका शासनसूत्र सौंप कर उसने हरमस नामक एक अर्थीलियन रईसको भी उन्हींके साथ कर दिया।

एटिकापर आमेज़नोंके आक्रमण करनेका यही मुख्य कारण था। शत्रुओंने नगरके अन्दर अपना पड़ाव डाला था और युद्ध भी म्यूजिअम पहाड़ीके पास ही हुआ था। इन बातोंसे यह प्रमाणित होता है कि यह आक्रमण साधारण नहीं था, क्योंकि आसपासके स्थानोंपर अधिकार कर लेने पर ही शत्रु नगरमें पड़ाव डालनेमें समर्थ हुए होंगे। समरभूमिमें आमने-सामने होनेपर भी दोनों सेनाएँ 'पहले कौन आक्रमण करे' यही विचार करती हुई चुपचाप खड़ी रहीं। अन्तमें थीसियसने एक देववाणीके आदेशानुसार 'भय' देवकी पूजा कर-युद्ध आरंभ कर दिया। आमेज़नोंकी बाँयीं पंक्ति वर्तमान आमेज़ोनियमकी तरफ और दाहिनी नाइक्सकी तरफ

यढ़ी। वॉयी पंक्तिके साथ युद्धमें अमेजनवालोंके पैर उखड़ गये, पर कुछ नये सैनिकोंके आजाने पर वे दाहिनीपर हमला कर उसे उसके शिविर तक हटा ले गये। इस बार आमेज़नोंके बहुतसे सैनिक मारे गये। चार मास बाद हिपोलिटाके बीच-बिचाव करने पर दोनों दलोंमें संधि हो गयी।

'थेसीड' नामक काव्यमें ऐसा उल्लेख मिलता है कि थीसियसने अन्तियपसे विवाह करना अस्वीकार कर फीड्रासे विवाह कर लिया जिससे यह क्रुद्ध होकर अपने सैनिकोंके साथ नगरपर चढ़ आयी। पर यह निरी दन्तकथा है। यह सत्य है कि थीसियसने फीड्रासे विवाह किया था, पर यह विवाह अन्तियपकी मृत्युके बाद ही हुआ था।* थीसियसने और भी कई स्त्रियोंका अपहरण या पाणिग्रहण किया था पर इनसे सम्बद्ध घटनाएँ इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं हैं कि इस स्थलपर उनका उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत हो। उसने ईगिलके प्रेमपाशमें फँसकर एरिएड्नीका भी परित्याग कर दिया और अन्तमें हेलेनका अपहरण किया जिससे सारे एटिकामें रक्तकी नदियाँ बह चलीं और उसे भी निर्वासित होकर मृत्युका आलिंगन करना पड़ा।

हिरोडोटसके मतानुसार कई समसामयिक वीरोंने युद्धयात्राएँ कीं पर

---

* अन्तियपसे उत्पन्न हिपोलिटस नामक एक लड़का था। थीसियसने इसे अपनी माता ईथ्राके पास पालन-पोषणके निमित्त भेज दिया था। बादमें एक बार यह अथेंसके खेलोंमें शामिल हुआ। फीड्रा इसपर आसक्त हो गयी पर इसने उसकी बातोंकी तरफ जरा भी ध्यान नहीं दिया। इस कारण फीड्राने क्रुद्ध होकर थीसियसके पास सतीत्व भंग करनेके लिये प्रयत्न करनेका दोषारोप किया। थीसियसने वरुण (नेपच्यून) देवसे इसे कठोर मृत्युदण्ड देनेकी प्रार्थना की। एक दिन यह अपने रथपर समुद्रतटवर्ती मार्गसे जा रहा था। वरुण देवने दो समुद्री जन्तुओंको भेजकर इसके घोड़ोंको बहका दिया जिससे रथ उलट गया और अधिक चोट लगनेके कारण हिपोलिटसकी मृत्यु हो गयी। कवियोंका यह भी कथन है कि इस कामातुरा रानीने शोकमें फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली।

सेण्टार लोगोंके विरुद्ध किये गये युद्धमें ईपीथी लोगोंका साथ देनेके अतिरिक्त थीसियस और किसी यात्रामें शामिल नहीं हुआ। औरोंका कहना है कि यह जेसनके साथ कालचिस और मेलीजरके साथ केलिडोनियन शूकरको मारने भी गया था। उसने स्वयं भी, बिना किसीकी सहायताके, वीरताके अनेक कार्य किये। 'द्वितीय हरकुलीज' शब्द सर्वप्रथम उसीके लिए प्रयुक्त हुए थे। थीबीजके सम्मुख हत हुए व्यक्तियोंके शव प्राप्त करनेमें उसने एड्रास्टसका साथ दिया था। यूरीपिडीजका कथन है कि यह कार्य बलप्रयोग द्वारा हुआ, पर औरोंका इससे मतभेद है। उनका कहना है कि यह कार्य परस्पर समझौता हो जाने पर ही हुआ था। एक और लेखकने सेण्टार लोगोंके युद्धकी कथा इस प्रकार दी है—थीसियस और पिरिथोअस घनिष्ठ मित्र थे। इस मित्रताका आरंभ यह बतलाया जाता है कि एक बार पिरिथोअसने थीसियसकी वीरता और शक्तिकी जाँच करनेके विचारसे उसके कुछ बैलोंको पकड लिया और उन्हें लेकर मेराथनकी ओर बढ़ा। मार्गमें उसने सुना कि थीसियस सशस्त्र होकर मेरा पीछा कर रहा है। यह सुनकर वह थीसियसका सामना करनेके विचारसे वहींसे लौट पडा। आमने सामने होने पर वे एक दूसरेके सौन्दर्य एवं साहससे इतने प्रभावित हुए कि लडाई करना भूल ही गये। पिरिथोअसने थीसियसको ही न्यायकर्त्ता बना कर उचित दंड देनेकी प्रार्थना की। उसने सिर्फ उसका अपराध ही नहीं माफ किया बल्कि उससे मैत्री कायम करने और युद्धमें सहायक होनेका भी अनुरोध किया। दोनोंने शपथ लेकर इस मैत्री-सम्बन्ध को दृढ किया। इसके कुछ ही दिन बाद पिरिथोअसने डीडेमियाका पाणिग्रहण किया। विवाहोत्सवके अवसरपर उसने थीसियसको निमन्त्रण दिया और आकर उसका देश देखने तथा ईपीथी लोगोंसे परिचय प्राप्त करनेकी प्रार्थना की। उसने इस अवसरपर सेण्टार लोगोंको भी निमन्त्रित किया था। ये लोग शराबके नशेमें मस्त होकर अनर्थ करने लगे। स्त्रियोंके साथ भी इन्होंने छेड़छाड शुरू की। ईपीथी लोगोंने इसका भयंकर बदला

लिया। पहले तो महुतोंको :उन्होंने वहीं मार डाला, फिर युद्धमें उन्हें हराकर अपने देशसे ही निकाल बाहर किया। थीसियस बराबर उनके पक्षमें रहा और युद्धमें उनकी सहायता भी करता रहा। इस सम्बन्धमें हिरोडोटसका कहना कुछ और ही है। उसके अनुसार युद्ध आरंभ हो जानेके बाद वह वहाँ पहुँचा। इसी यात्रामें उसे हरकुलीजके प्रथम दर्शन हुए। थीसियसने ट्रैचिसमें उसका पता लगानेका निश्चय किया था क्योंकि हरकुलीजने अपने भ्रमणों और परिश्रमके अनन्तर इसी स्थान पर अपना शेष जीवन शान्तिपूर्वक व्यतीत करनेका निश्चय किया था। इस मिलनमें दोनों ओरसे सद्भाव और सम्मान-प्रदर्शनमें कोई कोर-कसर नहीं हुई। पर अधिकांश लोगोंका यह मत है कि इन दोनोंमें पहले कई बार भेंट हो चुकी थी और थीसियसकी ही सहायतासे हरकुलीज अपने पूर्व प्रमादपूर्ण कार्योंका प्रायश्चित्त करनेके अनन्तर इल्यूसिसमें आश्रय पानेमें समर्थ हुआ।

हेलेनका अपहरण करनेके समय थीसियसकी अवस्था पचास वर्षकी थी पर हेलेन अभी विवाहके योग्य भी नहीं हुई थी। कुछ इतिहासकार थीसियसको इस कलंकसे बचानेके लिए यह कहते हैं कि ईदस और लिसिअस नामक दो व्यक्तियोंने अपहरण कर हेलेनको थीसियसके पास रख दिया था, इसीलिए उसने कैस्टर और पोलक्सके माँगने पर उसे देनेसे इनकार कर दिया। यह भी कहा जाता है कि स्वयं हेलेनके पिताने ही उसे इनारोफोरसके भयसे, जो उसे शैशवावस्थामें ही बलपूर्वक छीन ले जाना चाहता था, थीसियसके सुपुर्द कर दिया था। जो वर्णन सबसे अधिक विश्वसनीय माना जाता है, वह इस प्रकार है—एक बार थीसियस और पिरिथोअस साथ साथ स्पार्टा गये। उन्होंने हेलेनको एक मन्दिरमें नृत्य करते हुए देखा। वे उसी समय उसे पकड़ कर ले भागे। इनका पीछा करनेके लिए कुछ सशस्त्र सैनिक भेजे गये पर वे इन्हें न पा सके। अब इन दोनों मित्रोंने अपनेको निरापद समझ कर आपसमें

यह तै किया कि हम लोग चिट्ठी डालें और जिसके नामकी चिट्ठी निकले वह तो हेलेनसे विवाह करे और दूसरे मित्रके लिए भी स्त्री प्राप्त करनेमें सहायता करे। चिट्ठी डालने पर हेलेन थीसियसके नाम पड़ी, पर चूँकि हेलेनकी अवस्था अभी विवाहके योग्य नहीं हुई थी इसलिए थीसियसने उसे एफिड्नस नामक अपने मित्रके पास एफिड्नी भेज दिया और अपनी माता ईथ्राको भी उसकी देखभालके लिए वहीं रख दिया। उसने अपने मित्रको इसे इस प्रकार गुप्त रूपसे रखनेका आदेश कर दिया जिसमें किसी-को इसका पता न चले। इसके अनन्तर वह पिरिथोअसके लिए मोलोशियन नरदेकी पुत्री कोराका अपहरण करनेके उद्देश्यसे उसके साथ ईपिरस गया। जो लोग उस कन्याके साथ विवाह करनेके विचारसे जाते थे, उन्हें वह अपने कुत्तेके साथ युद्ध करनेका आदेश देता था और यह प्रतिज्ञा करता था कि जो व्यक्ति विजयी होगा उसके साथ कोराका विवाह कर दिया जायगा। जब उसे यह मालूम हुआ कि ये दोनों मित्र कन्याको लेकर भाग जानेके इरादे से आये हैं, तो उसने इनको पकड़वा मँगाया; पिरिथोअसको तो उसने टुकड़े टुकड़े कर डालनेके लिए अपने कुत्तेके आगे डाल दिया और थीसियसको कारागारमें रखवा दिया।

इसी समय पीटियसके पुत्र मैनेस्थियसने नगरके उन प्रमुख लोगोंको, जो थीसियससे भीतर ही भीतर जला करते थे, यह कहकर उसके विरुद्ध उभाड़ना शुरू किया कि थीसियसने तुम्हारे छोटे छोटे राज्योंका अपहरण कर तुम्हें एक ही नगरमें बन्द कर दिया है और तुम्हारे साथ प्रजा और गुलामोंकी तरह पेश आता है। वह साधारण जनताको भी उत्तेजित करनेसे बाज़ न आया। उनसे उसने यह कहा कि तुम लोग अपने घर-बार और धार्मिक कृत्योंको तिलांजलि देकर स्वाधीनताकी मृगतृष्णाके पीछे पड़े हुए हो, अपने नेक और दयालु राजाओंको छोड़कर एक ऐसे व्यक्तिका शासन स्वीकार किये हुए हो जो विदेशी और नवागन्तुक है। इधर तो जनता इस प्रकार भड़कायी जा रही थी, उधर कैस्टर और पोलक्सने

अर्थेंज़के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। इस युद्धके कारण राजविद्रोहको और भी उत्तेजन मिला। कुछ लोगोंका अनुमान है कि यह आक्रमण मेनेस्थियसके ही अनुरोधसे हुआ था। शत्रुने अर्थेंज़ पहुँचने पर शत्रुताका और कोई कार्य न कर पहले हेलेनको माँगा। अर्थेंज़वालोंके यह कहने पर कि हम लोग न तो उसको रखे हुए हैं और न उसका कुछ पता ही जानते हैं, दोनों भाइयों (कैस्टर और पोलक्स) ने नगरपर आक्रमण करनेकी तैयारी की। इसी समय एकेडेमस नामक एक व्यक्तिने उन्हें यह बतला दिया कि हेलेन एफिड्नामें गुप्त रूपसे रखी गयी है। इसपर उक्त दोनों भाइयोंने एफिड्नी पहुँच कर वहाँकी सेनाको परास्त किया और नगरपर अधिकार कर लिया।

जब एफिड्नीपर शत्रुको विजय प्राप्त होगयी, तब अर्थेंज़में भी हलचल शुरू हो गयी। इस परिस्थितिसे लाभ उठाकर मेनेस्थियसने अर्थेंज़वालोंसे नगरका द्वार खोल देने और कैस्टर तथा पोलक्सका मित्रोंकी तरह स्वागत करनेका अनुरोध किया। उसने उन्हें यह भी समझाया कि इन लोगोंकी शत्रुता केवल थीसियससे है। क्योंकि उसीने इन्हें क्षति पहुँचायी है, वैसे तो ये मानवमात्रके हितैषी और संरक्षक हैं। इन दोनों भाइयोंके कार्योंसे इन बातोंकी पुष्टि भी होती दिखाई दी, क्योंकि इन्होंने विजेता होकर भी जातिमें सम्मिलित किये जानेके अलावा और कोई बात नहीं चाही। सो भी इस आधारपर कि इनका भी नागरिकोंके साथ वही सम्बन्ध था जो पूर्वसम्मानित हरकुलीजका था। एफिडनसके द्वारा अंगीकार किये जाने पर इन लोगोंकी इच्छा पूर्ण कर दी गयी। अब इन लोगोंके नये नाम पड़ गये और देवताओंकी तरह इनका सम्मान होने लगा।

इसी समयके लगभग हरकुलीज आइडोनियस जाते समय मार्गमें मोलोशियन नरेशके यहाँ ठहर गया। वार्तालापके प्रसंगमें उसने थीसियस और पिरिथोअसकी यात्रा, उद्देश्य तथा दंडकी भी चर्चा की। हरकुलीज एककी अपमानपूर्ण मृत्यु और दूसरेकी दुर्दशा सुनकर बहुत दुःखी हुआ।

पिरिथोअसके सम्बन्धमें कुछ कहना तो अब निरर्थक ही था, पर थीसियसको उसने राजासे प्रार्थना कर मुक्त करा दिया। यहाँसे मुक्त होनेपर थीसियस अथेंज पहुँचा। अबतक उसके सभी मित्रोंका दमन पूर्णतः नहीं हुआ था। उसने प्राय उन सभी पवित्र स्थानोंको, जिन्हें नागरिकोंने उसके निमित्त रख छोड़ा था, हरकुलीजको अर्पित कर दिया और उनका नाम थीसियासे बदल कर हरेक्लिया कर दिया। वह स्वतन्त्र राष्ट्रमंडलमें अपना पूर्व स्थान ग्रहण कर पहलेकी तरह राज्यका संचालन करना चाहता था, किन्तु उसके मार्गमें मतभेद और कठिनाइयाँ भयंकर रूपमें आ पड़ीं। जिन लोगोंके मनमें उसके प्रति तिरस्कारका भाव था उनका वह भाव अब घृणाके रूपमें परिणत हो गया था। लोगोंका इतना अधःपतन हो गया था कि वे चुपचाप आज्ञा पालन करनेकी जगह अब खुशामद करानेकी आशा करते थे। वह बलप्रयोग द्वारा इन्हें दबाना चाहता था पर जनताके मुखियाओं और दलबन्दियोंके कारण उसकी एक भी न चलने पायी। अन्ततः अथेंजमें सफलताकी कोई आशा न देखकर उसने अपनी सन्तानोंको गुप्तरूपसे यूबोआ भेज कर एलीफेनरके संरक्षणमें रख दिया। वह स्वयं अथेंजवालोंको गारगेटस नामक ग्राममें शाप देकर साईरस चला गया जहाँ उसके पिताकी कुछ जमीन थी। थीसियसने उक्त जमीनपर अधिकार दिलानेके लिए वहाँके राजासे प्रार्थना की। कुछ लोगोंका कहना है कि थीसियसने उससे अथेंजके विरुद्ध सहायता करनेकी प्रार्थना की थी। राजा थीसियसके महत्वसे ईर्ष्यान्वित होकर या मेनेस्थिअसको प्रसन्न करनेके विचारसे थीसियसको उसकी जमीन दिखलानेके बहाने उस द्वीपके सबसे ऊँचे शैल शिखर पर ले गया और उसने उसे वहाँसे धक्का देकर गिरा दिया जिससे उसका प्राणान्त हो गया। कुछ इतिहासकार यह भी कहते हैं कि वह नियमानुसार भोजनके उपरान्त वहाँ टहलने गया था और पैर फिसल जानेके कारण स्वयं गिरकर मर गया। उस समय उसकी मृत्युके सम्बन्धमें कोई खोज-पूछ नहीं हुई,

उसकी मृत्युमें किसीका विशेष सम्बन्ध भी नहीं था। मेनेस्थिअसने चुपचाप राज्यपर अधिकार जमा लिया। थीसियसके लड़कोंका पालन-पोषण साधारण रूपमें हुआ। वे एलीफेनरके साथ ट्रोजन-युद्धमें भी गये थे। उस युद्धमें मेनेस्थिअसके मारे जाने पर उन्होंने वापस आकर अथेंज़पर अधिकार कर लिया। पीछेसे अथेंज़वाले थीसियसको उपदेवकी तरह पूजने लगे। इसका कारण यह हुआ कि मेराथनके युद्धमें कई सैनिकोंको यह विश्वास हुआ मानो थीसियसका प्रेत शस्त्र ग्रहण किये हुए आगे आगे जाकर बर्बरोंपर आक्रमण कर रहा है। इस युद्धके पश्चात् जब कि फीडो नगराध्यक्ष था, अथेंज़वालोंने डेल्फीमें देववाणी करायी तो पुजारिनने उसकी अस्थियाँ लाकर एक सम्मानित स्थानमें गाड़ने और उन्हें सुरक्षित रखनेका आदेश दिया। पर द्वीपनिवासियोंकी असभ्यताके कारण अस्थियोंको प्राप्त करना या अस्थियोंवाले स्थानका पता लगाना कठिन था। बादमें उस द्वीपपर साईमनका अधिकार होगया। वह थीसियसके समाधिस्थानका पता लगाना चाहता था। एक दिन संयोगसे उसने एक गरुड़ पक्षीको चोंच और पञ्जोंसे एक ऊँची जमीनको खोदते देखा। एकाएक मानो दैवी प्रेरणासे, उसके दिमागमें थीसियसकी अस्थियोंका पता लगानेकी बात आयी। वहाँपर उसे साधारण मनुष्यसे कुछ बड़े आकारका शवपात्र और उसके पास ही पीतलका भाला और खड्ग पड़ा हुआ मिला। वह इन सबको अपने पोतपर लादकर अथेंज़ ले आया। यह सुन कर अथेंज़वालोंके आनन्दका कोई ठिकाना न रहा; वे शानदार जुलूस बनाकर अस्थियोंका स्वागत करनेके लिए आगे बढ़े, मानो थीसियस जीवित लौट रहा हो। उसका समाधिमन्दिर नगरके मध्यमें वर्तमान व्यायामशालाके पास बना है। यह दासों तथा बलवानोंसे पीड़ित व्यक्तियोंका आश्रय-स्थान है। यह इस बातका स्मारक है कि वह ऐसे लोगोंका अपने जीवनभर सहायक रहा और शरणमें जानेपर कोई निराश होकर नहीं लौटा। वैसे तो हर मासकी ८वीं तारीखको उसकी पूजा होती है, पर प्रधान पूजा

कोई उसे ईनियसकी स्त्री मानता है तो कोई ईनियसके पुत्र एसकेनियस-की। कुछ इतिहासकार युलिसेसके पुत्र रोमेनस; लैटिननरेश रोमस और इमेथियनके पुत्र रोमससे भी इस नामका सम्बन्ध बतलाते हैं। जो लोग रोमुलसको इस नामका आधार मानते हैं वे भी उसके जन्म और वंशके सम्बन्धमें एकमत नहीं हैं। कुछ लोग कहते हैं कि रोमुलस ईनियस और डेक्सिथिया (फोरवसकी पुत्री) का पुत्र था। वह अपने छोटे भाई रीमसके साथ अपनी शैशवावस्थामें ही इटली लाया गया था। यात्रामें बाढ़के कारण और सब पोत तो नष्ट होगये, केवल एक पोत नदीके समतल तटपर धीरेसे आ लगा। ये दोनों बच्चे इसी पोतपर थे, इससे इनकी रक्षा होगयी। बादमें इन्हींके नामपर इस स्थानका नाम 'रोम' पड़ा। रोमुलसके विषयमें यह भी कहा जाता है कि वह उपर्युक्त ट्रोजन महिलाकी पुत्री रोमाका पुत्र था। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि ईनियस और लैवीनियाकी पुत्री ईमिलियाके गर्भसे मंगलदेवसे उसकी उत्पत्ति हुई थी।

रोमुलसके जन्मके सम्बन्धमें कई दन्तकथाएँ भी प्रचलित हैं। कहा जाता है कि एक दिन अल्बाके दुष्ट एवं निष्ठुर नरेश टारचेटियसके घरमें अग्निकुंडसे उत्पन्न एक विचित्र छाया-मूर्ति नज़र आयी। इसकी आकृति पुरुषकी थी और यह कई दिनोंतक ज्योंकी त्यों बनी रही। जब टारचेटियसने तस्कनीकी टेथिस देवीसे इस सम्बन्धमें पूछा तो देववाणी द्वारा उसे यह उत्तर मिला कि इस छायामूर्ति और एक कुमारी कन्याके मेलसे एक परम भाग्यशाली और विख्यात वीर उत्पन्न होगा। टारचेटियसने अपनी एक कन्यासे इस देववाणीकी चर्चा कर उसे यह कार्य सम्पन्न करनेका आदेश किया। पर उस कन्याने उसे उचित न समझ कर एक दासीको भेज दिया। जब टारचेटियसको इस बातका पता लगा तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ और इनका वध करनेके विचारसे उसने इन्हें बन्दीगृहमें डाल दिया। स्वप्नमें 'वेष्टा'देवी द्वारा वधका निषेध किये जाने पर उसने दंडस्वरूप यह आज्ञा दी कि यह कैदमें रहते हुए ही कपड़ेका एक जाल बनायें और जब वह

८ अक्तूबरको होती है जिस दिन यह नवयुवकोंके साथ क्रीटसे वापस आया था।

२—रोमुलस

विख्यात रोम नगरको यह नाम सर्व प्रथम किससे या कैसे प्राप्त हुआ, इस सम्बन्धमें इतिहासकारोंमें बहुत मतभेद है। कुछ लोगोंके मतानुसार पेलसजियन लोग संसारके अधिकांश अधिवसित भागोंका परिभ्रमण एवं अनेक राष्ट्रोंका दमन करते हुए यहाँ आकर बस गये और उन्हीं लोगोंने अपने सामरिक बल-सूचक शब्द 'रोमो' के आधारपर इसका नाम रोम रखा। कुछ लोगोंका कहना है कि ट्रॉय विजयके समय कुछ लोग जो अपने पोतोंको प्राप्त कर सके, समुद्रमें भाग निकले। हवाके झोंकेसे पोतोंके बहते हुए आकर तस्कनीके किनारे लगने पर उन लोगोंने टाइबर नदीके मुहानेपर लंगर डाला। उनकी स्त्रियाँ इस समुद्री यात्रासे बहुत तंग आगयी थीं। उन्होंने रोमा नामक एक उच्चवंशीया और बुद्धिमती महिलाके कहने पर पोतोंको जला डाला। पहले तो पुरुषोंको इस कार्यपर बहुत क्रोध हुआ, पर बादमें लाचार होकर उन्होंने पैलेटियमके पास डेरे डाल दिये। कुछ ही दिनोंके उपरांत यह स्थान उन्हें बहुत उपयुक्त जान पड़ा क्योंकि भूमकी उत्तमताके साथ साथ यहाँके निवासी बड़े ही शिष्ट एवं अतिथिपरायण थे। उन लोगोंने रोमाके प्रति अन्य सम्मान प्रदर्शन करनेके अतिरिक्त उसीके नामपर इस नगरका नामकरण भी किया क्योंकि वही इसकी स्थापनाका मूल कारण हुई थी।

इस रोमाके सम्बन्धमें भी ऐकमत्य नहीं है। कोई तो उसे इटैलस और ल्यूकेरियाकी पुत्री बतलाता है तो कोई हरकुलीजके पुत्र टेलाफसकी,

पूरा हो जाय तब इन्हें विवाह करने दिया जाय। ये दिनके समय जाल बनानेका जो कुछ कार्य करतीं थीं उसे रात्रिके समय टारचेटियसकी आज्ञासे उसके नौकर नष्ट कर दिया करते थे।

इसी कालमें उस दासीसे दो पुत्र उत्पन्न हुए। टारचेटियसने उन्हें मार डालनेके विचारसे टेराटियसके सिपुर्द कर दिया। उसने उन्हें नदीके किनारे डाल दिया। वहाँपर एक वृकी (मादा भेड़िया) आकर उन्हें दूध पिलाने लगी और बहुतसे पक्षी भी आहार लाकर उन्हें खिलाने लगे। एक चरवाहा छिप कर यह सब देख रहा था। पहले तो उसे इसपर बहुत आश्चर्य हुआ, पीछे साहसपूर्वक नजदीक जाकर उसने उन्हें अपनी गोदमें उठा लिया। बड़े होने पर उन लोगोंने टारचेटियसपर आक्रमण कर उसका पराभव किया।

डायोक्लीज लिखित कथा सबसे अधिक विश्वसनीय मानी जाती है। वह इस प्रकार है—ईनियसके वंशज पीढ़ी दर पीढ़ी अल्बामें राज्य करते आ रहे थे। अन्तमें इस परम्परामें नुमिटर और ऐमुलियस दो भाई हुए। ऐमुलियसने सारी सम्पत्ति दो बराबर भागोंमें बाँट लेनेका प्रस्ताव कर एक भागमें राज्य और दूसरेमें ट्रॉयसे प्राप्त सारा धन रख दिया। नुमिटरने राज्य ही लेना पसन्द किया। पर ऐमुलियसने, जो इस धनकी सहायतासे नुमिटरकी अपेक्षा अधिक बड़े बड़े कार्य कर सकता था, उससे बड़ी आसानीसे राज्य छीन लिया और उसकी लड़की इलिया (कुछ लोगोंके कथनानुसार रीया या सिल्विया) को, सन्तान उत्पन्न होनेके भयसे, वेस्टादेवीके मन्दिरमें संन्यासिनी बना कर रख दिया, जिसमें उसे बाध्य होकर एकाकी और अविवाहित जीवन व्यतीत करना पड़े। किन्तु कुछ ही दिनोंके बाद, मन्दिरके प्रचलित नियमोंके विरुद्ध, वह लड़की गर्भवती पायी गयी। ऐमुलियसकी लड़की एन्थोके बीचमें आ पड़नेसे उसकी जान तो बच गयी पर वह बन्दीगृहमें बिलकुल अकेली रखी गयी, जिसमें प्रसवकी सूचना ऐमुलियसको अवश्य हो जाय। समय पूरा होने पर उसके दो

बच्चे उत्पन्न हुए जो आकृति और सौन्दर्यमें असाधारण थे। इस पर ऐमुलियसने और भी भयभीत होकर फास्टुलस नामक एक नौकरको उन्हें लेकर फेंक आनेकी आज्ञा दी। (कुछ लोगोंके कथनानुसार इसी नौकरने उन बच्चोंका लालन-पालन किया।) यह उन बच्चोंको एक छोटेसे पात्रमें रख कर फेंकनेके विचारसे नदीके पास ले गया, पर तरङ्गोंकी भयंकरतासे नदीके पास न जाकर उन्हें तटपर ही डालकर चला आया। पानीके बहावसे पात्र बह निकला और बादमें एक समतल भूमिपर, जिसे आजकल 'सरमेनस' कहते हैं, आ लगा।

इस स्थानपर एक अंजीरका पेड़ उगा हुआ था जिसे लोग 'रमिनेलिस' कहते थे। इस नामका सम्बन्ध कई चीजों—रोमुलस, बच्चोंकी रक्षा करनेवाली रूमीलिया देवी आदि—के साथ बतलाया जाता है। जबतक बच्चे यहाँ रहे तबतक एक वृकी उनको बराबर दूध पिलाती रही और कठफोड़वा नामक एक पक्षी उन्हें आहार पहुँचानेके साथ साथ उनकी देख-भाल भी करता रहा। मंगलदेवके लिए ये प्राणी बहुत पवित्र समझे जाते हैं। लैटिन लोग अब भी इस पक्षीकी पूजा और सम्मान करते हैं।

कुछ लोगोंका खयाल है कि बच्चोंकी धायके नामसे ही इस कथाकी उत्पत्ति हुई है क्योंकि लैटिनमें वृकी और स्वैरिणी दोनोंका द्योतक एक ही शब्द है। फॉस्टुलसकी स्त्री अक्का लारेनशिया इसी प्रकारकी स्त्री थी। रोमन लोग उसकी पूजा करते हैं और मंगल देवका पुजारी, अप्रैलके महीनेमें, उसके लिए भेंट चढ़ाता है। फॉस्टुलसकी स्त्री बिना किसीसे कुछ कहे सुने चुपचाप इन बच्चोंका लालन-पालन करती रही। कुछ लोगोंका खयाल है कि नुमिटरको इस बातका पता था और वह गुप्त रूपसे उसकी सहायता भी किया करता था। शैशवावस्थामें ही उनका डील-डौल और सौन्दर्य असाधारण देख पड़ता था। उनमेंसे एकका नाम रोमुलस और दूसरेका रीमस रखा गया। युवा होने पर वे बड़े वीर और पराक्रमी निकले।

वे संकटपूर्ण कार्योंमें हाथ डालनेसे कभी नहीं हिचकते थे और समय समय पर अपूर्व साहसका परिचय देते थे। रोमुलसके कार्योंमें विवेक-बुद्धि और राजनीतिज्ञताकी मात्रा अधिक देख पड़ती थी। पड़ोसियोंके साथ उसके बर्तावसे भी यही भाव स्पष्ट रूपसे लक्षित होता था कि उसका जन्म शासित होनेके लिए नहीं, बल्कि शासन करनेके लिए हुआ है। इन दोनों भाइयोंके मित्र तथा निम्नश्रेणीके लोग भी उन्हें सम्मान और प्रेमकी दृष्टिसे देखते थे पर राजकर्मचारी इनसे घृणा करते थे और इनका तिरस्कार किया करते थे। उच्च कोटिके मनोरंजनों और स्वाध्यायमें ही इन दोनोंका समय व्यतीत होता था। वे आलस्य और प्रमाद आदिको हेय समझ कर आखेट, दौड़, डाकुओंके दमन और पीड़ितोंकी रक्षामें अपना समय लगाना श्रेयस्कर समझते थे। इस प्रकारके कार्योंकी बदौलत वे कुछ ही दिनोंमें विख्यात हो गये।

एक बार नुमिटर और ऐमुलियसके गोपालकोंमें झगड़ा हो गया। नुमिटरके गोपालकों द्वारा पशुओंका अपहरण सहन न कर रोमुलस और रीमसने उनपर आक्रमण कर दिया और उनको भगा कर अधिकांश पशुओंको छुड़ा लिया। उनके इस कार्यपर नुमिटरको बहुत क्रोध हुआ पर उन्होंने इसकी कुछ भी परवा न की। बहुतसे मुहताजों और भागे हुए गुलामोंको अपनी जमातमें शामिल कर लिया। एक दिनकी बात है कि जब रोमुलस पूजा-अर्चामें लगा हुआ था, उसी समय नुमिटरके कई गोपालक रीमसको कुछ साथियोंके साथ मार्गमें पाकर उसपर टूट पड़े और थोड़ी देरकी लड़ाईके बाद उसे कैद कर लिया। इन लोगोंने उसे नुमिटरके पास ले जाकर उसपर दोषारोप भी किया। नुमिटर अपने भाईके क्रोधके भयसे स्वयं उसे दंड देना नहीं चाहता था, इसलिए रीमसको अपने भाईके पास ले जाकर इसने न्यायके लिए प्रार्थना की, क्योंकि राजाका भाई होते हुए भी उसीके नौकरोंने उसके (नुमिटरके) विरुद्ध आचरण किया था। अल्बा-निवासियोंके विरोध और उनकी इस

धारणाका खयाल कर कि नुमिटरको अपमानित होना पड़ा है, ऐमुलियस-ने (रीमसके साथ) यथोचित कारवाई करनेके निमित्त उसे नुमिटरके हाथ सौंप दिया। जब रीमस नुमिटरके घर पहुँचाया गया तो वह इसकी शकल-सूरत देखकर दंग रह गया। इसकी आकृतिसे नुमिटरको यह भी जान पड़ा कि यह धीर और गंभीर है और वर्तमान संकटका इसपर ज़रा भी प्रभाव नहीं पड़ा है। जब नुमिटरने सुना कि इसके कार्य भी सौन्दर्यादिके अनुरूप ही हैं और कोई दैवीशक्ति भावी घटनाओंके सूत्र-पातमें प्रेरक होती दिखाई दे रही है, तब उसे इस बातकी सत्यताका कुछ विश्वास हो आया। उसने रीमसकी ओर दयापूर्ण दृष्टिसे देखते हुए इसके वंश और जन्मादिका वृत्तान्त पूछा। रीमसने साहसपूर्वक कहा "मैं आपसे कुछ भी गुप्त न रखूँगा क्योंकि आपका बर्ताव ऐमुलियसकी अपेक्षा इस बातमें अधिक शासकोचित है कि आप दण्ड देनेके पूर्व सभी बातें कहनेका अवसर देते और उनकी जाँच भी करते हैं, पर ऐमुलियस कारण सुने विना ही दण्ड दे देता है। पहले तो हम दोनों भाई अपनेको राजाके नौकर फास्टुलस और लारेंशियाके पुत्र समझते थे, पर जबसे हम लोगोंपर मिथ्या दोषारोप होनेके कारण हमारे प्राण संकटमें पड़ गये हैं, तबसे हम अपने सम्बन्धमें बड़ी बड़ी बातें सुन रहे हैं। सम्भव है, हमारे वर्तमान संकटसे इन बातोंकी सचाईकी परख भी हो जाय। हम लोगोंका जन्म रहस्यमय है और लालन-पालन सम्बन्धी बातें तो और भी आश्चर्य-जनक है। हम लोग पशुओं और पक्षियों द्वारा, जिनके लिए हम फेंक दिये गये थे, पालित हुए हैं। नदीके तटपर जब हम लोग एक पात्रमें पड़े हुए थे तब एक वृकीने हम लोगोंको दूध पिलाया और एक पक्षीने आहार प्रस्तुत किया। वह पात्र अबतक सुरक्षित रखा हुआ है। उसके चारों ओर पीतल चढ़ा हुआ है जिसपर एक लेख खुदा हुआ है। उसके अक्षर अब प्रायः मिट गये हैं। इन बातोंके सुनने एवं रीमसकी आकृतिसे समयका अनुमान करने पर नुमिटरके हृदयस्थलमें आशाका स्रोत

प्रकाशित हो गया और वह इन बालकोंके सम्बन्धमें अपनी गड़बड़ीसे, जो दिखाई थी, फिर उससे मिलकर बात करनेका विचार करने लगा।

रेमसकी गिरफ्तारी और अभियोगका समाचार पाकर फास्टुलसने रोमुलसके पास जाकर रेमसको छुड़ानेमें सहायता देनेको कहा। उसने जन्म विषयक सारी बातें भी उसे बतला दीं; पहले उसने इस सम्बन्धमें केवल इतना ही संकेत किया था जिससे वे कोई बुरा परिणाम न निकाल सकें। अब वह (फास्टुलस) पात्रको लेकर शीघ्रतापूर्वक नुमिटरके पास चला। राजाके कुछ प्रहरियोंको उसपर कुछ सन्देह हो आया। गौरसे देखने और प्रश्नोंका उत्तर देते समय उसके घबराने पर उनके सन्देहकी मात्रा और भी बढ़ गयी। उसने जानबूझ कर पोशाकके नीचे पात्र छिपा रखनेकी बात प्रकट हो जाने दी। संयोगसे प्रहरियोंमें एक ऐसा भी था जो बच्चोंके परित्यागके समय राजाकी सेवामें था और इस कार्यसे उसका सम्बन्ध भी था। पात्रकी बनावट और उसपरका लेख देखकर वह सारी बात ताड़ गया। उसने फौरन राजाको इस बातकी इत्तिला दी, जिसके लिए राजाने तुरन्त फास्टुलसको अपने सामने बुलवाया। इन कठिनाइयोंके आ पड़नेसे उसके होश ठिकाने न रहे, फिर भी उसने सारी बातें न बतला कर केवल इतना ही स्वीकार किया कि वे दोनों बच्चे जीवित हैं और अल्बासे बहुत दूर एक स्थानमें गड़रियेका जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इलिया इस पात्रको देखनेके लिए बहुत लालायित है जिससे उसको बच्चोंके जीवित होनेका निश्चय हो जाय, इसीलिए मैं इस पात्रको उसके पास ले जा रहा हूँ। ऐमुलियस भय और क्रोधके आवेशमें आ-गया। उसने नुमिटरके एक मित्रको उसके पास भेजकर यह दर्याफ्त कराना चाहा कि उसे उन बच्चोंके जीवित होनेका कोई समाचार मिला है या नहीं। नुमिटरका रेमसके प्रति प्रेम देखकर उसे इस बातका विश्वास हो गया कि यह अवश्य ही उसका नाती है। उसने इन लोगोंको शीघ्र ही कार्यमें संलग्न होनेकी राय दी क्योंकि रोमुलस बहुत पास पहुँच गया

था और बहुतसे नागरिक, ऐमुलियससे घृणा या भय होनेके कारण, रोमुलसके पक्षमें आते जा रहे थे। इसके अलावा उसके पास भी एक बड़ी सेना थी। रीमसने भीतरसे नागरिकोंको विद्रोहके लिए उभाड़ना शुरू किया और बाहरकी ओरसे रोमुलसके आक्रमण होने लगे। दोनों ओरकी कठिनाइयोंके बीच पड़ कर अत्याचारी राजा ऐमुलियस इतना घबरा गया कि वह अपने बचावका कोई उपाय तक नहीं सोच सका। इसी घबराहटकी हालतमें वह पकड़ कर मार डाला गया। कुछ लोग इस कथाकी सत्यतापर सन्देह प्रकट करते हैं, फिर भी इतना मानना पड़ता है कि यह बिलकुल अविश्वसनीय ही नहीं है, क्योंकि हम देखते हैं कि विधाता कैसी कैसी असाधारण घटनाओंकी योजना किया करता है। इसके साथ ही यह भी मानना पड़ता है कि यदि मूलमें कोई दैवी सहायता न होती तो रोम उन्नतिकी चरम सीमापर कभी न पहुँचा होता।

ऐमुलियसका तो अन्त हो गया। पर वे दोनों भाई न तो अपने नानाके रहते अल्वाका शासनसूत्र अपने हाथमें ले सकते थे और न शासनाधिकारसे वंचित होकर वहाँ रह ही सकते थे। उन्होंने शासनसूत्र अपने नानाके हाथ सौंप दिया और अपनी माताके प्रति उचित सम्मान प्रदर्शन किया। अब उन लोगोंने स्वतंत्र रूपसे पृथक् रहने और उस स्थानपर, जहाँ शैशवावस्थामें उनका लालन-पालन हुआ था, एक नगर निर्माण करनेका संकल्प किया। उन लोगोंके वहाँसे हटनेका यही उचित कारण जान पड़ता है। इसके अलावा एक यह भी कारण बतलाया जाता है कि उनके साथ दासों और भागे हुए लोगोंकी संख्या अत्यधिक हो गयी थी। उन्हें पृथक् करना संभव नहीं था, क्योंकि ऐसा करनेसे उनकी शक्तिका अंत ही हो जाता। अल्वा-निवासी इन भगोड़ोंको आश्रय देकर नागरिकके रूपमें ग्रहण करना भी नहीं चाहते थे। तब लाचार होकर दोनों भाइयोंको इन सबके निवासस्थानका प्रबन्ध करनेके विचारसे अल्वासे हटकर एक नगरका निर्माण करना पड़ा।

नगरकी नींव पड़ जानेके कुछ ही दिन बाद उन्होंने ऐसीलियस देव-मंदिरके नामसे एक आश्रय-भवनकी स्थापना की। इसमें भाग कर आये हुए सभी लोगोंको अभयदान मिलता था—न तो दास स्वामीको लौटाया जाता था, न ऋणी महाजनको और न अपराधी शासकको। उनका कथन था कि इस स्थानको विशेषाधिकार प्राप्त है, देववाणीके बलपर हम इसे बनाये रख सकेंगे। पहले इस नगरमें एक हज़ारसे अधिक मकान नहीं थे, पर थोड़े ही दिनोंमें उपर्युक्त कारणसे इसकी आबादी बहुत अधिक हो गयी।

दोनों भाई नगरका निर्माण करनेके लिए बिल्कुल तैयार थे, पर स्थानके सम्बन्धमें उनमें मतभेद था। अंतमें उन लोगोंने पक्षियोंकी उड़ान देख कर इसका निपटारा करनेका निश्चय किया। पक्षियोंको देखनेके लिए वे लोग पृथक् पृथक् कुछ दूरीपर बैठ गये। कहा जाता है कि रीमसने छः और रोमुलसने बारह गृध्रोंको देखा। कुछ लोगोंका यह कथन है कि रोमुलसने वस्तुतः बारह गृध्र नहीं देखे थे, उसने झूठी बात कही थी, पर इतना अवश्य है कि जिस समय रीमस उसके पास गया उस समय उसने सचमुच बारह देखे। यही कारण है कि रोमन लोग शकुनवाले पक्षियोंमें गृध्रको विशेष महत्त्व देते हैं। हिरोडोटस पांटिकसका कथन है कि हरकुलीज कोई कार्य करते समय इस पक्षीको देखकर बहुत प्रसन्न होता था, क्योंकि यह किसीको नुक्सान नहीं पहुँचाता। न तो यह किसी फसलको क्षति पहुँचाता है और न फलदार वृक्षों या मवेशियोंको। यह केवल मरे-हुए जानवरोंको खाकर अपनी उदर-पूर्ति करता है, किसी जीवधारीको नहीं मारता। अपनी जातिके होनेके कारण यह मरे हुए अन्य पक्षियोंको भी नहीं खाता। दूसरे पक्षी तो हम लोगोंको बराबर दृष्टिगोचर होते रहते हैं पर यह बहुत कम देख पड़ता है। शायद ही किसी व्यक्तिने इसका बच्चा देखा हो। इसके कम पाये जानेके कारण कुछ लोगोंका यह भी खयाल है कि यह देशान्तरसे आकर दर्शन दिया करता है, अस्तु।

रीमसको जब रोमुलसकी धूर्तताका पता लगा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ । एक दिन रोमुलस नगर-प्राचीरके निमित्त खाई खुदवा रहा था; रीमसने उसी समय आकर कुछ कामोंकी हँसी उड़ायी और कुछ कार्योंमें बाधा भी डाली । वह तिरस्कारमें ही उक्त खाईको लाँघ रहा था कि उसमें गिर कर मर गया । कुछ लोग रोमुलसपर ही उसे खाईमें गिरा देनेका अपराध लगाते हैं और कुछ लोग रोमुलसके मित्र सेलरपर । फास्टुलस भी इसी अवसरपर मारा गया । सेलर तस्कनीकी ओर भाग गया ।

रीमसकी अन्त्येष्टि-क्रियाके बाद रोमुलस नगर-निर्माणके कार्यमें प्रवृत्त हुआ । उसने तस्कनीसे कुछ विशेषज्ञोंको बुलवाया । उन्होंने उसे धार्मिक कृत्यकी तरह सभी कार्य शास्त्रोक्त विधिसे करनेका निर्देश किया । वर्तमान न्याय-भवनके पास ही एक गोल गड्ढा खोदा गया । पहले तो उसमें उस ऋतुके उत्तम समझे जानेवाले प्रथम फल डाले गये, तत्पश्चात् सबने मिलकर अपने देशसे लायी हुई मिट्टी डाली । इसी स्थानको केन्द्र मान कर एक वृत्त खींचा गया जो नगरका घेरा माना गया । अब रोमुलसने पीतलके फालवाला एक हल तैयार करा कर उसमें एक बैल और एक गाय जोती । वह आगे आगे वृत्तका अनुसरण कर हल चलाता जाता था और पीछे पीछे उसके अनुयायी फालसे निकले हुए ढेलोंको, जो वृत्तके बाहर पड़ जाते थे, भीतर नगरकी ओर, फेंकते जाते थे । इस प्रकार दीवार खड़ी करनेके लिए चारो ओर निशान बना दिया गया । जिस स्थानपर द्वार रखना अभिप्रेत था वहाँ हलका फाल ऊपर उठा लिया जाता था । यही कारण है कि रोमन लोग दीवारको पवित्र मानते हुए भी द्वारोंको ऐसा नहीं मानते । यदि ऐसा न होता तो धर्मपर आघात पहुँचाये बिना कुछ ऐसी वस्तुओंका आयात-निर्यात स्वच्छन्दतापूर्वक न हो सकता जो मानव-जीवनके उपयोगमें आती हुई भी अपवित्र मानी जाती हैं ।•

नगर-निर्माणका कार्य २१ अप्रैलको शुरू हुआ था, इस सम्बन्धमें कोई मतभेद नहीं है । रोमन लोग इस दिनको, नगरका जन्म-दिन होनेके

कारण, बहुत पवित्र मानते हैं। कहा जाता है कि शुरू शुरूमें रोमन लोग नगर-जन्मोत्सव बड़ी पवित्रतासे मनाते थे और उस दिन किसी जीवकी बलि चढ़ाना उचित नहीं समझते थे। किन्तु नगर-निर्माणका काम पूरा होनेके पहलेही इस दिन गोपों और गड़रियोंका एक उत्सव रखा जाने लगा जो परीलिया नामसे प्रसिद्ध हुआ। रोमन और यूनानी महीनोंमें कोई समानता नहीं पायी जाती, फिर भी ऐसा विदित होता है कि नगरकी नींव महीनेकी तेरहवीं तारीखको डाली गयी थी। यह भी कहा जाता है कि उस दिन सूर्यग्रहण हुआ था जो एंटिमेकस नामक कवि द्वारा छठें ओलिम्पियड (वर्ष-चतुष्टय) के तीसरे वर्षमें लक्षित हुआ था। वारो नामक दार्शनिकका तारशियस नामक एक मित्र था। यह दर्शन और ज्योतिषका प्रकांड विद्वान् समझा जाता था। वारोने इससे रोमुलसके कार्योंके आधारपर गणना कर उसका जन्मदिन निकालनेका अनुरोध किया, क्योंकि इस विद्याके द्वारा व्यक्तिका जन्मदिन ज्ञात होनेपर उसके जीवनकी घटनाएँ और घटनाएँ मालूम होनेपर जन्मदिन निकाला जा सकता था। तारशियसने वारोका अनुरोध स्वीकार कर लिया। रोमुलसके कार्यों, आयु, रहन-सहन इत्यादिके आधारपर उसने जो गणना की उसके हिसाबसे रोमुलस ओलिम्पियडके दूसरे वर्षकी २३वीं दिसम्बरको, जब कि सूर्यग्रहण हुआ था, गर्भमें आया, २३वीं दिसम्बरको प्रातःकाल उसका जन्म हुआ और नवीं अप्रैलके दूसरे और तीसरे घंटेके बीच उसने रोम नगरकी नींव डाली।

नगर निर्माणका कार्य समाप्त हो जाने पर रोमुलसने सैनिक होने योग्य मनुष्योंको चुनकर एक सेना खड़ी की। उसने सारी सेनाको तीन-तीन सहस्र पदातियों और पाँच-पाँच सौ अश्वारोहियोंकी टुकड़ियोंमें बाँट दिया। सौ प्रमुख व्यक्तियोंको चुन कर उसने एक 'सिनेट' (कुलीन-सभा) स्थापित की जिसके सदस्य 'पैट्रीशियन' (कुलीन) कहलाते थे। शेष लोग 'सर्वसाधारण' में परिगणित थे। कुलीन लोग पिताकी तरह अपने

अधीनस्थ लोगोंकी देख-भाल करते थे तथा, ये लोग भी उनका विशेष सम्मान और सहायता करते थे। कुलीन लोग मुकदमोंमें इनकी मदद और पैरवी भी करते थे। इन दोनों श्रेणियोंका पारस्परिक सम्बन्ध इतना दृढ़ माना जाता था कि कोई मजिस्ट्रेट एकके विरुद्ध दूसरेको गवाही देनेके लिए बाध्य नहीं कर सकता था।

नगर-निर्माणके चौथे मासमें स्त्रियोंके अपहरणका कार्य आरंभ हुआ। रोमुलस स्वभावतः यौद्धिक प्रवृत्तिका मनुष्य था; इसके अलावा एक देववाणीके कारण उसकी यह धारणा दृढ़ हो गयी थी कि युद्धजनित लाभोंसे ही रोम नगरकी श्री-वृद्धि होगी। इसलिए, स्त्रियोंका अभाव न होनेपर भी, महज़ युद्ध छेड़नेके उद्देश्यसे उसने तीस सेबाइन स्त्रियोंका हरण किया। पर अधिकांश लोग इस बातसे सहमत नहीं है। उसने देखा कि नगर अविवाहित और निम्न श्रेणीके लोगोंसे भरता जा रहा है जो समाजमें समादृत न होनेके कारण किसी एक स्थानपर अधिक कालतक न टिक सकेंगे। उसे यह भी आशा थी कि औरतोंके सन्तुष्ट हो जाने पर सेबाइन लोगोंसे मैत्री हो जायगी और परस्पर व्यापारिक सम्बन्ध भी स्थापित हो जायगा। इन्हीं विचारोंसे प्रेरित होकर, अनुचित होनेपर भी उसने इस उपायका अवलंबन किया। उसने पहले यह प्रकट किया कि मैंने पृथ्वीके नीचे 'कानसस' नामक देवताकी वेदी पायी है। इसके बाद उसने एक दिन नियत कर धूमधामके साथ बलिदान चढ़ाने, तरह तरहके खेल होने और छोटे बड़े सबको शामिल करनेकी घोषणा कर दी। नियत समयपर वहाँ जनताकी अपार भीड़ लग गयी। रोमुलस लाल वस्त्र धारण कर कुलीनोंके मध्यमें बैठ गया। खड़ा होना तथा वस्त्र सँभाल कर बदनपर रखना उसने आक्रमणका संकेत निश्चित किया था। उसके आदमी पहलेसे ही अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित हो उसकी तरफ दृष्टि किये खड़े थे। संकेत पाते ही उन्होंने म्यानसे तलवारें निकाल लीं और नारे लगाते हुए सेबाइन कन्याओंपर टूट पड़े; पर सेबाइन लोगोंके भागनेमें उन्होंने

किसी प्रकारकी रुकावट न डाली । कुछ लोग कन्याओंकी संख्या केवल तीस ही बतलाते हैं पर वैलेरियस एंट्रियसके मतसे ५२७ और जूबाके मतसे ६८३ कन्याओंका अपहरण हुआ । ये सबकी सब कुमारी थीं, हर्सीलिया नामकी सिर्फ एक स्त्री विवाहिता थी जो गलतीसे पकड़ ली गयी थी। रोमुलसके लिए यह एक अच्छा बहाना था, क्योंकि सिर्फ कुमारियोंका अपहरण इस बातका सूचक था कि उन लोगोंने किसी बुरे उद्देश्यसे नहीं, बल्कि पड़ोसियोंके साथ दृढ़ सम्बन्ध-सूत्रमें आबद्ध होनेके विचारसे ही प्रेरित होकर यह कार्य किया था । कुछ लोगोंके कथनानुसार उक्त हर्सीलियाने एक प्रसिद्ध रोमनके साथ विवाह कर लिया पर कोई कोई कहते हैं कि उसने रोमुलसके ही साथ विवाह किया जिससे उसके दो सन्तानें हुईं ।

कुमारियोंका अपहरण करनेवालोंमें कुछ क्षुद्राशय भी थे । ये लोग एक सर्वसुन्दरी बालाको लिये जा रहे थे । मार्गमें कुछ उच्चवर्गीय लोग मिले और उन्होंने जब इस बालाको छीननेका प्रयत्न किया तो ये लोग कहने लगे कि हम इसे टलेसियसके पास लिये जा रहे हैं । टलेसियस जैसे उत्तम व्यक्तिका नाम सुन कर उन्होंने बड़ी प्रसन्नताके साथ अपनी सहमति दे दी । इतना ही नहीं बल्कि उनमेंसे कुछ टलेसियसका नामोच्चारण करते हुए प्रसन्नतापूर्वक इनके साथ हो लिये । इस समय भी रोमन लोग विवाहके अवसरपर टलेसियसके गीत गाते हैं, क्योंकि उनका कहना है कि इस विवाहने उसका जीवन परम सुखमय बना दिया । पर कार्थेजके बड़े विद्वान् सेक्सटियस सिल्लाका कथन है कि रोमुलसने इसी शब्द (टलेसियस) को अपहरणका संकेत ठहराया था, इस कारण कुमारी प्राप्त करनेवाले प्रत्येक व्यक्तिने इस शब्दका उच्चारण किया और यही कारण है कि विवाहके समय यह प्रथा अबतक चली आती है । कई लोगोंका, विशेषकर जूबाका, यह मत है कि नवविवाहिता स्त्रियोंको गृहिणीधर्म तथा सूत कातनेके प्रति, जिसे यूनानीमें 'टलेसिया' कहते हैं,

प्रोत्साहन देनेके निमित्त इस शब्दका उच्चारण किया जाता है। उस समय तक इटालियन शब्दोंका उतना प्रचार नहीं था, यूनानी शब्द ही अधिकतर काममें आते थे। यदि रोमन लोगोंने वस्तुतः इस शब्दका प्रयोग उसी अवसरपर किया हो जिसपर हम लोग करते हैं, तो इस प्रथाका निम्न-लिखित कारण अधिक संभव जान पड़ता है। जब रोमन लोगोंके साथ युद्धमें सेबाइन लोगोंने समझौता कर लिया तो इनकी कन्याओंके सम्बन्ध-में यह बात तै पायी कि वे सूत कातनेके अलावा अपने पतिके और कोई छोटे मोटे काम न करेंगी। उसी समयसे यह प्रथा चल पड़ी कि विवाहके समय कन्यापक्षके लोग मज़ाक़में इस शब्दका उच्चारण कर यह सूचित करते हैं कि वधू सूत कातनेके अलावा और कोई काम नहीं करेगी। आज भी यह प्रथा प्रचलित है कि नववधू पतिके गृहमें प्रवेश करते समय देहरीको स्वयं नहीं नाँघती, वल्कि और लोग उसे उठा कर पार कर देते हैं। यह प्रथा इस बातका स्मरण दिलाती है कि सेबाइन कन्याएँ अपनी मर्ज़ीसे न आकर बलपूर्वक लायी गयी थीं। कुछ लोगोंका कथन है कि भालेकी नोकसे सीमन्त बनानेकी प्रथा भी इसी बातकी सूचक है कि पहले पहल उनके विवाह युद्ध और शत्रुताके कार्योंसे ही आरंभ हुए थे।

सेबाइन लोग लड़ाके और संख्यामें काफी थे। वे लोग छोटे छोटे प्राचीरविहीन ग्रामोंमें रहते थे क्योंकि उन लोगोंका यह ख्याल था कि लेसिडिमोनियन लोगोंके उपनिवेश-वासियोंको वीर और निःशंक होना ही चाहिये। इतना होनेपर भी उन्होंने एकाएक रोमुलसके विरुद्ध युद्ध घोषित न कर एक दूत द्वारा नरमियतके साथ यह अनुरोध किया कि हमारी कन्याएँ हमें वापस कर दी जायँ, जो पाशविक कार्य हुआ है उसके प्रति घृणा प्रकट की जाय और तब दोनों राष्ट्रोंमें समझदारीके साथ उचित रीतिपर मैत्रीका सम्बन्ध स्थापित हो। रोमुलसने कन्याओंको लौटानेसे इनकार करते हुए भी मित्रताका सम्बन्ध स्थापित करनेका प्रस्ताव किया। इसपर कुछ सेबाइन लोग बहुत दिनोंतक हाथ-मटक्किर करते रहे, पर

किसी निश्चयपर नहीं पहुँच सके। अन्तमें सेनिनेन्स लोगोंका अधिपति एक्रॉन, जो उत्साही और वीर भी था, यह सोच कर कि यदि रोमुलस ठीक रास्तेपर न लाया गया तो लोगोंपर उसका आतंक इतना बढ़ जायगा कि वस्तुतः असह्य हो जायगा, उसके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ और एक बड़ी सेना लेकर उसपर आक्रमण करनेके लिए आगे बढ़ा। रोमुलस भी उसके साथ युद्ध करनेके लिए अग्रसर हुआ। आमने सामने होने पर उन्होंने एक दूसरेको द्वन्द्व युद्धके लिए ललकारा, सैनिक अपने शस्त्रोंके साथ पासमें खड़े रहे, उन्होंने इसमें कोई भाग नहीं लिया। रोमुलसने बृहस्पति देवसे यह मनौती मानी कि युद्धमें विजय प्राप्त करने पर शत्रुका कवच मैं स्वयं ले जाकर अर्पित करूंगा। विजयलक्ष्मी रोमुलसपर ही प्रसन्न हुई। युद्धमे एक्रॉनकी सेनाके भी पैर उखड़ गये। रोमुलसने उसके नगरपर अधिकार कर लिया पर किसी नागरिकको कोई क्षति नहीं पहुँचायी, उसने वहाँके निवासियोंको नगर भस्म कर रोमके नागरिक बननेकी आज्ञा दी। रोमकी श्रीवृद्धिका प्रधान कारण यह था कि वह विजित लोगोंको आत्मसात् कर लिया करता था। रोमुलस मनौती चढ़ानेका कार्य ऐसी धूमधामसे करना चाहता था जिसमें उसके नागरिक देख कर हर्षोत्फुल्ल हो उठें। उसने शिविरमें उगे हुए एक बलूतके दरख्तको काट कर उसे विजय चिन्हके रूपमें सुसज्जित किया और एक्रॉनका कवच उसमें एक सैनिककी जगहपर ठीक तरहसे बाँध दिया। बदनपर वस्त्र और सिरपर 'लारेल' के पत्तोंकी मालाका मुकुट धारण कर उसने विजय चिह्नको अपने दाहिने कंधेपर रख लिया। सिरके लम्बे लम्बे बालोंके हिलनेके कारण उस समय उसका सौन्दर्य और भी बढ़ गया था। वह विजयके गीत गाते हुए आगे आगे चलता था और उसकी सारी सेना उसके पीछे पीछे जा रही थी। नागरिकोंने तुमुल हर्ष-ध्वनिके साथ उसका स्वागत किया। विजयोत्सव मनानेकी प्रथा इसी समयसे आरंभ हुई और उसका ढंग भी प्रायः यही रहा।

एक्रॉनके पराभवके अनन्तर और सेबाइन लोग जबतक युद्धकी तैयारीमें ही लगे रहे, तबतक फिडीनी, क्रस्टुमेरियम और एंटिन्नाके निवासियोंने मिलकर रोमके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। युद्धमें पराजित होने पर इन लोगोंने भी रोमुलसके हाथ आत्मसमर्पण किया। इनके नगर जला दिये गये, जमीनें बाँट दी गयीं और ये रोममें लाकर बसाये गये। रोमुलसने जो ज़मीन दखल की थी उसे अपने नागरिकोंमें बाँट दिया। पर जिन लोगोंकी कन्याओंका अपहरण हुआ था उनकी ज़मीनें उन्हींके पास रहने दी गयीं। इस कार्य्यसे अन्यान्य सेबाइन लोग क्रोधके मारे आपेसे बाहर हो गये। उन्होंने टेशियसको अपना नायक बना कर रोमके विरुद्ध यात्रा की। नगरमें प्रवेश पाना असंभव था क्योंकि दुर्गमें, जिसका वर्तमान नाम 'केपिटॉल' है, टर्पियसके अधीन एक बड़ी सेना नगरकी रक्षाके लिए प्रस्तुत थी। सेनापति टर्पियसकी पुत्री टर्पिया शत्रुओंके सुवर्ग-कंकणोंके लोभमें पड़ गयी। वह उनके बायें हाथ परकी चीज़ोंके बदलेमें दुर्ग उनके हाथ सौंपनेको तैयार हो गयी। बात पक्की हो जाने पर उसने रातको एक द्वार खोल कर शत्रुओंको अन्दर आने दिया। जिन लोगोंको ऐसे नीच व्यक्तियोंसे काम लेना पड़ता है उनमें यह बात प्रायः देखी जाती है कि जबतक उनका नाम निकलता रहता है तबतक तो इनसे प्रसन्न रहते हैं पर पीछे, काम हो जानेपर, इनकी नीचतापर घृणा करने लगते हैं। टर्पियाके साथ भी टेशियसने इसी तरहका सुलूक किया। उसने अपने आदमियोंको भीतर प्रवेश करते समय बायें हाथ परकी चीजें उतार कर टर्पियाको देनेका आदेश कर दिया और स्वयं भी अपनी ढाल और कंकण उतार कर उसकी तरफ फेंक दिया। उसके अनुयायियोंने भी ऐसा ही किया। फल यह हुआ कि बातकी बातमें ढालों और कंकणोंका ढेर लग गया और टर्पिया इन्हींके बोझसे दबकर मर गयी। जूबाके कथनानुसार रोमुलसने टर्पियसपर भी दोषारोपण किया और वह विश्वासघातका अपराधी प्रमाणित हुआ। कुछ लोगोंका यह भी कथन है कि टर्पिया टेशि-

यसकी ही पुत्री थी जिसे रोमुलसने बलपूर्वक रख लिया था और इसीने अपने पिताके साथ दुरभि सन्धि कर इस प्रकारका कार्य किया, पर यह बात बिल्कुल निराधार है। टर्पिया वहीं दफनायी गयी। कहते हैं, उसके नामपर उस पहाडीका नाम 'टर्पियस' पडा। तार्किनके राजत्व-कालमें जब यह स्थान बृहस्पति देवको समर्पित कर दिया गया, तब टर्पिया की अस्थियाँ वहाँसे खोद कर फेंक दी गयीं और इसीके साथ इस नामका भी अन्त हो गया। फिर भी 'कैपिटॉल' का वह भाग, जहाँसे अपराधी नीचे गिराये जाते थे, 'टर्पियन' पहाडीके ही नामसे प्रसिद्ध रहा।

सेबाइन लोगोंके हाथमें पहाडीके चले जाने पर रोमुलसने गुस्सेमें आकर उन्हें युद्धके लिए ललकारा। टशियसको इसे स्वीकार करनेमें कोई अडचन न थी, क्योंकि वह जानता था कि पराभूत होनेकी हालतमें हमारे लिए एक दृढ आश्रय स्थान प्रस्तुत है। समरांगण भूमि छोटी छोटी पहाड़ियोंसे परिवेष्टित थी, मार्गोंकी कमीके कारण भागने या पीछा करनेकी सुविधा बिल्कुल न थी। स्थानकी यह कठिनाई प्राणोंका मोह छोड कर भीषण युद्ध करनेके लिए दोनों दलोंको बाध्य सी कर रही थी। कुछ ही दिन पहले नदी बढ़ आयी थी जिससे मैदानमें दलदल और पंक काफी पड गया था। ऊपरसे देखनेमें यह अधिक नहीं मालूम होता था पर भीतर ही भीतर बहुत खतरनाक था। सेबाइन लोग इस मैदानमें प्रवेश करनेवाले ही थे कि भाग्यसे बच गये। बात यह हुई कि कर्टियस नामक एक यशःकामी वीर अपने घोडेको सरपट दौडाता हुआ सेनाके आगे आगे जा रहा था। एकाएक उसका घोडा दलदलमें फँस गया। यथाशक्ति प्रयत्न करने पर भी घोडेको निकालनेमें अपनेको असमर्थ देख कर उसने किसी तरह अपनी जान बचायी। उसी समयसे इस स्थानका नाम, अश्वारोहीके नामपर, 'कर्टियन झील' चला आ रहा है। इस खतरेसे बच निकलने पर सेबाइन लोगोंने भीषण युद्ध आरंभ कर दिया। बहुतसे सैनिक खेत रहे, पर विजय किसकी हुई, इसका निश्चय न हो सका। वैसे तो बहुतसे छोटे मोटे युद्ध

हुए होंगे, पर सबसे स्मरणीय यह अन्तिम युद्ध था जिसमें सरमें पत्थरकी चोट लगनेके कारण रोमुलसके गिर पड़ने पर रोमन सेना खड़ी न रह सकी और पीछा किये जाने पर फ्लेटिनम पहाड़ीकी तरफ़ भाग चली। कुछ सँभलने पर रोमुलसने अपनी भागती हुई सेनाको रुकने और युद्ध करनेके लिए उच्च स्वरसे प्रोत्साहित किया पर सबको भागते हुए और किसीमें लौटकर युद्ध करनेका साहस न देखकर उसने बृहस्पति देवसे सेनाको रोकने और रोमकी प्रतिष्ठाको, जो इस समय संकटमें थी, बचाये रखनेकी प्रार्थना की। प्रार्थना समाप्त होते होते बहुतेरे सैनिक लज्जा और राजाके प्रति सम्मानके भावसे प्रेरित होकर रुक गये। उनका भय आत्मविश्वासमें परिवर्तित हो गया। वे पुनः व्यूह बनाकर सेवाइन लोगोंका सामना करनेके लिए प्रस्तुत हो गये और उन्हें वर्तमान रेजिया नामक स्थानतक पीछे हटा ले गये। यहाँ दोनों दलोंमें युद्ध आरंभ होनेको ही था कि एक विचित्र और वर्णनातीत दृश्यसे वह रुक गया। सेवाइन लोगोंकी वे लड़कियाँ, जिनका हरण किया गया था, बदहवासीमें रोती-पीटती दोनों दलोंके मध्य, हताहतोंके बीच, दौड़ आयीं। उनमेंसे कुछ पिताओंकी ओर गयीं और कुछ पतियोंकी ओर; कुछकी गोदमें बच्चे थे और कुछके बाल बिखरे हुए थे। वे बड़े ही विनम्र और प्यारके शब्दोंमें कभी सेवाइन लोगोंको और कभी रोमनोंको सम्बोधन करने लगीं। इस पर दोनों दलोंके सैनिक दयार्द्र हो कर पीछेकी ओर हट गये और उनके लिए बीचका स्थान खाली कर दिया। इन स्त्रियोंके दर्शन मात्रसे सैनिकोंमें शोक और करुणाका उद्रेक हो आता था। उनकी बातें, जो तर्क और भर्त्सनासे आरंभ होकर विनय और प्रार्थनासे समाप्त होती थीं, सैनिकोंपर और भी प्रभाव डालती थीं। वे कहती थीं—"हम लोगोंने आप लोगोंका क्या अपराध किया है कि इस प्रकार कष्ट पाती आयी हैं और पा रही हैं? जिन्होंने हम लोगोंका जबर्दस्ती और अन्यायसे अपहरण किया था, हम इस समय उन्हींकी हैं; उस समय हमारे पिता, भाई तथा देशवासी

हमारी कुछ भी सहायता न कर सके। हम जिनसे हृदयसे घृणा करती थीं, आज उन्हींसे साथ दृढ़तम बन्धनोंमें बँधी हुई हैं। अब हमारे लिए यह संभव नहीं कि उनके संकटोंको देख कर भयभीत न हों या उनकी मृत्युपर अश्रुपात न करें। जब हम कुमारी थीं तब आप लोग हमारी इज्जतकी रक्षाके लिए नहीं पहुँच सके; अब स्त्रियोंको पतियोंसे और माताओंको बच्चोंसे पृथक् करनेके लिए आये हैं! आप लोगोंकी पहली लापरवाहीसे जो तकलीफ पहुँची है उससे यह उद्धारका कार्य कहीं अधिक कष्टप्रद है। हम लोग किसे अधिक बुरा समझें—उन लोगोंके प्रणयको या आप लोगोंकी दयाको? यदि आप लोग और कोई कारण लेकर युद्धके लिए प्रस्तुत हुए हों तो भी हम लोगोंके खयालसे उन लोगोंसे युद्ध न करें जिनके श्वशुर और नाना आप बन चुके हैं। यदि आप लोग हमारा पक्ष लेकर आये हैं तो अपने जामाताओं और दौहित्रोंके साथ हमें ले चलें। आप हमें माता पिता तथा सम्बन्धियोंसे मिलायें पर पतियों और पुत्रोंसे वंचित न करें।' हर्सीलिया तथा अन्यान्य महिलाओंके इस प्रकार प्रार्थना करने पर दोनोंमें विराम सन्धि हो गयी। सन्धि विषयक बातोंपर विचार करनेके लिए प्रधान अधिकारी सन्धि-सभामें एकत्र हुए। इस कालमें इन महिलाओंने अपने पति और बच्चोंको लाकर पिता और भाइयों आदिसे मिलाया, जिन्हें आवश्यकता थी उनके लिए भोजन तथा अन्य वस्तुएँ पहुँचायीं और आहतोंको सेवा शुश्रूषाके निमित्त उठा कर घर ले गयीं। उन्होंने यह भी बतलाया कि घरमें उनका कितना अधिकार है और पति लोग उनके साथ किस प्रकार दया एवं सम्मानपूर्वक बर्त्ताव करते हैं। इसपर दोनों दलोंमें स्थायी सन्धि होगयी। शर्तें ये तय हुईं कि जो औरतें अपने पतिके साथ रहना चाहती हैं वे सूत कातनेके अलावा और कामोंसे बरी कर दी जायँ, रोमन और सेबाइन लोग मिल कर नगरमें बसें, नगरका नाम रोमुलसके नामपर 'रोम' और नागरिकोंका टेशियसकी राजधानीके नामपर 'कुराइट' रहे तथा नगरपर रोमुलस और टेशियस दोनोंका

सम्मिलित शासन रहे। जिस स्थानपर सन्धि हुई थी वह इस समय भी कमिटियम* कहलाता है।

इस प्रकार नगरकी आबादी दूनी होजाने पर सेबाइन लोगोंमेंसे भी सिनेटके लिए सौ सदस्य चुन लिए गये। सेना भी काफी बढ़ गयी। अब प्रत्येक टुकड़ीमें छः हज़ार पैदल और छः सौ घुड़सवार हो गये। सर्व-साधारण तीन जातियोंमें विभक्त कर दिये गये। पहली जातिका नाम-करण रोमुलसके नामपर और दूसरीका टेशियसके नामपर किया गया तथा तीसरी लुकस (कुंज)के नामपर 'लुसरीज' कहलायी। प्रत्येक जातिमें दस घराने रखे गये। कुछ लोगोंका यह ख़याल है कि इन घरानोंके नाम सेबाइन महिलाओंके नामपर रखे गये हैं, पर यह बात ठीक नहीं मालूम होती क्योंकि कई घरानोंके नामका सम्बन्ध भिन्न भिन्न स्थानोंसे था। फिर भी इतना अवश्य है कि उन लोगोंने महिलाओंके सम्मानके विचारसे कई नियम बनाये थे—यथा, भेंट होनेपर उन्हें मार्ग देना; उनके सम्मुख अश्लील शब्दोंका उच्चारण न करना; उनके सामने नंगे न जाना, जानेपर नरहत्याका अपराधी होना; उनके बच्चोंके गलेमें 'बुल्ला' नामक खिलौना बाँधना और बदनपर लाल किनारीदार साया पहनाना······इत्यादि।

जहाँ आजकल मोनेटाका मन्दिर है वहीं टेशियसका निवासस्थान था; रोमुलसका निवास-स्थान पैलेटाइन पहाड़ीके अंचलपर था। इस स्थानपर एक जामुनका वृक्ष उगा हुआ था। कहा जाता है कि एक बार रोमुलसने अपनी ताकत आजमानेके विचारसे एवेण्टाइन पहाड़ी परसे एक भाला फेंका। वह ज़मीनमें इतना धँस गया कि बहुतोंके कोशिश करनेपर भी न उखड़ सका। यहाँकी ज़मीन सरस और उर्वरा थी। रस और खाद मिलनेपर भालेके डंडेमें, जो जामुनकी लकड़ीका बना हुआ था, शाखाएँ निकल आयीं। कुछ ही दिनोंके अन्दर यह बढ़कर एक वृक्ष हो गया। रोमन लोग इसे परम पवित्र मान कर इसकी पूजा करने

* Comitium=मिलनस्थान

हमारी कुछ भी सहायता न कर सके। हम जिनसे हृदयसे घृणा करती थीं, आज उन्हींके साथ दृढ़तम बन्धनोंसे बँधी हुई हैं। अब हमारे लिए यह संभव नहीं कि उनके संकटोंको देख कर भयभीत न हों या उनकी मृत्युपर अश्रुपात न करें। जब हम कुमारी थीं तब आप लोग हमारी इज्जतकी रक्षाके लिए नहीं पहुँच सके; अब स्त्रियोंको पतियोंसे और माताओंको बच्चोंसे पृथक् करनेके लिए आये हैं! आप लोगोंकी पहली लापरवाहीसे जो तकलीफ पहुँची है उससे यह उद्धारका कार्य कहीं अधिक कष्टप्रद है। हम लोग किसे अधिक बुरा समझें—उन लोगोंके प्रणयको या आप लोगोंको दयाको? यदि आप लोग और कोई कारण लेकर युद्धके लिए प्रस्तुत हुए हों तो भी हम लोगोंके खयालसे उन लोगोंसे युद्ध न करें जिनके श्वशुर और नाना आप बन चुके हैं। यदि आप लोग हमारा पक्ष लेकर आये हैं तो अपने जामाताओं और दौहित्रोंके साथ हमें ले चलें। आप हमें माता-पिता तथा सम्बन्धियोंसे मिलायें पर पतियों और पुत्रोंसे वंचित न करें।" हर्सीलिया तथा अन्यान्य महिलाओंके इस प्रकार प्रार्थना करने पर दोनोंमें विराम-सन्धि हो गयी। सन्धि विषयक वार्तोपर विचार करनेके लिए प्रधान अधिकारी सन्धि-सभामें एकत्र हुए। इस कालमें इन महिलाओंने अपने पति और बच्चोंको लाकर पिता और भाइयों आदिसे मिलाया; जिन्हें आवश्यकता थी उनके लिए भोजन तथा अन्य वस्तुएँ पहुँचायीं और आहतोंको सेवा-शुश्रूषाके निमित्त उठा कर घर ले गयीं। उन्होंने यह भी बतलाया कि घरमें उनका कितना अधिकार है और पति लोग उनके साथ किस प्रकार दया एवं सम्मानपूर्वक बर्त्ताव करते हैं। इसपर दोनों दलोंमें स्थायी सन्धि होगयी। शर्तें ये तय हुईं कि जो औरतें अपने पतिके साथ रहना चाहती हैं वे सूत कातनेके अलावा और कामोंसे बरी कर दी जायँ; रोमन और सेबाइन लोग मिल कर नगरमें बसें; नगरका नाम रोमुलसके नामपर 'रोम' और नागरिकोंका टेशियसकी राजधानीके नामपर 'कुराइट' रहे तथा नगरपर रोमुलस और टेशियस दोनोंका

सम्मिलित शासन रहे। जिस स्थानपर सन्धि हुई थी वह इस समय भी कमिटियम * कहलाता है।

इस प्रकार नगरकी आबादी दूनी होजाने पर सेबाइन लोगोंमेंसे भी सिनेटके लिए सौ सदस्य चुन लिए गये। सेना भी काफी बढ़ गयी। अब प्रत्येक टुकड़ीमें छः हज़ार पैदल और छः सौ घुड़सवार हो गये। सर्व-साधारण तीन जातियोंमें विभक्त कर दिये गये। पहली जातिका नाम-करण रोमुलसके नामपर और दूसरीका टेशियसके नामपर किया गया तथा तीसरी लुक्स (कुंज)के नामपर 'लुसरीज' कहलायी। प्रत्येक जातिमें दस घराने रखे गये। कुछ लोगोंका यह ख़याल है कि इन घरानोंके नाम सेबाइन महिलाओंके नामपर रखे गये हैं, पर यह बात ठीक नहीं मालूम होती क्योंकि कई घरानोंके नामका सम्बन्ध भिन्न भिन्न स्थानोंसे था। फिर भी इतना अवश्य है कि उन लोगोंने महिलाओंके सम्मानके विचारसे कई नियम बनाये थे—यथा, भेंट होनेपर उन्हें मार्ग देना; उनके सम्मुख अश्लील शब्दोंका उच्चारण न करना; उनके सामने नंगे न जाना, जानेपर नरहत्याका अपराधी होना; उनके बच्चोंके गलेमें 'बुला' नामक खिलौना बाँधना और बदनपर लाल किनारीदार साया पहनाना······इत्यादि।

जहाँ आजकल मोनेटाका मन्दिर है वहीं टेशियसका निवासस्थान था; रोमुलसका निवास-स्थान पैलेटाइन पहाड़ीके अंचलपर था। इस स्थानपर एक जामुनका वृक्ष उगा हुआ था। कहा जाता है कि एक बार रोमुलसने अपनी ताकत आजमानेके विचारसे एवेण्टाइन पहाड़ी परसे एक भाला फेंका। वह ज़मीनमें इतना धँस गया कि बहुतोंके कोशिश करनेपर भी न उखड़ सका। यहाँकी ज़मीन सरस और उर्वरा थी। रस और खाद मिलनेपर भालेके डंडेमें, जो जामुनकी लकड़ीका बना हुआ था, शाखाएँ निकल आयीं। कुछ ही दिनोंके अन्दर यह बढ़कर एक वृक्ष हो गया। रोमन लोग इसे परम पवित्र मान कर इसकी पूजा करने

* Comitium = मिलन-स्थान

लगे। अगर किसी नागरिकको यह वृद्धिशील न मालूम होकर क्षयोन्मुख मालूम होता तो वह प्रत्येक मिलनेवालेको चिल्ला कर इसकी सूचना देता था। बातकी बातमें यह समाचार नगर भरमें फैल जाता था और चारों ओरसे पानी लेकर लोग इस प्रकार दौड़ते थे मानो किसी जलते हुए घरकी आग बुझाने जा रहे हों। इसके चारों ओर दीवार खड़ी कर दी गयी थी। कहते हैं कि केयस सीजर जब उसके पासकी सीढ़ियोंकी मरम्मत करा रहा था तो कुछ मजदूरोंके जमीन खोदते समय उसकी जड़ कट गयी जिससे वह सूख गया।

सेबाइन लोग रोमन महीने काममें लाने लगे। रोमुलस तथा रोमनों-ने भी सेबाइन लोगोंकी ढाल और कवच अपनाया। वे एक-दूसरेके उत्सवों और त्योहारोंको भी मनाने लगे। पहलेका किसीका कोई त्योहार नहीं उठाया गया। कई नये त्योहार भी चल पड़े जिनमेंसे एक मेट्रोनेलिया था जो महिलाओं द्वारा युद्ध समाप्त होनेके उपलक्ष्यमें प्रवर्तित हुआ था। पलीलिया नामक त्योहारका उल्लेख ऊपर हो ही चुका है। इनके अलावा लुपरकेलिया नामका एक और त्योहार था जो शुद्धिके निमित्त फरवरीमें छुट्टियोंके दिन मनाया जाता था। कुछ लोगोंका खयाल है कि यह यूनानी त्योहार है जो इवेण्डरके साथ आये हुए आर्केडियन लोगोंके समयसे यहाँ प्रचलित हुआ था, पर यह बात सन्दिग्ध मालूम होती है। इस त्योहारका आरंभ भूरीके दूध पिलानेकी घटनासे भी माना जा सकता है, क्योंकि पुजारी लोग उत्सवका आरंभ उसी स्थानसे करते हैं जहाँ रोमुलसका फेंका जाना मानते हैं। त्योहार मनानेके ढगपर विचार करनेसे इसके आरंभका पता लगाना और भी कठिन मालूम पड़ता है। सर्वप्रथम बकरोंकी बलि चढ़ायी जाती है। इसके बाद रईसोंके दो लड़के लाये जाते हैं। कुछ लोग तो रक्त-रंजित कटारसे उनके ललाटपर चिह्न कर देते हैं और कुछ लोग दूधमें भिगोये हुए ऊनसे उस चिह्नको शीघ्र ही मिटा देते हैं। चिह्न मिटाये जाने पर उन लड़कोंको हँसना

पड़ता है। इसके अनन्तर वे बकरोंके चमड़ेको लम्बी पट्टियोंके रूपमें काट डालते हैं और सिर्फ कमरमें एक छोटीसी लँगोटी लपेट कर चारों ओर दौड़ते हैं। जो लोग मार्गमें मिलते हैं उनपर कोड़े पड़ते जाते हैं। युवती स्त्रियाँ कोड़ोंकी मारसे बचनेका प्रयत्न नहीं करतीं क्योंकि उनका यह विश्वास है कि इस मारसे गर्भधारण और सन्तानोत्पत्तिमें सहायता मिलती है। इस त्योहारमें एक विचित्र बात यह भी है कि पुजारी कुत्तोंकी बलि चढ़ाता है।

एक कविने रोमन रस्म-रिवाजोंकी व्याख्याके रूपमें बहुतसी छन्दोबद्ध दन्तकथाएँ लिखी हैं। उसका कहना है कि एमुलियसके पराभवके बाद रोमुलस और रीमस आनन्दपूर्वक दौड़ते हुए उस स्थानपर गये थे जहाँ वृकीने उन्हें दूध पिलाया था। इसीकी नकलमें दो नवयुवक उसी प्रकार चाबुक लगाते जाते हैं जिस प्रकार दोनों युग्मज अल्वा नगरसे निकलने पर नंगी तलवार लिये दौड़ते गये थे। रक्तरंजित कटारसे ललाटपर चिन्ह करना उस दिनके खतरे और रक्तपातका और उनसे चिन्ह मिटाना उनके लालन-पालनका द्योतक है। केयस एसीलियसके अनुसार त्योहारमें नंगे दौड़नेका कारण यह है कि नगर-निर्माणके पूर्व, एक दिन रोमुलस और रीमसके पशु भटक कर कहीं चले गये। उन्होंने पहले फोनस देवसे प्रार्थना की और तब पसीनेकी तकलीफसे बचनेके खयालसे नंगे ही पशुओंकी खोजमें निकल पड़े। यदि यह त्योहार केवल शुद्धिके खयालसे माना जाय तो कुत्तेके बलिदानकी बात सच मानी जा सकती है क्योंकि यूनानी लोग चित्रोंमें कुत्तेका बलिदान करते हुए दिखलाये गये हैं। यदि इसे वृकीके प्रति कृतज्ञताका त्योहार मानें तो भी कुत्तेका बलिदान युक्तियुक्त प्रतीत होता है क्योंकि यह उक्त पशुका शत्रु है।*

कहते हैं कि सर्वप्रथम रोमुलसने ही अग्निहोत्रका आरंभ कर अग्नि बनाये रखनेके निमित्त वेस्टल कहलानेवाली कुमारी कन्याएँ नियुक्त

* वृकारि = कुत्ता (संस्कृत)।

बिना बीमार पड़े ही लोग अचानक कालकवलित होने लगे। इस महामारीका ऐसा भीषण प्रभाव पड़ा कि पौधोंके अनेक मुरझा गये और गौएँ आदि बन्ध्या हो गयीं; नगरमें रक्तकी वर्षा हुई। इन कष्टोंके साथ ही साथ लोगोंपर देवताओंके कोपका आतंक भी छा गया। जब लारेण्टम भी इन्हीं कष्टोंका शिकार बना तो लोग यही अनुमान करने लगे कि टैटियस तथा दूतोंकी हत्याके सम्बन्धमें न्यायकी अवहेलना होनेके ही कारण दोनों नगरोंपर यह दैवी प्रकोप हुआ है। दोनों ओरके हत्यारोंके समर्पित और दण्डित होने पर महामारी प्रत्यक्ष रूपमें बहुत कम हो गयी। रोमुलसने नगरकी शुद्धिके लिए यज्ञ भी किया। किन्तु अभी महामारीका पूर्णतया अन्त भी नहीं हो पाया था कि कमेरियमवाले रोमपर चढ़ आये। उनका यह खयाल था कि अव्यवस्थाकी हालतमें रोमन लोग सामना न कर सकेंगे। पर रोमुलसने शीघ्र ही उनका मुकाबला किया। शत्रु पराजित हुए और उनके छ हजार सैनिक खेत रहे। रोमुलसने उनके नगरपर अधिकार कर आधे आदमियोंको तो रोम भेज दिया और जितने वहाँ बच गये थे उनसे दूने आदमी रोमसे वहाँ भेज दिये। कमेरियममें बहुत सी चीजें उसके हाथ आयीं, इनमें एक पीतलका रथ भी था जिसमें चार घोड़े जोते जाते थे। उसने इस रथको अग्निदेवके मन्दिरमें लाकर रख दिया और इसपर अपनी एक ऐसी मूर्ति बैठायी जिसे विजय देवी ताज पहना रही थी।

इस प्रकार रोमकी शक्ति दिनों दिन बढ़ती ही जा रही थी। जो पड़ोसी राष्ट्र कमजोर थे, उन्होंने चुपचाप रोमकी अधीनता स्वीकार कर ली। हमारे साथ किसी प्रकारकी छेड़छाड़ न हो, इसीको वे अहोभाग्य समझते थे। जो कुछ सबल थे, उन्होंने रोमुलसके आगे सर झुकाना स्वीकार न कर उसकी बढ़ती हुई शक्तिको रोकना चाहा। इनमें सर्व प्रधान तस्कनीके विएण्टी लोग थे। इन लोगोंने फिडेनीके सम्बन्धमें अपना दावा प्रकट कर युद्ध छेड़नेका एक बहाना ढूँढ़ निकाला। जब फिडेनीवालोंपर घोर

संकट पड़ा था, उस समय तो ये लोग सुखकी नींद सो रहे थे, किन्तु जब उनका धन-धाम दूसरेके हाथ चला गया तब ये अपना अधिकार प्रकट करने लगे। यह बात केवल अविवेकपूर्ण ही नहीं, हास्यास्पद भी थी। इनके दावेके उत्तरमें रोमुलसने इन्हें खूब खरी-खोटी सुनायीं। अब इन्होंने दो भागोंमें विभक्त होकर आक्रमण करनेका निश्चय किया—एक भागने तो फिडेनीके विरुद्ध यात्रा की और दूसरेने रोमके विरुद्ध। जो सेना फिडेनीकी ओर गयी थी उसकी विजय हुई और उसने दो हज़ार रोमनोंको कत्ल कर डाला। किन्तु दूसरे भागको रोमुलसने बेतरह हराया और इसमें शत्रुके आठ हजार सैनिक मारे गये। फिडेनीके पास फिरसे युद्ध हुआ। इस दिनकी विजयका श्रेय सिर्फ रोमुलसके ही कार्योंको प्राप्त है। इस युद्धमें उसने बड़े कौशल और साहसका परिचय दिया। उसकी शक्ति और स्फूर्ति अलौकिक सी मालूम होती थी। कहते हैं कि उस दिन जो चौदह हज़ार आदमी खेत रहे उनमें आधेसे अधिक रोमुलसके ही हथियारकी भेंट हुए। पर यह बात विश्वासके योग्य नहीं मालूम होती। सेनाके तितर-बितर हो जाने पर रोमुलसने बचे हुए आदमियोंको भाग जाने दिया। अब उसने उनके नगरपर धावा किया। युद्धमें उनको बड़ा भारी धक्का लग चुका था, इस कारण फिर सामना करनेका साहस उन्हें नहीं हुआ। अतः उन्होंने सन्धिके लिए प्रार्थना की। उन्होंने अपना एक बड़ा ज़िला और नदीपरका नमकका कारखाना रोमुलसको दे दिया और अपने पचास रईसोंको उसके पास प्रतिभूके रूपमें रखा। १५ वीं अक्तूबरको इस विजयका जुलूस निकाला गया। इसमें लड़ाईके कैदियोंके साथ शत्रुपक्षका वृद्ध सेनापति भी था जिसने अपनी अवस्थाके अनुरूप बुद्धिमत्तासे कार्य नहीं किया था। इस समय भी विजयोत्सव मनाते समय रोमन लोग एक वृद्ध व्यक्तिको, लड़केकी पोशाक पहना कर और गलेमें बुल्ला नामक खिलौना बाँध कर बाज़ार होते हुए केपिटॉल ले जाते हैं और एक व्यक्ति ऊँची आवाज़में 'सार्डिनियन लोग निक

करनेकी प्रथा चलायी। जो लोग नूमा पॉम्पिलियसको इसका प्रवर्तक मानते हैं वे भी रोमुलसके सम्बन्धमें इतना अवश्य स्वीकार करते हैं कि वह बड़ा ही धार्मिक एवं शकुन विद्यामें पारंगत था और इसी कारण वह अपने पास एक वैसा ही वक्रदंड रखा करता था जिससे प्रायः शकुन विद्या जाननेवाले पक्षियोंके उड़ानपर विचार करते समय गगनमंडलके चित्र खींचा करते थे। उसका वह वक्रदंड पैलेटियनमें रखा हुआ था। नगरपर गॉलोंका अधिकार हो जाने पर वह कहीं खो गया था, पर जब ये बर्बर वहांसे मार भगाये गये तब वह भग्नावशेषोंमें राखके ढेरके नीचे दबा हुआ पाया गया। आश्चर्यकी बात तो यह है कि जहाँ आसपासकी और वस्तुएँ जलकर खाक हो गयी थीं वहाँ इसपर आगका जरा भी असर नहीं पड़ा था। रोमुलसने कुछ विधानोंकी रचना भी की थी, उनमेंसे एक, जो कुछ कठोर था, यह था कि पत्नी किसी हालतमें पतिका परित्याग नहीं कर सकती थी, यदि पत्नी अपने बच्चोंको विष दे दे, अपने पतिकी तालियोंको देख कर नकली तालियाँ बनावे या सतीत्वका पालन न करे तो पति उसका परित्याग कर सकता था। इनके अलावा और किसी कारणसे परित्याग करने पर उसकी जायदादका एक हिस्सा पत्नीको और दूसरा हिस्सा सेरीज देवीको मिलता था। जो लोग अपनी पत्नीका तिरस्कार करते थे उन्हें यमादि देवताओंके नामपर बलि चढ़ानी पड़ती थी। रोमुलसके सम्बन्धमें यह एक विशेष बात देखी जाती है कि उसने खास पितृहत्याके लिए कोई दण्ड नहीं रखा था। वह सभी प्रकारकी हत्याओंको पितृहत्या ही कहता था। उसकी समझमें पिछले प्रकारकी हत्या तो असंभव थी और दूसरे प्रकारकी तिरस्करणीय। उसका यह विचार सुदीर्घ कालतक ठीक प्रमाणित हुआ क्योंकि लगातार छः सौ वर्षोंतक रोममें ऐसी एक भी हत्या नहीं हुई। हनीबालके युद्धके अनन्तर पितृहत्या करनेवालोंमें सर्वप्रथम लुसीयस हास्टियसका ही उल्लेख पाया जाता है।

सम्मिलित शासनके पाँचवे वर्षमें लारेंटमसे कुछ राजदूत रोम आ

रहे थे। मार्गमें टेशियसके कुछ मित्रों और सम्बन्धियोंने उन्हें लूटना चाहा। प्रतिरोध करने पर इन्होंने दूतोंको मार डाला। रोमुलस इन अत्याचारियोंको शीघ्र दंड देना चाहता था, पर टेशियसने टाल दिया। यहींसे दोनों शासकोंके बीच झगड़ेका आरंभ हुआ। न्यायसे वंचित होनेके कारण दूतोंके सम्बन्धी टेशियसपर बेतरह बिगड़े हुए थे। एक दिन जब कि टेशियस रोमुलसके साथ लैवीनियममें कोई यज्ञ कर रहा था, उसी समय उन लोगोंने उसपर आक्रमण कर उसका अन्त कर दिया और रोमुलसकी प्रशंसा करते हुए उसे उसके निवास-स्थान पर पहुँचा आये। रोमुलसने टेशियसकी लाश बड़ी धूमधामसे दफनायी पर उसके हत्यारोंसे बदला लेनेकी तरफ ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। कुछ इतिहासकारोंका कथन है कि लारेण्टमवालोंने हत्याके भयंकर परिणामका अनुमान कर हत्यारोंको समर्पित कर दिया पर रोमुलसने 'खूनका बदला खून' कह कर उन्हें छोड़ दिया। रोमुलसके इस कार्यसे लोगोंको सन्देह होने लगा और यह प्रवाद फैला कि वह अपने सह-शासककी मृत्युसे बहुत प्रसन्न है। पर इन बातोंसे सेबाइन लोगोंने कोई उत्पात या लड़ाई नहीं शुरू की; वे आदरभाव या भयसे अथवा उसे किसी देवताका प्रतिरूप समझ कर शांति पूर्वक रहते आये। कई विदेशी राष्ट्रोंने भी रोमुलसके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। उसने फिडेनीको अपने अधिकारमें कर रोममें मिला लिया। कुछ लोग तो यह कहते हैं कि उसने पहले कुछ घुड़सवारोंको फाटकके कुलाबे तोड़नेके लिए भेज दिया था और पीछे आप भी अचानक वहाँ पहुँच गया। औरोंका कहना है कि पहले फिडेनीवालोंने ही रोमन प्रदेशों पर आक्रमण कर लूटमार मचायी थी। रोमुलस उनकी घातमें लगा हुआ था। उसने दुश्मनोंको मार डाला; उनके नगरपर अधिकार कर लिया पर उसे विध्वंस नहीं किया; बल्कि उसे रोमका उपनिवेश बनाकर १३वीं अप्रैलको ढाई हज़ार आदमी वहाँ बसनेके लिए भेज दिये।

इसके कुछ ही दिनों बाद महामारीका भयंकर प्रकोप हुआ जिससे

रहे हैं' यह कहता चलता है (तस्कनी सार्डीनियाका ही एक उपनिवेश था)।

यही रोमुलसका अन्तिम युद्ध था। इसके अनन्तर उसके व्यवहारमें बहुत कुछ परिवर्तन होगया। जो लोग भाग्यके फेरसे एकाएक बहुत ऊँचे पदपर पहुँच जाते हैं, उनका व्यवहार प्रायः इसी प्रकार बदल जाया करता है। रोमुलसको अपने कार्योंपर बहुत अधिक विश्वासके साथ साथ दर्प भी होगया था। इन बातोंके कारण वह लोकप्रिय आचरणका त्याग कर शाही ठाट-बाटसे रहने लगा। अब वह शाही पोशाकमें सिंहासनपर बैठकर दर्बार भी करने लगा। अंगरक्षक आदिके रूपमें कुछ नवयुवक उसके पास रहने लगे। मार्ग चलते समय लोगोंको हटानेके लिए उसके आगे आगे छड़ीबरदार चलते थे जिनमें कुछके हाथमें चमड़ेके तस्मे भी होते थे। तस्मे इसलिए साथमें रखे जाते थे कि किसी व्यक्तिको बाँधनेकी आज्ञा होने पर वह फौरन बाँध लिया जा सके।

अल्वा-नरेश नुमिटरके मरने पर, नाती होनेकी हैसियतसे, रोमुलस ही गद्दीका अधिकारी हुआ। प्रजाका अनुग्रह प्राप्त करनेके विचारसे उसने शासनसूत्र प्रजाके ही हाथमें रख दिया और कार्य-संचालनके लिए एक वार्षिक शासक नियुक्त कर दिया। इसका फल यह हुआ कि रोमके प्रमुख व्यक्तियोंको प्रजातन्त्रके लिए प्रयत्न करनेका मार्ग सूझ पड़ा, जिसमें प्रजाके ही लोग बारी बारीसे शासक और शासित हुआ करें। अब सिनेटके सदस्योंका राज्य-संचालनके कार्यमें कोई हाथ नहीं रह गया था, सिर्फ उपाधि शेष रह गयी थी। सिनेटकी बैठकोंमें वे राय देने न जाकर सिर्फ रस्म अदा करने जाते थे और राजाज्ञाओंको चुपचाप सुन कर चले आते थे। वे साधारण जनतामें सिर्फ इसी एक बातमें बड़े हुए थे कि निश्चयोंकी सूचना उन्हें सर्वप्रथम मिलती थी। इस प्रकारके बर्तावोंको, जहाँतक हो सकता था, वे सहन कर लेते थे, पर जब रोमुलस ने युद्ध द्वारा प्राप्त भूमि सिनेटकी राय या स्वीकृतिके बिना ही स्वेच्छा-

पूर्वक सैनिकोंमें बाँट दी और फिएण्टीके प्रतिभू लोगोंको भी वापस कर दिया तब सदस्योंने इसे असह्य अपमान समझा। कुछ कालके बाद रोमुलसके एकाएक गायब हो जाने पर जनता सिनेटको सन्देहकी दृष्टिसे देखने लगी। गायब होने पर ऐसा एक भी चिह्न नहीं मिला जिससे उसकी मृत्युके सम्बन्धमें कुछ निश्चय किया जा सके। वह ७ जुलाईको गायब हुआ था, यह बात उसकी मृत्यु विषयक घटनाके स्मरणमें मनाये जानेवाले त्योहारोंसे निश्चित होती है। सीपियो एफ्रिकेनसकी मृत्यु भी ऐसी ही आश्चर्यजनक थी। वह रात्रिके भोजनके बाद अपने घरमें मरा पाया गया। पर उसकी मृत्यु कैसे हुई, इसका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिला। कुछ लोग कहते हैं कि वह अत्यधिक कमज़ोर होनेके कारण मर गया, कोई कोई कहते हैं कि उसने विष खाकर आत्महत्या कर ली, कुछ लोगोंका यह भी कहना है कि रातको शत्रु उसके घरमें घुस आये और गला दबा कर मार डाला। फिर भी सीपियोके सम्बन्धमें यह बात थी कि उसका शव मौजूद था। दर्शक उसे देखकर कारणपर विचार कर सकते थे, पर रोमुलस तो गायब होते समय, शरीरकी बात तो अलग रही, अपने वस्त्रका एक टुकड़ा भी नहीं छोड़ गया। कोई चिह्न न मिलनेके कारण कुछ लोगोंने अनुमान किया कि संभवतः सिनेट (कुलीन-सभा) के सदस्योंने ही अग्निदेवके मन्दिरमें उसपर आक्रमण कर टुकड़े टुकड़े कर डाला हो और उनमेंसे प्रत्येक एक एक टुकड़ा अपने कपड़ोंमें छिपा कर लेता गया हो। औरोंका कहना है कि एक बार वह नगरके बाहर एक स्थानपर जनताके सम्मुख उच्च-स्वरसे भाषण कर रहा था, इतनेमें वायुमण्डलमें विचित्र गड़बड़ी पैदा हुई। सूर्यकी शकल काली पड़ गयी। दिन रात्रिमें परिणत होगया। घटाओंकी भीषण गर्जनाके साथ चारों ओरसे तूफान उठने लगा। सर्वसाधारण तो जिधर तिधर भाग निकले, केवल सिनेट लोग उसके पास रह गये। तूफान आदिका अंत होने पर लोग वहाँ पुनः एकत्र हुए पर उन्होंने रोमुलसको वहाँ नहीं देखा। सदस्योंसे दरियाफ्त करने पर

उन्होंने कहा कि रोमुलसके लिए विशेष जाँच पड़ताल करने या परेशान होनेकी जरूरत नहीं है, आप लोग देवताकी तरह उसकी पूजा करें, वह परम दयालु राजा था, इस कारण वह देवता रूपमें भी आप लोगोंपर अनुग्रह करेगा। लोगोंको सदस्योंके इस कथनपर विश्वास हो गया। वे अनुग्रह प्राप्त करनेकी आशामें आनन्द मानते हुए चले गये। वहाँपर कुछ ऐसे व्यक्ति भी थे जो इस प्रकारकी बातोंमें आनेवाले न थे, उन्होंने इस विषयमें खूब छान बीन कर सदस्योंपर रोमुलसकी हत्याका और भोलीभाली जनताको भुलावेमें डालनेका अपराध लगाया।

इसी गड़बड़ीकी हालतमें जुलियस प्रोकुलस नामक एक सदस्य, जो उच्चवंशीय और सदाचारी होनेके साथ साथ रोमुलसका हार्दिक मित्र भी था और उसीके साथ अल्बासे आया भी था, न्यायालयमें उपस्थित हुआ। उसने शपथ लेकर कहा कि आते समय मार्गमें रोमुलससे मेरी भेंट हुई थी। वह मुझसे मिलने आ रहे थे। इस समय वह पहलेकी अपेक्षा अधिक सुन्दर मालूम होते थे। उनके बदनपर उत्तम वस्त्र और चमकीला कवच सुशोभित था। उनके इस वेशसे भयभीत होकर मैंने पूछा "राजन्, हम लोगोंको अनुचित सन्देह तथा सारे नगरको वियोग और असीम शोकमें डाल कर आप क्यों पृथक् हुए?' इसके उत्तरमें उन्होंने कहा कि 'प्रोकुलस, देवताओंकी यही मर्जी है कि मैं यहाँ मनुष्योंमें एक नियत काल तक ही रहूँ और एक नगरका निर्माण कर, जो संसारमें सर्वश्रेष्ठ होगा, स्वर्गको वापस जाऊँ। मैं अब विदा हो रहा हूँ, रोमन लोगोंसे कह देना कि यदि वे संयम और धैर्यका अभ्यास करेंगे तो मानवी शक्तिकी चरम सीमापर पहुँच जायँगे और मैं, 'किरिनस देव', उनपर सर्वदा प्रसन्न रहूँगा।" प्रोकुलसकी ईमानदारी और उसकी शपथके कारण लोगोंने इस बातपर विश्वास कर लिया। मालूम होता था, इस समय वे दैवी प्रेरणाके कारण उत्साहसे भर गये हैं। इस बातका खण्डन करना तो अलग रहा, उन्होंने सदस्योंके प्रति जो सन्देह था

उसे भी ताकपर धर दिया और सबसे मिलकर क्विरिनसकी स्तुति एवं अभिवादन किया।

एरिस्टियस और क्लियोमीडीज़के सम्बन्धकी यूनानी दंतकथाएँ भी कुछ इसी प्रकारकी हैं। कहते हैं कि एरिस्टियसकी मृत्यु एक कपड़ेपर माँड़ी देनेवालेके कारखानेमें हुई। जब उसके मित्र उसकी खोजमें आये तो उसका शव ही लापता था। किञ्चित् कालके अनन्तर कुछ लोगोंने, जो बाहरसे आ रहे थे, यह बतलाया कि हमने उसे क्रोटोनकी ओर जाते देखा है।

क्लियोमीडीज़ बल और आकृतिमें असाधारण था पर साथ ही उद्धत और प्रमादी भी था। एक बार वह एक स्कूलकी इमारतमें घुस गया और एक खंभेपर, जिसपर छत ठहरी हुई थी, घूँसे जमाने लगा। फल यह हुआ कि खंभेके टूट जाने पर छत गिर पड़ी और लड़के दब कर मर गये। लोगोंने जब उसका पीछा किया तो वह एक सन्दूकमें घुस गया और उसका ढक्कन बन्द कर भीतरसे इतनी दृढ़ताके साथ पकड़े रहा कि कई आदमी मिल कर भी उसे नहीं खोल सके। सन्दूक तोड़ने पर उसके भीतर न तो कोई जीवित व्यक्ति मिला और न मृत। आश्चर्यमें आकर लोगोंने डेल्फीमें देववाणी करायी। उत्तर मिला 'क्लियोमीडीज ही अन्तिम वीर है।'

कहते हैं कि अलकमेनाको जब दफनानेके लिए लोग लिये जा रहे थे तो अर्थीमेंसे उसका शव गायब हो गया और उसकी जगहपर एक पत्थरका टुकड़ा पड़ा मिला। निसर्गतः मरणशील जीवोंको देवत्व प्रदान करनेके लिए इस प्रकारकी और भी बहुत सी दन्तकथाएँ कही जाती हैं। जिस प्रकार मानव गुणोंमें देववृत्तियोंको न मानना अनुचित और नीचता है, उसी प्रकार स्वर्ग और मर्त्यलोकका सम्मिश्रण भी हास्यास्पद है। पिण्डारने सत्य ही कहा है—

> 'मानव शरीर कालपाशमें बँधा हुआ है।
> सिर्फ आत्मा ही नित्य है।'

ग्वालोंके निकाल बाहर किये जानेपर रोम अभी सँभल नहीं पाया था कि लैटिन लोग लिवियस पॉस्टुमियसकी अध्यक्षतामें रोमपर चढ़ दौड़े। लिवियसने रोमकी सीमाके पास ही अपने डेरे डाले और रोमनोंको यह कहला भेजा कि यदि तुम लोग पूर्व मैत्रीको पुनः जीवित करना चाहो तो इसके लिए विवाह-सम्बन्ध परमावश्यक है। इसलिए अपनी कुमारी कन्याओं और विधवाओंको भेजकर सेबाइन लोगोंकी तरह हमारे साथ भी सम्बन्ध स्थापित करो। रोमन लोग युद्धसे डरते अवश्य थे, फिर भी उन लोगोंके विचारमें स्त्रियोंका समर्पण युद्धबन्दी बननेसे अधिक वाञ्छनीय न था। वे इसी असमंजसमें पड़े हुए थे कि फिलोटिस नामक एक दासी ने उन्हें एक युक्ति बतलायी जिसका सहारा लेने पर युद्ध और कन्या समर्पण दोनोंसे पिण्ड छुड़ाया जा सकता था। उसने कहा कि मेरे साथ कुछ सुन्दरी दासियाँ स्वतंत्र बालिकाओंकी पोशाकमें शत्रुओंके पास भेज दी जायँ और रात्रिकालमें जब मैं अग्नि जला कर संकेत करूं, हथियारबन्द रोमन लैटिनोंपर सोतेमें ही एकाएक हमला कर दें। लैटिन लोग इस धोखे में आगये। फिलोटिसने पूर्व निश्चयके अनुसार एक जंगली अंजीरपर, जो लेटिनोंकी तरफ पर्दा डाल कर ओटमें कर लिया गया था किन्तु जो रोमनोंकी तरफ खुला हुआ था, मशाल जला कर संकेत किया। संकेत पाकर रोमन लोग शीघ्रतामें एक दूसरेको पुकारते हुए निकल पड़े और उन्होंने एकाएक लेटिनोंपर हमला कर उन्हें भगा दिया। रोमनोंने इस विजयके उपलक्ष्यमें अंजीरोत्सव मनाया। वे इस दिन नगरके बाहर अंजीरकी डालियोंसे बने हुए मंडपमें स्त्रियोंको भोज देते हैं और दासियाँ इधर उधर खेलकूद करती हुई दौड़ती फिरती हैं। इसके अनन्तर वे युद्धका स्वांग करती और एक दूसरेपर पत्थर फेंकती हैं। यह इस बातका स्मरण दिलाता है कि उन्होंने युद्धमें पुरुषोंकी सहायता की थी। अधिकांश इतिहासकार इस घटनाको सत्य नहीं मानते। वस्तुतः दिनके समयमें नाम पुकारते हुए जुलूस बना कर इस तरह जाना, मानों कहीं

पूजा चढ़ाने जा रहे हों, पहली घटनासे ही सम्बन्ध मालूम होता है। संभव है, उक्त दोनों घटनाएँ भिन्न भिन्न समयपर एक ही दिन घटित हुई हों।

कहते हैं कि रोमुलसने ३८ वर्ष राज्य करने पर, ५४ वर्षकी अवस्था में, इस संसारका परित्याग किया।

रोमुलस और थीसियस

(परस्पर तुलना)

रोमुलस और थीसियसके सम्बन्धकी यही उल्लेखनीय बातें हैं। अब उनपर तुलनात्मक दृष्टिसे विचार किया जाता है। थीसियसके विषयमें यह स्पष्ट है कि वह किसी आवश्यकतासे प्रेरित होकर नहीं बल्कि अपनी स्वतंत्र इच्छासे ही महत्वपूर्ण कार्योंके सम्पादनमें प्रवृत्त हुआ था क्योंकि यदि वह चाहता तो ट्रोजनमें, जो कोई छोटा मोटा राज्य न था, शान्तिपूर्वक राज्याधिकारका उपभोग कर सकता था, पर रोमुलसके विषयमें यह बात नहीं कही जा सकती। उसमें भयके कारण, दासता और उससे बचनेके निमित्त वीरभावका उदय हुआ था, कष्टोंकी आशंकाने ही उसे कठिन कार्योंके सम्पादनमें प्रवृत्त किया था। रोमुलसके पक्षमें अल्बा नरेशका वध ही सबसे बड़ा कार्य कहा जा सकता है। पर थीसियसने आरम्भमें ही साइरन आदिका वध कर यूनानकी रक्षा की। यह कार्य इतनी शीघ्रतासे किया गया कि इन दुष्टोंके वधसे शान्ति लाभ करनेवाले यह जानने भी न पाये कि यह किसका कार्य है। इसके अलावा थीसियस जलमार्गसे भी एथेन्स जा सकता था जिसमें डाकुओंसे किसी प्रकारका भय न था पर रोमुलस एमुलियसके जीतेजी सुखकी नींद नहीं सो सकता था। यह भी देखा जा सकता है कि थीसियस स्वयं कष्ट पाने

पर नहीं। बल्कि दूसरोंके कष्टसे दयार्द्र होकर दुष्टोंका दमन करता था, पर रोमुल्स और रीमसको औरोंके कष्टमें कोई सहानुभूति न थी, स्वयं अपकृत हुए बिना वे दुष्टोंके कार्यमें बाधक नहीं होते थे। यदि सेबाइन लोगों के साथ युद्धमें आहत होना, एक्रॉन नरेशका वध करना और शत्रुओंपर विजय प्राप्त करना महत्वपूर्ण कार्य समझे जायँ तो इनके मुकाबलेमें थीसियसके उस पराक्रमका उल्लेख किया जा सकता है जो सेंटारों तथा आमेजनोंके साथ किये गये युद्धोंमें प्रदर्शित किया गया था। थीसियसने जो अथेंजके नवयुवकोंके साथ क्रीट जाना स्वीकार कर मृत्युके मुखमें पड़ना या कमसे कम नीच और निष्ठुर मनुष्योंकी गुलामीमें जीवन व्यतीत करना पसन्द किया, यह उसके साहस, न्यायप्रियता और उदारता आदि गुणोंका परिचायक है। दार्शनिकोंने प्रेमकी जो यह परिभाषा की है कि देवताओंने सन्तानकी देखभाल तथा रक्षाके निमित्त ही इसकी (प्रेमकी) सृष्टि की है, मुझ ठीक ही मालूम होती है। ऐसा जान पड़ता है मानो थीसियसकी रक्षाके लिए ही किसी देवताने एरिएड्नीके हृदयमें उसके प्रति प्रेम उत्पन्न किया था। थीसियससे प्रेम करनेके कारण वह दोषी नहीं ठहरायी जा सकती। आश्चर्य तो इस बातपर है कि और स्त्रियों भी उससे क्यों नहीं प्रभावित हुईं।

थीसियस तथा रोमुलस दोनोंमें ही शासकीय प्रवृत्ति थी, पर इन दोनोंमेंसे कोई भी वास्तविक नरेशके रूपको प्राप्त नहीं हुआ बल्कि बीचमें ही मार्गसे विचलित होकर अपनी मनोवृत्तिके अनुसार एक तो लोकप्रियताके मार्गका पथिक हुआ और दूसरा स्वेच्छाचारिताके मार्गका। अपने पदको बनाये रखना शासकका प्रथम कर्तव्य होना चाहिए। इसके लिए अनुचित बातोंका त्याग भी उतना ही आवश्यक है जितना उचित बातोंका ग्रहण। जो अपने अधिकारोंको छोड़ देता है या बहुत अधिक बढ़ा लेता है वह शासक नहीं बना रह सकता। वह या तो प्रजातन्त्रवादी होकर रहेगा या स्वेच्छाचारी और इस हालतमें वह शीघ्र

ही प्रजाकी घृणाका पात्र बन जायगा। पहला कोमल स्वभाव और सज्जनताका स्वाभाविक परिणाम है और दूसरा घमण्ड एवं कठोरताका।

क्रोधके आवेशमें आकर विना सोचे समझे कार्य कर बैठनेका दोष दोनोंमें पाया जाता है—रोमुलसका व्यवहार भाईके प्रति और थीसियस-का अपने पुत्रके प्रति इसी प्रकारका है। पर यदि इस क्रोधके मूल कारणपर विचार किया जाय तो थीसियसका क्रोध रोमुलसकी अपेक्षा अधिक क्षम्य मालूम होता है। रोमुलस उस समय अपने भाईके साथ एक सार्वजनिक विषयपर परामर्श कर रहा था। उसके एकाएक इतने उत्तेजित हो जानेका कारण ही नहीं था, लेकिन थीसियसकी परिस्थिति कुछ और थी। प्रेम, द्वेष और स्त्रीकी शिकायतोंके कारण थीसियस अपने पुत्रके साथ उस तरह पेश आनेको लाचार हुआ था। और ये बातें हैं भी ऐसी कि विरला ही इनकी अवहेलना कर सकता है। रोमुलसने क्रोधमें आकर अपने भाईका अन्त ही कर दिया पर थीसियसका क्रोध दुर्वचन और बूढ़ोंकी तरह शाप देकर ही शान्त हो गया। उसके पुत्रकी मृत्युविषयक घटनाका कारण दैवदुर्विपाक ही समझना चाहिए।

रोमुलसके पक्षमें एक बात यह कही जा सकती है कि उसका आरंभ अत्यन्त निम्न स्थितिसे हुआ था—दोनों भाई पहले दास और चरवाहेके पुत्र माने जाते थे। स्वयं स्वतंत्र होनेके पूर्व उसने सभी लैटिनोंको स्वतंत्रता प्रदान की थी। फलस्वरूप उसे 'शत्रुमर्दन', 'मित्ररंजन' आदि कई महत्वपूर्ण उपाधियाँ प्राप्त हो गयीं। थीसियसने कई नगरोंका विध्वंस कर अपने नगरकी वृद्धि की, पर रोमुलसके पास ऐसा कोई नगर न था जिसकी वह वृद्धि करता। उसे स्वयं नगरका निर्माण करना पड़ा, किन्तु इसके लिए उसने किसी नगरको मटियामेट नहीं किया। जो लोग गृह रहित थे उन्हें लाकर उसने अपने नगरका नागरिक बनाया। उसने थीसियसकी तरह दुष्टों और डाकुओंका तो संहार नहीं किया पर राष्ट्रोंका दमन अवश्य किया, नगरोंपर अधिकार किया और राजाओं तथा सेनानायकोंको नीचा

दिखाया। रीमसकी हत्या किसने की, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। यह दोष प्रायः औरोंके ही मत्थे मढ़ा जाता है। उसने अपनी माताके कष्टोंका निवारण किया और अपने नानाको, जो अधीनतामें पड़ा हुआ था, पुनः सिंहासनारूढ कर उसके साथ और भी कितने ही उपकार किये, पर थीसियसपर लौटती बार उजला पाल उड़ानेमें लापरवाही दिखलानेके कारण पितृ-हत्याका दोष लगाया जा सकता है।

थीसियसका महिलापहरण सम्बन्धी दोष सर्वथा अक्षम्य है। उसने यह कार्य बार बार किया, यहाँ तक कि ५० वर्षका बूढा होनेपर भी उसने अल्पवयस्का हेलेनका अपहरण किया। इसके अलावा कई अपहृत स्त्रियाँ उसके साथ विवाह-सूत्रमें भी नहीं बँधी हुई थीं। इस हालतमें थीसियस प्रमाद और कामुकताके लांछनसे नहीं बच सकता। इसके विरुद्ध रोमुलस-ने ८०० कुमारियोंके हाथमें आने पर भी अपने लिए केवल हर्सीलियाको रख कर शेषको अपने नागरिकोंमें वितरित कर दिया और उनके प्रति सद्भावपूर्ण बर्ताव कर यह भी प्रमाणित कर दिया कि इस कार्यका एक मात्र उद्देश्य समाजकी स्थापना करना है। इसका फल यह हुआ कि दोनों राष्ट्र परस्पर मिलकर एक हो गये। रोमुलसके कारण विवाह-सम्बन्धने ऐसा प्रेममय और स्थायी रूप धारण किया कि २३० वर्षोंके अन्दर स्त्री या पतिकी ओरसे तिलाकका कोई अवसर ही नहीं उपस्थित हुआ। थीसियसके विवाहों और अपहरण-कार्योंका परिणाम ठीक इसके विपरीत हुआ, यहाँ तक कि कई राष्ट्रोंके साथ साधारण शत्रुता ही नहीं, बल्कि युद्ध भी हो गये और एफिड्नी जैसे प्रान्तको अपने हाथसे खोना पड़ा। यदि जन्मविषयक बातोंपर विचार किया जाय तो रोमुलसकी रक्षापर देवताओंका विशेष ध्यान देख पड़ता है पर थीसियसका जन्म, देववाणीका खयाल करते हुए, देवताओंकी इच्छाके प्रतिकूल ही मालूम होता है।

३—थेमिस्टॉक्लीज़

थेमिस्टॉक्लीज़का जन्म एक मामूली परिवारमें हुआ था। उसका पिता निओक्लीज़ अर्थेज़का कोई प्रसिद्ध व्यक्ति न था। वह फ्रीरी नगरका रहनेवाला और लियाण्टिस जातिका था। उसकी माता एब्रोटनन ग्रेसके एक क्षुद्र कुलमें उत्पन्न हुई थी। फेनियसका कथन है कि उसकी माताका नाम यूटर्पी था और वह केरियाकी रहनेवाली थी। वर्णसंकर बालकोंको नगरके बाहरकी व्यायामशालामें (जो हरकुलीजको समर्पित की गयी थी क्योंकि उसकी माता मनुष्य जातिकी और पिता देवता होनेके कारण वह भी वर्णसंकर माना जाता था) अभ्यास करने जाना पड़ता था। थेमिस्टॉक्लीज बहुतसे नवयुवकोंको अभ्यास करानेके निमित्त उसी व्यायामशालामें ले जाया करता था। ऐसा करनेमें उसका अभिप्राय यह था कि ऊँच-नीच एवं शुद्ध-वर्णसंकर आदिका जो परस्पर भेदभाव था वह मिट जाय। चाहे जो हो, पर इतना अवश्य निश्चित है कि लाइकोमीडी वंशसे उसका रिश्ता था क्योंकि साइमोनीडीसके कथनानुसार उसने उस वंशके प्रार्थनाभवनको, जिसे फारसवालोंने भस्मीभूत कर दिया था, फिरसे बनवा कर उसे चित्रों आदिसे खूब अलंकृत कराया था।

बाल्यावस्थासे ही वह क्रोधी और उग्र स्वभावका था। उसकी बुद्धि बड़ी कुशाग्र थी और महत्त्वपूर्ण कार्योंके लिए उसमें प्रबल आकांक्षा थी। छुट्टियोंमें तथा अध्ययनसे अवकाश मिलनेपर वह खेल या आलस्यमें समय व्यतीत न कर कोई न कोई भाषण तैयार करता रहता था, जिसका विषय प्रायः किसी सहपाठीपर दोषारोप या दोषप्रक्षालन होता था। उसकी यह हालत देख कर उसका शिक्षक कहा करता था कि बुरा या भला, इन दोनोंमेंसे कोई एक पक्ष लेकर तुम अवश्य बड़े होगे। आचार-विचार सुधारनेके सम्बन्धमें जो उपदेश दिये जाते थे उनकी तरफ वह बहुत कम

ध्यान देता था, पर राजनीतिक और सामाजिक कार्योंके सम्बन्धमें वह अपनी अवस्थाके लोगोंकी अपेक्षा बहुत अधिक दिलचस्पी लेता था क्योंकि ये विषय उसकी प्रतिभाके अनुकूल थे और इनमें योग्य प्रमाणित होनेका उसे विश्वास भी था। बादमें अगर कभी वह ऐसे लोगोंकी मण्डलीमें पड जाता था, जो वाद्य इत्यादिमें कुशल होते थे, तो कुछ लोग इन विषयोंमे उसकी अनभिज्ञताके सम्बन्धमें चुटकी लिया करते थे। इस प्रकारकी चुटकीके उत्तरमें वह प्रायः कुछ कठोरताके साथ कहा करता था कि "ठीक है, मैंने कभी इन वाद्योंका उपयोग करना नहीं सीखा, किन्तु यदि मेरे हाथमें एक अदना नगर भी दे दिया जाय तो मैं अपनी कुशलतासे उसे श्रेष्ठ और गौरवान्वित बना सकता हूँ।" स्टेसिम्ब्रोटस-का कहना है कि थेमिस्टॉक्लीजने अनक्सेगोरस और मेलिससे भौतिक विज्ञान* की शिक्षा पायी थी, पर यह बात कालक्रमके विरुद्ध पडती है क्योंकि पेरीक्लीजने जब सेमॉस नगरपर घेरा डाला था, उस समय मेलिसस सेमासवालोंका नायक था। अनक्सेगोरस भी पेरीक्लीजका सहकालीन था क्योंकि वह उसीके साथ रहता था। इस प्रकार पेरीक्लीजके परवर्ती होनेके कारण उक्त दोनों व्यक्ति थेमिस्टॉक्लीजके बहुत बादके प्रमाणित होते है। कुछ लोगोंका यह कथन है कि वह फ्रीरी नेसीफिलस का अनुयायी था जो वक्ता या भौतिक विज्ञानका ज्ञाता न होकर धर्मशास्त्रका अध्यापक था। उस समय सोलोनके सिद्धान्तोंको लेकर इन धर्मशास्त्रियोंका एक सम्प्रदाय ही कायम हो गया था। कुछ कालके अनन्तर जब इस सम्प्रदायवालोंने कानूनी बारीकियोंको अपना लिया और व्यवहारको छोड कर कोरे सिद्धान्तवादी बन गये तो ये कूट-तार्किक (सोफिस्ट) कहलाने लगे। थेमिस्टॉक्लीज नेसीफिलसका शिष्यत्व ग्रहण करनेके पहले ही राजनीतिमें भाग लेने लगा था।

उसके आरम्भिक कार्योंमें न तो कोई क्रम होता था और न सौम

* Natural philosophy

जन्य । वह सदाचार या विवेकका नियंत्रण न मान कर जो मनमें आता, वही कर बैठता था । फल यह होता था कि उसकी गति जिधर होती थी उधर ही बहुत दूर तक पहुँच जाती थी, और वह प्राय बुरेकी ही तरफ हुआ करती थी । बादमें उसने अपना यह दोष स्वीकार करते हुए कहा भी था कि उद्धतसे उद्धत बछेड़ोंको यदि ठीक तरहसे तालीम दी जाय तो वे बहुत अच्छे घोड़े निकलते हैं । इसी एक बातके आधारपर कुछ लोगोंने यह कपोल-कल्पना कर ली है कि उसके पिताने उसका परित्याग कर दिया और माता उसकी अपकीर्तिके ही कारण मर गयी । इसके प्रतिकूल कुछ लोग यह कहते हैं कि उसके पिताने राजनीतिमें भाग लेनेसे उसे रोकना चाहा था और समुद्र-तट पर पड़ी हुई टूटी फूटी नौकाओंको दिखला कर उसे यह सुझाया था कि क्षुद्राशय लोग काम निकल जानेके बाद अपने नेताओंके साथ इसी प्रकारका व्यवहार करते हैं ।

फिर भी यह स्पष्ट है कि राजनीतिक विषयोंके प्रति लगन और प्रसिद्धिकी आकांक्षा उसमें अत्यन्त प्रबल थी । सर्वोपरि मान करनेकी अभिलाषाके कारण वह नगरके प्रमुख नेताओं, विशेषकर लिसीमेकसके पुत्र अरिस्टाइडीजका जो बराबर उसका विरोध करता था, द्वेष भाजन बन गया । अरिस्टन नामक दार्शनिकके कथनानुसार इनकी शत्रुता बहुत पहले, स्टेसिलॉस नामकी एक सुन्दरीके प्रेमके कारण आरंभ हुई थी, इसके अनन्तर ये दोनों परस्पर विरोधी पक्षोंको ग्रहण करने लगे और राजनीतिमें भी एक दूसरेको स्थान भ्रष्ट करनेका प्रयत्न करने लगे । स्वभाव और विचार परस्पर विरोधी होनेके कारण शत्रुताका भाव भी बढ़ता गया । अरिस्टाइडीजकी प्रकृति कोमल थी । सार्वजनिक कामोंमें उसे आत्म-प्रसिद्धिका ज़रा भी खयाल न रहता था । वह जो कुछ करता था, राज्यकी भलाईकी ही दृष्टिसे करता था । इसी कारण उसे थेमिस्टोक्लीजका विरोध करनेके लिए बाध्य हो जाना पड़ता था क्योंकि वह जनताको साहसिक कार्यों और तरह तरहके परिवर्तनोंके लिए उत्तेजित किया करता था । मेरा-

थनका युद्ध थेमिस्टॉक्लीजकी बाल्यावस्थामें हुआ था, उस समय मिल-टियाडीजकी ख्याति चारों ओर फैल रही थी, जिसे सुन सुनकर इसके हृदयमें भी नाम पैदा करनेकी इतनी प्रबल इच्छा हो गयी थी कि यह चुपचाप एकान्तमें बैठा रहता था और रात जाग कर बिताया करता था। अगर कोई इसका कारण दर्याफ्त करता तो यही कहता था कि मिल-टियाडीजकी विजय मुझे सोने नहीं दे रही है। और लोगोंका तो यह ख्याल था कि मेराथनके युद्धसे ही इस महासमरका अन्त हो जायगा। पर थेमिस्टॉक्लीज इसे भावी महासमरका आरम्भ मात्र मानता था, इस कारण वह युद्धके लिए बराबर प्रस्तुत रहते हुए नागरिकोंकी शिक्षाका भी समुचित प्रबन्ध रखता था।

पहले अथेंसवाले लॉरियमकी रजत-खानिसे जो आय होती थी उसे आपसमें बाँट लेते थे। थेमिस्टाक्लीजने यह प्रस्ताव किया कि यह आय लोगोंमें न बाँट कर उन्नतिशील ईजीनेटन लोगोंके साथ युद्ध करनेके लिए पोत तैयार करनेमें लगायी जाय क्योंकि पोतोंके बाहुल्यसे ही वे समुद्रपर एकाधिपत्य जमाये हुए थे। उसने दारा या फारसवालोंकी ओरसे जो आशंका थी उसके बारेमें कोई चर्चातक नहीं की, क्योंकि वे बहुत दूर थे और उनके आक्रमणका निश्चय भी नहीं था, पर ईजीनेटन लोगोंके प्रति अथेंसवालोंमें प्रतियोगिता और क्रोधका भाव उत्तेजित कर उसने युद्धकी तैयारी करनेके लिए लोगोंको राजी कर लिया। इसी आयसे सौ पोतोंका निर्माण कराया गया जो जराक्सिसके साथ युद्धमें प्रयुक्त हुए। इस समयसे धीरे धीरे उसने लोगोंको स्थलकी ओरसे हटा कर समुद्रकी ओर प्रवृत्त करना आरम्भ किया। इसके लिए उसने लोगोंको यह विश्वास दिलाया कि स्थलमें हम लोग अपने पड़ोसी राष्ट्रका भी मुकाबला नहीं कर सकते पर पोतोंकी सहायतासे फारसवालोंको मार भगाने और सारे यूनानपर शासन करनेमें समर्थ हो सकते हैं। प्लैटोका कथन है कि इस प्रकार उसने लोगोंको सैनिकसे नाविक बना दिया जिससे वे उसपर

यह दोषारोप करने लगे कि आपने मैनिशियँके हाथमें माला और ढाल दोन पर दाँड धरा दिया । मिलटियाडीज़के विरोध करने पर भी इसने जन-सभा (असेम्बली) में अपना प्रस्ताव स्वीकृत करा लिया । इस प्रस्ताव-का राज्यपर क्या प्रभाव पड़ा, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता, पर इतना स्पष्ट है कि उस समय यूनान समुद्रके ही ज़रिये अपना उद्धार कर सका और इन्हीं पोतोंकी सहायतासे विध्वस्त अथेंज़ पुनः बस सका । इसका जीता-जागता प्रमाण स्वयं ज़राक्सिस है । सारी सेनाके होते हुए भी उसे सामुद्रिक युद्धमें हार खाकर भागना पड़ा और यूनानियोंका मुकाबला करनेका साहस फिर उसे नहीं हुआ । उसने मारडोनियसको, यूनानियोंका दमन करनेके लिए नहीं, बल्कि उसका अनुसरण करनेसे उन्हें रोकनेके लिए पीछे छोड़ दिया था ।

कुछ लोगोंका कथन है कि आगन्तुकोंको ठाट-बाटसे खिलाने पिलाने तथा बलिदानों आदिके लिए थेमिस्टॉक्लीज़को अधिक द्रव्यकी ज़रूरत पड़ा करती थी । इस कारण उसे रुपये प्राप्त करनेकी धुन लगी रहती थी; पर कुछ लोगोंके मतसे यह इतना कंजूस था कि भेंट-स्वरूप मिली हुई वस्तुओं-को भी बेच डालता था । एक बार उसने एक घोड़ेके व्यापारीसे एक बछेड़ा माँगा । जब उसने देनेसे इनकार कर दिया तो उसने उसके रिश्तेदारोंसे मुक़द्दमा लड़वा कर उसका घर काठके घोड़ेके रूपमें परिवर्तित करवा देनेकी धमकी दी ।

उसकी तरह नामके पीछे मरनेवाला विरला ही कोई होगा । अल्पा-वस्थामें ही, जब कि दुनिया उसे जानती भी न थी, उसने हरमिओन से—जो सितार बजानेमें कुशल था और जिसकी अथेंज़में बड़ी पूछ थी—यह प्रार्थना की कि आप मेरे घर आकर अभ्यास किया करें । इसमें उसका यह अभिप्राय था कि लोग मेरा घर दर्याफ्त करें और मुझसे बराबर मिला करें । आलिम्पिक खेलोंके अवसरपर उसने अपने साज-सामानमें साइमनसे भी बढ़ जानेका प्रयत्न किया । उसका यह

ठाटबाट यूनानियोंको पसन्द न आया, क्योंकि उनकी दृष्टिमें यह थेमिस्टॉक्लीज़ जैसे सामान्य और साधारण स्थितिके व्यक्तिके लिए कदापि योग्य न था। उसने अपने ही व्ययसे एक नाटक खेलनेका भी आयोजन किया जिसमें औरोंके साथ उसे भी पारितोषिक मिला। जन-साधारण उसे बहुत चाहते थे और वह प्रत्येक नागरिकका नाम लेकर अभिवादन किया करता था। आम जनतासे सम्बन्ध रखनेवाले मामलोंका वह बहुत ठीक न्याय करता था। एक बार जब वह सेना-नायक था तब सीओसके कवि साईमॉनिडीज़ ने उससे कोई ऐसा काम कराना चाहा जो न्याय्य न था। इसपर उसने कहा था "साईमानिडीज़, जिस प्रकार आपकी रचना छन्दोभंग दोषमय होने पर आप अच्छे कवि नहीं समझे जा सकते, उसी प्रकार किसीपर अनुचित कृपा दिखलानेके लिए मैं क़ानूनको ताकपर धर दूँ तो मैं भी अच्छा शासक नहीं हो सकता।"

क्रमशः उन्नतिके साथ उसकी लोकप्रियता भी बढ़ती गयी। उसके पक्षमें इतने अधिक लोग हो गये कि ऐरिस्टाइडीज़को नीचा देखना पड़ा और अन्तमें निर्वासित भी होना पड़ा। फारस-नरेश यूनानके विरुद्ध कूच कर चुका था। अब अथेंज़वाले इस चिन्तामें पड़े कि प्रधान सेनानायकका पद किसे दिया जाय। बहुतेरे तो सङ्कटकी भीषणताका ही खयाल कर हट गये। केवल एक व्यक्ति इपीसाइडीज़ इस पदके लिए इच्छुक था। वह वक्ता तो बहुत अच्छा था पर हृदयका कमज़ोर और धन-लोलुप था। थेमिस्टॉक्लीज़ने यह देख कर कि ऐसे आदमीके सेनानायक बननेसे सब चौपट हो जायगा, कुछ उत्कोच देकर उसको बैठा दिया।

फारस-नरेशने दुभापियेके साथ दूत भेजकर यूनानियोंसे अधीनता-स्वीकृतिके चिन्हस्वरूप मिट्टी और जल माँगा। थेमिस्टॉक्लीज़ने, दुभापियेको, यूनानी भाषामें 'असभ्य' राजाके आदेशोंको प्रकाशित करनेका आरम्भ कर जनताकी स्वीकृतिसे मरवा डाला और यूनानियोंको कर्तव्य-भ्रष्ट करनेके लिए फारस-नरेशसे रुपया लेनेके कारण उसने ज़ेलीके अर्थमियसको तथा

उसके वंशजोंको मताधिकार आदिसे सदाके लिए वंचित कर दिया। इन दोनों कार्योंसे तो उसकी प्रशंसा हो ही रही थी, फिर उसने युद्धके अवसरपर गृहकलहों और मतभेदोंको मिटा कर जनताकी दृष्टिमें अपना स्थान और भी ऊँचा कर लिया।

सेनानायकका पद ग्रहण करने पर उसने नागरिकोंसे पोतारूढ़ होकर, यूनानसे दूर, फारसवालोंका मुकाबला करनेका अनुरोध किया पर अधिकांश लोग इसके विरुद्ध थे। वह लैसीडीमोनियन लोगोंके साथ एक बड़ी सेना लेकर टेम्पी चला गया जिसमें थेसलीकी रक्षा की जा सके। वहाँसे योंही वापस आनेपर जब अथेंज़वालोंको यह मालूम हुआ कि थेसली ही नहीं बल्कि बोशिआतकके स्थान फारसके पक्षमें हो गये हैं तो वे थेमिस्टॉक्लीज़की रायको पसन्द कर सामुद्रिक युद्धके पक्षमें हो गये। और उसे एक बेड़ेके साथ आरटेमीज़ियमकी रक्षाके लिए भेज दिया।

जब सब सेनाएँ परस्पर मिलीं तो यूनानियोंने लैसीडीमोनियनोंको नायक बना कर यूरीबिआडीज़को नौसेनापति बनाना चाहा, पर अथेंज़-वाले, जिनके पोतोंकी संख्या, सबकी संयुक्त संख्यासे कहीं अधिक थी, किसी बातमें पीछे रहना नहीं चाहते थे। थेमिस्टॉक्लीज़ने इस हमाहमीके बखेड़ेको दूर करनेके लिए अपना पद यूरीबिआडीज़को दे दिया और अथेंज़वालोंको भी राजी कर लिया। उसके इस कार्यसे स्पष्टतः उसके द्वारा यूनानकी रक्षा भी हो गयी और अथेंज़वाले शत्रुओंसे अधिक वीर तथा मित्र राष्ट्रोंसे अधिक बुद्धिमान् भी प्रमाणित हुए।

जब फारसवालोंका बेड़ा अफेटीमें पहुँचा तो उनके बहुसंख्यक युद्ध-पोतोंको देखकर यूरीबिआडीज़ विस्मित हो गया। जब उसको यह सूचना मिली कि और दो सौ पोत सियाथस द्वीपके आसपास चक्कर लगा रहे हैं तो उसने पीछे हट कर पेलापनेससकी ओर स्थल और जलसेनाके साथ मिल जानेका संकल्प किया, क्योंकि सामुद्रिक युद्धमें इतनी बड़ी सेनाका मुकाबला करना उसे बिलकुल असम्भव मालूम हुआ। यूबियन

लोगोंको यह भय हुआ कि कहीं यूनानी लोग हमें छोड़ कर चल न दें जिससे हम शत्रुओंके चंगुलमें फँस जाँय, इसलिए उन्होंने पेलागनको गुप्त रूपसे सलाह करनेके लिए थेमिस्टॉक्लीज़के पास भेजा। हिरोडोटसका कहना है कि इसने थेमिस्टॉक्लीज़को एक बड़ी रक़म भेंट की जिसे उसने यूरीबिआडीज़को दे दिया। पवित्र पोतके नायक आर्किटेलीज़को, जो नौकरोंको देनेके लिए द्रव्य न होनेके कारण वहाँसे हटनेका विचार कर रहा था, अपने विचारोंके विरुद्ध पाकर उसने अथेंज़वालोंको उसके विरुद्ध उत्तेजित कर दिया जिससे उन्होंने उसके पोतपर हल्ला मचाते हुए जाकर उसका भोजनका सामान छीन लिया। इस अपमानके कारण आर्की-टेलीज़ क्रोधके मारे आपेसे बाहर हो गया। किन्तु थेमिस्टॉक्लीज़ने फौरन उसके पास एक सन्दूकमें कुछ रसद तथा उसके पेंदेमें लगभग २८ सेर चाँदी भेज दी और यह कहला भेजा कि आज शामको भोजन करो, कल प्रातः काल अपने आदमियोंको सन्तुष्ट कर लेना; और यदि ऐसा न करोगे तो मैं अथेंज़वालोंसे कह दूँगा कि तुमने शत्रुओंसे द्रव्य लिया है। यूबोआ-के मुहानेमें यूनानियों और फारसवालोंके बीच जो युद्ध हुआ वह इतना महत्वपूर्ण नहीं था कि उससे विजयके सम्बन्धमें स्पष्टरूपसे कुछ निर्णय किया जा सके। पर उससे यूनानियोंको जो अनुभव हुआ वह उनके लिए बड़ा लाभदायक प्रमाणित हुआ। उनको यह मालूम हो गया कि जो लोग युद्धविद्यामें निपुण हैं और शत्रुओंके साथ भिड़ जाने पर तुले हुए हैं, उनके लिए पोतोंका बाहुल्य, धन या अलंकार, गर्व भरे हुए नारे या विजयके गीत भयके कारण नहीं हो सकते। उन्हें इन बातोंकी पर-वाह न कर शत्रुओंके साथ भिड़ जाना था। मालूम होता है पिण्डरने उनको इस प्रकार कार्य करते हुए देखा था, तभी तो उसने आर्टेमीज़िअम-के युद्धके सम्बन्धमें लिखा है—

जो अथेंजके वीरोंने था रक्खा यहाँपर दृढ़ आधार।
आज़ादीका भवन उसीपर टिका हुआ है रहित विकार॥

युद्धमें साहस विजयकी पहली सीढ़ी है। उक्त स्थानपर डायना देवीका एक मन्दिर बना हुआ है जिसके चारों ओर वृक्ष लगे हैं और उनके बाद सफेद सङ्गमरमरके स्तम्भ खड़े हैं। इनपर हाथ रगड़नेसे इनमेंसे केसरकी सुगन्धि और रङ्ग निकल आता है। इस स्थानके एक भागमें बालूके ढेरके नीचे राख या किसी जली हुई चीज़का शेषांश अब भी देखा जाता है। लोगोंका कहना है कि यहींपर भग्न पोत या सैनिकोंके शव जलाये गये थे। जब थरमापोलीसे आर्टेमीज़ियममें यह खबर पहुँची कि राजा लिओनीडसकी हत्या हो गयी और ज़रक्सिसने सभी स्थलमार्गों पर अधिकार कर लिया है, तब मित्रराष्ट्र पीछे हटकर यूनानके भीतरी भागमें चले गये। पीछेकी सेनाके नायक अथेंज़वाले थे। यह पद जितना गौरवास्पद था उतना ही संकटपूर्ण भी था।

थेमिस्टॉक्लीज़का पोत तटके पास ही पास आ रहा था। उसने बन्दरों तथा ऐसे स्थलोंमें जहाँ शत्रुके पोत ठहर सकते थे; कुछ पत्थरोंपर आयोनियन लोगोंको सम्बोधित करते हुए यह अंकित कराया कि "यदि संभव हो तो तुम लोग फारसवालोंका साथ छोड़ कर यूनानियोंके साथ मिल जाओ क्योंकि तुम उन्हींके वंशज हो और वे स्वाधीनताकी रक्षाके लिए सब कुछ सहनेको तैयार हैं। यदि तुम ऐसा न कर सको तो कमसे कम फारसवालोंके कार्योंमें बाधा अवश्य डालो।" उसे यह आशा थी कि इस लेखसे प्रभावित होकर आयोनियन लोग या तो विद्रोह कर बैठेंगे या अपनी सचाईपर सन्देह किये जानेके कारण कुछ गड़बड़ी मचायेंगे।

इस समय ज़रक्सिस फोसिसपर आक्रमण कर फोसियन लोगोंके नगरोंको नष्ट और भस्मीभूत कर रहा था, फिर भी यूनानियोंने उनके पास कोई सहायता नहीं भेजी। अथेंज़वालोंने इनसे बीओशिआ में फारसवालों-का मुकाबला करनेमें साथ देनेको भी कहा, पर इन्होंने इस बातपर ध्यान नहीं दिया क्योंकि ये लोग अपनी सारी सेना पेलापनेससमें एकत्र कर स्थल भागपर एक समुद्रसे दूसरे समुद्रतक एक दीवार खड़ी करना चाहते

थे। इनके इस विश्वासघातसे अथेन्ज़वाले बडे क्रुद्ध हुए और साथ ही परित्यक्त हो जानेके कारण हतोत्साह भी हो गये, क्योंकि इतनी बड़ी सेना से अकेले युद्ध करना बिलकुल व्यर्थ था। अब नगरका परित्याग कर पोतों-का आश्रय लेना ही एक मात्र उपाय रह गया था, पर जनता इसके लिए तैयार न थी। उसकी दृष्टिमें इस समय न तो विजयका कोई विशेष महत्त्व था और न देवताओंके मन्दिरों, समाधियों, स्मारकों आदिके शत्रु-ओंके हाथमें एक बार चले जाने पर उनकी रक्षाका कोई साधन ही था।

समझाने बुझानेसे काम निकलते न देख कर थेमिस्टॉक्लीजने असाधारण घटनाओंसे सहायता लेने तथा देववाणी प्राप्त करनेका प्रबन्ध किया। मिनर्वा देवीका सर्प, जो मन्दिरके भीतरी भागमें था, गायब होगया, पुजारियोंने जनसाधारणपर यह जाहिर किया कि पूजाकी वस्तुएँ ज्योंकी त्यों पडी हुई पायी गयी हैं, उनका स्पर्श भी नहीं हुआ है। थेमिस्टॉक्लीज के सिखलानेसे उन्होंने यह भी कहा कि देवी नगर छोड कर हमारी आँखों-के सामने समुद्रकी तरफ भाग गयी है। देववाणी द्वारा बार बार यही कहलाया जाता था कि लोगोंको काष्ठनिर्मित दीवारोंका ही भरोसा करना चाहिए। 'काष्ठनिर्मित दीवार' ये शब्द स्पष्टतः पोतके ही सूचक थे। सलामिस द्वीप स्वर्गीय स्थान बतलाया जाता था क्योंकि इसके नामके साथ यूनानके भाग्योदयका सम्बन्ध होनेवाला था। अन्तमें जनसाधारणने थेमिस्टॉक्लीजकी बात मान कर यह निश्चय किया कि जो लोग शस्त्र ग्रहण कर सकते हों वे पोतारूढ हो जायँ। प्रत्येक व्यक्ति अपने बाल बच्चोंको जहाँ प्रबन्ध होसके वहाँ भेज दे, और नगरकी रक्षाका भार मिनर्वा देवीपर रहे। यह निश्चय पक्का हो जाने पर लोगोंने बूढों, अबलाओं और बच्चों आदिको ट्रोजन भेज दिया। वहाँवालोंने हर्षके साथ इनका स्वागत किया। उन्होंने यह भी निश्चय किया कि इन लोगोंका निर्वाह सार्वजनिक निधिसे किया जाय, लडकोंको इच्छानुसार फल तोडनेकी आजादी दे दी जाय और उनकी शिक्षाके लिए अध्यापक भी नियुक्त कर दिये जायँ।

जिस समय अथेंसवालोंने यह निर्णय किया, उस समय उनका सार्वजनिक कोष खाली हो रहा था, किन्तु एरियोपेगसकी सभाने प्रत्येक कर्मचारीको आठ द्रैक्मा दिये जिससे बेड़ेका काम चलानेमें बड़ी मदद मिली। क्लाइडेमसका कहना है कि इसमें भी थेमिस्टॉक्लिजकी ही चालाकी थी। जिस समय एथेंसवाले बन्दरकी तरफ जा रहे थे, उसी समय सरस्वती (मिनर्वा) देवीकी ढाल खो गयी। थेमिस्टाक्लीजने उसे ढूँढनेके बहाने सबकी तलाशी ली; उसे गट्ठरोंमें छिपाकर रखी हुई बड़ी बड़ी रकमें मिलीं। उसने सार्वजनिक कार्यमें इनका उपयोग किया जिससे नाविकों और सैनिकोंके लिए पर्याप्त प्रबन्ध हो गया।

अथेंसवालोंके पोतारोहणका दृश्य बड़ा ही प्रभावकारी था। बूढ़ों तथा बालकों आदिका पृथक् होते समय रोना और बिसूरना देख कर एक ओर तो दुःखका संचार होता था और दूसरी ओर सैनिकों आदिका निश्चिन्त हुए बिना सलामिसकी ओर प्रस्थान करना देख कर उनके प्रति हृदयमें प्रशंसाका भाव भर जाता था। पर सबसे अधिक हृदयद्रावक दृश्य था उन बूढ़ोंका जो अत्यधिक वृद्ध होनेके कारण पीछे छूट गये थे और उन कुत्ते आदि पालतू जानवरोंका जो चारों ओर दौड़ते और भूकते हुए अपने स्वामीके साथ जानेके लिए व्यग्र हो रहे थे। कहा जाता है कि पेरीक्लीजके पिता जेन्थिपसका एक कुत्ता था जो पीछे न रहकर समुद्रमें कूद पड़ा और नावोंके साथ तैरते तैरते सलामिस पहुँच गया, पर पहुँचनेके साथ ही बेहोश होकर मर गया। वह स्थान, जहाँ उसकी मृत्यु हुई थी, आज भी श्वान-समाधिके नामसे प्रसिद्ध है।

ऐसे मौकेपर थेमिस्टॉक्लीजका एरिस्टाइडीजको पुनः बुला लेना अन्य कार्योंसे किसी प्रकार कम महत्वपूर्ण न था। युद्धके पूर्व ही उसे थेमिस्टॉक्लीजके दलने देश निर्वासित कर दिया था। थेमिस्टॉक्लीजने देखा कि लोग उसके लिए दुःखी भी हैं और वह बदला लेनेके विचारसे फारसवालोंके साथ मिलकर यूनानको बहुत कुछ क्षति भी पहुँचा सकता है,

इसलिए उसने यह प्रस्ताव किया कि जो लोग निर्वासित हुए हैं वे वापस आकर वाणी और कर्मद्वारा यूनानके हित-साधनमें अपने सह-नागरिकोंका हाथ बँटा सकते हैं।

स्पार्टाके महत्वके कारण यूरीबिआडीज़ नौ-सेनापति बना दिया गया था, पर संकटके समय उसका साहस ढीला पड़ जाता था। यह अपना बेड़ा लेकर कॉरिन्थ जाना चाहता था जहाँ उसकी स्थल सेना पड़ाव डाले हुई थी। थेमिस्टॉक्लीज़ इसका विरोध कर रहा था। इस अवसरपर उसकी उतावली रोकनेके सम्बन्धमें यूरीबिआडीज़ने कहा था कि ऑलिंपिक खेलोंमें जो लोग औरोंके पहले ही खेल आरंभ करते हैं उनपर कोड़ोंकी मार पड़ती है। इसपर थेमिस्टॉक्लीज़ने उत्तर दिया कि जो पीछे रह जाते हैं उनपर विजयलक्ष्मी कभी प्रसन्न नहीं होती। यूरीबिआडीज़को अपना डंडा उठाते हुए देख कर थेमिस्टॉक्लीज़ने कहा 'यदि आपकी इच्छा हो तो डंडे जमायें पर मेरी बात सुन लें।' यूरीबिआडीज़ने उसकी सहनशीलतासे आश्चर्य-चकित होकर उसकी बात सुननेकी इच्छा प्रकट की। थेमिस्टॉक्लीज़ने उसे समझा बुझाकर ठीक कर लिया। जब एक पार्श्ववर्तीने थेमिस्टॉक्लीज़से यह कहा कि जिन लोगोंके घर-बार नहीं हैं उनका औरोंसे अपने घर या नगर परित्याग करनेका अनुरोध करना उचित नहीं प्रतीत होता। इसपर थेमिस्टॉक्लीज़ने कहा 'ऐ नीचाशय, निश्चय ही हम लोगोंने अपने घरों और नगरका परित्याग कर दिया है क्योंकि ऐसी वस्तुओंके निमित्त जिनमें प्राण या आत्मा नहीं है, दासत्व स्वीकार करना कदापि उचित नहीं, फिर भी सारे यूनानमें हमारा नगर बेड़ेके रूपमें सबसे बड़ा है जिसके दो सौ पोत, यदि तुम चाहो तो, तुम्हारी रक्षाके लिए प्रस्तुत हैं। यदि तुम पहलेकी तरह इस बार भी हमें धोखा देकर भाग जाओ तो यूनानीलोग शीघ्र ही यह समाचार सुनेंगे कि अथेंज़वालोंके अधिकारमें एक विस्तृत भूभाग और उनके खोये हुए नगर जैसा ही एक सुन्दर और विस्तृत नगर आ गया है।' थेमिस्टॉक्लीज़के इस कथनसे यूरीबियाडीज़

को यह सन्देह होने लगा कि यदि हम लोग पीछे हटेंगे तो अथेंसवाले हमारा साथ छोड़ देंगे। इरेट्रिया-निवासी एक व्यक्तिने जब थेमिस्टॉक्लीज़का विरोध करना चाहा तो उसने कहा 'क्या तुम्हें भी युद्धकेही सम्बन्धमें कुछ कहना है? तुम तो एक मछलीके समान हो; तुम्हारे तलवार है, हृदय नहीं।' कुछ लोगोंका कहना है कि जिस समय थेमिस्टॉक्लीज यह बात कह रहा था, उसी समय एक उल्लू बेड़ेकी दाहिनी ओरसे उड़ता हुआ आकर मस्तूलके सिरेपर बैठ गया। इस शुभ शकुनका यूनानियोंपर ऐसा असर पड़ा कि वे उसकी बात मान कर फौरन युद्धके लिए प्रस्तुत हो गये। फिर भी जब बहुसंख्यक शत्रुपोतोंने एटिकाके तटपर फलेरम बन्दरमें पहुँच कर चारो ओरका किनारा ढँक लिया और स्वयं फारस नरेश अपनी महती स्थल सेनाके साथ समुद्राभिमुख आते हुए देख पड़ा, तो उन लोगोंको थेमिस्टॉक्लीजकी सारी नसीहतें भूल गयीं और वे पुनः पेलापनेसस जानेका विचार करने लगे। यदि कोई उनके घर वापस जानेका विरोध करता तो वे इसे बहुत बुरा मानते थे। उन्होंने उसी रातको प्रस्थान करनेका निश्चय कर नाविकोंको मार्ग आदिका भी निर्देश कर दिया।

संकीर्ण समुद्र और मुहानेका मार्ग छोड़ कर यूनानियोंके अपने अपने घर चल देनेमें थेमिस्टॉक्लीजको खैरियत नहीं देख पड़ी, इसलिए उसने सिसिनसके जरिये एक चालबाजीसे काम लिया। यह व्यक्ति फारसका एक बन्दी था। यह थेमिस्टॉक्लीज़को बहुत चाहता था और उसके लड़कोंका अध्यापक भी था। थेमिस्टॉक्लीज़ने उसे जरक्सिसके पास गुप्त रूपसे भेज कर यह कहलाया कि मैं आपकी हितकामनासे प्रेरित होकर सबसे पहले यह सूचित करना चाहता हूँ कि यूनानी लोग यहाँसे भागनेका विचार कर रहे हैं, अच्छा होता यदि आप इनको भागनेसे रोक कर गड़बड़ीकी ही हालतमें इनपर आक्रमण कर इनकी शक्ति नष्ट कर दें। जरक्सिस यह समाचार पाकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने इसके भेजने

वाले (थेमिस्टॉक्लीज) को अपना हितचिन्तक समझा । उसने द्वीपको घेर लेने और मुहानेका मार्ग रोक देनेके विचारसे, अपने सेनानायकोंको दो सौ युद्धपोत लेकर फौरन प्रस्थान कर देने और शेष पोतोंको यथावकाश भेजनेका आदेश दे दिया । सर्व प्रथम लाइसीमेक्सके पुत्र ऐरिस्टाइडीजने फारसके पोतोंकी गतिविधिसे उनका अभिप्राय समझा । वह थेमिस्टॉक्लीजके पास मित्रकी हैसियतसे नहीं, क्योंकि वह उसीके कारण निर्वासित किया गया था, बल्कि सिर्फ यह सूचना देनेके निमित्त, गया कि शत्रुने किस प्रकार उन्हें चारों ओरसे घेर लिया है। थेमिस्टॉक्लीजने उसकी उदारता देख कर और उसके आगमनसे प्रभावित होकर सिसिनसके जरिए गुप्त रूपसे संवाद भेजनेकी बात उसपर प्रकट कर दी और उससे प्रार्थना की कि आप यूनानियोंको संकीर्ण समुद्रमें रोककर युद्ध करनेके लिए तैयार कीजिए क्योंकि वे आपका अधिक विश्वास करते हैं और आपकी बात फौरन मान लेंगे । ऐरिस्टाइडीजने जाकर और सेनानायकोंको लड़नेके लिए उत्तेजित किया । अभी वे युद्धके लिए पूरी तौरसे राजी नहीं हुए थे, क्योंकि उन्हें शत्रुपोतोंद्वारा घेरे जानेकी बातमें सन्देह था, तब तक फारसवालोंसे छुटकारा पाकर टीनोसके एक पोतने आकर इस समाचारकी पुष्टि कर दी । अब यूनानवाले क्रोध और लाचारीकी हालतमें युद्ध करनेके लिए तैयार हो गये ।

प्रात काल होते ही जरक्सिस बेड़ेको तथा पोतोंका क्रम देखनेके निमित्त एक ऊँचे स्थानपर जा बैठा । युद्धका विवरण लिखनेके निमित्त कई सरदार उसके पास ही बैठ गये । थेमिस्टॉक्लीज नौ-सेनापतिके पोतके पास बलि चढ़ाने जा ही रहा था कि उसके पास तीन रणबन्दी लाये गये । ये बहुत ही सुन्दर और बहुमूल्य वस्त्राभूषणोंसे अलकृत थे । कहा जाता है कि ये जरक्सिसके भाञ्जे थे । ज्योतिषीकी दृष्टि इनपर पड़नेके समय ही आहुति असाधारण ज्वालाके साथ जल उठी और उसी समय दाहिनी ओर छींक भी हुई । ज्योतिषी इन शकुनोंको भाग्योदय सूचक समझ कर

इन लोगोंको थेमिस्टोक्लीज़के पास ले गया और इनका बलिदान करनेका अनुरोध किया। यह सुनके इस प्रकार शत्रुओं और बलिदानकी बात सुन-कर बड़े असमंजसमें पड़ गया, पर सर्वसाधारणने, जो कठिनाई और संकटके दिन बुद्धिके निमित्त विवेकबुद्धिको तिलांजलि देकर असाधारण बातोंका निर्देश ग्रहण करते हैं, ज्योतिषीके कथनानुसार इनको बलिवेदी पर ले जाकर बलिदान करा ही दिया।

ईस्किलसके कथानुसार ज़रक्सिसके पास १२०७ युद्धपोत थे और अथेनियनोंके पास एक सौ अस्सी थे जिनमें प्रत्येकपर १८ सैनिक रखे गये थे। थेमिस्टोक्लीज़ने बड़े मौकेकी जगहपर अपने पोत रखे थे। युद्धका समय निश्चय करनेमें भी उसने बड़ी बुद्धिमानीका परिचय दिया। उसने शीघ्र ही युद्ध आरंभ नहीं किया। वह उस समयकी प्रतीक्षा करता रहा जब दिनके समय समुद्री हवा चलनेके कारण मुहानेमें एक ऊँची तरंग आया करती थी। इस तरंगके कारण यूनानी पोतोंके लिए, जो हल्के थे, कोई असुविधा न थी पर फारसके पोतोंको, जो भारी थे, बड़ी हानि पहुँ-चती थी। थेमिस्टोक्लीज़के पोतकी गति-विधिपर ज़रक्सिसके वीर नौ-सेनापति एरियामेनीज़की विशेष दृष्टि रहती थी। वह एक ऊँचे पोत परसे शत्रुओंपर बाण-वर्षा कर रहा था। यह देख अमीनियस और सोसीक्लीज़ नामक दो व्यक्तियोंने, जो एक ही पोतपर थे, एरियामेनीज़के पोतसे अपना पोत लगा दिया। जब उसने इनके पोतपर चढ़नेकी कोशिश की तो इन्होंने भालेसे चोट पहुँचा कर उसे समुद्रमें गिरा दिया। आर्टीमी-सिया नामक महिलाने उसके शवको, जो पोतकी टूटी-फूटी चीजोंके साथ बहता जा रहा था, पहचान कर ज़रक्सिसके पास भेज दिया।

कहा जाता है कि युद्धके मध्यमें ही इल्यूसिस नगरके ऊपर, आका-शमें एक बड़ी ज्वाला देख पड़ी। इसके साथ ही ज़ोरोंकी आवाज़ भी होने लगी जो थ्रीसियन मैदानको पार कर समुद्रतक साफ़ सुनाई पड़ती थी। इसके अनन्तर जहाँसे आवाज़ आ रही थी वहाँ बादल घिर गये

और आगे बढ़ते बढ़ते पोतोंपर पहुँच गये। कुछ लोगोंका विश्वास है कि उन्होंने सशस्त्र मनुष्योंकी कुछ आकृतियाँ देखीं जो ईजिनाद्वीपसे यूनानी बेड़ेकी तरफ हाथ फैलाये हुए थीं; कुछ लोगोंकी यह भी धारणा है कि ये आकृतियाँ उन देवताओंकी थीं जिनसे युद्धके पूर्व सहायताके लिए प्रार्थना की गयी थी। अथेंज़के लाइकोमीडीजने, जो एक पोतका नायक था, सर्वप्रथम एक शत्रुपोत हस्तगत किया जिसे उसने झण्डा उतार कर सूर्यदेवको अर्पित कर दिया। फारसवाले समुद्रके एक संकीर्ण भागमें युद्ध कर रहे थे, इस कारण वे अपने बेड़ेका कुछ ही अंश उपयोगमें ला सकते थे। इसका फल यह हुआ कि यूनानवाले शक्तिमें उनके बराबर ही पड़े और सायंकालतक बराबर लड़ते गये। साईमॉनिडीजका कथन है कि इसमें यूनानवालोंने अश्रुतपूर्व विजय प्राप्त की, हालाँ कि इस युद्धमें लड़े तो वे सब साथ मिलकर पर विजयका श्रेय प्रधानतया थेमिस्टॉक्लीज़की ही बुद्धिमत्ता और कार्यकुशलताको प्राप्त था।

इस जलयुद्धके अनन्तर अपने दुर्भाग्यसे चिढ़ कर जरक्सिस मुहानेका मार्ग रोकने और स्थलसेना सेलामिस द्वीपपर ले जानेके विचारसे समुद्रमें मिट्टी और पत्थर डलवा कर बाँधकी तैयारी करने लगा। थेमिस्टाक्लीज़ने ऐरिस्टाइडीजकी राय जाँचनेके विचारसे कहा कि मैं हेलेसपान्ट जाकर नावोंका सेतु तोड़ देना चाहता हूँ जिसमें एशिया यूरोपके भीतर कैद हो जाय। पर ऐरिस्टाइडीजने इस विचारको नापसन्द करते हुए कहा कि हमलोग अबतक एक ऐसे शत्रुसे युद्ध करते रहे हैं जिसने भोग-विलासके अतिरिक्त और किसी विषयपर कभी ध्यान ही नहीं दिया; यदि हमलोग यूनानके भीतर उसे बन्द कर लाचार करें तो वह, जो इतनी बड़ी शक्तिका स्वामी है, युद्धको तमाशेकी तरह देखनेवाला स्वर्ण-छत्रके नीचे चुपचाप बैठा नहीं रह सकता। वह इसमें अपनी सारी शक्ति लगा कर सभी कार्योंका संचालन स्वयं करने लगेगा और पीछेकी गलतियोंको सुधार कर समझ बूझ कर काम करेगा। इसलिये सेतु भङ्ग करना किसी

प्रकार ठीक नहीं हो सकता, बल्कि हम लोगोंको तो यह चाहिए कि एक और सेतु प्रस्तुत कर दें जिससे वह जल्दीसे जल्दी भाग कर चला जाय।" यह सुनकर थेमिस्टाक्लीजने कहा कि यदि यही आवश्यक हो तो उसमें शीघ्रातिशीघ्र सिद्ध करनेके लिए हम लोगोंको यथाशक्ति उपाय करना चाहिए। इस कार्यकी सिद्धिके लिए उसने फारसवाले एक खोजेको, जो युद्धमें बन्दी हुआ था, राजाके पास भेज कर यह कहलाया कि यूनानी लोग समुद्री युद्धमें तो विजय लाभ कर चुके, अब वे हेलेस्पाट जाकर नावोंके सेतुको तोड़ डालेंगे। आपका विशेष ख्याल होनेके कारण मैं पहले ही आपपर यह प्रकट कर देता हूँ जिसमें आप शीघ्रतापूर्वक एशियाकी समुद्रकी तरफ जाकर अपने राज्यमें पहुँच जायँ, और मैं तब तक इनको आपका पीछा करनेसे रोके रहूँगा। जरक्सिस यह सुन कर भयभीत हो गया और यूनान छोड़ कर फौरन भागनेकी तैयारी करने लगा। थेमिस्टाक्लीज और ऐरिस्टाइडीजकी यह दूरदर्शिता प्लैटिआके युद्धमें साफ साफ समझमें आयी जिसमें मारडोनियसने जरक्सिसको सिर्फ थोड़ी सी सेनाके साथ ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी थी जिससे यूनानियोंका सर्वनाश ही हो जाय।

हिरोडोटसका कथन है कि यूनानके नगरोंमेंसे ईजिनाने इस युद्धमें सबसे अच्छा कार्य किया था। व्यक्तिगत तौरपर सभी लोग थेमिस्टाक्लीजकी ही प्रधानता स्वीकार करते थे। जब ये लोग पेलापनेससके प्रवेश-द्वारपर पहुँचे तो सभी सेनानायकोंने योग्यतम व्यक्तिका निश्चय करनेके लिए अपना अपना मत दिया। प्रत्येक व्यक्तिने पहला मत तो अपने लिए और दूसरा थेमिस्टॉक्लीजके लिए दिया। लैसिडोमोनियन लोग उसे अपने साथ स्पार्टा ले गये। वहाँ उन्होंने पराक्रमका पारितोषिक यूरीबिआडीजको और बुद्धिमत्ता तथा आचरणका पारितोषिक थेमिस्टॉक्लीजको देकर उसे जैतूनका ताज पहनाया, और सर्वश्रेष्ठ रथकी भेंट कर देशकी सीमातक पहुँचानेके लिए तीन सौ नवयुवक साथ कर दिये। बादके

आलिम्पिक खेलोंमें जब थेमिस्टाक्लीज शामिल हुआ तो दर्शकोंने और प्रतिस्पर्द्धियोंकी तरफ ध्यान न देकर सारा दिन उसीको देखने, विदेशियोंको उसकी पहचान कराने, उसकी प्रशंसा करने और करतल-ध्वनि द्वारा उसको बढ़ावा देनेमें व्यतीत किया।

थेमिस्टाक्लीजके सम्बन्धमें जो बातें उल्लिखित हैं, उनसे स्पष्ट है कि वह नामका बड़ा भूखा था। अथेंज़-निवासियों द्वारा नौसेनापति चुने जाने पर वह अपने या सार्वजनिक कामोंको पूरा न कर उस समयतक टालता गया जब कि पोत प्रस्थान करनेको थे। इसमें उसका यह अभिप्राय था कि एक ही समय बहुतसे कार्योंका सम्पादन करने और तरह तरहके लोगोंसे मिलनेमें महत्ता और अधिकार सूचित होगा। एक बार अपने एक मित्रके साथ समुद्रसे गुजरते समय तरंगसे फेंके हुए कुछ शवोंके बदनपर सोनेके हार कंगन इत्यादि देख पड़े। फिर भी उनकी तरफ ध्यान न देकर वह आगे निकल गया। उसने अपने मित्रसे सिर्फ दिखला कर इतना भर कहा कि 'इन चीजोंको ले लो क्योंकि तुम थेमिस्टाक्लीज नहीं हो।' एण्टीफेटिस नामक एक सुन्दर व्यक्तिसे, जो पहले उसको कोई पूँछ नहीं करता था, पर अब अधिकार सम्बन्ध होनेपर विशेष आदर करने लगा था, उसने एक बार कहा था 'समयने हम दोनोंको ही एक पाठ पढ़ाया है'। वह कहा करता था कि अथेंज़वाले मेरा सम्मान या प्रशंसा नहीं करते बल्कि उन्होंने मुझे एक वृक्षके रूपमें मान लिया है जिसके नीचे मौसिम खराब होने पर लोग आश्रय लेते हैं पर ज्योंही अच्छा समय आता है उसकी डालियाँ और पत्तियाँ तोड़ने लगते हैं। एक बार एक सेरिफियनने उससे कहा कि तुम्हारा यह सम्मान तुम्हारे कारण नहीं बल्कि तुम्हारे नगरके महत्वके कारण है। उसके उत्तरमें उसने कहा कि 'तुम्हारा कहना बिलकुल सत्य है। मैं यदि सेरिफसका निवासी होता तो कदापि प्रसिद्ध न हुआ होता, और न अथेंजके निवासी होनेपर तुम्हीं हुए होते।' एक बार एक सेनानायक, जो यह समझता था कि मैंने अथेंज़की बहुत कुछ सेवा की

है, डींग मारते हुए अपने कार्योंकी तुलना थेमिस्टाक्लीज़के कार्योंके साथ करने लगा तो उसने उत्तरमें यह कहानी कही 'एक बार भोजका परवर्ती दिन भोजवाले दिनकी शिकायत कर कहने लगा कि तुम्हारे समयमें लोग दौड़ धूप झंझट और तैयारीमें ही लगे रह जाते हैं पर जब मैं आता हूं तो प्रत्येक आदमी शान्तिपूर्वक आनन्दोपभोग करता है।' इसका उत्तर देते हुए भोज-दिवसने कहा कि तुम्हारा कहना बिल्कुल ठीक है, पर यह तो बताओ कि यदि मैं न आता तो तुम आते ही कैसे ? थेमिस्टाक्लीज़ने कहा 'इसी प्रकार यदि मैं पहले न आया होता तो तुम इस समय कहाँ होते ?' एक बार अपने पुत्रकी हँसी उड़ाते हुए, जिसने अपनी मातापर रोब जमाते हुए उसके जरिए पितापर भी अधिकार जमा लिया था, उसने कहा 'इस समय सारे यूनानमें तुमसे बढ़कर कोई शक्तिशाली नहीं है, क्योंकि अथेंज़ सारे यूनानमें शासन करता है, अथेंज़पर मैं शासन करता हूँ, और मेरे ऊपर तुम्हारी माताका तथा उसपर तुम्हारा शासन है।" वह प्रत्येक बातमें कुछ विशेषता रखता था। एक बार वह ज़मीनका एक टुकड़ा बेचना चाहता था। मुनादी करनेवालेको और बातोंके साथही यह भी कहनेका आदेश कर दिया था कि इस ज़मीनका पड़ोस बहुत अच्छा है। दो आदमी उसकी लड़कीका पाणिग्रहण करना चाहते थे; उनमें एक सुयोग्य और दूसरा धनी था। उसने योग्यताको धनपर तरजीह देते हुए कहा 'मैं सम्पत्ति-रहित मनुष्य चाहता हूँ पर मनुष्य-रहित सम्पत्ति नहीं चाहता।' उसकी उक्तियाँ प्रायः इसी ढंगकी हुआ करती थीं।

अब उसने अथेंज़ नगरका पुनः निर्माण करना और उसके चारों ओर प्राचीर बनवाना आरंभ किया। एक लेखकका तो कथन है कि उसने उत्कोच देकर लैसीडीमोनियन शासकोंका मुँह बन्द कर दिया पर औरोंके मतानुसार उसने उन्हें धोखेमें डाल कर काम निकाला था। जब वह दौत्यके बहाने स्पार्टा गया, तब लैसीडीमोनियन लोगोंने उस पर नया

प्राचीर बनानेका आरोप किया। उसने इस बातसे इनकार करते हुए कहा कि यदि आप लोग चाहें तो किसी आदमीको भेज कर इसकी जाँच करा लें। इस अरसेमें प्राचीर बनकर तैयार हो गया और दूत लोग उसके बदलेमें प्रतिभूके तौर पर उसके देशवासियोंके हाथमें रहे। जब लैसीडीमोनियन लोगोंको असल बात मालूम हो गयी तो उन्होंने उसे कोई क्षति नहीं पहुँचायी और उस समय क्रोधका भाव प्रकट न कर उसे चुपचाप वापस भेज दिया।

इसके बाद वह पीरियस नामक स्थानमें एक बन्दरगाह बनानेके कार्यमें प्रवृत्त हुआ, क्योंकि वह सारे नगरको समुद्रके साथ सम्बद्ध करना चाहता था। अथेंज़के प्राचीन नरेशोंका विचार इसके ठीक विपरीत था। वे लोगोंको समुद्रकी तरफसे हटा कर जीविका-निर्वाहके लिए कृषि करनेका आदेश देते थे। इसीके आधारपर मिनर्वा (सरस्वती) और नेपच्यून (वरुणदेव) के झगड़ेकी कहानी प्रचलित की गयी थी जिसमें मिनर्वा जैतूनका वृक्ष प्रस्तुत करनेके कारण अथेंज़की स्वामिनी घोषित की गयी थी। थेमिस्टाक्लीज़ने बन्दरगाह और नगरको एकमें मिलाया ही नहीं बल्कि नगरको बन्दरगाहपर पूर्णतः अवलम्बित बना कर उसका पुछल्ला बना दिया। इसका फल यह हुआ कि जनसाधारणकी शक्ति तथा आत्मविश्वास काफी बढ़ गया और वे अमीरोंसे बहुत कुछ स्वतंत्र हो गये, क्योंकि अधिकार-सूत्र नाविकों, कर्णधारों तथा पोत-निरीक्षकोंके हाथमें आ गया। यह देख कर तीस सरदारोंने (जिनके पदकी स्थापना ईसाके पूर्व ४०२ में हुई थी) जनसभाके मंचका मुख, जो समुद्रकी तरफ था, स्थलकी ओर फेर दिया। उनका ख्याल था कि सामुद्रिक शक्तिके कारण लोगोंकी प्रवृत्ति प्रजातन्त्रकी तरफ अधिक होती है, पर कृषिकार्य करनेवाली जनता कुलीनोंके विरुद्ध नहीं जा सकती।

सामुद्रिक शक्तिमें प्रधानता प्राप्त करनेके विचारसे थेमिस्टाक्लीज़ने बड़ी बड़ी योजनाएँ तैयार की थीं। ज़रक्सिसके जानेके बाद यूनानी बेड़ा

ईगलिसमें शीतकाल व्यतीत करनेके विचारसे चला आया था। थेमिस्टा-क्लीज़ने अथेंज़की एक सार्वजनिक सभामें यह प्रकट किया कि मैंने एक ऐसा काम सोच रखा है जिससे हम लोगोंका बड़ा लाभ होगा, पर यह ऐसा नहीं है जो सबको जताया जा सके। अथेंज़वालोंने उससे यह कहा कि केवल ऐरिस्टाइडीज़पर यह बात प्रकट कर दो। यदि वह सहमत हो जाय तो तुम इसे कार्य रूपमें परिणत कर सकते हो। जब उसने ईगलिसमें ठहरे हुए यूनानी बेड़ेको भस्मीभूत करनेका विचार ऐरिस्टाइडीज़-पर प्रकट किया तो उसने सबके सामने आकर कहा कि चालबाज़ीसे भरा हुआ और इससे बढ़कर अपमानजनक अन्य कोई प्रस्ताव नहीं हो सकता। इसपर उन्होंने थेमिस्टाक्लीज़को इस सम्बन्धमें आगे बढ़नेसे रोक दिया।

यूनानकी राष्ट्र-प्रतिनिधि सभामें लैसीडीमोनिया वालोंने यह प्रस्ताव पेश किया कि जो नगर न तो संघमें शामिल हैं और न जिन्होंने इस युद्धमें ही भाग लिया है, उनके प्रतिनिधि पृथक् कर दिये जायँ। थेमिस्टॉ-क्लीज़ने देखा कि इस प्रस्तावके स्वीकृत हो जाने पर थेसेलियन तथा थीबीज़ अर्गस आदिके प्रतिनिधियोंके बाहर हो जानेसे लैसीडीमोनियनोंका बहुमत हो जायगा और तब वे जो चाहेंगे कर सकेंगे, इसलिए उसने उक्त नगरोंके प्रतिनिधियोंका पक्ष लेकर उपस्थित सदस्योंसे इस सम्बन्धमें अपना मत बदलनेका अनुरोध किया। उसने उनको यह सुझाया कि केवल इकतीस नगरोंने युद्धमें भाग लिया है जिनमें अधिकांश छोटे ही हैं। यह कैसी दुःखद बात होगी, यदि शेष यूनानको छोड़ कर सभापर केवल दोही तीन नगरोंका आधिपत्य स्थापित होने दिया जाय? थेमिस्टॉक्लीज़के इस कार्यसे लैसीडीमोनियन लोग उससे बहुत अप्रसन्न हो गये और राष्ट्रसम्बन्धी नीतिमें उसका विरोध करनेके लिए साईमनको खड़ा कर उसका समर्थन करने लगे।

वह संघके अन्य राष्ट्रोंको भी भारस्वरूप हो रहा था, क्योंकि वह एक द्वीपसे दूसरे द्वीप जाकर द्रव्य ऐंठता चलता था। हिरोडोटसका कहना

है कि उसने ऐंड्रासवालोंसे द्रव्य माँगते समय जब यह कहा कि मैं अपने साथ साम और दण्ड इन दो देवताओंको लाया हूँ, तो उन्होंने कहा कि हमारे यहाँ भी दो महादेवियाँ—निर्धनता और निराशा—हैं जो तुम्हें कुछ देनेसे रोक रही हैं। टिमॉक्रियनने यह कह कर उसकी खूब भर्त्सना की है कि उसने उत्कोच स्वीकार कर निर्वासित व्यक्तियोंको पुन लौट आनेकी अनुमति दे दी थी। देश निकालेकी सजा होने पर उक्त कविका स्वर और भी ऊँचा हो गया। बात यह हुई कि जब टिमॉक्रियनको फारसवालोंका पक्ष लेनेके कारण देश-निर्वासित करनेका प्रश्न उपस्थित हुआ तो थेमिस्टॉक्लीजने उसके विरुद्ध मत दिया। किन्तु अब थेमिस्टॉक्लीजपर भी यही दोषारोप हुआ और टिमाक्रियनको उसका लक्ष्य कर निन्दात्मक काव्य बनानेका अवसर मिला।

जब अथेंजके नागरिक उसपर किये गये दोषारोपणको ध्यानपूर्वक सुनने लगे तो उसने उन्हें बार बार अपने कार्योंका स्मरण दिलाया जिससे वे कुछ चिढ़से गये। उसने यह कहकर कि 'क्या आप लोग एक ही व्यक्तिसे लाभ उठाते उठाते ऊब गये हैं?' उनको और अप्रसन्न कर दिया। जब उसने डायना (सुमति) देवीके मन्दिरका निर्माण कराया तो उसके इस कार्यने जलती हुई अग्निमें घीका काम किया, क्योंकि इसके द्वारा वह यह सूचित करना चाहता था कि मैंने केवल अथेंजको ही नहीं बल्कि सारे यूनानको अपनी बुद्धिसे प्रभावित किया है। यह मन्दिर मेलाइट जिलेमें उसके घरके पास ही बना हुआ था, जहाँ अब प्राणदण्ड पाये हुये लोगोंके शव, उनके कपड़े तथा फाँसीकी रस्सी फेंकी जाती है। उक्त सुमति देवीके मन्दिरमें इस समय भी थेमिस्टॉक्लीजकी एक मूर्त्ति है जो उसका उदार आशय ही नहीं बल्कि उसकी वीरता भी सूचित करती है। अन्तत अथेंजवालोंने, उसका महत्व तथा अधिकार कम करनेके विचारसे, जन-सम्मतिके द्वारा उसे (दस वर्षोंके लिए) निर्वासित कर दिया। जब किसी व्यक्तिकी शक्ति या महत्ता प्रजासत्तात्मक शासनके आधारभूत

सिद्धान्त समानताका सीमोल्लङ्घन कर बहुत अधिक बढ़ जाती थी, तो जनता प्रायः इस शस्त्रसे काम लिया करती थी। इस निर्वासनका मुख्य उद्देश्य निर्वासित व्यक्तिको दण्ड देना नहीं था बल्कि उन लोगोंको शान्त करना था जो उस व्यक्तिकी महत्तासे ईर्ष्या करते थे।

निर्वासित होने पर थेमिस्टॉक्लीज़ जिस समय अर्गसमें जाकर ठहरा था, उसी समय पॉसेनियसका देश-द्रोह सम्बन्धी कार्य पकड़ा गया। इससे थेमिस्टॉक्लीज़के विरोधियोंको और भी प्रोत्साहन मिला। पॉसेनियसने थेमिस्टॉक्लीजका घनिष्ट मित्र होते हुए भी अपना यह कार्य उसपर प्रकट नहीं किया था। जब उसने देखा कि यह राष्ट्रसंदण्डसे निर्वासित कर दिया गया है और यह दण्ड इसे बेतरह खल रहा है, तो उसने इसपर अपना भेद प्रकट करते हुए फारस-नरेशके पत्र दिखला दिये। उसने यूनानियोंको दुष्ट और कृतघ्न बतला कर उनके विरुद्ध फारस-नरेशकी सहायता करनेका भी उससे अनुरोध किया, पर थेमिस्टॉक्लीज़ने इस प्रकारके कार्यमें भाग लेनेसे बिल्कुल इनकार कर दिया और इस षड्यन्त्रके सम्बन्धमें किसीसे कुछ नहीं कहा।

पॉसेनियसको प्राणदण्ड देनेके अनन्तर उसके षड्यन्त्र सम्बन्धी लेख तथा पत्र मिले उनमें थेमिस्टॉक्लीजके सम्बन्धमें भी कुछ ऐसी बातें थीं जिनसे उसपर भी सन्देह होने लगा। लैसीडीमोनियनोंने तथा अथेन्सनिवासी उसके शत्रुओंने उसपर दोषारोप किया। अथेन्ससे बाहर होनेके कारण पत्रद्वारा सफाई देते हुए उसने अपने बारेमें सिर्फ यही लिखा कि जिसमें बराबर शासन करनेकी ही प्रवृत्ति रही है, गुलामीकी जिसमें गन्ध तक नहीं थी, वह बर्बरों तथा शत्रुओंके हाथमें अपनेको तथा अपने देशको बेचनेके लिए कभी तैयार न होगा।

इसपर भी उसके आरोपियोंने उसे पकड़वा कर यूनानियोंकी एक सभा (कौंसिल) में उसका विचार करानेके लिए जन-साधारणपर दबाव डाला। पर इसकी सूचना पहले ही मिल जानेके कारण वह भाग

कर कॉरसिरा चला गया जिसको उसने कारेन्थियनोंके साथ झगड़ेमें पञ्च बनाये जाने पर उनसे बीस टैलेंट और ल्यूकस द्वीपपर समान अधिकार दिला कर कृतज्ञताके सूत्रमें बाँध लिया था। यहाँसे भाग कर वह ईपाइ-रस गया। जब लैसीडीमोनियनों और अथेंज़के लोगोंने यहाँ भी उसका पीछा न छोड़ा तो वह मोलोसियन-नरेश ऐडमीटसकी शरणमें चला गया। यहाँ उसे अपने बचावकी कोई आशा न थी क्योंकि एक बार, जब वह प्रधान अधिकारी था तब, ऐडमीटसने किसी बातके लिए प्रार्थना की थी पर उसने उसे अस्वीकार कर दिया था और उसका अपमान भी किया था। उस समय ऐडमीटसने यह भाव स्पष्ट रूपसे प्रकट कर दिया था कि मौक़ा आने पर मैं इसका बदला अवश्य लूँगा। फिर भी राजाकी पुरानी अप्रसन्न-ताकी अपेक्षा अपने पड़ोसियों और सजातीयोंकी घृणाको अधिक भयङ्कर समझ कर ऐडमीटसकी ही दयाका भिखारी बनना उसे युक्तियुक्त मालूम हुआ। उस देशमें अभय-दानके लिए प्रार्थना करनेका ढङ्ग भी और देशों से कुछ निराला ही था। वह राजकुमारको, जो अभी शैशवावस्थामें था, साथ लेकर अग्निकुण्डके निकट ज़मीनपर लेट गया। कहा जाता है कि इस ढंगसे की गयी प्रार्थना मोलोसियन लोगोंमें बहुत पवित्र मानी जाती है और वे इसे अस्वीकार भी नहीं कर सकते। कुछ लोगोंका कथन है कि स्वयं रानीने ही उसे यह ढङ्ग बतला कर उसके साथ अपना नव-जात पुत्र रख दिया था। औरोंका कहना है कि स्वयं ऐडमीटसने उससे यह कार्य करनेको कहा था जिसमें, धार्मिक बन्धनके ख़यालसे, वह पीछा करनेवालोंको उसे देनेके लिए बाध्य न समझा जाय। अचर्नी निवासी, एपिक्रेटीज़ने यहींपर थेमिस्टॉक्लीज़की स्त्री और बच्चोंको तथा उसकी सम्पत्ति गुप्त रूपसे पहुँचायी थी, जिसके कारण साइमनने उसे प्राण दण्ड दिया था। एक लेखकका कथन है कि यहाँसे वह सिसली चला गया और अब यूनानियोंको अधीन करनेका वादा कर उसने साइरेक्यू-ज़के शासक हाइरोकी लड़कीसे ब्याह करना चाहा पर उसके इनकार-

करने पर वह वहाँसे एशिया चला गया। किन्तु यह बात सम्भव नहीं मालूम होती।

थियोफ्रेटसने अपने ग्रन्थमें लिखा है कि हाइरोने ओलिम्पिक दौड़में शामिल करनेके लिए अपने घोड़े भेजे थे और एक मंच बनवा कर उसे खूब सजाया था। उस समय थेमिस्टॉक्लीज़ने एक भाषण द्वारा यूनानियोंको मंच गिरा देने और घोड़ोंको न दौड़ने देनेके लिए उभाड़ा था। थ्यूसीडिडीज़का कहना है कि वह स्थल भाग पार कर ईजियन समुद्रमें चला गया और थर्मीके उपसागरमें पोतारूढ़ होगया। पोतपर कोई आदमी उसे नहीं पहचानता था। जब पोत हवाके झोंकेसे बह कर नक्ससके पास चला आया तो वह भयभीत हो उठा क्योंकि अथेंज़वाले उस समय उसपर घेरा डाले हुए थे। अब उसने नाविक तथा पोतके स्वामीको अपना नाम बतला दिया और प्रार्थना मिली हुई धमकीके साथ कहा कि यदि पोत किनारे लगाया गया तो मैं अथेंज़वालोंसे यही कहूँगा कि इन्होंने अनजानमें नहीं बल्कि मुझसे रुपये लेकर मुझे पोतपर चढ़ाया है। पोतवालोंपर यह धमकी काम कर गयी। उन्होंने पोतको दूर समुद्रमें ही लङ्गर डाल कर रखा और फिर एशियाकी ओर आगे बढ़ाया।

उसकी अधिकांश सम्पत्ति उसके मित्रों द्वारा गुप्त रूपसे एशिया भेज दी गयी, पर कोई अस्सी टैलेण्ट मूल्यकी सम्पत्ति जप्त कर ली गयी। कुछ लोगोंका कहना है कि यह सम्पति सौ टैलेंटकी थी, हालाँकि सार्वजनिक कार्यमें प्रवेश करनेके पूर्व उसके पास तीन टैलेंटकी भी सम्पत्ति न थी।

साइम पहुँचने पर उसे मालूम हुआ कि सारे समुद्र तटपर लोग मेरी घातमें लगे हुए हैं क्योंकि इधर फारस-नरेशने भी उसके पकड़ने वालेको दो सौ टैलेंट पारितोषिक देनेकी घोषणा कर रखी थी। इसलिए वह भाग कर ईजीमें नाइकोजीनीज़के पास चला गया। यहाँ इसके अतिरिक्त उसे और कोई भी नहीं जानता था। थेमिस्टॉक्लीज़ कुछ दिनोंतक

इसके मकानमें छिपा रहा। एक बार रातको पूजा और भोजनके उपरान्त नाइकोजीनीज़के पुत्रोंका शिक्षक ऑल्बियस भावावेशमें इस प्रकार चिल्ला उठा—

रजनी देवी तुमसे मिलकर रक्षा-पथ दिखलावेंगी।
देकर कुछ संकेत स्वयं ही उचित उपाय सुझावेंगी॥

जब थेमिस्टॉक्लीज़ शयन करने गया, तब उसने स्वप्नमें देखा कि एक सर्प उसके पेटपर जाकर गेंडुरी मार कर बैठ गया, फिर उसकी गर्दनकी तरफ चला और मुखका स्पर्श करते ही गरुड़के रूपमें परिवर्तित होगया जो अपने पंखोंको उसके ऊपर फैलाकर उसे ले उड़ा। बहुत दूर ले जाकर उसने उसे एक स्वर्ण राजदण्डपर सुरक्षित रूपसे रख दिया और वह भय इत्यादिसे मुक्त हो गया।

नाइकोजीनीज़ने प्रस्थानका प्रबन्ध इस प्रकार किया। बर्बर जातिके लोग, विशेषकर फारसवाले, अपनी स्त्रियों तथा क्रीत दासियों और उपपत्नियोंके प्रति भी बड़े कठोर और सशंक होते हैं। वे उन्हें ऐसे कड़े पर्देमें रखते हैं कि कभी कोई बाहरवाला उन्हें नहीं देख सकता। उन्हें अपने घरोंके अन्दर ही सारा जीवन व्यतीत करना पड़ता है। जब सफरकी ज़रूरत पड़ती है तो गाड़ीके ऊपर चारों ओरसे परदा पड़ा रहता है। थेमिस्टॉक्लीज़के लिए भी इसी तरहकी एक गाड़ी तैयार करायी गयी थी। मार्गमें अगर कोई पूछता तो यह कहा जाता था कि इसमें आयोनियाकी, एक यूनानी महिला है जो एक दरबारीसे मिलने जा रही है।

कुछ लोगोंका कहना है कि तबतक जरक्सिसका देहान्त हो चुका था इसलिए थेमिस्टॉक्लीज़ने उसके पुत्रके साथ भेंट की थी। पर औरोंका कथन है कि ज़रक्सिस उस समय जीवित था। वहाँ पहुँचने पर थेमिस्टॉक्लीज़ सर्व प्रथम आर्टाबेनस नामक एक-हजारी सेनापतिसे मिला। उसने इससे कहा कि मै यूनानी हूँ, मैं बादशाहसे कुछ आवश्यक विषयोंके सम्बन्धमें बात करना चाहता हूँ जिसके लिए वे भी उत्सुक

हैं। आर्टाबेनसने उत्तर दिया 'हे आगन्तुक, मानव समाजमें भिन्न भिन्न नियम प्रचलित हैं; किसीके लिए एक चीज़ सम्मानका कारण समझी जाती है तो दूसरेके लिए दूसरी ही चीज समझी जाती है। पर अपने अपने नियमोंका पालन करनेमें ही सबकी इज्जत है। मैंने सुना है कि यूनानी लोग स्वाधीनता और साम्यको सबसे बढ़कर समझते हैं पर हम लोगोंके नियमके अनुसार राजा सम्मान्य, पूज्य और परमेश्वरका प्रतिनिधि है। यदि हमारे नियमको स्वीकार कर साष्टांग दंडवतके साथ आप राजाकी पूजा करें तो आपको उनके दर्शन मिलेंगे और तब आप उनसे बात भी कर सकेंगे। यदि ऐसा करनेका विचार न हो तो आप किसी औरके द्वारा अपनी कार्य-सिद्धि करा सकते हैं, क्योंकि ऐसे व्यक्तिसे, जो साष्टांग दण्डवत नहीं करता, फारस-नरेश नहीं मिलते।' यह सुन कर थेमिस्टॉक्लीज़ने कहा 'मैं यहाँ राजाकी शक्ति तथा गौरव बढ़ानेके उद्देशसे आया हूँ, परमेश्वरकी कृपा हुई तो केवल मैं ही इन नियमोंका पालन नहीं करूँगा, बल्कि बहुतेरे लोग उनकी इज्ज़त और पूजा करनेके लिए तैयार हो जायँगे, इसलिए मैं राजासे जो कुछ कहना चाहता हूँ उसमें यह बात बाधक नहीं हो सकती।' इसपर आर्टाबेनसने कहा कि बातोंसे तो आप कोई साधारण व्यक्ति नहीं मालूम होते, कृपाकर बतलाइये कि मैं नरेशको क्या कहकर आपका परिचय दूंगा? थेमिस्टॉक्लीजने कहा कि स्वयं फारस-नरेशके पहले और किसीको मैं अपना परिचय नहीं दे सकता।

फारसनरेशके सम्मुख उपस्थित किये जाने पर वह यथाविधि अभिवादन कर चुपचाप खड़ा रहा। राजाकी आज्ञासे दुभाषियेके पूछने पर उसने कहा 'हे फारस-नरेश, मैं अथेंस निवासी थेमिस्टॉक्लीज हूँ। यूनानियोंने मुझे निर्वासित कर दिया है। यह सत्य है कि मैंने फारसवालोंके साथ बहुतसी बुराइयाँ की हैं, पर स्वदेशकी मुक्तिके अनन्तर ज्योंही मुझे आपकी भी सेवा करनेका मौक़ा मिला, त्योंही मैंने यूनानियोंको आपका पीछा करनेसे रोक कर उक्त बुराइयोंकी अपेक्षा कहीं अधिक उपकार

किया। मैं अपनी वर्तमान आपत्तियोंके अनुकूल ही विचार रखकर यहाँ आया हूँ। यदि आप मेरी तरफसे सन्तुष्ट हैं तो मैं आपकी कृपाके लिए प्रार्थी हूँ और यदि आपके हृदयमें कुछ अप्रसन्नता हो तो मैं उसे आत्म-समर्पण द्वारा दूर करूँगा। मैंने फारसकी जो सेवा की है, वह मेरे देश-वासियोंके कथनसे ही स्पष्ट है। मेरे दुर्भाग्यने आपके लिए मेरे प्रति क्रोध प्रकट कर बदला लेनेके बजाय संसारको अपनी उदारता दिखलानेका एक अच्छा अवसर प्रस्तुत कर दिया है। यदि आप मेरी रक्षा करना स्वीकार करें तो आप अपने शरणागतकी रक्षा करेंगे, अन्यथा यूनानके एक शत्रुका नाश करेंगे। दैवी इच्छा बतलाते हुए उसने उक्त स्वप्न और डोडोनाकी देववाणीकी भी चर्चा की जिसमें जुपिटरने उसे अपने समान नामधारी व्यक्तिके पास जानेका आदेश दिया था (समानता इस प्रकार थी कि दोनों ही महान् व्यक्ति और नरेश थे)।

राजाने उसकी सारी बातें ध्यानपूर्वक सुनीं। उसने उसके स्वभाव और साहसकी प्रशंसा भी की, पर उस समय कुछ उत्तर नहीं दिया। जब वह अपने घनिष्ट मित्रोंसे मिला तो आनन्द प्रकट करते हुए उसने अपने भाग्यकी बड़ी सराहना की। इतना ही नहीं, उसने अपने देवतासे यह प्रार्थना की कि मेरे सभी शत्रुओंके विचार ऐसे पलट जायँ कि वे यूनानियोंकी तरह अपने सुयोग्य और वीर पुरुषोंको अपने देशसे निर्वासित कर दें। उसने देवताओंको पूजा चढ़ा कर एक भोज भी दिया। आनन्दके मारे वह इतना विह्वल हो रहा था कि रात्रिमें सोते समय 'अथेंज़के थेमिस्टॉक्लीज़को मैंने पा लिया' इस प्रकार तीन बार ऊँची आवाज़में चिल्ला उठा।

प्रातःकाल होते ही उसने सभी दरबारियोंको एकत्र कर थेमिस्टॉक्लीज़-को भी बुलवाया। थेमिस्टॉक्लीज़ने जब देखा कि प्रहरी मेरा नाम सुनते ही मेरे पीछे पड़ गये हैं और गालियाँ भी दे रहे हैं, तब उसे भलाईकी तनिक भी आशा न रही। ज्यों ही वह राजाकी तरफ बढ़ा त्यों ही बीचमें एक एक-हजारीने, जिसके पाससे वह गुजर रहा था, अपने स्थानसे बिना हिले

मुझे ही कहा कि 'ऐ धूर्त यूनानी सर्प, राजाके सद्गुणोंके कारण ही तुम्हें यहाँ आनेका साहस हुआ है ।' जब राजाके सम्मुख जाकर उसने साष्टाग दण्डवत किया, तो उसने भी उसे प्रणाम किया और दयापूर्ण शब्दोंमें कहा कि आपका मेरे ऊपर दो सौ टैलैंट देन है क्योंकि पूर्व घोषणानुसार थेमिस्टॉक्लिजको लानेवाले व्यक्तिको उस पुरस्कार देना सर्वथा उचित है । उसने और अधिक देनेका वचन देते हुए उसे प्रोत्साहित कर यूनान सम्बन्धी बातें स्वतंत्रतापूर्वक कहनेका आदेश दिया । थेमिस्टॉक्लीजने उत्तरमें कहा कि मनुष्यका वक्तव्य बढ़िया फारसी कामदार परदेके समान है जिसके सुन्दर बेल-बूटे फैलाने पर ही देखे जा सकते हैं, तह लगाने या मोड़नेपर गायब हो जाते हैं । अत: इस कार्यके लिए मुझे कुछ समय मिलना चाहिए । राजाने इस तुलनासे प्रसन्न होकर उसकी इच्छानुसार एक वर्षका समय दिया । इस अवधिमें उसने फारसी भाषाका इतना ज्ञान प्राप्त कर लिया कि दुभाषियेकी सहायताके बिना ही राजासे बातचीत करने लगा । ऐसा समझा जाता है कि उसकी बातचीत यूनानके ही सम्बन्धमें होती थी, पर उस समय दरबारमें परिवर्तन होनेके साथ ही साथ कृपापात्र दरबारियोंके भी वहाँसे हटाये जानेसे कुछ लोग यह समझने लगे कि उसे हम लोगोंके बारेमें भी कहनेका साहस हो गया है । इसका फल यह हुआ कि वे लोग थेमिस्टॉक्लीजसे ईर्ष्या करने लगे । अन्य विदेशियोंके प्रति जो कृपापूर्ण बर्ताव होता था वह थेमिस्टॉक्लीजके प्रति प्रदर्शित सम्मानका पासंग भी न था । घर और बाहर दोनों जगह फारस-नरेश अपने आमोद-प्रमोदमें उसे शामिल करने लगा और आखेटमें भी उसे अपने साथ ले जाने लगा । राजाने उसके साथ ऐसी घनिष्ठता पैदा कर ली कि राजमातासे मिलने और बात करने तककी अनुमति उसे मिल गयी । राजाकी आज्ञासे उसे मेजी (फारसके पुरोहित सम्बन्धी)—धर्मशास्त्र की भी शिक्षा दी गयी ।

स्पार्टीमन निवासी डीमेरेटसको फारस-नरेशने जब यह वचन दिया

कि तुम जो कुछ माँगोगे, तुम्हें दिया जायगा, तो उसने दो बातोंके लिए प्रार्थना की—एक तो जुलूसके साथ प्रवेश करने और दूसरी शाही ढंगसे सिरपर ताज लगाकर शान-शौकतके साथ सार्डिस नगरसे होकर गुजरने की। राजाके चचेरे भाईने उसका मस्तक स्पर्श कर कहा कि तुम्हारा दिमाग़ शाही ताज पहननेके योग्य नहीं है। यदि जुपिटर तुम्हें अपनी बिजली और गर्जन दे दे तो इससे यह मत समझना कि तुम भी जुपिटर बन सकते हो। राजाने भी क्रुद्ध होकर उसे निकाल बाहर किया और संकल्प कर लिया कि चाहे कोई कितना भी कहे पर उसे क्षमा न करूँगा। फिर भी थेमिस्टॉक्लीजने समझा बुझाकर उसे माफी दिला दी। कहा जाता है कि परवर्ती नरेशोंके शासन-कालमें जब यूनानियों और फारसवालोंमें परस्परका सम्बन्ध कुछ बढ़ गया तो किसी प्रसिद्ध यूनानीको अपने राज्यमें बुलाते समय उसे यह स्पष्ट रूपसे लिखा जाता था कि तुम्हारा रुतवा थेमिस्टॉक्लीजसे भी बढ़कर रहेगा। लोगोंका कहना है कि थेमिस्टॉक्लीज़ने अत्यधिक समृद्धि और लोक-प्रियता सम्पादन करलेनेके अनन्तर एक दिन अपने दस्तरख्वानपर उत्तमोत्तम चीजें प्रस्तुत देखकर अपने लड़कोंसे कहा था 'यदि हमने अपनी नीति न बदली होती तो आज हम कहीं भी न होते।' कई लेखकोंका कथन है कि उसे भोजन-पानके खर्चके लिए तीन नगर और वस्त्रादिके लिए दो नगर फारस-नरेशकी ओरसे दिये गये थे।

जब वह यूनानके विरुद्ध काररवाई करनेके विचारसे समुद्रतटकी ओर यात्रा कर रहा था, तब फ्रीजियाके हाकिमने उसे मार डालनेकी घात लगायी। विश्रामके निमित्त 'सिंहकपाल' नामक नगरमें ठहरने पर थेमिस्टॉक्लीज़पर आक्रमण करनेके लिए उसने बहुतसे आदमी पहले ही एकत्र कर रखे थे। थेमिस्टॉक्लीज जब दिनके समय सोया तो उसने स्वप्नमें देवताओंकी माताको देखा जिसने उसे यह आदेश दिया कि तुम सिंहकपालमें कभी न जाना, वहाँ जाने पर सिंहके मुँहमें पड़ जाओगे। इस सम्मति-दानके लिए मैं आशा करती हूँ कि तुम अपनी कन्याको मेरी

गेविरा यना होगा। देवीके प्रति प्रतिष्ठा करनेके अनन्तर वह राजमार्गका परित्याग कर दूसरे रास्तेसे चक्कर लगाते हुए नियत स्थानको बचा कर निकल गया। उसने रातको मैदानमें ही विश्राम किया। एक ऊँटेना टट्टूके नदीमें गिर पड़नेके कारण पर्दे आदि भीग गये थे। नौकरोंने सुखानेके निमित्त इन्हें फैला दिया। दायुलोग चाँदनी रात होनेके कारण थेमिस्टॉ-क्लीजके डेरेके भ्रममें नंगी तलवार लेकर चल पड़े। जब नजदीक जाकर पर्दोंको उठाया तो पहरेदारोंने आक्रमण करके इनको गिरफ्तार कर लिया। थेमिस्टॉक्लीजने इस संकटके निवारण होने पर कृतज्ञता स्वरूप उक्त देवीके लिए मैगनीशियामें एक मन्दिरका निर्माण कराया और सेवाके निमित्त अपनी कन्याको समर्पित कर दिया।

सार्डिस पहुँचने पर वह फुरसतके वक्त भ्रमण कर देवताओंके मन्दिरों, उनकी प्रतिमाओं और आभूषणों आदिका निरीक्षण किया करता था। उसने देवमाताके मन्दिरमें एक कुमारी कन्याकी पीतलकी बनी हुई दो हाथ ऊँची प्रतिमा देखी जो जल-वाहिका कहलाती थी। जब वह अथेंजमें जलका निरीक्षक था तो उसने ऐसे लोगोंसे, जो सार्वजनिक जल नल द्वारा ले जाकर अपने व्यक्तिगत उपयोगमें लाते हुए पकड़े जाते थे, जुर्माना वसूल कर यह मूर्ति स्थापित करायी थी। इस प्रतिमाको बन्दीकी हालतमें देखनेसे दुःखित होकर अथवा अथेंजवालोंको यह दिखानेके लिए कि मेरे ऊपर फारस-नरेशका कितना विश्वास है और मुझे कितना अधिकार प्राप्त है, उसने यह मूर्ति अथेंन भेज देनेके निमित्त गवर्नरसे अनुरोध किया। इसपर वह इतना क्रुद्ध हुआ कि उसने फारस-नरेशको इसकी शिकायत लिख भेजनेकी धमकी दी। थेमिस्टॉक्लीजने उसकी स्त्रियों और उपपत्नियोंको रुपये देकर उसका क्रोध शान्त कराया। इसके बाद वह फारसवालोंकी ईर्ष्याके भयसे किसीसे उतना मिलता जुलता न था और बराबर सचेत रहता था। वह एशियाका भ्रमण परित्याग कर मैगनीशियामें अपने घर पर ही शान्तिपूर्वक रहने लगा। लोग उसे साम्राज्यके बड़े लोगोंके समान

ही इज्जतकी दृष्टिसे देखते थे और बहुमूल्य भेंट भी देते थे। फारस-नरेश इस समय एशियाके आभ्यन्तरिक मामलोंमें लगा हुआ था, इस कारण यूनान विषयक बातोंकी तरफसे वह बिल्कुल उदासीन था।

जब अथेंज़की सहायतासे मिस्रने विद्रोह किया और यूनानी पोत साइप्रस तथा सिलीसिया तक धावा करने लगे और जब साइमनने समुद्रोंपर अधिकार कर लिया, तब फारस-नरेशका ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ। यूनानियोंको रोकने तथा उनकी शक्ति-वृद्धिमें रुकावट डालनेके विचारसे वह सैन्य संग्रह कर सेनानायकोंको भेजने लगा। उसने मैगनीशियामें थेमिस्टॉक्लीजके पास दूत भेज कर उसको अपनी प्रतिज्ञाका स्मरण दिलाते हुए यूनानियोंके विरुद्ध कार्यमें प्रवृत्त होनेको कहलाया। पर इससे थेमिस्टॉक्लीजके मनमें न तो अथेंजवालोंके प्रति घृणा या क्रोधका भाव ही बढ़ा और न युद्धमें सेनापतिका महत्त्वपूर्ण पद ग्रहण करनेके विचारसे अभिमान ही उत्पन्न हुआ। शायद यह देखकर कि उद्देश्य-सिद्धिकी कुछ भी संभावना नहीं है क्योंकि यूनानियोंके पास साइमनके अलावा जो विजयपर विजय प्राप्त कर रहा है, इस समय कई अच्छे अच्छे सेना नायक हैं और विशेषकर इस खयालसे लज्जित होकर कि मेरे पूर्वकृत महत्कार्यों और विजयोंसे प्राप्त गौरवपर पानी फिर जायगा, उसने अपने जीवनका अन्त कर देनेका निश्चय किया। उसने देवताओंको बलिदान चढ़ा कर अपने मित्रोंको आमंत्रित किया, उनका आदर सत्कार किया और उनसे हाथ मिलानेके अनन्तर कुछ लोगोंके मतसे वृषभ-रक्त और कुछ लोगोंके मतानुसार, विषपान कर ६५ वर्षकी अवस्थामें आत्महत्या कर ली। उसका अधिकांश जीवन युद्ध, राजनीति और शासनमें ही व्यतीत हुआ। उसकी मृत्युका कारण और तरीका सुनने पर फारस-नरेशने उसकी पहले से भी अधिक प्रशंसा की और उसके सम्बन्धियों और मित्रोंके प्रति दयाका बर्ताव जारी रखा।

थेमिस्टॉक्लीजके पाँच पुत्र और कई कन्याएँ थीं जिनमेंसे दो पुत्र उसकी

मृत्युके पहले ही चल बसे थे। मैगनीशियावालोंने उसके प्रति सम्मान प्रकट करनेके उद्देश्यसे हाटके मध्यमें उसका एक भव्य स्मारक बनवाया। उसके सम्बन्धियोंको भी विविध सम्मान और विशेषाधिकार दिये गये, अस्तु।

४—कैमिलस

कैमिलसके सम्बन्धमें जो कई महत्वपूर्ण बातें कही जाती हैं उनमें सबसे विचित्र यह है कि यद्यपि वह लगातार बहुत दिनों तक सर्वोच्च पदपर रहा, बड़ी बड़ी सफलताएँ उसने प्राप्त कीं, पाँच बार सूत्रधार (डिक्टेटर) चुना गया, चार बार विजय प्राप्त की, रोमका द्वितीय संस्थापक भी माना गया, फिर भी उसे रोमका प्रधान शासक (कौन्सल) होनेका सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। यदि उस समयके राष्ट्र-मंडलकी स्थिति और प्रवृत्तिपर विचार किया जाय तो इसका कारण स्पष्ट हो जायगा। सिनेट (कुलीन सभा) से मतभेद होनेके कारण उस समय सर्वसाधारण प्रधान शासकों-को न चुनकर उनके स्थानमें कुछ और शासकोंको चुन लेते थे जो सैनिक ट्रिब्यून कहलाते थे। इन लोगोंको प्रधान शासकोंके सभी अधिकार प्राप्त थे, पर शासनाधिकार कई आदमियोंमें विभक्त हो जानेके कारण इनका शासन अपेक्षाकृत कम कठोर होता था। कुलीनतंत्रके वि-रोधियोंके लिए दो व्यक्तियोंके बदले छः मनुष्योंके हाथमें शासन-सूत्रका रहना कुछ सन्तोषका विषय भी था। यही उस समय वहाँकी हालत थी जब कैमिलस अपने कार्यों और महत्त्वमें विशेष रूपसे बढ़ा हुआ था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि सरकार प्रधान शासकोंके निर्वाचन-कार्यमें प्रायः अग्रसर हुई पर कैमिलसने जनताकी रुचिके विरुद्ध प्रधान

शासक बनना उचित नहीं समझा । उसने शासनके और भी कई पदोंपर कार्य किया था । उसके कार्य करनेका ढंग भी निराला ही था । यदि केवल उसे ही सारा अधिकार प्राप्त होता तो वह अपने अधिकारका प्रयोग सामूहिक रूपमें करता था; यदि औरोंके साथ काम करना पड़ता तो कार्यका सारा महत्व उसे ही प्राप्त हो जाता था । पहलेका कारण यह था कि उसके आदेश बड़े ही नम्र होते थे, इससे उसके प्रति किसीको ईर्ष्या नहीं होती थी और दूसरेका कारण उसका विवेक था जिसमें वह सबसे बढ़ा हुआ था ।

कैमिलसके पूर्व उसके घरानेकी कोई गणना न थी । सर्वप्रथम उसने ईक्वीअन और वाल्सिअन लोगोंके साथ युद्धमें पॉस्टुमियस टुवर्टिसकी अध्यक्षतामें लड़ते हुए बड़ी नामवरी पैदा की । युद्धमें वह अन्य सैनिकोंसे आगे बढ़कर लड़ने लगा और जाँघमें एक भारी घाव लग जाने पर भी युद्धसे विरत नहीं हुआ बल्कि भालेको जाँघसे निकाल कर शत्रुओंमें जो सबसे वीर थे उनसे भिड़ गया । उनको भगा कर ही उसने दम लिया । उसकी इस वीरताके लिए उसे और इनामोंके साथ साथ सेंसरशिप* का पद भी मिला जो उस समय विशेष गौरवास्पद और अधिकार सम्पन्न समझा जाता था । इस पदपर रह कर उसने एक अत्युत्तम कार्य किया । युद्धोंके कारण देशमें विधवा स्त्रियोंकी संख्या बहुत बढ़ गयी थी । उसने ऐसे लोगोंको, जिनके स्त्रियाँ नहीं थीं, समझा बुझा कर या जुर्मानेकी धमकी देकर विधवाओंसे विवाह करने पर राज़ी कर लिया । उस समय युद्ध आये दिन होते रहते थे और उन्हें चलानेमें बहुत अधिक खर्च पड़ता था, इसलिए उसने यतीमोंपर, जो पहले करसे मुक्त थे; कर बैठाया । यह उसका दूसरा आवश्यक कार्य था । इस समय उनके सम्मुख सबसे जटिल समस्या वीयाइके घेरेकी थी । यह तस्कनीका सर्व-प्रधान नगर

* यह पदाधिकारी रोमन नागरिकोंकी सम्पत्तिका ब्योरा रखता था, उनपर कर बैठाता था और उनके आचार-विचारका भी निरीक्षण करता था ।

था और गनिवर्ती संख्या या रणसामग्री आदिके विचारसे रोमसे किसी प्रकार कम नहीं था। इसने अपनी समृद्धि आदिका अभिमान कर गौरव और साम्राज्य-प्राप्तिके प्रयत्नमें रोमके साथ प्रतियोगिता भी की थी, पर कई बार पराजित हो जानेके कारण प्रतियोगिताका यह भाव अब नहीं रह गया था। यहाँके लोगोंने सुदृढ़ नगर-प्राचीर बना कर शस्त्र और भोजनादिकी सामग्री प्रचुर मात्रामें एकत्र कर ली थी, इस कारण अवरोध इन्हें उतना नहीं खलता था, पर रोमनोंकी बात कुछ और थी। ये लोग सिर्फ ग्रीष्म ऋतुमें कुछ कालतक बाहर रह सकते थे। शेष समयमें इन्हें बाहर रहनेका अभ्यास नहीं था। शासकोंने इन्हें शत्रुके ही देशमें दुर्ग बनाकर बराबर वहीं रहनेकी आज्ञा दी। युद्धका सातवाँ वर्ष समाप्त हो रहा था, इससे सेनानायकोंपर घेरेके कार्यमें सुस्ती करनेका सन्देह किया जाने लगा। अब पुराने सेनानायक हटा कर उनकी जगह नये सेनानायक रखे गये। कैमिलस भी इन्हींमेंसे एक था पर इसे घेरेका काम न देकर फालिस्कन तथा कापेनाटीज़ लोगोंके साथ युद्ध करनेका काम सौंपा गया क्योंकि ये लोग रोमनोंको तस्कनोंके साथ युद्धमें संलग्न देख कर देशमें लूटमार कर तबाही मचाये हुए थे। कैमिलसने इनका दमन कर इन्हें नगरके भीतर ही रहनेके लिए बाध्य किया।

युद्धकालमें ही एक ऐसी विचित्र घटना हुई जिससे सभी लोग भयभीत हो उठे। ग्रीष्म ऋतुका समय था। वर्षाका कहीं नामोनिशान भी न था। ताल-तलैयाँ, नदी-नाले सब प्रायः सूख रहे थे। पर अलबन झीलमें, जिसमें जल आनेका कोई मार्ग भी नहीं था और जो चारों ओरसे पहाड़ोंसे परिवेष्टित थी, एकाएक पानी बढ़ने लगा। पानी बढ़ते बढ़ते पहले पहाड़ोंकी जड़ और फिर उनके शिखरतक पहुँच गया। इतना होने पर भी झीलमें तरंग और क्षोभका कहीं पता नहीं था। जब पानी बाँध तोड़-फोड़ कर खेतों और बागोंसे होते हुए भयंकर प्रवाहमें समुद्रकी तरफ प्रधावित हुआ, उस समय लोगोंमें हाहाकार मच गया। सारे इटली

देशके लोगोंने यही खयाल किया कि यह किसी असाधारण घटनाका सूचक है। घेरा डालनेवाले सैनिकोंमें इस सम्बन्धमें सबसे अधिक चर्चा होनेके कारण नगरमें भी इसकी खबर पहुँच गयी थी।

दीर्घकालीन घेरेमें दोनों तरफके कुछ लोग प्रायः आपसमें मिलते और बातचीत भी किया करते हैं। एक नागरिकसे एक रोमन सैनिककी घनिष्ठता हो गयी थी। यह मनुष्य शकुन-विद्यामें पारंगत समझा जाता था। झीलविषयक घटना सुन कर यह बहुत प्रसन्न हुआ और घेरेके सम्बन्धमें मज़ाक उड़ाने लगा। यह देख कर रोमन सैनिकने उससे कहा कि यही नहीं, ऐसी कितनी ही आश्चर्यजनक घटनाएँ घटित हो चुकी हैं, बल्कि वे इससे भी अधिक आश्चर्यजनक हैं। यदि तुम चाहो तो मैं उनका विवरण तुम्हें सुना सकता हूँ। नागरिक इन घटनाओंको सुननेका लोभ संवरण न कर सका। वह सैनिकके साथ बातें करते करते धीरे धीरे नगरद्वारसे दूर निकल आया। सैनिकने उसे पकड़ लिया और अन्यान्य सैनिकोंकी सहायतासे, जो डेरेसे दौड़ आये थे, इसे ले जाकर अपने नायकों-के सामने पेश किया। परिस्थितिसे बाध्य होकर और यह समझ कर कि भाग्य अन्यथा नहीं किया जा सकता, इसने वीयाइकी देववाणी बतला दी जिसके अनुसार झीलके पानीका प्रवाह बन्द किये बिना या उसे इस प्रकार मोड़े बिना कि उसका जल समुद्रके जलके साथ मिलने न पावे, नगरपर अधिकार करना असम्भव था। इसपर सिनेट (कुलीनसभा) ने कुछ बड़े आदमियोंको डेल्फी भेज कर देववाणी करायी जिससे मालूम हुआ कि यह प्लावन कुछ राष्ट्रीय पूजाओंकी अवहेलना करनेके कारण हुआ है। बाढ़के जलके सम्बन्धमें यह आदेश हुआ कि यदि संभव हो तो इसे समुद्रमें न गिरने देकर पुनः पूर्व स्थानमें लाना चाहिए और ऐसा न हो सके तो खाइयों आदि द्वारा इसे नीची ज़मीनमें लाकर सुखा देना चाहिए। यह समाचार पाते ही पुजारी लोगोंने उक्त पूजाएँ की और सर्वसाधारण जलका प्रवाह मोड़नेके कार्यमें लग गये।

युद्धके दसवें वर्षमें सिनेटने कैमिलसको सूत्रधार बना दिया। उसने पहले देवताओंकी पूजा कर युद्धके सम्बन्धमें मनौती मानी और तत्पश्चात् फालिस्कन और उनके सहायक कापेनाटीज़ लोगोंको युद्धमें पूर्णतः पराजित कर वह घेरेकी तरफ प्रवृत्त हुआ। आक्रमण द्वारा नगर लेना कठिन और संकटाकीर्ण समझ कर उसने ज़मीनके नीचे नीचे सुरंग खुदवाना शुरू किया। इधर तो उसने आक्रमण कर शत्रुओंको प्राचीरोंके पास बझाये रखा, उधर सुरंग खोदनेवाले दुर्गके मध्यमें 'जूनो' के मन्दिरतक पहुँच गये और दुश्मनको किसीको कुछ पता तक न चला। कहा जाता है कि उसी समय तस्कनी-नरेश बलिप्रदान कर रहा था। पशुकी अंतड़ियोंको देख कर पुजारीने ऊँची आवाज़में कहा कि देवतागण उसीको विजयी बनायेंगे जो बलिप्रदानका कार्य पूर्ण करेगा। यह सुन कर सुरंगके अन्दर वाले रोमन पृथ्वीका ऊपरी तल तोड़कर बाहर निकल आये, तुमुल ध्वनिके साथ शत्रुको भयभीत कर वहाँसे भगा दिया और अंतड़ियोंको लेकर कैमिलसके पास चले आये। लेकिन यह बात कपोलकल्पित सी मालूम होती है, अस्तु। नगरपर आक्रमण कर अधिकार कर लिया गया और सैनिकगण बहुमूल्य वस्तुओंकी लूटमें प्रवृत्त हुए। कैमिलस एक ऊँचे बुर्ज़परसे यह सब देख कर करुणाके आवेशमें रो पड़ा। जब उसके पार्श्ववर्ती लोगोंने विजयपर उसे बधाई दी तो वह ऊपरकी तरफ हाथ उठा कर इस प्रकार प्रार्थना करने लगा—"ऐ परम शक्तिशाली बृहस्पति देव तथा सुकर्मों और दुष्कर्मोंके निर्णायक देवगण, हम लोग न्याय्य कारण तथा आवश्यकतासे बाध्य होकर ही इन अधर्मी और दुष्ट शत्रुओंके नगरकी यह हालत करनेपर बाध्य हुए हैं। यदि इस विजयके बदले आप हमें किसी संकटमें डालना चाहें तो रोम और उसके सैनिकोंको छोड़कर, मुझे ही उसका भागी बनावें और यथासंभव अल्प कष्ट पहुँचावें।" प्रार्थना समाप्त करनेके बाद वह मुड़ ही रहा था (रोमनोंमें प्रार्थनाके बाद दाहिनी ओर मुड़नेकी प्रथा थी) कि वह गिर पड़ा। पार्श्ववर्तियोंको इसपर बड़ा

आश्चर्य हुआ। उसने शीघ्र ही सँभल कर उनसे कहा कि मैंने जिस बातके लिए प्रार्थना की थी वह पूरी हो गयी, अच्छे भाग्यके साथ साथ, यह एक छोटी सी दुर्घटना भी हो गयी।

नगरकी लूटके अनन्तर उसने पूर्व प्रतिज्ञानुसार 'जूनो' की प्रतिमा रोम ले जानेका संकल्प किया। इस कार्यके लिए मज़दूर मिल जाने पर उसने देवीको बलिदान चढ़ाया और उससे कृपापूर्वक रोमनोंकी भक्ति स्वीकार कर रोमके प्रधान देवताओंमें स्थान ग्रहण करनेकी प्रार्थना की। कहा जाता है कि प्रतिमाने मन्द स्वरमें वहाँ जाना स्वीकार कर लिया। लिवीका कथन है कि कैमिलसके प्रार्थना करनेके समय प्रतिमाके पास कई व्यक्ति खड़े थे और यह स्वीकारोक्ति उन्हींके मुखसे निकली थी। जो लोग देवीकी स्वीकारोक्ति सत्य मानते हैं, उनके पक्षमें एक प्रबल बात यह है कि देवताओंकी उपस्थिति और सहयोगके अभावमें यह अदना सा नगर इतने महत्वको कभी प्राप्त न हुआ होता। प्राचीन इतिहासकारोंने प्रतिमाओंके रोने, मुड़ जाने, आँखें बन्द कर लेने और प्रस्वेदित होने आदिका भी उल्लेख किया है। मानवी निर्बलताओंके कारण इन बातोंको पूर्णतः सत्य मान लेना भी उतना ही भयावह है जितना इन्हें अविश्वसनीय मानना। हम लोग विवेककी सीमाके भीतर बराबर नहीं रह सकते। कभी तो अन्ध-विश्वासोंके शिकार बन जाते हैं और कभी प्रमादवश धर्मको ताकपर धर देते हैं, इसलिए सावधानीके साथ मध्यवर्ती मार्गसे चलना ही सर्वोत्तम है।

इतने बड़े नगरकी विजय अथवा पार्श्ववर्तियोंकी चाटुकारितासे कैमिलसको इतना गर्व हो गया कि वह अपनेको प्रधान शासकसे भी बढ़ कर समझने लगा। विजयमदसे चूर होकर उसने चार श्वेत घोड़ों द्वारा खींचे जानेवाले रथमें बैठ कर सारे नगरमें चक्कर लगाया। किसी पूर्ववर्ती या परवर्ती सेनानायकने ऐसा नहीं किया। रोमन लोग इस प्रकारके रथारोहणको बहुत पवित्र मानते हैं। साधारणतया ऐसा समझा जाता था कि केवल राजा और देवताओंके पिता ही ऐसे रथपर सवारी

कर सकते थे। उसके इस कार्यसे अन्य नागरिक, जो इस प्रकारके ठाट-बाटके आदी न थे, बहुत चिढ़ गये।

ट्रिब्यून कहलाने वाले सार्वजनिक न्यायकर्त्ताओंने जनता और सिनेटको दो भागोंमें बाँट कर एकको रोममें और दूसरेको नवविजित नगरमें बसानेका विचार किया था। कौन कहाँ रहे, इसका निर्णय चिट्ठी द्वारा किया जानेवाला था। इसमें उनका यह उद्देश्य था कि एक तो सब लोगोंके लिए काफी जगह मिल जायगी और दूसरे दो श्रेष्ठ नगरोंमें रहनेके कारण राज्यके प्रदेशों और सम्पत्तिपर अच्छी तरह नज़र रखी जा सकेगी। सर्वसाधारणने जो संख्यामें अधिक थे और हालकी लूटसे मालामाल भी हो गये थे, इसको खुशीसे स्वीकार कर लिया और झुण्डके झुण्ड न्यायालयमें पहुँच कर इसपर मत प्राप्त करनेके लिए शोर मचाने लगे। पर सिनेट और सब बड़े बड़े नागरिकोंको सार्वजनिक न्यायकर्त्ताओंकी इस कार्यवाहीमें रोमके विभागकी अपेक्षा उसके नाशके ही लक्षण अधिक देख पड़े, इसलिए उन्होंने इसके विरुद्ध कैमिलसकी सहायता चाही। कैमिलसने कुछ बहाने ढूँढ़ कर इस विषयको टाल दिया। जनतामें उसके अप्रिय होनेका यह दूसरा कारण हुआ। लूटके दशमांशका प्रश्न उपस्थित हो जानेके कारण जनता उससे बहुत अधिक अप्रसन्न हो गयी। कैमिलसने घेरा डालनेके लिए जाते समय यह मनौती मानी थी कि नगरपर अधिकार हो गया तो लूटका दशमांश सूर्य देवको समर्पित करूंगा। नगर-विजयके उपरान्त सैनिकोंको तंग करना अच्छा न समझ कर या कार्याधिक्यसे मनौती भूल जानेके कारण उसने लूटका दशमांश भी सैनिकोंको ले लेने दिया। इसके कुछ काल पश्चात्, अपने पदसे पृथक् होने पर उसने सिनेटमें यह बात पेश की। इसी समय पुजारियोंने भी बलिदानके कुछ लक्षणोंसे दैवी प्रकोपका आभास पाकर उनकी कृपाके लिए कृतज्ञता प्रकट करनेका अनुरोध किया। तब सिनेटने उक्त मनौती चढ़ानेका निर्णय दे दिया।

लूटकी जो वस्तुएँ सैनिकोंको बाँट दी गयी थीं, उन्हें पुनः वापस मँगाना और नये सिरेसे उनका विभाग करना अत्यन्त कठिन कार्य था, इसलिए सिनेटने शपथपर वस्तुओंका दशमांश मूल्य जमा करनेका आदेश दे दिया। सैनिक लोग प्रायः निर्धन थे और युद्धमें भी उन्हें बहुत कुछ सहन करना पड़ा था। इसके अलावा उन्हें लूटमें जो कुछ मिला था वह सब खर्च हो चुका था। ऐसी हालतमें दशमांश रकम जमा करनेके आदेशसे वे बड़ी कठिनाईमें पड़ गये। सभी लोग कैमिलसको अपने वाक्यवाणोंका निशाना बनाने लगे। किसी अच्छे कारणके अभावमें उसने मनौती भूल जानेका बहाना पेश कर दिया। खैर, दशमांश रकम मिल जाने पर उसीसे सोनेका ठोस पात्र बना कर डेल्फी भेजनेका निश्चय हुआ। नगरमें सोना दुष्प्राप्य था, शासक लोग इसी सोच विचारमें पड़े हुए थे कि सोना कहाँसे लाया जाय, तबतक इसका समाचार पाकर रोमन महिलाओंने आपसमें सभा कर अपने गहनोंमेंसे उक्त पात्रके लायक (लगभग ५॥ मन) सोना दे दिया। सिनेटने कृतज्ञता स्वरूप पुरुषोंकी तरह स्त्रियोंकी अन्त्येष्टिके अवसरपर भी भाषण करनेका नियम बना दिया। अब इस कामके लिए तीन भद्र पुरुष चुने गये और एक सुसज्जित युद्ध-पोतपर आरूढ़ करा कर भेंटके साथ डेलफी भेजे गये। समुद्र-यात्रामें तूफान और हवाके प्रवाहका अभाव दोनों ही समान रूपसे खतरनाक होते हैं, इस बातका इन लोगोंने इस यात्रामें प्रत्यक्ष अनुभव किया। ईओलस द्वीपपुंजके पास हवा मंद पड़ गयी, इतनेमें इन्हें समुद्री डाकू समझ कर लीपारियन लोग अपनी नावोंके साथ इनपर टूट पड़े। दयाके लिए हाथ जोड़ने पर उन्होंने इनका वध तो नहीं किया पर पोतको खींच कर अपने बन्दरमें डाल दिया और इन्हें माल-असबावके साथ बेचनेको तैयार हो गये। अन्तमें टिम्प्रसिथिअस नामक नायकके बहुत कहने सुनने पर ये लोग छोड़ दिये गये। इतना ही नहीं, उसने अपने कुछ पोत भी इन लोगोंकी यात्रामें

शाथ कर दिये। रोमके लोगोंने कृतज्ञता स्वरूप इसका उचित सम्मान भी किया।

अब जनताके न्यायकर्त्ताओंने नगर-विभागका प्रस्ताव पुनः उपस्थित किया। इसी समय संयोगवश फालिस्कन लोगोंके साथ युद्ध पुनः छिड़ गया, इससे प्रधान नागरिकोंको अपनी इच्छानुसार शासक चुनने और कैमिल्सको पाँच सहकारियोंके साथ सैनिक शासक नियुक्त करनेकी स्वतंत्रता मिल गयी। उस समय दर असल एक ऐसे आदमीकी ज़रूरत भी थी जो अनुभवी होनेके साथ साथ अधिकारसम्पन्न और यशस्वी भी हो। सर्वसाधारण द्वारा चुनावकी स्वीकृति हो जाने पर कैमिल्सने अपनी सेनाके साथ फालिस्कन लोगोंके प्रदेशमें प्रवेश किया और फैलीरिआई नामक नगरपर घेरा डाल दिया। यह नगर दृढ़ प्राचीर द्वारा भली भाँति सुरक्षित था और लोगोंने युद्ध सम्बन्धी सामग्री भी काफी मात्रामें प्रस्तुत कर रखी थी। कैमिल्स इस बातको अच्छी तरह समझता था कि नगरपर अधिकार करना आसान नहीं है और इसमें समय भी बहुत अधिक लगेगा। इसलिये उसने नागरिकोंको बाहर ही काममें लगाये रखना अच्छा समझा, जिसमें वे बेकारी-की हालतमें शासकोंके साथ मिल कर दलबन्दी या राजद्रोहके कार्योंमें प्रवृत्त न हो सकें। रोमन लोग अच्छे वैद्यकी तरह राष्ट्रमंडल रूपी शरीरको नीरोग बनानेके निमित्त इस उपायका बहुधा आश्रय लिया करते थे। फैलीरियन लोग नगरको प्राचीर द्वारा सुरक्षित समझ कर घेरेकी तरफसे इतने लापरवाह थे कि प्राचीर रक्षकोंके सिवा अन्य सभी लोग अपनी मामूली पोशाकमें ही रास्तोंपर चलते फिरते नज़र आते थे। लड़के उसी तरह पाठशाला जाते और उनका शिक्षक उन्हें अपने साथ नगर-प्राचीरके पास खेलाने और घुमाने फिरानेको ले जाता था। मालूम होता था मानो यह युद्धका नहीं, शान्तिका ही समय है।

यूनानियोंकी तरह फैलीरियन लोग भी बहुतसे लड़कोंके लिए एक

ही शिक्षक रखते थे और बालकोंका आरम्भसे ही औरोंके सहवासमें रहना तथा पालन-पोषण होना अच्छा समझते थे। यह शिक्षक लड़कों द्वारा फैलीरियन लोगोंके साथ विश्वासघात करना चाहता था। वह उन्हें प्राचीरके पास रोज़ ले जाता और व्यायाम करा कर घर लौटा ले आता था, पर पहले दिनकी अपेक्षा दूसरे दिन कुछ और आगे ले जाता था। अभ्यासके कारण लड़के इतने निर्भीक और साहसी हो गये कि वे अपनेको बिलकुल निरापद ही समझने लगे। एक दिन वह सबको एकत्र कर रोमन लोगोंकी चौकीके पास ले गया। लड़कोंको रोमन सैनिकोंके सुपुर्द कर उसने उन्हें कैमिलसके पास ले जानेको कहा। कैमिलसके पास पहुँचने पर उसने निवेदन किया कि "मैं इन बालकोंका शिक्षक हूँ। मैं आपके अनुग्रहको अन्य कर्त्तव्योंसे अधिक महत्त्वपूर्ण समझ कर अपने अधीन बालकोंके रूपमें सारे नगरको ही आपके सुपुर्द करता हूँ।" शिक्षकके इस विश्वासघात सम्बन्धी कार्यको देख कर कैमिलस आश्चर्यचकित हो गया। पार्श्ववर्तियोंकी ओर घूम कर उसने कहा "इसमें कोई सन्देह नहीं कि युद्धमें अन्याय और हिंसात्मक कार्य होते ही हैं। फिर भी सत्पुरुष युद्धमें भी कुछ नियमोंका पालन करते हैं, विजय कोई ऐसी बड़ी चीज़ नहीं जिसके लिए हम लोग इस प्रकारके नीच और पापमय कर्मोंका सहारा लेनेमें प्रवृत्त हों। अच्छे सेनानायकको औरोंके दुर्गुणोंका अवलम्बन न कर अपने ही गुणोंका भरोसा रखना चाहिए।" इसके अनन्तर उसने अपने कर्मचारियोंको उसके कपड़े फाड़ डालने तथा उसके हाथ पीछेकी तरफ कसकर बाँध देने और लड़कोंके हाथमें कोड़े देकर इस देशद्रोहीको पीटते हुए नगरमें वापस ले जानेकी आज्ञा दी। तबतक नागरिकोंको शिक्षकके विश्वासघातका पता लग चुका था। इस संकटके कारण सारे शहरमें हाहाकार मच गया था। ऊँचे खानदानके स्त्री-पुरुष प्राचीरों और द्वारोंके पास घबराहटमें इधर उधर दौड़ रहे थे। इसी समय लड़कोंने बँधे हुए शिक्षकके नंगे बदनपर कोड़े बरसाते और कैमिलस

को 'सरक्षक', 'देवता', 'पिता' कहते हुए नगरमें प्रवेश किया। कैमिल-सके इस न्यायसे केवल बच्चोंके माता पिता ही नहीं, बल्कि और लोग भी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने आपसमें मंत्रणा कर दूत द्वारा यह कहलाया कि हम लोगोंके पास जो कुछ है आपको समर्पित कर देनेको तैयार हैं। कैमिलसने उन दूतोंको रोम भेज दिया। सिनेटमें उपस्थित किये जाने पर उन्होंने कहा "रोमनोंने विजयपर न्यायको तरजीह देकर स्वाधीनताके बदले अधीनता ही स्वीकार करनेका पाठ पढ़ाया है। शक्तिमें तो नहीं, हाँ गुणकी दृष्टिसे आपकी श्रेष्ठता हम अवश्य स्वीकार करेंगे।" सिनेटने इस प्रश्नके निर्णयका भार कैमिलसके ही ऊपर डाल दिया। कैमिलसने फैलीरियन लोगोंसे कुछ द्रव्य ले लिया और सारे फालिस्कन राष्ट्रसे सन्धि कर रोम लौट आया।

सैनिक लोग इस आशासे प्रेरित थे कि लूटका माल मिलेगा, पर जब उन्हें खाली हाथ रोम लौटना पड़ा तो वे कैमिलसको 'जनताका द्वेषी' 'निर्धनोंकी भलाई न चाहनेवाला' आदि कह कर जनतामें उसकी बदनामी फैलाने लगे। इसके अनन्तर न्यायकर्ताओंने नगर-विभागका प्रस्ताव मत लेनेके निमित्त पुनः पेश किया। अपनी अपकीर्तिसे ज़रा भी भयभीत न होकर कैमिलसने इस प्रस्तावके समर्थकोंको खूब फटकारते हुए और खुले तौरपर इसका विरोध किया। उसने जनतापर इतना दबाव डाला कि उसने अपनी इच्छाके प्रतिकूल इस प्रस्तावको अस्वीकृत कर दिया। फिर भी जनताके हृदयमें उसके प्रति इतनी घृणा बनी रही कि उसके परिवारपर भारी विपत्ति पड़ने (दो पुत्रोंमेंसे एककी मृत्यु होजाने) पर भी समवेदनाका भाव इस घृणाको कम न कर सका। उसका स्वभाव बहुत ही कोमल था, इस कारण इस मृत्युका उसे बहुत अधिक शोक हुआ। जिस समय उसके विरुद्ध अभियोग लाया जा रहा था उस समय वह अपने घरके अन्दर स्त्रियोंके साथ आँसू बहा रहा था।

अभियोग लानेवाला लूसियस अपूलियस नामक एक व्यक्ति था।

अभियोग यह था कि कैमिलसने लूटकी बहुत सी चीज़ें हड़प ली हैं। इनमेंसे कुछ चीज़ें इस समय भी उसके अधिकारमें हैं। जनता उससे पहलेसे ही बहुत चिढ़ी हुई थी, इससे यह निश्चित था कि मौक़ा पाने पर वह उसे दण्डित कराये बिना कभी न छोड़ती। उसने अपने बहुतसे मित्रों, सहसैनिकों तथा अन्यान्य नायकोंको बुला कर उनसे प्रार्थना की कि आप लोग झूठे एवं अन्याय्य आक्षेपोंसे तथा शत्रुओंकी घृणा आदिसे मेरी रक्षा करें। उसके मित्रोंने आपसमें परामर्श कर यह उत्तर दिया कि हम लोग आपको क़ैदकी सज़ासे बचानेमें तो असमर्थ हैं, किन्तु जो अर्थ-दण्ड होगा वह हम सहर्ष दे देंगे। इतने बड़े अपमानको सहन करनेमें असमर्थ होकर उसने नगरका त्याग कर देशान्तर जानेका निश्चय किया। इसलिए अपनी स्त्री और पुत्र आदिसे बिदा लेकर वह नगरके द्वारपर चुपचाप चला गया। वहाँ वह रुक गया और मुड़कर बृहस्पति देवके मन्दिरकी तरफ हाथ उठा कर इस प्रकार प्रार्थना करने लगा "यदि मैं वस्तुतः बिना किसी अपराधके, केवल जनताकी घृणा और द्वेषके कारण ही निर्वासित हो रहा हूँ तो रोमन लोग इसके लिए शीघ्र ही पश्चात्ताप करें, सभी लोग मेरी सहायताकी जरूरत समझें और मेरे लौटनेकी इच्छा करें।"

इस प्रकार नगरको शाप देकर वह देशान्तरके लिए रवाना हो गया। न्यायालयमें वह उपस्थित भी नहीं हुआ, पैरवीकी बात तो अलग रही। उसपर पन्द्रह हजार ड्रैग्मा (रजतमुद्रा) जुर्माना हुआ। सभी रोमनोंका यह विश्वास है कि उसके शापका फल तुरन्त ही देख पड़ा जो उसके प्रति अन्यायका प्रतीकार स्वरूप था; पर इससे कैमिलसको प्रसन्नता होनेके बदले दुःख ही हुआ। उस समय नगरकी दशा बिलकुल शोचनीय हो गयी थी। चारों ओर तबाही मची हुई थी और साथ ही साथ बेइज़्ज़ती भी हो रही थी। इस भयङ्कर स्थितिका कारण या तो भाग्यका फेर हो सकता है या किसी देवताका कार्य जो पुण्यात्माके प्रति किये गये अपकारको सहन नहीं कर सकता।

भावी अनिष्टका पहला लक्षण सुल्पिसस्का देहावसान था। यह उस समय सेन्सरके पदपर था। रोमन लोग इस पदको बड़े आदर और पवित्रताकी दृष्टिसे देखते हैं। कैमिलसके देश-परित्यागके कुछ ही देर पहले मार्कस सीडीयस नामक एक व्यक्तिने, जो न तो विशेष प्रसिद्ध था और न सिनेटका सभ्य ही था, लेकिन ट्रिव्यूनोंके पास आकर कहा कि जब मैं रातमें एक रास्तेसे जा रहा था, तब किसीने ऊँची आवाज़में मुझे पुकारा। पीछे घूमकर देखा तो कोई नज़र नहीं आया पर मनुष्यके स्वरसे अधिक ऊँचे स्वरमें मुझे ये शब्द सुनाई पड़े—"जाओ मार्कस सीडीसियस, कल प्रातःकाल सैनिक न्यायकर्ताओं (ट्रिव्यूनों) से कह देना कि गॉल लोग शीघ्र ही पहुँचने वाले हैं।" उन्होंने इस बातको मज़ाकमें उड़ा दिया। इसके कुछ ही समय बाद कैमिलसने स्वदेशका परित्याग किया।

गॉल लोग केल्टिक जातिके हैं। कहते हैं कि इन लोगोंकी संख्या इतनी बढ़ गयी थी कि नयी जगहोंकी तलाशमें इन्हें अपना देश छोड़ना पड़ा था। इनमेंसे कई हजार नवयुवक ऐसे थे जो शस्त्र भी ग्रहण कर सकते थे। अपनी स्त्री और बच्चोंके साथ रीफियन पर्वत पार कर उत्तर सागरकी ओर निकल पड़े और इन्होंने यूरोपके सुदूरवर्ती स्थानोंपर अधिकार जमा लिया। कुछ लोग पिरीनियन पर्वत और आल्प्सके बीचकी भूमि में आकर बस गये। यहाँ ये बहुत दिनों तक रहे। जब यहाँ इटलीसे पहले पहल शराब पहुँची तो उसकी आनन्ददायिनी शक्तिपर ये इतने मुग्ध हो गये कि उसके प्राप्ति-स्थानकी खोजमें बाल-बच्चोंके साथ निकल पड़े। पहले पहल इनके पास शराब पहुँचानेवाला व्यक्ति तस्कनी निवासी अरुंस था। इसीने इन्हें इटलीकी ओर आनेके लिए उत्तेजन दिया। यह मनुष्य आपत्तिका मारा अवश्य था पर स्वभावका बुरा न था। यह लुकुमो नामक एक लड़केका अभिभावक था जो मातृपितृ-हीन होते हुए भी बहुत अमीर था और साथ ही सौन्दर्यके लिए भी प्रसिद्ध था। शैशवावस्थासे ही अरुंसके परिवारमें इसका लालन-पालन हुआ था।

युवा होने पर भी वह उसके घरसे पृथक् नहीं हुआ। काल पाकर अरुंस-की स्त्रीके साथ इसका अनुचित सम्बन्ध हो गया। कुछ दिनोंतक तो बात छिपी रही पर बादमें प्रकट हो जाने पर वह उस स्त्रीको खुले-आम लेकर चला गया। अभियोग चलाने पर नवयुवकके धन और शक्तिके आगे अरुंसकी एक भी न चली। अन्तमें वह अपना देश छोड़ गॉलोंसे जा मिला और उनको इटलीपर चढ़ा लाया।

आनेके साथ ही गॉलोंने तस्कन लोगोंके प्राचीन निवास-स्थानपर अधिकार कर लिया था। यह समूचा देश फलवाले वृक्षों और चरा-गाहोंसे परिपूर्ण था। यहाँ नदियाँ भी काफी संख्यामें थीं। इसमें १८ बड़े और सुन्दर नगर बसे हुए थे जिनमें उद्योग-धन्धे, आमोद-प्रमोद आदि सबके साधन मौजूद थे। गॉल लोग तस्कन लोगोंको भगा कर इस स्थानमें बस गये। यह बात बहुत पहलेकी है।

इस समय गॉल लोग तस्कनीके क्लूसियम नामक एक नगरपर घेरा डाले हुए थे। क्लूसियमवालोंने रोमन लोगोंसे पत्र और दूत द्वारा बीच-बिचाव कर रक्षा करनेकी प्रार्थना की। इस पर रोमनोंने फैबिआई वंशके तीन प्रतिष्ठित व्यक्तियोंको दूतके तौर पर भेजा। रोमके प्रति सम्मान-भाव होनेके कारण गॉलवालोंने आदरके साथ इनका स्वागत किया और आक्रमणका कार्य छोड़ कर परिषद्में एकत्र हुए। जब दूतोंने यह पूछा कि क्लूसियमवालोंने आपका क्या अपराध किया है कि आप उनके नगरपर आक्रमण कर रहे हैं, तो गॉल-नरेश ब्रेनसने हँसते हुए उत्तर दिया "क्लूसियमवाले हमारे साथ बहुत बुराई कर रहे हैं क्योंकि यद्यपि वे सिर्फ थोड़ीसी ही भूमि अपने उपयोगमें ला सकते हैं फिर भी विस्तृत भूभागपर अधिकार किये हुए बैठे हैं और हम लोगोंको, जो संख्यामें बहुत अधिक हैं तथा निर्धन भी हैं, उसका कुछ अंश देना पसन्द नहीं करते। कुछ काल पहले अल्बा आदिके निवासियोंने और हालमें फालिस्कन तथा वाल्सियन लोगोंने भी आप लोगोंके साथ

यही अपकार किया है, तभी तो आप लोग उनपर, अपनी सम्पत्तिका कुछ अंश आपको न देनेके कारण, आक्रमण करते हैं, उन्हें गुलाम बनाते हैं, उनके देशको उजाड़ डालते हैं और उनके नगरको मटियामेट कर देते हैं और ऐसा करते हुए भी कोई निष्ठुरता या अन्यायका काम न कर केवल उस प्राचीनतम नियमका अनुसरण करते हैं जिसके अनुसार सबल निर्बलोंको हड़प जाते हैं और जो देवताओंसे लेकर जानवरों तकमें एकसा पाया जाता है, क्योंकि बलवानोंका निर्बलोंसे लाभ उठाना स्वाभाविक ही है। अत: क्लूसियमवालोंके प्रति दया दिखलानेके पूर्व आप उन लोगोंके प्रति अपनी दया और सहानुभूति दिखलाइये जो आपसे पीड़ित हैं।" इस उत्तरसे रोमन राजदूतोंको बड़ी निराशा हुई। उन लोगोंने नगरके भीतर जाकर वहाँवालोंको शत्रुपर एकाएक टूट पड़नेके लिए उत्तेजित किया। दोनों ओरके सैनिक परस्पर भिड़ गये और भीषण युद्ध आरंभ हो गया। दूतोंमेंसे अम्बस्टसने सेनाकी पंक्तिसे पृथक् एक गॉलको देखकर उसका पीछा किया। कवचकी चमक और मुठभेड़के कारण उस समय वह नहीं पहचाना जा सका, पर गॉल सैनिकके धराशायी होने पर जब वह उसका कवच आदि लेने चला तब गॉल नरेश ब्रेनसने उसे पहचान लिया। उसने देवताओंको रोमनोंके इस कार्यका साक्षी बनाते हुए कहा कि जो नियम सभी राष्ट्रोंके लिए एकसा मान्य है, और सारी मानव जाति पवित्रतापूर्वक जिसका पालन करती है, उसकी अवहेलना कर ये रोमन दूतकी हैसियतसे आकर भी युद्धमें भाग ले रहे हैं। उसने अब क्लूसियमका घेरा उठा लिया और सीधे रोमके विरुद्ध यात्रा की। जिसमें यह न कहा जाय कि गॉलवाले इस अपकारसे लाभ उठा कर लड़ाईका अवसर ही ढूँढ़ रहे थे, उसने एक दूत भेज कर उक्त मनुष्यको दण्ड देनेके अभिप्रायसे माँग भेजा और तबतक धीरे धीरे आगे भी बढ़ता गया।

इसपर विचार करनेके लिए रोममें सिनेटकी बैठक हुई। जिन बहुतसे लोगोंने दूतोंके विरुद्ध अपनी राय दी, उनमें कुछ पुरोहित भी थे।

इन्होंने सारे दोष और दण्डका भागी अम्बस्टसको ही बना कर औरोंको इस बखेड़ेसे बचानेका आग्रह किया। सिनेटने इस विषयको जनताके सम्मुख उपस्थित किया। यहाँ भी उन पुरोहितोंने जो शान्तिके रक्षक थे और युद्धके औचित्यपर विचार किया करते थे, दूतोंके विरुद्ध राय दी पर जनताने उनकी बातोंपर ध्यान न दे कर बल्कि उनका तिरस्कार कर उन्हीं दूतोंको सैनिक न्यायकर्त्ता चुन लिया। यह सुन कर गॉल लोग क्रोधावेशमें तेज़ीसे आगे बढ़े। इनकी संख्या तथा शस्त्रास्त्र और युद्धकी तैयारी देख कर लोग अपने आपको विजित समझ कर यों ही ग्राम आदि छोड़ कर भागने लगे। उनका ख्याल था कि नगरोंको भी उनका अनुकरण करना पड़ेगा। पर गॉल लोग किसी ग्राममेंसे होकर आते समय ग्रामवासियोंका कुछ भी अपकार नहीं करते थे। न तो वे खेतोंको उजाड़ते थे और न नगरोंको ही ध्वस्त करते थे। वे सिर्फ यही कहते थे कि हम रोम जा रहे हैं, केवल रोमन लोग ही हमारे शत्रु हैं, औरोंको हम अपना मित्र समझते हैं।

इधर गॉल लोग बड़ी तेजीसे बढ़ते जा रहे थे, उधर सैनिक ट्रिब्यून रोमनोंको समरभूमिमें लाकर युद्धके लिए तैयार कर रहे थे। ये लोग संख्यामें गॉलोंसे कम न थे पर अधिकांश ऐसे नये रंगरूट थे जिन्होंने शस्त्रका कभी प्रयोग भी नहीं किया था। इसके अलावा इन लोगोंने न तो अपने धार्मिक कृत्य किये थे, न देवताओंको बलिदान चढ़ाया था और न देववाणी ही करायी थी जैसा कि संकटके समय या युद्धके पूर्व प्रायः हुआ करता था। एक आदमीके हाथमें अधिकार रहनेपर सब लोग एक भावसे प्रेरित होकर कार्य करेंगे, इस विचारसे पहले छोटे छोटे युद्धोंके अवसरपर भी एक अधिनायक बना दिया जाता था, पर इस बार नायकोंकी बहुलताके कारण सेनामें बड़ी अस्त-व्यस्तता फैल रही थी। कैमिलसके प्रति दुर्व्यवहारको स्मरण कर अब सेनानायकोंको सेनाकी खुशामद किये बिना कुछ आज्ञा देनेका साहस भी नहीं होता था। इस प्रकार

नगरसे प्रस्थान कर उन्होंने दस मील दूर एलिया नदीके तटपर अपना पड़ाव डाला। गॉल लोगोंके आक्रमण करने पर रोमनोंने कुछ देरतक तो मुकाबला किया पर अनुशासन आदिके अभावके कारण बुरी तरह पराजित हुए। बायीं कतार नदीकी तरफ हटती गयी और नष्ट हो गयी। दाहिनी कतारवालोंको पहाड़का आश्रय मिल गया, बहुतोंने पहाड़से उतर कर धीरेसे नगरका रास्ता लिया। यह युद्ध ग्रीष्म ऋतुमें पूर्णिमाके दिन हुआ था। उस समय सूर्य कर्कट क्रान्तिके पास पहुँच चुका था। बहुत समय पहले इसी दिन फेबियाई वंशके तीन सौ मनुष्योंको तस्कनीवालोंने मार डाला था। दूसरी घटना अर्थात् रोमकी पराजयके सामने पहलेकी स्मृति ही जाती रही। अब इस दिनका नाम एलिया नदीके कारण एलियनसिस पड़ा जो अभीतक प्रचलित है। रोमन लोग इस दिनको बहुत बुरा मानते हैं।

भागे हुए लोगोंने नगरमें जाकर इतना आतंक फैला दिया था कि यदि गॉल लोग शीघ्र ही उनका पीछा करते तो नगरके पूर्णत विध्वस्त हो जानेमें सन्देह न था, पर वे लोग विजयके उपलक्ष्यमें आनन्द मनाने और शिविरकी चीजें लूटनेमें लग गये। तबतक उन लोगोंको जो भागना चाहते थे भागनेका और जो रहना चाहते उन्हें आत्मरक्षाके लिए कुछ प्रबन्ध करनेका मौका मिल गया। जिन नागरिकोंने रोममें रहनेका निश्चय किया था वे बृहस्पति देवके मन्दिरमें चले गये और उसे अस्त्रादिसे सुरक्षित कर लिया। उन लोगोंको अपनी धार्मिक वस्तुओंके लिए विशेष चिन्ता थी जिनमेंसे कुछ वे अपने साथ मन्दिरमें ले भी गये। वेस्टल कुमारियाँ अन्यान्य पवित्र वस्तुओंके साथ पवित्र अग्नि भी लेती गयीं। कुछ लोगोंके कथनानुसार पवित्र अग्निके अतिरिक्त इन कुमारियोंके पास और कोई धार्मिक चीज नहीं रहती। नूमाने अग्निको सर्वप्रधान मान कर यह पूजा प्रवर्तित की थी क्योंकि अग्नि ही जीवनका कारण है, जहाँ गर्मी नहीं, वहाँ जीवन नहीं। उसने अग्निको चिरन्तन शक्तिका प्रतीक मान

कर इसे बराबर जीवित रखनेका नियम भी बनाया था। अन्य लोगोंका कहना है कि पवित्र वस्तुओंके सम्मुख शुद्धिके निमित्त आग जलती रहती थी और शेष वस्तुएँ मन्दिरके एक भागमें रखी रहती थीं जिन्हें इन कुमारियोंके अलावा और कोई नहीं देख सकता था, अस्तु।

उनके पास जो मुख्य मुख्य चीजें थीं उन्हें लेकर ये नदीके पाससे होकर चलीं। लुसियस अल्बुनियस नामक एक नागरिक भी अपने सामानके साथ स्त्री बच्चोंको गाड़ीमें बैठा कर उसी मार्गसे चला। जब उसने रास्तेमें इन कुमारियोंको देवताओंकी पवित्र वस्तुएँ बगलमें दबा कर बड़े कष्टसे ले जाते हुए देखा, तब उसने ऐसे खतरेकी हालतमें भी अपनी स्त्री और बच्चों आदिको गाड़ीसे उतार दिया और इनके स्थानमें उक्त कुमारियोंको बैठा दिया जिसमें वे सुभीतेसे किसी यूनानी नगरमें पहुँच जायँ। पर अन्य देवताओंके पुजारी, कुलीनसभाके वृद्ध सदस्य तथा ऐसे मनुष्य, जो प्रधान शासकके पदपर रह चुके थे, नगरका परित्याग करनेमें असमर्थ थे। उन्होंने अपने पवित्र एवं राजकीय वस्त्र धारण कर लिये और नगरके नामपर बलिदान होनेका संकल्प कर न्यायालयमें हाथीदांतकी कुर्सियोंपर जा बैठे। अब वे शान्त भावसे भावी घटनाकी प्रतीक्षा करने लगे।

युद्धके तीसरे दिन ब्रेनस अपनी सेनाके साथ नगरके पास पहुँचा। द्वारोंको खुला और प्राचीरोंको रक्षकहीन देख कर उसे धोखेका भ्रम हुआ। उसे स्वप्नमें भी इस बातका खयाल न था कि रोमन लोग इस प्रकार निराश हो गये होंगे। किन्तु वास्तविक स्थितिका विश्वास हो जाने पर एक द्वारसे प्रवेश कर, निर्माणके लगभग ३६० वर्षके बाद, उसने नगरपर अधिकार कर लिया।

नगरपर अधिकार हो जाने पर ब्रेनसने बृहस्पतिदेवके मन्दिरपर कड़ा पहरा बैठा दिया। न्यायालयकी तरफ जाने पर उक्त लोगोंको बैठ देख कर उसे बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि ये लोग उसके आने पर न तो खड़े हुए

और न भयसे विचलित ही हुए बल्कि अपने डण्डेका अवलम्ब लेकर बैठे बैठे एक दूसरेकी तरफ चुपचाप देखते रहे। गॉल लोग बहुत देरतक इस विचित्र दृश्यको आश्चर्यके साथ देखते रहे, महापुरुषोंकी समिति समक्ष पर उन्हें पास जानेकी हिम्मत नहीं होती थी। पर उनमेंसे एक जो औरोंकी अपेक्षा अधिक साहसी था, मार्कस पैपीरियस नामक व्यक्तिके पास चला गया और जब इसने उसकी ठुड्डीका स्पर्श कर दाढ़ी सुहलायी तो उसने इसके सिरपर एक डण्डा जमा दिया। इसपर गॉल्ने अपनी तलवार खींच कर उसकी गर्दन उड़ा दी। यहींसे मारकाटका आरम्भ हुआ। अब अन्य गॉल लोग भी शेष व्यक्तियोंपर टूट पड़े और उन्होंने उनका अन्त कर दिया। वे घरोंको लूटने और विध्वस्त करने लगे। जो लोग उन्हें मिलते थे उनको वे तुरन्त मार डालते थे। कई दिनों तक यह कार्य लगातार चलता रहा। जो लोग बृहस्पतिदेवके मन्दिरमें थे उन्होंने अधीनता न स्वीकार कर आक्रमणकारियोंको वहाँसे मार भगाया। इसपर गॉलोंने क्रुद्ध होकर बाल-वृद्ध, स्त्री पुरुष जो मिले सभीको तलवारके घाट उतारते हुए नगरको मटियामेट कर दिया।

बृहस्पतिदेवके मन्दिरपर घेरा डाले कई दिन हो जानेके कारण गॉलोंकी रसद चुक गयी, इसलिए कुछ लोग तो ब्रेनसके साथ घेरेपर रहे और शेष लोग छोटी छोटी टुकड़ियाँ बना कर रसदके लिए निकल पड़े। ये लूटपाट करनेके साथ ही नगरों और ग्रामोंको भस्म भी कर देते थे। विजयके कारण ये ऐसे निर्भीक होगये थे कि बेखौफ होकर लापरवाहीके साथ इधर उधर भ्रमण करते थे। गालोंका सबसे अच्छा और व्यवस्थित दल आर्डिआ नगरकी तरफ गया जहाँ कैमिलस रोम छोड़नेके पश्चात् अपने काम-धन्धोंसे सम्बन्ध विच्छेद कर ठहरा हुआ था। शत्रुओंका आगमन सुन कर उसमें जोश उमड़ आया और वह अपनेको बचानेकी चिन्ता न कर उनसे बदला लेनेका अवसर ढूँढने लगा। आर्डिआवाले संख्यामें कम न थे, कमी यही थी कि उनके अफसर अनुभवी और साहसी

न थे। उसने नवयुवकोंको समझा कर कहा कि रोमनोंकी हार गॉलोंकी वीरता या अयोग्य व्यक्तियोंके आदेशानुसार कार्य करनेके कारण नहीं हुई है; इसका मूल कारण भाग्यका फेर ही समझना चाहिए। उसने उनसे यह भी कहा कि विदेशी बर्बर आक्रामकको, जिसकी विजयका उद्देश्य अग्निकी तरह सब कुछ भस्मीभूत ही करना है, मार भगानेमें बहादुरी ही है, चाहे ऐसा करनेमें कुछ खतरा भी क्यों न हो। यदि आप लोग दृढ़ और साहसी बनें तो मैं बिना किसी खतरेके आप लोगोंको विजय प्राप्त कराऊँगा। युवक लोगोंके यह प्रस्ताव स्वीकार कर लेने पर उसने शासकों और नगर-सभाको भी राजी कर लिया। उसने लड़ने योग्य सभी मनुष्योंको नगर-प्राचीरके पास एकत्र किया, किन्तु अभी उन्हें भीतर ही रखा जिसमें शत्रुओंको उनकी स्थितिका कुछ पता न चले। गॉल लोगोंने लूटपाटसे लौट कर नगरके बाहर मैदानमें डेरा डाला। आधी रात होने पर ये लोग नशेमें चूर होकर लापरवाहीके साथ गाढ़ी नींदमें सो गये। गुप्तचरों द्वारा यह समाचार पाकर कैमिलस सब लोगोंको बाहर ले आया। चुपकेसे पड़ावके पास पहुँच कर उसने गॉलोंपर हमला कर दिया। कुछ लोग निद्रा और नशेके कारण लस्त हो रहे थे। जो लोग सचेत थे, वे भी कुछ कर न सके। बहुतसे तो तुरन्त मार डाले गये और कुछ लोग, जो अन्धकारमें भाग निकले थे, दिनके समय जहाँ तहाँ कत्ल कर दिये गये।

इस कार्यकी प्रशंसा आसपासके नगरोंमें शीघ्र ही फैल गयी, इससे बहुतोंको प्रोत्साहन मिला और वे आकर कैमिलसके साथ हो गये। इसका विशेष सम्बन्ध एलिया-युद्धसे भागे हुए रोमनोंसे था जिन्होंने वीयाई नगरमें आश्रय लिया था। वे लोग पश्चात्ताप कर इस प्रकार कहने लगे "दैवने रोमको उसके सेनापतिसे वंचित कर आर्डीआको गौरवान्वित किया। जिस नगरने उसे उत्पन्न कर उसका पालन-पोषण किया था वह तो शत्रुओंके हाथमें पड़ कर विध्वस्त हो चुका और हम लोग योग्य नेताके

अभागमें दूसरे नगरके अन्दर चुपचाप धीरे धीरे इटलीको विनष्ट होते देख रहे हैं। हम लोग आर्डीआवालोंसे अपने नायकको वापस माँगें अथवा अपने शस्त्रोंको लेकर स्वयं ही उसके पास चले चलें। अब न तो वह निर्वासित रहा और न हम लोग नागरिक, क्योंकि हम लोगोंके पास अब कोई देश नहीं, जो था वह शत्रुओंका हो चुका।' इसपर सभी लोगोंने सहमत होकर सेनापतिका पद ग्रहण करनेको कैमिलससे कहलाया। उसने उत्तरमें कहा कि "जबतक बृहस्पतिदेवके मन्दिरवाले मुझे क़ानूनन सेनापति न बनावेंगे तबतक मैं सेनापति बनना स्वीकार न करूँगा, क्योंकि जबतक वे जीवित हैं तबतक मैं देशके स्थानमें उन्हींको समझता हूँ, उनकी मर्ज़ीके ख़िलाफ़ मैं कोई काम करनेको तैयार नहीं हूँ।" यह उत्तर सुन कर लोगोंने कैमिलसकी नम्रता और शीलकी प्रशंसा की। पर प्रश्न यह था कि इस संवादको पहुँचावे कौन? सारे नगरपर शत्रुओंका अधिकार होनेके कारण यह कार्य असम्भव ही प्रतीत होता था। नवयुवकोंमेंसे पानटियस कोमीनियस नामक एक व्यक्ति इस कार्यके लिए तैयार हो गया पर पत्र ले जाना उसने अच्छा नहीं समझा, क्योंकि शत्रुके हाथमें पत्रके पड़ जानेसे उसे कैमिलसकी योजनाका पता चल जाता। उसने ग़रीबों-जैसे फटे-पुराने वस्त्र पहन लिये और उनके नीचे कुछ कार्क भी छिपा लिये। रात होते होते वह नगरके पास पहुँच गया। पुलपर गॉलोंका पहरा होनेके कारण वह उस मार्गसे नगरमें प्रवेश नहीं कर सकता था, इसलिए कपड़ोंकी गठरी सिरपर बाँध कर कार्कके सहारे तैर कर उस पार चला गया। जहाँ प्रकाश देखकर अथवा आवाज़ सुनकर उसने शत्रुओंके जागते रहनेका अनुमान किया, उन स्थानोंको छोड़ कर वह कारमेण्टल द्वार-पर चला गया। यहाँ ख़ूब सन्नाटा छाया हुआ था और कैपिटलकी पहाड़ी प्रायः सीधी खड़ी थी। बड़ी कठिनाईके साथ चढ़ कर चट्टानोंकी दरारसे होते हुए वह रक्षकोंके पास पहुँच गया। अभिवादन कर उसने अपना नाम बतलाया, तब रक्षकोंने उसे ले जाकर नायकोंके पास पहुँचा दिया।

शीघ्र ही कुलीन सभाकी बैठक की गयी जिसमें उसने कैमिलसकी विजयका उल्लेख कर सैनिकोंकी ओरसे उसे सेनापति बनानेका अनुरोध किया, क्योंकि नगरके बाहरके सभी लोगोंका उसीपर विश्वास था। आपसमें परामर्श कर सभाने कैमिलसको सूत्रधार बना दिया और पाण्टियसने सकुशल उसी मार्गसे वापस आकर अपने देशवालोंको सिनेटका निश्चय सुना दिया। अब कैमिलसके पास साथके सैनिकोंके अतिरिक्त बीस हजार सैनिक और होगये। इन सबको लेकर वह शत्रुपर आक्रमण करनेके कार्यमें अग्रसर हुआ।

संयोगवश कुछ गॉल लोग रोममें उसी स्थानसे गुजर रहे थे जहाँसे पाटियस ऊपर गया था। वहाँपर हाथ और पैरके चिह्न स्पष्ट थे और कुछ पौधे भी मसल गये थे। इसकी सूचना मिलने पर ब्रेनसने स्वयं जाकर इन चिह्नोंको देखा और उस समय कुछ न कह कर शामको कुछ फुर्तीले और पर्वतारोहमें अभ्यस्त गॉलोंको बुला कर कहा "शत्रुओंने स्वय ही अपने पास पहुँचनेका एक ऐसा मार्ग हमें बतला दिया है, जिसका हमें कुछ भी पता नहीं था। उन्होंने यह भी शिक्षा दी है कि यह कार्य ऐसा नहीं है कि मनुष्य न कर सके। जब उन्होंने स्वय रास्ता बतला दिया है तो उसे अगम्य समझ कर छोड देना बडी लज्जाकी बात होगी। यदि एक आदमीके लिए यह कार्य सरल है तो बहुतोंके लिए वह कठिन नहीं हो सकता। इसके अलावा जब बहुत आदमी मिल कर यह कार्य करेंगे तो वे परस्पर एक दूसरेके सहायक हो जायँगे। जो लोग अच्छा कार्य कर दिखलायँगे उन्हें पारितोषिक और सम्मान भी मिलेगा।"

ब्रेनसके इस प्रकार प्रोत्साहन देने पर गॉलोंने प्रसन्नतापूर्वक यह कार्य करना स्वीकार कर लिया। आधी रातको बहुतसे सैनिक चुपकेसे सीधी पहाडीपर चढ़ने लगे। इस प्रयत्नमें उन्हें आशातीत सफलता हुई। जो सबसे आगे थे वे सोये हुए रक्षकोंपर अचानक टूट पडे। इनका वहाँ जाना न तो किसी मनुष्यको मालूम हुआ और न कुत्तोंको ही इसका

पता चला। यहाँ जूनो देवताके मन्दिरके पास कुछ हंस रखे गये थे। पहले इन्हें काफी आहार मिलता था, पर घेरेके समय रसद घट जानेके कारण इनकी बड़ी बुरी हालत थी। इनकी श्रवण आदि इन्द्रियाँ स्वभावसे ही तीव्र होती हैं। भूखके कारण ये और भी अधिक व्यग्र हो रहे थे। इन्होंने शत्रुओंकी आहट पाकर इतना शोर मचाया कि सभी लोग जाग पड़े। गॉलोंने यह देख कर कि अब हम लोगोंका पता लग गया, छिपनेका प्रयत्न नहीं किया, बल्कि तुमुल ध्वनिके साथ आक्रमण कर दिया। रोमन लोग भी शीघ्रतामें जो हथियार मिल गया उसीको लेकर मुकाबला करने लगे। मैनलियस नामक एक शासक जो वीर होनेके साथ ही साथ मनचला भी था, सबसे आगे बढ़ा। इसने दो गॉलोंसे भिड़ कर एकका तो, जिसने आघात करनेके लिए तलवार उठायी थी, दाहिना हाथ काट डाला और दूसरेके मुँहपर ढालसे चोट पहुँचा कर पहाड़ीसे सिरके बल नीचे गिरा दिया। उसने और लोगोंकी सहायतासे, जो तबतक वहाँ आ गये थे, बचे हुए शत्रुओंको भी वहाँसे मार भगाया। इस प्रकार बाल-बाल बच जाने पर रोमनोंने प्रातःकाल होते ही प्रहरियोंके नायकको पकड़ कर ऊपरसे ही शत्रुओंके सिरपर फेंक दिया और मैनलियसको सम्मानपूर्वक पारितोषिक देनेका निश्चय किया।

अब गॉलवालोंकी हालत दिनों दिन खराब होती जा रही थी। इन लोगोंके पासकी रसद समाप्त हो चली थी, बाहर कैमिलसके भयसे लूट पाटका काम भी नहीं चल सकता था। ढरके ढेर मुर्दे बिना गाड़ ही पड़े रहनेके कारण बीमारी भी फैल गयी थी। इन लोगोंने भग्नावशेषोंके बीच अपने डेरे डाले थे। चारों ओर राखका ढर लगा हुआ था। गर्मीका मौसिम था। हवा राखके कणोंसे पूर्ण होनेके कारण बिलकुल शुष्क हो रही थी। ये लोग पर्वतनिवासी थे, अतः इनके लिए मैदान यों ही कष्टदायक था, ऊपरसे शुष्क तथा गन्दी हवा साँस द्वारा प्रवेश कर इन लोगोंका स्वास्थ्य और भी खराब कर रही थी। मृत्यु इतनी अधिक संख्यामें होने लगी कि

लोगोंने मुर्दोंका गाड़ना तक छोड़ दिया। इधर घेरेके अन्दरवालोंकी हालत भी अच्छी नहीं थी। दुर्भिक्षके कारण सभी लोग परेशान हो रहे थे। नगरपर कड़ा पहरा तो था ही अतः दूत भेजनेकी गुंजाइश नहीं थी, इससे कैमिलसकी ओरसे भी वे लोग निराश हो रहे थे। हाँ, दोनों ओरके प्रहरियोंको आपसमें कुछ बात करनेका मौक़ा मिल जाता था। उन्होंने पहले पहल, दोनों ओरकी यह हालत देख कर, सन्धिका प्रस्ताव किया। दोनों ओरके प्रमुख व्यक्तियोंने भी इस प्रस्तावको मान लिया। समझौतेके लिए जब रोमन शासक सल्पीसियस और गॉल-नरेश ब्रेन्नस एकत्र हुए तो यह तै पाया कि यदि रोमन लोग एक हज़ार पौण्ड सुवर्ण दे दें तो गॉल लोग नगर और देश छोड़कर चले जायँगे। दोनोंने सौगन्ध खाकर इस समझौतेकी पुष्टि की। रोमन लोग सोना लेकर आये पर गॉलोंने पहले तो गुप्त रूपसे तौलमें धोखेबाजी की, पीछे खुले तौरपर तराजूका बाट वाला पलड़ा नीचे दबा दिया। जब रोमनोंने इसकी शिकायत की तो ब्रेन्नसने घृणा और अपमान-सूचक रीतिसे कमरपट्टेके साथ अपनी तलवार उतार कर पलड़ेमें डाल दी। रोमनोंने इसका अभिप्राय जानना चाहा तो उसने कहा कि "विजितोंके लिए अफसोस" के अलावा और क्या अर्थ हो सकता है? कुछ रोमन तो इसपर इतने क्रुद्ध हो गये कि वे अपना सोना लेकर लौट जाने और घेरा बर्दाश्त करनेको भी तैयार हो गये, पर और लोगोंने इस अदनासी बातको बर्दाश्त करना ही उचित समझा। उन्होंने कहा कि यदि अपमानकी दृष्टिसे विचार किया जाय तो जितना तै हुआ था उससे अधिक देना ही नहीं, बल्कि कुछ भी देना अपमानजनक है।

गॉलोंके साथ तथा आपसमें भी यह मतभेद चल ही रहा था कि कैमिलस अपनी सेनाके साथ नगरके द्वारपर आ धमका। यहाँका पता लगा कर वह कुछ चुने हुए आदमियोंके साथ रोमनोंकी तरफ बढ़ा और शेष लोगोंको पीछेसे आनेका आदेश देता गया। रोमनोंने उसके लिए स्थान दे दिया और सूत्रधारकी हैसियतसे उसका शान्तिपूर्वक स्वागत

किया। कैमिल्सने पल्देमें सोना निकाल कर अपने कर्मचारियोंको दे दिया और गॉलोंको अपना तराजू तथा बटखरे लेकर यहाँसे चले जानेकी आज्ञा देते हुए कहा, 'रोमनोंकी यह रीति है कि वे सोनेसे नहीं, बल्कि लोहेसे अपने देशको मुक्त करते हैं।' ब्रेनसने जब क्रोधमें आकर समझौता तोड़नेके कारण अपने प्रति अनुचित बर्तावकी शिकायत की तो कैमिल्सने कहा कि "यह समझौता कभी भी जायज नहीं समझा जा सकता क्योंकि मेरी स्वीकृतिके बिना किसीको समझौता करनेका अधिकार ही नहीं। अब मैं आ गया हूँ, तुमको जो कहना हो कहो। मुझे पूरा अधिकार प्राप्त है—माफी चाहनेवालोंको छोड़ भी सकता हूँ और अपराधीको पश्चात्ताप न करनेपर दण्डित भी कर सकता हूँ।" इसपर ब्रेनस क्रोधमें आ गया। दोनों ओरसे गरमागरमी हो जानेके कारण हमले भी हुए, पर मकानोंके अन्दर और तङ्ग रास्तोंपर सिवा गड़बड़ीके और क्या हो सकता था। कुछ सैनिकोंके मारे जाने पर ब्रेनसने शीघ्र ही कुछ सोच कर अपने आदमियोंको हटा लिया। रातको गॉल लोग नगर छोड़कर चले गये। चार कोस दूर जाकर उन्होंने गोबिआईके मार्गपर पड़ाव डाला। प्रातःकाल होते ही कैमिल्स अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित होकर अपने सैनिकोंके साथ वहाँ पहुँच गया। बहुत देरतक युद्ध होता रहा। अन्तमें गॉलोंकी पराजय हुई और उनके बहुतसे सैनिक खेत रहे। कैमिल्सने उनके पड़ावपर अधिकार कर लिया। भागे हुए लोगोंमेंसे कुछको तो पीछा करनेवालोंने फौरन ही मार डाला। पर अधिकांश लोग जान बचा कर इधर उधर चले गये, जिनको आसपासके ग्राम तथा नगरवालोंने आक्रमण कर मार डाला।

इस प्रकार सात मास (१५ जुलाईसे १३ फरवरी तक) शत्रुओंके हाथमें रहने पर रोम पुनः रोमनोंके कब्जेमें आगया। कैमिल्सके विजय प्राप्त कर रोममें प्रवेश करते ही वे परिवार भी उसके साथ जा मिले जो पहले बाहर भाग गये थे। जो लोग बृहस्पति देवके मन्दिरमें बन्द होकर भूखों मर रहे थे, वे भी अब बाहर निकल कर उसके पास चले आये।

आनन्दके मारे उनके नेत्रोंसे आँसू बह चले। उन्हें विश्वास ही नहीं होता था कि यह सब कुछ स्वप्न नहीं, वास्तविक है। जब देवताओंके पुजारी और पुरोहित लोग अपने पवित्र वस्त्रादि, जिन्हें उन्होंने या तो छिपा कर कहीं रख दिया था या साथ लेते गये थे, धारण किये हुए आये तो यह आनन्दमय दृश्य देख कर नागरिकोंको यही प्रतीत हुआ मानो इनके साथ रोमके देवगण भी वापस आगये। कैमिलसने देवताओंको बलिदान चढ़ानेके अनन्तर मन्दिरोंका उद्धार किया और भावी-सूचक देवके निमित्त भी जिसने सीडीयसको गॉलोंके आनेकी सूचना दी थी, एक मन्दिर बनवाया।

कूड़ा-करकटके अन्दर देवताओंका स्थान ढूँढ़ निकालना कठिन कार्य था, पर कैमिलस और पुरोहितोंकी सहायतासे यह कार्य पूरा हो गया। जब नगरके पुनः निर्माणका प्रश्न उपस्थित हुआ तो लोगोंको इस सम्बन्धमें आगे बढ़नेका साहस नहीं हुआ। कारण यह था कि एक तो इसके निमित्त उनके पास कोई सामग्री न थी, दूसरे इतने दिनोंके परिश्रम और तकलीफके बाद उन्हें कुछ आरामकी ज़रूरत थी। इसलिए वे लोग वीयाई नगरकी तरफ, जहाँ सभी बातोंकी सुविधा थी, अपनी दृष्टि दौड़ाने लगे। कुछ चाटुकारोंने भी इनकी हाँ में हाँ मिलाना शुरू किया और यह कह कर उन्हें कैमिलसके विरुद्ध भड़काना चाहा कि वह महत्वाकांक्षासे प्रेरित होकर हम लोगोंको एक अच्छे नगरसे वञ्चित कर ध्वंसावशेषोंमें रखना चाहता है और कूड़ा-करकटके ढेरपर नगर-निर्माणका आदेश देकर केवल सूत्रधार ही नहीं बल्कि रोमुलसके स्थानमें रोमका संस्थापक भी बनना चाहता है। राजविद्रोहके भयसे सिनेटने कैमिलसको, जो इस्तीफा देना चाहता था, अपने पदपर बनाये रखा, हाँलाकि अबतक कोई भी व्यक्ति इस पदपर छः माससे अधिक नहीं रहा था।

तबतक स्वयं सिनेटके सभ्य लोग जनताको समझाने-बुझाने लगे और कहने लगे कि क्या हम यों ही उन मन्दिरों तथा पवित्र स्थानोंको

नष्ट होने देंगे जिनकी सुरक्षारा प्रबन्ध रोमुल्स तथा नूमा प्रभृति हमारे सुपुर्द कर गये थे ? वृहस्पतिदेवके मन्दिरकी नींवमें मिले हुए कटे मुण्डकी यात लेकर उन्होंने धार्मिक बातोंके आधारपर यह विश्वास करानेका प्रयत्न किया कि यह मस्तकवाला स्थान ही सारे इटलीका प्रधान स्थान होकर रहेगा। जिसकी पवित्र अग्नि युद्धके बाद पुनः प्रज्वलित की गयी है, उस नगरका परित्याग कर उसे सुलने देना, विदेशी लोगोंको उसमें यसने देना या उसे वीरान छोड़ देना कितनी एलाकी बात है ? इस प्रकार लोगोंको अकेलेमें तथा सभा-समितियोंमें समझानेकी चेष्टा की गयी, फिर भी वे लोग अपनी लाचारी और दमनीय अवस्था प्रकट करते थे और वीयाई जानेपर ही ज़ोर देते थे।

कैमिलसने इस प्रश्नको सिनेटके सामने रख कर अपने पक्षका भली भाँति समर्थन किया। और भी कई लोगोंने कैमिलसके पक्षमें भाषण किया। अन्तमें मत लेनेकी बात ठहरी। सभ्योंमें सर्वप्रथम ल्यूसियस लूसेशियसको मत देनेका अधिकार था, उसके बाद और लोग यथाक्रम मत देते थे। यह अपना मत देनेवाला ही था कि एक टुकड़ीके नायकने, जो बाहर अपने सैनिकोंको ले जा रहा था, झंडा ले जानेवालेको ऊँची आवाज़में रोक कर वहीं झंडा गाड़नेकी आज्ञा दी। यह आवाज़ ठीक ऐसे समयमें भीतर पहुँची जब कि भविष्यके सम्बन्धमें अनिश्चय और असमंजस फैला हुआ था। उक्त सभ्यने इसे देवताओंका संकेत मान कर नगर-निर्माणके पक्षमें ही मत दे दिया, औरोंने भी उसीका अनुसरण किया। जनसाधारणकी धारणा भी इससे बिलकुल बदल-सी गयी। अब लोग एक दूसरेको भवन-निर्माणके निमित्त प्रोत्साहन देने लगे। जहाँ जिसकी इच्छा हुई या कोई सुविधा देख पड़ी, वहीं वह मकान बनाने लगा। फलतः सड़कें बेतरतीब और तंग हो गयीं, मकान भी बेसिलसिले और भद्दे ही बने। एक ही वर्षके अन्दर नया नगर खड़ा हो गया। कैमिलसने कुछ लोगोंको देवसमर्पित स्थानोंको ठीक करनेका भार सौंपा था। जब वे लोग मंगल

देवके प्रार्थना-मन्दिरको, जिसे गॉलोंने भस्मीभूत कर दिया था, साफ करने लगे तो रोमुलसका वक्रदण्ड राखके ढेरमें पड़ा मिला (देखिये 'रोमुलस' पृष्ठ ४८)। इस तरहका वक्रदण्ड प्रायः शकुनविद्या जाननेवालोंके पास रहता था। वे पक्षियोंके उड़ानपर विचार करते समय इससे गगन मण्डलके चित्र खींचा करते थे। रोमुलस भी इस विद्यामें पारंगत था, इसलिये वह भी इसका प्रयोग करता था। उसके अन्तर्ध्यान होने पर पुजारी लोग इस डंडको और पवित्र चीजोंकी तरह लोगोंके सम्पर्कसे बचा कर रखते थे। जहाँ और सब चीजें जल कर खाक हो गयी थीं वहाँ इसपर अग्निका ज़रा भी प्रभाव नहीं पड़ा था, इससे लोग रोमके उज्ज्वल भविष्यके सम्बन्धमें आशा बाँधने लगे।

भवन-निर्माणका कष्टप्रद कार्य अभी समाप्त भी नहीं होने पाया था कि एक दूसरा युद्ध सिरपर आ पहुँचा। ईक्वीअन, वाल्सियन तथा लैटिन लोगोंने रोमन प्रदेशोंपर आक्रमण कर दिया और तस्कनीवालोंने उनके सहायक नगर सूट्रिअमपर घेरा डाल दिया। सैनिक शासक, जो सेनाका संचालन करते थे, मीसियस पहाड़ीके पास लैटिनोंसे बेतरह घिर गये थे। कैमिलस तीसरी बार सूत्रधार बनाया गया। इस युद्धके सम्बन्धमें दो विभिन्न वृत्तान्त मिलते हैं, जिनमें पहला तो वही है जो रोमुलसके गायब होनेके बाद लैटिनोंके आक्रमणके सम्बन्धमें पहले ही लिखा जा चुका है (देखिए पृष्ठ ५७)।

दूसरा वृत्तान्त इस प्रकार है। तीसरी बार सूत्रधार बनाये जाने पर कैमिलसको जब यह मालूम हुआ कि लैटिन और वाल्सियन लोगोंने सैनिक शासकोंके अधीन सेनाको घेर लिया है, तब उसे लाचार होकर उन लोगोंको भी सेनामें भरती करना पड़ा जो सैनिक सेवाके लिहाजसे अल्प या अधिक अवस्थाके थे। वह छिपे छिपे मीसियस पहाड़ीकी परिक्रमा करते हुए शत्रुदलके पीछे चला गया और तब कई जगह आग जलाकर उसने अपने पहुँचनेकी सूचना दी। अब घिरे हुए रोमनोंने प्रोत्साहित होकर

आक्रमण करते हुए यहाँसे निकल कर अपने दलमें मिल जानेकी तैयारी की। दोनों ओर रोमन सेना देख कर ईंटिन और वाल्सियन सेना मोर्चे-बन्दीके भीतर आ गयी और अपने चारों ओर वृक्षोंका कोट (लकड़कोट) बना कर सहायताकी प्रतीक्षा करने लगी। कैमिलसको शत्रुओंका अभिप्राय ताड़ जानेमें देर न लगी। उस समय प्रातःकालमें बराबर पहाड़ी हवा बहा करती थी। शत्रुओंका परकोटा लकड़ीका देख कर उसने कुछ जल उठनेवाली चीजें तैयार करा लीं। भोर होने पर उसने थोड़ेसे लोगोंको दूसरी तरफसे शत्रुओंपर शोर मचाते हुए आक्रमण करनेकी आज्ञा दे दी और स्वयं आग फेंकनेवाले व्यक्तियोंको साथ लेकर उस तरफ चला गया जिधरसे हवाका प्रवाह प्रायः आया करता था। प्रातःकाल होते होते आक्रमण आरंभ होगया, पहाड़ी हवा भी झोंकेके साथ बहने लगी। उसने कोटपर भभक उठनेवाली चीजें डलवा कर आग लगवा दी। शत्रुओंके पास आग बुझानेका कोई साधन न था। सारा कोट लकड़ीका होनेके कारण आग शीघ्र ही शिविर भरमें फैल गयी। शत्रुओंको लाचार होकर बहुत थोड़े स्थानमें सिमट कर पीछे हटना पड़ा। इधर उनका स्वागत करनेके लिए रोमन तैयार खड़े थे। इन लोगोंमें कुछ ही लोग बच कर भाग निकले। जो पड़ावमें रह गये थे वे अग्निदेवकी भेंट होगये।

लूट और पड़ावकी रक्षाका भार अपने पुत्रको सौंप कर कैमिलस शत्रु-ओंके प्रदेशमें घुसा। उसने ईक्वीअन लोगोंके नगरपर अधिकार कर लिया और वाल्सियन लोगोंसे अधीनता स्वीकार करा ली। इससे फुरसत पाने पर उसने अपनी सेनाके साथ सूट्रियम नगरकी यात्रा की। तबतक नगरवालोंने बदनपरका कपड़ा छोड़ कर सब कुछ शत्रुओंके सिपुर्द कर दिया था। स्त्री-बच्चोंके साथ भागते हुए ये लोग मार्गमें कैमिलसको मिले। इनकी दशा देखकर उसका हृदय टूक टूक हो गया। सैनिकोंको नगर वालोंके प्रति सहानुभूति दिखलाते और अपनी विवशतापर रोते हुए देख कर उसने फौरन बदला लेनेका निश्चय किया। उसने पहले ही सोच

लिया कि इस समय शत्रु इतने बडे नगरकी विजयके कारण बेखबर होकर आनन्द मनाते होंगे, क्योंकि नगरके भीतर कोई उनका शत्रु नहीं बच रहा था और न बाहरसे ही किसी प्रकारकी आशंका थी। उसकी यह धारणा अक्षरशः सत्य निकली। वह उनके प्रदेशसे यात्रा करते आया और उसने नगर प्राचीरपर भी अधिकार कर लिया, पर किसीको इसका पता न लगा। प्राचीर अरक्षित पडे हुए थे। सैनिक लोग घरोंके भीतर मौज कर रहे थे। जब उन्हें नगरपर अधिकार हो जानेकी बात मालूम हुई, तब अधिक मास और मद्य ग्रहण किये रहनेके कारण उनसे भागने तकका प्रयत्न करते न बना। उन्होंने कायरोंकी तरह या तो कृपाणका आलिंगन किया या आत्मसमर्पण कर जान बचायी। इस प्रकार एक ही दिनमें दो बार नगरपर अधिकार हुआ। इन कार्योंसे कैमिलसका विशेष सम्मान और ख्याति हुई। जो नागरिक कैमिलसको बुरी निगाहसे देखते थे और उसकी सफलताओंका श्रेय उसके गुणोंको नहीं, बल्कि भाग्यको ही देते थे, उन्हे भी इस बार कैमिलसकी योग्यता और वीरता स्वीकार करनी पडी।

कैमिलसके महत्वसे सबसे अधिक जलनेवाला मार्कस मैनलियस था। इसीने बृहस्पतिदेवके मन्दिरपर रातको आक्रमण करनेवाले गॉलों-को मार भगाया था। वह राष्ट्रमंडलमें सर्वप्रधान होकर रहना चाहता था। सद्गुणोंके बलपर तो वह कैमिलससे नहीं बढ सकता था, इसलिए जनताको अपने पक्षमें लाकर अधिकार प्राप्त करनेका उपाय करने लगा। उसने विशेष कर उन लोगोंको अपनाना शुरू किया जो कर्जके बोझसे दबे हुए थे। महाजनके विरुद्ध किसीके पक्षका समर्थन कर, किसीको बलपूर्वक बचा कर, और किसीके सम्बन्धमें कानूनी कारखाई रुकवा कर उसने बहुतसे लोगोंको अपनी तरफ कर लिया। न्यायलयमें इनके शोरगुल मचानेमें प्रधान नागरिक तक भयभीत हो जाते थे। इस गडबडीको दूर करनेका भार क्विनूटियस कपिटोलाइनसको सौंपा गया। उसने मैनलियस को पकड कर कारागारमें डाल दिया। इसपर जनताने विरोध स्वरूप

अपने यत्र यदा किये जो राष्ट्रपर भारी विपत्ति पड़नेका सूचक था। गड़बड़ीकी आशंकासे सिनेटने उसे मुक्त कर देनेकी आज्ञा दे दी। मुक्त होनेपर भी मैनल्यिसने अपना तरीका नहीं बदला। वह और भी दृढ़तासे काम करने लगा, यहाँ तक कि सारे नगरमें उसने स्वच्छन्दी और राजविद्रोहका भाव भर दिया। इसलिए कैमिल्स पुनः सैनिक शासक चुना गया। मैनल्यिसके मुकदमेके लिए एक दिन नियत कर दिया गया। उसे अपने ऊपर लगाये गये अभियोगोंके सम्बन्धमें अपना वक्तव्य पेश करनेका आदेश दिया गया। न्यायालयसे वह स्थान साफ दिखाई देता था जहाँ उसने गॉलोंको पराभूत किया था। जब वह रोकर उस स्थानका संकेत करते हुए अपने महान कार्योंका स्मरण दिलाता तो न्यायकर्ताओंका हृदय द्रवीभूत हो जाता था। इससे अभियोक्ताओंको बड़ी अड़चन मालूम होती थी। न्यायकर्ता भी असमंजसमें पड़ जानेके कारण कई बार तारीख बढ़ाते गये क्योंकि जुर्म साबित हो जानेके कारण वे उसे बरी भी नहीं करना चाहते थे और उसका महत्वपूर्ण कार्य उनकी आँखोंके सामने रहनेके कारण कानूनका पालन भी करते नहीं बनता था। इस स्थितिको समझते हुए कैमिल्सने न्यायालय हटा कर एक ऐसे स्थानपर कर दिया जहाँसे बृहस्पति देवका मन्दिर दृष्टि पथमें नहीं आता था। फल यह हुआ कि उन्होंने उसे अपराधी पाकर मृत्युदण्ड दिया। वह बृहस्पति देवके मन्दिरके पास चट्टानसे सिरके बल नीचे गिरा दिया गया। इस प्रकार एक ही स्थान उसके महत्व और अन्त दोनोंका स्मारक हुआ। इसके अतिरिक्त रोमनोंने उसका भवन गिरा कर उसी स्थानपर मोनेटा देवीका मन्दिर बनाया और यह नियम बना दिया कि भविष्यमें कोई भी उच्चवर्गीय व्यक्ति पहाड़ीपर अपना निवास स्थान न रखे।

छठीं बार सैनिक शासक चुने जाने पर कैमिल्सने बुढ़ापेके कारण असमर्थता प्रकट की। सम्भव है, उसके मनमें अभ्युदय आदिके कारण लोगोंमें शत्रुता और द्वेष आदिका जो भाव आ जाता है, इसका भी भय

रहा हो। जो हो, इस समय प्रत्यक्ष कारण तो उसकी रोगजन्य निर्बलता ही थी। जनताने यह कह कर कि हमें आपके बलकी नहीं, आपकी राय और नेतृत्वकी आवश्यकता है, उसके बहानोंको न माना और उसे लाचार होकर यह पद स्वीकार करना पड़ा। शीघ्र ही उसे एक अन्य सैनिक शासकके साथ युद्धके लिए प्रस्थान करना पड़ा, क्योंकि वालसियन और प्रीनेस्टाइन लोग रोमके मित्र राष्ट्रोंके प्रदेशोंमें लूटपाट और तबाही मचा रहे थे। कैमिलसने सेनाके साथ प्रस्थान कर शत्रुओंके पास ही पड़ाव डाल दिया। वह चाहता था कि युद्ध अधिक दिनोंतक जारी रहे और लड़नेकी आवश्यकता भी आ पड़े तो इस समयके अन्दर शरीरमें कुछ बल आ जाय। किन्तु उसका साथी ल्यूशिअस फ्यूरिअस महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर युद्धके लिए अधीर हो रहा था। उसने सेनाके निम्न अफसरोंमें भी यही उत्तेजना भर दी। कैमिलसको यह भय था कि कहीं मेरे सम्बन्धमें यह न खयाल किया जाय कि मैं इस नवयुवकको गौरवसे वंचित रखनेके लिए द्वेषवश युद्ध रोक रहा हूँ, इसलिए उसने अनिच्छा-पूर्वक अनुमति दे दी। कमजोरीके कारण वह थोड़ी सी सेनाके साथ पड़ावमें ही ठहरा रहा। शेष सेना युद्धके लिए भेज दी। ल्यूशियसको अपनी उतावलीके कारण पीठ दिखलानी पड़ी। यह देख कर कैमिलससे न रहा गया। वह अपने बिस्तरसे कूद पड़ा और पड़ावके कुछ आदमियोंको साथ लेकर भागनेवालोंके मध्यसे होते हुए पीछा करनेवालोंका मुकाबला करनेके लिए आगे बढ़ा। इसका यह साहस देख कर जो भागे आ रहे थे वे तो उसके साथ हो ही गये, जो पड़ावमें आ चुके थे वे भी उत्साहित होकर लौट पड़े। इस प्रकार पीछा करनेवालोंकी बाढ़ फौरन रुक गयी। दूसरे दिन कैमिलसने युद्धमें शत्रुओंको बुरी तरह पराजित कर उन्हें भगा दिया और गड़बड़ीकी ही हालतमें उनके पड़ावमें घुसकर उसपर अधिकार कर लिया। इसी जगह उसे सेट्रिअम नगरपर तस्कनीवालोंका अधिकार हो जाने और नागरिकोंके, जो

रोमन थे, पहले सूचना मिली। उसने कुछ चुने हुए सैनिकोंको साथ रख कर दोपको रोम भेज दिया, फिर एकाएक सेट्रिम पहुँच कर नगर पर अधिकार कर लिया। तस्कनोंके बहुतसे सैनिक मार डाले गये और शेष भगा दिये गये। कैमिलसने अपरिमित लूटके साथ रोम वापस आकर रोमनोंकी बुद्धिमानीका परिचय दिया जिन्होंने नेतृत्वके इच्छुक मनुष्योंको न चुन कर एक ऐसे धीर और अनुभवीको चुना था जो वृद्ध होनेके साथ ही साथ अस्वस्थ और अनिच्छुक भी था।

टसक्यूलन लोगोंके विद्रोहकी खबर मिलने पर उनके दबानेका कार्य कैमिलसको सौंपा गया। इसके सहायक पाँचों सैनिक शासकों ट्रिब्यूनोंमेंसे किसी एकको उसके साथ भेजनेका निश्चय हुआ। प्रत्येक आदमी इस पदके लिए लालायित था, पर कैमिलसने लोगोंकी आशाके प्रतिकूल, औरोंको छोड़ कर, ल्यूशिअसको ही चुना, जिसने हालमें ही कैमिलसके मना करने पर भी युद्धमें प्रवृत्त होनेकी उतावलीके कारण पीठ दिखायी थी। मालूम होता है, कैमिलसने उसकी पूर्व असफलतापर पर्दा डालने और लज्जा दूर करनेके विचारसे ही उसे तरजीह देनेकी उदारता दिखलायी थी। टसक्यूलन लोगोंने अपने विरुद्ध कैमिलसके आनेकी खबर पाकर अपने विद्रोह सम्बन्धी कार्यपर धूर्ततासे पर्दा डालनेकी कोशिश की। पूर्ण शान्तिके समयकी तरह उनके खेत हलवाहों और चरवाहोंसे भरे हुए थे, उनके द्वार खुले हुए थे, लड़के विद्यालयोंमें शिक्षा पा रहे थे, वैश्य लोग अपनी दूकानोंमें बैठे अपना रोजगार कर रहे थे, उच्च वर्गके नागरिक अपनी मामूली पोशाकमें इधर-उधर घूम फिर रहे थे और शासक लोग रोमनोंके लिए स्थान आदिका प्रबन्ध करनेमें लग गये थे। मालूम होता था कि इन्हें न तो किसी प्रकारके खतरेका भय है और न किसी प्रकारके अपराधकी जानकारी ही। इनके इन कार्योंसे कैमिलसकी विद्रोहविषयक धारणामें तो कोई परिवर्तन नहीं हुआ, हाँ इस पश्चात्तापसे इनके प्रति उसकी सहानुभूति अवश्य हो गयी। उसने इन लोगोंको

सिनेटसे क्षमा माँगनेकी आज्ञा दी। इनकी ओरसे सिफारिश कर उसने इनको अपराध मुक्त करा दिया और रोमन नागरिकताके अधिकार भी दिला दिये।

इसके बाद लाइसीनियस स्टोलोने नगरमें राजविद्रोह फैला कर जनता और सिनेटमें मतभेद पैदा कर दिया। जनता यह कहने लगी कि दोनों प्रधान शासक केवल उच्च वर्गसे ही न लिये जायँ; उनमेंसे एक जन-साधारणमेंसे भी चुना जाना चाहिये। सार्वजनिक शासकोंका चुनाव तो हो गया पर जनताने प्रधान शासकोंका चुनाव नहीं होने दिया। प्रधान शासकके अभावमें और भी गड़बड़ी हो रही थी, इसलिए सिनेटने चौथी बार कैमिलसको जनता और स्वयं उसकी इच्छाके भी प्रतिकूल सूत्रधार बना दिया। जिनके साथ युद्धमें उसने बड़े बड़े कार्य किये थे, उन्हीं लोगोंके साथ उलझनमें पड़ना उसे कभी पसन्द न था। उसका यह महत्व उच्चवर्गीय लोगोंके साथ राजनीतिमें भाग लेनेके कारण नहीं बल्कि उक्त कार्योंकी ही बदौलत था। इस बार उच्चवर्गीयोंने द्वेषवश उसे इस पदपर रख दिया था। उनका यही खयाल था कि यदि उसे सफलता मिली तो जनसाधारणका दमन हो जायगा और न मिली तो स्वयं उसका ही विनाश होगा। कैमिलसको यह मालूम था कि किस दिन सार्वजनिक शासकमण्डल इस सम्बन्धमें कानून बनानेवाला है, इसलिए उसने सर्व-साधारणको उक्त समयपर न्यायस्थलसे अलग कैम्पस में एकत्र होनेका आदेश दे दिया और यह भी घोषित कर दिया कि इस आज्ञाका उल्लङ्घन करनेवालोंको भारी अर्थदण्ड दिया जायगा। इसके विरुद्ध शासक-मण्डलने लोगोंको विधान-निर्माणमें मत देनेसे रोकनेकी हालतमें कैमिलसपर ५० हजार ड्रैस्मा (एक रजतमुद्रा) जुर्माना करनेकी धमकी दी। जनताकी उद्दण्डता आदिका खयाल कर वह बीमारीके बहाने चुपचाप घर बैठ गया। बादमें उसने अपने पदसे इस्तीफा भी दे दिया। सिनेटने एक अन्य व्यक्तिको उसके स्थानपर नियुक्त किया जिसने

राजविद्रोहके नायक स्टोलोको ही अग्रनायक बनाया। उसने इस विधानको भी बनकर पास हो जाने दिया जो उच्चवर्गीयोंके लिए हानिकर था क्योंकि इसके अनुसार कोई भी उच्चवर्गीय ५०० एकड़से अधिक जमीन अपने अधिकारमें नहीं रख सकता था। इस नियमसे स्टोलोकी बड़ी ख्याति हुई, पर कुछ ही दिनोंके अनन्तर उसके अधिकारमें अधिक जमीन पायी गयी, जिससे उसे खुद ही अपने बनाये हुए कानूनका दण्ड भोगना पड़ा।

प्रधान शासकोंके चुनावका प्रश्न छिड़नेवाला ही था कि गॉलके रोमकी तरफ आनेका समाचार मिला और इसके बाद ही उनकी शत्रुताके कार्य भी प्रत्यक्ष होने लगे। जिस प्रदेशसे वे गुजरते थे उसे नष्ट करते जाते थे। जो लोग भाग कर रोमका आश्रय लेनेमें असमर्थ थे, वे इधर उधर पहाड़ोंपर निकल गये। युद्धके त्राससे राजविद्रोहका भाव काफूर हो गया। छोटे-बड़े, शासक-शासित सबने मिलकर कैमिलसको पाँचवीं बार सूत्रधार नियुक्त किया। इस समय कैमिलसकी अवस्था लगभग ८० वर्षकी हो गयी थी, फिर भी उसने संकट और देशकी स्थितिका विचार कर तत्परताके साथ कार्यभार ग्रहण कर लिया और सैनिक भरती करना शुरू कर दिया। गॉल लोग युद्धमें तलवारोंका ही विशेष रूपसे उपयोग करते थे, अतः कैमिलसने अधिकांश सैनिकोंके लिए लोहेके शिरस्त्राण बनवा कर उनका बाहरी हिस्सा खूब चिकना करवा दिया जिसमें आघात करने पर तलवारें टूट जायँ या फिसल जायँ। काठकी ढालोंसे आघातका निवारण भली भाँति नहीं हो सकता था, इस लिए उनपर पीतलका पत्तर लगा दिया गया। इसके अलावा उसने पास पासकी मुठभेड़में भालोंसे युद्ध करने और शत्रुओंकी तलवारोंको उन्हींके द्वारा रोकनेकी भी शिक्षा दी।

जब गॉल लोग अपना भारी पड़ाव और लूटका बहुत सा माल लेकर एनियो नदीके पास पहुँचे तो कैमिलस भी अपनी सेना लेकर एक पहाड़ी

पर, जिसमें कई दर्रे थे, पड़ गया। कैमिलसका यह उद्देश्य था कि अधिकांश सैनिक दर्रोंमें छिपे रह सकें और सिर्फ थोड़ेसे बाहर रहें जिन्हें देख कर शत्रु यह समझ ले कि ये लोग डरके मारे पहाड़ीपर चढ़ गये हैं। यह धारणा दृढ़ करनेके लिए उसने गॉलोंको मोर्चाबन्दीके पासतक लूट-पाट मचाने दी और आप बैठे बैठे अवसरकी प्रतीक्षा करता रहा। अन्तमें उसने यह देख कर कि कुछ लोग लूट-पाट करने बाहर निकल गये हैं तथा जो पड़ावमें रह गये हैं वे खाने-पीनेमें मस्त हैं, रातको अपने चुने हुए आदमियोंको आगे भेज दिया जिसमें शत्रुओंको व्यूहबद्ध होनेका मौक़ा न मिले और प्रातःकाल होते ही स्वयं महती सेना लेकर नीचे मैदानमें आ गया। गॉलोंको इतनी बड़ी सेनाका स्वप्नमें भी अनुमान न था। गॉल लोगोंका उत्साह बिलकुल ढीला पड़ने लगा। एक तो आक्रमण उनकी ओरसे न होकर उनकी आशाके विरुद्ध शत्रुओंकी ओरसे हुआ और दूसरे, कैमिलसकी पहली टुकड़ीने इनको व्यूहबद्ध या तैयार होनेका अवसर ही नहीं दिया, इससे ये जहाँ-तहाँ बेसिलसिले युद्ध करनेको बाध्य हो गये। जब कैमिलस अपने गुरुतर शस्त्रवाले सैनिकोंके साथ पहुँचा तो गॉल अपनी तलवारें निकाल कर उनसे भिड़ गये। रोमन सैनिक शत्रुकी तलवारोंका आघात भालोंके उस भागपर रोकने लगे जो इस्पातका बना हुआ था। फल यह हुआ कि उनकी तलवारें, जो मुलायम धातुकी बनी हुई थीं, मुड़ गयीं तथा उनकी ढालें भालोंके आघातसे चलनीकी तरह देख पड़ने लगीं और भालोंके टुकड़े अटक जानेसे भारी भी हो गयीं। लाचार होकर गॉलोंने तलवारें फेंक दीं और रोमनोंके भाले छीननेका प्रयत्न किया। रोमनोंने उन्हें शस्त्ररहित देख कर अपनी तलवारोंसे काम लेना शुरू किया। अल्पकालमें ही आगेकी पंक्तिके बहुतसे सैनिकोंके मारे जाने पर गॉल लोग अपना पड़ाव आदि छोड़ कर भाग निकले। कहा जाता है कि यह युद्ध रोम-पतनके तेरह वर्ष बाद हुआ था। पहले रोमनोंका खयाल था कि सेनामें बीमारी फैल जाने तथा अन्यान्य अदृश्य

कारणोंसे ही गॉल लोग पराजित हो गये थे; पर इस युद्धने उनके हृदयसे गॉलोंका आतंक, जो बराबर बना रहता था, बिल्कुल दूर कर दिया। रोमनोंमें यह आतंक यहाँ तक बढ़ा हुआ था कि उन्होंने सिर्फ गॉलोंके आक्रमणके अलावा और अवसरोंके लिए पुरोहितोंको सैनिक सेवासे मुक्त कर दिया था।

कैमिल्सका यही अन्तिम यौद्धिक कार्य था। किन्तु प्रधान शासकके चुनावकी जटिल समस्या अभी बाकी ही थी। विजय लाभ कर लौटनेपर जन साधारण प्रचलित नियमके विरुद्ध अपनेमें से एक प्रधान शासक चुननेपर जोर देने लगे। कुलीन सभा इसका घोर विरोध कर रही थी। वह कैमिलसको अपने पदसे इस्तीफा भी नहीं देने देती थी और चाहती थी कि कैमिल्सके ही महत्व तथा पदकी ओटमें उच्चवर्गकी शक्ति भी बनी रहे। एक दिन कैमिल्स न्यायालयमें बैठ कर न्याय सम्बन्धी कुछ कार्य कर रहा था, उसी समय जनसाधारणके शासक मण्डल द्वारा प्रेषित एक कर्मचारी वहाँ आया और उसने उसके बदनपर इस प्रकार हाथ रख कर, मानो पकड़ कर ले जाना चाहता हो, उसको उठा कर पीछे पीछे आनेका आदेश किया। इसपर इतना शोर-गुल हुआ कि सारा न्यायालय शब्दमय होगया। जो कैमिलसके पास थे वे उस कर्मचारीको वहाँसे धक्का देकर हटा रहे थे और नीचेकी भीड़ कैमिलसको नीचे लानेके लिए जोरसे चिल्ला कर कह रही थी। ऐसी कठिनाइयोंके बीच वह यह नहीं समझ सका कि क्या किया जाय, फिर भी वह अपने पदसे इस्तीफा न देकर सिनेटके सभ्योंको अपने साथ सभा भवनमें ले गया। भवनमें प्रवेश करनेके पूर्व उसने देवताओंसे इन कठिनाइयोंका अन्त करनेकी प्रार्थना करते हुए एकता देवीके लिए एक मन्दिर निर्माण करनेकी मनौती मानी। सिनेटमें पहले तो प्रधान शासक सम्बन्धी प्रस्तावका बहुत विरोध हुआ, पर बादमें लोगोंने एक प्रधान शासक जन साधारणमेंसे लेना स्वीकार कर लिया। जब कैमिलसने कुलीन-सभाके निर्णयकी घोषणा की तो जन साधा-

रण स्वभावतः प्रसन्न हो गये और हर्ष प्रकट करते हुए उसके साथ उसके घरतक गये। दूसरे दिन जन-साधारणने एकत्र होकर न्यायालय और सभा-भवनके सम्मुख उक्त मन्दिर बनानेका निश्चय किया। इस सुलहके उपलक्ष्यमें एक और त्योहार क़ायम किया गया जिससे अब राष्ट्रीय त्योहारोंकी संख्या चार हो गयी।

इस प्रकार सर्वप्रथम कैमिलसके ही शासनमें जन-साधारणमेंसे एक प्रधान शासक चुना गया। यही कैमिलसका अन्तिम कार्य था। दूसरे वर्ष रोममें महामारीका प्रकोप हुआ। इसमें अगणित जनसाधारणके साथ साथ कई शासक भी कालकवलित हुए जिनमें एक कैमिलस भी था। उसकी अवस्था तथा महान् कार्योंका विचार करते हुए उसकी मृत्यु असामयिक नहीं कही जा सकती। फिर भी उसकी मृत्युके शोकमें जनता अन्य सभी नागरिकोंकी मृत्युका शोक भूल गयी।

५—ऐजेसिलॉस

लैसीडीमोनियन लोगोंके राजा आर्किडेमसके दो पुत्र थे, एजिस और ऐजेसिलॉस। क़ानूनके अनुसार एजिस ही राज्यका उत्तराधिकारी था, अतः ऐजेसिलॉसको एक मामूली आदमीकी ही तरह शिक्षा दी गयी और उसे भी अन्य नवयुवकोंकी तरह कठोर अनुशासनमें रहना पड़ा। स्पार्टाकी प्रथाके अनुसार उसे भी शुरूसे ही गुरुजनोंकी आज्ञाका पालन करना और देशमें प्रचलित क़ानूनोंका आदर करना सिखलाया गया। इस सम्बन्धमें युवराजके साथ कोई सख्ती नहीं की जाती थी, किन्तु सौभाग्यसे, छोटा भाई होनेके कारण, ऐजेसिलॉस इस शिक्षासे वञ्चित नहीं किया गया।

यही कारण है कि बादमें जब राज्यका भार उसके सिरपर आ पड़ा, तब वह अत्यन्त लोकप्रिय एवं बहुत ही योग्य शासक प्रमाणित हुआ।

जब वह विद्याध्ययन ही कर रहा था, तभी ग्लाडसिण्डसका ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ और वह इससे स्नेह करने लगा था। यद्यपि वह प्रत्येक बातमें सर्वोच्च पद प्राप्त करने एवं अपने साथियोंसे आगे बढ़ जानेके लिए निरन्तर उत्सुक रहा करता था और यद्यपि उसके मनमें इतना उत्साह एवं इतनी दृढ़ता थी कि उसके लिए किसी भी कठिनाई पर विजय पाना या किसी भी विरोधको शान्त करना कठिन न था, फिर भी वह इतने सरल एवं मधुर स्वभावका था और बड़ोंकी आज्ञा माननेमें इतना तत्पर था कि यदि कोई सम्मानके साथ उससे छोटा मोटा काम भी करनेको कहता तो वह उसे करनेके लिए तुरन्त तैयार हो जाता था। डॉट-डपट या अपमानसे उसके हृदयको जितना दुःख होता था, उतना अधिक परिश्रम या कठिनाइयोंका सामना करनेमें नहीं होता था।

उसकी एक टाँग दूसरीसे कुछ छोटी थी, किन्तु उसके सामान्य रूप सौंदर्यके सामने यह दोष सहज ही छिप जाता था। वह इतना उत्साही एवं महत्वाकांक्षी था कि इस नुक्सके रहते हुए भी कठिनसे कठिन परिश्रम करने या बड़ेसे बड़े काममें हाथ डालनेमें नहीं हिचकता था। वह अपने हँसमुख तथा विनोदशील स्वभावके कारण लोगोंके हृदयको शीघ्र ही आकर्षित कर लेता था।

जब बड़ा भाई एजिस राज्य करता था, तब अर्थेन्ससे निष्कासित होकर अल्सीबाइअडीज सिसली होता हुआ स्पार्टा आया। कुछ ही दिनोंके बाद इस बालकका सन्देह किया जाने लगा कि रानपत्नी टीमियाके साथ उसका अनुचित सम्बन्ध है, यहाँतक कि टीमियाके उदरसे उत्पन्न एक बालकको एजिसने अपना पुत्र माननेसे इनकार कर दिया। उसने उसे अल्सीबाइअडीजका ही पुत्र बतलाया। कहते हैं, टीमियाके साथ अल्सीबाइअडीजके इस सम्बन्धका कारण प्रेम नहीं था, वरन् उसकी यह महत्वाकांक्षा थी

कि मेरी सन्तान स्पार्टाके राजसिंहासनपर सुशोभित हो। जब यह बात सर्वसाधारणमें भी फैल गयी, तब अलसीबाइअडीजको स्पार्टा छोड कर चले जाना पडा। किन्तु उस बालकको जायज पुत्रका अधिकार प्राप्त नहीं हुआ और न एजिसने ही उसे अपनाया। अन्तमें जब उसने बहुत प्रार्थना की और रो रोकर निवेदन किया, तब मृत्यु शय्यापर पडे हुए एजिसने कुछ लोगोंके सामने उसे अपना पुत्र स्वीकार कर लिया। इतना होते हुए भी वह एजिसके सिंहासनपर न बैठ सका, क्योंकि लाइसैण्डरने, जिसने हालमें ही अथेंजपर विजय प्राप्त की थी और स्पार्टामें भी जिसका खूब दबदबा था, ऐजेसिलॉसके ही अधिकारका समर्थन किया। अन्य नागरिक भी ऐजसिलॉसके पक्षमें थे, क्योंकि वे उसकी योग्यतासे भली-भाँति परिचित थे। किन्तु स्पार्टामें इस समय डिओपिथीज नामका एक बडा भविष्यद्वक्ता रहता था। वह प्राचीन देववाणियोंका अर्थ लगानेमें विशेष प्रवीण था। उसने कहा कि किसी लँगडे आदमीको लैसीडीमनका राजा बनाना ठीक नहीं है। अपने पक्षके समर्थनमें उसने निम्नलिखित देववाणीका हवाला दिया—

> "हे महान् स्पार्टा देश, तुममें,स्वय चाहे कोई कमी न हो पर इस बातका ख्याल रखना कि कोई लँगडा शासक तुम्हारा अधिपति न बनने पावे, नहीं तो तुम अचानक बडी विपत्तिमें फँस जाओगे और तुम्हें घोर युद्धका सामना करना पडेगा।"

किन्तु लाइसैण्डर भी कम होशियार न थो। उसने इसका दूसरा ही अर्थ लगाया और कहा कि यदि स्पार्टा निवासी सचमुच इस देववाणीसे डरते हों तो उन्हें एजिसके नाजायज पुत्र लिओटिचाइडीजसे बचना चाहिये, क्योंकि देवताओंका मतलब लँगडानेवाले राजाके सम्बन्धमें चेतवनी देनेका नहीं था, वरन् हरक्यूलियन वंशकी पवित्रता अक्षुण्ण बनाये रखने पर जोर देनेका था—कारण यह है कि यदि इस वंशमें कोई

नाजायज़ और बाहरी व्यक्ति सम्मिलित कर लिया गया तो यह अवश्यंभावी है कि राज्य शीघ्र ही लड़खड़ाने लगेगा। ऐजेसिलासने कहा कि लिओटिचाइडीज़ एजिसका जायज़ पुत्र नहीं है, इसके साक्षी स्वयं वरुणदेव हैं जिन्होंने ज़ोरके भूकम्प द्वारा एजिसको पलंग परसे नीचे गिरा दिया था और तभीसे उसने अपनी पत्नीके पास जाना छोड़ दिया। यह पुत्र इस घटनाके दस महीने बाद पैदा हुआ था।

अब ऐजेसिलॉस राजा घोषित कर दिया गया। राजसिंहासनपर बैठनेके बाद उसने शीघ्र ही एजिसकी निजी जायदादपर भी कब्ज़ा कर लिया। अब उसने मातृ-पक्षके अपने सम्बन्धियोंकी ओर नज़र फेरी जो अत्यन्त योग्य होते हुए भी बहुत ग़रीब थे। उन लोगोंको उसने अपने भाईकी आधी सम्पत्ति दे दी। एजिसकी निजी सम्पत्तिपर अधिकार कर लेनेके कारण जो बदनामी फैल रही थी, वह उसके इस सत्कार्यसे दूर हो गयी। लोक-प्रसिद्ध बननेके लिए उसने एफर और एल्डर नामके कर्मचारियोंको भी अपने पक्षमें कर लिया। उस समय राज्यमें इन्हीं दो अफसरोंको सबसे अधिक महत्व प्राप्त था। राजाओंकी शक्तिका नियंत्रण करनेके लिए ही इनकी नियुक्ति की जाती थी। इसीसे राजाओं तथा इन कर्मचारियोंके बीच पुश्त दर पुश्त झगड़ा चला करता था। किन्तु अब ऐजेसिलॉसने दूसरे ही मार्गका अवलम्बन किया। उनसे झगड़नेके बजाय उसने उन्हें अपनी ओर मिला लिया। प्रत्येक कार्यमें वह उनकी सलाह लिया करता था और जब वे लोग उसे बुलाते थे तब वह तुरन्त उनके पास जाता था। एफर लोगोंके आने पर वह अपने राजसिंहासनसे उठ खड़ा होता था और जब कोई व्यक्ति एल्डर लोगोंकी समितिका सदस्य चुना जाता था, तब वह उसे एक चोग़ा और एक बैल भेंटमें दिया करता था। इस प्रकार उनके प्रति थोड़ासा आदर-भाव दिखला कर वह उनकी सहानुभूति प्राप्त कर लेता था जो अलक्ष्य रूपसे उसके विशेषाधिकारोंके बढ़ानेमें ही सहायक होती थी।

अन्य नागरिकोंके प्रति व्यवहार करते समय मित्रोंकी अपेक्षा शत्रुओंके साथ उसका वर्त्ताव कम दूषणीय था। वह अपने शत्रुओंके विरुद्ध कोई अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहता था, किन्तु अपने मित्रोंका समर्थन वह उनके न्यायविरुद्ध कार्यों तकमें किया करता था। यदि शत्रु कोई अच्छा काम करता था, तो उसके लिए उसकी प्रशंसा न करना, वह एक तरहकी निर्लज्जता समझता था। किन्तु जब उसके मित्र कोई बुरा काम कर बैठते थे, तब वह उन्हें डाँट नहीं सकता था, बल्कि स्वयं उस कुकृत्यमें उनका साथ देनेको तैयार हो जाता था। जब शत्रुके किसी आदमीसे कोई कसूर बन पड़ता था, तब वह उसपर दया करनेके लिए सबसे पहले तैयार हो जाता था और प्रार्थना करनेसे उसे क्षमा भी कर देता था। इसीसे वह बहुत शीघ्र लोकप्रिय हो गया, यहाँ तक कि एफर्सको उसपर सन्देह हो गया और उन्होंने यह कह कर उसपर जुर्माना कर दिया कि तुम नागरिकोंको अपनी ही ओर खींचते जा रहे हो जो वास्तवमें सारे राज्यकी सामान्य सम्पत्ति के सदृश हैं। जिस प्रकार कुछ दार्शनिकोंका यह खयाल है कि यदि इस संसारसे लड़ाई-झगड़े और सब तरहके विरोध दूर हो जायँ तो सारे विश्वमें एक तरहकी ऐसी स्थिरता आ जायगी कि भविष्यमें उसकी उन्नति ही रुक जायगी, उसी प्रकार मालूम होता है कि स्पार्टके कानूनकी रचना करनेवालेकी यह धारणा थी कि सदाचारकी उन्नतिके लिए महत्त्वाकांक्षा एवं प्रतिस्पर्द्धाकी बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि राष्ट्रकी सच्ची उन्नति तभी हो सकती है जब उसके महापुरुषोंमें बनावटी एकताके बजाय, थोड़ा बहुत मतभेद एवं प्रतियोगिता हो। कहते हैं, महाकवि होमर भी इसी विचारका था, इसीसे उसने यूलीसीज तथा ऐकिलीजके झगड़ेपर ऐगमेमनाको प्रसन्न होते हुए दिखलाया है। जो हो, इस सिद्धान्तमें कुछ सत्य तो अवश्य है, किन्तु यह बिल्कुल निर्विवाद भी नहीं है, क्योंकि यदि मतभेद और झगड़े बहुत बढ़ जायँ तो इससे राष्ट्रकी हानि ही होगी, लाभ नहीं।

ऐजेसिलॉसके राजगद्दीपर बैठनेके कुछ ही दिनोंके बाद एशियासे खबर आयी कि फारसका राजा बड़े ज़ोरोंसे जलयुद्धकी तैयारियाँ कर रहा है और वह स्पार्टन लोगोंके हाथसे समुद्रका आधिपत्य छीनना चाहता है। लाइसैण्डर एशिया जाकर अपने उन मित्रोंकी सहायता करना चाहता था जिन्हें वह अनेक नगरोंका शासक बना कर छोड़ आया था, किन्तु जो अपने अत्याचारोंके कारण धीरे धीरे वहाँसे हटाये जा रहे थे और कुछ तो मार भी डाले गये थे। इसीसे लाइसैण्डरने कह सुनकर ऐजेसिलॉस-को इस युद्धयात्राका नेतृत्व ग्रहण करनेके लिए राजी किया और फारस पहुँच कर शत्रुके मनसूबोंको कार्यमें परिणत होनेके पहले ही तोड़ देनेकी सलाह दी। उसने एशियावाले अपने मित्रोंको भी लिख दिया कि वे लोग दूत भेज कर ऐजेसिलॉससे अपना सेनापति बनानेकी चेष्टा करें। अतः ऐजेसिलॉसने सार्वजनिक सभामें उपस्थित होकर इस शर्तपर युद्ध-यात्राका नेतृत्व ग्रहण करनेकी सूचना दी कि मेरी सहायताके लिए स्पार्टा-के रहनेवाले तीस कप्तान तथा सलाहकार, मित्रोंके छः हजार सैनिक और नूतन-अधिकार-प्राप्त गुलामोंमेंसे दो हजार चुने हुए मनुष्य मेरे साथ रहें। लाइसैण्डरके प्रयत्नसे ऐजेसिलॉसकी यह शर्त्त शीघ्र ही मान ली गयी और वह तीस स्पार्टनोंके साथ, जिनमें सर्व-प्रमुख लाइसैण्डर ही था, युद्धयात्राके लिए भेज दिया गया।

जब सारी सेना एक स्थानपर एकत्र हो रही थी, तब ऐजेसिलॉस अपने कुछ मित्रोंके साथ औलिस नामक स्थानको गया। वहाँ उसने स्वप्नमें एक आदमीको देखा जो उससे कह रहा था कि "हे स्पार्टा-नरेश, आपको यह तो विदित ही होगा कि आपके पहले समस्त ग्रीक जातिका केवल एक ही अधिनायक और हुआ था—ऐगमेमनान। आप भी उसी तरहकी यात्रापर जा रहे हैं, आपके शत्रु भी वे ही हैं, और आप भी अपनी यात्रा उसी स्थानसे शुरू करते हैं, अतः ऐगमेमनानने जो बलि चढ़ायी थी वह आपको भी चढ़ानी चाहिये।" ऐजेसिलॉसको मालूम

था कि ऐगमेमनानने स्वयं अपनी लड़कीका बलिदान दिया था, फिर भी वह अधिक चिन्तित नहीं हुआ। शय्यासे उठनेके बाद ही उसने अपने मित्रोंसे स्वप्नकी सब बातें कह सुनायीं और कहा कि मैं तो देवीकी बलि-वेदी पर वही वस्तु चढ़ाऊँगा जो देवीको पसन्द हो। मैं इस सम्बन्धमें अपने पूर्ववर्त्तीका मूर्खतापूर्ण अनुकरण नहीं करूँगा। इसलिए उसने अपने ज्योतिषीको आज्ञा दी कि तुम एक मृगीको माला इत्यादि पहना कर उसका बलिदान कर दो। उसने उस व्यक्तिसे यह कृत्य नहीं कराया जो बीओशिअन लोगोंके यहाँ इसके लिए खास तौरसे नियुक्त था। जब बीओशिअन न्यायाधीशोंको यह बात मालूम हुई तब उन्होंने देश-प्रथाके विरुद्ध कह कर उक्त बलिदान रोकनेके लिए आदमी भेजे। इन्होंने ऐजे-सिलॉससे संदेशा कह कर बलि-वेदीपरसे मृगीके मांसका वह सब अंश उठा कर स्वयं फेंक दिया जो उसपर चढ़ाया गया था। ऐजेसिलॉसको उनका यह व्यवहार बहुत बुरा मालूम हुआ, इसलिए और कोई बलि न चढ़ा कर एवं बीओशिअन लोगोंसे मन ही मन बहुत अप्रसन्न होकर उसने तुरन्त वहाँसे कूच कर दिया।

जब वह एफेससमें आया, तब उसने देखा कि लाइसेण्डरका प्रभाव और उसकी शक्ति बहुत बढ़ी हुई है। सब लोग अपनी अपनी अर्ज़ियाँ उसीको देते हैं, न्याय चाहनेवालोंकी भीड़ उसीके द्वारपर इकट्ठी होती है और झुण्डके झुण्ड मनुष्य उसीके पीछे चला करते हैं, मानो वही सब कुछ हो, ऐजेसिलॉस केवल नाम मात्रके लिए अधिनायक हो। यह देख कर स्पार्टानिवासी कप्तानोंको बहुत बुरा लगा। वे ऐजेसिलॉसके सलाह-कार बन कर आये थे, लाइसैण्डरके अनुचर बननेके लिए वे तैयार नहीं थे। अन्तमें ऐजेसिलॉसको भी, जो स्वयं ईर्ष्यालु स्वभावका नहीं था, भय होने लगा कि लाइसैण्डरके बढ़ते हुए प्रभावके सामने मुझे अपने महान् कार्यों तकका यश न मिल सकेगा, अतः उसने उसका विरोध करनेकी नीति ग्रहण की। लाइसेण्डर जो कुछ सलाह देता था उसे वह

अस्वीकार कर देता था। जो लोग उससे कुछ निवेदन करना चाहते थे, वे यदि बातचीतमें लाइसैण्डरकी प्रशंसा कर देते तो उनकी प्रार्थना अवश्य निष्फल जाती। इसी प्रकार जिन अभियुक्तोंके खिलाफ लाइसैण्डरका ज़ोर मालूम होता उन्हें वह प्रायः निरपराध कह कर छोड़ दिया करता था।

ये सब बातें जान बूझकर तो की ही जाती थीं, अतः लाइसैण्डरको इनका अर्थ समझनेमें देरी नहीं लगी। कई बार अपमानित होनेके बाद उसने स्वयं ऐजेसिलॉससे आकर निवेदन किया और कहा कि आप तो अपने मित्रोंका अपमान करना खूब जानते हैं। ऐजेसिलॉसने जवाब दिया "निस्सन्देह मैं उन लोगोंका अपमान करना अच्छी तरह जानता हूँ जो मुझसे भी अधिक प्रभावशाली बनना चाहते हैं।" तब लाइसैण्डर ने कहा कि "आप ऐसा भले ही कहें, पर मैं ऐसी चेष्टा नहीं करता। खैर, मैं चाहता हूँ कि आप मुझे किसी ऐसे पदपर और ऐसी जगह नियुक्त कर दें जहाँ मैं आपको अप्रसन्न किये बिना आपकी सेवा कर सकूँ।"

इसपर ऐजेसिलॉसने उसे हेलेस्पाण्टको भेज दिया जहाँसे उसने फारसके स्पिथ्रीडेटीज़ नामक प्रान्ताधिकारीको दो सौ घोड़सवारों तथा कुछ खजानेके साथ ग्रीक लोगोंकी सहायता करनेके लिए राजी किया। किन्तु वास्तवमें लाइसैण्डर अभी अपने अपमानकी बात भूला नहीं था, अतः अब वह इस बातका प्रयत्न करने लगा कि जिन दो कुटुम्बोंके हाथमें स्पार्टाके राज्यका शासनसूत्र था, उनसे वह छीन लिया जाय और प्रत्येक बार सार्वजनिक चुनाव द्वारा भावी शासककी नियुक्ति की जाय। कहते हैं कि यदि बीओशियन युद्धमें उसकी मृत्यु न हो गयी होती तो वह इस

दूसरा उपाय कर सकता था जो उसके सदश सुख्यात एवं महत्त्वाकांक्षी व्यक्तिको इतना अपमानजनक न मालूम पड़ता।

टिसाफरनीजने पहले तो डर कर ऐजेसिलाससे यह समझौता कर लिया कि ग्रीसके कई नगरोंको अपने निजी कानूनोंको वर्त्तनेकी आजादी दे दी जायगी, किन्तु जब उसने अपने पास एक बड़ी फौज इकट्ठी होते देखी तो उसने युद्ध करनेका निश्चय कर लिया। ऐजेसिलास तो इसके लिये तैयार ही था, अतः उसे इससे कोई दुःख नहीं हुआ। यह सोचकर वह बड़ा लज्जित होता था कि जेनोफोन तो दस हजार आदमियोंको लेकर फारसकी सेनाओंको हराता हुआ, जब इच्छा हो तब और जिस तरह चाहे उस तरह, एशियाके मध्य भागमेंसे समुद्रतक जा सकता है, और मैं उन स्पार्टन लोगोंका अधिनेता होकर भी जो इस समय जल और थल दोनोंमें विशेष शक्तिशाली हैं, ग्रीसके लिए कोई उल्लेख योग्य काम नहीं कर सका। उसने टिसाफरनीजको परास्त करनेके लिए एक सैनिक चाल चली। उसने प्रकट रूपसे तो कैरियाकी ओर प्रस्थान किया, किन्तु ज्यों ही शत्रु अपनी सेना समेत वहाँ जा पहुँचा, त्यों ही वह चुपचाप पीछे लौट पड़ा और फ्रीजियाकी ओर जा धमका। उसने शत्रुके कई नगरोंपर कब्जा कर लिया और बहुतसी चीजें लूटमें प्राप्त कीं।

घोड़सवार सैनिकोंकी कमीके कारण तथा बलिदानके समयके अशकुनोंसे कुछ कुछ हतोत्साह सा होकर वह एफेससमें जाकर विश्राम करने लगा। यहाँ उसने घोड़सवार सेनाकी वृद्धिका एक नया उपाय ढूँढ निकाला। उसने उन धनवान् मनुष्योंको, जो स्वयं लड़ना नहीं जानते थे, विवश किया कि उनमेंसे प्रत्येक अपने एवजमें अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित एक सवार तथा एक घोड़ा दे। इस उपायसे चुने हुए सवारोंकी एक सेना शीघ्र ही तैयार हो गयी।

जब युद्ध करनेका मौसिम आया तब ऐजेसिलासने खुल्लम खुल्ला घोषित कर दिया कि अब मैं लीडियापर धावा करूँगा। टिसाफरनीज

एक बार धोखा खा चुका था, इसीसे उसने ऐजेसिलासके कथनका विश्वास नहीं किया। किन्तु जब ऐजेसिलास अपनी सेना समेत सारडिसके मैदानमें जा पहुँचा, तब टिसाफरनीजको लाचार होकर शीघ्रतापूर्वक अपने घोड़सवारोंके साथ वहाँके लिए प्रस्थान करना पड़ा। ऐजेसिलासने ख्याल किया कि इतनी शीघ्रतामें शत्रुकी पैदल सेना जरूर बहुत पीछे रह गयी होगी, किन्तु स्वयं उसके पास अपनी पूरी सेना मौजूद थी। इससे उसने तुरन्त शत्रुसे युद्ध छेड़ दिया। शीघ्र ही शत्रुकी सेना परास्त होकर भागने लगी। ग्रीक लोगोंने उसका पीछा किया और उसके शिविरको लूट लिया।

इस विजयके बाद ग्रीक लोग शत्रुके राज्यमें चाहे जहाँ लूटमार कर सकते थे, उन्हें कोई रोकनेवाला नहीं था। उन्हें यह देख कर भी सन्तोष हुआ कि उनके परम शत्रु टिसाफरनीजको भी अपने पाजीपनकी माकूल सजा मिल गयी। फारसके राजाके आदेशसे टिथ्रौस्टीजने आकर उसका सिर काट लिया और ऐजेसिलाससे ग्रीसको लौट जानेके सम्बन्धमें बातचीत शुरू की। उसने इसी उद्देश्यसे इसके पास अपने दूत भेजे और उसे प्रचुर धन देनेके लिए भी कहलाया। ऐजेसिलासने जवाब दिया कि "सन्धि करनेका अधिकार लैसीडीमोनियन लोगोंका ही है, मुझे नहीं और जो बहुत सा धन देनेके लिए आपने कहा सो मेरे बजाय यदि वह मेरे सैनिकोंको दिया जाय तो अधिक अच्छा हो। किन्तु साधारण तया ग्रीक लोग युद्धमें प्राप्त लूटके मालको ही ग्रहण करना उचित समझते हैं, घूँसके तौर पर मिले हुए धनसे अपनेको धनवान् बनाना उनकी दृष्टिमें निन्दनीय है।" इतना होते हुए भी टिथ्रौस्टीजको खुश करनेकी इच्छासे, क्योंकि उसने टिसाफरनीजको उचित दण्ड दिया था, उसने खर्चके लिए तीस टलैण्ट स्वीकार कर अपना पड़ाव फ्रीजियामें हटा लिया।

वहाँ उसे खाद्य-सामग्री भी प्रचुर मात्रामें मिल गयी और नकद रुपया भी प्राप्त हुआ। आगे पैफ्लैगानियाकी सीमापर पहुँच कर उसने

वहाँके राजा कोटिसके साथ सन्धि कर ली। फारनाबेजुसको छोड़नेके बादसे स्पिथ्रीडेटीज़ जहाँ जहाँ ऐजेसिलास जाता था वहाँ वहाँ उसके साथ रहता था। इसके मेगाबेटीज़ नामका एक सुन्दर लड़का था जिसे ऐजेसिलास खूब चाहता था। इसकी विवाह योग्य एक कन्या भी थी। ऐजेसिलासने कोटिसके साथ उसकी सगाई कर दी और उससे एक हजार घोड़सवार सेना तथा दो हजार पैदल सैनिक लेकर वह फ्रीजिया लौट आया। यहाँ उसने फारनाबेजुसके देशको लूटना प्रारंभ कर दिया। फारनाबेजुसकी हिम्मत उसका मुकाबला करनेकी नहीं हुई। वह अपनी बहुमूल्य वस्तुएँ एकत्र कर इधरसे उधर भागता फिरता था। अन्तमें हेरीपिडास नामक स्पार्टनके साथ मिल कर स्पिथ्रीडेटीजने जाकर उसके शिविर और सारी सम्पत्तिपर अधिकार कर लिया। बादमें हेरीपिडासके व्यवहारसे रुष्ट होकर स्पिथ्रीडेटीज अपने सैनिकों सहित पुनः फारनाबेजुस-की ओर चला गया। इससे ऐजेसिलासके हृदयको बड़ा दुःख हुआ। उसके सदृश वीर सेनापतिके साथ मित्रता भंग हो जाने और सेनाके एक भागके चले जानेसे जो हानि हुई, उसकी अपेक्षा उसे यह जान कर अधिक कष्ट हुआ कि स्पिथ्रीडेटीज़के साथ एक छोटी सी बात अर्थात् लूटमें प्राप्त धनके कारण झगड़ा हो गया था, क्योंकि वह शुरूसे ही अपनेको तथा अपने देशवालोंको क्षुद्र धन-लोलुपताके कलंकसे बचानेका प्रयत्न करता आ रहा था। इसके अतिरिक्त ऐजेसिलासके दुःखित होनेका एक निजी कारण भी था। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, वह स्पिथ्रीडेटीजके पुत्र मेगाबेटीज़को बहुत चाहता था, अस्तु।

इसके बाद फारनाबेजुसने ऐजेसिलॉससे भेंट करनेका प्रस्ताव किया। उसने प्रस्ताव स्वीकार किया और यथासमय निर्दिष्ट स्थानपर जा पहुँचा। वह एक पेड़के नीचे घासपर बैठ कर फारनाबेजुसकी प्रतीक्षा करने लगा। थोडी ही देरमें फारनाबेजुस अत्यन्त सुन्दर और बहुमूल्य कपडे पहने हुए वहाँ आ गया। वह अपने साथ मुलायम गलीचे और

मामदार दरियाँ लाया था, किन्तु जब उसने एजेसिलासको घासपर ही बैठे देखा तो उसे अपनी आराम तलवीपर बड़ी लज्जा मालूम हुई और वह अपने अमूल्य वस्त्रोंकी परवाह न कर एजेसिलासके साथ ही जमीनपर बैठ गया। मामूली शिष्टाचारके बाद फारनाबेजसने उन सब सहायताओंका उल्लेख करते हुए, जो उसने एटिक युद्धके समय लैसी-डीमोनियन लोगोंको दी थीं, कहा कि मेरे उन ऋणोंका बदला आप मेरे देशको ध्वस्त विध्वस्त कर दे रहे हैं, क्या यह उचित है? यह सुन कर वहाँ जो स्पार्टन लोग खड़े थे वे मन ही मन लज्जित हो गये, किन्तु एजे-सिलासने तुरन्त उत्तर दिया "ऐ फारनाबेजुस! जब तुम्हारे स्वामी फारस-के राजाके साथ हमारी मित्रता थी, तब हमने तुम्हारे साथ मित्रों जैसा व्यवहार किया था, किन्तु अब उससे हमारी शत्रुता है, इसीलिये हम तुमसे शत्रुके सदृश व्यवहार कर रहे हैं। हम तुम्हें जो हानि पहुँचा रहे हैं उसका लक्ष्य तुम नहीं हो। तुम्हारे जरिये हम फारस-नरेशको ही क्षति पहुँचाना चाहते हैं। किन्तु यदि तुम फारस-नरेशके गुलाम रहनेके बजाय ग्रीसके मित्र बनना पसन्द करो, तो मेरी समस्त सेना और जंगी बेड़ेको तुम अपना ही समझ सकते हो और आवश्यकतानुसार, अपनी या अपने देश-की रक्षाके लिए उसका प्रयोग कर सकते हो।" इसपर फारनाबेजुसने उत्तर दिया "यदि फारसके राजा मेरे स्थानमें अन्य किसीको प्रान्ताधिकारी बना दें, तो मैं अवश्य आपकी ओर आ सकता हूँ, किन्तु जबतक यहाँके शासनके सम्बन्धमें मेरे ऊपर उनका विश्वास है, तबतक मैं आपका विरोध करनेमें कोई बात उठा नहीं रखूँगा।" यह उत्तर सुन कर एजे-सिलास बड़ा प्रसन्न हुआ और बिदा होते हुए कहने लगा "ऐसा वीर पुरुष यदि शत्रु होनेके बदले मेरा मित्र बन जाता, तो कितना अच्छा होता।"

जब फारनाबेजुस वहाँसे चला गया, तब उसका लड़का एजेसि-लासके पास दौड़ा हुआ आया और मुसकुराकर कहने लगा "एजे-

सिलास, मेरा आतिथ्य स्वीकार करो।" यह कह कर उसने अपने हाथ की बरछी उसे अर्पित कर दी। ऐजेसिलासने उसे ले लिया। उसपर नवयुवककी शिष्टता एवं उसके सद्व्यवहारका बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने इस जगहमें अपने चारों ओर देखा कि यदि कोई अच्छी चीज़ हो तो मैं भी इसे भेंटमें दे दूँ। अपने सेक्रेटरी (मंत्री) के घोड़ेका बढ़िया साज व सामान देख कर उसने वही उस नवयुवकको दे दिया। इतना ही नहीं, इसके बाद भी उसपर ऐजेसिलासकी ऐसी ही कृपा-दृष्टि बनी रही। यद्यपि अन्य सब मामलोंमें ऐजेसिलास पूर्ण न्यायका पक्षपाती था, फिर भी उसका ख्याल था कि किसी मित्रके सम्बन्धमें न्यायकी दुहाई देकर बैठ रहना एक तरहसे अपने मैत्री-सम्बन्धको अस्वीकार कर देना ही है। इतना होते हुए भी कभी कभी राज्यकी आवश्यकताओंके कारण उसे अपने इस सिद्धान्तकी अवहेलना भी करनी पड़ती थी। एक बार उसे बड़ी शीघ्रतामें अपना पड़ाव बदलना पड़ा और एक मित्रको रुग्णावस्थाके कारण चारपाईपर लेटा हुआ ही छोड़ देना पड़ा। जब उसने ऐजेसिलासको पुकार कर लौटनेकी प्रार्थना की, तब ऐजेसिलॉसने कहा "प्रेमी एवं सदय होते हुए विवेकशील और समझबूझ बनना कितना कठिन है!"

युद्ध करते करते एक वर्ष और बीतने पर ऐजेसिलासकी कीर्ति बहुत फैल गयी, यहाँ तक कि फारसनरेशको नित्य ही उसके सद्गुणों, सीधी सादी रहन-सहन एवं संयमके समाचार मिला करते थे। यात्राके अन्तमें वह प्रायः मन्दिरमें ठहरता था और अपना कोई भी कार्य देवताओंकी दृष्टिसे छिपानेकी चेष्टा नहीं करता था। इतनी बड़ी सेनामें शायद ही कोई ऐसा सैनिक रहा हो जो ऐजेसिलॉसकी अपेक्षा अधिक मोटे या कड़े बिस्तरेपर सोता हो। कठिनसे कठिन धूप और जाड़ा भी वह बरदाश्त कर लेता था।

अब एशियाके अनेक प्रान्तोंने फारसके विरुद्ध बलवा कर दिया। ऐजेसिलासने उक्त प्रान्तोंमें जाकर शान्ति स्थापित की और बिना किसी

लून-श्यार्यीके या बिना किसीको निष्कासित किये, वहाँ उचित शासन-व्यवस्था स्थापित कर दी। इसके बाद उसने निश्चय किया कि अब समुद्र-तटवर्ती प्रान्तोंको छोड़ कर देशके बिल्कुल भीतर घुसा जाय और स्वयं पारस नरेशपर ही आक्रमण किया जाय। किन्तु इसी समय स्पार्टासे आये हुए चिन्ताजनक समाचारोंके कारण वह अपना यह निश्चय कार्यमें परिणत नहीं कर सका। वहाँसे एक दूतने आकर प्रार्थना की कि इस समय आपके देशमें हाँ भीषण युद्ध हो रहा है, अतः आप वापस चल कर स्वदेश-वासियोंकी सहायता कीजिए। ग्रीक लोगोंकी उस पारस्परिक ईर्ष्या और द्वेषबुद्धिकी कहाँतक निन्दा की जाय जिससे प्रभावित होकर वे लोग इस तरह एक दूसरेके विनाशमें तत्पर हो गये। ठीक उस समय जब वे शत्रुको लगातार परास्त करते हुए शीघ्रताके साथ सौभाग्य पथ पर अग्रसर हो रहे थे, उन्हें एकाएक पीछे लौटना पड़ा और जो अस्त्र-शस्त्र शत्रुके विरुद्ध ग्रहण किये गये थे उनका प्रयोग अपने भाइयोंके ही प्राणापहरणके निमित्त करनेके लिए विवश होना पड़ा। मैं उन लोगोंसे सहमत नहीं हूँ जिन्होंने सिकन्दरको दाराके सिंहासनपर बैठा देख कर यह कहा था कि यदि इस समय हमारे अन्य भाई जीवित होते तो यह दृश्य देख कर उन्हें कितनी प्रसन्नता न हुई होती। मैं तो समझता हूँ कि प्रसन्न होनेके बजाय वे यह ख्याल कर दुःखित ही होते कि जो सुयश सिकन्दर तथा मकदूनियन लोगोंको मिला उसे पानेका सुअवसर हमने अपनी मूर्खताके ही कारण खो दिया था, क्योंकि हमने अपने बड़े बड़े सेनापतियोंको आपसकी लड़ाईमें ही मरवा डाला।

इस समय ऐजेसिलॉसका व्यवहार अत्यन्त प्रशंसनीय था। हैलीनार्टसे जब स्वदेशकी रक्षाके लिए लौटनेको कहा गया, तब वह ऐसा करनेको तैयार नहीं हुआ था, यद्यपि उस समय उसकी हालत स्वयं खराब हो रही थी और वह इटलीसे प्रायः निकाल दिया गया था। उसी प्रकार सिकन्दरने एगिस और एण्टीपेटरकी पारस्परिक लड़ाईकी खबर पाकर

उसका मज़ाक उड़ाया था और हँस कर कहा था "तो मालूम होता है कि जब हम एशियामें दाराको परास्त करनेमें लगे हुए थे, तब आरके-डियामें चूहोंकी लड़ाई हो रही थी!" इस सम्बन्धमें स्पार्टाका भाग्य अधिक अच्छा था, क्योंकि वहाँका राजा ऐजेसिलास न्यायी और सीधा-सादा था। ज्यों ही उसने गृहयुद्धके समाचार पाये, त्यों ही वह अपने सौभाग्यके शिखरपर आरूढ़ होते होते और भव्य सफलताकी पूर्ण आशा रखते हुए भी सब कुछ छोड़ कर वहाँसे चल पड़ा।

फारसके सिक्केकी पीठपर तीरन्दाजकी तसवीर बनी रहनेके कारण ऐजेसिलासने कहा कि एक हजार फारस देशीय तीरन्दाजोंने मुझे एशियासे बाहर निकाल दिया। इससे उसका यही आशय था कि फ़ार-सके राजाने थीबीज़ और अथेंज़के नेताओं और वक्ताओंको घूँस देकर स्पार्टाके विरुद्ध लड़नेके लिए उभाड़ा था।

हैलेस्पाण्ट पार कर वह थ्रेस होते हुए थल-मार्गसे चला। उसने मार्ग देनेके लिए किसीसे प्रार्थना नहीं की। वह जिस प्रान्तमें से होकर निकलता था, उसके शासकके पास अपने दूत भेज कर केवल यही पुँछ-वाता था कि आप मुझे इस मार्गसे मित्रकी तरह जाने देंगे या शत्रुकी तरह? प्रायः सभीने मित्रकी तरह उसका स्वागत किया, किन्तु ट्रैलियन लोगोंने मार्ग देनेके बदलेमें सौ औरतें और चाँदीके सौ टैलेण्ट भेंट स्वरूप माँगे। ऐजेसिलासने घृणाके साथ उत्तर दिया "तो वे लोग आकर ले क्यों नहीं लेते?" वह आगे बढ़ा और ट्रैलियन लोगोंको मुकाबलेके लिए बिल-कुल तैयार देख कर उनसे भिड़ गया। उनके कई आदमियोंको मार कर वह पुनः निश्चिन्त भावसे यात्रामें अग्रसर हुआ। जब मकदूनियाके पास पहुँच कर उसने यही संदेशा वहाँके राजाके समीप भेजा तो उसने उत्तरमें कहलाया कि "मुझे इसपर विचार करनेके लिए समय चाहिए।" ऐजेसिलासने कहा "अच्छा, उसे विचार करने दीजिये, आओ तबतक हम लोग आगे बढ़ें।" मकदूनियाके राजाको उसकी यह दृढ़ता

देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उसे मित्रकी तरह निकल जानेकी आज्ञा दे दी।

जब यह थेसली पहुँचा तो उसने उसे उजाड़ दिया, क्योंकि वहाँके लोग शत्रुसे मिले हुए थे। वहाँके प्रधान नगर ल्यारीसाके अधिकारीके पास उसने सन्धि करनेके लिए दो राजदूत भेजे, किन्तु लोगोंने उन्हें पकड़ कर बन्दीगृहमें डाल दिया। यह देख कर उसके सैनिक बहुत असन्तुष्ट हुए और वे ल्यारीसाका अवरोध करनेके लिए चिल्लाने लगे। ऐजेसिलासने ऐसा करना ठीक नहीं समझा। उसने कहा "यदि थेसलीका सारा प्रान्त भी मुझे मिलता हो तो भी मैं उनमेंसे एक भी राजदूतकी हानि बरदाश्त नहीं कर सकता।" बादमें उसने संधिकर उनका छुटकारा कराया। इसी प्रकार एक बार पहले भी जब उसे यह समाचार मिला था कि कारिन्थके पासवाली लड़ाईमें लैसीडीमोनियन लोगोंकी बड़ी भारी जीत हुई और विपक्षके बहुसंख्यक ग्रीक मारे गये, तब उसने कोई सन्तोष प्रकट नहीं किया था। उस समय एक ठंडी साँस भर कर उसने यही कहा था "हे ग्रीस देश, इस तरह तूने न जाने कितने वीर पुरुषोंके प्राण ले लिए। यदि वे इस समय जीवित होते तो समस्त फारस देशपर विजय पानेके लिए बहुत काफी थे।"

यहाँ उसे एक एफर (उच्च न्यायाधीश) के हाथ स्पार्टासे यह संदेशा मिला कि जहाँतक हो सके शीघ्र ही बीओशियापर आक्रमण किया जाय। यद्यपि ऐजेसिलॉसकी निजी राय इस समय आक्रमण करनेकी नहीं थी, फिर भी उसने न्यायाधीशोंके आदेशानुसार ही चलनेका निश्चय किया। उसने अपने सैनिकोंसे कहा कि हम लोग जिस कामके लिए एशियासे यहाँ लौट आये हैं, उसमें जुट जानेका समय अब आ गया है। उसने अपनी सहायताके लिए कारिन्थके पास दो पल्टनें बुलायीं। लैसीडीमोनियन लोगोंने एक घोषणा प्रकाशित की कि जो लोग राजाकी अधीनतामें रह कर युद्ध करना चाहें वे शीघ्र ही अपना नाम दे दें। नगरके सभी

नवजवानोंको युद्धके लिए तैयार देख कर उन्होंने सबसे बलवान् पचास स्वयंसेवक चुन लिये और उन्हें युद्धार्थ भेज दिया।

थर्मोपाइलीपर अधिकार जमा कर और फोसिसमें से शान्तिपूर्वक निकल कर ज्यों ही उसने बीओशिआमें प्रवेश किया और एक स्थानपर अपना पड़ाव डाला, त्यों ही उसने एक सूर्यग्रहण देखा और जहाजी बेड़ेकी पराजयका समाचार सुना। इससे उसके हृदयपर बड़ा आघात पहुँचा, किन्तु सेनाके निराश हो जानेकी आशंकासे उसने यह खबर फैला दी कि स्पार्टन लोगोंकी ही जीत हुई है। अपनी खुशी प्रकट करनेके लिए उसने गलेमें एक माला पहन ली और देवताओंको बलि भी चढ़ायी।

जब वह कोरोनियाके पास पहुँचा, जहाँ शत्रुकी सेना युद्धके लिए तैयार खड़ी थी, तब उसने अपनी सेनाका व्यूहन किया। वाम पक्ष तो उसने ऑरचोमीनियन लोगोंके सिपुर्द किया और दक्षिण पक्षका अधिपति वह स्वयं बना। शत्रुने भी अपना बायाँ भाग आरजाइव्ह लोगोंकी अधीनतामें कर दिया, किन्तु दाहना भाग स्वयं थीबन लोगोंके ही अधिकारमें रखा। युद्ध शुरू होनेके थोड़ी देर बाद ही थीबन लोगोंने ऑरचोमीनियन लोगोंको परास्त कर दिया और ऐजेसिलासने आरजाइव्ह लोगोंको खदेड़ दिया। अपने अपने वाम पक्षकी पराजय देख कर दोनों दलवालोंने उनकी सहायता करनेका निश्चय किया। यदि इस समय ऐजेसिलासने शत्रुपर सामनेसे हमला न कर पीछेसे या बाजूसे किया होता तो उसकी जीत होनेमें कोई सन्देह नहीं था, किन्तु अत्यन्त उत्तेजित एवं क्रुद्ध होनेके कारण वह अधीर हो उठा था। इसीसे ऐसा करनेके लिए उपयुक्त अवसर मिलने तक वह ठहर न सका। वह अपनी सेना लेकर सामनेसे ही जा भिड़ा। थीबन लोग भी साहसमें किसी प्रकार कम नहीं थे, अतः दोनों ओरसे बड़ा भीषण युद्ध हुआ। ऐजेसिलासके आसपास तो ऐसी विकट मारकाट होने लगी कि उसकी रक्षाके लिए जो पचास स्वयंसेवक नियुक्त किये गये थे, वे अत्यन्त वीरतापूर्वक लड़ते हुए भी बड़ी कठिनाईसे

डरावी जान बचा सके। यद्यपि उनपर किये गये प्रहारोंको ये बराबर अपने शरीरपर ले लेते थे, फिर भी वह जख्मी हो गया। स्वयंसेवकोंने उसके चारों ओर एक गोल बना लिया और विपक्षके बहुसंख्यक सैनिकोंका संहार कर किसी प्रकार उसके प्राणोंकी रक्षा की। जब थीवन लोगोंको परास्त करना कठिन हो गया, तब ऐजेसिलासके पक्षवालोंने इधर उधर हट कर शत्रुकी सेनाको निकल जानेके लिए बीचमें मार्ग कर दिया। शत्रुके सैनिक बेधड़क आगे बढ़ते गये और स्पार्टन लोगोंको हारा हुआ समझ कर बेफिक्रसे हो गये। इसी समय ऐजेसिलासकी सेनाने उनपर पीछेसे आक्रमण कर दिया। वे लोग युद्धके लिए ठहर नहीं सके, वरन हेलीकॉन तक बराबर बढ़ते चले गये।

यद्यपि ऐजेसिलास बहुत घायल हो गया था और उसे तुरन्त शिविरमें पहुँचाना आवश्यक था, पर उसने तबतक जानेसे इनकार किया जबतक मृत सैनिकोंके शव शिविरमें नहीं पहुँचा दिये गये। शत्रुके जिन आदमियोंने पासवाले मन्दिरमें आश्रय ग्रहण किया था, उन्हें उसने भगा दिया। दूसरे दिन सबेरे, यह देखनेके लिए कि थीवन लोग दुबारा लड़ना चाहते हैं या नहीं, उसने अपने सैनिकोंको मालाएँ पहनने और एक स्थानपर बैठ कर आराममे बाँसुरी बजाते रहनेकी आज्ञा दी। उसने उनमे ऐसे स्थानपर एक विजयसूचक चिह्न बनानेके लिए भी कहा जो शत्रुको दृष्टिगोचर हो। जब उन लोगोंने लड़ाई शुरू करनेके बजाय अपने मुर्दोंको दफनानेकी आज्ञा माँगी, तब उसने अपनी स्वीकृति दे दी। इस प्रकार विजयका पूर्ण निश्चय हो जाने पर वह पीथियन उत्सव देखनेके लिए डेल्फी गया। वहाँ उसने एशियासे प्राप्त सम्पत्तिका दसवाँ भाग उत्सवके निमित्त देनेका वचन दिया जो लगभग सौ टैलेण्टके बराबर होता था।

अब वह स्वदेशको लौट आया। यहाँ उसकी रहन-सहन और आदतें देख कर स्पार्टन लोग बड़े प्रसन्न हुए और उससे स्नेह करने लगे। इसके

पहले शायद ही कोई सेनापति ऐसा रहा हो जो विदेशोंमें जाकर भी अपने देशके रीतिरवाजोंको न भूला हो अथवा कमसे कम उन्हें क्षुद्र दृष्टिसे न देखने लगा हो। ऐजेसिलास अभीतक स्पार्टाके सभी रीति-रवाजोंको मानता था। न तो उसके भोजन करने या नहानेके ढंगमें ही कोई परिवर्तन हुआ था और न उसकी पत्नीकी वेशभूषा ही कुछ बदली थी। उसके घरका प्रत्येक सामान, उसका कवच तथा अन्य चीजें बिलकुल ज्योंकी त्यों थीं।

उसने देखा कि स्पार्टन लोगोंको ओलिम्पिक खेलोंके लिए घोड़े रखनेका बड़ा शौक़ था। इसे वह किसी सद्‌गुणका चिह्न न मान कर केवल धन-सम्पत्तिका सूचक समझता था। ग्रीक लोगोंको यही दिखलाने-के लिए उसने उक्त खेलोंमें एक रथ भेजनेके लिए अपनी बहिन सिनिस्काको राज़ी किया। ऐजेसिलास ज़ेनोफोन नामक एक तत्ववेत्ताको अपने साथ रखता था और उसे बहुत मानता भी था। उसने एक बार ज़ेनोफोनसे यह प्रस्ताव किया था कि तुम अपने बच्चोंको बुला लो और स्पार्टामें ही उन्हें शिक्षा दिलाओ। यहाँ उन्हें सबसे श्रेष्ठ विद्या—आज्ञा मानना और आज्ञा देना—सिखायी जायगी।

लाइसैण्डरकी मृत्युके बाद ऐजेसिलासने देखा कि एशियासे लौटने पर वह मेरे विरुद्ध एक दल स्थापित कर गया है। उसने विचार किया कि लाइसैण्डर किस तरहका नागरिक था, यह दिखला कर मैं उसकी तथा उसके दलकी पोल खोल दूँ। उसके कागजोंमें उसे एक भाषणकी नकल मिली जो उसने एक सार्वजनिक सभामें किया था। इसमें उसने शासन-व्यवस्थामें परिवर्तन करनेके लिए लोगोंको उभाड़नेका प्रयत्न किया था। ऐजेसिलासने उसे प्रकाशित करनेका निश्चय किया, क्योंकि ऐसा होनेसे लोगोंको मालूम हो जाता कि लाइसैण्डर कैसे कैसे तरीकोंसे काम लिया करता था। किन्तु जब एक प्रमुख कर्मचारीने उसे पढ़ा और उसे काफ़ी ज़ोरदार भाषामें लिखा हुआ पाया, तब उसने गड़े मुर्दे उखाड़नेके

बजाय उसे भी ग्लाइसिण्डरकी कब्रमें गाड़ देनेकी सलाह दी। ऐजेसिलास बुद्धिमान् तो था ही, उसे इस सम्मतिका औचित्य समझनेमें देर नहीं लगी। उसने सारी बात वहीं दबा दी और उस दिनसे सर्वसाधारणके सामने उस दलके किसी व्यक्तिका अपमान नहीं किया, किन्तु उनके मुखियाओंको चुन चुन कर किसी न किसी कामके बहाने बाहर भेज देनेमें उसने कोई कोरकसर नहीं की।

उसका सहकारी राजा ऐजेसिपालिस एक तो निष्कासित पिताका पुत्र था, दूसरे यह स्वयं कम उम्रका और शान्त स्वभावका था, अत यह राज-काजमें कोई हस्तक्षेप नहीं करता था। ऐजेसिलासने प्रयत्न करके उसे अपनी ओर मिला लिया। इस प्रकार नगरपर अपना प्रभुत्व स्थापित कर उसने बड़ी आसानीसे अपने सौतेले भाई टेल्यूशियसको जल-सेनापति-के पदपर नियुक्त करा दिया और फिर कॉरिन्थपर आक्रमण कर उसकी सहायतासे उसने उसकी बड़ी बड़ी नगर दीवारोंपर कब्जा कर लिया। ऐजेसिलास जब कॉरिन्थ पहुँचा, तब वह आरजाइव्ह लोगोंके अधिकार-में था, जो उस समय कोई उत्सव मना रहे थे। ऐजेसिलासके आक्रमणके कारण उन्हें देवताओंको बलि चढ़ानेका कार्य यों ही छोड़ कर भाग जाना पड़ा। उत्सव सम्बन्धी सारी सामग्री भी वे ज्योंकी त्यों पड़ी छोड़ गये।

जब ऐजेसिलास वहाँसे हटकर अन्यत्र चला गया, तब आरजाइव्ह लोग लौट आये और खेल-तमाशे फिर शुरू कर दिये गये। पिछली बार इन खेलोंमें जो लोग सफल हुए थे, उनमेंसे कुछ तो इस बार भी कामयाब हुए, किन्तु कुछ लोगोंने इस बार वे इनाम खो दिये जो पिछली बार उन्हें मिलनेवाले थे। इस प्रकार ऐजेसिलासने यह स्पष्ट प्रमाणित कर दिया कि आरजाइव्ह लोग स्वय अपनी नजरमें भी कायरताके दोषी थे, क्योंकि जहाँ वे खेल-तमाशोंके सञ्चालन-कार्यको इतना अधिक महत्व देते थे, वहां उनकी रक्षाके लिए अपनी जानपर खेल जानेको तैयार नहीं थे। ऐजेसिलास इन सब मामलोंमें प्राय मध्यका पथ ग्रहण करना ही सबसे

अच्छा समझता था। वह खेलों तथा नाच इत्यादिका प्रबन्ध करनेमें सहायता देता था और युवक-युवतियोंके तमाशोंमें जानेके लिए भी उत्सुक रहा करता था, किन्तु जिन बातोंकी ओर अन्य बहुतसे लोगोंका ध्यान विशेष रूपसे आकृष्ट होता था उनकी ओर वह प्रायः उदासीन रहा करता था। कैलीपिडीज़ नामक अभिनेता तमाम ग्रीसमें प्रसिद्ध था। लोग उसकी बड़ी क़दर किया करते थे। एक बार जब ऐजेसिलाससे उसकी भेंट हुई, तब उसने इसका अभिवादन किया। जब उसने देखा कि ऐजेसिलासने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया, तब वह जान बूझ कर उसके पार्श्ववर्तियोंके सामने आ खड़ा हुआ। उसे पूरी आशा थी कि इस बार ऐजेसिलास मेरी तरफ अवश्य दृष्टिपात करेगा, किन्तु जब उसका यह प्रयत्न भी निष्फल हुआ, तब उससे न रहा गया। उसने स्वयं आगे बढ़ कर धृष्टतापूर्वक पूछा, क्या आप मुझे नहीं जानते? ऐजेसिलासने उसकी तरफ सिर घुमा कर कहा "आप कैलीपिडीज नामक अभिनेता ही तो हैं न?" इसी प्रकार जब कुछ लोगोंने उससे एक स्थानपर चल कर बुलबुलकी आवाज़का सुन्दर अनुकरण करनेवाले आदमीकी बोली सुननेका अनुरोध किया, तब उसने जवाब दिया "मैं ख़ुद बुलबुलकी ही बोली सुन चुका हूँ, इसलिए उसकी नक़ल करनेवालेकी बोली सुनना बेकार है।" अस्तु।

जब ऐजेसिलास कॉरिन्थ देशमें था, तब हीरियमपर अधिकार करनेके बाद वह एक स्थानपर खड़ा होकर अपने सैनिकोंको लूटका माल तथा लड़ाईके कैदियोंको ले जाते हुए देख रहा था। इसी समय सन्धिकी बातचीत करनेके लिए थीब्ज़के दो राजदूत वहाँ आये। वहाँवालोंके प्रति मनमें घृणाभाव होनेके कारण और उस समय उनकी अवहेलना करनेमें ही अपना लाभ देख कर उसने न तो उनकी ओर नज़र ही फेरी और न उनका कहना सुननेकी चेष्टा की। इसी समय मानो उसका गर्व मिटानेके लिए यह समाचार उसके पास पहुँचा कि स्पार्टन सेनाकी एक

समूची पल्टनको आईफीक्रेटीजने बिल्कुल काट डाला। यह सुन कर उसे बहुत दुःख हुआ, क्योंकि यह सुने हुए लैसीडीमोनियम वीरोंकी अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित अपने ढंगकी एक ही पल्टन थी। ऐजेसिलास उनकी रक्षाके लिए दौड़ा गया, पर व्यर्थ हुआ, क्योंकि उस समय उनका काम हो चुका था। वह चुपचाप हीरियमको लौट आया। अब उसने भेंट करनेके लिए थीबन राजदूतोंको बुलवाया। उन लोगोंने उसके द्वारा किये गये अपमानका बदला देनेके ख्यालसे, उससे एक शब्द भी कहे सुने बिना ही, कॉरिन्थ लौट जानेकी इच्छा प्रकट की। उन लोगोंके इस व्यवहार-से चिढ़ कर ऐजेसिलासने कहा "यदि तुम लोग जाना चाहते हो और यह देखना चाहते हो कि तुम्हारी सफलताका तुम्हारे मित्रोंको कितना अभिमान है, तो तुम कल आरामसे जा सकते हो।" दूसरे दिन सबेरे दूतोंको अपने साथ लेकर चारों ओर लूटपाट कराता हुआ वह नगरके फाटकपर जाकर खड़ा हो गया और यह दिखला कर कि कॉरिन्थियन लोग अपनी रक्षाके लिए बाहर निकलनेका साहस नहीं करते, उसने उन्हें विदा कर दिया। फिर उस जर्जरित पल्टनके थोड़ेसे बचे हुए आदमियों-को जुटा कर उसने घरकी ओर प्रस्थान कर दिया।

इसके बाद ऐकियन लोगोंकी प्रार्थना मान कर वह उनके साथ अकार-नेनियाको गया। वहां उसने बहुत सा लूटका माल इकट्ठा किया और युद्धमें अकारनेनियन लोगोंको परास्त कर दिया। ऐकियन लोगोंने ऐजेसिलाससे जाड़े भर वहीं रहनेकी प्रार्थना की जिसमें अकारनेनियन लोग अपने खेतोंमें धनाज न बो सकें। उसने कहा कि यदि ये लोग अपने खेतोंमें बीज बो लेंगे तो गर्मीके दिनोंमें इनकी हिम्मत लड़ाई लड़नेकी नहीं होगी। उसका यह कहना सत्य प्रमाणित हुआ, क्योंकि जब ग्रीष्म ऋतुमें ऐकियन लोगोंने पुनः युद्धकी तैयारी की, तब उन लोगोंने तुरन्त उनसे सन्धि कर ली।

जब फारसके जंगी बेड़ेके कारण कोनन और फारनाबाजुस समुद्रके अधिपति बन गये और जब लैकोनियाके समुद्र-तटपर आक्रमण करनेके

सिवा उन्होंने अथेंजकी दीवारें फिरसे बनवा लीं, तब लैसीडीमोनियन लोगोंने फारस-नरेशसे सन्धिकी बात चीत करना आवश्यक समझा। इसी उद्देश्यसे उन्होंने तीरीबाजुसके पास ऐण्टलसिडसको भेजा और इस प्रकार मानो एशियामें रहनेवाले ग्रीकोंको उन्होंने धोखा दिया जिनके कहनेसे ऐजेसिलास फारस-नरेशके साथ युद्ध करने गया था। किन्तु इसका कोई दोष ऐजेसिलासके मत्थे नहीं पड़ा, सन्धि सम्बन्धी सारा प्रयत्न ऐण्टलसिडसकी ओरसे ही किया गया जो ऐजेसिलासका कट्टर शत्रु था और जो किसी भी शर्तपर सन्धिके लिए तैयार था, क्योंकि युद्धसे उसे ऐजेसिलासकी शक्तिके बढ़ जानेका भय था। जब ग्रीक लोगोंने समझौतेकी शर्तें माननेमें ढिलाई की, तब उसने कहा कि यदि आप लोग फारस-नरेशके साथ की गयी सन्धिकी शर्तें माननेमें इतने पीछे रहेंगे तो आपको युद्धके लिए तैयार रहना चाहिये। वह वास्तवमें थीबन लोगोंकी शक्ति क्षीण करना चाहता था, क्योंकि सन्धिकी एक शर्त यह भी थी कि बीओशियाका देश स्वतन्त्र ही रहे। जब फोबिडसने पूर्ण शान्ति के समयमें कैडमियाके दुर्गपर अन्यायपूर्वक कब्जा कर लिया, तब सारे ग्रीसने तथा लैसीडीमोनियन लोगोंने भी उसका यह कार्य पसन्द नहीं किया। जो लोग ऐजेसिलाससे चिढ़ते थे, उन्होंने पूछना शुरू किया कि किसकी स्वीकृतिसे यह कार्य किया गया? ऐजेसिलासने फोबीडसका पक्ष लेते हुए उत्तर दिया कि तुम्हें उसके परिणामकी ओर ही ध्यान देना चाहिये। यदि उससे स्पार्टाकी भलाई होनेकी सम्भावना हो, तो यह पूछने की आवश्यकता नहीं है कि वह किसीकी आज्ञासे, या आज्ञाके बिना ही, किया गया है। ऐजेसिलासके ये शब्द विचारणीय हैं, क्योंकि वह मामूली बातचीतमें न्यायपर बहुत जोर दिया करता था। वह कहा करता था कि न्यायके बिना वीरता भी किसी कामकी नहीं और यदि सारा संसार न्यायका पक्षपाती हो जाय तो वीरता दिखलानेकी कोई आवश्यकता ही न रह जाय। सुलह हो जाने पर फारस नरेशने ऐजेसिलासको

लिया कि हम आपके साथ निजी तौरसे मित्रता और प्रेमभावका सम्बन्ध जोड़ना चाहते हैं। ऐजेसिलासने यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। उसने कहा कि राज्यकी ओरसे जो सन्धि की गयी है, वह पर्याप्त है। जबतक वह कायम है, तबतक निजी मित्रताकी आवश्यकता नहीं है। इतना होते हुए भी वह अपने व्यवहारमें कभी कभी इस सिद्धान्तके अनुसार काम नहीं करता था, विशेष कर थीबन लोगोंके इस मामलेमें। उसने केवल फोयीडसको बचाया ही नहीं, वरन् लैसीडीमोनियन लोगोंको सारा दोष अपने ऊपर ले लेने और कैडमियापर कब्जा बनाये रखनेको राजी कर लिया। उसने कैडमियाकी रक्षाके लिए सैनिकोंका प्रबन्ध कर दिया और थीबीजके शासनका भार आर्कियस और लियोनटिडसके सिपुर्द कर दिया जिनके विश्वासघातसे ही उक्त किलेपर अधिकार किया जा सका।

इससे लोगोंके मनमें यह सन्देह दृढ़ हो गया कि फोबीडसने जो कुछ किया वह ऐजेसिलासकी आज्ञासे ही किया। बादकी घटनाओंसे भी इस सन्देहकी पुष्टि होती है। जब थीबन लोगोंने सरक्षक सेनाको निकाल बाहर किया और अपनी आजादी पुन: हासिल कर ली, तब आर्कियस और लिओनटिडसको मार डालनेका अभियोग लगा कर उसने उनके साथ युद्धकी घोषणा कर दी। उसने युद्धके लिए क्लिओम्ब्रोटसको भेजा, जो अब ऐजेसिपालिसकी मृत्यु हो जानेके कारण वहाँका सयुक्त राजा था। ऐजेसिलासने अपनी वृद्धावस्थाका बहाना कर स्वय युद्ध क्षेत्रम जानेसे इनकार कर दिया। प्रथम बार शस्त्र धारण किये हुए उसे चालीस वर्ष बीत चुके थे, अत कानूनके अनुसार अब उसे लड़ना आवश्यक नहीं था। किन्तु इसका असली कारण यह था कि अभी हालमें ही स्वेच्छाचारी शासनके विरुद्ध लड़ाई लड़ चुकनेके बाद अब उसे उसीके पक्षमें—क्योंकि आर्कियस और लिओनटिडस स्वेच्छाचारी शासक ही थे—युद्ध करनेमें शरम मालूम होती थी।

स्फोड्रियस नामक लैसीडीमोनियन, जो ऐजेसिलासके विपक्षी दल-का था, थेस्पिईका गवर्नर (प्रान्ताधिकारी) था। वह एक उत्साही एवं साहसी आदमी था, यद्यपि उसमें बुद्धिमत्ताकी अपेक्षा आशा और विश्वास ही अधिक था। फोबीडसका यह कार्य देख कर उसके मनमें भी ऐसा ही कोई बड़ा काम करनेकी इच्छा हुई जिससे वह भी उसी प्रकार प्रसिद्ध हो जाता जिस प्रकार कैडमिया ले लेनेसे फोबीडस हो गया था। उसने सोचा कि पाइरियसपर अचानक अधिकार कर लेनेके बाद समुद्रके साथ अथीनियन लोगोंका सम्बन्ध छिन्न कर देनेसे मेरा बड़ा नाम होगा। कहते हैं, बीओशिआके दो सेनानायकोंने उसे इस कार्यके लिए विशेष रूपसे उसकाया था। उसका यह कृत्य उतना ही निन्दनीय एवं छलमय था जितना फोबीडसका था, किन्तु इसके करनेमें न तो उतनी वीरता ही प्रदर्शित की गयी और न वैसी सफलता ही उसे मिली। उसने विचार किया था कि रातोंरात कुल काम खतम कर दिया जायगा, किन्तु वह अभी थ्रीसियाके मैदानमें ही था कि दिन निकल आया। सूर्यका प्रकाश देखते ही उसके सैनिकोंका उत्साह धीमा पड़ गया और उसकी भी हिम्मत अपना काम पूरा करनेकी नहीं हुई। इधर उधर लूटमार कर वह बदनामी-के साथ थेस्पिईको लौट आया। शान्ति भंग करनेवाली इस घटनाकी शिकायत करनेके लिए अथेंसवालोंने स्पार्टाको अपने दूत भेजे, किन्तु उनका आना एक तरहसे अनावश्यक ही साबित हुआ, क्योंकि स्फोड्रियस-का मामला स्पार्टाके न्यायाधीशोंके सामने पहले ही पेश हो चुका था। फैसला सुनाये जानेके समयतक ठहरनेकी स्फोड्रियसकी हिम्मत नहीं हुई, उसे विश्वास था कि उसे प्राण-दण्ड ही मिलेगा, क्योंकि वह जानता था कि उसके कारण सब लोगोंका सिर नीचा हो गया था और वे सब उससे बहुत चिढ़ गये थे।

स्फोड्रियसके क्लिओनिमस नामका एक सुन्दर पुत्र था। इसके साथ ऐजेसिलॉसके पुत्र आर्कीडेमसकी गाढ़ी मित्रता थी। आर्कीडेमस अपने

मित्रके पिताकी विपत्तिके कारण विशेष चिन्तित था, फिर भी वह उसके सहायताके लिए प्रत्यक्षरूपसे कुछ भी नहीं कर सकता, क्योंकि स्फोड्रियस उसके पिताका एक प्रमुख शत्रु समझा जाता था। किन्तु जब क्लिओनिमसने आँखोंमें आँसू भर कर अत्यन्त आर्त्त स्वरसे उससे प्रार्थना की, तब आर्कीडेमसको बड़ी दया आयी। वह इस उद्देश्यसे दो तीन दिनों तक बराबर अपने पिताके पीछे पीछे फिरता रहा कि यदि मौका मिले तो उससे इस विषयकी चर्चा छेड़ूँ, किन्तु भयके कारण उसकी हिम्मत ही नहीं पड़ी। अन्तमें जब मामलेपर विचार होनेका दिन बिलकुल करीब आ गया, तब उसने बड़ा साहस करके केवल इतना कहा "पिता जी, मेरे मित्र क्लिओनिमसने अपने पिताको छुड़ानेके सम्बन्धमें मुझसे निवेदन किया था।" ऐजेसिलास जानता था कि क्लिओनिमस उसके पुत्रका अन्तरंग मित्र है, फिर भी उसने उसे कोई आशापूर्ण उत्तर नहीं दिया। उसने केवल इतना ही कहा कि "मैं इसपर विचार करूँगा और जो कुछ उचित एवं समयानुकूल समझूँगा, वही करूँगा।"

इस प्रकार अपने प्रयत्नमें विफल होकर आर्कीडेमस मन ही मन बहुत लज्जित हुआ। इसीसे अब उसने क्लिओनिमसके यहाँ आना-जाना बहुत कम कर दिया, यद्यपि पहले वह दिनमें कई बार उससे मिलने जाया करता था। यह देख कर स्फोड्रियसके मित्रोंने भी समझ लिया कि उसके छूटनेकी कोई आशा नहीं है। इस बीचमें एक दिन एक परिचित व्यक्तिसे बातचीत करते समय ऐजेसिलासने कहा "स्फोड्रियसके उस कृत्यको मैं अच्छा नहीं समझता, फिर भी मैं उसे एक वीर योद्धा समझता हूँ और मेरा ख्याल है कि स्पार्टाको ऐसे वीरोंकी आवश्यकता है।" अपने पुत्रको प्रसन्न करनेके लिए इसी तरहके भाव वह प्रायः प्रकट किया करता था। अब क्लिओनिमसको भी यह समझनेमें देर नहीं लगी कि आर्कीडेमसने वास्तवमें मेरे पिताके लिए बहुत कुछ कोशिश की है। स्फोड्रियसके मित्रोंको भी पुनः उसके बचनेकी कुछ कुछ आशा होने लगी।

ऐजेसिलास सचमुच बड़ा पुत्रवत्सल था। कहते हैं, जब उसके बच्चे छोटे छोटे थे तब वह उनके साथ प्रायः खेला करता था। एक बार एक मित्रने उसे उनके साथ मिल कर डण्डेका घोड़ा बना कर दौड़ते हुए देख लिया। तब ऐजेसिलासने उससे अनुरोध किया कि "आप तबतक इस घटना-की चर्चा और किसीसे न करें जबतक आप स्वयं पिता न बन जावें।"

निदान स्फोड्रियस छोड़ दिया गया। इसपर अर्थीनियन लोगोंने युद्धकी तैयारी शुरू कर दी। सर्वसाधारणमें ऐजेसिलासके प्रति असन्तोष फैल गया, क्योंकि केवल एक बालककी इच्छाओंकी पूर्तिके लिए उसने न्यायकी उपेक्षा की थी और नगरमें ऐसे व्यक्तियोंको अत्याचार करनेके लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया था जिनके न्याय विरुद्ध कार्योंने ग्रीसकी शान्ति भङ्ग कर दी थी। उसने अपने साथी क्लिओम्ब्रोटसको थीबन युद्ध-के प्रतिकूल पाया। इसीसे अब उसे वृद्धावस्थाके कारण प्राप्त विशेषा-धिकारका परित्याग कर देना पड़ा, यद्यपि पहले उसने यही बहाना करके युद्धमें भाग लेनेसे इनकार कर दिया था। उसे स्वयं ही सेनाका नेतृत्व करते हुए बीओशियामें प्रवेश करना पड़ा। कभी तो वह सफल होता था और कभी शत्रुपक्ष उसे पराजित कर देता था। एक लड़ाईमें आहत होने पर एण्टलसिदसने उससे कहा "थीबन लोगोंको तुमने युद्धमें जो पाठ पढ़ाया था, उसीका बदला उन्होंने दिया है।" वास्तवमें यह बात सच भी थी कि लैसीडीमोनियन लोगोंके आक्रमण बारम्बार होते रहनेके कारण थीबन लोगोंको लगातार युद्धकी शिक्षा पाते रहनेका अवसर मिला था, इसीसे वे लोग पहलेकी अपेक्षा कहीं अधिक युद्ध निपुण हो गये थे। इसी ख्यालसे प्राचीन कालमें लाइकरगसने तीन पृथक् पृथक् कानूनों द्वारा किसी भी जातिसे दुबारा तिबारा युद्ध करनेकी मनाही कर दी थी, क्योंकि इसके परिणाम स्वरूप शत्रुके भी युद्ध-कुशल हो जानेकी सम्भा-वना रहती है। इस समय स्पार्टाके मित्रोंमें भी ऐजेसिलासके प्रति असन्तोषका भाव बढ़ रहा था, क्योंकि यह लड़ाई सर्वसाधारणसे सम्बन्ध

रखनेवाले किसी न्यायोचित कारणसे नहीं ठानी गयी थी। उसके छेड़े जानेका कारण केवल इतना ही था कि ऐजेसिलास थीबन लोगोंसे घृणा करता था। उन लोगोंको इस बातपर बड़ा क्रोध आता था कि सेनामें हम लोगोंकी संख्या सबसे बड़ी होने पर भी हमें दो चार इने गिने व्यक्तियोंकी इच्छाके अनुसार प्रतिवर्ष कभी यहाँ कभी वहाँ इस तरहकी कठिनाइयों और संकटोंका सामना करना पड़ता है। इस समय यह दिखलानेके लिए कि सेनामें इन मित्र देशोंके सैनिकोंकी ही संख्या सबसे अधिक नहीं है, ऐजेसिलासने एक चाल चली। उसने आज्ञा दी कि मित्र राष्ट्रोंके सैनिक एक ओर इकट्ठे होकर बैठ जायँ और लैसीडीमोनियन सैनिक दूसरी ओर बैठें। जब वे लोग इस तरहसे बैठ गये, तब उसके आदेशसे एक घोषकने खड़े होकर दोनों दलवालोंसे कहा "आप लोगोंमें जो जो व्यक्ति कुम्हारका पेशा करते हों, वे कृपा कर अलग खड़े हो जायँ।" इसी प्रकार उसने लुहारों, राजों, बढ़इयों तथा हाथकी कारीगरीसे रोजी कमानेवाले अन्य लोगोंसे भी क्रमशः खड़े होनेके लिए कहा। इस समय तक मित्र राज्योंके तो प्रायः सभी सैनिक खड़े हो हो कर अपने स्थानसे हट गये थे, किन्तु लैसीडीमोनियन लोगोंमेंसे कोई नहीं उठा था, क्योंकि उन्हें कानूनसे हाथकी कारीगरी सीखनेकी मुमानियत थी। अब ऐजेसिलासने हँसते हुए कहा "मित्रो, आपने देखा न कि आपकी अपेक्षा हम कितने सैनिक युद्धक्षेत्रम भेजते हैं?"

जब वह मेगाराकी राह अपनी सेना बीओशियासे वापस ले आया, तब एक मजिस्ट्रेटके दफ्तरकी तरफ अग्रसर होते समय अचानक उसकी टाँगमें बड़े जोरोंका दर्द होने लगा और उसमें बड़ी सूजन नजर आने लगी। साइरेक्यूज निवासी एक वैद्यने गुल्फ (पाँवकी गाँठ) के पास एक जख्म कर दिया जिससे खून बहने लगा। इससे ऐजेसिलासको आराम तो मालूम हुआ, किन्तु खूनका गिरना बन्द नहीं किया जा सका। नतीजा यह हुआ कि कमजोरीके कारण वह बेहोश हो गया। निदान बहुत

परेशानीके बाद बड़ी कठिनाईसे खून बन्द हुआ। ऐजेसिलॉस बहुत कमज़ोर हालतमें स्पार्टाको वापस लाया गया और बहुत दिनोंतक उसमें इतनी ताक़त नहीं आयी कि वह रणभूमिमें आ सकता।

इस बीचमें दैव भी स्पार्टन लोगोंके प्रतिकूल ही रहा था। उन्हें जल तथा स्थल दोनोंमें क्षति उठानी पड़ी, किन्तु उनकी सबसे बड़ी हानि टेजिरीके युद्धमें हुई जहाँ वे घमसान युद्धमें प्रथम बार थीबन लोगोंके हाथ परास्त हुए।

यही कारण है कि सभी ग्रीसनिवासी शान्तिके इच्छुक हो उठे थे। इसी उद्देश्यसे अनेक राजदूत स्पार्टाको आये। इनमें ईपामिनानडस नामक थीबन भी था, जो उस समय अपने दार्शनिक विचारों एवं विद्वत्ताके कारण बहुत प्रसिद्ध था। किन्तु अभीतक उसने सेनानायकके योग्य क्षमताका परिचय नहीं दिया था। वही अकेला ऐसा था, जिसने अन्य लोगोंको ऐजेसिलासके पास जाकर हाथ जोड़ते और किसी तरह उसकी कृपा प्राप्त करनेका प्रयत्न करते देखकर, राजदूतोचित मर्यादाकी रक्षा की एवं अपने चरित्रके अनुरूप स्वतंत्रताके साथ भाषण किया। उसने अपने देश थीब्जकी ओरसे ही नहीं, वरन् समस्त ग्रीसकी ओरसे यह मत प्रकट किया कि युद्धसे केवल स्पार्टाका ही महत्त्व बढ़ा है, किन्तु इससे स्पार्टाके प्रायः सभी पड़ोसियोंकी हानि हुई है और उन्हें कष्ट उठाना पड़ रहा है। उसने इस बातपर ज़ोर दिया कि जो सन्धि की जाय वह न्यायानुकूल एवं बराबरीकी शर्तोंपर की जाय, क्योंकि ऐसी ही सन्धि स्थायी हो सकती है, और ऐसा करना तबतक सम्भव नहीं है जबतक सब देशोंका पद एक बराबर नहीं कर दिया जाता। ऐजेसिलासने देखा कि अन्य ग्रीस-निवासियोंने ये बातें बड़े ध्यानसे सुनीं और सुन कर प्रसन्नता प्रकट की। तब उसने ईपामिनानडससे पूछा कि जिस न्याय और समानताके सिद्धान्तका प्रतिपादन तुम कर रहे हो, क्या उसका एक अंश यह भी है कि बीओशियाके नगर स्वतंत्र कर दिये जायँ?।

ईपामिनानडसने तुरन्त जवाब दिया "पहले आप ही बताइये कि लैकोनियाके नगरोंको स्वाधीनताका उपभोग करने देना न्यायोचित है या नहीं? ऐजेसिलास उत्तेजित होकर आसनसे उठ खड़ा हुआ। उसने इपामिनानडससे फिर पूछा "साफ साफ बतलाओ कि थीओदिआको स्वतंत्र होना चाहिये या नहीं।" जब उसने फिर यही उत्तर दिया कि लैकोनिया स्वतंत्रताके योग्य है या नहीं, तब ऐजेसिलासको बड़ा गुस्सा आया और उसने इसी बहाने संघके राष्ट्रोंकी सूचीमेंसे थीब्जका नाम तुरन्त काट दिया और थीब्जके विरुद्ध लड़ाईकी घोषणा कर दी। अन्य ग्रीसनिवासियोंसे उसने सन्धि कर ली और यह कह कर उन्हें विदा कर दिया कि जो काम शान्तिपूर्वक किया जा सकता है, वह इसी तरह किया जाना चाहिये, किन्तु जिसमें शान्तिमय उपायसे कोई लाभ नहीं होता, उसका निपटारा युद्धके जरिये ही होना चाहिये, क्योंकि प्रत्येक बात सन्धि द्वारा ते करना बहुत कठिन है।

अब एफर लोगोंने क्लिओम्ब्रोटसको खबर भेजी कि आप तुरन्त थीओदिआके लिए कूच कर दीजिए। उन्होंने मित्र राष्ट्रोंको भी कहला भेजा कि आप लोग शीघ्र आकर हमारी सहायता कीजिए। उन लोगोंकी इच्छा युद्धमें शामिल होनेकी नहीं थी, किन्तु वे स्पार्टन लोगोंसे इतना डरते थे कि साफ साफ इनकार कर देनेकी हिम्मत उनमें नहीं थी। यद्यपि इस समय अमङ्गलसूचक कई अपशकुन हुए पर ऐजेसिलासने अपनी युद्धयात्रा स्थगित नहीं की। इसमें सन्देह नहीं कि इस युद्धकी घोषणा एक क्षणिक आवेशमें की गयी थी और, जैसा कि बादकी घटनाओंसे साबित होता है, इसके सम्बन्धमें विशेष विचारसे काम नहीं लिया गया था। ५ वीं जुलाईको अर्थात् कोई बीस ही दिन बाद ल्यूक्ट्राकी लड़ाईमें लैसीडीमोनियन लोग बेतरह परास्त हुए। इस युद्धमें एक हजार स्पार्टनों तथा उनके राजा क्लिओम्ब्रोटसके प्राण गये। स्फोड्रिअसका रूपवान् पुत्र क्लिओनिमस भी इसी युद्धमें मारा गया। अपने

राजाके शरीरकी रक्षा करते समय यह वीर घायल होकर तीन बार उसके चरणोंके पास गिरा, किन्तु प्रत्येक बार उठ कर फिर युद्ध करने लगता था। अन्तमें इसी प्रकार युद्ध करते करते इसने अपने प्राण दिये।

स्पार्टन लोगोंको इस तरह एकाएक परास्त करनेके कारण थीवन लोगोंकी बड़ी ख्याति हुई। किन्तु स्पार्टन लोगोंका व्यवहार भी थीवनोंके व्यवहारसे किसी प्रकार कम ऊँचा या कम स्तुत्य न था। यदि मामूली बात-चीत या हँसी-मज़ाकमें यही हुई महापुरुषोंकी अनेक बातें ऐसी होती हैं जो चिरकाल तक स्मरण रखने योग्य समझी जाती हैं, तो फिर मनकी वह अपूर्व दृढ़ता, जो संकटसे घिरी रहनेपर भी, अनेक वीरात्माएँ अपनी वाणी या अपने कार्यों द्वारा प्रकट करती हैं, कितनी उल्लेखनीय न होगी? जिस समय पराजयकी खबर पहुँची, उस समय स्पार्टन लोग एक बड़ा उत्सव मना रहे थे, जिसमें बहुसंख्यक विदेशी भी सम्मिलित थे। ल्यूक्ट्राके समाचार लेकर दूत नृत्यशालामें पहुँचे, जहाँ नवयुवक और नवयुवतियाँ नृत्यक्रीड़ामें तल्लीन थीं। एफर लोग यह भलीभाँति जानते थे कि इस पराजयके कारण स्पार्टाकी शक्तिपर बड़ा आघात पहुँचेगा और अब ग्रीसके अन्य भागोंपर उसका कोई दबदबा न रह जायगा, फिर भी उन्होंने नृत्य बन्द करने या उत्सवके किसी भी कार्यक्रममें कमी करनेकी आज्ञा नहीं दी। उन्होंने केवल इतना ही किया कि जो लोग इस युद्धमें मारे गये थे, उनके कुटुम्बियोंके पास चुपचाप खबर भेज दी। उत्सवका समारोह उसी तरह जारी रहा। दूसरे दिन सबेरा होते ही सब लोगोंमें यह खबर फैल गयी और कौन कौन मारे गये हैं यह भी सबको विदित हो गया। अब जिन जिन वीरोंने युद्धमें अपने प्राणोंकी आहुति दे दी थी, उनके पिता, सम्बन्धी तथा मित्रगण आनन्द मनाते हुए सभा-स्थलमें इकट्ठे होने लगे और अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक एक दूसरेका अभिवादन करने लगे। किन्तु जो लोग रणभूमिसे जीते लौट आये थे, उनके पिता तथा बन्धु-बान्धव अपने अपने घरपर स्त्रियोंके बीचमें छिप कर बैठे रहे। यदि

कार्यवश उन्हें बाहर निकलना पड़ता, तो वे बड़े उदास भावसे सिर नीचा किये ही चलते थे। इस सम्बन्धमें स्त्रियोंने पुरुषोंको भी मात कर दिया। जिनके पुत्रोंने युद्धमें प्राण दिये थे, वे खूब उत्सव मनाती थीं और बड़ी प्रसन्नताके साथ एक दूसरीके घर आती जाती थीं, किन्तु जिनके पुत्रपौत्रादि जीवित बच गये थे, वे बिल्कुल चुपचाप और चिन्तित थीं।

जब सर्वसाधारणने देखा कि हमारे मित्र लोग हमारा साथ छोड़ रहे हैं और विजयकी आशासे प्रेरित होकर ईपामिनानडस हम लोगोंपर शीघ्र ही आक्रमण करनेवाला है, तब एक तरहकी धार्मिक आशंका और निराशा उनके हृदयमें घर करने लगी। उन्हें ऐसा मालूम होने लगा, मानो हमने एक भलेचंगे आदमीको अपना राजा न मान कर जो उसी लँगड़े ऐजेसिलासको राजा बनाया जिसके सम्बन्धमें देवोंने विशेष रूपसे हमें चेतावनी दी थी, इसीसे हमारे ऊपर यह विपत्ति पड़ी। फिर भी, सब लोग ऐजेसिलासकी प्रसिद्धि और उसकी योग्यताके इतने कायल थे कि मनमें इस तरहकी शंका उठने पर भी उन्होंने इस विपत्तिके समय अपनेको चुपचाप उसके हाथ सौंप दिया। उन्होंने देखा कि हमारे सब रोगोंको दूर करने, हमारी सब उलझनोंको सुलझाने, की सामर्थ्य ऐजेसिलासमें ही है, अतः उन्होंने उसका समर्थन करना ही ठीक समझा। इस समय सबसे बड़ी कठिनाई उन भगोड़ोंके सम्बन्धमें थी जो युद्धभूमिसे प्राण बचा कर भाग आये थे। इनकी संख्या इतनी ज़्यादा थी और ये इतने शक्तिशाली भी थे कि इनको क़ानूनके अनुसार दण्ड देना आसान काम न था। इस अपराधके सम्बन्धमें क़ानून बहुत सख्त था। रणभूमिसे भाग आनेके कारण वे केवल सब प्रकारके सम्मानोंसे वञ्चित ही नहीं किये जाते थे, वरन् उनके साथ विवाह-सम्बन्ध करना भी बुरा समझा जाता था। रास्तेमें चलनेवाले प्रत्येक व्यक्तिको यह अधिकार था कि यदि वह चाहे तो भेंट होने पर इन भगोड़ोंको खूब पीटे। क़ानूनकी

दृष्टिसे वे इसका विरोध भी नहीं कर सकते थे। इसके सिवाय उन्हें बिना नहाये-धोये, और फटे-पुराने कपड़े पहन कर ही, बाहर निकलनेकी इजाज़त थी। वे अपनी आधी दाढ़ी ही बनवा सकते थे, आधी उन्हें वैसी ही रखनी पड़ती थी। इस कठोर क़ानूनके अनुसार अपराधियोंका अनुशासन करना, जिनकी संख्या बहुत ज़्यादा थी और जिनमें अनेक सम्मानित व्यक्ति भी थे, ख़तरेसे ख़ाली नहीं था, ख़ास कर ऐसे समय जब कि राज्यको अधिकसे अधिक सैनिकोंकी आवश्यकता थी। यही ख़्याल कर सर्वसाधारणने ऐजेसिलासको उस समयके लिए एक तरहसे नया व्यवस्थापक मान लिया। ऐजेसिलासने क़ानूनमें कोई भी परिवर्त्तन नहीं किया। उसने जनताके सामने उपस्थित होकर यह घोषणा की कि आज भरके लिए यह क़ानून स्थगित रहे, पर कलसे उसके अनुसार ज़ोरोंसे काररवाई की जाय। इस विलक्षण उपाय द्वारा उसने क़ानूनको विनष्ट होनेसे बचा लिया और नागरिकोंकी बदनामी भी न होने दी। नवयुवकोंके चेहरों परसे उदासी और असमर्थताका भाव दूर करनेके ख़्यालसे उसने आरकेडियापर आक्रमण कर दिया। बड़ी सतर्कताके साथ प्रत्यक्ष युद्धका अवसर बचाते हुए, उसने वहाँके भूभागका विध्वंस कर दिया और मैनटिनियन लोगोंके एक छोटेसे नगरपर अधिकार भी कर लिया। इस प्रकार नवयुवकोंके गिरते हुए दिलोंमें उसने पुनः उत्साहका सञ्चार कर दिया और उन्हें यह प्रकट दिखला दिया कि उनके लिए प्रत्येक युद्धमें हारते ही जाना अनिवार्य नहीं है।

अब ईपामिनानडसने चालीस हजार सैनिकोंके साथ लैकोनियापर आक्रमण कर दिया। लूटका माल हथियानेके इरादेसे और भी बहुतसे आदमी छोटे मोटे हथियार लेकर उसके साथ हो गये थे। इस प्रकार कोई सत्तर हजार आदमी आक्रमणमें शामिल थे। छः सौ वर्ष पहले डोरियन लोगोंने लैकोनियापर अधिकार कर लिया था, किन्तु उसके बादसे आजतक फिर किसीकी हिम्मत उसपर आक्रमण करनेकी नहीं हुई

कार्यवश उन्हें बाहर निकलना पड़ता, तो वे बड़े उदास भावसे सिर नीचा किये ही चलते थे। इस सम्बन्धमें स्त्रियोंने पुरुषोंको भी मात कर दिया। जिनके पुत्रोंने युद्धमें प्राण दिये थे, वे खूब उत्सव मनाती थीं और बड़ी प्रसन्नताके साथ एक दूसरीके घर आती जाती थीं, किन्तु जिनके पुत्रपौत्रादि जीवित बच गये थे, वे बिल्कुल चुपचाप और चिन्तित थीं।

जब सर्वसाधारणने देखा कि हमारे मित्र लोग हमारा साथ छोड़ रहे हैं और विजयकी आशासे प्रेरित होकर ईपामिनानडस हम लोगोंपर शीघ्र ही आक्रमण करनेवाला है, तब एक तरहकी धार्मिक आशंका और निराशा उनके हृदयमें घर करने लगी। उन्हें ऐसा मालूम होने लगा, मानो हमने एक भले-चंगे आदमीको अपना राजा न मान कर जो उसी लँगड़े ऐजेसिलासको राजा बनाया जिसके सम्बन्धमें देवीने विशेष रूपसे हमें चेतावनी दी थी, इसीसे हमारे ऊपर यह विपत्ति पड़ी। फिर भी, सब लोग ऐजेसिलासकी प्रसिद्धि और उसकी योग्यताके इतने कायल थे कि मनमें इस तरहकी शंका उठने पर भी उन्होंने इस विपत्तिके समय अपनेको चुपचाप उसके हाथ सौंप दिया। उन्होंने देखा कि हमारे सब रोगोंको दूर करने, हमारी सब उलझनोंको सुलझाने, की सामर्थ्य ऐजेसिलासमें ही है, अतः उन्होंने उसका समर्थन करना ही ठीक समझा। इस समय सबसे बड़ी कठिनाई उन भगोड़ोंके सम्बन्धमें थी जो युद्ध-भूमिसे प्राण बचा कर भाग आये थे। इनकी संख्या इतनी ज्यादा थी और ये इतने शक्तिशाली भी थे कि इनको कानूनके अनुसार दण्ड देना आसान काम न था। इस अपराधके सम्बन्धमें कानून बहुत सख्त था। रणभूमिसे भाग आनेके कारण ये केवल सब प्रकारके सम्मानोंसे वञ्चित ही नहीं किये जाते थे, वरन् उनके साथ विवाह-सम्बन्ध करना भी बुरा समझा जाता था। रास्तेमें चलनेवाले प्रत्येक व्यक्तिको यह अधिकार था कि यदि वह चाहे तो भेंट होने पर इन भगोड़ोंको खूब पीटे। कानूनकी

इसिसे वे इसका विरोध भी नहीं कर सकते थे। इसके सिवाय उन्हें बिना नहाये-धोये, और फटे-पुराने कपड़े पहन कर ही, बाहर निकलनेकी इजाज़त थी। वे अपनी आधी दाढ़ी ही बनवा सकते थे, आधी उन्हें वैसी ही रखनी पड़ती थी। इस कठोर क़ानूनके अनुसार अपराधियोंका अनुशासन करना, जिनकी संख्या बहुत ज़्यादा थी और जिनमें अनेक सम्मानित व्यक्ति भी थे, ख़तरेसे ख़ाली नहीं था, ख़ास कर ऐसे समय जब कि राज्यको अधिकसे अधिक सैनिकोंकी आवश्यकता थी। यही ख्याल कर सर्वसाधारणने ऐजेसिलासको उस समयके लिए एक तरहसे नया व्यवस्थापक मान लिया। ऐजेसिलासने क़ानूनमें कोई भी परिवर्तन नहीं किया। उसने जनताके सामने उपस्थित होकर यह घोषणा की कि आज भरके लिए यह क़ानून स्थगित रहे, पर कलसे उसके अनुसार ज़ोरोंसे काररवाई की जाय। इस विलक्षण उपाय द्वारा उसने क़ानूनको विनष्ट होनेसे बचा लिया और नागरिकोंकी बदनामी भी न होने दी। नवयुवकोंके चेहरों परसे उदासी और असमर्थताका भाव दूर करनेके ख्यालसे उसने आरकेडियापर आक्रमण कर दिया। बड़ी सतर्कताके साथ प्रत्यक्ष युद्धका अवसर बचाते हुए, उसने वहाँके भूभागका विध्वंस कर दिया और मैनटिनियन लोगोंके एक छोटेसे नगरपर अधिकार भी कर लिया। इस प्रकार नवयुवकोंके गिरते हुए दिलोंमें उसने पुनः उत्साहका सञ्चार कर दिया और उन्हें यह प्रकट दिखला दिया कि उनके लिए प्रत्येक युद्धमें हारते ही जाना अनिवार्य नहीं है।

अब ईपामिनानडसने चालीस हजार सैनिकोंके साथ लैकोनियापर आक्रमण कर दिया। लूटका माल हथियानेके इरादेसे और भी बहुतसे आदमी छोटे मोटे हथियार लेकर उसके साथ हो गये थे। इस प्रकार कोई सत्तर हजार आदमी आक्रमणमें शामिल थे। छः सौ वर्ष पहले डोरियन लोगोंने लैकोनियापर अधिकार कर लिया था, किन्तु उसके बादसे आजतक फिर किसीकी हिम्मत उसपर आक्रमण करनेकी नहीं हुई

थी। आज एकाएक शत्रुके इतने आदमी वहाँ घुस गये और उन्होंने विना किसी विरोधके यूरोटस नदीतक, वल्कि स्पार्टाके विल्कुल पासतक उस पवित्र भूमिको जला डाला या लूट लिया जिसका किसी शत्रुने अभीतक स्पर्श भी नहीं किया था। ऐजेसिलॉस नहीं चाहता था कि मेरे आदमी इस युद्धरूपी तूफानका सामना कर तवाह हों, इसीसे उसने शत्रुका प्रतिरोध नहीं किया। उसने केवल इतना ही किया कि नगरके मुख्य मुख्य भागोंकी रक्षाका प्रबन्ध कर दिया और सुभीतेकी जगहोंमें रक्षकोंकी नियुक्ति कर दी। वह चुपचाप शत्रुके तानें सुनता रहा। थीवन लोग उसकी भर्त्सना करते थे और चिल्ला चिल्ला कर कहते थे कि तुमने ही युद्धकी यह आग प्रज्वलित की है एवं अपने देशवासियोंपर यह विपत्ति बुलायी है; अब तुममें हिम्मत हो तो आओ, अपने देशकी रक्षा करो। इतना ही नहीं। वह स्वयं अपने नगरवालोंके भी शोरगुलसे परेशान था। नगरकी यह हालत देख कर एक ओर तो बुढ़े-सयाने लोग चिल्ला रहे थे और दूसरी ओर खेतोंमें शत्रुके अस्त्र-शस्त्रोंकी झंकार तथा गोला-गोलियोंकी आवाज़ सुन कर स्त्रियोंने भी सिरपर आसमान उठा रखा था। उसे स्वयं अपने विगत वैभवका ख्याल कर बड़ी ग्लानि हो रही थी। जब वह सिंहासनासीन हुआ था तब स्पार्टा उन्नतिके शिखरपर चढ़ा हुआ था और उसकी शक्ति भी बढ़ी हुई थी, किन्तु आज उसके जीते जी स्पार्टाकी यह दुर्दशा हो रही थी।

जब शत्रुने नगरपर आक्रमण करनेके उद्देश्यसे यूरोटस नदी पार करनेका इरादा किया, तब ऐजेसिलॉस अन्य सब स्थानोंको छोड़ कर अपने आदमियों सहित एक ऊँची और सुरक्षित जगहमें चला गया। किन्तु उस समय वर्फ अधिक गिरनेके कारण नदीमें भयङ्कर बाढ़ आगयी थी। उसकी गहराई और ठण्डे पानीके कारण थीवन लोगोंकी हिम्मत पार जानेकी नहीं हुई। केवल ईपामिनानडस कुछ पैदल सिपाहियोंके साथ आगे बढ़ा। जब ऐजेसिलासका ध्यान उसकी ओर आकृष्ट किया गया,

तब उसके मुँहसे केवल इतने ही शब्द निकले "वाहरे साहसी वीर!" ईपामिनानडसने नगरमें प्रवेश कर बहुत चाहा कि किसी तरह ऐजेसिलास बाहर निकल कर युद्ध करे, पर उसका प्रयत्न व्यर्थ हुआ और उसे देशको वीरान करते हुए वापस लौट जाना पड़ा।

इसी समय लगभग दो सौ नागरिकोंने, जो बहुत दिनोंसे असन्तुष्ट थे, नगरके उस सुदृढ़ स्थानपर अधिकार कर लिया जिसमें डायना देवीका मन्दिर था और उसे सुरक्षित रखनेका प्रयत्न करने लगे। स्पार्टन लोगोंने चाहा कि इनपर आक्रमण कर दें और इन्हें वहाँसे भगा दें, पर ऐजेसिलॉसने यह सोच कर उन्हें रोक दिया कि न जानें विद्रोहकी आग कहाँतक फैल चुकी हो। वह मामूली कपड़े पहने हुए, केवल एक अनुचर साथमें लेकर, बाहर निकला और विद्रोहियोंके पास जाकर उसने पुकार कर कहा "भाइयो, मालूम होता है कि तुमने मेरा मतलब समझनेमें कुछ ग़लती की है। मैंने तुम सबको यहाँ एकत्र होनेको नहीं कहा था। तुममेंसे कुछको उधर और कुछको इधर खड़े होना चाहिये था।" ऐसा कहते समय उसने उक्त दोनों स्थानोंकी तरफ हाथ उठा कर संकेत भी किया। षड्यंत्रकारियोंने ख्याल किया कि हो न हो अभी ऐजेसिलॉसको हमारे कुचक्रकी खबर नहीं लगी है, इससे वे बड़े प्रसन्न हुए और चुपचाप उन स्थानोंको चले गये जिनके लिए ऐजेसिलासने इशारा किया था। तब ऐजेसिलासने उनके कमरेमें पहरा बैठा दिया और पन्द्रह षड्यंत्रकारियोंको गिरफ्तार भी कर लिया। रातमें इन्हें फाँसी दे दी गयी। किन्तु इसके बाद एक और भीषण षड्यन्त्रका पता लगा। स्पार्टाके कुछ नागरिक क्रान्तिका उद्देश्य सामने रख कर यों ही एक दूसरेके मकानपर मिल कर अपनी योजनाके सम्बन्धमें विचार किया करते थे। ये इतने शक्तिशाली थे कि क़ानूनके अनुसार इन्हें खुले आम सजा देना मुश्किल था और इनकी उपेक्षा करना भी ख़तरनाक था। ऐजेसिलासने एफ़रोंसे सलाह ली और बिना किसी क़ानूनी काररवाईके इन लोगोंको भी चुप-

चाप मरवा डाला। आजतक किसी भी स्पार्टनके साथ, जो जन्मसे ही स्पार्टाका निवासी रहा हो, ऐसा सलूक कभी नहीं किया गया था।

इसी बीचमें कुछ गुलाम और देहाती लोग, जो सेनामें थे, भाग कर शत्रुसे जा मिले थे। इससे नगरमें बड़ी हलचल मच गयी थी। ऐजेसिलासने अपने कुछ अफ्सरोंसे हुक्म दिया कि रोज़ बड़े तड़के सैनिकोंके क्वार्टरों (घरों) की तलाशी लिया करो और यदि उस समय कोई सैनिक अनुपस्थित हो, तो उसके अस्त्र-शस्त्र जब्त कर लिया करो। ऐसा करनेका आदेश उसने इसलिए दिया, जिसमें यह पता न चलने पावे कि कितने आदमी शत्रुसे जा मिले हैं।

थीवन लोग स्पार्टा छोड़ कर क्यों चले गये, इस सम्बन्धमें इतिहासकारोंमें मतभेद है। कुछ लोगोंका कहना है कि जाड़ेकी ऋतु आ जानेके कारण उन्हें चले जाना पड़ा। कुछ यह भी कहते हैं कि वे लोग तीन महीने तक ठहरे रहे और जब सारा देश उजाड़ हो गया, तब वे गये। केवल थिओपाम्पस ही एक ऐसा लेखक है जो कहता है कि जब बीओशियन सेनापति स्वयं ही लौट जानेकी फिक्रमें थे, तब एक स्पार्टन दूत उनके पास गया और उसने उनसे ऐजेसिलासका यह संदेशा कहा—यदि आप लोग यहाँसे चले जाना स्वीकार करें तो ऐजेसिलासकी ओरसे आपको दस टेलेण्ट भेंट किये जायँगे। जो हो, इतना तो सबने स्वीकार किया है कि ऐजेसिलासकी ही बुद्धिमानीके कारण स्पार्टा पूर्णतया विनष्ट होनेसे बच गया। किन्तु अपनी सारी बुद्धि और साहसका प्रयोग करके भी वह स्पार्टाकी प्राचीन कीर्त्ति न लौटा सका और न उसे पुनः गौरवके शिखरपर चढ़ा सका। हम प्रायः देखा करते हैं कि जो लोग चिरकाल तक परहेज़से रहते हैं और नियमित भोजन करते हैं, वे एक मामूली गड़बड़ी भी बरदाश्त नहीं कर सकते, ज़रा सा कुपथ्य भी उनके लिए घातक हो जाता है। उसी तरह केवल एक ही आघातसे स्पार्टाकी सारी उन्नतिपर पानी फिर गया। इसपर हमें कोई आश्चर्य नहीं करना चाहिये। लाइकरगसने

स्पार्टाके लिए जिस व्यवस्थाका निर्माण किया था, वह शान्ति, एकता और नागरिकोंके सात्विक जीवनके उपयुक्त थी। स्पार्टन लोगोंका पतन तभी हुआ जब उन्होंने विदेशों पर आधिपत्य स्थापित करना और अनियंत्रित भावसे राज्य करना शुरू कर दिया। एक सुव्यवस्थित और सुखी राज्यके लिए ऐसा करना अवाञ्छनीय है, अस्तु।

ऐजेसिलास अब बुड्ढा हो गया था, अतः उसने युद्धादिमें भाग लेना छोड़ दिया, किन्तु उसके पुत्र आर्किडेमसने, सिसलीके डायोनीसियसकी सहायता पाकर, एक युद्धमें आर्केडियन लोगोंको बड़ी भारी शिकस्त दी। इस युद्धमें शत्रुपक्षके अनेक योद्धाओंके प्राण गये, पर स्पार्टावालोंके पक्षका एक भी व्यक्ति नहीं मरा। स्पार्टन लोगोंमें जो नैतिक कमज़ोरी आ गयी थी, वह इस विजयसे स्पष्ट हो गयी। पहले उन लोगोंमें युद्ध-विजय एक मामूली बात समझी जाती थी। बड़ीसे बड़ी सफलता मिलने पर वे देवताओंके नामपर केवल एक मुर्गेका बलिदान किया करते थे। सैनिक-गण अपने पराक्रमकी डींग नहीं मारा करते थे और न वहाँके नागरिक ही विजयके समाचार पाकर अत्यधिक प्रसन्नता प्रकट करते थे। मैनटिनियाकी महद्विजयका संवाद लेकर जो दूत आया था, उसे केवल एक मांसका टुकड़ा ही इनाममें दिया गया था। किन्तु इसके विपरीत अब आर्केडियन लोगोंपर विजय पानेकी यह खबर सुन कर वे लोग फूले अंग न समाये। इसके उपलक्ष्यमें एक जुलूस निकाला गया जिसके आगे आगे स्वयं ऐजे-सिलास था। उसकी आँखोंमें उस खुशीका ख्याल कर आँसू उमड़ आ रहे थे जो उसे अपने विजयी पुत्रसे मिलने तथा उसका आलिंगन करनेसे प्राप्त होनेवाली थी। इस जुलूसमें सब न्यायाधीश तथा अन्य बड़े बड़े कर्मचारी भी शामिल थे। स्त्रियाँ और बूढ़े-सयाने लोग भी यूरोटस नदीके किनारेतक विजयी वीरोंका स्वागत करनेके लिए गये। वे आशीर्वाद और हाथ उठा उठा कर देवताओंको धन्यवाद देने लगे और कहने लगे कि आज स्पार्टाके मुखसे उस कलंक और अपमानका धब्बा धुल गया जो

थीबन लोगोंके आक्रमणके कारण लग गया था, अब फिर वह अपना मस्तक ऊँचा कर सकेगा। कहते हैं, इसके पहले अपनी दुर्दशा देख कर स्पार्टन लोग इतने लज्जित हो गये थे कि अपनी स्त्रियों तकके मुखकी ओर देखनेकी उनकी हिम्मत नहीं होती थी।

जब ईपामिनानडसने मेसीनीको पुनः स्वतंत्र कर दिया और अन्यत्र गये हुए वहाँके प्राचीन नागरिकोंको फिर वहाँ जा बसनेके लिए आमंत्रित किया, तब स्पार्टन लोग मन मसोस कर यह सब देखते रहे, क्योंकि उनमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वे थीबन लोगोंका मुकाबला करते। ऐजेसिलास स्पार्टन लोगोंकी दृष्टिमें बहुत गिर गया था, क्योंकि यह प्रान्त जो स्पार्टाके ही बराबर था और समस्त ग्रीसमें कदाचित् सबसे अधिक उपजाऊ था, उसीके शासनकालमें स्पार्टाके आधिपत्यसे निकल गया। इस कारण जब थीबन लोगोंने उससे सन्धिका प्रस्ताव किया, तब उसने उसे अस्वीकार कर दिया। तात्पर्य यह कि यद्यपि उक्त प्रान्त उसके अधिकारसे निकल गया था, पर अब वह चुपचाप उसकी हानि सहनेको तैयार न था। किन्तु आत्मसम्मानकी रक्षाके इस प्रयत्नके कारण वह एक और विपत्तिमें फँस गया। कुछ ही दिनोंके बाद ईपामिनानडसने एक ऐसी चाल चली कि स्पार्टा भी ऐजेसिलासके हाथसे निकल जाता, पर सयोगसे बच गया। जब मैनटिनियन लोगोंने थीबनोंके खिलाफ विद्रोह कर पुन स्पार्टाके साथ मिलना चाहा, तब ऐजेसिलास एक बड़ी सेना लेकर उनकी सहायताके लिए गया। जब इसकी खबर ईपामिनानडसको लगी, तब रातको उसने चुपचाप अपने पड़ावसे कूच कर दिया और ऐजेसिलासकी सेनाके बगलसे होते हुए स्पार्टाके समीप जा पहुँचा। उस समय ऐजेसिलास वहाँ नहीं था और उसकी अधिकांश सेना भी बाहर थी। ऐसी अवस्थामें स्पार्टापर कब्जा कर लेना उसके लिए ज़रा भी कठिन न था, किन्तु सौभाग्यसे ईपामिनानडसके रवाना होनेके थोड़ी देर बाद ऐजेसिलासको इसकी खबर लग गयी। उसने तुरन्त इसकी सूचना देनेके लिए एक तेज सवार ऐसींडीमनको भेज

दिया और यह भी कहला दिया कि मैं शीघ्र ही यहाँ आ रहा हूँ। उसके पहुँचनेके बाद ही थीबनोंने यूरोटस नदी पार की। उन्होंने नगरपर आक्रमण किया। ऐजेसिलासने, वृद्ध होते हुए भी, बड़ी हिम्मतके साथ उनका सामना किया। पहले वह प्रायः बड़े सतर्क भावसे और चालाकीसे लड़ा करता था, किन्तु इस बार वह बिलकुल बेपरवाहीसे एवं अपनी सारी शक्ति लगा कर लड़ा। परिणाम यह हुआ कि उसने ईपामिनानडसके चंगुलसे नगरको छीन लिया और उसे लौट जानेके लिए लाचार कर दिया। जय-स्तम्भ खड़ा करते समय उसने लैसीडीमोनियन लोगोंकी बड़ी प्रशंसा की और उनकी स्त्रियों तथा बच्चोंके सामने यह भी कहा कि स्वदेशके प्रति लैसीडीमोनियन लोगोंका जो कर्त्तव्य था उसका उन्होंने भली भाँति पालन किया है। उसने अपने पुत्र आर्कीडेमसकी विशेष प्रशंसा की, क्योंकि इस युद्धमें उसने अतुलनीय साहस और स्फूर्त्ति प्रदर्शित कर अपनेको धन्य बना लिया था; बड़ेसे बड़े ख़तरेकी जगहमें वह निर्भय होकर पहुँच जाता था और बहुत कम साथियोंको लेकर ही स्थान स्थान पर शत्रुसे नगरकी रक्षा करनेमें जुट जाता था।

यहाँपर एक और वीरका उल्लेख कर देना चाहिये जिसकी प्रशंसा शत्रु तथा मित्र, दोनोंने समान रूपसे की थी। यह फोबीडसका पुत्र ईसाडस था। इसका शरीर बड़ा सुडौल तथा सुन्दर था और रेख अभी भीन ही रही थी। वह स्नान करके खड़ा ही हुआ था कि संकट-सूचक ध्वनि उसके कानमें पड़ी। इस समय न तो उसके हाथमें कोई हथियार था और न वह ठीक से कोई कपड़े ही पहन पाया था। आवाज़ सुनते ही वह इसी अवस्थामें दौड़ पड़ा। दूसरोंसे छीन कर उसने एक हाथमे बरछी तथा दूसरेमें तलवार ले ली और भीड़को चीरता हुआ शत्रुके बीचमें जा पहुँचा। रास्तेमें जो कोई उसके सामने आया, उसे उसने वहीं ढेर कर दिया। उसे स्वयं कोई चोट नहीं लगी, मानो उसकी वीरतासे मुग्ध होकर किसी दिव्य शक्तिने ही इस विकट परिस्थितिमें

उसकी रक्षा की हो। यह भी हो सकता है कि उसकी अलौकिक रूप-प्रभा और विलक्षण वेश देख कर लोगोंने उसे मामूली मनुष्य न समझा हो। जो हो, यह अपूर्व पराक्रम देख कर एफर लोगोंने उसका बड़ा सम्मान किया और उसे माला पहनायी, किन्तु ऐसा करनेके बाद तुरन्त ही उसपर एक हजार ड्रैकमाका जुर्माना भी ठोक दिया क्योंकि वह उपयुक्त हथियार लिये बिना ही इस तरह युद्ध भूमिमें चला गया था।

कुछ दिनोंके बाद मैनटिनियाके पास फिर एक युद्ध हुआ, जिसमें ईपामिनानडसने लैसीडीमोनियन सेनाके अग्र भागको परास्त कर दिया। वह लैसीडीमोनियन सैनिकोंका पीछा करना चाहता था, किन्तु लैकोनिया निवासी एण्टीक्रीटीजने अपनी तलवारसे उसे घायल कर दिया। इस घटनाके कारण स्पार्टन लोग एण्टीक्रीटीजके वंशजोंको आजतक 'खड्गधारी' कहा करते हैं। जबतक ईपामिनानडस जीता रहा, तबतक वे लोग उससे इतना डरते थे कि जिसने उसे मारा था उसकी भूरि भूरि प्रशंसा उन्होंने की और बार बार उसका आलिंगन किया। उसे विविध सम्मान और पुरस्कार दिये गये और उसके वंशज हमेशाके लिये कर देनेसे मुक्त कर दिये गये।

ईपामिनानडसके मारे जानेके बाद फिर चारों ओर शान्ति स्थापित हो गयी। ग्रीसके राज्योंमें इस समय परस्पर जो सन्धि हुई, उसमें ऐजेसिलासके पक्षवालोंने मेसीनियन लोगोंको यह कह कर शामिल नहीं होने दिया कि इनका कोई राज्य नहीं है। किन्तु जब अन्य राज्योंने उनसे सन्धि कर ली, तब लैसीडीमोनियन लोग सबसे अलग हो गये और मेसीनियनोंको वशमें कर लेनेकी आशासे उन्होंने अकेले ही युद्ध शुरू कर दिया। इस नीतिके कारण ऐजेसिलास बड़ा हठी और लड़ाका समझा जाने लगा, क्योंकि उसने व्यापक शान्तिकी स्थापनामें इस तरह विघ्न डालनेका प्रयत्न किया और ऐसी अवस्थामें भी युद्ध जारी रखा जब कि पासमें काफी रुपया न होनेके कारण उसे मित्रोंसे ऋण

लेना पड़ा तथा चन्दा इकट्ठा करनेके लिए निन्दा होना पड़ा और जब कि सारा नगर शान्ति एवं विश्रामके लिए उत्सुक हो उठा था। मज़ा यह कि सारा बखेड़ा केवल एक छोटेसे नगर मेसीनीको कब्जेमें रखनेके लिए था, यद्यपि इस समयतक स्पार्टाका वह कुल साम्राज्य ही नष्ट हो चुका था जो उसके राज्यारोहणके समय विद्यमान था।

जब उसने मिस्रके एक सरदार टैकोसका सेनापति बनना स्वीकार कर लिया, तब उसकी ख्याति और भी कम हो गयी। उस समय वह समस्त ग्रीसमें सर्वोत्तम सेनापति समझा जाता था, अत उसकी जैसी स्थितिके आदमीके लिए वेतन लेकर एक असभ्य जातिके सरदारकी अधीनतामें सेनाके सञ्चालनका कार्य ग्रहण कर लेना अनुचित समझा गया। इस क्षुद्र कार्यकी बात जाने दीजिए। लोगोंका तो यहाँ तक कहना था कि यदि इस अवस्थामें, जब वह अस्सी वर्षसे अधिकका हो गया था और जब उसका शरीर जरा-जीर्ण तथा आघातोंके कारण बिलकुल शक्तिहीन हो गया था, तब यदि उसने समस्त ग्रीसको फारसके चंगुलसे छुड़ानेका वह पवित्र कार्य भी अंगीकार किया होता जो उसके जीवनकी प्रिय आकांक्षा थी, तो उसका यह कार्य भी भर्त्सनीय ही समझा जाता। कैसा ही काम क्यों न हो, वह उचित एवं सम्मानित तभी कहा जा सकता है, जब वह करनेवालेकी अवस्था एवं अन्य परिस्थितिके अनुरूप हो। किन्तु ऐजेसिलॉस दूसरे लोगोंकी बातोंको महत्त्व नहीं देता था। वह छोटेसे छोटे सार्वजनिक कार्यको भी सम्मान विरुद्ध नहीं समझता था। उसका ख्याल था कि निठल्ला और निरुपयोगी बन कर मौतका इन्तजार करते हुए घर बैठे रहना मनुष्यके लिए सबसे बुरी बात है। इसी कारण टैचोससे उसे जो धन मिला, उससे उसने कई आदमियोंको किरायेपर नौकर रखा और एक बेड़ा तैयार किया। तीस स्पार्टन सलाहकारोंको साथ लेकर वह मिस्रके लिए रवाना हो गया।

जब वह मिस्र पहुँचा, तब वहाँके सब बड़े बड़े अफसर उसका

स्वागत करनेके लिए आये। लोगोंने उसकी इतनी ख्याति सुनी थी कि उसे देखनेके लिए काफी बड़ी भीड़ लग गयी, किन्तु जब अपनी कल्पनाके अनुरूप एक बड़े भारी प्रतापी राजाके बदले उन्होंने बिलकुल मामूली सी सूरत-शकलवाले छोटेसे बुड्ढेको बिना किसी पर्दापेशके घासपर लेटे हुए देखा और जब उसके फटेसे मोटे कपड़ोंपर उनकी नज़र पड़ी, तब वे अपनी हँसी न रोक सके और व्यंगपूर्वक कहने लगे कि 'पहाड़ खोदने पर चुहिया निकली' वाली पुरानी कहावत आज चरितार्थ हुई! उसके अशिष्ट व्यवहारसे उन्हें और भी अधिक आश्चर्य हुआ। जब वे लोग उसे खानेकी अच्छी अच्छी चीज़ें भेंट करने लगे, तब उसने केवल आटा, बछड़े तथा हंस ले लिये और मिठाइयाँ तथा इत्र लौटा दिये। जब उन्होंने उससे इन वस्तुओंको भी स्वीकार करनेका अनुरोध किया, तब उसने उन्हें लेकर सेनाके साथ आये हुए क्रीत दासोंको दे दिया। फिर भी, जैसा कि थिओफ्रेटसने लिखा है, उसे उन लोगोंकी पैपाइरस (भोजपत्र) की बनी हुई मालाएँ बहुत पसन्द आयीं, इसीसे जब वह स्वदेशको लौटने लगा तब वहाँके राजासे एक माला माँग कर अपने साथ लेते गया।

ऐजेसिलॉसको आशा थी कि टैकोस मुझे प्रधान सेनापति बना देगा पर उक्त पद टैकोसने स्वयं ग्रहण किया। इससे वह बड़ा निराश हुआ। टैकोसने ऐजेसिलासको किरायेपर रखे गये सैनिकोंका ही सेनापति बनाया और कैब्रियस नामक अर्थीनियनको जहाजी बेड़ेका अधिपति नियुक्त किया। ऐजेसिलासके असन्तोषका यह प्रथम कारण था। इसके बाद और भी कई घटनाएँ हुई जिनसे उसकी अप्रसन्नता बढ़ती गयी। उसे प्रायः नित्य ही मिस्र देशके इस राजाकी धृष्टताका सामना करना पड़ता था, यहाँ तक कि एक बार उसे फोनीशियामें ऐसे ढंगसे उसका हुक्म बजाना पड़ा जो उसके पद और उसकी प्रतिष्ठाके प्रतिकूल था। उस समय तो उसने चुपचाप यह मानहानि सह ली, किन्तु अपना बदला निकालनेका उपयुक्त अवसर वह बराबर ढूँढ़ता रहा। ऐसा सुयोग उसे शीघ्र ही मिल गया।

नेक्टेनाविस नामका टैकोसका एक चचेरा भाई था जो एक बड़ी भारी सेनाका अधिपति था। वह टैकोसका पक्ष छोड़ कर स्वयं राजा बन बैठा। उसने ऐजेसिलास तथा शैब्रियस दोनोंके पास खबर भेजी कि यदि आप लोग मेरे पक्षमें आकर मिल जायँ तो मैं आपको एक बड़ी रकम भेंटमें दूँगा। इस बातकी शङ्का होते ही टैकोसने तुरन्त दोनोंके पास जाकर बड़े विनम्र भावसे प्रार्थना की कि इस संकटके समय आप मेरे साथ पहले जैसा ही मैत्री-सम्बन्ध बनाये रखें तो मैं बड़ा एहसान मानूँगा। शैब्रियसने तो उसकी प्रार्थना मान ली, किन्तु ऐजेसिलासने कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया। शैब्रियसके समझाने पर उसने कहा कि "शैब्रियस, तुम तो स्वेच्छासे यहाँ आये थे, अतः तुम जिसका पक्ष ग्रहण करना उचित समझो, उसका पक्ष ग्रहण कर सकते हो; किन्तु मैं तो स्पार्टाका आज्ञानुवर्ती हूँ। मुझे मिस्रवालोंका नेतृत्व करनेका काम सौंपा गया था। मैं उनके मित्रकी हैसियतसे यहाँ भेजा गया था, अतः जबतक स्पार्टाका आदेश मुझे नहीं मिलता, तबतक मैं उनके विरुद्ध लड़ाई नहीं कर सकता।" यह कह कर उसने स्पार्टाको अपने दूत भेजे। इनके द्वारा उसने स्पार्टावालोंके पास ऐसी चिट्ठियाँ भेजीं जो टैकोसके प्रतिकूल तथा नेक्टेनाविसके अनुकूल थीं। टैकोस तथा नेक्टेनाविसने भी अपने अपने दूत स्पार्टाको भेजे। पहलेने प्रार्थना की कि जो सन्धि पहले की गयी थी वह आगे भी क़ायम रहे, पर दूसरेने इस बातपर ज़ोर दिया कि पहली सन्धि रद्द कर दी जाय और उसकी जगह नयी सन्धि की जाय। दोनों पक्षोंकी बातें सुन कर स्पार्टन लोगोंने उनके दूतोंसे कह दिया कि हम इसका उचित उत्तर ऐजेसिलासके पास भेज रहे हैं। उन्होंने खानगी तौरसे ऐजेसिलासको लिख दिया कि जिस बातके करनेमें राष्ट्रका अधिकतम लाभ तुम्हें देख पड़े, वही तुम कर सकते हो। यह आदेश मिलते ही वह किराये पर नियुक्त अपने कुल सैनिकोंके साथ नेक्टेनाविसकी ओर जा मिला। यद्यपि इस कार्यके समर्थनमें उसने अपने

देशके हितकी दुहाई दी, फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि उसका यह कृत्य विश्वासघात ही समझा जायगा।

जब ऐजेसिलास तथा उसके सैनिक शत्रु-पक्षमें जा मिले, तब टैकोसने विजयकी आशा छोड़ दी और देश छोड़ कर भाग गया। इसके बाद एक और व्यक्तिने अपनेको मेण्डीशियन प्रान्तका राजा तथा टैकोसका उत्तराधिकारी घोषित किया। वह एक लाख सैनिक लेकर नेक्टेनाबिसके ऊपर चढ़ आया। ऐजेसिलाससे बातें करते समय नेक्टेनाबिसने कहा कि ये सब रँगरूट हैं। इनकी संख्या चाहे कितनी ही ज़्यादा क्यों न हो, इन्हें परास्त करना कठिन नहीं, क्योंकि ये युद्धविद्यामें अनभिज्ञ हैं। इसपर ऐजेसिलासने जवाब दिया "ठीक है, मुझे भी उनकी बड़ी संख्या देख कर भय नहीं मालूम होता, किन्तु उनके अज्ञानसे अवश्य मैं कुछ कुछ सशकसा हो रहा हूँ, क्योंकि उसके कारण उनके साथ सैनिक चातुरीका प्रयोग नहीं किया जा सकता। सैनिक चातुरीसे तो तभी काम निकल सकता है, जब शत्रुके मनमें तरह तरहकी शङ्काएँ उठनेकी सम्भावना हो और वह विपक्षकी ओरसे होनेवाले आक्रमणकी कल्पना कर आत्मरक्षाके उपाय करते समय अपनेको ऐसी अवस्थामें डाले जिसमें उसे धोखा दिया जा सके। किन्तु जिसके मनमें किसी तरहकी शङ्का या सहसा आक्रमण होनेकी प्रतीक्षाका भाव ही न हो, उसे सैनिक छल द्वारा फाँसना वैसा ही कठिन होता है जैसा कुश्ती लड़ते समय दाँव पेंच लगा कर ऐसे आदमीको पछाड़ना जो एक बड़ी चट्टानकी तरह अचल भावसे अपनी जगहपर ही खड़ा रहता हो।"

नये राजाने भी ऐजेसिलासको अपनी तरफ मिला लेनेकी चेष्टा की, यहाँ तक कि नेक्टेनाबिसके मनमें भी उसके प्रति सन्देह उत्पन्न हो गया। ऐजेसिलासने उसे सलाह दी कि शत्रुपर तुरन्त आक्रमण कर दिया जाय, क्योंकि यदि उसे मौका मिल गया तो वह हम लोगोंको सब तरफसे घेर लेगा और सम्भव है, चारों ओर खाइयाँ खुदवा कर हम लोगोंके लिए

बाहर निकल सकनेका रास्ता भी न छोड़े; ऐसी अवस्थामें युद्ध शुरू करनेमें विलम्ब करना बुद्धिमानी नहीं है। ऐजेसिलासके ये शब्द सुन कर नेक्टेनाबिसका सन्देह और भी बढ़ गया। उसने ऐजेसिलासका कहना नहीं माना। वह सेना सहित परकोटोंसे सुरक्षित एक बड़े नगरमें जाकर ठहर गया। अपने प्रति उसका यह अविश्वास देख कर ऐजेसिलासको बड़ा बुरा मालूम हुआ। वह क्रोधसे लाल हो गया, किन्तु अब दुबारा एक पक्षको छोड़ कर दूसरे पक्षसे जा मिलनेमें उसे शरम मालूम हुई और वह बिना युद्ध किये स्पार्टा लौट जाना भी ठीक नहीं समझता था। निदान उसे भी नेक्टेनाबिसके पास उसी नगरमें आश्रय ग्रहण करनेके लिए विवश होना पड़ा।

जब दुश्मन आ पहुँचा और नगरके चारों ओर सैनिकोंका घेरा डालने तथा खाइयाँ खोदनेका प्रबन्ध किया जाने लगा, तब इस अवरोधके भयसे नेक्टेनाबिसने युद्ध शुरू करनेका निश्चय कर लिया। ग्रीक लोग भी यही चाहते थे, क्योंकि उनकी खाद्य-सामग्री खतम हो रही थी। जब ऐजेसिलासने इस निश्चयका विरोध किया, तब मिस्र देशवालोंने उसे और भी अधिक सन्देहकी दृष्टिसे देखा। वे उसे खुल्लमखुल्ला राजाके साथ विश्वासघात करनेवाला कहने लगे। किन्तु ऐजेसिलासने अपने हृदयको विचलित नहीं होने दिया। वह बड़े धैर्यके साथ लोगोंके लान्छन भरे शब्द सुनता रहा और शत्रुको छकानेके अपने मनसूबेपर अटल रहा।

शत्रु एक गहरी खाई और ऊँची दीवार तैयार करा रहा था। वह चाहता था कि विपक्षीकी सेना नगरके बाहर न निकल सके और वहीं बन्द रह कर भूखों मरने लगे। जब खाई चारों तरफ क़रीब क़रीब तैयार हो गयी, केवल बीचमें थोड़ीसी जगह खोदनेको बाकी रह गयी, तब ऐजेसिलासने रात्रिके अन्धकारसे लाभ उठानेका निश्चय कर लिया। उसने तुरन्त अपने ग्रीक सैनिकोंको तैयार होनेकी आज्ञा दी। तब वह नेक्टेनाबिसके पास गया और उसे इस प्रकार समझाने लगा—"मित्र,

यदि तुम अपनी रक्षा करना चाहते हो, तो अब वह सुअवसर उपस्थित है। मैंने अभीतक इसकी चर्चा नहीं की थी, क्योंकि मुझे भय था कि यदि बात किसी तरह प्रकट हो गयी, तो मामला बिगड़ जायगा। किन्तु अब तो शत्रुने स्वयं ही, अपना रुपया और अपना श्रम लगाकर, हमारी रक्षाके लिए मार्ग तैयार कर दिया है। चारों तरफ जो खाई खोद दी गयी है और जितनी दीवार खड़ी कर दी गयी है, उसके कारण शत्रु अब चारों ओरसे हमपर आक्रमण नहीं कर सकता। जितना हिस्सा बाकी रह गया है, उतना हमारे निकलनेके लिए काफी है। यदि इस समय तुम जरा साहससे काम लो और ग्रीक लोग तुम्हारे सामने जिस मार्गका अवलम्बन ग्रहण करें, उसीका अनुगमन तुम भी करो तो इसमें सन्देह नहीं कि तुम अपनी तथा अपनी सेनाकी रक्षा करनेमें अवश्य सफल होओगे। शत्रु सेनाका अगला हिस्सा हमारे आक्रमणके सामने नहीं ठहर सकेगा और उसका पिछला भाग हमपर आक्रमण ही नहीं कर सकता क्योंकि शत्रुने स्वय ही दीवार खड़ी कर यह सम्भावना दूर कर दी है।"

यह सुनकर नेक्टेनाबिस अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने इस विलक्षण सूझके कारण ऐजेसिलासकी बड़ी प्रशंसा की और ग्रीक सेनाके साथ मिल कर शत्रुपर आक्रमण कर दिया। इस संयुक्त सेनाने पहले ही धावेके बाद शत्रुको परास्त कर दिया। पुन राजाका विश्वासभाजन बन कर ऐजे-सिलासने फिर उसी युक्तिसे काम लेनेका प्रयत्न किया। कभी तो वह पीछे हटनेका बहाना करता और कभी शत्रुपर जोरोंसे धावा बोलनेकी चेष्टा करता हुआ सा देख पड़ता था। ऐसा करते करते वह शत्रुको हटा कर एक ऐसी जगहपर ले आया जो पानीसे भरी हुई दो गहरी खाइयोंके बीचमें पड़ती थी। शत्रुके यहाँ पहुँचते ही उसने शीघ्रतापूर्वक अपनी सेनाकी इस तरह मोर्चेबन्दी की कि उसका अगला भाग शत्रुके सामने ठीक एक खाईसे दूसरी खाईतक खड़ा कर दिया गया। इस प्रकार दोनों

तरफ खाइयोंसे घिर जानेके कारण शत्रुके सैनिकोंके लिए ऐजेसिलासकी सेनापर इधर उधरसे छापा मारनेकी गुञ्जाइश नहीं रह गयी। वे बहुत देर तक ऐजेसिलासका सामना नहीं कर सके। बहुतसे तो मारे गये, कुछ भाग गये और बाकी सब तितर बितर कर दिये गये।

जब नेक्टेनाबिस निर्विघ्नरूपसे राजसिंहासनपर बैठ गया, तब उसने ऐजेसिलाससे बड़े स्नेह और सौजन्यके साथ आग्रह किया कि आप यह शीतकाल मिस्रमें ही व्यतीत कीजिए; किन्तु वह शीघ्र ही स्वदेशको लौट जाना चाहता था, क्योंकि वहाँ युद्ध छिड़ गया था और स्पार्टाको इस समय सैनिकोंकी बड़ी आवश्यकता थी। राजाने अत्यन्त सम्मानपूर्वक उसे बिदा किया। जाते समय अनेक उपहारोंके सिवा उसने युद्धके लिए २३० चाँदीके टेलैण्ट भी उसे दिये। मौसिम अच्छा न होनेके कारण उसे स्थलके किनारे किनारे चलना पड़ा। जब वह आफ्रिकाके उत्तरी तटकी एक मरुभूमिके पाससे जा रहा था, तब जहाज किनारे लगनेके पहले ही ८४ वर्षकी अवस्थामें उसका देहान्त हो गया। उसने लैसीडीमनमें ४१ वर्ष राज्य किया था। इसमेंसे तीस वर्ष तक तो वह समूचे ग्रीसमें सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली राजा माना जाता रहा। ल्यूक्ट्राकी लड़ाईके पहलेतक सारा ग्रीस उसे अपना अद्वितीय सेनापति समझता था। स्पार्टाकी यह प्रथा थी कि मामूली आदमियोंके शव तो उसी स्थानपर गाड़ दिये जाते थे जहाँ उनका प्राणान्त हुआ हो, चाहे वह किसी भी देशमें क्यों न हो; किन्तु राजाकी मृत्यु बाहर होने पर वे उसे अपने देशमें ही ले जाकर दफनाते थे। शहद न मिल सकनेके कारण ऐजेसिलासके अनुयायियोंने उसके शवको मोमसे ढँक दिया और तब वे उसे लैसीडीमन ले गये। उसके बाद उसका पुत्र आर्कीडेमस राजसिंहासनपर बैठा।

६—पॉम्पी

पाम्पीके पिता स्त्राबोको रोमनिवासी बड़ी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। उसके जीवन-कालमें, उसके यौद्धिक गुणोंके कारण, वे उसका भय अवश्य मानते थे, पर बिजली गिरनेसे उसकी मृत्यु हो जानेपर उन्होंने उसके शवको अर्थीसे खींच कर अपमानित किया। इसके प्रतिकूल वे ही रोम निवासी पॉम्पीको अल्पावस्थासे ही चाहते थे।

पिताके प्रति घृणाका मुख्य कारण उसकी असीम धन तृष्णा थी। पुत्रके प्रति उनके प्रेमके कई कारण थे—यथा सादी रहन सहन, यौद्धिक अभ्यासोंमें उसकी प्रवृत्ति, वक्तृत्व-कला, और उदारता आदि। युवावस्थामें उसकी आकृति बड़ी आकर्षक थी, कथनके पूर्व ही मानो उसका भाव लक्षित हो जाता था और दर्शकको तुरन्त प्रभावित कर देता था। शान्ति एवं कोमलता तो उससे झलकती ही थी पर वह उच्च पदस्थताके भावसे भी खाली नहीं थी। उसके बाल कुछ कुछ घुँघराले तथा औरों चमकीले और चञ्चल थीं। इनके कारण वह सिकन्दर महान्से बहुत कुछ मिलता था। कुछ लोग गम्भीरतापूर्वक उसके लिए इस नामका प्रयोग भी करते थे, और वह स्वयं इससे इनकार नहीं करता था, पर कुछ लोग तो उसकी हँसी उड़ानेके लिए ही यह नाम प्रयुक्त करते थे।

पॉम्पीके डेमिट्रियस नामक एक दास था जो मुक्त कर दिया गया था। यह चार हजार टैलेंटकी सम्पत्ति छोड़ कर मरा। इसकी स्त्री बड़ी सुन्दरी थी। पॉम्पी कुछ रूखेपनके साथ उससे बात किया करता था, जिसमें यह न मालूम हो कि उसपर उसके सौन्दर्यका प्रभाव पड़ा है। इस विषयमें इतना सतर्क रहने पर भी उसके शत्रु उसपर विवाहित स्त्रीके साथ अनुचित सम्बन्ध रखनेका लाञ्छन लगानेसे बाज न आये। उन्होंने

यहाँ तक कह मारा कि अपनी प्रेमिकाओंको सन्तुष्ट करनेके पीछे वह सार्वजनिक कार्योंकी ज़रा भी परवा नहीं करता।

उसकी खान-पानकी सादगीके सम्बन्धमें एक महत्त्वपूर्ण उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि एक बार वह एक बड़े रोगसे ग्रस्त हुआ। भूख घट जाने पर वैद्यने उसे 'थ्रश' नामक एक विशेष पक्षीका मांस खानेकी राय दी। नौकरोंने बहुत खोज की पर वह कहीं मोल नहीं मिल सका क्योंकि इसका मौसिम बीत गया था। खोज करनेपर मालूम हुआ कि लुकुलस नामक व्यक्ति अपने चिड़ियाखानेमें इसे बराबर रखता है। जब पॉम्पीको इस बातकी सूचना मिली तो उसने कहा 'क्या पॉम्पीका जीवन लुकुलसकी शौकीनीपर अवलम्बित है?' इसके अनन्तर, वैद्यकी बातकी परवा न कर उसने कोई सुलभ चीज मँगा कर खा ली।

जिस समय उसका पिता सिन्नाके साथ युद्ध छेड़े हुए था, उस समय वह अल्पवयस्क ही था और अपने पिताकी अधीनतामें ही काम कर रहा था। वहाँ ल्यूशियस टरेण्शियस नामक उसका एक मित्र था जो उसीके खेमेमें सोया करता था। इसने सिन्नासे रुपये लेकर रातको जब कि सेनापतिके खेमेमें और लोग आग लगाते, तब इसकी हत्या करनेका भार स्वीकार किया। रात्रिको भोजन करते समय पॉम्पीको इसकी खबर लगी पर वह इससे ज़रा भी विचलित न हुआ। उसने इच्छा भर मद्य पान किया और अपने मित्रकी अन्य दिनोंसे भी ज़्यादा खातिरदारी की। पर जब दोनोंके सोनेका समय आया तो वह चुपकेसे खेमेके बाहर निकल गया। उसने जाकर अपने पिताके पास रक्षक बैठा दिया और तब इस घटनाकी प्रतीक्षा करने लगा। जब टरेण्शियसने यह समझा कि पॉम्पी अब सो गया होगा, तो उसने तलवार निकाल कर बिस्तरेपर, यह जानकर कि पॉम्पी इसीके अन्दर सोया हुआ है, कई आघात किये।

इसके बाद शीघ्र ही पड़ावमें विद्रोह मच गया। सेनापतिको घृणाकी दृष्टिसे देखनेवाले सैनिक शत्रुपक्षसे जा मिलनेको तैयार थे। वे डेरोंका

परित्याग कर अपने अस्त्र-शस्त्र लेने लगे। शोरगुलके भयसे सेनापतिको तो सामने आनेका साहस नहीं हुआ, पर पॉम्पी सर्वत्र देख पड़ता था। उसने रो रोकर सैनिकोंसे प्रार्थना की कि आप लोग अपना पक्ष छोड़ कर न जाइये। अन्तमें वह द्वारपर लेट गया। उसने गिड़गिड़ा कर सबसे कहा कि यदि आप लोग जाना ही चाहते हैं तो मेरे बदनपर पैर रखकर जाइये। इसपर आगे बढ़नेमें उन्हें इतनी शर्म मालूम हुई कि आठ सौ सैनिकोंको छोड़ सबके सब लौट आये और उन्होंने अपने सेनापतिसे समझौता कर लिया।

मृत्युके पश्चात् स्त्रायोपर यह दोषारोप किया गया कि उसने सार्वजनिक धन अपने व्यक्तिगत कामोंमें खर्च किया था। उत्तराधिकारीकी हैसियतसे पॉम्पीको इस आरोपका उत्तर देना पड़ा। इस अभियोगमें पॉम्पीने अपने प्रतिपक्षीका बड़ी दृढ़ता और खूबीके साथ मुकाबला किया। उसकी कार्यकुशलताका ऐण्टिस्टियसपर, जो इस अभियोगका विचार कर रहा था, इतना प्रभाव पड़ा कि उसके हृदयमें पॉम्पीके प्रति स्नेह उत्पन्न होगया। उसने अपनी कन्याके साथ उसका विवाह करनेका विचार कर उसके मित्रोंसे यह बात कहलायी। पॉम्पीने इसे स्वीकार कर लिया और गुप्त रूपसे बात भी पक्की हो गयी। पर लोग इस बातको ऐण्टिस्टियसके परिश्रमसे, जो वह पॉम्पीके निमित्त कर रहा था, ताड़ गये। जब ऐण्टिस्टियसने पॉम्पीको निर्दोष होनेका फैसला सुनाया तो सभी लोग, एक साथ ही, मानो उन्हें कोई संकेत दिया गया हो, वैवाहिक शब्द "टलेसियो" का उच्चारण करने लगे (देखिये पृष्ठ ३८)।

पॉम्पीने कुछ ही कालके अनन्तर ऐण्टिस्टियाका पाणिग्रहण किया। फिर वह सिन्नाके पड़ावमें चला गया। जब उसे मालूम हुआ कि मेरे ऊपर कुछ अन्याय्य आक्षेप किये जा रहे हैं, तब वह भयभीत होने लगा और मौक़ा मिलते ही वहाँसे चुपचाप निकल भागा। उसका कहीं पता न मिलनेसे सेनामें यह अफ़वाह फैली कि हो न हो सिन्नाने इस नवयु-

यकी हत्या कर डाली है। इसपर बहुतेरे लोगोंने, जो उससे घृणा करते थे और उसकी निष्ठुरता बर्दाश्त करनेके लिए अब तैयार न थे, उसके डेरेपर हमला कर दिया। सिन्ना अपनी जान लेकर भागा, पर एक मामूली अफसर द्वारा पकड़े जाने पर, जो नङ्गी तलवार लिये हुए उसका पीछा कर रहा था, उसने सामने घुटने टेक कर अपनी कीमती अँगूठी भेंट करनेका वचन देकर प्राणोंकी भिक्षा माँगी। उस अफसरने कठोरताके साथ यह उत्तर देते हुए कि मैं समझौतेपर हस्ताक्षर करने न आकर एक अधर्मी और अन्याचारीको दण्ड देने आया हूँ, उसका काम तमाम कर दिया।

सिन्नाका इस प्रकार अन्त होने पर शासन-सूत्र कार्बोके हाथमें आया जो उससे भी बढ़कर उद्धत और स्वेच्छाचारी था। कुछ ही दिन व्यतीत होने पर सिल्ला लौट कर इटली आ गया। इससे अधिकांश रोमन बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि वर्तमान दुःखद परिस्थितिमें शासकका परिवर्तन भी उनके लिए मामूली लाभ न था। आपत्तियोंने उन्हें इस हदतक पहुँचा दिया था कि वे अब स्वाधीनताकी आशा बिलकुल छोड़ कर ऐसी गुलामीके लिए ही प्रयत्नशील थे जिसमें किसी तरह साँस तो ले सकें।

इस समय पॉम्पी पिसीनम चला गया था। इसके दो कारण थे— एक तो वहां उसकी कुछ ज़मीन थी और दूसरे वहाँके कुछ नगरोंके साथ उसके वंशका पुराना सम्बन्ध चला आ रहा था। उसने कितने ही प्रमुख नागरिकोंको सिल्लाके शिविरका आश्रय लेते हुए देखकर स्वयं भी वहाँ जाना चाहा, पर उसी समय उसके मनमें यह बात आयी कि मेरे लिए इस प्रकार जाना, जैसे कोई भागा हुआ आदमी शरणके लिए जा रहा हो, कभी उचित नहीं। मुझे सेनाके साथ सम्मानपूर्ण ढङ्गसे जाना चाहिए। उसने पिसीनममें यथाशक्ति सैन्य-संग्रह करनेका प्रयत्न किया। लोग कार्बोकी बातोंपर ध्यान न देकर पॉम्पीके झण्डेके नीचे एकत्र होने लगे।

इसी अवसरपर ब्रिण्टियस नामक एक व्यक्तिने ताना मारते हुए कहा "पाम्पी तो अपने अध्यापकसे अभी छुट्टी पाकर ही आ रहा है और तुम लोगोंने उसे नेता बना दिया।" इस उक्तिसे वे इतने क्रुद्ध हुए कि उन्होंने आक्रमण कर उसे टुकड़े टुकड़े कर डाला।

इस प्रकार २३ वर्षकी ही अवस्थामें, किसी ऊँचे पदाधिकारीसे अधिकार प्राप्त किये बिना ही उसने नायकका पद ग्रहण कर लिया। उसने आक्सिमस नगरके एक सार्वजनिक स्थानमें न्यायालय कायम कर वेण्टिडियस बन्धुओंको, जो कार्बोका पक्ष लेकर उसका विरोध कर रहे थे, नगर छोड़ देनेकी आज्ञा दी। उसने सैनिक भरती कर प्रचलित नियमानुसार न्यायकर्ता, टुकड़ियोंके नायक तथा अन्यान्य पदाधिकारी नियुक्त किये और आसपासके नगरोंमें भी यही किया क्योंकि कार्बोके दलवाले स्थान खाली कर भाग गये थे। लोग प्रसन्नतापूर्वक पॉम्पीके पक्षमें आने लगे। इस प्रकार कुछ ही कालके अन्दर उसके पास एक बड़ी सेना तथा पर्याप्त रण-सामग्री प्रस्तुत हो गयी।

अब वह सिलाकी तरफ बढ़ा। शत्रुको तङ्ग करनेके लिए वह बीच बीचमें ठहरता जाता था और इटलीके उन भागोंको, जिनसे होकर गुजरता था, अपने अधिकारमें करता जाता था। एकाएक तीन सेनानायक उसके विरुद्ध शत्रुकी ओरसे आ गये। ये लोग न तो सामनेसे आये और न एक साथ मिलकर ही बल्कि उसकी सेनाको नष्ट करनेके विचारसे अलग अलग बगलकी ओरसे आये। डरनेकी बात तो दूर रही, वह अपने सैनिकोंको एकत्र कर शत्रुओंका मुकाबला करने लगा। उनके अश्वदलने पहला हमला सहन कर लिया, तब पॉम्पीने अगले अश्वारोहीपर आक्रमण कर भालेकी मारसे उसे गिरा दिया। यह देख कर कुछ और लोगोंने भी पीठ दिखायी जिससे सारी अश्वसेनामें गड़बड़ी मच गयी और अन्ततः वह तितर बितर हो गयी। इस बातको लेकर सेनापति आपसमें ही लड़ गये और पृथक् हो भिन्न भिन्न मार्गोंसे चले गये। फल यह हुआ कि

नगरोंने यह समझ कर कि ये शत्रुसे भयभीत होकर पृथक् पृथक् हो गये हैं, पॉम्पीका पक्ष ग्रहण कर लिया।

कुछ ही काल पश्चात् प्रधान शासक सिपियो मुकाबलेके लिए पहुँच गया। अभी दोनों सेनाओंमें मुठभेड़ शुरू भी नहीं हुई थी कि सिपियोके सैनिक पॉम्पीके सैनिकोंका अभिवादन कर उसकी ओर चले आये, अतः सिपियोको लाचार होकर भागना पड़ा। अन्ततः कार्बोने पॉम्पीके विरुद्ध एक बहुत बड़ी अश्वसेना आर्सिस नदीके पास भेजी। युद्धमें इस सेनाके भी पैर उखड़ गये। यह भाग कर एक ऐसे स्थानपर आगयी कि अन्तमें उसके लिए लाचार होकर आत्मसमर्पण करनेके सिवाय और कोई उपाय नहीं रह गया।

अबतक सिलाको इस सम्बन्धमें कोई सूचना नहीं मिली थी। जब उसे पॉम्पीके विरुद्ध इतने शत्रुओं और ऐसे नामी सेनानायकोंके यात्रा करनेकी खबर मिली तो वह परिणामका खयाल कर भयभीत हो गया। उसने शीघ्र ही अपनी सेना लेकर पॉम्पीकी सहायताके लिए प्रस्थान कर दिया। उसके आगमनका समाचार पाकर पॉम्पीने सैनिकोंको इस प्रकार खड़ा करनेका आदेश दिया जिसमें प्रधान सेनापतिको देखनेमें वे शानदार मालूम हों। पॉम्पीको अपनी सुसज्जित और विजयोल्लाससे पूर्ण सेनाके साथ आते हुए देखकर सिला वाहनसे उतर गया और शासक (इम्परेटर) कह कर अभिवादन किये जाने पर उसने भी पॉम्पीके लिए उसी उपाधिका प्रयोग कर अभिवादनका उत्तर दिया। किसीको ऐसी आशा न थी कि सिला एक तरुण व्यक्तिका इस प्रकार सम्मान करेगा। इसके बाद भी वह इसी प्रकार सम्मान-प्रदर्शन करता रहा। जब पॉम्पी उससे मिलने जाता तो वह खड़ा हो जाता था और अपना शिरोवस्त्र भी उतार लेता था। उसके निकट बहुतसे प्रमुख व्यक्ति रहते थे पर किसीके लिए वह ऐसा नहीं करता था।

इन सम्मानोंसे पॉम्पीको ज़रा भी गर्व नहीं हुआ। इसके प्रतिकूल

जब सिलाने उसे गॉल भेजना चाहा, जहाँ मेटेल्समे एक बड़ी सेना साथ होने पर भी कुछ करते न बनता था, तो उसने कहा कि 'ऐसे व्यक्तिसे, जो अवस्था और योग्यतामें मुझसे बड़ा हुआ है, शासनाधिकार लेना मेरे लिए उचित न होगा; हाँ, यदि मेटेल्स युद्ध-संचालनके कार्यमें मेरी सहायता चाहें तो मैं सेवाके लिए तैयार हूँ।' मेटेल्सने इस प्रस्तावको स्वीकार कर उसे बुला लिया। पॉम्पीने गॉलमें प्रवेश करने पर केवल अपनी ही योग्यता और पराक्रमका भलीभाँति परिचय नहीं दिया बल्कि मेटेलसमें भी एक बार साहसिक कार्योंके लिए जोश उत्पन्न कर दिया जो बुढ़ापेके कारण बिल्कुल ठंढा पड़ गया था।

इटलीपर अधिकार हो जाने और अधिनायक घोषित किए जाने पर सिलाने प्रमुख पदाधिकारियोंको उनकी इच्छानुसार धन और सम्मानसे पुरस्कृत किया। पर पॉम्पीके कार्योंसे वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसके साथ सम्बन्ध स्थापित करनेका निश्चय कर लिया। उसकी स्त्री मेटिला भी उसके विचारोंसे पूर्णतः सहमत थी, इसलिए इन दोनोंने पॉम्पीसे ऐण्टिस्टियाको तलाक़ देकर ईमिलियाके साथ विवाह करनेका अनुरोध किया जो एक अन्य पतिद्वारा मेटिलासे ही उत्पन्न हुई थी और जो इस समय एक दूसरे विवाह-सम्बन्धसे गर्भवती भी थी।

यह सम्बन्ध बड़ा ही अनुचित था। यह सिलाके समयके तो अनुकूल था पर गर्भवती ईमीलियाका पाणिग्रहण पॉम्पीके योग्य कार्य न था, सो भी दुःखिनी ऐण्टिस्टियाका परित्याग कर जिसके पिताकी हत्या उसीके कारण हुई थी। विवाहके कुछ ही दिन बाद प्रसूतिगृहमें ही ईमीलियाका देहान्त हो गया।

इसके अनन्तर शीघ्र ही सिलाको यह सूचना मिली कि परपेंनाने सिसलीपर अधिकार कर लिया है। वहाँपर शासकोंके विरोधियोंका अड्डा कायम हो गया था। कार्बो अपने बेड़ेके साथ द्वीपका चक्कर लगा रहा था, डोमिशियस अफ्रिकामें प्रवेश कर गया था। पॉम्पी एक महती सेनाके

साथ उनके विरुद्ध भेजा गया। उसके सिसली पहुँचते ही परपेना वहाँसे भाग गया और नगरोंको पुनः अधिकारमें लाकर पॉम्पीने मैमरटाइन लोगोंके सिवा, जो मेसिनामें थे, सबके साथ मनुष्योचित बर्ताव किया। मैमरटाइन लोगोंने उसके न्यायालयमें आनेसे इनकार कर दिया था और वे उसके अधिकारको भी माननेके लिए तैयार नहीं थे। उनका कहना था कि रोमनोंने हमें प्राचीन कालसे विशेषाधिकार दे रखा है। इसपर पॉम्पीने उत्तर दिया "क्या तुम लोग हम लोगोंको अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित देखकर भी क़ानूनकी ही दुहाई देते जाओगे?" विपक्ष कार्बोके प्रति उसने मनुष्यत्वपूर्ण बर्ताव नहीं किया। यदि उसका वध करना ही आवश्यक था तो यह कार्य शीघ्र हो जाना चाहिए था, पर ऐसा न कर उसने तीन बार प्रधान शासकके पदपर अधिष्ठित एक रोमनको विचारककी हैसियतसे अपने सामने न्यायालयमें, हथकड़ी बेड़ीसे जकड़वा कर मँगाया और फिर वध करनेके लिए भेज दिया। दर्शक भी यह दृश्य देख कर विचलित हो गये। जब वधिक उसे वधस्थानको ले जाने लगे, तब वह (उनकी) नंगी तलवारोंको देख कर इतना घबरा गया कि उसे शौचके निमित्त एकान्त स्थान और कुछ देर ठहर जानेके लिए प्रार्थना करनी पड़ी।

केयस ओपियसके कथनानुसार उसने क्विण्टस वलेरियसके साथ भी अच्छा व्यवहार नहीं किया। यह सुनकर कि इसकी गणना सर्वश्रेष्ठ विद्वानोंमें है, उसने उसको अपने साथ ले लिया और कुछ दूर जाकर अपनी जिज्ञासा शान्त कर लेने पर, उसे वध-स्थानको ले जानेकी आज्ञा दे दी। किन्तु ओपियसने जो कुछ लिखा है उसपर हमें विश्वास नहीं करना चाहिये, विशेष कर उन बातोंपर जो उसने सीज़रके मित्रों या शत्रुओंके सम्बन्धमें लिखी है। इतना तो स्पष्ट है कि पॉम्पीके लिए सिलाके प्रधान शत्रुओंको, खास कर उनको जो सबके सामने पकड़े जाते थे, दण्ड देना आवश्यक था, पर औरोंके भागनेमें उसने बाधा नहीं डाली, बल्कि कुछको निकल जानेमें सहायता भी दी।

जब उसने शत्रुओंका समर्थन करनेके कारण हिमेरियन लोगोंको भी दंड देकर ठीक करनेका निश्चय किया तो स्थेनिस नामक व्यक्तिने कहा 'यदि आप अपराधियोंको कुछ न कर निर्दोष व्यक्तियोंको दण्ड देंगे तो यह सर्वथा अन्याय्य होगा।' जब पॉम्पीने उससे अपराधीका नाम पूछा तो उसने कहा कि असल अपराधी मैं हूँ, क्योंकि मैंने ही लोगोंको इस कार्यके लिए तैयार किया था। पॉम्पीने उसकी स्पष्ट स्वीकारोक्ति और हृदयकी उच्चतासे प्रसन्न होकर केवल उसको ही नहीं बल्कि सभी हिमेरियनोंको क्षमा कर दिया। जब उसे यह खबर मिली कि सैनिक लोग बहुत उत्पात मचाते हैं तो उसने सबकी तलवारोंपर मुहर लगा दी। जो सैनिक इसको तोड़ता था उसे दण्ड दिया जाता था।

वह सिसलीमें व्यवस्था स्थापित कर ही रहा था कि उसे सिनेटका आदेश और सिलाके पत्र मिले जिनमें उसे आफ्रिका जाकर डोमिशियस के साथ, जिसने एक महती सेना खड़ी कर ली थी, युद्ध करनेका आदेश दिया गया था। पॉम्पीने शीघ्र ही यात्राकी आवश्यक तैयारी कर ली। उसने सिसलीका शासन भार अपने बहनोईके सिपुर्द कर एक सौ बीस युद्ध पोतोंके अलावा आठ सौ मामूली पोतोंपर रसद और युद्ध-सामग्री लाद कर प्रस्थान किया। इनमेंसे कुछ पोत तो यूटिकाके तटपर लगे और कुछ कार्थेजके। किनारेपर उतरनेके साथ ही शत्रु पक्षके सात हजार सैनिक विद्रोह कर पॉम्पीसे आ मिले।

कार्थेज पहुँचने पर एक विचित्र बात हुई। कुछ सैनिकोंको एक जगह एक खजाना मिला जिसे उन्होंने आपसमें बाँट लिया। जब यह बात प्रकट हो गयी तो अन्य सैनिकोंने इससे यह अनुमान किया कि कार्थेजवालोंने किसी संकटके आ पड़ने पर अपना द्रव्य जमीनमें छिपा दिया होगा, इस लिए यह स्थान द्रव्यसे भरा हुआ है। पॉम्पी सात दिनोंतक सैनिकोंका कोई उपयोग नहीं कर सका, क्योंकि वे जहाँ तहाँ जमीन खोद कर द्रव्यकी खोजमें लगे हुए थे। वह सिर्फ इधर उधर टहल कर इन हजारों सैनिकोंके

जमीन खोदनेका दृश्य देखकर अपना मनोरंजन करता रहा। अन्तमें सैनिकोंने इस सनकको छोड़ कर यथा-स्थान ले चलनेकी प्रार्थना की क्योंकि अब उन्हें अपनी मूर्खताका काफी दण्ड मिल चुका था।

डोमिशियस मुकाबला करनेके विचारसे आगे बढ़ा और उसने अपने सैनिकोंको युद्धके लिए व्यूहबद्ध भी किया। बीचमें एक चट्टानपूर्ण जल-प्रणाली थी जिसे पार करना बहुत कठिन था। प्रातःकाल मूसलधार वर्षाके साथ हवा भी बड़ी तेजीसे बहने लगी। उस दिन युद्धकी कोई सम्भावना न देखकर डोमिशियसने सैनिकोंको छुट्टी दे दी। पॉम्पीने इसे अच्छा मौका समझ कर बड़ी फुर्तीसे जल-प्रणाली पार कर शत्रुओंपर आक्रमण कर दिया। वे लोग अपने बचावके लिए प्रस्तुत हो गये पर गड़बड़ी और शोरगुलके कारण तथा वर्षा और तूफानके मारे उनसे कुछ करते न बना। वर्षा और तूफानसे रोमनोंको भी बड़ी दिक्कत उठानी पड़ी, क्योंकि वे एक दूसरेको मुश्किलसे पहचान पाते थे। कुछ विलम्बसे उत्तर देनेके कारण स्वयं पॉम्पीकी जान जाते जाते बची। उसने शत्रुओंकी सेना तितर-बितर कर दी। शत्रुके बीस हजार सैनिकोंमें केवल तीन हजार जीते बचे। जब सैनिकोंने पॉम्पीको शासक (इम्परेटर) कह कर अभिवादन किया तो उसने उत्तरमें कहा "जबतक शत्रुका शिविर अक्षुण्ण रूपसे खड़ा हुआ है, तबतक मैं इस उपाधिको स्वीकार नहीं करता। यदि आप लोग मुझे यह उपाधि देना चाहते हैं तो पहले शत्रुकी मोर्चाबन्दीपर अधिकार कर लें।"

आवेशमें आकर सैनिकोंने धावा कर दिया। इस बार, पूर्व जैसी दुर्घटनाके भयसे पॉम्पी शिरस्त्राणके बिना ही लड़ा। शिविरपर अधिकार हो गया और डोमिशियस मार डाला गया। इसका फल यह हुआ कि अधिकांश नगरोंने शीघ्र ही आत्मसमर्पण कर दिया, शेष आक्रमण द्वारा अधिकारमें कर लिये गये। उसने डोमिशियसके एक सहायक राजाको कैद कर उसका राज्य हीम्पसालको दे दिया। इसके अन-

न्तर उसने नुमीडियाके प्रदेश पर बहुतोंका दमन किया। उसने बर्बरोंके हृदयमें रोमका वह आतङ्क, जिसकी वे उपेक्षा करने लगे थे, एक बार फिर पैदा किया। कुछ दिन वहाँ रह कर हाथियों और शेरोंका शिकार भी उसने किया। इस प्रकार आफ्रिकामें कुल चालीस दिनके भीतर ही वह शत्रुओंका पराभव और सारे देशपर अपना प्रभुत्व स्थापित करनेमें समर्थ हुआ। कहते हैं, उस समय उसकी उम्र केवल चौबीस वर्षकी ही थी। जब वह यूटिका पहुँचा तो उसे सिर्फ एक पल्टन अपने साथ रख कर उत्तराधिकारीकी प्रतीक्षा करने और शेष पल्टनें तोड़ देनेके लिए सिलाका आदेश मिला। इससे उसको बड़ा दुःख हुआ, यद्यपि उसने किसीपर अपना भाव प्रकट नहीं होने दिया। सैनिकगण तो क्रुद्ध होकर सिलाके लिए अपशब्दोंका भी प्रयोग करने लगे। वे पाम्पीको किसी प्रकार छोड़नेके लिए तैयार न थे। पहले उसने समझा बुझाकर उन्हें शान्त करना चाहा, पर कोई असर होते न देख वह न्यायासनसे उतर कर रोता हुआ अपने खेमेमें चला गया। सैनिकोंने उसे पुनः लाकर न्यायासनपर बैठाया। प्रायः दिनभर यही बात चलती रही, सैनिक उसे वहाँ रहकर शासन अपने हाथमें रखनेपर जोर दे रहे थे और वह सिलाकी आज्ञाका पालन करनेपर। अन्तमें उनको न मानते हुए देख कर उसने सौगन्ध खाकर कहा कि यदि आप लोग मेरे साथ जबर्दस्ती करेंगे तो मैं आत्महत्या कर लूँगा। सैनिकोंपर इस बातका भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

सिलाको पहले जब यह सूचना मिली कि पॉम्पीने विद्रोहका झण्डा उठाया है, तो उसने अपने मित्रोंसे कहा कि मेरे भाग्यमें वृद्धावस्थामें लड़कोंसे मुकाबला करना बदा है। ऐसा कहनेका कारण यह था कि अल्पवयस्क मैरियसने भी उसे बहुत तंग कर रखा था। जब उसको यथार्थ बातकी सूचना मिली और जब उसने देखा कि मेरी अगवानी करनेके लिए भीड़की भीड़ इकट्ठी हो गयी है तो वह पॉम्पीके प्रति अधिक

तर सम्मान दिखानेका निश्चय कर उससे मिलनेके लिए शीघ्रतासे आगे चला आया और बड़े प्रेमके साथ उसका आलिंगन कर महान् पॉम्पी कह कर उसका सम्बोधन किया। और लोगोंको भी पॉम्पीके लिए उसने यही उपाधि प्रयुक्त करनेका आदेश दिया। कुछ लोगोंका कहना है कि सारी सेनाने मिलकर उसे यह उपाधि आफ्रिकामें ही दी थी, जो अब सिला द्वारा भी स्वीकृत हो गयी। जो हो पॉम्पीने बहुत दिनोंतक इस उपाधिका प्रयोग नहीं किया।

रोम पहुँचनेपर पॉम्पीने विजयका जुलूस निकालनेकी अनुमति चाही पर सिलाने यह कह कर इसका विरोध किया कि "नियमानुसार केवल प्रधान शासक या उपशासक (प्रीटर) को ही यह सम्मान प्राप्त हो सकता है; इसीलिए प्रथम सिपियोने, जिसने स्पेनमें बड़े बड़े युद्धोंमें विजय प्राप्त की थी, इस प्रकारके जुलूसके लिए प्रार्थना नहीं की। यदि पॉम्पी, जो अपनी अल्पावस्थाके कारण सिनेटका सभ्य भी नहीं हो सकता, जुलूस के साथ नगरमें प्रवेश करे तो इससे मेरे शासनपर तथा उसके सम्मान पर कितना भारी धक्का न पहुँचेगा?" इस दलीलका यही अभिप्राय था कि वह जुलूसके लिए अनुमति देनेको तैयार न था और यदि पॉम्पी इसके लिए हठ करता तो वह उसे दबानेके लिए भी उद्यत था। किन्तु पॉम्पी कब माननेवाला था। उसने ज़रा भी भयभीत न होकर सिलासे कहा 'अस्तोन्मुख सूर्यकी अपेक्षा उदयोन्मुख सूर्यकी अधिक पूजा होती है।' सिलाने यह वाक्य साफ साफ नहीं सुना, लेकिन लोगोंकी मुखाकृतिमें इस कथनका प्रभावकारी होना समझ कर उसने इसे जाननेकी इच्छा प्रकट की। इन शब्दोंको सुनकर उसने पॉम्पीकी निर्भीकतापर आश्चर्य प्रकट करते हुए जुलूस निकालनेकी अनुमति देदी।

इस अवसरपर पॉम्पीने कुछ लोगोंको अपने प्रति ईर्ष्या और द्वेषसे जलते हुए देख कर उन्हें और भी जलानेके उद्देश्यसे अपने रथमें चार

हाथी जोतनेका विचार किया किन्तु द्वार काफी चौड़ा न होनेके कारण उसे घोड़े ही जोत कर सन्तोष करना पड़ा।

उसके सैनिक आशानुकूल प्राप्ति न होनेके कारण जुलूसमें बाधा डालनेका विचार कर रहे थे, पर पॉम्पीने उन्हें सन्तुष्ट करनेकी ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया और कहा कि उनकी खुशामद करनेकी अपेक्षा मैं जुलूस न निकालना ही अच्छा समझता हूँ। इसपर सर्विलियस नामक रोमका एक प्रमुख व्यक्ति, जिसने जुलूसका बहुत अधिक विरोध किया था, कह उठा 'अब मैं मानता हूँ कि पॉम्पी वस्तुतः महान् और जुलूसके योग्य है।'

यदि पॉम्पी चाहता तो बड़ी आसानीसे सिनेटका सभ्य हो सकता था, पर वह एक निराले ही ढगसे गौरव प्राप्त करना चाहता था। नियत अवस्थाके पूर्व सभ्य होनेमें कोई विशेषता न थी, पर सभ्य न होते हुए भी विजयका जुलूस निकालना एक असाधारण बात थी। इससे उसकी लोकप्रियता बहुत बढ़ गयी और जनता भी उसे 'वीरों' की श्रेणी में परिगणित देख कर बहुत प्रसन्न हुई।

अधिकार और प्रसिद्धिमें उसे इस प्रकार तेजीसे बढ़ते देख कर सिला बहुत चिन्तित हुआ, फिर भी वह इसमें बाधक नहीं होना चाहता था। पॉम्पीने सिलाकी इच्छाके प्रतिकूल लेपिडस नामक व्यक्तिको मदद देकर प्रधान शासक निर्वाचित करा दिया। निर्वाचन समाप्त होनेके बाद लोग जब पॉम्पीको साथ लेकर न्यायालय होते हुए घर ले जा रहे थे, तब सिलाने उससे,कहा 'ऐ नौजवान, मालूम होता है तुम्हें अपनी विजयका गर्व हो गया है। निःसन्देह यह एक बड़ी और असाधारण बात है कि तुमने जन साधारणका सहयोग कर लेपिडस जैसे गये गुजरे आदमीसे केटुलस जैसे योग्य और श्रेष्ठ व्यक्तिको पराजित करा दिया। देखो, अब सचेत हो जाओ। तुमने अपनेसे बलवान् लोगोंको अपना विरोधी बना लिया है।'

सिलाके हृदयमें पॉम्पीके प्रति जो अप्रसन्नताका भाव था वह उसके दानपत्रसे और भी स्पष्ट हो गया। उसने अपने मित्रोंको तो बहुत कुछ देकर उन्हें अपने पुत्रका अभिभावक बनाया पर पॉम्पीका कहीं नामोल्लेख तक नहीं किया। इतना होनेपर भी पॉम्पीने बड़ी सहिष्णुताका परिचय दिया। क्योंकि जब लेपिडस तथा अन्यान्य लोगोंने उसके शवको कैम्पस मार्टियस नामक मैदानमें गाड़ने और सार्वजनिक अन्त्येष्टिका सम्मान देनेका विरोध किया तो उसने बीच बिचाव कर औरोंसे सम्मान प्रदर्शन कराते हुए स्वयं उसका सम्मान किया।

सिलाकी भविष्यद्वाणी उसकी मृत्युके बाद शीघ्र ही सत्य प्रमाणित होने लगी। लेपिडस राष्ट्र-सूत्रधारके अधिकारोंको हड़पनेकी इच्छा करने लगा। इस सम्बन्धमें उसकी काररवाई परोक्ष या पर्देकी ओटमें न होकर प्रत्यक्ष रूपसे होने लगी। उसने शीघ्र ही शस्त्र धारण कर लिया और सिलाके उन विरोधियोंको एकत्र कर लिया, जिनका दमन वह अपने जीवनकालमें नहीं कर पाया था। सिनेटके वे सदस्य, जिनके आचार-विचार पवित्र थे, उसके सहकार्यकर्त्ता केटुलसके पक्षमें थे। यह व्यक्ति मुल्की शासनमें तो कुशल था, पर युद्ध सम्बन्धी कार्योंका सञ्चालन नहीं कर सकता था। इस परिस्थितिको सँभालनेके लिए पॉम्पी जैसे व्यक्तिकी आवश्यकता थी। कौनसा पक्ष ग्रहण करना चाहिए, इस सम्बन्धमें पाम्पीको अधिक सोच-विचार करनेकी ज़रूरत नहीं हुई। न्याय्यपक्षका ग्रहण करनेके अनन्तर वह लेपिडसके विरुद्ध सेनापति घोषित किया गया, जिसने अबतक इटलीके एक बड़े भागमें लड़ाई शुरू कर दी थी और आल्प्स पहाड़के इधरके गॉलका प्रान्त भी ब्रूटसके सेनापतित्वमें भेजी गयी सेनाके द्वारा अपने अधिकारमें कर लिया था।

पॉम्पीने और भागोंपर तो आसानीसे अधिकार कर लिया पर मुटिनाके पास, जिसकी रक्षा स्वयं ब्रूटस कर रहा था, उसे बहुत दिनोंतक पड़े रहना पड़ा। इस बीचमें लेपिडस शीघ्रतापूर्वक जा पहुँचा और

द्वितीय कौन्सल (प्रधान शासक) बननेकी चेष्टा करने लगा। उसकी महती सेना देख कर नागरिक तो बहुत डर गये थे, पर इसी समय पॉम्पी का एक पत्र आनेसे उनका भय जाता रहा। इस पत्र द्वारा उसने सूचित किया था कि बिना शस्त्र ग्रहण किये ही युद्धका अन्त हो गया, क्योंकि ब्रूटसने आत्मसमर्पण कर दिया है। पहले दिन तो पाम्पीने कुछ सवारोंके साथ उसको एक नगरमें भेज दिया था, पर दूसरे दिन उसके ऊपर कुछ दोषारोपण कर उसका वध करा दिया। इस वधके कारण पॉम्पीका चरित्र कलङ्कित होनेसे न बच सका। (वह ब्रूटस जिसने कैसियसके साथ मिल कर सीजरका वध किया था, इसी ब्रूटसका पुत्र था।) इटलीसे भगाये जाने पर लेपिडस सार्डीनिया चला गया। वहाँ एक पत्र द्वारा अपनी स्त्रीके सतीत्व भगकी खबर पाकर वह बीमार पड़ गया और अफसोसके मारे शीघ्र ही मर गया।

सरटोरियस नामक एक अफसर अभी बचा हुआ था, जो स्पेनपर अधिकार जमाये हुए था। कई साधारण सेनापतियोंको यह हरा चुका था और अब मेटेलसका मुकाबला कर रहा था। मेटेलस था तो योग्य पर बुढ़ापेके कारण ऐसे महत्वपूर्ण अवसरपर उसकी योग्यता विशेष लाभजनक नहीं हो सकती थी। कारण यह था कि वह तो साधारण तरीकेसे सेनाका सञ्चालन करता था पर सरटोरियस डाकुओंके सरदारकी तरह धोखेबाजीसे काम लेता रहा था।

इस समय एक सेना रोमके पास बेकार ही पड़ी हुई थी। पॉम्पी इसे अपने साथ लेकर मेटेलसकी सहायताके लिए जाना चाहता था। केटुलस ने यह सेना भग करनेकी आज्ञा दे दी थी पर बहाने बना कर उसने ऐसा नहीं किया। अन्तमें फिलियसके प्रस्तावपर उसे सेना लेकर जानेकी आज्ञा मिल गयी।

पॉम्पी जैसे प्रसिद्ध सेनापतिके आगमनसे स्पेनवालोंके विचारमें परिवर्तन होने लगा। सरटोरियसके साथ जिनका दृढ़ सम्बन्ध नहीं था,

थे पॉम्पीके पक्षमें आने लगे। इस अवसरपर सरटोरियसने बड़े बेहूदे और घृणित तरीक़ेसे पॉम्पीके सम्बन्धमें अपना विचार प्रकट करते हुए कहा 'यदि उस बुड्ढीका डर न होता तो इस लड़केको ठीक करनेके लिए सिर्फ एक बेतकी छड़ी काफी थी।' (बुड्ढीसे उसका अभिप्राय मेटेल्ससे था।) पर वस्तुतः वह पॉम्पीसे ही डरता था, इस कारण बहुत सोच-समझ कर चलने लगा। मेटेल्स अब बहुत आरामतलब हो गया था, उसमें सैनिककी सादगी नहीं रह गयी थी। इसके प्रतिकूल पॉम्पीकी रहन-सहन बिल्कुल सादी थी।

सरटोरियसने पॉम्पीके देखते देखते लारोनपर अधिकार कर लिया, इससे उसके हृदयको बहुत चोट लगी। उसने समझा था कि मैंने शत्रुका मार्ग चारों ओरसे बन्द कर दिया है पर पीछे उसे मालूम हुआ कि शत्रुने ही मुझे चारों ओरसे घेर लिया है। भयके कारण इधर उधर न हटकर वह नगरको जल कर खाक होते हुए देखता रहा। फिर भी वैलेनशियाके पास-के युद्धमें उसने हिरेनियस और परपेना जैसे प्रसिद्ध नायकोंको, जो सर-टोरियसके प्रधान सहायक हो रहे थे, परास्त कर उनके दस हजार सैनिकोंका वध किया।

इस विजयसे प्रोत्साहित होकर उसने सीधे सरटोरियसपर ही आक्रमण करनेके लिए फौरन प्रस्थान कर दिया, जिसमें विजयका श्रेय मेटल्सको न मिल कर केवल उसीको मिले। सूक्रो नदीके पास दोनों सेनाएँ परस्पर मिलीं। संध्या होते होते युद्ध आरंभ हुआ। मेटल्सके आगमनकी आशंकासे दोनों ही भयभीत थे—पाम्पी अकेला युद्ध करना चाहता था और सरटोरियस भी केवल एक ही सेनापतिका मुकाबला करने-को तैयार था। विजय अनिश्चित रही, क्योंकि दोनों सेनाओंकी एक एक पंक्तिने विजय प्राप्त की। पर यदि दोनों सेनापतियोंके सम्बन्धमें विचार किया जाय तो इसमें सरटोरियस ही बढ़कर ठहरता है, क्योंकि उसने सामना करनेवाले सैनिकोंको बहादुरीके साथ मुकाबला कर तितर बितर

कर दिया पर पॉम्पीने भाग कर अपनी जान बचायी। बात यह हुई कि शत्रुदलका एक बृहत्काय अश्वारोही पॉम्पीसे भिड़ गया। द्वन्द्वयुद्ध करते समय दोनोंकी तलवारें एक दूसरेके हाथपर पड़ीं। पॉम्पीको मामूली घाव लगा पर उस सैनिकका हाथ कट कर अलग हो गया। इस पर और सैनिक पॉम्पीपर टूट पड़े, क्योंकि उस भागकी सेनाके पैर उखड़ चुके थे। पॉम्पीको घोड़ेसे कूद कर भागना पड़ा। पॉम्पीके घोड़ेपरकी बहुमूल्य चीजें शत्रुओंके हाथ लगीं जिन्हें बाँटनेके सम्बन्धमें वे आपसमें ही लड़ने लगे और पॉम्पीको भागनेका मौका मिल गया।

दोनों दल विजयी होनेका दावा कर रहे थे। प्रातःकाल होने पर दोनों सेनाएँ पुनः युद्धके लिए प्रस्तुत हुईं। उसी समय मेटेलसको आते देख सरटोरियस भाग खड़ा हुआ और उसकी सेना भी तितर बितर हो गयी। उसकी सेनाके लिए यह कोई नयी बात नहीं थी, क्योंकि इस प्रकार तितर बितर होनेके बाद सैनिक पुनः एकत्र हो जाते थे। कभी सरटोरियस अकेला भ्रमण करते देख पड़ता था और कभी उसके अधीन डेढ़ लाख सैनिकोंकी महती सेना दृष्टिगोचर होती थी।

पॉम्पी युद्धके अनन्तर मेटेलससे मिलनेका इरादा कर आगे बढ़ा। जब वह उसके पास पहुँचा, तब उसने अपने छड़ीबरदारोंको मेटेलसके प्रति सम्मान प्रदर्शित करनेके निमित्त, अपने डंडोंको नीचेकी तरफ झुकानेकी आज्ञा दी।* पर मेटेलसने उन्हें ऐसा करनेसे रोक दिया। वह अपने पद या अवस्थाका कुछ भी विचार न कर पॉम्पीके साथ सभी बातोंमें बड़ी नरमियतसे पेश आता था। कभी तो ये दोनों एक ही साथ पड़ाव डालते थे और कभी, शत्रुकी हरकतसे लाचार होकर, अलग अलग ठहरते थे। उसने इन लोगोंकी रसदका पहुँचना रोक दिया, प्रदेशको उजाड़

* ये छड़ीबरदार शासकके साथ अनुचरके तौरपर रहते थे और इनके साथ छड़ियोंका एक बण्डल होता था जिसके बीचमें एक कुल्हाड़ी बँधी

डाला और समुद्रपर भी अधिकार कर लिया। परिणाम यह हुआ कि इन्हें रसदके लिए अपने प्रदेशोंको छोड़कर दूसरोंके प्रदेशोंमें जाना पड़ा।

जब पॉम्पीका अपना रुपया भी युद्धमें समाप्तप्राय हो गया तो उसने रुपयेके लिए सिनेट (कुलीन-सभा) से प्रार्थना की। लुकुलस नामक कौंसल (प्रधान शासक), पॉम्पीके साथ उसकी अनबन होते हुए भी, रुपया शीघ्रातिशीघ्र भेजनेका प्रयत्न करता रहा। बात यह थी कि मिथ्रिडेटीज़के साथ मुकाबला करनेको वह स्वयं जाना चाहता था क्योंकि इसमें कठिनाइयोंकी मात्रा अत्यल्प होते हुए भी सम्मान प्राप्त हो सकनेकी विशेष संभावना थी; यदि वह रुपया भेजनेका प्रबन्ध न करता तो पॉम्पीको सरटोरियसका पीछा छोड़ कर लौट आनेका बहाना मिल जाता जो वह नहीं चाहता था।

इसी बीचमें सरटोरियसको उसके किसी मातहतने मार डाला। अब परपेनाने उसका स्थान ग्रहण किया। सेना तथा रण-सामग्री आदि वही होनेपर भी उसमें उनका समुचित रूपसे उपयोग करनेकी योग्यता न थी। पॉम्पीने शीघ्र ही युद्ध आरम्भ कर दिया और यह देखकर कि शत्रुको कोई उपाय सूझ नहीं रहा है, उसे धोखेमें डालनेके लिए दस टुकड़ियोंको दस ओर भेज दिया। जब पॉम्पीने देखा कि परपेना इन टुकड़ियोंका पीछा करनेमें लगा हुआ है, तब अपनी मुख्य सेना लेकर उसने उसपर आक्रमण कर दिया। उसकी सेनाके पैर उखड़ गये; बहुतसे अफसर खेत रहे और वह स्वयं भी क़ैद हो गया। बादमें पॉम्पीकी आज्ञासे उसका वध कर डाला गया। परपेनाने सिसलीमें पॉम्पीकी बड़ी सहायता की थी, अतः इस कार्यके कारण कुछ लोग उसपर परपेनाके प्रति कृतघ्नताका दोष लगाते हैं, जो ठीक नहीं है। जनताके हित तथा देशकी रक्षाके ख्यालसे ही लाचार होकर उसे ऐसा करना पड़ा था। परपेनाने सरटोरियसके कुछ ऐसे पत्र दिखलाये थे जिनमें रोमके कुछ प्रमुख व्यक्तियोंने सरटोरियसको इटली बुलाते हुए सहायता देनेका वचन दिया था। पर

इस युद्धकी अपेक्षा अधिक भयंकर युद्धोंके छिड़नेकी आशंकासे उसने परपेनाका वध करा कर उन कागजोंको बिना पढ़े ही जला दिया। वह स्पेनमें अधिक दिनोंतक ठहरा रहा और पूर्णतः शान्ति स्थापित कर एवं शान्ति भंग करनेवाली बातोंको दूर कर इटली वापस गया। उसके भाग्यसे इसी समय 'दासोंका युद्ध' अपनी चरम सीमापर पहुँचा हुआ था।

क्रेसस इस युद्धमें सेनापति बनाया गया था। उसे यह आशंका हुई कि विजयका श्रेय कहीं पॉम्पीको न मिल जाय, इसलिए उसने कठिनाइयोंकी जरा भी परवाह न कर युद्ध आरम्भ करनेका निश्चय कर लिया। उसे अपने प्रयत्नमें सफलता प्राप्त हुई और उसने बारह हजार तीन सौ सैनिकोंका वध भी किया, पर वह पॉम्पीको भी इस युद्धमें सम्मान प्राप्त करनेसे न रोक सका। रणभूमिसे भागते हुए पाँच हजार दासोंके साथ पॉम्पीकी मुठभेड़ होगयी और उसने उनका वध कर डाला। उसने सिनेटको पहले ही लिख दिया कि युद्धमें शत्रुओंको पराभूत करनेका श्रेय तो क्रेससको ही है, पर युद्धका आमूल नाश मैंने किया है। पॉम्पीके प्रति रोमनोंकी श्रद्धा होनेके कारण वे यही बात परस्पर कहते और सुनते थे। इस भावसे प्रेरित होकर वे लोग स्पेनकी सफलताका श्रेय भी और किसीको न देकर पॉम्पीको ही देते थे।

फिर भी यह सम्मान और श्रद्धाका भाव भय एवं ईर्ष्यासे खाली न था क्योंकि उसको सेना भंग करते न देख कर लोगोंकी धारणा होने लगी कि यह भी सिलाकी तरह तलवारके बलसे राष्ट्रका अधिनायक बनना चाहता है। इस कारण भयसे प्रेरित होकर उसका स्वागत करनेके लिए जानेवालोंकी संख्या प्रेमसे प्रेरित होकर जानेवालोंकी संख्यासे कम न थी। जब उसने यह घोषित कर दिया कि जुलूस निकालनेके बाद मैं सेना भंग कर दूंगा, तब लोगोंकी आशंका दूर हो गयी। अब ईर्ष्याकी केवल एक बात और रह गयी जो यह थी कि पॉम्पी उच्चवर्गीय लोगोंकी अपेक्षा जनसाधारणका विशेष ध्यान रखता था, जहाँ सिलाने जनता

द्वारा चुने गये जनशासक (ट्रिब्यून) का पद ही तोड़ दिया था, वहाँ इसने सर्वसाधारणकी कृपा प्राप्त करनेके विचारसे उसे पुनः स्थापित करनेका निश्चय कर लिया। जनता इसके लिए विशेष रूपसे उत्सुक थी। यह सुअवसर पाकर पॉम्पी बहुत प्रसन्न हुआ, क्योंकि यदि यह कार्य किसी और द्वारा सम्पादित हो जाता तो जनसाधारणकी कृपाका बदला चुकानेका अन्य कोई उपाय उसे नहीं देख पड़ता था।

सिनेटने उसे प्रधान शासकका पद देते हुए दूसरी बार विजयका जुलूस निकालनेकी स्वीकृति दी। लेकिन यह कोई ऐसी बात न थी जो उसके गौरवकी परिचायक हो। उसकी महत्ताका प्रमाण तो तब मिला जब क्रेससने जो सबसे धनी, सबसे बड़ा वक्ता एवं राज्यमें सबसे शक्तिशाली था और जो अपने आगे पॉम्पी या और किसीको कुछ नहीं समझता था, उसकी स्वीकृति लिये बिना प्रधान शासकके पदके लिए खड़े होनेकी हिम्मत नहीं हुई। पॉम्पी पहलेसे ही उसे कृतज्ञताके सूत्रसे बाँधनेका अवसर ढूँढ रहा था, इसलिए उसने बड़ी प्रसन्नताके साथ उसकी प्रार्थना स्वीकार कर उसके निमित्त जनसाधारणकी अनुकूलता प्राप्त कर ली। किन्तु प्रधान शासक चुने जानेके बाद इन दोनोंमें मतभेद शुरू हो गया। क्रेससकी सहानुभूति उच्च वर्गीयोंके प्रति थी और पॉम्पीकी जनसाधारणके प्रति। पॉम्पीने जन-साधारणमेंसे ही सार्वजनिक शासक चुननेका नियम पुनः जारी कर दिया पर न्यायकर्ता उच्चवर्गीयोंमेंसे ही लेनेका नियम बन जाने दिया। जब पाम्पी सैनिक-सेवासे बरी होनेके निमित्त न्यायालयमें उपस्थित हुआ तो उसे देख कर सारी जनता आनन्द-निमग्न हो गयी। उस समय रोमकी यही प्रथा थी कि जब कोई सरदार कानून द्वारा निश्चित्त समयतक सैनिक सेवा कर चुकता था, तो अपना घोड़ा लेकर न्यायालयमें दो अफ्सरोंके सम्मुख, जो 'सेंसर' कहलाते थे, उपस्थित होता था और अपने नायकका हवाला तथा अपने कार्यों आदिका ब्योरा देकर सैनिक सेवासे बरी कर दिये जानेकी प्रार्थना करता था।

उसका जैसा कार्य होता था, उसीके अनुसार सम्मान या अपमान सूचक चिह्न उसे दिये जाते थे और वह सैनिक सेवासे मुक्त कर दिया था।

'सेन्सर' लोग अपने पदके अनुरूप आसनोंपर बैठे हुए थे कि इतनेमें प्रधान शासकके चिन्होंको धारण किये हुए एवं अपने घोड़ेकी वागडोर हाथमें थामे हुए दूरसे आता हुआ पाम्पी दिखाई दिया। जब वह करीब पहुँच गया तब उसने अपने छड़ीबरदारोंसे रास्ता देनेके लिए कहा और स्वयं आगे बढ़कर सेंसरोंके सामने चला गया। यह देख कर सारी जनता श्रद्धा और सम्मानके भावसे भर गयी, चारों ओर सन्नाटा छा गया और सेंसरोंके मुखसे भी आदर एवं प्रसन्नताका भाव झलकने लगा। बड़े सेंसरने पूछा कि 'पाम्पी महान्, क्या आपने सैनिक सेवा द्वारा कानूनकी शर्तोंका पालन किया है?' पॉम्पीने उच्च स्वरमें उत्तर दिया 'मैंने सब शर्तोंका पालन किया है। मैं स्वयं सेनापति था।' जनता इस उत्तरसे इतनी मुग्ध हो गयी कि उसकी हर्षध्वनिका अन्त ही नहीं होता था। अन्तमें दोनों सेंसर आसनसे उठ खड़े हुए और जनताकी प्रसन्नतार्थ अपने साथ साथ पॉम्पीको उसके घरतक पहुँचानेको ले गये। इनके पीछे पीछे एक अपार भीड़ खुशीके नारे लगाती हुई जा रही थी।

पॉम्पी और क्रैससके शासनकालका अन्त करीब था, पर इनका पारस्परिक मतभेद क्रमशः बढ़ता ही जा रहा था। एक दिन केयस आरीलियस नामक एक व्यक्ति जिसने उच्चवर्गीय होते हुए भी शासन सम्बन्धी कार्योंमें कभी हाथ नहीं डाला था, जन सभामें गया और व्याख्यान-मंच पर चढ़ कर कहने लगा कि देवाधिदेव जूपीटरने मुझे स्वप्नमें दर्शन देकर कहा है कि प्रधान शासकोंको अपने पदसे पृथक् होनेके पहले ही आपसमें समझौता कर लेना चाहिए। यह सुन कर पॉम्पी तो चुपचाप खड़ा रहा पर क्रैससने सामने आकर अपना हाथ बढ़ाया और मित्रकी भांति उसे प्रणाम किया। तत्पश्चात् उसने जनताकी ओर घूम कर कहा 'प्रिय नागरिकगण, जिस व्यक्तिको आप लोग अल्पावस्थामें, जबकि

उसकी रेख भी नहीं भीनी थी, 'महान्' बना चुके हैं और सिनेट सभाका सभ्य होनेके पूर्व ही दो बार जुलूसके साथ नगर-प्रवेशकी अनुमति दे चुके हैं, उसके सामने यदि मैं ही पहले झुकूं तो इसमें मानहानि या लघुताकी कोई बात नहीं हो सकती।' मेल हो जाने पर दोनोंने अपने अपने पदका परित्याग कर दिया।

क्रेसस पूर्ववत् अपना जीवन व्यतीत करता रहा, पर पॉम्पी लोगोंके प्रार्थना करने पर भी शायद ही कभी न्यायालयमें आता था। अन्तमें उसने न्यायालयका आना बिलकुल ही छोड़ दिया। वह बाहर भी बहुत कम निकलता था और निकलता भी था तो मित्रों और दासोंकी एक भीड़के ही साथ निकलता था। एकाकी उससे बात कर सकना या मिलना असंभव ही था। भीड़के साथ बाहर निकलनेमें वह अपना बड़प्पन समझता था। उसकी यह धारणा थी कि बहुत लोगोंके सम्पर्कमें रहने या घनिष्ठता पैदा करनेसे मरतबा घट जाता है। जो व्यक्ति शस्त्र-बलसे प्रसिद्धि प्राप्त कर बड़ा बन जाता है वह शान्तिका चोगा पहनने पर अपनी प्रसिद्धि खो बैठता है, क्योंकि उसे समाजमें अपनेको औरोंके समकक्ष समझनेमें स्वभावतः विशेष कठिनाई होती है। वह चाहता है कि रणभूमिकी तरह नगरमें भी मैं ही प्रधान समझा जाऊँ। इसके प्रतिकूल युद्ध-क्षेत्रमें जिस व्यक्तिकी कुछ भी पूछ नहीं होती, वह यदि नगर में भी नेतृत्व न ग्रहण कर सके तो उसके लिए यह बात असह्यसी होगी। अतः यदि कोई विजयी सेनापति वकालतका पेशा स्वीकार कर इस श्रेणी-के लोगोंमें आवे तो ये उसे बराबर गिरानेकी ही कोशिश करेंगे, पर यदि वह चुपचाप घर बैठ रहे तो ये बिना किसी प्रकारकी ईर्ष्याके उसका पूर्व सम्मान बनाये रखेंगे। इस बातकी सत्यता आगेकी घटनाओंसे शीघ्र ही प्रमाणित हो गयी।

समुद्री दस्यु पहले पहल अपना अड्डा सिलीशियामें कायम कर बड़ी शीघ्रतासे अपनी शक्ति-वृद्धि कर रहे थे। मिथ्रीडेटीज़के साथके युद्धों

और रोमके गृहकलहके कारण इन्हें अपनी शक्ति बढ़ानेका अच्छा मौक़ा मिला। ये केवल व्यापारी जहाज़ोंपर ही नहीं, टापुओं और तटवर्ती नगरोंपर भी छापा मारने लगे। बहुतसे धनीमानी और सद्वंशजात लोग भी इनके साथ मिल गये। इन्होंने बन्दरों और मीनारों आदिकी मोर्चा-बन्दी कर रखी थी। इनके पास एक हजार पोत हो गये थे जो हलके, सुन्दर और उपयोगी होनेके साथ साथ सभी आवश्यक सामग्रीसे लैस थे। समुद्रके किनारे इनकी ओरसे प्रायः नित्य ही गाना-बजाना, नाच और भोज इत्यादि होते रहते थे। ये सेनानायकोंको कैद करते, मन्दिरोंको लूटते और नगरोंसे दण्ड वसूल करते फिरते थे, जिससे रोम साम्राज्यकी बड़ी बदनामी हो रही थी। इनकी पूजा आदि भी विचित्र ही ढंगकी होती थी।

ये लोग समुद्रपर तो धूम मचाते ही थे, जमीनपर भी रोमनोंको हर तरहसे तंग करते थे। वे प्रायः देहातोंमें घुस जाते और वहाँवालोंको लूटकर उनके मकानों या और चीजोंको नष्टभ्रष्ट कर डालते थे। एक बार उन्होंने दो रोमन प्रीटरोंको पकड़ लिया और उन्हें उनके अफसरों समेत उठा कर घर ले गये। इन्होंने एक बार देहात जाते समय एण्टोनी नामक एक विजयी वीरकी कन्या छीन ली और फिर बहुत धन लेकर उसे वापस किया।

सबसे दुर्गतिकी बात यह थी कि जब कोई कैदी अपनेको रोमन कह कर अपना नाम बतलाता था तो ये विस्मित होकर बनावटी भय प्रकट करते हुए छाती पीटने और उसके पैरोंपर गिरने लगते थे। फिर वे बड़ी नम्रता और दीनताके साथ उससे माफी माँगते थे। बन्दी भी धोखेमें आकर यही समझता था कि वे सचमुच माफी चाहते हैं। इसके बाद कुछ लोग यह कह उसे रोमन जूता और रोमन पोशाक भी पहनाने लगते थे, कि आप इन्हें पहन लीजिये ताकि फिर आपको पहचाननेमें गलती होनेकी आशंका न रहे। इस प्रकार बहुत देर तक स्वाँग रचने और दिल बहलाव

करने पर ये जलदस्यु उसे समुद्रके बीचमें ले जाकर जहाजमे सीढ़ी लटका देते थे और सीढ़ीमे उतर कर शान्तिपूर्वक चले जानेकी आज्ञा देते थे। बन्दीके इनकार करने पर ये स्वयं ही उसे समुद्रमें फेंक देते थे।

इन डाकुओंने सारे भू-मध्यसागरपर अधिकार कर रखा था जिससे पोतोंका गमनागमन और व्यापार बिलकुल बन्द हो गया। रोमनोंने बाजारमें वस्तुओंके अभाव और दुर्भिक्षकी आशंकासे प्रेरित होकर समुद्र-को इन डाकुओंसे मुक्त करनेके विचारसे पॉम्पीको भेजनेका निश्चय किया।

पॉम्पीके एक मित्र, गेबिनियसने एक प्रस्ताव पेश किया जिसमें पॉम्पीको केवल समुद्रपर ही नहीं बल्कि एक प्रकारसे सभी लोगोंपर शासनाधिकार दिलानेको कहा गया था। प्रस्तावकने यह कहा कि हरकुलीज़-स्तभोंके बीच सारे समुद्रपर और तटसे पचास मीलतक स्थलपर पॉम्पीको अपरिमित अधिकार दे देना चाहिये। रोम-साम्राज्यमें इस भाग के बाहर थोड़ा ही प्रदेश बच रहता था और बड़े बड़े राष्ट्र तथा शक्ति-शाली नरेश इस क्षेत्रके अन्दर आ जाते थे। इसके अलावा प्रस्तावमें यह भी कहा गया था कि पॉम्पी सिनेटके सभ्योंमेंसे किन्हीं पन्द्रह आदमि-योंको सहायकके तौरपर चुनकर भिन्न भिन्न प्रदेश उनके जिम्मे कर सकता था, राज्यकोषसे इच्छानुसार द्रव्य ले सकता था तथा आवश्यकतानुसार सैनिक भी भरती कर सकता था।

सिनेटमें जब यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया तब जनताने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया, पर सीज़रको छोड़ प्रायः सभी प्रमुख सभ्योंने इस प्रकारका अपरिमित अधिकार अनुचित समझकर इसका विरोध किया। सीज़रने भी, पॉम्पीके ख्यालसे नहीं बल्कि केवल लोकप्रियता प्राप्त करनेके विचारसे, इसके पक्षमें मत दिया। लोग पॉम्पीकी बड़ी कड़ी आलोचना करने लगे। एकने तो यहाँतक कह दिया कि यदि वह रोमुलसका अनु-करण करना चाहता है तो उसे भी वही फल भोगना पड़ेगा अर्थात् उसके बदनके टुकड़े टुकड़े कर दिये जायँगे।

और रोमके गृहकलहके कारण इन्हें अपनी शक्ति बढ़ानेका अच्छा मौका मिला। ये केवल व्यापारी जहाजोंपर ही नहीं, टापुओं और तटवर्ती नगरोंपर भी छापा मारने लगे। बहुतसे धनीमानी और सद्वंशजात लोग भी इनके साथ मिल गये। इन्होंने बन्दरों और मीनारों आदिकी मोर्चाबन्दी कर रखी थी। इनके पास एक हजार पोत हो गये थे जो हल्के, सुन्दर और उपयोगी होनेके साथ साथ सभी आवश्यक सामग्रीसे लैस थे। समुद्रके किनारे इनकी ओरसे प्रायः नित्य ही गाना-बजाना, नाच और भोज इत्यादि होते रहते थे। ये सेनानायकोंको कैद करते, मन्दिरोंको लूटते और नगरोंसे दण्ड वसूल करते फिरते थे, जिससे रोम साम्राज्यकी बड़ी बदनामी हो रही थी। इनकी पूजा आदि भी विचित्र ही ढंगकी होती थी।

ये लोग समुद्रपर तो धूम मचाते ही थे, जमीनपर भी रोमनोंको हर तरहसे तंग करते थे। वे प्राय देहातोंमें घुस जाते और वहाँवालोंको लूटकर उनके मकानों या और चीजोंको नष्टभ्रष्ट कर डालते थे। एक बार उन्होंने दो रोमन प्रीटरोंको पकड़ लिया और उन्हें उनके अफसरों समेत उठा कर घर ले गये। इन्होंने एक बार देहात जाते समय एण्टोनी नामक एक विजयी वीरकी कन्या छीन ली और फिर बहुत धन लेकर उसे वापस किया।

सबसे दुर्गतिकी बात यह थी कि जब कोई कैदी अपनेको रोमन कह कर अपना नाम बतलाता था तो ये विस्मित होकर बनावटी भय प्रकट करते हुए छाती पीटने और उसके पैरोंपर गिरने लगते थे। फिर वे बड़ी नम्रता और दीनताके साथ उससे माफी माँगते थे। बन्दी भी धोखेमें आकर यही समझता था कि वे सचमुच माफी चाहते है। इसके बाद कुछ लोग यह कह उसे रोमन जूता और रोमन पोशाक भी पहनाने लगते थे, कि आप इन्हें पहन लीजिये ताकि फिर आपको पहचाननेमें गलती होनेकी आशंका न रहे। इस प्रकार बहुत देर तक स्वाँग रचने और दिल बहलाव

करने पर ये जलदस्यु उसे समुद्रके बीचमें ले जाकर जहाजसे सीढ़ी लटका देते थे और सीढ़ीसे उतर कर शान्तिपूर्वक चले जानेकी आज्ञा देते थे। बन्दीके इनकार करने पर वे स्वयं ही उसे समुद्रमें फेंक देते थे।

इन डाकुओंने सारे भू-मध्यसागरपर अधिकार कर रखा था जिससे पोतोंका गमनागमन और व्यापार बिल्कुल बन्द हो गया। रोमनोंने बाजारमें वस्तुओंके अभाव और दुर्भिक्षकी आशंकासे प्रेरित होकर समुद्र-को इन डाकुओंसे मुक्त करनेके विचारसे पॉम्पीको भेजनेका निश्चय किया।

पॉम्पीके एक मित्र, गेबिनियसने एक प्रस्ताव पेश किया जिसमें पॉम्पीको केवल समुद्रपर ही नहीं बल्कि एक प्रकारसे सभी लोगोंपर शासनाधिकार दिलानेको कहा गया था। प्रस्तावकने यह कहा कि हरकुलीज-स्तम्भोंके बीच सारे समुद्रपर और तटसे पचास मीलतक स्थलपर पॉम्पीको अपरिमित अधिकार दे देना चाहिये। रोम साम्राज्यमें इस भाग के बाहर थोड़ा ही प्रदेश बच रहता था और बड़े बड़े राष्ट्र तथा शक्ति-शाली नरेश इस क्षेत्रके अन्दर आ जाते थे। इसके अलावा प्रस्तावमें यह भी कहा गया था कि पॉम्पी सिनेटके सभ्योंमेंसे किन्हीं पन्द्रह आदमि-योंको सहायकके तौरपर चुनकर भिन्न भिन्न प्रदेश उनके जिम्मे कर सकता था, राज्यकोषसे इच्छानुसार द्रव्य ले सकता था तथा आवश्यकतानुसार सैनिक भी भरती कर सकता था।

सिनेटमें जब यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया तब जनताने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया, पर सीजरको छोड़ प्रायः सभी प्रमुख सभ्योंने इस प्रकारका अपरिमित अधिकार अनुचित समझकर इसका विरोध किया। सीजरने भी, पॉम्पीके ख्यालसे नहीं बल्कि केवल लोकप्रियता प्राप्त करनेके विचारसे, इसके पक्षमें मत दिया। लोग पॉम्पीकी बड़ी कड़ी आलोचना करने लगे। एकने तो यहाँतक कह दिया कि यदि वह रोमुलसका अनु-करण करना चाहता है तो उसे भी वही फल भोगना पड़ेगा अर्थात् उसके बदनके टुकड़े टुकड़े कर दिये जायँगे।

यह सत्य है कि जब केटुलस इस प्रस्तावका विरोध करने खड़ा हुआ तो उसके प्रति आदरका भाव होनेके कारण लोग उसकी बातें ध्यानसे सुनने लगे। पॉम्पीकी प्रशंसा करनेके अनन्तर उसने कहा कि आप लोग उसकी जान अब छोड़ दें, इतने संकटोंमें उसे न डालें, यदि हम लोग उससे वंचित हो जायँ तो फिर ऐसा आदमी कहाँ पायँगे। यह सुनकर सभी लोग एक स्वरसे "आप तो हैं ही" कह उठे। अपनी दलीलोंका कुछ प्रभाव पड़ते हुए न देखकर वह अपने आसनपर चुपचाप जा बैठा। इसके बाद रोसियस बोलनेके लिए खड़ा हुआ। पर कोई उसकी बात ही नहीं सुनता था। उसने अंगुलियोंके इशारेसे केवल पॉम्पी नहीं, बल्कि दो आदमियोंको कार्य-भार देनेकी बात कही। इसपर लोग क्रुद्ध होकर इतना शोर मचाने लगे कि एक कौआ, जो न्यायालयके ऊपरसे उड़ता जा रहा था, स्वरसे आहत होकर लोगोंके बीचमें गिर पड़ा। निदान कुलीन सभा बिना कुछ निश्चय किये ही भंग हो गयी।

जिस दिन इस प्रस्तावपर मत लिया जानेवाला था, उस दिन पॉम्पी चुपचाप देहात चला गया। जब इसके स्वीकृत हो जानेकी सूचना उसे मिली तो वह रातको लौट आया। ऐसा करनेका उद्देश्य यही था कि मुबारकबादी देनेवालोंकी भीड़ इकट्ठी होनेके कारण लोगोंके मनमें ईर्ष्या न उत्पन्न हो। दूसरे दिन प्रातःकाल बाहर आकर उसने बलिदान चढ़ाया और तत्पश्चात् व्यवस्थापिका सभा (असेम्बली) आमंत्रित कर उसने अपने अधिकार और भी बढ़वा लिये। अब उसे पाँच सौ पोत तैयार कराने तथा एक लाख बीस हजार पैदल और पाँच हजार अश्वारोही रखनेका अधिकार मिल गया। चौबीस ऐसे सभ्य चुन लिये गये जो पहले सेनापतिका काम कर चुके थे। इनके अलावा उसे दो कोषाध्यक्ष भी दे दिये गये। इसी समय वस्तुओंका मूल्य भी बहुत घट गया जिससे सब लोग प्रसन्न होकर कहने लगे कि पॉम्पीके नामसे ही दस्यु-युद्धका अन्त होगया।

उसने भू-मध्यसागरको तेरह भागोंमें बाँट कर प्रत्येक भागको एक एक सहायकके जिम्मे कर पोत भी सबके साथ कर दिये। इस प्रकार समुद्रके सभी भागोंमें पोतोंके रखनेसे वह बहुतसे दस्युओंको घेर घेर कर बन्दरगाहमें ले आया। उनके जो जहाज बच निकले वे सिलीशियामें इस तरह इकट्ठे होने लगे जिस तरह छत्तेमें मधुमक्खियाँ एकत्र हुआ करती हैं। उसने वहाँ स्वयं जानेका विचार किया पर इसके पूर्व उसने तस्कन सागर और आफ्रिका, सार्डीनिया, कार्सिका, सिसली आदि देशोंके तटवर्ती समुद्रोंको चालीस दिन अथक परिश्रम कर दस्युओंसे मुक्त कर लिया।

पीसो नामक प्रधान शासकने ईर्ष्यावश सामान रोक कर और नाविकोंको बरखास्त कर बीचमें पॉम्पीके कार्यमें कुछ बाधा उपस्थित कर दी। इसपर वह अपना बेड़ा ब्रण्डूज़िअम भेज कर आप तस्कनी होते हुए रोम चला आया। उसके आगमनकी सूचना मिलने पर उसका स्वागत करनेके लिए जनसाधारणकी एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। इस समय लोगोंकी खुशीका कोई ठिकाना न था। पहला कारण तो यह था कि उसने अल्प कालमें ही डाकुओंके दमनमें आशातीत सफलता प्राप्त की थी और दूसरा यह था कि हाटोंमें इस समय विक्रेय पदार्थ बहुत अधिक तादादमें प्रस्तुत थे। इस हालतमें पीसोकी प्रधान शासकके पदसे च्युत होनेकी आशंका होने लगी और गेबिनियसने इसके निमित्त एक प्रस्ताव भी तैयार कर लिया था, पर पॉम्पीने उसे पेश करनेसे मना कर दिया। इतना ही नहीं, उसने जनताके प्रति जो भाषण किया उसमें द्वेष और असहिष्णुताकी कहीं गन्ध भी न थी। आवश्यक वस्तुओंके प्रस्तुत हो जानेपर वह ब्रण्डूज़िअम जाकर पुनः पोतारूढ़ होगया। कुछ दस्युओंके आत्मसमर्पण करने पर पॉम्पीने उनके साथ नरमियतका बर्ताव किया। यह देख बहुतेरे दस्यु दयाकी आशासे प्रेरित होकर अपने बाल-बच्चोंके साथ आत्मसमर्पण करने लगे। पॉम्पीने इन

सबको शान्त कर दिया। इन लोगोंके कारण उन दस्युओंको पकड़नेमें बड़ी सहायता मिली जो भयंकर अपराधी होनेके कारण छिपे हुए थे।

फिर भी बहुसंख्यक दस्यु शेष रह गये थे। वे अपने बाल-बच्चों और बूढ़ों आदिको धन सम्पत्ति सहित टॉरसके पहाड़ी दुर्ग या दुर्गरक्षित नगरोंमें भेज कर अपने युद्ध-पोतोंके साथ सिलीशियामें पॉम्पीकी प्रतीक्षा करने लगे। युद्धमें पराजित होने पर दस्यु लोग दुर्गके भीतर चले गये। कुछ ही दिन घेरा डालनेके उपरान्त उन्होंने विजित द्वीपों, दुर्ग-रक्षित नगरों आदिके साथ आत्मसमर्पण किया। इस प्रकार अधिकसे अधिक तीन मासमें जलदस्युओंकी शक्तिका पूर्णतः अन्त होगया।

इस युद्धमें सैकड़ों पोतोंके अतिरिक्त बीस हजार दस्यु बन्दी बनाये गये। उसने उनका वध करना पसन्द न कर छोड़ना भी उचित न समझा, क्योंकि संख्यामें अधिक होनेके अलावा उनमें यौद्धिक प्रवृत्ति भी थी जिससे वे अपना पूर्व रूप शीघ्र ही धारण कर सकते थे। उसने यही सोचा कि मनुष्य स्वभावतः जंगली या असामाजिक प्राणी नहीं है, यदि वह ऐसा हो भी जाता है तो केवल अपने दुर्गुणोंके कारण। जिस प्रकार खूँखार जानवर भी पालतू बनाये जाने पर अपनी भयङ्करता खो बैठता है, उसी प्रकार यदि मनुष्यकी रहन-सहन और स्थितिमें परिवर्तन कर दिया जाय तो उसमें भी शिष्टता आ जायगी। इसलिए उसने इन्हें समुद्रसे बहुत दूर हटा कर नागरिक और कृषक जीवनका रसास्वाद कराना चाहा। फलतः उसने इन बन्दियोंको कुछ ऐसे नगरोंमें वितरित कर दिया जहाँ अधिवासियोंकी संख्या अल्पतर थी।

जो लोग पॉम्पीसे ईर्ष्या करते थे वे इसके इन कार्योंमें छिद्रान्वेषण करने लगे। मेटेलसके प्रति उसके वर्तावकी तो उसके प्रधान मित्रोंने भी निन्दा की। मेटेलस क्रीटका प्रीटर (उपशासक) बना कर भेजा गया था। सिलीशियाकी तरह क्रीटमें भी दस्युओंने अपना अड्डा कायम किया था। मेटेलसने उनके कई नगरोंको नष्ट कर उन्हें एक स्थानपर घेर

रखा। परिवेष्टित दस्युओंने पॉम्पीको पत्र लिख कर बुलाते हुए शरणके लिए प्रार्थना की। इसपर पॉम्पीने पत्रद्वारा आगे और कोई कार्य करनेसे मेटेलसको रोक कर अपने एक सहायक आक्टेवियसको वहाँका नायक बना कर भेज दिया। इसका एकमात्र कारण यही था कि यह स्थान उसके अधिकार-क्षेत्रके अन्तर्गत था। उसने और स्थानोंको भी मेटेलसकी आज्ञा न माननेके लिए लिख दिया। आक्टेवियस घिरे हुए लोगोंका पक्ष ग्रहण कर युद्ध करने लगा। इससे पॉम्पीकी बड़ी बदनामी और हँसी हुई क्योंकि केवल ईर्ष्यावश उसने लुटेरोंके इस गरोहका समर्थन किया और उन्हे अपने सुयशका आश्रय प्रदान किया। ऐकिलीजके विषयमें यह कहा जाता है कि उसने अन्य ग्रीक लोगोंको हेक्टरपर प्रहार करनेसे रोक दिया था, क्योंकि विजयका श्रेय वह स्वयं लेना चाहता था। उसका यह कार्य पुरुषोचित न होकर लड़कोंके योग्य माना गया। किन्तु पॉम्पीका कार्य तो इससे भी अधिक निन्दनीय था। उसने केवल इस इरादेसे सारे संसारके इन दुश्मनोंकी रक्षाका प्रयत्न किया कि जिसमें एक रोमन प्रीटर मेटेलसको उनका दमन करने और विजयके उपलक्ष्यमें जुलूस निकालनेका सम्मान न मिलने पावे। जो हो, पर मेटेलसने अपना कार्यक्रम बराबर जारी रखा। उसने सभी दस्युओंको पकड़ कर उनका वध कर डाला और आक्टेवियसको, लानत मलामत करनेके बाद, बर्खास्त कर दिया।

जब यह समाचार रोम पहुँचा कि दस्यु युद्धका अन्त होगया है और पॉम्पी अन्य कोई विशेष कार्य न होनेके कारण इधर उधर नगरोंमें भ्रमण कर रहा है तो मैनलियस नामक ट्रिब्यूनने जो जन-साधारणमेंसे था, मिथ्रिडेटीज और टिग्रेनीजके साथ युद्ध चलानेके विचारसे पहलेकी नौसेना ज्योंकी त्यों रखते हुए लुकुलसकी सारी सेना और शेष प्रान्त, जो पहले आदेशके अनुसार अधिकारक्षेत्रमें नहीं आये थे, पॉम्पीके अधिकारमें करनेका प्रस्ताव किया। इसका अभिप्राय एक प्रकारसे सारे रोम साम्राज्य-

की बागडोर पॉम्पीके हाथमें रखना था। इससे लुकुलस सारे सम्मानसे वंचित हो जाता था। उच्चवर्गीय लोग भी एक ही आदमीके हाथमें सारी सत्ता केन्द्रीभूत होनेके ख्यालसे भयभीत होगये। उन्होंने मिलकर इसका विरोध करनेका विचार किया किन्तु जनताके भयसे, केटुलसके सिवा और किसीको विरोध करनेका साहस न हुआ और प्रस्ताव स्वीकृत होगया।

जब पॉम्पीको सूचनापत्र मिला और उसके मित्रोंने उसकी उन्नति पर बधाई दी तो उसने सिर पीट लिया और भौंहें चढ़ाकर इस प्रकारका भाव व्यक्त किया मानो वह अधिकारोंके बोझसे ऊब गया हो। उसने कहा "क्या इन बखेड़ोंका कभी अन्त न होगा? लगातार युद्धमें प्रवृत्त रहनेकी अपेक्षा सामान्य व्यक्ति होकर शान्तिपूर्वक रहना कहीं अच्छा है। क्या मैं कभी इस ईर्ष्यापूर्ण पदसे अपना पिंड छुड़ाकर किसी ग्राममें बाल बच्चोंके साथ गार्हस्थ्य जीवनका सुख न उठा सकूँगा?" पर यह सब दिखावा मात्र था क्योंकि लुकुलससे शत्रुता होनेके कारण इस अधिकार वृद्धिसे वह वस्तुतः सन्तुष्ट ही हुआ।

उसके कार्योंसे उसका असल रूप शीघ्र ही प्रकट हो गया। उसने सर्वत्र सूचना देकर सारी रोमन सेना और करद राजाओंको अपने पास बुलाया। वह जहाँ जहाँ गया वहाँ वहाँ उसने लुकुलसके कार्योंको रद कर दिया। उसने जुर्मानोंको माफ कर दिया तथा इनामोंको लौटा लिया और ऐसा कोई भी उपाय नहीं छोड़ा जिससे लुकुलसके अधिकारोंका अन्त सूचित हो सकनेकी सम्भावना थी।

लुकुलसको पॉम्पीका यह बर्ताव अच्छा न लगा। जब उसने अपने मित्रोंसे इस सम्बन्धमें शिकायत की तो उन्होंने उससे मिलनेकी राय दी। गैलेशियामें दोनोंकी भेंट हुई। दोनोंने ही युद्धमें अच्छी योग्यता दिखलायी थी, इस कारण दोनोंके छड़ीबरदारोंने अपनी छड़ियोंमें लारेल-की मालाएँ लपेटी थीं। लुकुलसका मार्ग हरे वृक्षों और घनी छायावाले वनोंके मध्यसे होकर था। पर पॉम्पीको वीरान स्थानोंसे होकर आना पड़ा

था, इस कारण उसके छडीवरदारोंकी मालाएँ सूख गयी थीं। यह देख कर लुकुल्सके छडीवरदारोंने ताजी मालाएँ उनकी छडियोंमें बाँध दीं। यह इस बातका सूचक माना गया कि लुकुल्सकी विजयोंका सम्मान पॉम्पी अपना लेगा। लुकुल्स पॉम्पीके पहले प्रधान शासक रह चुका था और अवस्थामें भी बडा था, पर दो जुलसोंका सम्मान प्राप्त हो चुकनेके कारण पॉम्पीका मरतबा बढा हुआ था।

परस्पर मिलने पर पहले तो इन लोगोंका व्यवहार शिष्टता एवं नम्रतापूर्ण रहा, पर शीघ्र ही ये लोग एक दूसरेके लिए अपशब्दोंका प्रयोग करने लगे। पॉम्पी लुकुल्सपर लोलुपताका दोषारोप करता था और लुकुल्स पॉम्पीपर प्रबल अधिकार-तृष्णाका। बात यहाँतक बढी कि उनके मित्र भी उनको परस्पर भिड जानेसे न रोक सके। इसके अनन्तर लुकुल्सने गेलेशियामें, विजित प्रदेशकी हैसियतसे, अपने मित्रो और अनुयायियोंको जमीन आदि दी पर पॉम्पीने, जो थोडे ही फासले पर अपना डेरा डाले हुए था, यह घोषित कर दिया कि लुकुल्सकी आज्ञाएँ कार्यमें नहीं परिणत की जा सकतीं। इसके साथ ही उसने सोलह सौ उच्छृंखल सैनिकोंको छोड, जो स्वयं लुकुल्सके विरोधी थे, सारी सेना अपनी ओर कर ली। इतना ही नहीं वह लुकुलसके युद्धोंको युद्धका स्वाँग और अपने युद्धोंको वास्तविक युद्ध कह कर उसे नीचा दिखानेसे भी बाज नहीं आया।

लुकुल्सने इसके उत्तरमें यह कहा कि युद्धकी छायासे लडना पॉम्पीके लिए कोई नयी बात नहीं है। वह डरपोक पक्षियोंकी तरह अन्य द्वारा मारे हुए शिकारपर हाथ साफ करनेमें अभ्यस्त है। सरटोरियस, लेपिडस आदि पर वस्तुत मेटेल्स, केटुल्स और क्रेसस्सने जो विजय प्राप्त की थी उसे उसने आत्मसात् कर लिया। भागे हुए दासोंपर विजय प्राप्त कर आरमीनिया और पाटसके युद्धोंको समाप्त करनेका सम्मान चाहना उसके लिए कोई आश्चर्यकी बात नहीं है।

लुकुलस वहाँसे रोम लौट आया और पॉम्पी मिथ्रिडेटीज़की खोजमें निकला। इसके पास तीस हज़ार पैदल और दो हज़ार घुड़सवार सेना थी, पर इसे सामना करनेका साहस नहीं हो रहा था। पहले यह एक सुरक्षित पहाड़ी स्थानपर था किन्तु पॉम्पीके वहाँ पहुँचने पर वह उसे छोड़ कर चला गया, क्योंकि वहाँ जलका अभाव था। पॉम्पीने उसी स्थानपर अपना पड़ाव डाला और पौधों तथा दरारोंको देख कर झरने निकल आनेकी आशासे कई कुएँ खोदनेकी आज्ञा दी। बातकी बातमें पड़ावमें जल प्राप्तिका प्रचुर साधन प्रस्तुत हो गया।

पॉम्पीने मिथ्रिडेटीज़के नये पड़ावको जाकर घेर लिया। चालीस दिन घिरे रहनेके बाद उसको भाग निकलनेका मौका मिला। रोगियों और निकम्मे लोगोंका वध कर वह अच्छे सैनिकोंके साथ निकल गया। इस समय उसने भारी घटनाका स्वप्न देखा जिसमें वह मित्रोंके साथ निरापद रूपसे एक जहाजपर वासफारसकी तरफ जा रहा था। पर शीघ्र ही उसने अपनेको तबाहीकी हालतमें एक पोतके भग्नावशेषके सहारे तैरते पाया। वह इस स्वप्नजन्य क्षोभमें ही पड़ा था कि उसके मित्रोंने पॉम्पीके आ पहुँचनेकी सूचना दी। लाचार होकर पड़ावकी रक्षाके लिए उसे युद्ध करना पड़ा, सेना-नायकोंने शीघ्रतामें जहाँतक हो सका सैनिकोंको व्यूह-बद्ध कर युद्धके लिए प्रस्तुत किया।

पॉम्पी शत्रुओंको युद्धके लिए प्रस्तुत देख कर अंधकारमें युद्ध आरंभ करना नहीं चाहता था। वे घिरे रहें, कहीं भाग न सकें, इसीको वह काफी समझता था, और सबसे बड़ कर यह बात थी कि उसके सैनिक शत्रुओंसे कहीं अच्छे थे, इसी कारण वह प्रातःकालकी प्रतीक्षा करना चाहता था, पर पुराने अफसरोंके ज़ोर देने पर उसने आक्रमण करना स्वीकार कर लिया। उस समय अन्धकार ज्यादा नहीं था। चन्द्रमा अस्तोन्मुख था, किन्तु वस्तुओंकी पहचान साफ साफ हो जाती थी। मिथ्रिडेटीजके लिए बड़ी असुविधाकी बात यह थी कि चन्द्रमा रोमनोंकी

पीछेकी तरफ नीचे था जिससे उनके बहुत आगेतक छाया पड़ी हुई थी। उसके सैनिक इस बातका ठीक ठीक अन्दाजा नहीं लगा सकते थे कि रोमन सैनिक कितनी दूरीपर खड़े हैं। वे रोमनोंको बिल्कुल पास समझ कर भाले फेंकते थे पर इसका कोई फल नहीं होता था।

रोमनोंने उनकी गल्ती देख कर तुमुल स्वरके साथ उनपर आक्रमण कर दिया। वे ऐसे घबरा गये कि बातकी बातमें उनके पैर उखड़ गये और बहुत अधिक संख्यामें मारे भी गये। मिथ्रिडेटीज आठ सौ घुड़सवारों-के साथ युद्धके आरंभमें ही रोमन सैनिकोंके बीचसे होकर निकल भागा। इन अश्वारोहियोंने भी कुछ दूर जानेके बाद उसका साथ छोड़ दिया, अब उसके साथ उसके परिवारके केवल तीन व्यक्ति रह गये। उनमें एक उसकी उपपत्नी हाइपसीक्रेटिया थी। इसमें मर्दोंका सा जोश था, यह उस समय मर्दानी पोशाक पहने हुए एक ईरानी घोड़ेपर सवार थी। इसने यात्रा लम्बी होनेकी कभी शिकायत नहीं की और क्लान्त होने पर भी इनोरा दुर्ग पहुँचनेतक सारे मार्गमें मिथ्रिडेटीजकी सेवाके साथ साथ उसके घोड़ेकी भी खबरगीरी करती रही। यहाँसे मिथ्रिडेटीजका विचार आरमीनियामें टिग्रेनीजके पास जानेका था, पर अब टिग्रेनीजने उसका पक्ष छोड़ दिया था और उसे पकड़नेवालेको सौ टैलैंट पारितोषिक देनेकी घोषणा कर रखी थी, इसलिए वह वहाँ न जाकर काल्चिस होता हुआ निकल भागा।

इसी समय युवक टिग्रेनीजके बुलाने पर, जो अपने पिताके विरुद्ध बागी हो गया था, पॉम्पी आरमीनिया पहुँचा। युवक टिग्रेनीज आर्क्सिस नदीके पास पॉम्पीसे मिलनेके निमित्त गया। जब उसके पिताको, जो हालमें ही लुकुल्सके हाथ पराजित हो चुका था, यह मालूम हुआ कि पाम्पी दयालु प्रकृतिका है तो वह अपने मित्रों और सम्बन्धियोंको साथ लेकर पॉम्पीके हाथ आत्मसमर्पण करनेके निमित्त गया। मोर्चाबन्दी-के पास पहुँचने पर पॉम्पीके छड़ीबरदारोंने उसे घोड़ेसे उतर कर पैदल

आनेको कहा। उसने उनके आदेशका पालन करते हुए अपनी तलवार भी उतार कर उन्हींको दे दी। पॉम्पीके सामने आते ही उसने अपना ताज उतार लिया और पृथ्वीपर गिर कर उसके पैरोंको स्पर्श ही करना चाहता था कि पॉम्पीने उसे रोक कर हाथ पकड़ लिया और एक पार्श्वमें पिताको तथा दूसरे पार्श्वमें पुत्रको बैठाया। पॉम्पीने उसे सम्बोधन करते हुए कहा 'लुकुल्सके हाथ आप जो कुछ खो चुके हैं वह तो गया, पर मेरे समयमें आपके पास जो कुछ रह गया है मैं उसे आपको देता हूँ बदलेमें कि आपने जो हानि पहुँचायी है उसकी पूर्तिमें छः हजार टैलेंट आप अदा कर दें। साथ ही आपके पुत्रको मैं सोफेनीका राजा बना दूँगा।"

इन शर्तों तथा रोमनोंके 'राजा' कह कर अभिवादन करनेसे पिता इतना प्रसन्न हुआ कि उसने पॉम्पीके सैनिकों और नायकों आदिको इनाम देनेका भी वादा किया। पर पुत्रको ये सब बातें इतनी नागवार गुजरीं कि भोजनके लिए निमंत्रण देने पर उसने उत्तरमें कहा कि "पॉम्पीसे इस प्रकारके सम्मानकी मुझे कोई आवश्यकता नहीं है, साथमें भोजन करनेके लिए मुझे और कोई रोमन मिल जायगा।" इसपर रोमनोंने उसको बाँध कर जुलूसके लिए रख छोड़ा। इसके कुछ ही काल बाद पार्थियाके नरेशने जामाताकी हैसियतसे युवक टिग्रेनीज़की माँग पेश करते हुए फरात नदीको अपने और रोम साम्राज्यकी सीमा निर्धारित करनेको कहलाया। टिग्रेनीज़के सम्बन्धमें तो पॉम्पीने यह उत्तर दिया कि उसपर श्वशुरकी अपेक्षा पिताका हक़ ज़्यादा है और सीमाके सम्बन्धमें कहा कि इस विषयमें न्याय और अधिकारका ख्याल रखा जायगा।

अब पॉम्पी आरमीनियाकी देखभालके लिए अफ्रेनियसको रख कर मिथ्रिडेटीज़का पीछा करने चला। उसे काकेशस पहाड़के कई देशोंसे होकर जाना पड़ा। इनमें अलबानिया और आइबीरिया, ये ही दो मुख्य थे। अल्बानियावालोंने पहले तो पोम्पीको अपने राज्यसे होकर जानेकी अनुमति दे दी पर अभी वह उन्हींके देशमें था कि जाड़ा शुरू हो गया।

उन्होंने एक त्योहारके अवसरपर आक्रमण करनेके विचारसे चालीस हज़ार सैनिक एकत्र कर लिये और सिरनस नदीको पार भी कर लिया।

पॉम्पीने उन्हें नदी पार करने दिया, यद्यपि यदि वह चाहता तो इसमें बाधा डाल सकता था। इसके बाद उसने आक्रमण कर उन्हें पराभूत कर दिया। शत्रुके बहुतसे सैनिक मारे गये। इस पर वहाँके नरेशने क्षमा-प्रार्थनाके लिए दूत भेजा। पॉम्पीने उसे क्षमा कर सन्धि कर ली। अब पॉम्पीने आइबीरियावालोंके विरुद्ध यात्रा की। ये अलबानियावालोंकी तरह संख्यामें अधिक थे पर उनसे ज़्यादा लड़ाके थे। ये लोग पॉम्पीको हटा कर मिथ्रिडेटीज़को प्रसन्न करना चाहते थे। पॉम्पीने एक भारी युद्धमें इनको परास्त कर नौ हज़ार सैनिकोंका वध किया और दस हज़ारसे अधिक सैनिकोंको रण-बन्दी बनाया।

मिथ्रिडेटीज़का पीछा करनेमें पॉम्पीको बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा क्योंकि वह बासफोरसके आस पासके राज्योंमें छिपा हुआ था। इसी समय अलबानियावालोंके विद्रोह करनेका समाचार मिला। बदला लेने और उन्हें दंडित करनेके विचारसे प्रेरित हो कर वह लौट पड़ा। इस बार सिरनस नदी पार करनेमें उसे बड़ी कठिनाई हुई, क्योंकि शत्रुओंने अपनी तरफ नदीके तटपर बहुत दूर तक खंभे गाड़ कर घेरा लगा दिया था। आगे उसे जल-विहीन लम्बे भू-भागसे होकर जाना था। इस कष्टसे बचनेके लिए उसने दस हजार मशकोंमें पानी भरवा कर साथ ले लिया। अबास नदीके तटपर साठ हज़ार पैदल और बारह हज़ार घुड़सवार युद्धके लिए प्रस्तुत थे, जिनमें बहुतोंके पास अच्छे हथियार भी न थे और बचावके लिए बदनपर सिर्फ़ किसी जानवरकी खाल थी।

राजाका भाई कोसिस इस सेनाका नायक था। उसने पॉम्पीकी तरफ बढ़ कर उसपर भालेसे आक्रमण किया पर पॉम्पीने शीघ्र ही अपने भालेकी मारसे उसे यमपुरी भेज दिया। कहा जाता है कि इस युद्धमें आमेजनोंने भी शत्रुओंका साथ दिया था क्योंकि युद्धके अनन्तर लूटमें

अर्द्धचन्द्राकार ढालें और ऐसी चट्टियाँ मिली थीं जिनका वे ही लोग उपयोग करते हैं। इसके अनन्तर पाम्पी कास्पियन सागरके किनारेसे होकर हिरकेनिया जाना चाहता था पर विषैले सर्पोंके उत्पातके कारण केवल तीन दिनकी राह होने पर भी उसे लौट आना पड़ा। वहाँसे वह लघु आरमीनिया गया। इस समय पार्थिया-नरेश गोर्डाइनमें प्रवेश कर टिग्रेनीजकी प्रजाको बहुत क्षति पहुँचा रहा था। पाम्पीने अफ्रेनियसको उसके मुकाबलेमें भेजा। इसने पार्थिया-नरेशको पराभूत कर अरबेला प्रान्त तक उसका पीछा किया।

मिथ्रिडेटीजकी जितनी उपपत्नियाँ पॉम्पीके सम्मुख उपस्थित की गयीं, सबको उसने उनके पिता या पतिके पास भेज दिया। उनमेंसे अधिकांश किसी न किसी बड़े अफसर या प्रमुख व्यक्तिकी पुत्रियाँ या स्त्रियाँ थीं। स्ट्राटोनिस नामक उपपत्नीको मिथ्रिडेटीज सबसे अधिक प्यार करता था। उसने इसे एक किलेका रक्षक बना कर अपना अधिकांश कोष वहीं रख दिया था। यह एक गवैयेकी लड़की थी। एक भोजके अवसरपर वह इस रमणीके गानसे इतना प्रसन्न हुआ कि उसी रात इसे अपने साथ महलमें लेता गया और उस बूढ़े गवैयेको बिना कुछ कहे सुने वहाँसे विदा कर दिया। प्रातःकाल होने पर बूढ़ा क्या देखता है कि सोने चाँदीके पात्र और आसन आदि पड़े हुए हैं, कई नौकर बहुमूल्य वस्त्र लिये हुए पहनाने को प्रस्तुत हैं, और द्वारपर बेशकीमत साजसे सजा हुआ एक घोड़ा खड़ा है। पहले उसने यही समझा कि ये सब चीजें मेरा अपमान करने और मजाकके लिए रखी गयी हैं। यह सोच कर वह भागना ही चाहता था कि नौकरोंने उसे रोक कर कहा कि ये सब चीजें नरेशने तुम्हारे लिए प्रस्तुत करायी हैं। अभी तो कुछ नहीं है, पीछे देखना, तुम्हें कैसी कैसी चीजें मिलती हैं। निदान उनका कहना मान कर उसने वस्त्र धारण कर लिये और घोड़ेपर सवार होकर कहता फिरा 'यह सब मेरा है।' जब नगर-निवासी उसको देख कर हँसते थे तो वह कहता था "मेरे इस आचरणपर

आप लोगोंको आश्चर्य नहीं होना चाहिए, वस्तुतः आश्चर्य तो इस बातपर होना चाहिए कि मैं खुशीके मारे आप लोगोंपर पत्थर नहीं फेंकता।" सारदोनिमने किला समर्पित कर पॉम्पीको बहुतसी चीज़ें उपहार स्वरूप दीं पर उसने केवल वे ही चीज़ें ली जो देवताओं या जुलूसके उपयुक्त प्रतीत हुईं। इसी प्रकार जब आइबेरिया-नरेशने ठोस सोनेके सिंहासन, मेज और चारपाई आदि भेजीं तो उसने उन्हें कोषाध्यक्षोंको राज्यकोषमें जमा करनेके लिए दे दिया।

सीनमके क़िलेमें पॉम्पीको मिथ्रिडेटीज़के बहुतसे गुप्त काग़ज़ मिले। इन काग़ज़ोंसे उसके चरित्रकी बहुतसी बातें मालूम होती थीं। इनसे ज्ञात होता था कि उसने बहुतेरोंको विष देकर मार डाला था जिनमें उसका पुत्र भी था। उसने सार्डिसके एलसीअसको केवल इसलिए विष दिया था कि उसका घोड़ा घुड़दौड़में इसके घोड़ेसे आगे निकल गया था। उसके तथा उसकी पत्नियोंके स्वप्नोंके फलाफल भी लिख कर रखे गये थे। इनके अलावा उनमें उसकी उपपत्नी मोनिमको भेजे गये या उसके पाससे आये हुए बहुतसे पत्र थे जो कामुकताके भावोंसे भरे हुए थे।

यहाँसे चल कर पॉम्पी एमिसस नगरमें पहुँचा। यहाँ उसने स्वयं भी वही काम लिया जिसके लिए उसने लुकुलसकी निन्दा की थी अर्थात् मिथ्रिडेटीज़ तो एक महती सेना लेकर बासफोरस समुद्रपर अधिकार जमाये बैठा था और वह इधर इस प्रकार प्रान्तोंका प्रबन्ध और पारितोषिकोंका वितरण कर रहा था मानो उसने शत्रुका अन्त ही कर दिया हो।

पॉम्पी सीरियापर अधिकार जमानेके लिए बहुत लालायित था और अरब होते हुए लालसागर तक अपनी विजय-पताका फहराना चाहता था। आफ्रिकामें यही पहला रोमन था जिसने महासागर तकके प्रदेश विजित किये थे। स्पेनमें इसने अटलांटिक महासागरतक रोमसाम्राज्यका विस्तार किया; अलबानियाके साथ युद्धमें हिरकेनियन सागरतक पहुँचनेमें सिर्फ थोड़ीसी कसर रह गयी थी। अब वह लालसागरकी

ओर युद्ध-यात्रा करनेके विचारसे चल पड़ा। इसका और एक कारण यह, था कि मिथ्रिडेटीज़के साथ युद्ध-भूमिमें लड़ना उतना कठिन न था, जितना एक बड़ी सेना लेकर उसके पीछे पीछे धावा करते फिरना था। मिथ्रिडेटीजको तंग करनेके विचारसे उसने एक शक्तिशाली बेड़ा समुद्रमें रख कर उसे यह आज्ञा दे दी कि कोई जहाज रसद लेकर बासफोरसकी तरफ न जाने पावे और अगर कोई व्यक्ति इस प्रकारका प्रयत्न करनेका अपराधी पाया जाय तो उसे प्राणदंड दिया जाय।

यात्रा करते समय उसने मार्गमें जहाँ तहाँ उन रोमनोंके शव यों ही पड़े देखे जो मिथ्रिडेटीज़के साथ युद्धमें मारे गये थे। उसने सम्मानके साथ इन शवोंको दफ़नानेकी आज्ञा दी। लुकुलसके इधर ध्यान न देनेके कारण उसके सैनिकोंका मन उससे बहुत कुछ खट्टा हो गया था। आमेनस पर्वतके पास अरबोंके पराभूत होने पर उसने स्वयं सीरियामें प्रवेश किया और राज्यका कोई न्याय्य अधिकारी न पाकर उसे रोम-साम्राज्यका एक प्रान्त बना दिया। उसने जूडियापर अधिकार कर वहाँके नरेशको कैद कर लिया। उसने कुछ नये नगर निर्माण किये और कुछ नगरोंको अत्याचारियोंसे मुक्त कर स्वाधीनता प्रदान कर दी। पॉम्पीका अधिकांश समय राज्यों और नरेशोंके पारस्परिक झगड़ोंका निपटेरा करनेमें व्यतीत होता था। जहाँ वह स्वयं नहीं जा सकता था वहाँ अपने स्थानपर अपने मित्रोंको भेज देता था। उसकी शक्ति और न्यायप्रियताकी इतनी प्रसिद्धि हो गयी थी कि उसकी ओटमें उसके मित्रों और कर्मचारियोंके दोष बिल्कुल छिप जाते थे। बुराई करनेवालोंको दंड देनेकी उसकी प्रवृत्ति नहीं थी, पर जो लोग उसके पास फर्याद करने पहुँचते थे उनसे वह प्रेमपूर्वक बर्ताव करता था कि वे उस बुराईको बिल्कुल भूल ही जाते थे।

उसके मित्रोंमें डेमिट्रियस नामक एक मुक्तदास उसका विशेष कृपापात्र था। वह समझदार तो था पर बड़ा घमंडी था। कहा जाता है कि एक बार दार्शनिक केटो मन-बहलावके विचारसे कुछ मित्रोंके साथ

अण्टिओक नगर देखने गया, जब कि पॉम्पी नगरमें मौजूद न था। उस समयकी प्रथाके अनुसार केटो पैदल ही जा रहा था और उसके मित्र घोड़ेपर सवार थे। जब वह नगरके पास पहुँचा तो उसने नगर-द्वारपर श्वेतवस्त्रधारी लोगोंकी भीड़ देखी। पहले उसने समझा कि यह भीड़ मेरा स्वागत करनेके लिए खड़ी है। वह नहीं चाहता था कि इस तरह मेरा स्वागत किया जाय, इस कारण यह बात उसे अच्छी न लगी। वह अपने साथियोंको घोड़ेसे उतार कर अपने साथ पैदल लेकर आगे बढ़ा। नजदीक जाने पर भीड़के नायकने माला और छड़ीके साथ आगे बढ़ कर पूछा "डेमिट्रियसको आप लोगोंने कहाँ छोड़ दिया? कबतक उसके आनेकी सम्भावना है?" इसपर केटोके मित्र खिलखिलाकर हँस पड़े। केटो "हा! हतभाग्य नगर" सिर्फ इतना ही कह कर आगे बढ़ गया, अस्तु। पॉम्पी डेमिट्रियसकी गुस्ताखी बहुत कुछ स्वयं ही सह लेता था, इससे वह औरोंसे उतना घृणास्पद नहीं मालूम होने पाता था। कहते हैं कि पॉम्पी जब अपने मित्रोंको भोजके लिए निमंत्रित करता था, तो वह स्वयं उनके स्वागत इत्यादिके लिए बराबर तैयार रहता था, पर डेमिट्रियस इसकी कुछ भी परवाह न कर कानतक शिरोवस्त्र धारण किये पलंगपर बैठा रहता था। इटली वापस जानेके पहले ही उसने रोमके पास एक बहुत रमणीक स्थान खरीद कर आरामके सभी साधन प्रस्तुत कर रखे थे, पर पॉम्पी अपने तीसरे विजय-जुलूसके समयतक एक साधारण भवनसे ही सन्तुष्ट था। यह सत्य है कि जब उसने बादमें रोम-निवासियोंके लिए एक रंगशाला तैयार करायी, तब उसके साथ एक भवन अपने लिए भी बनवाया, जो उसके पहले भवनसे बड़ा और सुन्दर था, किन्तु वह ऐसा न था कि उसे देख कर औरोंके मनमें ईर्ष्याका भाव उत्पन्न हो।

पेट्रा-निकटवर्ती अरब-नरेश अभीतक रोमनोंको उपेक्षाकी दृष्टिसे देख रहा था, किन्तु अब भयभीत होकर पॉम्पीके पास अधीनता सूचक पत्र भेजने लगा। उसकी यह इच्छा दृढ़ करनेके लिए पॉम्पी पेट्राकी तरफ

यदा। पर्तुतोंका खयाल है कि वह मिथ्रिडेटीज़का पीछा करनेसे, जो उसका प्रधान कर्तव्य था, जी चुराता था, इसीसे इधर उधर दौड़ा फिरता था। इसके प्रतिकूल पॉम्पी समझता था कि मुठभेड़ होनेपर मिथ्रिडेटीज़की सेनाको परास्त करना कोई कठिन काम नहीं है, किन्तु उसका पीछा करनेमें अपनी शक्तिका दुरुपयोग करना व्यर्थ ही है। इसीसे इस बीचमें वह और शत्रुओंका सुगमता बनानेकी तरफ ध्यान दे रहा था। पेट्राके निकट पहुँचने पर एक दिन पॉम्पी पड़ाव डालकर घोड़ेपर सवार होकर व्यायामके लिए निकला कि इतनेमें कुछ दूत अपने भालोंको लॉरेल्की शाखाओंसे सुसज्जित किये हुए आ पहुँचे। इस प्रकार भालेमें शाखा बाँधना शुभ समाचारका सूचक है। सैनिक इन दूतोंको देखते ही पॉम्पीके पास एकत्र हो गये। वह अपना व्यायाम पूरा करना चाहता था, पर जब इन सैनिकोंने शोर करना शुरू किया तो उक्त पत्र लेकर पड़ावमें चला आया। सैनिकोंने कोई मंच तैयार न रहनेके कारण खुरजियोंको एकके ऊपर एक रखकर मंच तैयार कर दिया। इसीपर चढ़ कर पॉम्पीने वह पत्र पढ़ सुनाया जिसमें लिखा था कि पुत्रके विद्रोह करने पर मिथ्रिडेटीज़ने आत्महत्या कर ली। यह सुसंवाद सुन कर सैनिकोंने देवताओंकी पूजा और भोज आदि आरम्भ कर दिया। मालूम होता था मानो केवल मिथ्रिडेटीज़की ही मृत्यु नहीं हुई वरन् उनके हजारों शत्रुओंका विनाश हो गया।

इस घटनाके बाद युद्धका अन्त कर पॉम्पीने शीघ्रतापूर्वक अरब देशसे प्रस्थान कर दिया। जब वह एमिसस पहुँचा, तब वहाँपर उसके पास मिथ्रिडेटीज़के पुत्र फारनेसीज़के उपहार और राजवंशके कई व्यक्तियोंके शवोंके साथ मिथ्रिडेटीज़का भी शव लाया गया। मिथ्रिडेटीज़का शव शक्लसे नहीं पहचाना जा सकता था क्योंकि मसाला लगानेवालोंने उसका भेजा नहीं निकाला था, इससे शक्ल खराब हो गयी थी। जो लोग उसे देखनेके लिए उत्सुक थे, उन्होंने उसे शरीरपर लगे हुए घावोंके चिन्होंसे पहचाना। पॉम्पी उसे स्वयं देखना नहीं चाहता था। उसने देवताकी सन्तुष्टिके लिए

इसे सिनोप भेज दिया। उसने इसके वस्त्रों और चमकीले शस्त्रों आदिकी बड़ी प्रशंसा की। उसका यह कमरबन्द जिससे तलवार लटकती थी और जिसमें चार सौ टैलेंट खर्च पड़ा था, पब्लियस नामक एक व्यक्तिने चुरा कर बेच दिया। उसका मुकुट, जो कारीगरीका एक अच्छा नमूना था, उसके पोष्य भाई गेयसने सिलाके पुत्र फॉस्टसको दे दिया। पॉम्पीको पहले इन बातोंकी कोई खबर नहीं थी। बादमें पता चलने पर उसने इन्हें कठिन दण्ड दिया।

इस प्रान्तमें सुव्यवस्था स्थापित कर पॉम्पी बड़े ठाटबाटके साथ घरकी तरफ चला। मिटिलेन पहुँचने पर थियोफेनेसके कहनेसे उसने वहाँके नागरिकोंको स्वाधीनता प्रदान की। फिर वह कवियोंकी प्रतिद्वन्द्विताम‍ें, जो हर तीन मास पर होती थी, दर्शक रूपसे उपस्थित हुआ। इस समय उनकी रचनाका विषय एक मात्र पॉम्पी था। वहाँकी रंगशाला देख कर वह बहुत प्रसन्न हुआ और रोममें भी वैसी ही नाट्यशाला बनवानेके विचारसे उसका नकशा खींच कर उसने अपने साथ रख लिया। रोड्समें उसने दार्शनिकोंके भाषण सुने और प्रत्येकको एक एक टैलेंट पुरस्कार दिया। अथेन्समें भी दार्शनिकोंके प्रति उसने वही उदारता दिखलायी और नगरकी मरम्मत आदिके लिए पचास टैलेंट दिये। इन सब कार्योंसे उसे आशा होने लगी कि मैं बड़ी शान और प्रतिष्ठाके साथ इटली पहुँचूँगा और स्वयं अपनी तरह अपने परिवारको भी मिलनेके लिए उत्कंठित पाऊँगा। पर दैवकी नीति कुछ विचित्र ही है। वह चंद्रमामें कलंककी तरह अच्छीसे अच्छी चीज़में कुछ खराबी पैदा कर देता है। इधर तो वह इस प्रकार ऊँची ऊँची आशाएँ बाँध रहा था, उधर उसके घरकी कुछ और ही हालत थी—उसकी स्त्री मुसियाने उसकी अनुपस्थितिमें अपना सतीत्व नष्ट कर दिया था। जबतक पॉम्पी घरसे बहुत दूर था, तबतक इस बातपर उसको विश्वास ही नहीं होता था। जब घरके निकट पहुँचने पर, इस सम्बन्धमें विचार करनेका अवकाश उसे

मिला तब उसने पत्नीके नाम एक तलाकनामा लिख कर भेज दिया। किन्तु उसने न तो लिख कर और न जबानी कह कर ही तलाकके कारणपर कभी कोई प्रकाश डाला। इसका उल्लेख हमें सिसरोके पत्रोंमें मिलता है।

उस समय पॉम्पीके सम्बन्धमें तरह तरहकी अफवाहें उड़ रही थीं। उसके आनेके पूर्व एक अफवाह रोममें यह फैली हुई थी कि वह अपनी सारी फौजके साथ रोममें प्रवेश कर अपना एकाधिकार स्थापित करेगा, इस अफवाहसे लोग भयभीत और सशंक हो गये। क्रेससने अपने बाल बच्चों और मालमत्तेके साथ सचमुच ही डर कर या लोगोंको भड़कानेके विचारसे नगरका परित्याग कर दिया। इसलिए पॉम्पीने इटलीमें प्रवेश करते ही सैनिकोंको एकत्र किया और यह कह कर कि जुलूसके अवसरपर आप लोग अवश्य आइये, उन्हें अपने अपने घर जानेके लिए विदा कर दिया। इसका परिणाम बड़ा आश्चर्यजनक हुआ। जब लोगोंने पॉम्पीको निःशस्त्र और केवल चुने हुए मित्रोंके साथ इस प्रकार जाते हुए देखा मानों वह विजय-यात्रासे न लौट कर कहीं घूमने गया था, तब झुण्डके झुण्ड लोग उसके प्रति प्रेम प्रदर्शित करने लगे और रोमतक पहुँचानेके निमित्त उसके साथ हो लिये। भीड़ इतनी अधिक हो गयी कि यदि वह राष्ट्रमें कोई परिवर्त्तन करना चाहता तो फौजकी सहायताके बिना भी आसानीसे कर सकता था।

कानूनके अनुसार सेनापति जुलूसके पहले नगरमें प्रवेश नहीं कर सकता था, इसलिए उसने प्रधान शासकके पदके लिए उम्मेदवार पीसोका पक्ष-समर्थन करनेके उद्देश्यसे निर्वाचन कार्य स्थगित करनेके लिए सिनेटसे प्रार्थना की। केटोके विरोध करने पर यह प्रार्थना अस्वीकृत हो गयी। न्याय और कानूनकी रक्षाके लिए केटोने अपने भाषणमें जो निर्भीकता एवं स्वातंत्र्य प्रियता प्रदर्शित की, उसके कारण पॉम्पीने उसकी बड़ी प्रशंसा की। वह केटोको येनकेन प्रकारेण अपना मित्र बना कर उसे अपने अधिकारमें लाना चाहता था। इस उद्देश्यकी पूर्त्तिके निमित्त,

उसने केटोकी दो भतीजियोंमेंसे एकके साथ स्वयं और दूसरीसे अपने पुत्रका विवाह करनेका प्रस्ताव भेजा। केटोने इस प्रस्तावको सम्बन्ध-स्थापन द्वारा अपनेको मिलानेका उपाय समझ कर अस्वीकार कर दिया, जिससे उसकी स्त्री और बहन उससे अप्रसन्न भी हो गयीं। इसी समयके लगभग पॉम्पीने प्रधान शासकका पद अफ्रेनियसको दिलानेके निमित्त मतदाताओंको अपने बागमें बुलाकर रुपये दिये। जब लोगोंको इसका हाल मालूम हुआ तब वे उसे भला बुरा कहने लगे। इसपर केटोने अपनी स्त्री और बहनसे कहा "यदि पॉम्पीके साथ सम्बन्ध हुआ होता तो इस बदनामीमें हम भी अवश्य शामिल किये गये होते।"

पॉम्पीका यह जुलूस इतना शानदार था कि दो दिनका कार्यक्रम रखनेपर भी समयका अभाव प्रतीत हुआ और तैयारी इतनी अधिक थी कि जो चीजें छोड़ दी गयीं उनसे एक बढ़िया जुलूस और निकाला जा सकता था। जुलूसमें कई तख्तियाँ निकाली गयी थीं जिनपर उन सभी राष्ट्रों, दुर्गों, पोतों, नगरों आदिका उल्लेख था जिनको उसने पराभूत या अधिकृत किया था। एक तख्तेपर उपहारों और करका भी उल्लेख था जो उसकी विजयोंके कारण अब लगभग दूना हो गया था। जुलूसमें कैदीके रूपमें माता, स्त्री और पुत्रीके साथ युवक टिग्रेनीज़, जुडिया-नरेश, मिथ्रिडेटीज़की बहन और उसके पाँच पुत्र, कुछ सीथियन महिलाएँ और दस्युओंके नेता आदि थे। इनके अलावा कई देशोंके प्रतिभू और विजय-चिन्ह भी रखे गये थे। सबसे महत्वकी बात यह थी कि उसकी तीसरी विजययात्राका सम्बन्ध संसारके तीसरे भागसे था। और रोमन सेनानायकोंको भी तीन जुलूसोंका सम्मान मिला था, पर विजयकी दृष्टिसे यह सबसे बड़ा हुआ था क्योंकि इसने पहली यात्रामें आफ्रिका, दूसरीमें यूरोप और तीसरीमें एशिया विजित कर एक प्रकारसे सारे संसार-को ही वशमें कर लिया था और तीनों यात्राओंके अलग अलग तीन जुलूस निकाले थे।

जो लोग पॉम्पीको हर बातमें सिकन्दरके समान ही दिखलानेकी चेष्टा करते हैं, वे इस समय उसकी अवस्था सिर्फ चौंतीस वर्षकी बतलाते हैं, पर वह वस्तुतः चालीस वर्षका हो चुका था। यदि इसी समय उसके जीवनका अन्त हो गया होता तो उसके हकमें बहुत अच्छा होता, क्योंकि परवर्ती जीवनमें या तो उसे अपनी समृद्धिके कारण औरोंकी घृणा और ईर्ष्याका लक्ष्य बनना पड़ा या फिर ऐसी विकट कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा जिनसे छुटकारा पाना मुश्किल था। उसने अपनी योग्यतासे जो अधिकार प्राप्त किये, उनका उपयोग औरोंकी बुराई बढ़ानेमें किया। फल यह हुआ कि ज्यों ज्यों उन लोगोंकी शक्ति बढ़ती गयी त्यों त्यों उसकी महत्ता घटती गयी। अन्तमें अपनी बढ़ी हुई शक्तिके कारण ही उसका पतन हुआ। जिस प्रकार 'आक्रमणकारियोंके हाथमें वही दुर्ग, जो पहले उनके विपक्षियोंकी शक्ति बढ़ानेमें सहायक था, अब इनकी शक्तिका कारण बन जाता है, उसी प्रकार पॉम्पीकी सहायता पाकर सीज़रने अपनी शक्ति इतनी बढ़ा ली कि अपने देशके साथ साथ वह स्वयं पॉम्पीके अधिकारको भी पददलित करनेमें समर्थ हो गया, अस्तु।

पॉम्पीने लुकुल्सके साथ एशियामें अपमानजनक व्यवहार किया था। जब वह (लुकुल्स) स्वदेश लौटा तो सिनेटने बड़े सम्मानके साथ उसका स्वागत किया; पॉम्पीके आने पर लुकुलसका यह सम्मान और भी बढ़ गया और इसकी महत्त्वाकांक्षा रोकनेके निमित्त सिनेटने लुकुलसको शासन-भार ग्रहण करनेके लिए भी उत्तेजित किया, पर आरामतलब हो जानेके कारण कार्य करनेका उसमें उतना उत्साह नहीं रह गया था। फिर भी, उसने पॉम्पीके विरुद्ध कार्य शुरू कर दिया। पॉम्पीने उसकी जो आज्ञाएँ रद्द कर दी थीं, उन्हें उसने फिर जारी करा लिया और केटोकी सहायतासे सिनेट-सभामें भी अपनी प्रधानता स्थापित कर ली।

इस तरफसे आशा भंग होने पर पॉम्पीने सार्वजनिक शासकोंकी शरण ली। साथ ही अब वह नवयुवकोंके साथ विशेष घनिष्ठता दिखलाने

लगा। इनमें क्लाडियस नामका एक बडा ही दुष्ट और नीच व्यक्ति था। यह जनताकी आँखोंमें धूल डाल कर अपने प्रस्तावों या भाषणोंका समर्थन करानेके निमित्त पॉम्पीको सर्वत्र घसीटे चलता था। निदान उसने पॉम्पीसे पारितोषिकके तौर पर, मानो उसने उसका अपमान न कर बड़ी मेहरबानी की हो, सिसरोकी मित्रता छोड देनेका अनुरोध किया जिसने सार्वजनिक कार्योंमें उसकी बडी मदद की थी। पॉम्पीने उसकी बात मान ली। इसीसे जब विपत्तिमें पड कर सिसरो उससे सहायता माँगने आया, तब पॉम्पीने उससे मुलाकात ही नहीं की। जब उसकी तरफके कुछ लोग उससे बात चीत करने आये तो वह खिडकीकी राह दूसरी जगह चला गया। तब अपने मुकदमेके फलका अनुमान कर सिसरो चुपचाप रोम छोड कर बाहर चला गया।

लगभग इसी समय सीजरने युद्ध क्षेत्रसे लौट कर कुछ ऐसी नीति ग्रहण की जिससे उसका पक्ष बहुत सबल हो गया और भविष्यके लिए शक्ति भी बहुत बढ गयी। प्रधान शासकके पदके लिए उम्मीदवार होने पर उसने देखा कि पॉम्पी और क्रेससमें परस्पर शत्रुता होनेके कारण यदि मैं किसी एकसे मिल जाऊँ तो दूसरा शत्रु बन जायगा, इसलिए उसने दोनोंमें मेल करानेका निश्चय किया। यद्यपि यह एक अच्छा कार्य था और जनताके लिए कल्याणकारक भी था परन्तु इसके मूलमें सीजरकी छद्मनीति थी जिससे इसका कोई महत्त्व नहीं रह गया। राष्ट्रमें परस्पर दो विरोधी दलोंके होनेसे, पोतके बोझकी तरह दोनों ओरका अधिकार सधा रहता है, पर दोनोंके मिल जानेसे एक ओरका बोझ बहुत बढ जाता है। परिणाम यह होता है कि राष्ट्र रूपी पोत डूब जाता है। जो लोग रोमके समस्त सङ्कटोंका कारण पॉम्पी और सीजरका परस्पर मतभेद मानते हैं, वे केटोके शब्दोंमें, भूल करते हैं, क्योंकि राष्ट्रमण्डल पर सबसे पहला और कदाचित् सबसे बडा आघात उनकी पारस्परिक शत्रुतासे नहीं, बल्कि मित्रतासे ही पहुँचा।

प्रधान शासक निर्वाचित होने पर सीजरने उपनिवेश स्थापित करने और जमीन वितरण करनेके सम्बन्धमें विधान बना कर गरीबों और कर्मचारियों का साथ देना शुरू किया और इस प्रकार उसने अपने प्रधान शासकके पदकी कद्र भी बहुत घटा दी। जब बाइबूलसने, जो दूसरा प्रधान शासक था, उसका विरोध किया तो उसने पॉम्पीको व्याख्यान-मंचपर जनताके सम्मुख खड़ा कर उक्त विधानोंके सम्बन्धमें उसकी राय पूछी। पॉम्पीने उनके पक्षमें अपना मत दिया। तब सीजरने कहा 'अगर कोई इन विधानोंको ऐसा बखेड़ा खड़ा करे तो क्या आप जनसाधारणका साथ देनेके लिए तैयार हैं?' पॉम्पीने उत्तर दिया "हाँ, मैं तैयार हूँ। यदि कोई शस्त्र ग्रहण करनेकी धमकी दे तो मैं अपनी ढाल तलवार लेकर प्रस्तुत रहूँगा।" इस प्रकारकी गर्वभरी बात पॉम्पीने कभी नहीं कही थी। उसके मित्रोंने उससे यह कहलानेकी चेष्टा की कि यह बात भूलसे निकल गयी है, पर पीछे उसके कार्योंसे यह स्पष्ट हो गया कि वह सीजरके कामके लिए सब तरहसे तैयार है। एकाएक उसने सीजरकी लड़की जूलियासे, जिसका विवाह सिपियोके साथ शीघ्र ही होनेवाला था, स्वयं विवाह कर लिया। सिपियोका गुस्सा ठंढा करनेके लिए उसने उसके साथ अपनी लड़कीका विवाह कर दिया जो सिलाके पुत्र फास्टसके साथ ब्याही जानेवाली थी। सीजरने भी इसी समय अपना विवाह पीसोकी लड़कीसे किया।

इसके अनन्तर पॉम्पीने नगरमें बहुतसे सैनिक एकत्र कर लिये और जो मनमें आया बलपूर्वक करता गया। एक दिन जब लुकुलस और केटोके साथ द्वितीय कौन्सल बाइबूलस न्यायालय जा रहा था, तो ये लोग एकाएक उसपर टूट पड़े। उसके डंडे तोड डाले और किसीने एक टोकरी गोबर उसके सिरपर उडेल दिया। हाथापाईमें और दो सार्वजनिक शासक जो बाइबूलसको साथ ले जा रहे थे, घायल हो गये। इस प्रकार जब न्यायालय विरोधियोंसे खाली हो गया तो भूमि वितरणका प्रस्ताव पास करा लिया गया। इस प्रस्तावसे इन लोगोंने जनताको इस

तरह अपने पक्षमें कर लिया कि ये लोग जो कुछ पेश करते गये वह बिना कुछ पूछताछ किये पास करती गयी। इस प्रकार पॉम्पीके वे सब कार्य और आज्ञाएँ मुस्तकिल हो गयीं जिनका लुकुल्स विरोध करता था, सीज़रको पाँच वर्षके लिए इलिरियमके साथ गॉलके प्रान्त और चार पूरी पल्टनें दी गयीं, तथा सीज़रका श्वशुर पीसो और पॉम्पीका खुशामदी गेबिनियस दूसरे वर्षके लिए प्रधान शासक चुने गये।

बाइबूलस प्रधान शासक होकर भी आठ महीनेतक घरसे बाहर नहीं निकला। वहींसे वह ऐसे आदेश भेजा करता था जिनमें इन दोनोंपर काफी आक्षेप होते थे। केटो अब नबी हो गया था और उसमें भविष्य-कथनकी ही धुन समायी हुई थी। वह कुलीन-सभामें और कुछ काम न कर, राष्ट्रमंडल तथा पॉम्पीपर कैसे कैसे संकट पड़ेंगे, इसी सम्बन्धमें भविष्य-कथन किया करता था। वृद्धावस्थाका बहाना कर लुकुलसने भी राजकाजसे छुट्टी ले ली। इसपर पॉम्पीने चुटकी लेते हुए कहा था 'वृद्धावस्थाके लिए राजपदकी अपेक्षा भोग-विलास अधिक अनुकूल नहीं हो सकता।' कुछ कालके अनन्तर यह कथन उसीके लिए अक्षरशः चरितार्थ हुआ क्योंकि वह अपनी नव-विवाहिता स्त्रीका इतना भक्त हो गया कि न्यायालयके कार्योंकी ज़रा भी परवा न कर देहातमें ही उसके साथ रहने लगा। स्थिति यहाँतक खराब हो गयी कि सार्वजनिक शासक क्लाडियस उससे घृणा करने लगा और अपने पदकी मर्यादाके बाहर जाने लगा। उसने सिसरोको निर्वासित कर केटोको सैनिक कार्यके बहाने साइप्रस भेज दिया। इधर सीज़र भी युद्ध-यात्राके लिए गॉल चला गया। मैदान साफ देख कर अपने बलकी जाँच करनेके निमित्त वह पॉम्पीके आदेशोंको रद करने लगा। टिग्रेनीज़को कारागारसे मुक्त कर उसने मित्रकी हैसियतसे अपने साथ रख लिया, अब वह पॉम्पीके मित्रोंके विरुद्ध भी कारवाई करने लगा। अन्तमें एक बार जब कि पॉम्पी भी किसी कार्यसे न्यायालयमें गया हुआ था, क्लाडियसने बहुतसे बदमाशोंके साथ वहाँ जाकर जनतासे

इस प्रकार पूछना शुरू किया "कौन सेनापति लम्पट है?" किसने अपना मनुष्यत्व खो दिया है? एक उँगलीसे सिर कौन खुजलाता है? सबने पास्र उन कर्मीगोंने एक स्वरसे उत्तर दिया 'पॉम्पी'।

इससे पॉम्पी बहुत चिढ़ गया क्योंकि उसे न तो इस प्रकारकी बातें सुननेकी आदत थी और न ऐसे लोगोंका सामना करनेका अनुभव ही था। सिनेटके सदस्योंको इस कार्यसे प्रसन्न होते देख कर उसे और भी दुःख हुआ। बात यहाँतक बढ़ गयी कि वहाँ दोनों दलोंके लोग परस्पर भिड़ गये। क्लाडियसका एक दास नंगी तलवार लेकर पॉम्पीकी तरफ अग्रसर होते हुए देखा गया। इसी बातको लेकर पॉम्पी शासनकाल समाप्त होनेके समयतक न्यायालयमें कभी नहीं आया, हालाँ कि उसके न आने-का प्रधान कारण क्लाडियसकी धृष्टता और उसके अपशब्दोंका भय ही था। वह बराबर घरपर ही रहता था और सिनेटके सदस्यों तथा सरदारोंका क्रोध शान्त करनेके उपायके सम्बन्धमें अपने मित्रोंसे परामर्श किया करता था। एक मित्रने जूलियाको तलाक देकर सीजरका साथ छोड़नेकी राय दी, पर इसके लिए वह तैयार न था। कुछ लोगोंने क्लाडियसके विरोधी और कुलीन-सभाके प्रिय सिसरोको बुलानेकी राय दी। इसके लिए वह तैयार हो गया। उसने एक बड़े दलके साथ आकर सिसरोके भाईसे दरख्वास्त दिलवायी। बड़ी तकरार और मारपीटके बाद, जिसमें कई आदमी धराशायी भी हुए, क्लाडियस पर विजय प्राप्त हुई।

लौटनेके साथ ही सिसरो सिनेट और पॉम्पीके बीच समझौता कराने-का प्रयत्न करने लगा। अन्नके आयात सम्बन्धी विधानका समर्थन कर उसने एक बार पुनः पॉम्पीका प्रभुत्व स्थापित करा दिया। इस विधानके कारण सभी बन्दरगाह, बाजार, भाण्डार आदि उसके शासनमें गये, जिससे व्यापारी और किसान भी उसके अधीन हो गये। वाणिज्यपति नियुक्त होने पर उसने सर्वत्र अपने अफसरोंको भेज कर तथा स्वयं भी सिसिली, सार्डीनिया और आफ्रिकाकी यात्रा कर बहुत अधिक अन्न

एकत्र कर लिया। वह कुछ तैयारी कर घरके लिए प्रस्थान ही करनेवाला था कि समुद्रमें एक भारी तूफान आया। पोत-नायकोंको पोतोंके निरापद होनेमें बहुत सन्देह था पर पॉम्पीने पहले स्वयं पोतारूढ़ होकर नाविकोंको पोत खोल देनेकी आज्ञा देते हुए कहा 'पोत खोल देना ज़रूरी है, जीना ज़रूरी नहीं है।' इस उत्साह और साहसके साथ आगे बढ़ने पर उन लोगोंकी यात्रा निर्विघ्न समाप्त हुई। बाजार गल्लेसे और समुद्र पोतोंसे भर गये। इस प्रकार केवल रोमके ही लिए काफ़ी रसद नहीं मिल गयी, बल्कि और स्थानोंके लिए भी अन्न प्रस्तुत हो गया।

उधर सीजर गॉलमें युद्धोंके कारण अपनी प्रसिद्धि बढ़ाता जा रहा था। ऊपरसे तो मालूम होता था कि वह बेल्जियनों तथा जिटेनों आदिसे उलझा हुआ है, पर भीतर ही भीतर धूर्ततापूर्वक रोमवालोंसे सम्बन्ध रखते हुए पॉम्पीकी जड भी खोद रहा था। इधर तो वह अपनी सैनिक शक्ति बढ़ा रहा था और उधर बहुमूल्य उपहार भेज कर रोमकी जनताको प्रलोभित कर रहा था। साथ ही, वह द्रव्यसे शासकोंकी सहायता कर अपने मित्रोंकी संख्या-वृद्धि करता जा रहा था। उसने अपना प्रभाव इतना अधिक बढ़ा लिया कि जब वह आल्प्स पर्वत पार कर लुका नगरमें शीत-काल व्यतीत करनेके निमित्त ठहरा तो उससे मिलनेके निमित्त बेशुमार लोग वहाँ जा पहुँचे। इन लोगोंमें सिनेटके दो सौ सभ्योंके अलावा पॉम्पी और क्रेसस भी थे। सिर्फ प्रान्तीय शासकों और उपशासकों (प्रीटरों) के ही एक सौ बीस छड़ीबरदार उसके द्वारपर देख पड़ते थे। अन्य लोगोंको तो उसने आशा देकर और धनसे पूर्ण कर विदा कर दिया, पर क्रेसस और पॉम्पीके साथ यह समझौता किया कि ये दोनों अगले वर्ष प्रधान शासकके पदके लिए उम्मीदवार खडे हों, सीजर अपने सैनिकोंको भेज कर निर्वाचनमें सहायता दे और चुने जाने पर वे लोग कुछ प्रान्त और कुछ पल्टनोंका शासन स्वयं अपने लिए रखें तथा सीज़रको उसी पदपर पांच वर्षके लिए और रहने दें। इस समझौतेकी बात प्रकट हो जाने पर

रोमके प्रमुख लोगोंको इससे बड़ी घृणा और क्रोध हुआ। मारसेलिनसने जन-साधारणकी सभामें इनसे पूछा कि आप लोग प्रधान शासकके पदके लिए उम्मीदवार होंगे या नहीं? जनताके आग्रह करने पर पॉम्पीने उत्तर दिया 'हो भी सकता हूँ और नहीं भी हो सकता।' क्रेससने कहा 'राष्ट्र-मंडलके हितकी दृष्टिसे जैसा उचित मालूम होगा करूँगा', पर जब मारसेलिनस जोशमें आकर पॉम्पीपर आक्षेप करता ही गया तब पॉम्पीने कहा "मारसेलिनस निश्चय ही बुरा आदमी है, क्योंकि यद्यपि मैंने ही उसे मूकसे वाचाल और कंगालसे धनी बनाया है, फिर भी वह मेरे प्रति तनिक भी कृतज्ञता प्रकट नहीं करता।"

इस पदके कई उम्मीदवार तो बैठ गये पर केटोके उत्साहित करनेसे लूशियस डोमीशिअस डटा रहा। पॉम्पीके दलने यह देख कर कि केटोके कारण कुलीन-सभाके प्रायः सभी अच्छे सदस्य डोमीशिअसके ही पक्षमें हो जायँगे, न्यायालयमें उसका प्रवेश रोक देनेका निश्चय किया। इन लोगोंने कुछ सशस्त्र व्यक्तियोंको भेज कर सबको मार भगाया। केटो भी डोमीशिअसकी रक्षाके प्रयत्नमें घायल हुआ। इस प्रकार पॉम्पी और क्रेसस प्रधान शासकका पद प्राप्त कर लेनेमें सफल हुए किन्तु इसके बाद उन्होंने व्यवहारमें सौजन्य नहीं दिखलाया। जन-साधारण केटोको उपशासक चुनने जा रहे थे, पर मत देनेके समय पॉम्पीने किसी अपशकुनका बहाना बना कर सभा भंग कर दी और लोगोंको रिश्वत देकर वैटीनियसको इस पदके लिए चुनवा दिया। ट्रेबोनिअस नामक सार्वजनिक शासक द्वारा कई विधान बनवा कर उस समझौतेकी शर्तें पूरी करायी गयीं जो सीज़रके साथ हुआ था। इसके अनुसार सीज़र और पांच वर्षके लिए गॉलमें रखा गया, सीरिया और पार्थियाका युद्ध क्रेससके अधीन किया गया तथा पॉम्पीने स्पेनके साथ सारा आफ्रिका और चार पल्टनें अपने पास रखीं जिनमेंसे दो पल्टनें सहायताके लिए सीज़रके पास भेज दी गयीं।

शासनकाल समाप्त होने पर क्रेसस अपने प्रान्तमें चला गया किन्तु

पॉम्पी नवनिर्मित रंगशालाके उद्घाटन और समर्पणके निमित्त कुछ दिनों तक रोममें ठहरा रहा। इस अवसरपर कसरत, खेल और गान आदिके अलावा वन्य पशुओंका शिकार तथा उनके साथ द्वन्द्व युद्ध भी हुआ था, जिसमें पाँच सौ सिंह मारे गये। हाथियोंकी लड़ाई बड़ी भयानक और कुतूहलपूर्ण थी।

इससे पॉम्पीका सम्मान और लोकप्रियता बहुत बढ़ गयी। वह प्रान्तोंका काम अपने मित्रोंको सौंप कर स्वयं अपनी स्त्रीके साथ इटलीमें जहाँ तहाँ भ्रमण करने लगा, जिससे लोग उससे द्वेष भी करने लगे। यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि स्त्रीको पतिके लिए अधिक चाह थी या पतिको स्त्रीके लिए; ऐसा कहा जाता है कि वह पृथक् होकर उसे दुःखित नहीं कर सकता था। पॉम्पीका शारीरिक सौन्दर्य तो विशेष आकर्षक नहीं था, किन्तु उसका व्यवहार अवश्य इतना सौजन्यपूर्ण था कि जिसके कारण वह अपनी पत्नीका स्नेहभाजन बन गया। जूलिया उसे कितना चाहती थी, यह उस घटनासे स्पष्ट है जो चुनावके एक अवसर पर हुई थी। किसी बातपर झगड़ा हो जानेके कारण लोगोंमें मारपीट हो गयी। कुछ लोग तो पॉम्पीके बिलकुल पास ही धराशायी हुए जिससे रक्तरञ्जित हो जानेके कारण पॉम्पीको अपने कपड़े बदलने पड़े। जब उसके नौकर ये कपड़े लेकर उसके घर गये तो द्वारपर हल्ला मच गया और गर्भवती जूलिया इन्हें देखते ही बेहोश हो गयी। उस समय तो दौड़धूप करनेसे वह होशमें आ गयी पर उसके दिलमें इस तरह भय बैठ गया था कि कुछ ही समयके बाद उसका गर्भ स्खलित हो गया। जब वह पुनः गर्भवती हुई तब यथासमय उसके एक पुत्री उत्पन्न हुई पर बीमारीके कारण प्रसूतिका-गृहमें ही उसकी मृत्यु हो गयी। कुछ दिन बाद वह पुत्री भी चल बसी। पॉम्पीने उसे अल्वामें अपने घरके पास दफनानेका प्रबन्ध कर रखा था पर जनताने बलपूर्वक शव लेकर युद्धदेव 'मार्स' के अहातेमें दफनाया। यह कार्य जनताने उस महिलाके प्रति

महानुभूति होनेके कारण किया, सीजर या पॉम्पीके खयालसे नहीं। इन दोनोंमें भी जनता उस समय सीजरका सम्मान पॉम्पीकी अपेक्षा अधिक करती थी, हालाँ कि वह वहाँ मौजूद नहीं था।

भावी सकटकी आशंकासे सारे नगरमें उथल-पुथल मच गयी, क्योंकि जूलियाकी मृत्युसे सीजर और पॉम्पीका पारस्परिक सम्बन्ध सूत्र नष्ट हो गया जिसकी ओटमें दोनों अपनी महत्वाकाक्षा सिद्ध करनेमें तत्पर थे। इसके कुछ ही कालके बाद दूतोंने आकर क्रेससके मरनेकी खबर दी। इससे गृहयुद्धकी आशका और भी बढ़ गयी क्योंकि पॉम्पी और सीजर दोनों ही उसके भयसे दबे हुए थे। मनुष्यका स्वभाव भी कैसा विचित्र है। कहाँ तो एक छोटी सी कमलीपर चार फकीर बैठकर निर्वाह कर लेते हैं और कहाँ इतने बडे विस्तृत साम्राज्यमें दो व्यक्तियोंका निर्वाह नहीं हो सकता। पॉम्पीने यह देख कर कि सीजर अपनी सेना भग करना पसन्द न करेगा, अपने अधिकारोंको बढ़ा कर अपनेको सुरक्षित करना चाहा। प्रकट रूपमें वह सीजरके प्रति अविश्वास न कर उसे उपेक्षाकी दृष्टिसे ही देखता रहा। पर जब उसने यह देखा कि नागरिक उत्कोच पाकर ऐसे लोगोंको शासनके पदोंपर नियुक्त करते जाते हैं जिन्हें वह पसन्द नहीं करता, तो उसने कार्योंकी गति विधिपर ध्यान न देकर अराजकता फैलने दी। अब एक राष्ट्रसूत्रधार नियुक्त करनेकी आवश्यकता प्रतीत होने लगी। जब शासक लुकुल्सने इस पदपर पॉम्पीको नियुक्त करनेका प्रस्ताव किया। केटोने इस प्रस्तावका इतना विरोध किया कि उक्त शासकके पदच्युत होनेकी आशका होने लगी, पर पॉम्पीके कुछ मित्रोंने उसकी ओरसे यह कहा कि पॉम्पी इस पदके लिए इच्छुक नहीं है और न उसे यह पद स्वीकार ही होगा, इसपर केटोने पॉम्पीकी प्रशसा करते हुए राष्ट्रसे शान्ति बनाये रखनेका अनुरोध किया। पॉम्पी इस अनुरोधको अस्वीकार न कर सका।

कुछ कालके अनन्तर अराजकताके चिन्ह पुन दृष्टिगोचर होने लगे।

राष्ट्र-सूत्रधारकी नियुक्तिके लिए चारों ओर आवाज सुनाई देने लगी। केटोने राष्ट्र-सूत्रधारके अनियंत्रित पदपर पॉम्पीको नियुक्त कराना उचित न समझ कर उसको किसी ऐसे पदपर रखवाना चाहा जो विधानोंसे मर्यादित हो। याइबूलस नामक पॉम्पीके एक विरोधीने केवल पॉम्पीको ही प्रधान शासक बनानेका प्रस्ताव करते हुए कहा कि इस कार्यसे राष्ट्रमंडल की सारी गड़बड़ी मिट जायगी और यदि ऐसा न भी हो सका तो कमसे कम एक योग्यतम व्यक्तिका सम्मान तो होगा ही। इस प्रस्तावको सुन कर सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये और जब केटो बोलनेके लिए खड़ा हुआ तो सबको यही आशा हुई कि वह इस प्रस्तावका विरोध करेगा। उसने कहा "मैं स्वयं यह प्रस्ताव उपस्थित करना पसन्द न करता, पर चूँकि यह एक अन्य व्यक्तिके द्वारा उपस्थित किया गया है, इसलिए मैं इसे स्वीकार कर लेना अच्छा समझता हूँ, क्योंकि मेरी समझमें अराजकताकी अपेक्षा किसी प्रकारकी भी शासन-प्रणाली अच्छी ही है और ऐसे संकटके समय शासकके पदके लिए पॉम्पीसे बढ़कर और कोई व्यक्ति नज़र नहीं आता।" यह प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुआ और आवश्यकता प्रतीत होनेपर पॉम्पीको एक सहायक भी रखनेका अधिकार दिया गया।

प्रस्ताव स्वीकृत होनेकी घोषणा हो जाने पर पॉम्पीने केटोकी प्रशंसा करते हुए उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की और शासनके कार्योंका संचालन करनेमें उसकी सम्मतिके लिए प्रार्थना की। इसके उत्तरमें केटोने कहा कि मैंने जो कुछ कहा है, पॉम्पीके खयालसे नहीं, बल्कि राष्ट्रमण्डलकी सेवाकी दृष्टिसे कहा है, इसलिए पॉम्पीके लिए मुझे धन्यवाद देनेका कोई कारण नहीं है। तनहाईमें पूछने पर मैं राय देनेके लिए सदा प्रस्तुत रहूँगा, अन्यथा मुझे जो कुछ उचित मालूम होगा सर्वसाधारणके सामने निवेदन कर दूँगा।

नगरमें वापस आकर पॉम्पीने मेटेलस सिपियोकी विधवा कन्या कारनेलियासे विवाह किया। सौन्दर्यके व्यतिरिक्त इस युवतीमें और भी

बहुतसे गुण थे। यह अच्छी पढ़ी लिखी थी, वाद्यकलामें कुशल थी, रेखागणित भी जानती थी और इसने दर्शनशास्त्र सम्बन्धी व्याख्यानोंमें भी लाभ उठाया था। इन बातोंके होते हुए भी वह गर्वीली न हुई, जैसी कि इस अवस्थाकी स्त्रियाँ इतना पढ़ लिख कर प्राय हो जाती हैं। उसके खानदानी होनेमें भी किसीको कोई शक न था। पर पॉम्पीको देखते हुए उसकी अवस्था इतनी कम थी कि लोग उसे पॉम्पीके लिए तो नहीं बल्कि उसके पुत्रके उपयुक्त समझते थे। इस विवाहके कारण कुछ लोग उसपर राष्ट्रीय परिस्थितिकी उपेक्षा करनेका दोष भी लगाते हैं, क्योंकि जिस समय राष्ट्र आपत्तिके चंगुलमें फँसा हुआ था, उस समय वह विवाहके उपलक्ष्यमें उत्सव मनाता फिरता था, सो भी इस हालतमें जब कि वही सारे राष्ट्रमें शान्ति स्थापनके लिए नियमके विरुद्ध एक मात्र राष्ट्र-सूत्रधार बनाया गया था।

किन्तु कुछ ही दिनोंके बाद वह सार्वजनिक कार्योंकी तरफ ध्यान देने लगा। उसने सर्वप्रथम उन लोगोंकी खबर ली जिन्होंने रिश्वतके जरिए पद प्राप्त किये थे। किस प्रकार इन लोगोंका विचार किया जायगा, इस सम्बन्धमें भी उसने कुछ कानून बना दिये और स्वयं भी सैनिकोंके साथ न्यायालयमें जाकर न्याय वितरण आदिकी व्यवस्था करने लगा। पर जब उसके श्वशुर सिपियोपर अभियोग लगाया गया तो उसने तीन सौ साठो न्यायकर्त्ताओंको अपने घर बुला भेजा और उनसे उसपर मेहरबानी रखनेका अनुरोध किया। अभियोक्ताने अभियुक्तके साथ न्यायकर्त्ताओंको जाते हुए देख कर अभियोग उठा लिया। इससे पॉम्पीकी बड़ी बदनामी हुई। प्लैंकसके सम्बन्धम उसकी बदनामी और भी बढ़ गयी। उसने कानून बना कर विचाराधीन व्यक्तियोंके सम्बन्धमें प्रशसात्मक भाषण करनेकी प्रथा बन्द कर दी थी पर स्वयं वही न्यायालयमें खुलमखुला प्लैंकसकी प्रशसामें भाषण करने लगा। केटोने, जो न्यायकर्त्ताओंमें था, विधानके विरुद्ध यह भाषण सुननेसे इनकार करते हुए

उँगलियोंसे अपने कान बन्द कर लिये। इसपर फैसला सुनानेके पहले ही यह न्यायकर्त्ताके आसनसे पृथक् कर दिया गया, फिर भी शेष न्यायकर्त्ताओंने प्लँकसको अपराधी पाकर उसे दण्ड दिया जिससे पॉम्पीका बड़ा अपमान हुआ। इसके पश्चात् शीघ्र ही जब हिपसियस नामक व्यक्तिपर, जो प्रधान शासक रह चुका था, अभियोग लाया गया तो उसने भोजन करने जाते समय पॉम्पीके पैरोंपर गिरकर दयाके लिए प्रार्थना की पर उसने उसकी तरफ कुछ ध्यान न देते हुए सिर्फ यही कहा कि तुमने और कुछ तो नहीं किया, हाँ भोजनका मजा अवश्य किरकिरा कर दिया। पॉम्पीमें पक्षपात करनेका बड़ा भारी दोष था। फिर भी और कार्योंको बड़ी बुद्धिमत्तासे सम्पादित कर उसने शासनको सुव्यवस्थित कर दिया। अपने शासन-कालके अन्तिम पाँच महीनोंके लिए उसने अपने श्वशुरको सहायक रूपमें रख लिया। जो प्रान्त उसके अधिकारमें रखे गये थे, वे और चार वर्षोंके लिए उसको दिये गये। साथ ही उसकी सेनाके लिए एक हज़ार टैलेंट वार्षिक खर्च राजकोषसे देनेका निश्चय हुआ।

इससे सीज़रके कुछ मित्रोंको यह कहनेका मौक़ा मिला कि सीज़रका भी कुछ ख़याल होना चाहिए। उसने सैनिक कार्यों द्वारा साम्राज्यकी जो सेवा की है, उसके विचारसे उसे कमसे कम या तो दूसरी बार प्रधान शासकका पद मिलना चाहिए या जिन प्रान्तोंको उसने जीता है उनपर उसका शासन-काल बढ़ा देना चाहिए, जिसमें उसके परिश्रमका फल उसके किसी उत्तराधिकारीको न मिलकर उसीको प्राप्त हो। इस विषयके सम्बन्धमें कुछ बहस छिड़ जाने पर पॉम्पीने जाहिरा तौरपर सीजरके प्रति कृपा दिखाने और ईर्ष्या-भावपर परदा डालनेके निमित्त सीज़रका पक्ष लेते हुए कहा कि सीज़रने पत्र द्वारा उत्तराधिकारीके लिए इच्छा प्रकट की है, यदि उसे अनुपस्थित होनेपर भी प्रधान शासकके पदके लिए खड़े होनेकी इज़ाजत दी जाय तो उचित ही होगा। केटोदलने इसका घोर विरोध करते हुए कहा कि यदि वह नागरिकोंकी अनुकूलता प्राप्त करना

चाहता है तो उसे सेना भङ्ग करनेके अनन्तर व्यक्तिगत हैसियतसे आकर इसके लिए प्रयत्न करना चाहिए। इसका कुछ प्रत्युत्तर न देकर पॉम्पी चुपचाप रह गया, जिससे सीज़रके प्रति उसके मैत्री-भावमें लोगोंको बहुत कुछ सन्देह होने लगा। इसके बाद तुरन्त ही पॉम्पीने पार्थिया-युद्धमें भेजनेके बहाने सीज़रसे अपनी दोनों पल्टनें माँग भेजीं। सीज़रने इस माँगका वास्तविक अभिप्राय समझते हुए भी अच्छी तरह पुरस्कृत कर पल्टनें भेज दीं।

इसके अनन्तर पॉम्पी नेपिल्समें एक भीषण रोगसे आक्रान्त हुआ। नीरोग होनेपर प्रक्सैगोरसने वहाँवालोंको इसके उपलक्ष्यमें देवताओंके बलिदान चढ़ानेकी राय दी। आसपासके नगरोंने भी इसका अनुकरण किया। फिर तो यह सारे इटलीमें फैल गया। ऐसा कोई ग्राम या नगर न बचा होगा जिसने यह उत्सव न मनाया हो। झुण्डके झुण्ड लोग उससे मिलनेके लिए आने लगे, यहाँ तक कि उनके ठहरनेके लिए स्थान मिलनेमें असुविधा होने लगी। बहुतेरे लोग सिरपर पुष्पमालाएँ और हाथमें मशालें धारण कर उससे मिले। पॉम्पीके चलते समय वे साथ रह कर उसपर पुष्पवर्षा करते जाते थे। उसके इस प्रकार लौटनेका दृश्य बड़ा ही भव्य था। कुछ लोगोंका अनुमान है कि यह भी गृहयुद्धका एक प्रधान कारण हुआ। इस सम्मान और स्वागतसे वह खुशीके मारे आपेसे बाहर हो गया और अपनी पहली बुद्धिमत्ता एवं सतर्कताको ताक-पर रखकर बिल्कुल लापरवाह हो गया और कहने लगा कि सीज़रका सामना करनेके लिए शस्त्र या विशेष तैयारीकी जरूरत नहीं है, मैंने जिस आसानीसे उसे ऊपर चढ़ाया है उससे भी अधिक आसानीसे नीचे गिरा सकता हूँ। इसके अलावा ऐपियसने, जो उक्त पल्टनोंका नायक था और हालमें ही गॉलसे लौटा था, सीज़रके सम्बन्धमें ऐसी बहुत सी बातें फैला दीं जो उसकी तुच्छता और हीनता प्रकट करती थीं। पॉम्पीसे उसने कहा कि सीज़रसे मुकाबला करनेके लिए यदि आप उसीकी सेना

से काम न लेकर और सेना रखें तो मैं यही कहूँगा कि आपको अपनी शक्ति तथा ख्यातिका ज्ञान नहीं है। सीज़रके सैनिक उससे इतनी घृणा और आपसे इतना प्रेम करते हैं कि आपको देखनेके साथ ही वे उसे छोड़ कर आपकी तरफ चले आयेंगे। इस चाटुकारितासे पॉम्पी इतना फूल गया कि अगर कोई युद्धकी आशंका प्रकट करता तो वह सिर्फ हँस देता था। कुछ लोगोंके यह कहने पर कि अगर सीज़र आक्रमण करे तो किस सेनासे उसका मुकाबला किया जायगा, वह उत्तरमें कहता "मैं इटलीमें जहाँ पैर रख दूँगा वहीं पदातियों और अश्वारोहियोंकी एक बड़ी सेना बातकी बातमें प्रस्तुत हो जायगी।"

उधर सीज़र अपना प्रभाव बढ़ाता जा रहा था। स्वयं इटलीके सीमा प्रान्तोंके पास रहते हुए अपने सैनिकोंको चुनावमें भाग लेनेके लिए बराबर भेजता रहा। शासकोंमें से (पॉलस, मार्क अण्टोनी, क्यूरियो आदि) बहुतोंको उसने उत्कोच देकर या उनके ऋण अदा कर अपनी ओर कर लिया। कहा जाता है कि सीज़रके एक हवलदारने जो सभाभवनमें था, जब सीज़रका शासनकाल और न बढ़ानेका निर्णय सुना तो अपनी तलवार पर हाथ रखकर कहा 'इसके ज़रिये तो बढ़ेगा'। वस्तुतः उसके सभी कार्य इसी कथनका समर्थन कर रहे थे। क्यूरियो इस बातपर ज़ोर दे रहा था कि या तो पॉम्पी भी अपनी सेना भंग कर दे या सीज़रकी भी सेना रहने दी जाय, या तो दोनों साधारण व्यक्तिके रूपमें रहें या दोनों अपने वर्तमान अधिकारोंसे युक्त रहें—क्योंकि किसी एकको कमजोर कर दूसरेको बलवान् करना ठीक नहीं होगा। प्रधान शासक मार्सिलसने इन सब बातोंका उत्तर न देकर सिर्फ यही कहा कि सीज़र डाकू है और यदि वह अपनी सेना भंग न करे तो उसे देशका शत्रु घोषित करना चाहिए। क्यूरियोके ज़ोर देने पर और अण्टोनी तथा पीसोके समर्थन करने पर, मत लेनेका निश्चय हुआ। सीजरके सेना भंग करने और पॉम्पीके सेना रखनेके पक्षमें बहुत कम लोगोंने मत दिया। दोनोंके सेना भंग करनेके

सम्भवमें राय माँगने पर केवल २२ सदस्य पॉम्पीके और शेष क्यूरियोकी तरफ रहे। विजयपर खुशी मनाते हुए क्यूरियो जब जनताकी भीड़में पहुँचा तो उन लोगोंने हर्ष-ध्वनि और पुष्पमालाओं आदिसे उसका स्वागत किया। पॉम्पी उस समय कुलीन-सभामें उपस्थित न था क्योंकि पदाधिष्ठित सेनापतियोंका नगर प्रवेश विधान द्वारा वर्जित था। पर मार्सिलस ने उठकर कहा कि दस पल्टनोंको आल्प्स पार कर नगरकी ओर आते हुए देख कर मैं यहाँ बैठ कर भाषण नहीं सुनाता रहूँगा, बल्कि नगरकी रक्षाके विचारसे अपने अधिकारके बलपर किसी न किसीको उनका मुकाबला करनेके लिए भेजूँगा।

इसपर सारे नगरने राष्ट्र-संकट-सूचक शोक मनाया। मार्सिलसने कुलीन-सभाके सदस्योंके साथ न्यायालय होते हुए पॉम्पीके पास जाकर कहा 'पाम्पी, मैं तुम्हें देशकी रक्षा करनेका, अधीनस्थ सैनिकोंसे काम लेने का, और आवश्यकतानुसार सैनिक भरती करनेका आदेश देता हूँ।' अगले वर्षके लिए निर्वाचित प्रधान शासक लेंटुलसने भी यही बात कही। अंटोनीने सिनेटकी इच्छाके विरुद्ध सर्वसाधारणकी सभामें सीज़रका एक पत्र पढ़ कर सुनाया जिसमें लोगोंको अपनी ओर खींचनेका प्रयत्न किया गया था। उसमें एक बात यह थी कि पॉम्पी और वह दोनों ही अपनी सेना भंग कर दें, जनता जो निर्णय करे उसे माननेको तैयार रहें और उसके सम्मुख अपने अपने कार्योंका विवरण उपस्थित करें। इसका फल यह हुआ कि जब पॉम्पी सैनिक भरती करनेके कार्यमें प्रवृत्त हुआ तो उसे बिल्कुल निराश होना पड़ा। जो थोड़ेसे भरती भी होते थे, वे भी अनिच्छापूर्वक ही भरती होते थे। सर्वसाधारण शान्तिके लिए आवाज़ उठा रहे थे। लेण्टुलस अब प्रधान शासकके पदपर आरूढ़ हो गया था, पर उसने कुलीन-सभाकी बैठक ही नहीं की। फिर भी सिसरोने जो सिलीशियासे हालमें ही वापस आया था, समझौता करानेका प्रयत्न किया। उसका प्रस्ताव यह था कि यदि सीज़र इलीरियमका शासन और

केवल दो पल्टनें रख कर गॉल प्रदेश तथा शेष सेनाका परित्याग कर दे, तो वह प्रधान शासकके पदके लिए उम्मीदवार बन सकता है। पॉम्पीको यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं था, इसमें सीजरके मित्र केवल एक ही पल्टन रखने पर राजी कर लिये गये। पर लेंटुलसने इसका भी विरोध किया और केटोके यह कहने पर भी कि पॉम्पी यह दूसरी बड़ी भूल कर रहा है, समझौता न हो सका।

इसी बीचमें यह समाचार मिला कि सीजर इटलीके प्रसिद्ध नगर ऐरिमिनमपर अधिकार कर अपनी सारी सेनाके साथ सीधे रोमकी तरफ आ रहा है। सारी सेना साथ होनेकी बात गलत थी, क्योंकि उसके साथ सिर्फ पाँच हजार पैदल और तीन सौ घुड़सवार सैनिक ही थे। उसकी शेष सेना आल्प्स पर्वतके उधर ही थी। वह उसकी प्रतीक्षा न कर शत्रुओंपर अव्यवस्थाकी हालतमें ही एकाएक हमला करना चाहता था, जिसमें उनको युद्धके लिए तैयार होनेका मौका ही न मिल सके। अपने प्रान्तकी सीमा रुबिकन नदीके तटपर पहुँचने पर वह भावी कार्यकी गुरुतापर विचार करते हुए बहुत देर तक चुपचाप खड़ा रहा। अन्तमें चट्टानसे सिरके बल खाईमें कूदनेवालोंकी तरह खतरेकी तरफसे आँखें बन्द कर उसने पार्श्ववर्तियोंसे यूनानी भाषामें कहा 'अब तो पाँसा फेंक ही दिया जाय।' इसके अनन्तर वह अपनी सेना लेकर आगे बढ़ा। इसकी खबर पहुँचनेके साथ ही सारे नगरमें खलबली मच गयी, अश्रुतपूर्व आतंक चारों ओर फैल गया। कुलीन-सभाके सारे सदस्य शासकोंके साथ पॉम्पीके पास दौड़ गये। टलसने जब पॉम्पीसे पल्टनोंके सम्बन्धमें दर्याफ्त किया तो उसने कुछ रुक कर घबराहटके साथ उत्तर दिया कि मेरे पास वे ही दो पल्टनें हैं जिन्हें मैंने सीजरसे वापस मँगाया है, और जो लोग भरती हुए हैं उनसे तीस हजारकी सेना तैयार हो सकती है। इसपर टलस कह उठा 'पॉम्पी, तुमने हम लोगोंको धोखा दिया।' फेवोनियस नामक एक व्यक्तिने जो केटोके खरापनका अनुकरण कर स्पष्टवादी

मरना चाहता था, गानेमें कहा, 'पॉम्पी किसी भी स्थानपर खड़े होकर सेना तैयार कर सकनेकी जो प्रतिज्ञा करने की थी, उसे अब कार्यमें परिणत करके दिखाओ।' पॉम्पीने चुपचाप यह कटूक्ति सह ली। फेटोने यह कहते हुए कि जो बुराई पैदा करता है वही उसे दूर भी कर सकता है, पॉम्पीको पूर्ण अधिकारके साथ अधिनायक बनानेकी राय दी। वह स्वयं अपने प्रान्त सिसलीको चला गया तथा अन्यान्य सदस्य भी अपने अपने पदका काम करने चले गये।

इस प्रकार सारा इटली युद्धमें प्रवृत्त हो रहा था; यह कोई नहीं कर सकता था कि इस समय क्या करना ठीक होगा। बाहरके लोग तो नगरमें चले आ रहे थे और नगरवाले वहाँके पहले लोगोंकी अकर्मण्यता, शासकों की आज्ञाकी अवमानना, मातहतोंकी उच्छृङ्खलता आदिसे घबरा कर नगरका परित्याग कर रहे थे। हरेक आदमी अपने अपने ख्यालके मुताबिक पॉम्पीको राय दे रहा था। लोगोंका भय इतना बढ़ गया था कि वे पॉम्पीको अपनी बुद्धिसे काम लेनेका अवसर ही नहीं देते थे। शत्रुका समाचार ठीक ठीक नहीं मिलता था, इस कारण लोग अफवाहोंको सत्य मान लेते थे और यदि पॉम्पी उन्हें सत्य माननेसे इनकार करता तो वे उसीके विरुद्ध बातें करने लगते थे। इस गड़बड़ीको मिटानेके खयालसे उसने नगरपरित्यागका निश्चय कर सिनेटके सभी सदस्योंको साथ चलनेकी आज्ञा दी और यह भी घोषित कर दिया कि जो पीछे रह जायगा वह सीज़रका सहायक समझा जायगा। गोधूलीके समय उसने नगरसे प्रस्थान किया। प्रधान शासक लोग भी नियमित युद्ध पूजा चढ़ाये बिना ही शीघ्रतामें उसके पीछे पीछे चले। ऐसे संकटके समयमें भी उसके अनुयायियों और हितैच्छुओंकी संख्या अत्यधिक थी। लोग युद्ध-सञ्चालनमें छिद्रान्वेषण तो करते थे पर कोई अपने अधिनायकसे घृणा नहीं करता था। स्वाधीनताकी रक्षाके ख्यालसे भागनेवालोंकी अपेक्षा पॉम्पीके साथ नगर-त्याग करने वालोंकी संख्या बहुत अधिक थी, क्योंकि ये लोग उसे छोड़ना नहीं चाहते थे।

पॉम्पीके जानेके कुछ ही दिन बाद सीज़रने आकर नगरपर अधिकार कर लिया। जो लोग नगरमें रह गये थे उनके साथ नरमियतसे पेश आकर उसने उनका भय बहुत कुछ दूर कर दिया। राजकोषसे रुपये लेते समय मेटेलसके रोकने पर उसने उसे वध करनेकी धमकी देकर हटा दिया और यथेच्छ द्रव्य लेकर स्पेनसे सेना आनेके पूर्व ही पॉम्पीको इटलीसे बाहर खदेड़नेके लिए चल पड़ा।

ब्रंडूज़ियम पहुँच कर पॉम्पीने पहले दोनों प्रधान शासकोंको फौरन पोतारूढ़ होनेका आदेश कर उनके साथ सेनाकी तीस टुकड़ियाँ कर दीं और अपने श्वशुर सिपियो और पुत्रको बेड़ा प्रस्तुत करनेके लिए सीरिया भेज दिया। उसने लोगोंको नगरके भीतर रहनेकी आज्ञा देकर नगरद्वार बन्द करा दिये और प्राचीरपर रक्षक सैनिक बैठा दिये। उसने नगरमें सर्वत्र खाइयाँ खुदवा दीं और दो सड़कोंको छोड़ कर, जो समुद्र-तटकी ओर जाती थीं, सर्वत्र खूँटे और कीलें गड़वा दीं। इस प्रकार तीन दिनके अन्दर सहूलियतके साथ शेष सेनाको पोतारूढ़ कर उसने प्राचीर-रक्षकोंको भी धीरेसे उतर कर जहाजपर जानेकी आज्ञा दे दी। प्राचीरोंको अरक्षित देख कर सीज़र समझ गया कि पॉम्पी निकल भागा। पीछा करनेकी धुनमें वह कीलदार खाइयोंमें फँसनेको ही था कि वहाँके निवासियोंने उसे सावधान कर मार्ग बतला दिया। समुद्र-तटपर पहुँचने पर उसने देखा कि दो पोतोंको छोड़, जिनपर सिर्फ थोड़ेसे सैनिक थे, सबके सब प्रस्थान कर चुके हैं।

बहुतोंकी राय है कि पॉम्पीके इस प्रस्थानकी भी गणना उसके अच्छे सैनिक-कार्योंमें होनी चाहिये, पर सुदृढ़ प्राचीरोंसे रक्षित नगरके भीतर रहते हुए तथा समुद्रपर अधिकार होनेके साथ साथ स्पेनसे सेना आनेकी आशा होनेपर भी पॉम्पीके इटली-परित्यागपर सीज़रको आश्चर्य ही हुआ। सीज़रके कार्योंसे यही प्रकट होता था कि वह युद्ध अधिक कालतक नहीं चलाना चाहता था। उसने पॉम्पीके एक मित्र नुमेरियसको, जो बन्दी

बना लिया गया था उचित शर्तों पर संधि करनेके संवादके साथ मंडुलियस भेजा, पर वह उत्तर न पाकर पॉम्पीके साथ ही चल दिया। बिना रक्त-पातके ही दो मासमें सारे इटलीपर अधिकार हो जाने पर इसे पॉम्पीका पीछा करनेकी प्रबल इच्छा हुई पर पोत न होनेके कारण वह उधरसे ध्यान हटाकर स्पेनवाली सेना अपनी ओर करनेकी फिक्रमें चला।

इस बीचमें पॉम्पीने एक महती सेना खड़ी कर ली। उसका बेड़ा पूर्णतः अजेय ही था। उसमें पाँच सौ बड़े बड़े युद्ध-पोतोंके सिवाय अगणित छोटे छोटे पोत भी थे। अश्वदलमें जो सात हज़ार सैनिक थे, उनमें रोम और इटलीके खानदानी तथा धनी-मानी लोग भरे हुए थे। पैदल सेनाके अधिकतर सैनिक अशिक्षित और अननुभवी थे। बेरोआ नामक स्थानमें, जहाँ सेनाका पड़ाव भी था, इन्हें शिक्षा देनेका प्रबन्ध किया गया था। स्वयं वह भी किसी प्रकारका आलस्य न दिखाकर मध्य यौवनके समयकी तरह अभ्यास किया करता था। ५८ वर्षकी अवस्थामें उसका शस्त्र-संचालन देख कर सैनिक जोशसे भर जाते थे।

कई राज्योंके नरेश और राजकुमार उसके पास पहुँच गये। रोमन नागरिक जो शासक रह चुके थे, इतनी संख्यामें इकट्ठे हो गये थे कि पूरी कुलीन-सभा ही बन गयी थी। सीज़रका पुराना मित्र लेबीनस, जिसने गॉलके युद्धोंमें बराबर उसके साथ काम किया था, उसका साथ छोड़ कर पॉम्पीके पास चला आया। ब्रूटस भी, जो उस ब्रूटसका पुत्र था जो गॉलमें मारा गया था तथा जिसने पॉम्पीको अपने पिताका हत्यारा समझ कर न तो कभी अभिवादन किया था और न बात ही की थी, इटलीकी स्वाधीनताकी रक्षाके विचारसे पॉम्पीके झण्डेके नीचे चला आया। टाइडियस सेक्सटिअस नामक एक वृद्ध और एक पैरका लंगड़ा आदमी भी उसके पास आया। अन्य लोग तो उसे देख कर हँसते और मज़ाक करते थे पर पॉम्पीने उसे आते देख आगे बढ़कर उसका स्वागत किया, क्योंकि ऐसे वृद्ध और विकलांग व्यक्तिका घरपर निरापद रहना स्वीकार न

कर संकटमें उसका साथ देना उसके लिए गौरवका विषय था। इसके अनन्तर कुलीन-सभाके अधिवेशनमें केटोके प्रस्ताव करने पर यह निश्चय हुआ कि युद्धमें भाग लेनेवालोंके अतिरिक्त और किसी रोमन नागरिकका वध न किया जाय और रोमसाम्राज्यका अधीनस्थ कोई भी नगर न दबा जाय। इस प्रस्तावसे जो लोग बाहर रहने या किसी प्रकारकी सहायता देनेमें असमर्थ होनेके कारण युद्धमें प्रत्यक्ष रूपसे कोई भाग नहीं ले रहे थे, उनकी भी सहानुभूति पॉम्पीके साथ हो गयी और जो लोग पॉम्पीकी विजय नहीं चाहते थे, वे देवताओं और मानवसमाजके शत्रु समझे जाने लगे।

सीज़रने भी अपनी विजयोंमें बड़ी दयालुता दिखलायी। पॉम्पीकी स्पेनवाली सेनाको पराभूत करनेके बाद उसने बड़ी सुविधाजनक शर्तें रखीं; सेनानायकोंको तो इच्छानुसार काम करनेकी आज़ादी दे दी और साधारण सैनिकोंको अपनी सेनामें भरती कर लिया। फिर आल्प्स पर्वत पार कर इटली होते हुए मकर संक्रांतिके लगभग वह ब्रण्डूज़ियम पहुँचा और समुद्र पार कर ओलिम बन्दरमें जा उतरा। उसने पॉम्पीके एक घनिष्ट मित्र जुबियसको; जो उसके पास बन्दी रूपमें था, पॉम्पीके पास भेज कर यह कहलाया कि हम लोग आपसमें राय कर तीन दिनके अन्दर सारी सेना भङ्ग कर दें और शपथके द्वारा अपनी पुरानी मित्रता पुनः दृढ़ कर एक साथ इटली वापस चलें। पॉम्पीने इसे एक नयी चाल समझ कर समुद्र-तटवर्ती दृढ़ और उपयुक्त स्थानोंको अपने अधिकारमें कर लिया। इससे उसकी स्थलसेना भी सुरक्षित हो गयी और रसद आदि मँगानेकी सुविधा भी बनी रही। इसके प्रतिकूल सीज़रके लिए जल और स्थल दोनोंका मार्ग इस तरह बन्द हो गया था कि वह युद्धके लिए हृदयसे मना रहा था। इस विचारसे वह शत्रुओंको तरह तरहसे छेड़ा करता था और कभी कभी हलकी मुठभेड़ भी हो जाया करती थी। एक बार तो सीज़रकी सारी सेना नष्ट होते होते बची। पॉम्पीने इतनी बहा-

र्दुरीसे युद्ध किया कि इसकी भारी सेना भाग खड़ी हुई और दो हजार आदमी खेत रहे। पर अपनी असावधानता या भयके कारण वह सीज़रके पड़ावमें नहीं घुसा। इसपर सीज़रने कहा 'यदि शत्रुओंमें कोई विजय प्राप्त करनेवाला होता तो आज विजय निस्सन्देह उन्हींकी थी।' पॉम्पीके सैनिक इस विजयके कारण इतने जोशमें आ गये कि युद्धके लिए उतावले होने लगे, पर पॉम्पी इस विचारसे सहमत न था। सीज़रके सैनिक युद्धमें अभ्यस्त थे और कभी पराजित भी नहीं हुए थे, किन्तु अवस्था अधिक होनेके कारण, युद्धकी और कठिनाइयों—लम्बी यात्राएँ, बराबर गुप्त रूपसे पलायन, मोर्चाबन्दी आदि—से तंग आकर वे शीघ्रातिशीघ्र युद्धमें संलग्न होना चाहते थे। किन्तु पॉम्पी युद्ध टाल कर उन्हें रसद आदिकी कठिनाईमें डालना अधिक युक्तियुक्त समझता था।

अब तक तो पॉम्पीने अपने सैनिकोंको समझा बुझाकर किसी तरह शान्त रखा, पर जब सीज़र रसदकी कमीके कारण वहाँसे पड़ाव तोड़कर अथमानिया होते हुए थेसली चला गया, तब सैनिकोंको और शान्त रख सकना असम्भव हो गया। सब लोग एक स्वरसे कहने लगे 'सीज़र भाग गया।' कुछ लोग तो उसका पीछा करनेपर ज़ोर देने लगे और कुछ लोग इटली लौटनेपर। कुछ लोगोंने पदोंके लिए प्रयत्न करनेमें सहूलियत होनेके विचारसे न्यायालयके पास मकान लेनेके निमित्त अपने मित्रों और नौकरोंको पहले ही रोम भेज दिया। यही नहीं, कुछ तो युद्ध समाप्तिपर मुबारकबादी देनेके लिए कार्नेलियाके पास लेस्वास भी जा पहुँचे, जहाँ उसे पॉम्पीने सुरक्षित रहनेके विचारसे पहले ही भेज दिया था। सिनेटकी बैठकमें जब विचार आरम्भ हुआ तो एफ्रेनियसने कहा कि सर्वप्रथम इटलीपर पुनः अधिकार होना चाहिए क्योंकि युद्धका यही अन्तिम उद्देश्य है; जिसका उसपर अधिकार होगा उसकी अधीनतामें सिसली, सार्डीनिया, कार्सिका, स्पेन और गॉल आदि प्रान्त फौरन आ जायँगे। पर पॉम्पीके हृदयमें सबसे अधिक ध्यान अपनी पार्श्व-

वर्ती जन्मभूमिका था जो आश्रयके लिए मानो उसकी तरफ हाथ फैला रही थी और वस्तुतः अत्याचारीके दासों और खुशामदी लोगोंकी दासतामें उसे अपमानित होनेके लिए छोड़ देना पॉम्पीके लिए सम्मानार्ह भी न था। दैवयोगसे स्वयं पीछा कर सकनेका सौभाग्य प्राप्त होने पर इसे हाथसे जाने देकर सीजरके सम्मुख दूसरी बार पलायन स्वीकार करनेमें वह अपनी बड़ी बेइज़्ज़ती समझता था; इसके अलावा वह सिपियो तथा अन्यान्य प्रतिष्ठित पुरुषोंको, जो सारे यूनान और थेसलीमें जहाँ तहाँ बिखरे हुए थे, धनसम्पत्ति और सेनाके साथ सीज़रके हाथमें पड़ने देना नहीं चाहता था। रोमकी रक्षाके सम्बन्धमें उसका यह विचार था कि युद्ध सम्बन्धी कार्य रोमसे अत्यन्त दूरस्थ भूमिपर हो जिसमें उसपर युद्धका कुछ प्रभाव न पड़ सके और वह विजयीका स्वागत करनेके लिए शान्तिपूर्वक प्रतीक्षा कर सके।

इस विचारसे प्रेरित हो कर पॉम्पी सीज़रका पीछा करनेमें प्रवृत्त हुआ। उसने युद्ध न कर इस प्रकार उसके पास ही पास रह कर पीछा करने और कष्ट पहुँचानेका निश्चय किया था जिसमें सीज़रको यह मालूम हो कि मैं शत्रुसे घिरा हुआ हूँ। ऐसा करनेके और भी कारण थे, जिनमेंसे एक यह भी था कि अश्वदलके रोमन यह बराबर कहा करते थे कि सीज़रको शीघ्रातिशीघ्र पराभूत कर हम पॉम्पीको भी नीचा दिखायँगे। कुछ लोगोंका अनुमान है कि इसीसे पॉम्पीने केटोको युद्धमें कोई प्रमुख कार्य नहीं दिया और अब सीज़रका पीछा करते समय समुद्रस्थ यौद्धिक सामग्रीकी रक्षाका भार उसे सौंप दिया, जिसमें सीज़रके पराभवके बाद केटोकी सहायतासे स्वयं उसके ही अधिकार छिन जानेकी आशंका न रहे।

इस प्रकार वह शत्रुकी गति-विधिका मन्थर गतिसे अनुसरण कर ही रहा था कि चारों ओरसे लोग उसपर यह आक्षेप करने लगे कि पॉम्पी अपने अधिनायकत्वका उपयोग, सीज़रको नहीं बल्कि अपने देश और सिनेटको पराभूत करनेमें कर रहा है, जिसमें वह अपने अधिकारोंको

अक्षुण्ण रखते हुए ऐसे लोगोंको अपने रक्षकों और दासोंके रूपमें बनाये रख सके जो स्वयं संसारपर शासन करनेका दावा करते हैं। डोमीशियस ईनोबारबस उसे ऐगमेमनान (अर्थात् शाहंशाह) कह कर लोगोंमें द्वेषाग्नि प्रचलित किया करता था। फेवोनियस इस तरहकी बातें कह कर कि 'दोस्तो, इस साल हम लोग टसकुलममें अंजीर न बटोर सकेंगे, इत्यादि' कुछ कम क्षति नहीं पहुँचा रहा था। लूसियस अफ्रेनियस, जिसपर स्पेनवाली सेनाको शत्रुके हाथमें दे देनेका अभियोग लाया गया था, पॉम्पीको जान बूझ कर युद्ध टालते हुए देख कर खुल्लमखुल्ला कहने लगा कि मुझे इस बातपर आश्चर्य होता है कि जो लोग मेरे ऊपर ये आरोप करनेको तैयार हैं वे लोग स्वयं जाकर अपने प्रान्तोंके इस क्रेता तथा विक्रेतासे क्यों नहीं लड़ते।

इस प्रकारकी कटूक्तियोंका पॉम्पीपर, जो आक्षेपोंको सहने और मित्रोंकी आशाओंके विपरीत काम करनेका आदी नहीं था, बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। उसे लाचार होकर अपना युक्तियुक्त विचार छोड़ कर इन लोगोंकी व्यर्थ आशा और इच्छाका अनुसरण करना पड़ा। इस प्रकारकी कमजोरी यदि किसी पोतके कर्णधारमें हो तो वह निन्दनीय समझा जायगा, पर जो इतनी बड़ी सेना और कई राष्ट्रोंका अधिनायक है, उसकी यह कमज़ोरी सर्वथा अक्षम्य ही समझी जायगी। "कुपथ माँगु रुज व्याकुल रोगी।. बैद न देइ······"का पक्षपाती होते हुए भी वह स्वयं उसका शिकार बन गया। कौन कह सकता है कि वह सेना रुग्णावस्थामें न थी जिसके सैनिक प्रधान शासक तथा न्यायकर्त्ताके पदों एवं सीज़रके उत्तराधिकारके लिए अभीसे इस प्रकार आपसमें झगड़ने लगे थे मानो वे उस सीज़र तथा उसकी उस सेनाके साथ, जिसने हजारों नगरोंका विध्वंस तथा तीन सौसे अधिक राष्ट्रोंका दमन किया था, जर्मनों और गॉलोंके साथ अगणित युद्धोंमें विजय प्राप्त की थी और लाखोंको यमपुरी भेजा अथवा रणबन्दी बनाया था, युद्धमें प्रवृत्त न होकर किसी सामान्य नरेशसे लड़ने जा रहे थे।

सैनिक लोग युद्धके लिए दबाव डालते ही गये। अन्तमें फारसेलिया पहुँचनेके बाद लोगोंके बाध्य करने पर पॉम्पीने युद्ध-परिषद्की बैठक की जिसमें पहले लेबीनसने खड़े होकर यह प्रतिज्ञा की कि मैं शत्रुओंको पराजित किये बिना युद्ध-भूमिसे कभी न लौटूँगा। औरोंने भी यही शपथ खायी। उसी रात पॉम्पीने यह स्वप्न देखा कि रंगशालामें जाने पर लोगोंने हर्ष-ध्वनिके साथ मेरा स्वागत किया है और मैंने स्वयं अपने हाथोंसे विजयिनी रति-देवीका मन्दिर लूटकी वस्तुओंसे सुसज्जित किया है। इस स्वप्नसे वह कुछ तो उत्साहित और कुछ भयभीत भी हुआ। उसने ख्याल किया कि सीज़र तो रतिदेवीके वंशका ही है, अतः यह भी सम्भव है कि वही मेरी वस्तुओंको लूटमें प्राप्त कर रति-देवीका शृंगार करे। उसी समय उसके पड़ावमें ऐसा आतंकपूर्ण निनाद फैला कि उससे उसकी नींद खुल गयी। रात्रिके अन्तिम भागमें पहरा बदलते समय सीज़रके शिविरके ऊपर जबकि लोग सोये हुए थे, एक बृहत् प्रकाशपुंज देख पड़ा जो एक दहकते हुए अग्निके गोलेके रूपमें पॉम्पीके पड़ावकी तरफ चला आया। सीज़रने भी इस प्रकाशको गश्त करते समय देखा था।

प्रातःकाल होने पर सीज़र स्काटुसा जानेके विचारसे पड़ाव उठवा रहा था। सैनिक लोग खीमे उखाड़ने तथा अन्य सामान पशुओंपर लाद कर भेजनेमें व्यस्त थे; ठीक उसी समय चरोंने आकर कहा कि शत्रुके पड़ावमें लोग इधर उधर दौड़-धूप करते हुए शस्त्रादि ले जा रहे हैं जिससे मालूम होता है कि वे युद्धकी तैयारी कर रहे हैं। इसके बाद तुरन्त ही और चरोंने आकर यह खबर दी कि सेनाकी अगली कतारें व्यूह-बद्ध हो चुकी हैं। इसपर सीज़रने यह कह कर कि जिस दिनकी मैं इच्छा कर रहा था वह आ गया, अब हम लोग क्षुधा और दुर्भिक्षके बदले मनुष्योंसे युद्ध करेंगे, युद्ध-सूचक लाल झंडा पड़ावके आगे फहरानेकी आज्ञा दे दी। सैनिक लोग यह झंडा देखते ही डेरे आदिको छोड़ हर्ष-ध्वनिके साथ अपने दास्तोंके लिए दौड़ पड़े। इसी प्रकार नायकोंने भी अपनी टुकड़ियोंको

व्यूहबद्ध कर लिया। बिना किसी कठिनाई या शोरगुलके प्रत्येक आदमीने अपना अपना स्थान ग्रहण कर लिया।

एण्टोनीके मुकाबलेमें दक्षिण पार्श्वका नायक स्वयं पॉम्पी था; मध्यमें ल्यूशियस कैल्विनसके मुकाबलेमें उसने अपने श्वशुर सिपियोंको रखा। वामपार्श्वका नायक ल्यूशियस डोमीशियस था और इसकी सहायताके लिए सुदृढ़ अश्वदल रखा गया था। सीज़रको पराभूत करने और उसकी दसवीं पल्टन, जिसमें सीज़र स्वयं रहता था और जो सारी सेनामें सबसे अच्छी समझी जाती थी, छिन्न-भिन्न करनेके लिए लगभग सारी अश्वसेना यहीं रख दी गयी थी। सीज़रने शत्रु-दलके वामपार्श्वको अश्वदल द्वारा सबलीकृत देख कर और सैनिकोंके सुदृढ़ कवचों आदिसे भयभीत होकर अपनी सुरक्षित सेनामेंसे छः टुकड़ियाँ मँगा कर दसवीं पल्टनके पीछे रख दीं और उस पल्टनके सैनिकोंको आज्ञा दी कि तुम लोग अपने स्थानसे ज़रा भी विचलित न होना, क्योंकि ऐसा होने पर टुकड़ियाँ शत्रु द्वारा परिलक्षित हो जायँगी; यदि अश्वदलके सैनिक आक्रमण कर दबाने लगें तो वीर सैनिकोंकी तरह, दूरसे भाले न फेंक कर, शीघ्रताके साथ आगे बढ़कर अगली कतारोंसे भिड़ जाना जिसमें वे शीघ्रातिशीघ्र खड्गयुद्ध आरंभ करनेके लिए बाध्य हों; और तब उनके चेहरेपर आघात करना क्योंकि वे उत्तम नर्तक अपने सुन्दर चेहरोंका खराब होना स्वीकार न कर तुरन्त भाग खड़े होंगे। जिस समय सीज़र अपने सैनिकोंको इस प्रकार समझा रहा था, उस समय पॉम्पी घोड़ेपर सवार होकर दोनों दलोंको गौरसे देख रहा था। उसने देखा कि शत्रुके सैनिक तो यथा-स्थान चुपचाप खड़े होकर युद्ध-संकेतकी प्रतीक्षा कर रहे हैं पर मेरे सैनिक, अनुभव न होनेके कारण, उतावले होकर इधर उधर हो रहे हैं। यह देख कर उसे आशंका होने लगी कि मेरे सैनिक कहीं पहले आक्रमणमें ही न भाग खड़े हों, इसलिये उसने सेनाके अग्रभागको एक ही जगह जमकर आक्रामकोंका मुकाबला करनेकी आज्ञा दी। सीज़रने इस आज्ञाकी बड़ी

निन्दा की क्योंकि इस आज्ञासे सैनिकोंकी गति रुकजानेके कारण उनका उत्साह बिल्कुल ठंडा पड़ गया और आगे बढ़कर आक्रमण करनेके कारण हथियार चलानेमें जो एक प्रकारकी शक्ति आ जाती है, वह भी गतिरोधके कारण नहीं रही।

सीज़रकी सेनामें बाइस हज़ार सैनिक थे और पॉम्पीकी सेना इससे दूनीसे भी अधिक थी। दोनों ओरसे युद्ध-संकेत हो गया; आक्रमणसूचक रणभेरी भी बज उठी। लोग अपने अपने कार्यमें दत्तचित्त हुए। वहाँ इस समय थोड़ेसे शरीफ रोमन और यूनानी भी थे जो युद्धका दृश्य देखनेके लिए बाहर खड़े थे। दोनों दलोंको युद्धके लिए प्रस्तुत देख कर वे लोग मनमें इस प्रकार सोचने लगे 'व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और स्पर्द्धाने साम्राज्यको कैसी बुरी परिस्थितिमें डाल रखा है। अस्त्र-शस्त्र, रण-विधि, झंडा, नगर, आदि सब कुछ एक होते हुए भी ये आपसमें मर मिटनेको तैयार हैं। यह इस बातका स्पष्ट प्रमाण है कि मानव-स्वभाव विकारोंके वशीभूत होनेपर कितना अन्धा और उन्मत्त हो सकता है। यदि इन लोगोंकी केवल शासन करनेकी ही इच्छा थी तो ये युद्ध-विजित स्थानोंका, जिनमें संसारके अधिकांश और सर्वोत्तम स्थान आ जाते हैं, शान्तिपूर्वक उपभोग कर सकते थे; यदि इनके हृदयमें विजयकी भी लालसा हो तो इसके लिए जर्मन और पार्थियन युद्ध शेष हैं। सीथिया अभी एक प्रकारसे अविजित ही है। भारतका भी यही हाल है जिसके सम्बन्धमें ये अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करनेके साथ साथ उसे सभ्य बनानेका भी बहाना कर सकते हैं। पॉम्पी और सीज़र ऐसे दो सेनानायकों द्वारा संचालित सुशिक्षित एवं अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित सत्तर हज़ार सैनिकोंकी बाढ़ सीथियन अश्व, पार्थियन बाण या भारतीय धनसे नहीं रोकी जा सकती। आज ये दोनों विश्वविश्रुत नायक एक दूसरेके विरुद्ध डटे हुए हैं। ये किसी प्रकार अपने देशका पिंड छोड़नेको राजी नहीं किये जा सकते। अपने गौरवके लिहाजसे या अजित कहलानेकी सुख्याति नष्ट होनेकी आशंकासे

भी थे। इस समय तक नहीं सकते। व्यक्तिगत सम्बन्ध तथा जूलियाका विवाह सम्बन्ध आदि राजनीतिक धागेके अलावा और कुछ नहीं था।

दोनों ओरसे युद्ध-संकेत हो जाने पर, अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेके निमित्त सर्वप्रथम केयस क्रेसिएनसने जो एक दुर्दान्त नायक था, सीज़रकी सेनामेंसे आगे बढ़ कर आक्रमण किया। प्रातःकाल सबसे पहले उसे ही पड़ावसे निकलते हुए देख कर सीज़रने उसका अभिवादन कर भावी युद्धके सम्बन्धमें प्रश्न किया था। उत्तरमें उसने अपना दाहिना हाथ फैला कर कहा था 'ऐ सीज़र, विजयलक्ष्मी तुम्हारे ऊपर प्रसन्न होगी और मैं आज जीवित रह कर या वीरगति प्राप्त कर तुम्हारी प्रशंसाका पात्र बनूँगा।' इसी प्रतिज्ञाकी पूर्तिके लिए वह तेज़ीसे आगे बढ़ गया। बहुतोंने उसका साथ दिया; फिर ये लोग शत्रु-दलके मध्य भागसे भिड़ गये। बल्लमसे युद्ध आरंभ कर इन्होंने बहुतोंका काम तमाम किया। उक्त नायक अग्रभाग-की कतारें तोड़ कर आगे बढ़ता ही जाता था कि पॉम्पीके एक सैनिकने मुखमें तलवार घुसेड़ कर उसका अन्त कर दिया। इस नायकके मर जाने पर उस भागमें दोनों दल बराबर रहे।

अबतक पॉम्पी दाहिनी पंक्तिकी ओर नहीं आया था। वह वाम पंक्तिकी ओर ठहर कर यह देखना चाहता था कि अश्वदल कैसा कार्य करता है। अश्वदलने फैल कर सीज़रको घेरने और इनेगिने अश्वारोहियोंको जो आगे कर दिये गये थे, पदाति-सेनाकी तरफ भगानेका प्रयत्न किया। इसी समय सीज़रने संकेत द्वारा अश्वदलको पीछे हटा कर उन छः टुकड़ियों-को, जिनमें तीन हज़ार सैनिक थे और जो दसवीं पल्टनके पीछे रख दी गयी थीं, पॉम्पीका अश्वदल घेर लेनेके लिए आगे बढ़ाया। निकट आकर एवं आज्ञानुसार ये सैनिक शत्रुओंके चेहरोंको ही अपने भालेका निशाना बनाने लगे। उन्हें न तो किसी प्रकारके युद्धका अनुभव था और न इस ढंगका कुछ अनुमान; अतः वे आघात न सहन कर हाथसे मुँह ढँके हुए बेइज़्ज़तीके साथ भाग खड़े हुए। सीज़रके सैनिक उनका पीछा न कर

पदातियोंकी तरफ़ बढ़े। उन्होंने उस पार्श्वपर आक्रमण किया जो अश्वदलके भाग खड़े होनेसे अरक्षित और पीछेसे घेर लेने योग्य स्थितिमें आ गया था। सामनेसे दसवीं पल्टनद्वारा आक्रान्त होने पर और पीछेसे सुरक्षित सेनावाली टुकड़ियोंसे घिर कर यह दल अधिक देरतक न टिक सका। आकाशमें धूलिराशि देख कर पॉम्पीने अश्वदलके पलायनका अनुमान कर लिया। उस समय उसके हृदयकी क्या गति थी, इसका अनुमान करना भी कठिन है। उसके मुखमंडलपर परेशानी और बेचैनी झलक रही थी। वह बिना किसीसे कुछ कहे सुने और बिना इस बातका ख़याल किये कि मैं पॉम्पी महान् हूँ, धीरे धीरे अपने डेरेमें चला गया। थोड़ी ही देरमें शत्रुदलके कुछ सैनिक भागनेवालोंका पीछा करते हुए उसके डेरेमें घुस पड़े। 'क्या, पड़ावमें भी?' सिर्फ इतना कह कर और अपनी स्थितिके अनुकूल वस्त्र धारण कर वह वहाँसे चुप चाप निकल गया।

अबतक शेष सैन्कि भी भाग चुके थे। पड़ावमें नौकर और खीमोंके रक्षक अत्यधिक संख्यामें हत हुए। ऐसीनियस पोलियोके कथनानुसार, जो सीज़रकी तरफसे लड़ा था, पॉम्पीके दलके छः हजार सैनिक खेत रहे। पड़ावपर अधिकार हो जाने पर सीज़रके सैनिकोंने देखा कि खीमे पुष्पमालाओं आदिसे अलंकृत हैं, कामदार दरियाँ बिछी हुई हैं, मेजोंपर शराबके प्याले सजे हुए हैं। इन सबसे यही मालूम होता था कि वे युद्धमें लड़ने न जाकर पूजा चढ़ानेके अनन्तर उत्सव मनाने जा रहे थे। इस तैयारीका कारण यह था कि युद्धके लिए प्रस्थान करते समय उन्हें अपनी भावी विजयके सम्बन्धमें ज़रा भी सन्देह न था।

पड़ावसे कुछ दूर निकल जाने पर जब पॉम्पीने किसीको पीछा करते हुए नहीं देखा, तब वह घोड़ेसे उतर पड़ा और सिर्फ थोड़ेसे आदमियोंको साथ लेकर पैदल आगे बढ़ा। चौंतीस वर्षोंतक लगातार विजय प्राप्त करते रहनेके बाद बुढ़ापेमें पहले पहल उसे पराजय और पलायनका अनुभव करना पड़ा। इतने दिनोंकी अर्जित ख्याति एक घंटेमें नष्ट हो गयी: जो

सिर्फ थोड़ी देर पहले एक महती सेना और रण-पोतोंसे रक्षित था वही केवल थोड़ेसे आदमियोंके साथ ऐसी बुरी हालतमें पलायन कर रहा था कि देखकर उसके वे शत्रु भी जिन्होंने उसके साथ युद्ध किया था उसे नहीं पहचान सकते थे। इन सब बातोंका ख्याल कर उसे कितनी मर्मांतक पीड़ा होती होगी, इसका अनुमान सहज ही किया जा सकता है। लारीसा नगरके पाससे होकर वह टेम्पी दर्रेमें पहुँचा। यहाँ प्याससे व्याकुल होकर उसने घुटने टेक कर नदीका जल पीया। यहाँसे होकर वह समुद्र तटपर पहुँचा और शेष रात्रि एक गरीब मछुएके झोपड़ेमें व्यतीत की। प्रातःकाल होने पर उसने दासोंको न लेकर थोड़ेसे स्वतंत्र लोगोंको अपने साथ रख लिया और शेष लोगोंको साहसपूर्वक सीज़रके पास जानेका आदेश देकर एक साधारण नौकापर सवार हो गया। अभी तटके पास ही नाव इधर उधर घूम रही थी कि कुछ दूरीपर एक बड़ा वणिक्पोत देख पड़ा जो तुरन्त प्रस्थान करनेवाला था। उस पोतका मालिक पेटीसियस एक रोमन नागरिक था, जो पॉम्पीसे भली भाँति परिचित तो न था पर उसे देख कर पहचान सकता था। उसी रातको उसने स्वप्नमें पॉम्पीको गयी गुज़री हालतमें देखा था। वह इस स्वप्नकी बातें और लोगोंसे कह ही रहा था कि इतनेमें एक नाविकने किनारेसे एक नावके खुलने और कुछ तटवर्ती लोगोंको नौकारूढ़ करनेके लिए हाथ उठाकर संकेत करनेकी बात कही। ध्यानपूर्वक देखने पर पेटीसियसने पॉम्पीको फौरन पहचान लिया। अफसोससे अपना सिर पीटते हुए उसने पोतस्थ नाव नीचे उतारनेकी आज्ञा दी। पॉम्पीके वस्त्र आदिसे उसे उसकी परिवर्तित दशाका विश्वास हो गया। उसने पॉम्पी और उसके साथियोंको पोतारूढ़ कर पाल उड़ा दिया। पॉम्पीके साथ लटुली और फैवोनियस नामक केवल दो व्यक्ति पोतारूढ़ हुए थे, पर बादमें राजा डीओटेरसको किनारेसे प्रार्थना करते हुए देख उन लोगोंने उसे भी पोतपर चढ़ा लिया। पोताध्यक्षने पॉम्पीके लिए यथासम्भव

उत्तम भोजन प्रस्तुत कराया। दास न होनेके कारण पॉम्पी स्वयं अपने जूते उतारने लगा। फैवोनियससे यह न देखा गया, इसलिए उसने जूते उतार कर उसे स्नानादि भी कराया। इसके बाद वह बराबर दासकी तरह पॉम्पीकी सेवा करता रहा, यहाँ तक कि वह उसके पैर धोता और भोजन भी तैयार किया करता था।

कार्नेलिया और अपने पुत्रको साथ लेनेके विचारसे पॉम्पी मिटिलीनी पहुँचा। बन्दरमें पहुँचनेके साथ ही उसने एक दूत द्वारा नगरमें समाचार भेजा जो कार्नेलियाकी आशाके बिलकुल प्रतिकूल था। पहलेके समाचारों और पत्रोंसे उसने यह आशा बाँध रखी थी कि युद्ध तो समाप्त हो चुका है, अब सीज़रका पीछा करनेके सिवा पाम्पीके सामने और कोई कार्य शेष नहीं है। कार्नेलियाको इसी आशामें देख कर दूतने न तो अभिवादन किया और न कुछ कहा, केवल अश्रुपात द्वारा उसे आपत्तिकी सूचना देकर सिर्फ एक जहाज, सो भी अपना नहीं किसी दूसरेका, लेकर शीघ्र चलनेकी इच्छा प्रकट की। युवती महिला इस शोक-समाचारको सुनते ही मूर्च्छित होकर पृथ्वीपर गिर पड़ी और बहुत देरतक बेहोश पड़ी रही। होशमें लाने पर जब उसे इस बातका ज्ञान हुआ कि यह समय रोने चिल्लानेका नहीं है, तो वह नगर होते हुए समुद्रतटकी ओर दौड़ी। आलिंगन करने पर वह नीचे झुकती जाती थी। पॉम्पी किसी तरह उसे अपने हाथोंसे सँभाले रहा। कार्नेलियाने कहा "यह आपका नहीं, मेरे भाग्यका दोष है कि मैं आपको, जो मेरे साथ विवाह होनेके पहले पाँच सौ पोतोंका बेड़ा लेकर इन समुद्रोंपर यात्रा किया करते थे, केवल एक अदनेसे पोतके साथ देख रही हूँ। ऐसे व्यक्तिको, जिसने आपके ऊपर विपत्तियोंका पहाड़ ढाया है, आपने अपने भाग्यपर रोनेके लिए क्यों नहीं छोड़ दिया? आप उससे क्यों मिलने आये? मैं अपने प्रथम पति पब्लियसके मरनेका समाचार सुननेके पहले ही मर गयी होती तो कैसा अच्छा हुआ होता! पूर्व विचारानुसार यदि मैं उसके साथ सती हो

जाती तो यह कितनी बुद्धिमानीका काम हुआ होता ! क्या मैं पॉम्पी महान्‌के ऊपर विपत्तियाँ बुलानेके लिए ही जीवित बची थी ?"

पॉम्पीने इसके उत्तरमें कहा "कार्नेलिया, अबतक तो तुमने लक्ष्मी-की प्रसन्नताके अतिरिक्त और कुछ अनुभव ही नहीं किया और उसीने तुम्हें धोखा भी दिया है, क्योंकि वह मेरे साथ औरोंकी अपेक्षा अधिक कालतक रही है। अब भाग्यमें प्रतिकूल दशा बदी हुई है, इसलिए इसका सहन करते हुए उसके लिए पुनः प्रयत्न करना पड़ेगा। जिस प्रकार हम उन्नत दशामें इस दयनीय दशाको प्राप्त हो गये हैं, उसी प्रकार इस विपत्तिके गड्ढेसे निकल कर पुनः अभ्युदय प्राप्त कर सकते हैं।"

कार्नेलियाने इसके पश्चात् नगरसे अपनी कीमती चीजें मँगवायीं और दासोंको बुलवाया। नगरनिवासी पॉम्पीके प्रति सम्मान दिखलाने और नगर-में जानेके लिए उसे निमंत्रित करने आये, पर उसने जानेसे इनकार कर उन्हें निर्भीकतापूर्वक सीज़रकी अधीनता स्वीकार कर लेनेका आदेश दिया।

अपनी स्त्री और मित्रोंको पोतारूढ़ कर पॉम्पी वहाँसे चल दिया और रसद तथा जल लेनेके अतिरिक्त और किसी जगह न रुक कर पहले ऐटेलिया नामक नगरमें, जो पैम्फीलियामें है, पहुँचा। वह अभी इसी नगरमें था कि सिलीशियासे कुछ पोत एक छोटी सी सेना लेकर उसके पास आये, और उसके साथ कुलीन-सभाके साठ सभ्य पुनः एकत्र हो गये। यह सुन कर कि पराजयके बाद केटो एक अच्छी सेना खड़ी कर उसके साथ आफ्रिका जा रहा है, वह अपनी निन्दा कर अपने मित्रोंसे कहने लगा "नौसेनाका उपयोग न करते हुए मैंने समुद्रतटसे दूर युद्ध कर बड़ी भारी ग़लती की। यदि मैं समुद्रतटके पास युद्धमें प्रवृत्त होता तो स्थल सेनाके पराजित होने पर जलसेना द्वारा, जो कहीं बढ़कर बलवती थी, मैं अपनी शक्ति बढ़ा कर शत्रुओंका मुकाबला भलीभाँति कर सकता था।" वस्तुतः युद्धस्थलको समुद्रतटसे बहुत दूर हटा कर पॉम्पीने बड़ी भारी भूल और सीज़रने दूरदर्शिता प्रकट की।

अब जो कुछ थोड़ासा साधन बच गया था उसीसे वह अपनी शक्ति बढ़ानेका प्रयत्न करने लगा। धन-जन-संग्रहके निमित्त उसने आस पासके नगरोंमें दूत भेजे और स्वयं भी दौड़-धूप करने लगा। पर इस आशंकासे कि कहीं शत्रु तेज़ीसे आकर मेरी तैयारीपर पानी न फेर दें, वह आश्रयके निमित्त कोई निरापद स्थान ढूँढ़ने लगा। इस विषयपर विचार करनेके लिए एक मंत्र-सभा बैठी। सभाकी रायमें रोमका कोई प्रान्त आश्रयके निमित्त निरापद न था। जब सभाकी नज़र विदेशी राज्यों-की तरफ गयी तो पॉम्पीने पार्थियाका नामोल्लेख कर कहा कि बहुत संभव है कि वहाँवाले हमारी इस विपन्न दशामें सहानुभूति दिखला कर आश्रय दें और सेना प्रस्तुत कर हमारी सहायता भी करें। सभाके और लोग राजा जूबाके पास, आफ्रिका जानेके पक्षमें थे, पर लेबॉसके थियोफै-नीज़ने इन बातोंका विरोध कर कहा कि मिस्रको छोड़ कर, जहाँकी यात्रा सिर्फ तीन दिनमें हो सकती है, और टालेमीका, जो अभी बालक है और पॉम्पीके प्रति, उसके पिताका मित्र और उपकारी होनेके कारण, कृतज्ञता-सूत्रमें आबद्ध है, उपयोग न कर पार्थियन जैसे विश्वासघाती राष्ट्रकी शर-णमें जाना निरा पागलपन है। एक रोमनकी दयालुताकी जाँच न कर, जो उसका निकट सम्बन्धी है और जिसे अपनेसे श्रेष्ठ मान लेने पर औरोंपर प्रधानता बनी रह सकती है, पार्थिया-नरेशकी दयाका भिखारी बनना कभी युक्तियुक्त नहीं हो सकता। इसके अलावा सिपियो वंशकी एक युवती महिलाको ऐसे असभ्योंके पास ले जाना जो औद्धत्य और बर्बरताके कार्योंमें ही अपना बड़प्पन समझते हैं, भारी भूल है। यदि वे उसका अपमान न भी करें तो भी लोग इसे माननेके लिए तैयार न होंगे। कहा जाता है कि इस अन्तिम विचारने ही उसकी यात्राकी दिशा फरातकी तरफसे बदल दी।

मिस्र जानेका निश्चय हो जाने पर पॉम्पी कार्नेलियाके साथ एक पोत पर रवाना हुआ। उसके साथके और लोग रणपोतों या वणिक्पोतोंपर

इसके अनन्तर यह नावपर चला गया। मित्रोंसे प्रति यही उसके अन्तिम शब्द थे। पोतसे समुद्रतट दृश्य होने पर रिमीओं स्वागत या मित्रतासूचक कोई बात कहते हुए न पाकर सेप्टिमियसकी ओर देख कर उसने कहा 'यदि मैं भूलता नहीं हूँ तो यह निश्चय है कि तुम मेरे साथ सेनामें काम कर चुके हो।' उसने न तो इसका कुछ उत्तर दिया और न किसी प्रकारका सौजन्य ही दिखलाया, सिर्फ अपना सिर हिला दिया। पुन सन्नाटा छा जाने पर पॉम्पी एक कागज निकाल कर, जिसपर टालेमीके निमित्त यूनानी भाषामें अभिनन्दन लिखा गया था, पढ़ कर जी बहलाने लगा। जब नाव तटके समीप पहुँची तो कार्नेलिया उसके दोष मित्रोंके साथ अपने पोतपरसे बड़ी व्यग्रताके साथ घटनाओंका क्रम देखने लगी। उसने कई राजकीय अंगरक्षकोंको उस ओर आगे बढ़ते देखा तो यह समझ कर उसके जीमें जी आने लगा कि ये सम्मानपूर्वक स्वागत करने जा रहे हैं। ठीक इसी समय, जब पॉम्पी फिलिपका सहारा लेकर आराम के साथ खड़ा हो रहा था, सेप्टिमियसने पीछेसे आकर उसके बदनमें तलवार घुसेड़ दी। उसकी देखादेखी सैलवियस और ऐकिलसने भी अपनी तलवारें निकाल लीं। पॉम्पीने दोनों हाथोंसे अपना चोगा उठा कर मुँह ढँक लिया और कुछ कहे या किये बिना, सिर्फ कुछ कराहते हुए, आघातोंको सहन कर ५९ वर्षकी अवस्थामें, अपनी जन्म तिथिके ठीक दूसरे दिन, मृत्युका आलिंगन किया।

कार्नेलिया यह हत्याकाण्ड देख कर त्राससे चीख पड़ी, यहाँ तक कि उसकी आवाज तटपर साफ सुनाई दी। लंगर उठा कर पोत खोल दिया गया, अनुकूल हवाकी वजहसे पोत शीघ्र ही खुले समुद्रमें पहुँच गया। यह देख मिस्रवाले उन्हें पकड़नेकी इच्छा होनेपर भी पीछा करनेका साहस न कर सके। इन्होंने पॉम्पीका सिर काट कर नङ्गा शरीर किनारे-पर फेंक दिया जिसमें इस शोकजनक दृश्यको जो देखना चाहें, देख सकें। जबतक ये लोग इस शवको देख कर अपने नेत्रोंकी प्यास बुझाते

रहे तबतक फिलिप पासमें ही खड़ा रहा। इनके चले जाने पर उसने समुद्रजलसे शवको धोकर अपने कुरतेमें लपेटा। इधर उधर लकड़ीकी तलाश करने पर एक टूटी हुई डोंगीके कुछ सड़े गले टुकड़े मिल गये जिनसे किसी प्रकार चिता सजायी जा सकती थी। पुराने तख्तोंको एकत्र करते देख एक रोमन नागरिकने, जो अपनी युवावस्थामें पॉम्पीकी सेनामें काम कर चुका था, उसके पास आकर पूछा 'पॉम्पी महान्की चिता सजानेवाले तुम कौन हो?' उसके यह उत्तर देनेपर कि मैं उसका मुक्तदास फिलिप हूँ, उसने कहा 'तब केवल तुम्हीं यह श्रेय नहीं प्राप्त कर सकते; इस पवित्र कार्यमें मुझे भी भाग लेने दो, जिसमें मैं विदेशमें अधिक काल व्यतीत करनेका अफसोस न कर अपनी आपत्तियोंके बदले पॉम्पी महान्के शरीर-स्पर्श और रोमके सर्वश्रेष्ठ अधिनायककी अन्त्येष्टि क्रिया करनेका आनन्द प्राप्त कर सकूँ।' इस प्रकार पॉम्पी महान्की अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न हुई। दूसरे दिन ल्यूशियस लेंटुलस, जिसे इस घटनाकी कोई सूचना न थी, साइप्रससे चलकर इस किनारेके पास पहुँचा। चिता और उसके पासमें फिलिपको खड़ा देखकर उसने पूछा, 'यहाँ किसका अन्त हुआ है?' फिर गहरी साँस लेकर उसने स्वयं कहा 'शायद वह व्यक्ति पॉम्पी महान् ही है।' तटपर उतरनेके साथ ही उसे लोगोंने पकड़ कर मार डाला।

इस प्रकार पॉम्पी महान्का अन्त हुआ। इसके कुछ ही काल बाद सीज़र मिस्र पहुँचा। इस समय वहाँ अव्यवस्था फैली हुई थी। जब एक मिस्री पॉम्पीका सिर भेंट करने गया तो घृणासे उसने अपना मुख फेर लिया और मुहर पाने पर, जिसमें पंजेमें तलवार धारण किये हुए सिंहका चित्र अंकित था, सीज़र फूट फूट कर रोने लगा। उसने ऐकिलस और पाथिनसका वध करा डाला। नीलके किनारे युद्धमें पराजित होकर टालेमी भाग गया और फिर उसका कभी पता न चला। अलङ्कारशास्त्री थियाडोटस मिस्र-परित्याग कर सीज़रके हाथसे बच निकला और खानाबदो-

उसके आस पाससे ही हो कर जा रहे थे। यात्रा निरापद समाप्त हुई यह मालूम होने पर कि टालेमी अपनी बहनसे युद्ध करनेके निमित्त पेलूजियम नगरमें ससैन्य ठहरा हुआ है, पॉम्पीने अपने आगमनकी सूचना देने और आश्रयके लिए प्रार्थना करनेके निमित्त उसके पास दूत भेजा। टालेमी स्वयं अल्पवयस्क था, इसलिए पॉथिनसने जो इस समय राज्यका प्रधान बना हुआ था, प्रमुख लोगोंकी एक सभा आमंत्रित कर प्रत्येकसे इस सम्बन्धमें अपनी अपनी सम्मति देनेको कहा, हालांकि उसके आगे इनकी सम्मतिका कोई मूल्य न था। यह कैसे दुःखकी बात है कि पॉम्पी महान्‌के भाग्यका निर्णय खोजा पॉथिनस, चिअस निवासी थियोडोटस जो पद्य सिखानेके लिए नौकर रखा गया था, और मिस्री ऐकिलस जैसे व्यक्ति करें। राजाके दरबारियों और अध्यापकोंमें इन्हींका उसपर सबसे अधिक प्रभाव था और इन्हींसे वह प्रायः राय भी लिया करता था। सभाके निर्णयकी प्रतीक्षामें पॉम्पी कुछ दूरीपर लंगर डाले ठहरा हुआ था सभाके सदस्य एकमत नहीं थे, कोई सम्मानपूर्वक स्वागत करनेके पक्षमें था, तो कोई सीधे चले जानेकी आज्ञा देनेकी राय दे रहा था। थियोडोटस ने अपनी वक्तृत्वशक्ति दिखलानेके लिए इस बातपर जोर दिया कि ये दोनों ही बातें अयुक्त हैं, क्योंकि यदि स्वागत किया जाय तो सीजरसे शत्रुता हो जायगी और पॉम्पी सर्वेसर्वा बन बैठेगा, और यदि उसे जानेकी आज्ञा दी जाय तो समय पाकर वह इस अपमानका बदला चुकानेसे बाज न आवेगा और सीजर भी, उसके हाथमें पॉम्पीको समर्पित न करनेके कारण, बुरा मान बैठेगा। इसलिए सबसे अच्छा यही उपाय है कि उसे बुलाकर मार डाला जाय। इस प्रकार सीजरके प्रति हम उपकार भी करेंगे और पॉम्पीसे भी डरनेका कोई कारण नहीं रह जायगा। उसने हँसते हुए कहा 'मृत व्यक्ति कोई अपकार नहीं कर सकता।'

इस रायके मान लेने पर बधका काम ऐकिलसके सिपुर्द किया गया। इसके अनुसार वह सेप्टिमियस और सैलवियसको, जो पॉम्पीकी

अध्यक्षतामें कार्य कर चुके थे, तथा कुछ और आदमियोंको लेकर पॉम्पीके पोतकी तरफ चला। तबतक पॉम्पीके साथ यात्रा करनेवालोंमें जो प्रमुख थे वे भी दौत्यका फल जाननेकी इच्छासे उसीके पोतपर आ गये थे। वे लोग मिस्रवालोंके स्वागतका ढंग देख कर जो देखनेमें शाही, सम्मान्य या थियोफैनीज़के कथन अथवा उनकी आशाके ज़रा भी अनुकूल न था (क्योंकि उससे मिलनेके लिए सिर्फ थोड़ेसे आदमी एक मछुएकी नाव पर आ रहे थे), स्वागत करनेवालोंकी मंशाके सम्बन्धमें सन्देह करने लगे और पॉम्पीको भी, जब तक वह उनकी पहुँचके बाहर था, अपना पोत खोल कर खुले समुद्रमें चल देनेके लिए सावधान करने लगे। तबतक मिस्री नाव नजदीक पहुँच गयी। सर्वप्रथम सेप्टिमियसने खड़े होकर पॉम्पीको सूत्रधारकी उपाधिसे सम्बोधित करते हुए लैटिन भाषामें अभिवादन किया। इसके बाद ऐकिलसेने यूनानी भाषामें अभिवादन कर यह कहते हुए उसे अपनी नावपर बुलाया कि तटकी तरफ समुद्र बहुत छिछला है, भारी पोत उधर जाने पर बालूसे टकरा जायगा। उसी समय कई राजकीय युद्ध-पोत तैयार होते और समुद्रतटपर सैनिक एकत्र होते देख पड़े। यदि पॉम्पी अपने विचारमें परिवर्तन भी करता तो वहाँसे निकल भागना असंभव था, इसके अलावा उनके प्रति अविश्वास दिखलानेसे हत्यारोंको अपनी निष्ठुरता प्रदर्शित करनेका एक बहाना भी मिल जाता। इसलिए पॉम्पीने कार्नेलियासे मिल कर, जो पहले ही उसकी आसन्न मृत्युपर विलाप कर रही थी, अपने दो टुकड़ी-नायकोंको, जिनमें एकका नाम फिलिप और दूसरेका सिदीज़ था, अपने पहले नावपर जानेकी आज्ञा दी। जब ऐकिलस उसका हाथ पकड़ कर नाव परसे उतारने लगा तब पीछे अपनी स्त्री और पुत्रकी ओर फिर कर उसने सोफोक्लीजकी यह पंक्ति कही—

'अत्याचारी नरनके द्वार धरत जे लात।
हों स्वतंत्र जो वायुसम तऊ दास है जात॥'

इसके अनन्तर वह नावपर चला गया। मित्रोंके प्रति यही उसके अन्तिम शब्द थे। पोतसे समुद्रतट दृश्य होने पर किसीको स्वागत या मित्रतासूचक कोई बात कहते हुए न पाकर सेप्टिमियसकी ओर देख कर उसने कहा 'यदि मैं भूलता नहीं हूँ तो यह निश्चय है कि तुम मेरे साथ सेनामें काम कर चुके हो।' उसने न तो इसका कुछ उत्तर दिया और न किसी प्रकारका सौजन्य ही दिखलाया, सिर्फ अपना सिर हिला दिया। पुनः सन्नाटा छा जाने पर पॉम्पी एक कागज निकाल कर, जिसपर टालेमीके निमित्त यूनानी भाषामें अभिनन्दन लिखा गया था, पढ़ कर जी बहलाने लगा। जब नाव तटके समीप पहुँची तो कार्नेलिया उसके और मित्रोंके साथ अपने पोतपरसे बड़ी व्यग्रताके साथ घटनाओंका क्रम देखने लगी। उसने कई राजकीय अंगरक्षकोंको उस ओर आगे बढ़ते देखा तो यह समझ कर उसके जीमें जी आने लगा कि ये सम्मानपूर्वक स्वागत करने जा रहे हैं। ठीक इसी समय, जब पॉम्पी फिलिपका सहारा लेकर आराकके साथ खड़ा हो रहा था, सेप्टिमियसने पीछेसे आकर उसके बदनमें तलवार घुसेड़ दी। उसकी देखादेखी सैलवियस और ऐकिलसने भी अपनी तलवारें निकाल लीं। पॉम्पीने दोनों हाथोंसे अपना चोगा उठा कर मुँह ढँक लिया और कुछ कहे या किये बिना, सिर्फ कुछ कराहते हुए, आघातोंको सहन कर ५९ वर्षकी अवस्थामें, अपनी जन्मतिथिके ठीक दूसरे दिन, मृत्युका आलिंगन किया।

कार्नेलिया यह हत्याकाण्ड देख कर जोरसे चीख पड़ी, यहाँ तक कि उसकी आवाज तटपर साफ सुनाई दी। लंगर उठा कर पोत खोल दिया गया, अनुकूल हवाकी वजहसे पोत शीघ्र ही खुले समुद्रमें पहुँच गया। यह देख मिस्रवाले उन्हें पकड़नेकी इच्छा होनेपर भी पीछा करनेका साहस न कर सके। इन्होंने पॉम्पीका सिर काट कर नङ्गा शरीर किनारेपर फेंक दिया जिसमें इस शोकजनक दृश्यको जो देखना चाहें, देख सकें। जबतक ये लोग इस शवको देख कर अपने नेत्रोंकी प्यास बुझाते

रहे तबतक फिलिप पासमें ही खड़ा रहा। इनके चले जाने पर उसने समुद्रजलसे शवको धोकर अपने कुरतेमें लपेटा। इधर उधर लकड़ीकी तलाश करने पर एक टूटी हुई डोंगीके कुछ सड़े गले टुकड़े मिल गये जिनसे किसी प्रकार चिता सजायी जा सकती थी। पुराने तख्तोंको एकत्र करते देख एक रोमन नागरिकने, जो अपनी युवावस्थामें पॉम्पीकी सेनामें काम कर चुका था, उसके पास आकर पूछा 'पॉम्पी महान्की चिता सजानेवाले तुम कौन हो?' उसके यह उत्तर देनेपर कि मैं उसका मुक्तदास फिलिप हूँ, उसने कहा 'सब केवल तुम्हीं यह श्रेय नहीं प्राप्त कर सकते; इस पवित्र कार्यमें मुझे भी भाग लेने दो, जिसमें मैं विदेशमें अधिक काल व्यतीत करनेका अफसोस न कर अपनी आपत्तियोंके बदले पॉम्पी महान्के शरीर-स्पर्श और रोमके सर्वश्रेष्ठ अधिनायककी अन्त्येष्टि क्रिया करनेका आनन्द प्राप्त कर सकूँ।' इस प्रकार पॉम्पी महान्की अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न हुई। दूसरे दिन ल्यूशियस लेंटुलस, जिसे इस घटनाकी कोई सूचना न थी, साइप्रससे चलकर इस किनारेके पास पहुँचा। चिता और उसके पासमें फिलिपको खड़ा देखकर उसने पूछा, 'यहाँ किसका अन्त हुआ है?' फिर गहरी साँस लेकर उसने स्वयं कहा 'शायद वह व्यक्ति पॉम्पी महान् ही है।' तटपर उतरनेके साथ ही उसे लोगोंने पकड़ कर मार डाला।

इस प्रकार पॉम्पी महान्का अन्त हुआ। इसके कुछ ही काल बाद सीज़र मिस्र पहुँचा। इस समय वहाँ अव्यवस्था फैली हुई थी। जब एक मिस्री पॉम्पीका सिर भेंट करने गया तो घृणासे उसने अपना मुख फेर लिया और मुहर पाने पर, जिसमें पंजेमें तलवार धारण किये हुए सिंहका चित्र अंकित था, सीज़र फूट फूट कर रोने लगा। उसने ऐकिलस और पाथिनसका वध करा डाला। नीलके किनारे युद्धमें पराजित होकर टालेमी भाग गया और फिर उसका कभी पता न चला। अलङ्कारशास्त्री थियाडोटस मिस्र-परित्याग कर सीज़रके हाथसे बच निकला और खानाबदो-

पाँपी हालतमें जहाँ तहाँ लोगोंसे अपमानित और घृणित होकर घूमता रहा। अन्तमें मार्कस प्रटगने, सीज़रका वध करनेके अनन्तर, उसे एशियाके प्रान्तमें पकर विविध प्रकारसे अपमानित कर मार डाला। पॉम्पीकी राख कार्नेलियाके पास भेज दी गयी जिसे उसने अल्वाके पास अपने ग्राम्य-भवनमें गड़वा दिया।

ऐजेसिलॉस और पॉम्पी।

(परस्पर तुलना)

ऐजेसिलॉस और पॉम्पीकी परस्पर तुलना करनेके लिए पहले सरसरी तौरसे यह देखना चाहिये कि किन किन बातोंमें इनमें विभिन्नता है। पहली बात यह है कि पॉम्पीने इटलीको अत्याचारियोंके हाथसे मुक्त करनेमें सिलाकी सहायता कर उन्नति करते हुए न्याय्य और उचित साधनोंके बलपर महत्व प्राप्त किया था पर ऐजेसिलासने देवता और मनुष्य दोनोंके प्रति अनाचार कर राज्य प्राप्त किया था—मनुष्यके प्रति तो इस प्रकार कि उसने लिओटिचाइडीज़को जिसे उसके भाईने अपना न्याय्य पुत्र घोषित किया था, जारज करार दिलवाया और देवताके सम्बन्धमें यह किया कि देववाणीके साथ उसकी मिथ्या व्याख्या जोड़वा कर अपनी पंगुता पर उसे लागू नहीं होने दिया *। दूसरी बात यह है कि पॉम्पीने सिलाके प्रति, जबतक वह जीवित रहा, बराबर सम्मान प्रदर्शित किया और उसके मरने पर भी उसने, लेपिडसके विरोध करने पर भी यत्नपूर्वक ससम्मान उसकी अन्त्येष्टि करायी और उसके पुत्र फास्टसके साथ अपनी कन्याका विवाह कर उसका आदर किया, किन्तु ऐजेसिलॉसने एक मामूलीसे बहाने पर लाइसैंडरको भर्त्सना और अपमानके साथ बहिष्कृत कर दिया। फिर सिलाने पॉम्पीका जितना उप-

* देखिये 'ऐजेसिलास' पृ० १३१

कार किया था, उसके बदलेमें पॉम्पीने उसके साथ काफी भलाई की थी। किन्तु लाइसैंडरने तो ऐजेसिलॉसको स्पार्टाका नरेश और सारे यूनानका अधिनायक ही बना दिया। तीसरी बात यह है कि राजनीतिक क्षेत्रमें पॉम्पीने खासकर मित्रों और रिश्तेदारोंके सम्बन्धमें अपने श्वशुर सीज़र और सिपियोकी अनुचित मांगोंका समर्थन करनेमें न्याय और विधानकी सीमाका अतिक्रमण किया, पर ऐजेसिलॉसने अपने पुत्रको सन्तुष्ट करनेके लिए स्फोड्रिअसको जिसे अथेंज़वालोंके प्रति की गयी बुराईके बदले प्राण-दंड देना ही उचित होता, बिलकुल छोड़ दिया और फोबिडसको, जिसने विश्वासघात कर थीबीज़के साथकी सन्धि भंग की थी, जोशके साथ बढ़ावा दिया था, जो स्पष्ट ही अनुचित कार्य था। संक्षेपमें, पॉम्पीने मित्रोंकी इच्छाके आगे झुक कर या अपने प्रमादवश रोमको जो क्षति पहुँचायी, वह ऐजेसिलॉसने स्पार्टाको उसके प्रति बुरे भावसे प्रेरित होकर हठ-पूर्वक बीओशिअन युद्धकी अग्नि प्रज्वलित कर पहुँचायी। यदि ये संकट व्यक्तिविशेषके दुर्भाग्यके कारण माने जायँ तो पॉम्पीके सम्बन्धमें कहा जा सकता है कि रोमनोंको इस प्रकारकी कोई आशंका नहीं थी पर लैसीडीमन वालोंको इस पंगु-शासनकी बुराईकी खबर पहलेसे ही थी किन्तु ऐजेसि-लासने उन्हें इस जानकारीसे लाभ उठाने नहीं दिया। यदि लाइसैंडरने देववाणीका रूप बिकृत कर ऐजेसिलासके अनुकूल न बना दिया होता तो लिओटिचाइडीज़के विदेशी और जारज मान लेने पर भी स्पार्टाके लिए एक भला-चंगा और न्याय्य नरेश मिल जाता क्योंकि युरिपांटिडीका वंश अभी वर्तमान था। ल्यूक्ट्रा-युद्धसे भागे हुए लोगोंके साथ कारवाई करनेके सम्बन्धमें जनता बड़े संकटमें पड़ गयी थी, पर ऐजेसिलॉसने उस दिनके लिए कानून निष्क्रिय बनाकर असाधारण राजनीति-कुशलता दिखलायी; पाम्पीमें इस प्रकारकी कोई बात नहीं देख पड़ती बल्कि इसके प्रतिकूल, पॉम्पी अपने ही बनाये हुए क़ानूनोंको मित्रोंके लिए ताकपर धर देनेमें कोई बुराई नहीं मानता था। ऐसा मालूम होता था कि वह अपने मित्रोंको अपनी

प्रतिका परिचय देना चाहता था। ऐजेसिलॉसने, जब कुछ नागरिकोंके बचानेके निमित्त न्याय-विरोधकी आवश्यकता आ पड़ी तो, एक ऐसा मार्ग निकाल दिया जिससे कानून और अपराधी दोनोंकी रक्षा हो गयी। गृह परवाना मिलने पर ऐजेसिलॉसने एशियाका युद्ध छोड़ कर अपने देश लौट आनेमें अनुपम शिष्टता और आज्ञाकारिता दिखलायी। वह पॉम्पी की तरह केवल ऐसे ही कार्योंका सम्पादन नहीं करता था जो साथ ही साथ उसके महत्वके भी साधक हों। उसकी दृष्टि एकमात्र देशहित पर ही रहा करती थी, इसी कारण उसने इतने बड़े पद और सम्मानको लाते ठुकरा दिया, जैसा कि सिकन्दर महानके अतिरिक्त उसके पहले या पीछे किसीने भी नहीं किया।

यदि दूसरे पहलूसे उनके सैनिक कार्योंपर विचार किया जाय तो पॉम्पीकी असाधारण विजयों आदिके सामने ऐजेसिलॉसके कार्य नहीं ठहर सकते। शत्रुओंके प्रति इनके बर्तावके ढंगमें भी बहुत अन्तर देख पड़ता है। ऐजेसिलॉस थीबीजको—जो उसके वंशका जन्मस्थान था—गुलाम बनानेके और मेसिनियाको—जो उसके देशका पुराना मित्र था—नष्ट करनेके प्रयत्नमें स्वयं स्पार्टाको ही बरबाद कर रहा था। इसके प्रतिकूल पॉम्पीने कुछ नगर उन विजित जलदस्युओंको दे दिये जो अपनी रहन सहनमें परिवर्तन करनेको इच्छुक थे। साथ ही यदि वह चाहता तो आर्मीनिया-नरेश टिग्रेनीजको बन्दीके रूपमें अपने जुलूसके साथ ले चल सकता था, पर उसने यह कह कर कि "स्थायी गौरवके आगे एक दिनके गौरवका कोई मूल्य नहीं है" उसे अपना मित्र बना लिया। पर यदि इनकी प्रधानताका निर्णय युद्धकी नीति और तत्सम्बन्धी कार्योंके ही आधारपर किया जाय तो पॉम्पी इस सम्बन्धमें बहुत पीछे रह जाता है। ऐजेसिलॉसने सत्तर हजार सैनिकों द्वारा घिरे रहने पर भी नगरका परित्याग नहीं किया, सो भी उस स्थितिमें जब कि नगरकी रक्षाके लिए उसके पास ल्यूक्ट्राके युद्धमें पराजित केवल मुट्ठी भर सैनिक

थे। पर पॉम्पी सीज़रके साथ केवल पाँच हजार तीन सौ सैनिक और इटलीके केवल एक छोटेसे नगरके अधिकृत हो जाने पर, या तो इस छोटीसी सेनाका सामना करनेका साहस न कर या सैनिकोंकी सख्याका ठीक समाचार न पाकर, भयके मारे रोम छोड़ कर भाग गया।* इस पलायनमें वह अपनी स्त्री और बच्चोंको तो साथ लेता गया पर नागरिकोंको अरक्षित दशामें ही छोड़ गया। उसके लिए उचित तो यह था कि ठहर कर या तो देशके शत्रुको ही पराजित करता या परास्त होने पर विजयीकी, जो उसका सहनागरिक और सम्बन्धी था, शर्तोंको स्वीकार करता। इसके कुछ ही काल पूर्व पॉम्पीने गॉल प्रान्तमें उसका शासनकाल बढाने या उसे प्रधान शासक बनानेका विरोध किया था, पर अब उसने नगरपर उसका अधिकार हो जाने दिया और मेटुलससे यह कहनेका मौका दिया कि तुम तथा अन्य नगर-निवासी इस समय मेरे बन्दी हैं।

स्वयं अधिक बलवान् होने पर शत्रुको युद्धके लिए लाचार करना और निर्बल होने पर युद्धमें घसीटे जानेसे अपनेको बचाना, यदि प्रधान सेनाध्यक्षका मुख्य कार्य समझा जाय, तो इस बातमें ऐजेसिलास पूर्णतः कुशल देख पड़ता है और इसी नीतिके अनुसरणके कारण वह बराबर अजेय बना रहा। पर पॉम्पीने सीजरको परेशानीमें न डालते हुए स्वयं समुद्रतटसे बहुत दूर हटकर स्थलयुद्ध द्वारा उसे लाभ उठाने दिया। फल यह हुआ कि कोष, भाण्डार और समुद्रपर भी, जिनमें सबके सब विरोधी पक्षके हाथमें थे और जिनकी सहायतासे बिना युद्धके ही विजय प्राप्त की जा सकती थी, सीज़रका अधिकार हो गया। इस सम्बन्धमें पॉम्पीको

* वस्तुतः सामना करनेमें अपनेको असमर्थ पाकर ही पाम्पीने रोम छोड़ा था। सीजरकी सेना इससे कहीं अधिक थी और रोम घेरेका भी सहन नहीं कर सकता था क्योंकि सीजरने बहुतोंको रुपये देकर अपनी ओर मिला लिया था।

दोषमुक्त करनेके लिए जो दलील पेश की जाती है, वही उसके लिए सबसे बढ़कर अपमानजनक है। यदि कोई नया सेनापति मैनिकोंके शोरगुल और अशान्तिसे तङ्ग और हतोत्साह होकर अपने विवेकपूर्ण निश्चयपर न डटा रह सके तो उसका दोष क्षम्य माना जा सकता है, पर पॉम्पी जैसे अनुभवी व्यक्तिका, जिसके शिविरको रोमन लोग अपना देश एवं जिसके सभिको परिषद्‌भवन और, रोममें रहकर काम करनेवाले न्यायकर्त्ता आदिको देशद्रोही समझते थे, जिसने मानगी तौरसे कभी सैनिकका कार्य न कर अधिनायककी ही हैसियतसे बड़ी बड़ी विजयें प्राप्त की थीं, फैवोनियस और डोमीशियसके तानोंसे बाध्य होकर और 'शाहंशाह' (ऐगमेमनान) कहलानेके भयसे भीत होकर सारे साम्राज्य और स्वाधीनताको संकटमें डाल देना कभी क्षम्य नहीं समझा जा सकता। यदि उसे वर्तमान अपकीर्तिका अधिक ख्याल था तो सर्वप्रथम नगरकी रक्षामें प्रवृत्त होकर उसीके निमित्त उसे युद्ध करना चाहिए था, न कि अपने पलायनको थेमिस्टाक्लीजकी रणकुशलताका अनुकरण समझ कर थेसलीमें युद्ध-निवारण करनेमें अपना अपमान समझना चाहिये था। साम्राज्य-प्राप्तिकी कोशिश करनेके लिए एक फरसेलियाका मैदान ही तो नहीं था और न उसके पास कोई नकीब ही यह सूचना लेकर आया था कि या तो युद्ध करो या आत्म-समर्पण। युद्धके लिए और बहुतसे मैदान तथा नगर थे। यही क्यों, समुद्रपर उसीका आधिपत्य होनेके कारण वह इसके लिए कोई भी स्थान पसन्द कर सकता था। ऐजेसिलॉसको भी स्पार्टा नगरमें, जब थीबन लोग बाहर निकल कर युद्ध करनेके लिए छेड़ा करते थे तो कुछ कम शोर-गुलका सामना नहीं करना पड़ा था। उसी प्रकार मिस्रमें भी वहाँके नरेशके कारण, जिसे वह युद्धसे परहेज करनेकी सम्मति दे रहा था, उसे अत्यधिक आक्षेपों और कटूक्तियों आदिका शिकार बनना पड़ा। उसने अपने पूर्वनिश्चित युक्तियुक्त मार्गपर दृढ़ रह कर केवल मिस्र देशवासियोंको ही उनकी इच्छाके

विरुद्ध चल कर नहीं बचाया बल्कि स्पार्टाको भी आकस्मिक भूकम्पमें नष्ट विनष्ट होनेसे बचा लिया। इतना ही नहीं, उसने थीबन लोगोंपर चिरस्मरणीय विजय भी प्राप्त की क्योंकि उसने स्पार्टावालोंको बरबाद होनेसे रोककर, जिसपर वे तुले हुए थे, उन्हें विजय प्राप्त करने योग्य बना दिया। फल यह हुआ कि ऐजेसिलासकी प्रशंसा स्वयं वे ही लोग करने लगे जो उसकी जबर्दस्तीके ही कारण बच पाये थे। कुछ लोगोंका कथन है कि पॉम्पीके श्वशुर सिपियोने, जिसने एशियासे लाया हुआ धन अपने उपयोगमें लानेके लिए छिपा रखा था, उसे धोखा देकर—रसद समाप्त होनेका बहाना बनाकर—युद्धमें संलग्न करा दिया। इस बातको सत्य मान लेने पर भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि अधिनायकको न तो इतनी आसानीसे धोखेमें आना चाहिये था और न ऐसी छोटी चालके पीछे इतने महत्वपूर्ण कार्यको खतरेमें डालना चाहिए था।

५. इन दोनोंकी मिस्र-यात्राके सम्बन्धमें कहा जा सकता है कि एक तो भागनेकी हालतमें आवश्यकतासे बाध्य होकर वहाँ गया और दूसरा आवश्यकतासे प्रेरित होकर नहीं बल्कि द्रव्योपार्जनके विचारसे अर्थात् वैतनिक सैनिकके रूपमें इस उद्देश्यसे भरती हुआ था जिसमें वह यूनानियोंसे युद्ध छेड़नेमें समर्थ हो सके। पॉम्पीके सम्बन्धमें मिस्रवालोंपर जो आरोप किया जा सकता है, वही मिस्रवालोंके सम्बन्धमें ऐजेसिलॉसपर किया जा सकता है। पॉम्पीने उनपर विश्वास कर धोखा खाया और ऐजेसिलॉसने उनके साथ विश्वासघात किया—उनकी सहायताके लिए जाकर उनके शत्रुओंका साथ दिया।

७—सिकन्दर

अब मैं मकदूनियाके राजा सिकन्दरका तथा पॉम्पीका विध्वंस करनेवाले सीजरका जीवनचरित्र लिखने जा रहा हूँ। इस सम्बन्धमें मैं यह पहलेसे ही कह देना चाहता हूँ कि मैं इन महापुरुषोंके जीवनकी कुछ प्रसिद्ध प्रसिद्ध घटनाओंका ही वर्णन करूँगा। प्रत्येक छोटी बड़ी घटनाका ब्यौरेवार वर्णन करना मेरा अभीष्ट नहीं है, क्योंकि मैं तो १जीवनचरित्र लिखने बैठा हूँ, इतिहास लिखने नहीं। इसके सिवाय, मनुष्यका पराक्रम सूचित करनेवाली बड़ी बड़ी घटनाओंसे ही हमें उसके सौजन्य या दौर्जन्यका पता चल सकता हो, ऐसी बात नहीं है, बल्कि कभी कभी तो हमें एक छोटी सी बात, एक मामूली मजाकसे मनुष्यके चरित्र और उसकी प्रवृत्तियोंका जितना अच्छा ज्ञान हो जाता है, उतना बड़े बड़े आक्रमणों अथवा भयंकर लड़ाइयोंमें नहीं हो सकता। इसीसे मैं उन बातों और उन घटनाओंपर विशेष ध्यान देनेका प्रयत्न करूँगा जिनसे मनुष्यको आत्माका परिचय मिलता हो। ऐसा करते समय, संभव है, मुझे उन बड़े बड़े युद्धों, तथा अन्य प्रसिद्ध घटनाओंका वर्णन बिल्कुल छोड़ देना पड़े जो दूसरोंकी दृष्टिमें अधिक महत्वपूर्ण हों।

सिकन्दर (अलेक्जण्डर) पितृ-परम्परासे हरकुलीजका एवं मातृ-परम्परासे ईएकसका वंशज था। उसका पिता फिलिप जब समोथ्रेसमें रहता था, तब उसकी उम्र थोड़ी ही थी। ओलिम्पियस नामक एक महिलाके साथ उसका प्रणय हो गया। फिलिपने शीघ्र ही उसके साथ, उसके भाईकी स्वीकृतिसे, विवाह कर लिया। विवाहकी पूरा तैयारी होनेके ठीक पहलेवाली रातको ओलिम्पियसने स्वप्न देखा कि उसके शरीरपर आकाशसे वज्रपात हुआ, जिससे भीषण अग्नि प्रज्वलित हुई।

उसकी ज्वालाएँ छिन्न भिन्न होकर चारों तरफ फैल गयीं और फिर शान्त हो गयीं। विवाह हो जानेके बाद फिलिपने भी एक स्वप्न देखा। उसे ऐसा मालूम हुआ मानो उसने अपनी पत्नीके शरीरको किसी चीज़से लपेट कर उसपर मुहर कर दी हो। मुहर किये गये स्थानपर उसे सिंहकी तसवीर सी नज़र आयी। इस स्वप्नकी चर्चा करने पर एक ज्योतिषीने भविष्यद्वाणी की कि महारानीके गर्भसे एक ऐसा पुत्र उत्पन्न होगा जो सिंहकी तरह पराक्रमी एवं शक्तिशाली होगा। एक बार जब ओलिम्पियस सो रही थी, तब फिलिपने उसके पार्श्वमें एक सर्प बैठा हुआ देखा। कहते हैं, प्रधानतया इसी घटनाके कारण उसके प्रति फिलिपका प्रेम कम हो गया। चाहे वह उसे जादूगरनी समझने लगा हो या उसकी यह धारणा हो गयी हो कि वह किसी देवतासे सम्बन्ध रखती है, इसमें सन्देह नहीं कि इसके बाद फिलिपको उसके साथ बातचीत करनेमें विशेष आनन्द नहीं आता था।

इस घटनाके बाद फिलिपने अपोलो देवताकी भविष्यद्वाणी जाननेके लिए एक आदमीको डेल्फी भेजा। वहाँसे फिलिपको आज्ञा हुई कि, वह बलि चढ़ावे और अन्य देवताओंकी अपेक्षा "अमन" देवताकी उपासना विशेष रूपसे करे। उसे यह भी बताया गया कि एक दिन उसे अपनी उस आँखसे हाथ धोना पड़ेगा जिससे उसने दरवाजेके छिद्रमेंसे झाँकनेकी कोशिश की थी, जब उसने अपनी स्त्रीके पास सर्पके रूपमें उस देवताको देखा था।

जिस दिन सिकन्दरका जन्म हुआ था उसी दिन एफेससमें डायनाका मन्दिर जल कर खाक हो गया। जिस समय इस मन्दिरमें आग लगी, उस समय इसकी सरक्षिका सिकन्दरके जन्म-समय सहायता देनेके लिए बाहर गयी हुई थी। उस समय एफेससमें जितने ज्योतिषी एकत्र थे, वे सब मन्दिरके विध्वंसको आनेवाली किसी और बड़ी विपत्तिकी सूचना समझ कर सारे शहरमें अपना सिर पीटते हुए इधर उधर

दौड़ने लगे और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे कि आज जो घटना हुई है वह सारे एशियाके लिए घातक सिद्ध होगी।

पोटीडिया लेनेके ठीक बाद ही फिलिपको एक साथ ये तीन समाचार मिले—पहला यह कि पारमीनियोने एक बड़ी लड़ाईमें इली-रियन लोगोंको हटा दिया; दूसरा, घुड़दौड़में भाग लेनेवाले उसके घोड़ेने ओलिम्पिक खेलमें बाज़ी मार ली और तीसरा यह कि उसकी रानीने पुत्र उत्पन्न किया। ये समाचार पाकर उसे बड़ी खुशी हुई। इसी समय ज्योतिषियोंके मुँहसे यह सुन कर वह और भी आनन्दित हुआ कि जिस पुत्रका जन्म ऐसी तीन सफलताओंके समय हुआ है, वह अवश्य ही अजेय होगा।

सिकेन्दर सुन्दर और हल्के रङ्गका था, किन्तु उसका चेहरा और उसकी छाती कुछ अधिक लाल थी। एरिस्टाक्सेनस अपने संस्मरणोंमें लिखता है कि उसकी त्वचासे बड़ी अच्छी सुगन्ध निकलती थी। उसका मुखोच्छ्वास तथा उसका सारा शरीर इतना सुगन्धिमय था कि उसके साथ सम्पर्क रहनेके कारण उसके पहननेके कपड़े तक सुवासित हो जाते थे। शारीरिक उपभोगोंकी ओर बाल्यकालसे ही उसका झुकाव कम था, किन्तु अन्य बातोंके लिए वह बहुत उत्सुक रहता था। ऐश्वर्य एवं ख्याति से उसे विशेष प्रेम था और उनकी प्राप्तिके लिए जैसी आत्मिक दृढ़ता एवं उच्चता उसने प्रदर्शित की, वैसी उस युगमें बहुत कम दृष्टिगोचर हो सकती थी। किन्तु उन्हें पानेके लिए वह अपने पिताकी तरह प्रति-क्षण चेष्टा नहीं करता था और न हमेशा उनकी वैसी कद्र ही करता था। जब किसीने उससे पूछा कि "क्या आप ओलिम्पिक खेलोंकी दौड़में भाग लेंगे, क्योंकि आप बहुत तेज चलते हैं?" तब उसने जवाब दिया "हाँ

राजदूतोंका स्वागत करना पड़ता था। उनसे वह इतनी शिष्टतापूर्वक बातचीत करता था और ऐसे ऐसे प्रश्न करता था कि वे लोग दङ्ग हो जाते थे। उन्हें फिलिपकी योग्यता भी, जो इतनी ख्याति पा चुकी थी, उसके लड़केके उन्नत विचारों और महान् उद्देश्यके सामने तुच्छ प्रतीत होती थी। जब जब वह यह सुनता था कि फिलिपने कोई मुख्य नगर ले लिया है या कोई बड़ी विजय पायी है, तब तब प्रसन्न होनेके बजाय वह अपने मित्रोंसे कहा करता था कि "मालूम होता है, पिताजी सब कुछ पहले ही समाप्त कर हमें महान् और सुप्रसिद्ध कार्य करनेका अवसर न देंगे।" सिकन्दरका झुकाव बड़े बड़े काम करने और यश प्राप्त करनेकी ओर विशेष रूपसे था। आनन्द-भोग या धन-प्राप्तिकी उसकी इच्छा न थी। इसीसे वह समझता था कि मुझे जो कुछ अपने पितासे प्राप्त होगा, उसके कारण मैं स्वय विशेष ख्याति प्राप्त न कर सकूँगा। समुन्नत और सुस्थापित राज्यका उत्तराधिकारी बननेके बजाय वह अपने पितासे ऐसा राज्य प्राप्त करना अधिक पसन्द करता था जो विविध आपत्तियों और युद्धोंके कारण जर्जर हो रहा हो, क्योंकि ऐसे राज्यका उत्तराधिकारी होनेमे उसे अपना पराक्रम दिखाने और प्रतिष्ठा प्राप्त करनेका ज़्यादा मौक़ा मिल सकता था।

एक बार एक मनुष्य फिलिपके पास ब्यूसीफेल्स नामक एक घोड़ा बेचनेके लिए ले आया। जब फिलिपका कोई आदमी उसपर सवारी करनेकी कोशिश करता तब वह ऐसी दुलत्तियाँ चलाता और इस कदर उछल-कूद मचाता कि उसे छूने तककी किसीकी हिम्मत न पड़ती। इसीसे वह बिल्कुल व्यर्थ और अदमनीय समझ कर लौटाया जाने लगा। यह देख कर पास ही खड़े हुए सिकन्दरने कहा "वशमें करनेकी दृढ़ता और कुशलताके अभावके कारण कैसा अच्छा घोड़ा हाथसे जा रहा है!" फिलिपने पहले तो उसकी बातपर कोई ध्यान नहीं दिया, किन्तु जब उसने सिकन्दरको कई बार ऐसा कहते सुना और घोड़ेके लौटाये जानेसे उसे अधिक क्षुब्ध होते देखा, तब उसने सिकन्दरसे कहा "क्या तुम उन

लोगोंकी भर्त्सना करते हो, जो उम्रमें तुमसे बड़े हैं, मानो तुम उनसे ज्यादा जानते हो और घोड़ेका नियंत्रण करनेमें उनकी अपेक्षा अधिक समर्थ हो?" सिकन्दरने उत्तर दिया "मैं इस घोड़ेको औरोंकी अपेक्षा ज्यादा अच्छी तरह वशमें कर सकता हूँ।" तब फिलिपने पूछा "और यदि तुम ऐसा न कर सके, तो अपनी ढिठाईके बदले क्या दण्ड पानेके लिए तैयार हो?" "तो मैं घोड़ेकी कुल कीमत खुद दे दूँगा" सिकन्दरने फौरन जवाब दिया। इसपर सब लोग खिलखिला कर हँस पड़े। निदान, अनुमति मिलते ही सिकन्दर घोड़ेके पास दौड़ गया और उसकी लगाम पकड़ कर उसे तुरन्त सूर्यकी तरफ घुमा दिया। उसने यह पहले ही ताड़ लिया था कि घोड़ा अपनी परछाई देख कर भड़कता है। इसके बाद लगाम थामे हुए उसने उसे कुछ दूर सामने बढ़ाया और दो चार बार हल्के हाथसे उसकी पीठ ठोकी। ज्यों ही उसने उसे आगे बढ़नेके लिए उत्सुक और अपनी तेज़ीपर आते हुए देखा, त्यों ही धीरेसे अपना ऊपरी वस्त्र नीचे खसका कर एक छलांग मार कर उसकी पीठ पर बैठ गया। फिर धीरे धीरे उसकी लगाम तानता गया और इस प्रकार उसे मारे बिना या एड़ लगाये बिना ही वशमें कर लिया। थोड़ी देरमें जब उसने देखा कि घोड़ेकी उद्दण्डता अब दूर हो गयी है और अब वह दौड़ लगानेके लिए उतावला हो रहा है, तब उसने उसे पूरे वेगके साथ छोड़ दिया। बीच बीचमें वह उसे अपनी बुलन्द आवाज़से ललकारता जाता था और कभी कभी एड़ीकी ठोकर भी मारता जाता था। फिलिप और उसके मित्र चुपचाप खड़े थे। उनके मनमें बड़ी चिन्ता हो रही थी कि कहीं कोई दुर्घटना न हो जाय। इतनेमें उन्होंने राजकुमारको घोड़ा दौड़ा कर लौटते हुए देखा। जब अपनी सफलतापर प्रसन्न होते हुए सिकन्दर सकुशल उनके पास आ गया, तब एक साथ ही सबके मुखसे प्रशंसा-सूचक उद्गार निकल पड़े। फिलिपकी आँखोंमें तो खुशीके मारे आँसू आ गये और उसने दौड़ कर घोड़ेसे उतरते हुए अपने पुत्रका चुम्बन लिया।

हर्षातिरेकमें उसके मुँहसे ये शब्द निकल पड़े "ऐ मेरे पुत्र, तू अपनी बराबरीका और अपनी योग्यताके अनुरूप दूसरा कोई राज्य ढूँढ ले, क्योंकि मकदूनियाका राज्य तेरे लिये बहुत छोटा है।"

इसके बाद सिकन्दरके स्वभावकी यह विशेषता जान कर कि नरमीके साथ समझानेसे वह कर्त्तव्यपालनमें प्रवृत्त हो सकता है, जबरदस्ती करनेसे नहीं, फिलिप उसे कभी किसी बातके लिए न तो आज्ञा देता था और न उसपर किसी तरहका दबाव ही डालता था। वह हमेशा उसे समझा बुझा कर काम निकाला करता था। इसके सिवा, अब उसे यौवनमें प्रवेश करते देख कर एवं उसके शिक्षाके प्रश्नको अधिक महत्त्वपूर्ण समझ कर उसने उसे मामूली शिक्षकोंके भरोसे छोड़ देना ठीक न समझा। उसने अपने समयके सबसे बड़े विद्वान् और सुप्रसिद्ध तत्त्ववेत्ता अरस्तू (अरिस्टाटल) को बुलवा भेजा और यथोचित पुरस्कार दे कर सिकन्दरकी शिक्षाका भार उसे सौंप दिया। अरस्तूने उसे नीतिशास्त्र एवं राजनीतिविज्ञानकी शिक्षा तो दी ही, साथ ही उन कठिन और दुर्बोध सिद्धान्तोंका परिचय भी उसे कराया जिन्हें दार्शनिक लोग अपने दो चार चुने हुए शिष्योंको ही ज़बानी बताया करते थे। एक दिन, जब सिकन्दर एशियामें था, उसे खबर मिली कि अरस्तूने इन सिद्धान्तोंके सम्बन्धमें कुछ पुस्तकें छपवायी हैं। यह जान कर उसने तुरन्त एक पत्र अरस्तूके पास भेजा। उसमें उसने लिखा "आपने अपने मौखिक सिद्धान्तोंको पुस्तक रूपमें प्रकाशित कर अच्छा नहीं किया, क्योंकि यदि वे ही बातें, जो मुझे खास तौरसे बतायी गयी थीं, अब सर्वसाधारणके लिए सुलभ कर दी गयीं, तो फिर मेरी शिक्षा और दूसरोंकी शिक्षामें अन्तर ही क्या रह गया? मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि राज्य और शक्तिके विस्तारमें दूसरोंसे बढ़ जानेके बजाय मैं यह ज़्यादा पसन्द करता हूँ कि संसारमें जितनी अच्छी अच्छी बातें हैं, उनके ज्ञानमें मुझे कोई मात न कर सके।" अपने शिष्यका समाधान करते हुए अरस्तूने लिख भेजा कि "मेरी पुस्तकें प्रकाशि-

भी हुई है और नहीं भी हुई है।" उसका यह कहना सत्य भी है, क्योंकि अध्यात्मशास्त्र (मेटाफिज़िक्स) सम्बन्धी उसकी पुस्तकें जिस शैलीमें लिखी गयी हैं वह मामूली लोगोंके लिए दुर्बोध है। इस विद्याका पर्याप्त ज्ञान जिन्हें हो चुका है, वे ही उनसे लाभ उठा सकते हैं।

अरस्तूके कारण सिकन्दरको औषधिविज्ञानसे भी प्रेम हो गया था। जैसा कि उसके पत्रोंसे विदित होता है, जब उसका कोई मित्र बीमार पड़ता था तब वह उसके लिए पथ्य निर्धारित करता और उपयुक्त औषधि भी बतलाता था। उसे स्वभावतः सारी विद्याओंसे प्रेम था और वह अरस्तूको अपने पिताके सदृश मानता था, क्योंकि पिताने उसे जो जीवन दिया था, उसका सदुपयोग करना उसने अरस्तूसे ही सीखा था। यद्यपि कुछ समयके बाद अरस्तूके साथ उसकी घनिष्टता कुछ कम हो गयी, फिर भी उसका विद्यानुराग और ज्ञानोपार्जनकी तृष्णा बराबर बढ़ती ही गयी, उसमें ज़रा भी कमी नहीं हुई।

जब फिलिप बाइज़ण्टाइन लोगोंके विरुद्ध युद्ध करने गया था, तब वह अपने स्थानमें सिकन्दरको, जो उस समय केवल सोलह वर्षका था, राज्यका कार्य सँभालनेके लिए छोड़ गया था और अपने हस्ताक्षरकी मुहर भी उसको सौंप गया था। सिकन्दर चुपचाप नहीं बैठा रहा। उसने जाकर मीडी लोगोंके विद्रोहको शान्त किया और उनके नगरपर आक्रमण कर उसे अपने अधिकारमें कर लिया। वहाँके असभ्य निवासियोंको उसने निकाल बाहर किया और उनकी जगहपर कई राष्ट्रोंके लोगोंकी एक नयी बस्ती बसा दी। इसका नाम उसने अपने नामके आधार पर "एलेग्जैण्ड्रोपोलिस" (सिकन्दर-नगर) रखा। कीरोनियामें जब ग्रीक लोगोंसे फिलिपका युद्ध हुआ, तब सबसे पहले सिकन्दरने ही थीबन सेनापर आक्रमण किया। इतनी छोटी उम्रमें ही उसकी ऐसी वीरता देख कर फिलिप उसे बहुत चाहने लगा था और उसकी इच्छा थी कि प्रजाके लोग सिकन्दरको ही अपना राजा मानें एवं मुझे अपना सेनापति समझें।

किन्तु फिलिपकी नव-विवाहित पत्नियों द्वारा उत्पन्न कौटुम्बिक कलह-के कारण पिता-पुत्रमें शीघ्र ही मनोमालिन्य उत्पन्न हो गया। सिकन्दरकी माता ओलिम्पियस बड़ी ईर्ष्यालु और उग्र स्वभाववाली थी। उसके भड़कानेसे वह अपने पितासे बराबर खिंचता ही गया। एक बार जब क्लिओपेट्रा नामक रमणीके साथ फिलिपके विवाहका उत्सव मनाया जा रहा था, तब क्लिओपेट्राके चाचा ऐटलसने शराबके नशेमें चूर होकर यह इच्छा प्रकट की कि मकदूनियाके रहनेवालोंको ईश्वरसे प्रार्थना करनी चाहिये कि वह उसकी भतीजी (क्लिओपेट्रा) को एक पुत्र दे जो क़ानूनन राज्यका उत्तराधिकारी बन सके। इसपर सिकन्दरको इतना गुस्सा आया कि उसने शराबका प्याला उठा कर ऐटलसके माथे पर दे मारा और चिल्ला कर कहा "पाजी कहींका, क्या तू समझता है कि मैं अपने पिताका नाजायज़ पुत्र हूँ ?" फिलिप, ऐटलसका पक्ष लेकर सिकन्दरको मारने उठा किन्तु दोनोंके सौभाग्यसे उसका पैर फिसल गया और वह ज़मीन पर गिर पड़ा। इस पर सिकन्दरने ताना मारते हुए कहा "देखो, यही वे महाशय हैं जो तैयारी तो यूरोप छोड़ कर एशिया जीतनेकी कर रहे हैं, मगर एक आसनसे दूसरे आसनतक जाते जाते ही लुड़क पड़ते हैं!" इस घटनाके बाद सिकन्दर अपनी मातासहित फिलिपका साथ छोड़ कर चला गया।

एक बार फिलिपके घरानेका एक पुराना दोस्त, डेमेरेटस, उससे मिलने आया। परस्पर अभिवादन और आलिंगनादिके बाद फिलिपने पूछा 'ग्रीसनिवासियोंमें आपसमें प्रेम-भाव तो है ?' डेमेरेटसने उत्तर दिया "ग्रीसके सम्बन्धमें ऐसा प्रश्न करना तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं जान पड़ता, क्योंकि तुमने खुद अपने ही परिवारको इतने झगड़ों और आपत्तियोंमें फँसा रखा है।" इस मीठी भर्त्सनासे फिलिप बड़ा लज्जित हुआ और उसने तुरन्त सिकन्दरको अपने पास बुला लिया। किन्तु उनका यह सौहार्द अधिक दिनतक न टिक सका और उनमें पुनः तनातनी रहने लगी।

इसी बीचमें पाउसेनियस नामक एक आदमीने, जिसके साथ पेट्टलस और क्लिओपेट्राके कहनेसे अनुचित व्यवहार किया गया था, अपने अपमानका बदला फिलिपकी और कोई सूरत न देखकर, फिलिपकी हत्या कर डाली। सिकन्दरकी उम्र इस समय केवल बीस बरसकी थी। मकदूनियाका राज्य इस समय प्रबल शत्रुओंसे घिरा हुआ था और उसपर विपत्तिके बादल मँडरा रहे थे। पड़ोसके असभ्य देश अपने ही राजाओं द्वारा शासित होनेके लिए उतावले हो रहे थे और यद्यपि फिलिप ग्रीनियन लोगोंपर विजय प्राप्त कर चुका था, फिर भी उसे अपने प्रभुत्वको स्थायी बनानेका अवसर नहीं मिला। यह अपना राज्य अशान्त एवं अव्यवस्थित अवस्थामें छोड़ गया था। कुछ लोगोंने सिकन्दरको सलाह दी कि शस्त्रबलसे ग्रीस-निवासियोंको वशमें रखनेका प्रयत्न करनेके बजाय शान्तिमय उपायोंसे उन जातियोंको मिलाये रखनेकी चेष्टा करना, जो विद्रोह करनेका विचार कर रही हैं, अधिक अच्छा है। सिकन्दरने यह नीति पसन्द नहीं की। वह उसे दुर्बलता सूचक एवं कायरतापूर्ण समझता था। उसने दृढ़ता और उदात्ततासे काम लेना अधिक अच्छा समझा। उसने शीघ्रतापूर्वक चढ़ाई कर असभ्य जातियोंका दमन किया और उस ओरसे युद्धकी आशंका दूर कर दी। इसके बाद थीबन लोगोंके विद्रोहकी खबर पाकर वह उनकी ओर चल पड़ा।

थीबीज़ पहुँच कर उसने वहाँवालोंसे केवल दो आदमियोंको उसके हाथ समर्पित करनेके लिए कहा। ये दोनों फोनिक्स और प्रोथाइटीज़ थे, जो विद्रोहियोंके नेता थे। उसने यह भी आम घोषणा कर दी कि जो लोग मेरी शरणमें आ जायँगे उन्हें मैं माफ कर दूँगा। जब इससे काम न चला तब उसने उनसे युद्ध छेड़ दिया। थीबन लोग बड़ी वीरतासे लड़े; किन्तु जब वे चारों तरफ सिकन्दरके बहुसंख्यक सैनिकोंसे घिर गये, तब अपने प्राणोंकी आहुति देकर भी अपने नगरकी रक्षा न कर सके। ग्रीसके अन्य भागोंके सामने अपनी दृढ़ताका उदाहरण रखनेके ख्यालसे

उसने पुरोहितों तथा मकदूनियावालोंके मित्रों और रिश्तेदारोंको छोड़कर तथा उन लोगोंको भी बचाकर जिनके बारेमें यह विदित हुआ कि उन्होंने युद्धके पक्षमें वोट देनेसे इनकार कर दिया था, शेष सब लोगोंको, जिनकी संख्या कोई तीस हजार होगी, खुल्लमखुल्ला गुलाम बना कर बेच दिया। इसके अतिरिक्त ऐसा अनुमान किया जाता है कि छः हजारसे अधिक मनुष्योंको उसने तलवारसे कटवा डाला।

एक बार उसके दलके कुछ थ्रेसियन सैनिक टिमोक्लिया नामक एक सुशीला भद्र रमणीके घरमें घुस गये। अधिनायकने उसके साथ अभद्र व्यवहार किया और पूछा "क्या तुम्हें मालूम है कि और धन कहाँ छिपा कर रखा गया है?" उसने उत्तर दिया "हाँ"। इसके बाद वह उसे बागीचेके भीतर एक कुएँके पास ले गयी और बोली "नगरके ले लिये जानेकी खबर सुन कर मैंने अपनी सभी बेशकीमत चीजें इस कुएँमें डाल दी थीं।" यह सुन कर ज्यों ही उस लालची सेनापतिने झुक कर अपनी भावी सम्पत्ति देखनेकी चेष्टा की, त्यों ही टिमोक्लियाने पीछेसे धक्का देकर उसे कुएँमें ढकेल दिया और ऊपरसे बड़े बड़े पत्थर गिरा कर उसे वहीं मार डाला। जब सैनिकगण उसे पकड़ कर सिकन्दरके सामने ले गये, तब उसके चलनेका ढंग, उसका व्यवहार और उसकी निर्भीकता देख कर ही उसने समझ लिया कि यह कोई उच्चवंशीय महिला है। जब उसने पूछा कि तुम कौन हो, तब टिमोक्लियाने जवाब दिया "मैं उस थीजी-नीज़की बहिन हूँ जो तुम्हारे पिताके विरुद्ध शीरोनियाकी लड़ाईमें लड़ा था और जिसने वहाँ ही ग्रीसकी स्वाधीनताके लिए सेनाका नेतृत्व करते हुए अपने प्राण खोये थे।" इस महिलाने जो कुछ किया था और इस समय जो कुछ कहा, उसे सुन कर सिकन्दरको बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने उसे मुक्त कर दिया।

इसके बाद अथीनियन लोगोंको उसने अपना कृपापात्र बना लिया, यद्यपि इन लोगोंने थीवनोंके प्रति विशेष सहानुभूति दिखलायी थी,

और थीब्ज़से भागे हुए लोगोंको यथोचित आश्रय प्रदान किया था इसका कारण या तो यह हो सकता है कि अब उसका क्रोध शान्त ह गया था, या यह कि अतिशय निर्दयतापूर्ण उदाहरण रखनेके बाद अब वह सम्भवतः अपनेको दयालु दिखलाना चाहता था। जो हो, इसमें सन्देह नहीं कि थीबनोंके प्रति निष्ठुर व्यवहार करनेके कारण कभी कभी व बहुत पछताता था। इसके बाद इतनी सख्ती उसने और लोगोंके साथ नहीं दिखलायी।

कुछ ही दिनोंके बाद ग्रीसवालोंने फारसवालोंके विरुद्ध लड़नेमें सिकन्दरका साथ देनेका निश्चय किया और उसे अपना सेनापति मान लिया। जब वह यहाँ आया, तब बड़े बड़े प्रसिद्ध पुरुष तथा तत्त्ववेत्ता उससे मिलनेके लिए आया करते थे। किन्तु सिनोपके डायोजेनीज़ने जो उस समय कॉरिन्थमें रहता था उसकी ओर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। जब सिकन्दर उसके पाससे निकला, तब वह घाममें बैठा हुआ था। जब उसे कुछ भीड़ सी मालूम हुई, तब उसने ज़रा सा सिर ऊँचा कर सिकन्दरकी ओर देखनेका कष्ट उठाया। सिकन्दरने नरमीके साथ पूछा 'क्या आप कुछ कहना चाहते हैं?' उसने जवाब दिया 'जी हाँ, मैं चाहता हूँ कि आप मेरे और सूर्यके बीचमें न खड़े हों।' इस उत्तरसे सिकन्दर इतना प्रभावित हुआ और उसे डायोजेनीज़की महत्तापर इतना आश्च हुआ कि जाते समय उसने अपने अनुयायियोंसे कहा कि "यदि मैं सिकन्दर न होता, तो मैं डायोजेनीज़ बनना पसन्द करता।"

उसकी सेनामें कोई तीस हजार पैदल तथा चार हजार घुड़सवार थे। अरिस्टोब्यूलस कहता है कि सिकन्दरके पास अपने सैनिकोंको वेतन देनेके लिए सत्तर टैलेण्ट (रजतमुद्रा) भी न थे और न उसके पास, ड्यूरिसके कथनानुसार, तीस दिनसे अधिकके लिए भोजन सामग्री ही थी। सिकन्दरकी दिग्विजयोंको देखते हुए उसकी यह आरंभिक स्थिति आश्चर्यजनक प्रतीत होती है। किन्तु एक बात है। सिकन्दरने अपनी सेनाके साथ तबतक

युद्धके लिए प्रयाण नहीं किया जबतक उसने यह अच्छी तरह नहीं समझ लिया कि मेरे मित्र कहाँतक मेरी सहायता करनेको तैयार हैं और जबतक उसने अपने सैनिकोंमेंसे किसीको अच्छे अच्छे खेत, किसीको एक आध गाँव और किसीको छोटे छोटे कस्बे या बन्दरस्थानकी आमदनी नहीं दे डाली। नतीजा यह हुआ कि इसी तरह करीब करीब सारी राजकीय सम्पत्ति बाँट दी गयी। तब परडीक्सने उससे कहा "आपने अपने लिए भी कुछ रख छोड़ा है या नहीं?" सिकन्दरने उत्तर दिया 'हाँ, आशाएँ मेरे साथ हैं।' "आपके सैनिक इसमें भी आपसे हिस्सा बँटावेंगे" यह कह कर परडीकसने वह मिल्कियत लेनेसे इनकार कर दिया जो सिकन्दर उसे दे रहा था। कुछ और मित्रोंने भी ऐसा ही किया। किन्तु जिन लोगोंने लेना स्वीकार किया और जिन्होंने उससे सहायता पानेकी इच्छा प्रकट की, उन्हें उसने, जहाँतक उसकी मकदूनियावाली पैतृक सम्पत्तिमें गुंजाइश थी, जी खोल कर सहायता दी।

इस प्रकार दृढ़ संकल्पोंके साथ तथा अपने अधीनस्थ लोगोंके प्रति उदारतापूर्ण व्यवहार करते हुए वह हेलेसपाण्टके उस पार ट्रायनगरमें जा पहुँचा जहाँ उसने मिनर्वा देवीके नामसे बलिदान किया और उन वीरोंकी स्मृतिके लिए सम्मान प्रकट किया जो वहाँ समाधिस्थ हुए थे। उसने ऐकिलीजकी समाधिशिलापर सुगंधित लेप चढ़ाया और अपने मित्रों सहित प्राचीन प्रथाके अनुसार समाधिके चारों तरफ नंगे दौड़ते हुए उसकी परिक्रमा की तथा उसपर फूलोंकी मालाएँ चढ़ायीं। सिकन्दरने यह कह कर उसके भाग्यकी सराहना की कि "हे वीर, तुम धन्य हो। जबतक तुम जीवित रहे तबतक तुम एक परमस्नेही एवं सच्चे सुहृदके स्नेह-भाजन बने रहे और जब तुम्हारा स्वर्गवास हुआ तब होमर-जैसे सुप्रसिद्ध कविने तुम्हें अपने काव्योंका नायक बनाया।"

इस बीचमें दारा (डेरियस) के सेना-नायकोंने एक बड़ी सेना एकत्र कर ली। वे लोग ग्रेनिकस नदीके उस तरफ पड़ाव डाले हुए पड़े

थे । अब ऐसा प्रतीत होने लगा मानो एशियामें प्रवेश करनेके लिए उसके फाटकपर युद्ध करना आवश्यक है । नदी गहरी थी और उसके उस पारके किनारेकी ज़मीन ऊँची नीची थी तथा उसपर चढ़ना भी कठिन था, इसीसे कुछ लोगोंने सलाह दी कि इस समय आगे बढ़ना ठीक न होगा । सिकन्दरने उनके कथनकी ओर ध्यान नहीं दिया और अश्वारोहियों-की तेरह पलटनोंके साथ नदीके किनारे जा पहुँचा । सामनेके किनारेपर शत्रुके बहुसंख्यक अश्वारोही तथा पैदल सैनिक अपने अस्त्रशस्त्रोंसे सुस-ज्जित होकर पहले ही आ जुटे थे । सिकन्दरकी सेनाको नदी पार करते देख कर उन लोगोंने बाणोंकी घोर वर्षा प्रारम्भ कर दी, किन्तु उनकी ज़रा भी परवाह न कर नदीकी धाराकी प्रखरता एवं ऊबड़-खाबड़ किनारेपर चढ़नेकी कठिनाइयोंका अनुभव करते हुए भी सिकन्दर बराबर आगे बढ़ता गया । वहाँ पहुँचने पर उसे अपने आदमियोंका साधारण व्यूहन करनेका भी अवसर न मिला, क्योंकि शत्रुके सैनिकोंने तुरन्त ही आक्रमण कर दिया । वे लोग सिकन्दरके अश्वारोहियोंके साथ घोड़ेसे घोड़ा भिड़ा कर जुट पड़े और उनपर बर्छोंका प्रहार करने लगे । जब बर्छे टूट गये तब उन्होंने तलवारोंका सहारा लिया । इधर सिकन्दरके ऊपर भी चारों तरफसे आक्रमण होने लगे, क्योंकि उसके हाथमें खास तरहकी जो छोटी-सी ढाल थी उसके कारण, तथा मुकुटके दोनों ओर सफेद पङ्खोंकी एक एक बड़ी कलगी लगी हुई होनेके कारण उसे पहचानना कठिन न था । शत्रुके दो सेनानायकोंने एक साथ ही उसपर आक्रमण किया । उनमेंसे एककी चोट बचा कर उसने फुरतीसे दूसरेपर वार किया और उसके भालेके दो टुकड़े कर डाले । इसी समय एक ओरसे झपट कर शत्रुके एक और योद्धाने उसके सिरपर तलवारका ऐसा हाथ मारा कि उसका मुकुट बीचमेंसे कट गया, किन्तु संयोगवश उसे स्वयं कोई क्षति नहीं पहुँची । उक्त सैनिक सिकन्दरपर दूसरा वार करना ही चाहता था कि क्लाइटसने आकर इसकी रक्षा की । इसी समय सिकन्दरने

अपने प्रतिद्वन्द्वीको तलवारसे काट कर नीचे गिरा दिया। घुड़सवार सैनिकोंका यह युद्ध हो ही रहा था कि मकदूनियाकी पैदल सेना भी आ पहुँची। उसे देखकर शत्रुके पैदल सैनिक भी आगे बढ़े और युद्ध आरम्भ हो गया, किन्तु पहली ही मुठभेड़में शत्रुके पैर उखड़ गये और उसके सैनिक भाग खड़े हुए।

इस युद्धके कारण शत्रु-पक्षमें सिकन्दरका आतंक छा गया। समुद्र-तटवर्त्ती प्रान्तोंके मुख्य नगर सार्डिसके अतिरिक्त और भी कई नगरोंने आत्मसमर्पण कर दिया। केवल दो नगरोंने उसका मुकाबला किया और उसने उन्हें जीत कर अपने अधिकारमें कर लिया। अब वह आगे बढ़नेके सम्बन्धमें विचार करने लगा। कभी तो वह सोचता कि दारा जहाँ हो, सीधे वहाँ ही पहुँच कर उससे युद्ध किया जाय, चाहे ऐसा करना खतरनाक ही क्यों न हो; और कभी यह सोचता कि पहले समूचे समुद्र-तटपर विजय प्राप्त कर लेना ही अधिक अच्छा होगा। वह इसी उधेड़-बुनमें था कि पासके एक झरनेका जल एकाएक ऊपर उठ आया और किनारोंके बाहर बहने लगा। उसके साथ एक ताम्रपत्र भी उतराता हुआ नज़र आया। उसे उठा कर देखा तो उसपर प्राचीन लिपिमें यह लिखा हुआ था कि एक समय आयगा जब ग्रीक लोग फारसका साम्राज्य नष्ट कर देंगे। इस घटनासे प्रोत्साहित होकर वह सिलीशिया, फोनीशिया तथा समुद्रतटवर्त्ती अन्य भागोंपर अधिकार करनेके लिए चल पड़ा। अनेक स्थानोंको अपने वशमें करते हुए जब वह कैपैडोशिया पहुँचा, तब उसे दाराके सर्वश्रेष्ठ सेनापति मेमननकी मृत्युके समाचार मिले। यह खबर सुन कर उसने एशियाके उत्तरीय भागोंपर भी विजय प्राप्त करनेका इरादा किया।

इस समयतक दारा भी सूसासे चल पड़ा था। उसे अपने सैनिकोंपर, जिनकी संख्या छः लाख थी, पूरा विश्वास था। उसने एक स्वप्न भी देखा था जिसका अर्थ ज्योतिषियोंने, उसे प्रसन्न करनेके लिए, उसके

अनुकूल बतलाया था। सिकन्दरको सिलीसियामें देरतक ठहरते देखकर उसे और भी विश्वास हो गया कि वह डर गया, यद्यपि सिकन्दरके विलम्बका कारण वास्तवमें उसकी रुग्णावस्था थी। उसकी व्याधि दिनपर दिन बढ़ती जा रही थी, पर उसके चिकित्सक यह ख्याल कर उसे औषध देनेका साहस नहीं करते थे कि यदि दवाने फायदा नहीं किया तो मकदूनियावालोंके मनमें तरह तरहके सन्देह उत्पन्न होने लगेंगे और वे उनके क्रोधभाजन बन जायँगे। अन्तमें उसकी हालत खराब देख कर फिलिप नामक एक चिकित्सकने अपनी सुख्यात मित्रताका भरोसा कर और उपयुक्त चिकित्साके अभावमें सिकन्दरके जीवनको नष्ट होने देनेकी अपेक्षा स्वयं अपनी साख और अपना जीवन खतरेमें डालना अधिक अच्छा समझ कर उसकी दवा करनेका निश्चय किया। उसने सिकन्दरको ओषधि दी और उससे कहा कि यदि आप शीघ्र नीरोग होना चाहते हैं तो बेखटके मेरी दवा पीते जाइये। इसी समय युद्धक्षेत्रसे पारमेनियोने सिकन्दरके नाम एक पत्र भेजा जिसमें लिखा था कि फिलिपसे होशियार रहिये, क्योंकि दाराने उसे बहुतसे धनका प्रलोभन देकर उसके साथ अपनी लड़कीका विवाह कर देनेकी प्रतिज्ञा कर, आपके प्राण लेनेके लिए ही भेजा है। चिट्ठी पढ़ कर सिकन्दरने अपने तकियेके नीचे दबा कर रख ली और उसके बारेमें अपने अत्यन्त प्रियमित्रोंसे भी कोई चर्चा न की। जब फिलिपने आकर दवा दी, तब उसने बड़ी प्रसन्नता और विश्वासके साथ उसे ले लिया और इसी समय वह चिट्ठी उसके हाथमें थँभा दी। इस समयका दृश्य देखने ही लायक था। इधर सिकन्दर दवा पी रहा था और उधर फिलिप पत्र पढ़ रहा था। इसके बाद दोनोंने एक दूसरेकी तरफ देखा, यद्यपि उनके चेहरेके भाव भिन्न भिन्न थे। सिकन्दरके मुखपर प्रसन्नताकी झलक थी जिससे अपने चिकित्सकके प्रति उसकी दयालुता और पूर्ण विश्वास सूचित होता था। दूसरेके चेहरेपर मिथ्या दोषारोपणके कारण आश्चर्य एवं भयके चिह्न दिख-

मान थे और वह मन ही मन देवताओंसे यह मना रहा था कि किसी तरह मेरी निर्दोषिता प्रमाणित हो जाय। कभी वह आकाशकी ओर देख कर हाथ जोड़ता था और कभी पलंगके पास झुक कर सिकन्दरसे अनुरोध करता था कि "आप सब तरहका भय छोड़ कर मेरी हिदायतोंके अनुसार काम कीजिए।" बात यह हुई कि दवा देनेके साथ ही संयोगसे सिकन्दरकी चेतना लुप्त होने लगी, उसकी बोली बन्द हो गयी और नाड़ीकी गति भी मन्द पड़ गयी। किन्तु फिलिपके प्रयत्न करनेपर शीघ्र ही उसकी तबियत ठीक हो गयी और उसमें इतनी ताकत आ गयी कि वह बाहर निकल कर अपनेको मकदूनियावालोंके सामने प्रकट कर सका तथा उनकी शंकाओं और उदासीको भी दूर कर सका जो बहुत समयसे उसे न देखनेके कारण उनके मनमें उत्पन्न हो रही थी।

स्वास्थ्य ठीक हो जाने पर सिकन्दर ज्यों ही सिलीशियासे आगे बढ़ा त्यों ही दारा आ पहुँचा। दोनों ओरकी सेनाओंमें गहरी मुठभेड़ हुई। सिकन्दरकी जंघापर तलवार चला कर दाराने उसे जख्मी कर दिया। किन्तु अन्तमें विजय सिकन्दरकी ही रही। दाराके एक लाख दस हजार सैनिक पूर्णतः पराभूत हुए और वह स्वयं युद्ध-क्षेत्रसे भाग कर ही अपने प्राणोंकी रक्षा कर सका। उसके रथ और धनुषपर अधिकार कर सिकन्दरने उसका पीछा करना छोड़ दिया और समरभूमिको लौट आया। यहाँ उसने देखा कि उसके सैनिक दाराके शिविरको लूट रहे हैं जिसमें अनेक बहुमूल्य वस्तुओंका संग्रह विद्यमान था। किन्तु दाराका अपना तम्बू उन लोगोंने नहीं छुआ। उसमें ऐसा बेशकीमत सामान और प्रचुर मात्रामें चाँदी तथा सोना मौजूद था कि वह सिकन्दरके ही लायक था, इसीसे वह उसके लिए छोड़ दिया गया। सिकन्दरने अपने अस्त्र-शस्त्र अलग रखकर शिविरमें स्नान करनेको जाते समय कहा "अच्छा, चलो अब हम दाराके स्नानागारमें स्नान कर युद्धकी थकावट दूर करें।" यह सुन कर उसका एक मुसाहिब (पार्श्ववर्ती) बोल उठा—दाराके स्नानागारमें

कहना ठीक नहीं, अब तो यह सिकन्दरका ही न हो गया ? क्योंकि विजितोंकी सम्पत्ति विजेताकी सम्पत्ति है और होनी चाहिये। स्नानागारमें पहुँच कर जब सिकन्दरने स्नान करनेके पात्र, पानी रखनेके बरतन, लोटे, कड़ाही तथा उबटन रखनेके डब्बे देखे जो सब सोनेके बहुत ही खूबसूरत बने हुए थे, और उस आनन्ददायिनी सुगंधिका अनुभव किया जो वहाँ चारों ओर फैली हुई थी तथा जब वह उस लम्बे चौड़े ऊँचे मण्डपमें पहुँचा जो सुन्दर सुन्दर आसन टेबल इत्यादिसे सजाया गया था और जहाँपर दिल बहलावके लिए बढ़िया आयोजन किया गया था, तब उसने घूमकर अपने परिजनोंसे कहा "मालूम होता है, यही शाही ठाटबाट है।"

रात्रि होने पर जब सिकन्दर भोजन करने जा रहा था, तब एक आदमीने आकर कहा कि दाराकी माँ तथा स्त्री और दो अविवाहित लड़कियाँ, जो लड़ाईके अन्य कैदियोंके साथ पकड़ी गयी थीं, उसके रथ और धनुषको देख उसे मरा हुआ समझ कर क्रन्दन कर रही हैं। यह सुन कर थोड़ी देरके लिए वह उनके दुःखके सामने अपनी विजयको भी भूल गया। उसने तुरन्त एक आदमी भेजकर उन्हें कहलवाया कि "दारा अभी जीवित है, आप उसके लिए अफसोस न करें। मुझसे भी आप लोगोंको किसी तरहका कष्ट पानेकी आशङ्का नहीं करनी चाहिये, क्योंकि मैंने तो उसका सिर्फ राज्य पानेके लिए उससे युद्ध किया था। दारासे आपको जो जो सुविधाएँ प्राप्त थीं, वे सब यहाँ भी आपके लिए कर दी जायँगी।" इस दयापूर्ण सन्देशको पाकर उक्त महिलाओंको बहुत सन्तोष हुआ। सिकन्दरने उन्हें आज्ञा दे दी कि वे अपने देशके मृत वीरोंमेंसे जिन जिनके शव जमीनमें गड़वाना चाहें, गड़वा सकती हैं और इसके लिए जितने कपड़ों या अन्य सामानकी जरूरत हो वह सब युद्धकी लूटमें मिली हुई चीजोंमेंसे ले सकती हैं। उसने उनके दास-दासियोंकी सङ्ख्यामें तथा उनके आरामकी चीजोंमें कोई कमी नहीं की और उन्हें अपने खर्चके लिए दाराकी ओरसे जो वृत्ति मिलती थी उसे भी बढ़ा दिया। किन्तु उनके

साथ किये गये बर्तावकी सबसे अच्छी बात यह थी कि उसने उनके सदाचार एवं निर्मल चरित्रके अनुरूप ही उनका सम्मान किया। उनके सामने कभी कोई ऐसी बात नहीं की गयी जिसे देख कर या सुन कर उन्हें बुरा मालूम होता अथवा जिसके कारण उनके मनमें किसी तरहकी आशंका उत्पन्न हो जाती। दाराकी रानी अपने समयकी अद्वितीय सुन्दरी समझी जाती थी, जैसा कि दारा उस समयका सबसे ऊँचा और सबसे अधिक रूपवान् राजा था। दोनों लड़कियाँ भी अपने माता पिताके अनुरूप थीं। किन्तु सिकन्दरने जो शत्रुपर विजय प्राप्त करनेकी अपेक्षा स्वयं अपने ऊपर शासन करना अधिक राजोचित समझता था, कभी उनके साथ घनिष्टता प्राप्त करनेकी चेष्टा नहीं की। युद्धमें प्राप्त फारस देशीय अन्य स्त्रियोंकी तरफ भी, यद्यपि उनमेंसे अनेक अत्यन्त रूपवती थीं, उसने कोई ध्यान नहीं दिया, केवल हँसीमें यह कहा कि फारसकी स्त्रियाँ आँखकी किरकिरीकी तरह भयानक होती हैं। उसने मानों उनके शारीरिक सौन्दर्यके जवाबमें अपने आत्मसयम एव चरित्रकी महत्ताका प्रदर्शन करनेके उद्देश्यसे ही उन्हें निर्जीव मूर्तियोंकी तरह सामनेसे हटा देनेकी आज्ञा दी। जब समुद्रतटवाले उसके एक अफसरने पत्रमें लिख कर पूछा कि क्या आप दो नवजवान लड़कोंको खरीदना पसन्द करेंगे जो बहुत खूबसूरत हैं और जिन्हें थीओडोरस नामक एक आदमी बेचना चाहता है, तब उसे इतना बुरा मालूम हुआ कि वह बारंबार अपने मित्रोंसे पूछने लगा कि इस आदमीने मेरे चरित्रमें ऐसा कौनसा ओछापन देखा है जिसके कारण उसे इस तरहकी छोटी बात लिखनेका साहस हुआ? उसने चिट्ठीका ऐसा सख्त जवाब दिया जिसे पढ़ कर पानेवालेकी अक्ल दुरुस्त हो गयी। इसी तरह जब उसने सुना कि डेमन और टिमोथियस नामक पारमेनियोके दो सैनिकोंने कुछ विदेशियोंकी स्त्रियोंके साथ दुराचार किया है, तब उसने पारमेनियोको सख्त ताकीद करते हुए लिखा कि यदि उक्त सैनिक दोषी पाये जावें तो उन्हें प्राणदण्ड दिया जाय, क्योंकि उनका

कार्य उन हिंसक पशुओंके अनुरूप समझा जाना चाहिये जो मनुष्यजाति-को हानि पहुँचानेके लिए ही उत्पन्न हुए हैं। इसी चिट्ठीमें अपने विषयमें लिखते हुए उसने लिखा कि मैंने दाराकी पत्नीको देखा तक नहीं, उससे बातचीत करना तो दूर रहा, और न देखनेकी कभी इच्छा ही की। मैंने किसीको अपने सामने उसके सौन्दर्यकी प्रशंसा तक नहीं करने दी।

खाने पीनेमें भी सिकन्दर बड़ा संयमी था। जब एक रमणी जिसे वह माताके सदृश मानता था, उसे प्रतिदिन तरह तरहकी मिठाइयाँ तथा खानेकी नयी नयी चीज़ें भेजने लगी, तब उसने कहा कि 'मुझे इनकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मुझे मेरे शिक्षक लीयोनिडसने यही शिक्षा दी है कि सवेरेके भोजनकी तैयारीके लिए रातमें रास्ता चलो और सन्ध्या समय खूब भूख लगे, इस गरज़से सवेरे कम खाओ। लीयोनिडस अक्सर मेरे कमरेके कुछ सामान और कपड़ोंकी आलमारीकी जाँच इसलिए कर लिया करते थे कि कहीं मेरी माताने कोई ऐसी चीज़ तो नहीं रख दी जो अनावश्यक हो या जो मुझे सुकुमार बना देनेमें सहायक हो।' वह शराब पीता था, पर उतनी नहीं जितनी कई लोग समझते थे, क्योंकि जब ज़रूरत पड़ती थी तब अन्य सेनापतियोंकी तरह वह शराब पीते नहीं बैठता था, बल्कि फौरन सब कुछ छोड़ कर समरभूमिमें जा डँटता था। जब उसे कोई काम न रहता था, तब बिस्तरसे उठनेके बाद देवताओंको बलि चढ़ा कर वह कुछ भोजन करता और फिर शेष दिन शिकार खेलने, जीवनके संस्मरण लिखने, सैनिक प्रश्नोंके सम्बन्धमें निश्चय करने अथवा पुस्तक पढ़नेमें बिताता था। जब वह किसी ऐसी यात्रापर जाता था जिसमें अधिक शीघ्रताकी आवश्यकता नहीं रहती थी, तब वह मार्गमें निशाना मारने या तेज़ीसे दौड़ते हुए रथपर चढ़ने उतरनेका अभ्यास करता चलता था। कभी कभी वह लोमड़ियों या चिड़ियोंका शिकार करने भी जाता था। सन्ध्या समय वापस लौटने पर वह स्नान करता और सुगन्धित लेप इत्यादि लगा कर प्रधान रसोइयोंको बुला कर पूँछता

कि भोजन तैयार है या नहीं। जब तक काफी अँधेरा नहीं हो जाता था, वह प्रायः भोजन नहीं करता था और हमेशा इस बातका ख्याल रखता था कि उसके साथ जो लोग भोजन करने बैठते थे उनके सामने भी वही पदार्थ रखे जाते जो स्वयं उसके लिए लाये जाते और उनके प्रति वैसी ही सतर्कता भी प्रदर्शित की जाती। खाने-पीनेमें वह इतना संयमी था कि जब कभी उसके लिए कोई बढ़िया मछली या कम मिलनेवाले मेवे भेजे जाते तो वह उन्हें मित्रोंमें बाँट देता और अक्सर अपने लिए कुछ भी न बचा रखता।

ईससकी लड़ाईके बाद उसने अपने सैनिकोंको फारसवालोंके धन तथा मालपर और उनकी स्त्रियों एवं बच्चोंपर अधिकार करनेके लिए दमिश्क भेजा। इस लूटका सबसे बड़ा भाग थेसेलियन सवारोंको मिला। सिकन्दरने युद्धमें उनकी वीरता अपनी आँखोंसे देखी थी, इसीसे उसने उन्हें जान बूझ कर वहाँ भेजा था ताकि उन्हें अपने शौर्यका उचित पुरस्कार मिल जाय। अन्य सैनिकोंको भी काफी पुरस्कार मिला। इस लूटसे मकदूनियावालोंको फारस देशकी सम्पत्ति तथा वहाँकी स्त्रियोंका और वहाँवालोंकी शानदार रहनसहनका काफी परिचय मिल गया और वे लोग आगे बढ़नेके लिए वैसेही उतावले हो गये जैसे शिकारी कुत्ते अपने शिकारकी गंध पाकर उसपर झपटनेके लिए हो जाते हैं। किन्तु सिकन्दरने पहले समुद्र-तटपर अपनी स्थिति दृढ़ करना अधिक आवश्यक समझा। साइप्रस द्वीपके अधिकारियोंने तो आत्मसमर्पण कर दिया, और फोनीशिया प्रान्तने भी, टायर नगरको छोड़ कर, उसकी सत्ता स्वीकार कर ली। टायर नगरवालोंने सात महीनेतक उसका विरोध किया। जब सिकन्दर इस नगरके चारों तरफ घेरा डाले हुए पड़ा था, तब एक दिन उसने स्वप्नमें देखा कि हरकुलीज़ नगरके प्राचीरपर हाथ फैलाकर खड़ा हुआ है और उसे अपने पास बुला रहा है। इसी समय टायरके अनेक नागरिकोंने भी अपनी निद्रितावस्थामें यह अनुभव किया

मानो अपोलो देवता उनसे यह कह रहा हो कि मैं तुमसे नाखुश हूँ और मैं तुम्हें छोड़कर सिकन्दरके पास जा रहा हूँ । जागने पर उन लोगोंने चौक पर अपोलोकी मूर्ति उठा दी और उसे रस्सोंसे जकड़ दिया, फिर सिकन्दरका पक्षपाती होनेके कारण उसकी भर्त्सना करते हुए उन्होंने उसे तख्तेपर कड़ियाओंसे जड़ दिया ।

कई बारकी मुठभेड़ोंसे परेशान होकर एक बार सिकन्दरने केवल थोड़ी-सी सेना लेकर ही नगर-प्राचीरकी ओर प्रस्थान किया । उसने विजयकी आशासे ऐसा नहीं किया । वह केवल शत्रुको युद्धमें फँसाये रखना चाहता था । इसी समय अरिस्टण्डर नामक ज्योतिषी वहाँ आया और उसने भविष्यत् वाणी की कि इस मासके भीतर ही नगरपर अवश्य अधिकार हो जायगा । यह सुनकर वहाँ खड़े हुए सैनिक हँस पड़े और आपसमें उसकी दिल्लगी उड़ाने लगे क्योंकि वही दिन महीनेका अन्तिम दिन था । सिकन्दरने ज्योतिषीको चकराया हुआ सा देख कर आज्ञा दी कि आजका दिन महीनेका तीसवाँ दिन न गिना जाकर तेइसवाँ दिन हो माना जाय । यह कह कर उसने युद्धके नगाड़े बजा कर नगरपर जोरोंसे हमला कर दिया । आक्रमणकारियोंका प्रबल उत्साह देख कर बचे हुए सैनिक भी शिविरमें बैठे नहीं रहे । उन्होंने भी आक्रमणकारियोंका साथ दिया । ये सब लोग इतनी वीरतासे लड़े कि टायरनिवासियोंको पीछे हटना पड़ा और उनके नगरपर उसी दिन अधिकार कर लिया गया ।

यहाँ लूटमें जो वस्तुएँ मिलीं उनका अधिकांश उसने ओलिम्पियस, क्लिओपेट्रा तथा अपने मित्रोंके पास भेज दिया । उसने अपने शिक्षक लियोनिदसके लिए पाँच सौ टेलेण्ट (लगभग ३५० मन) सुगंधित धूप भी भेजी । कहते हैं, एक बार जब सिकन्दर बलि चढ़ा रहा था तब अग्निमें छोड़नेके लिए उसे दोनों मुट्ठियोंमें बहुतसी धूप लेते देख कर पास ही खड़े हुए लियोनिदसने उससे कहा था कि जबतक उन देशोंपर तुम्हारा प्रभुत्व स्थापित नहीं हो जाता जहाँसे ये सब चीजें आती हैं जो इस धूपमें

डाली जाती हैं, तबतक तुम्हें इसका खर्च कुछ किफायतके साथ करना चाहिये। अब सिकन्दरने उसे अपने पत्रमें लिखा "हमने आपके पास इतनी धूप इसलिए भेजी है कि जिसमें आपको भविष्यमें देवताओंके प्रति कृपणता करनेकी आवश्यकता न रह जाय।" दाराके पाससे जो वस्तुएँ लूटमें प्राप्त हुई थीं उनमें एक बहुमूल्य मंजूषा भी थी। जब उसे एक दुर्लभ वस्तु समझ कर लोग सिकन्दरके पास ले आये, तब उसने अपने साथियोंसे पूछा कि इसमें कौन सी वस्तु रखना सबसे अधिक उपयुक्त होगा। जब वे लोग अपनी अपनी राय दे चुके, तब उसने उनसे कहा कि इसमें मैं महाकवि होमरकी अमर रचना "इलियड" रखूँगा।

कहते हैं कि जब मिस्र देशपर सिकन्दरका प्रभुत्व स्थापित हो गया, तब उसने वहाँपर ग्रीक लोगोंका एक उपनिवेश बसाना चाहा। उसने अपने नामपर एक बड़े नगरका निर्माण करनेका निश्चय किया। इसी समय स्वप्नमें उसे एक बूढ़ा दिखाई दिया जो मिस्रके समुद्रतटके पास वाले फैरोज नामक द्वीपकी प्रशंसा कर रहा था। सिकन्दर सबेरे उठकर नील नदीके मुखसे थोड़ी दूर पर स्थित फैरोज द्वीपको गया। यह स्थान उसे इतना पसन्द आया कि उसने यहाँ ही नूतन नगरकी स्थापना करनेका विचार किया। वहाँकी जमीन काली थी। उसपर निशान बनानेके लिए खरिया मिट्टीके अभावमें आटेसे काम लिया गया। जब सिकन्दर अपने सोचे हुए भावी नगरके नकशेको देख कर प्रसन्न हो रहा था, तब एकाएक नदीके किनारेसे काले बादलकी तरह बड़े बड़े पक्षियोंके एक झुंडने आकर सारा पिसान खा डाला। इसे अपशकुन समझ कर स्वयं सिकन्दरके मनमें शंका उत्पन्न हो गयी। किन्तु बादमें भविष्यद् वक्ताओंके मुँहसे यह सुन कर उसे तसल्ली हुई कि जिस नगरका निर्माण वह कराने जा रहा था उसमें सब वस्तुएँ प्रचुर मात्रामें तो पायी ही जायँगी, साथ ही उससे अनेक राष्ट्रोंकी परवरिश भी होगी। उसने कारीगरोंको अपना काम जारी रखनेकी आज्ञा दी और स्वयं 'ऐमन' देवताकी यात्राके लिए चल पड़ा।

यह एक लम्बी और खतरनाक यात्रा थी। एक तो वहाँ मार्गमें लगातार कई दिनों तक पानी मिलता ही नहीं। अब यदि ऐसी अवस्थामें साथमें रखा हुआ पानी खतम हो जाय तो बड़ी विपत्ति हो। दूसरे, इस यात्रामें बालूकी मोटी तहसे ढँके हुए विस्तृत क्षेत्रमेंसे होकर जाना पड़ता था, और यदि इस बीचमें दक्षिणसे प्रबल आँधी चलने लगती तो फिर सबका मरण ही जाता। कहते हैं, एक बार जब कैम्बीसेस अपनी सेना समेत उधरसे जा रहा था तब ऐसे ज़ोरोंसे आँधी उठी थी कि बालूका एक समुद्र-सा उमड़ पड़ा था जिसमें दबकर पचास हजार मनुष्योंने अपने प्राण खोये। ये सब कठिनाइयाँ सिकन्दरको समझा दी गयीं किन्तु सिकन्दर एक बार जिस बातका निश्चय कर लेता था उससे प्रायः पीछे नहीं हटता था। अभीतक प्रायः प्रत्येक मन्तव्यमें दैव उसकी सहायता करता आ रहा था, इसीसे वह अपनी रायपर अटल बने रहनेका अभ्यासी हो गया था। इसके सिवाय साहसी स्वभावका होनेके कारण कठिनाइयों-पर विजय प्राप्त करना उसके लिए एक व्यसन सा हो गया था। इस यात्रामें देवताओंने भी उसे मामूलीसे ज़्यादा सहायता दी थी। खूब वर्षा हो जानेके कारण पानीकी कमीसे प्राण खोनेका भय जाता रहा और जो ज़मीन पहले बहुत ज्यादा सूखी थी वह अब गीली हो गयी जिससे उसके ऊपर चलनेमें आसानी हुई। इसके सिवाय जब वे लोग मार्ग भूल कर इधर उधर भटकने लगते थे, तब कुछ जंगली कौवे "काँव काँव" कर उन्हें ठीक मार्गपर ले आते थे। जब वे सफर करते थे तब कौवे उनके आगे आगे उड़ते चलते थे और जब वे ठहर जाते थे या पीछे पड़ जाते थे तो कौवे भी उनकी प्रतीक्षा करते थे। इस विकट रास्तेको तै कर चुकनेके बाद वे उस जगह पहुँचे जहाँ प्रथम अभिवादनके उपरान्त सिकन्दरके दिव्य पिता ऐमनकी तरफसे प्रधान पुरोहितने उसका स्वागत किया। जब सिकन्दरने उससे पूछा कि मेरे पिताके हत्याकारियोंमेंसे कोई ऐसा तो नहीं बच गया जिसे अभीतक दण्ड न दिया गया हो? तब उससे कहा

गया कि तुम्हें अपने पिताके लिए इस तरहके शब्दोंका प्रयोग नहीं करना चाहिये क्योंकि तुम्हारे पिता तो मृत्युसे परे हैं। सिकन्दरने अपने प्रश्नके शब्दोंको बदलते हुए पूछा, क्या जिन लोगोंने फिलिपकी हत्या की थी उनमेंसे कोई अदण्डित भी रह गया है? उसने एक प्रश्न और भी पूछा "क्या संसारका साम्राज्य मेरे लिए सुरक्षित है?" ऐमन देवताकी तरफसे उत्तर दिया गया कि हाँ, संसारका साम्राज्य तुम प्राप्त कर सकोगे। प्रथम प्रश्नके उत्तरमें कहा गया कि फिलिपके सभी हत्याकारियोंको दण्ड दिया जा चुका है। यह सुन कर सिकन्दर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने बृहस्पति देवताको अच्छी अच्छी बलि चढ़ाई और पुरोहितोंको बहुमूल्य वस्तुएँ भेंट कीं। यद्यपि असभ्य लोगोंके प्रति उसका व्यवहार कुछ गर्वपूर्ण था, मानो वह भी अपनेको देव-पुत्र समझता हो, पर यूनानियोंसे वह अधिक शिष्टतापूर्ण बर्ताव करता था और उनके सामने अपने दिव्य जन्मका अभिमान भी नहीं करता था। दूसरोंपर अपनी धाक जमानेके लिए ही वह प्रायः अपने दिव्य जन्मकी बात प्रकट किया करता था, अन्यथा उसे स्वयं इसके लिए कोई मूर्खतापूर्ण अभिमान न था।

इस यात्रासे लौटनेके बाद सिकन्दरको दाराकी एक चिट्ठी मिली और उसके कई मित्र भी यह प्रार्थना करनेके लिए उसके (सिकन्दरके) पास आये कि यदि वह दाराके पक्षके कैदियोंको मुक्त करना स्वीकार करे तो इस कृपाके बदले दारा उसे एक हजार टेलेण्ट नकद तथा फरात नदीके इस पारके सब देश समर्पित कर देगा और अपनी एक पुत्रीका विवाह भी उसके साथ कर देगा। सिकन्दरने ये सब बातें अपने मित्रोंको सुना कर उनकी सलाह पूँछी। पारमेनियोने कहा "यदि मैं सिकन्दर होता तो मैं इन शर्तोंको अवश्य मान लेता।" सिकन्दरने जवाब दिया "मैं भी ऐसा ही करता, यदि मैं पारमेनियो होता।" निदान उसने दाराको लिख दिया कि "यदि आप स्वयं यहाँ आवें और मेरी अधीनता स्वीकार कर लें तो जहाँतक हो सकेगा मैं आपके साथ दयापूर्ण बर्ताव करूँगा।

यहाँ तो मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं स्वयं ही शीघ्र प्रस्थान कर दूँ और आपके पास जा पहुँचूँ।" किन्तु प्रस्तावके समय दाराकी पत्नीकी मृत्यु हो जानेके कारण सिकन्दरको अपने इस दशाके एवं अवसरपर बड़ा पछतावा हुआ। उसके व्यवहारसे यह स्पष्ट हो जाता था कि अपनी क्षमाशीलता एवं उदारता प्रदर्शित करनेका एक सुअवसर हाथसे निकल जानेका उसे कितना दुःख हुआ है। फिर भी जहाँतक सम्भव था वहाँतक उसने दाराकी पत्नीकी अन्त्येष्टि क्रिया बड़ी धूमधामके साथ सम्पन्न करायी।

फारसकी रानीकी सेवामें जो खोजे नियुक्त थे और जो स्त्रियोंके साथ ही बन्दी बना लिये गये थे, उनमें एक टाइरियस नामक खोजा भी था। शिविरसे बाहर निकलते समय वह घोड़ेपर चढ़ कर भाग निकला और रानीकी मृत्युके समाचार देनेके लिए दाराके पास जा पहुँचा। दाराने जब यह खबर सुनी, तब वह अपना माथा पीट कर और आँखोंमें आँसू भर कर कहने लगा "ओफ़! फारसवालोंपर कितनी विपत्ति पड़ी! मानो उनके लिए इतना दुःख काफी न था कि उनकी सम्राज्ञीको अपने जीवन कालमें ही शत्रुके हाथ कैद हो जाना पड़ा, इसीसे अब यह नौबत आयी कि मृत्युके उपरान्त फारसकी अधीश्वरीका शव भी, एक मामूली स्त्रीकी तरह किसी छोटी मोटी जगहमें लापरवाहीके साथ गाड़ दिया जाय।" खोजेने जवाब दिया "हे राजराजेश्वर, आप उनकी अन्त्येष्टि क्रियाका या उनके प्रति जो सम्मान प्रकट करना आवश्यक था उसका ख्याल कर फारसके दुर्भाग्यको दोष न दें, क्योंकि जहाँतक मुझे मालूम है, राज-महिषी, राजमाता तथा राजपुत्रादि वहाँपर उतने ही सुखी थे जितने यहाँ थे। उन्हें केवल एक ही बातका दुःख था। वह है आपके मुख मण्डलकी उदासी, जो ईश्वर चाहेगा तो शीघ्र ही दूर हो जायगी। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मृत्युके बाद राजमहिषी वे सब आभूषण तो पहने ही हुए थीं जो अन्त्येष्टि क्रियाके समय पहनाये जाते हैं, इसके

अतिरिक्त शत्रुतकने नेत्रोंमें आँसू भर कर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया था, क्योंकि सिकन्दर समरांगणमें जितना भीषण है, विजयके बाद उतना ही उदार है।" यह सुनकर दाराके मनमें तरह तरहकी शंकाएँ उठने लगीं। टाइरियसको एकान्तमें ले जाकर उसने पूछा "यदि फारसके सौभाग्यके साथ साथ तूने भी मेरा साथ न छोड़ दिया हो और दिलसे मकदूनियावालोंका पक्षपाती न बन गया हो, यदि तू अब भी मुझे अपना अधीश्वर मानता हो तो मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, तू अपने राजाके इस दाहिने हाथकी शपथ खाकर सच सच बता कि क्या राजमहिषीके बन्दी बनाये जाने और मृत्युको प्राप्त होनेपर मेरा इतना अफसोस करना व्यर्थ नहीं है? क्या उनके जीवनकालमें ही ऐसी कोई घटना नहीं हुई जिससे मेरी इससे भी बढ़कर हानि हुई हो और जिसके लिए वास्तवमें मुझे अधिक दुःखी होना चाहिये? क्या यह सत्य नहीं है कि यदि मुझे सिकन्दरकी अपेक्षा अधिक निष्ठुर एवं अमानुषिक शत्रु मिला होता तो, विपद्ग्रस्त होते हुए भी, मेरी इससे कम ही अप्रतिष्ठा हुई होती? सिकन्दरके सदृश यौवन-प्राप्त विजेताके लिए अपने शत्रुकी पत्नीके साथ इतना अच्छा बर्ताव करना कैसे सम्भव है? क्या इसके पीछे कोई ऐसा प्रेरक हेतु नहीं है जिससे मेरी प्रतिष्ठाको हानि पहुँचती हो?" दारा अपना कथन समाप्त भी न कर पाया था कि टाइरियस उसके पाँवपर गिर पड़ा और हाथ जोड़ कर कहने लगा "प्रभो! आप अपने मनमें ऐसे विचारोंको स्थान देकर सिकन्दरके प्रति और साथ ही राजदारा एवं राजभगिनीके प्रति अन्याय कर रहे हैं। आप उस अवलम्बनका परित्याग कर रहे हैं जो इस विपत्तिमें भी आपको धैर्य बँधा सकता है। आप व्यर्थ ही अपना यह विश्वास तोड़ रहे हैं कि आप एक ऐसे व्यक्तिसे पराजित हुए हैं जो अपने सद्गुणोंके कारण मानव-स्वभावसे परे है। आप सिकन्दरको स्नेह और प्रशंसाकी दृष्टिसे देखिये। उसने फारस देशीय पुरुषोंके सामने जैसे अपनी वीरता प्रदर्शित की है, वैसे ही वहाँकी स्त्रियोंके प्रति अपूर्व आत्मसंयम

भी दिखलाया है।" लोगोंने बड़ी बड़ी शपथ खाकर अपने प्रत्येक वचनका समर्थन किया। वह सिकन्दरके आत्मसंयम एवं उदारताके अन्य उदाहरणोंका उल्लेख ही कर रहा था कि दारा उसे वहीं छोड़ कर तम्बूके उस भागमें चला गया जहाँ उसके मित्र तथा दरबारीगण थे और आकाशकी ओर हाथ उठा कर इस प्रकार प्रार्थना करने लगा "मेरे राज्य और मेरे कुटुम्बके संरक्षक देवताओ, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि यदि सम्भव हो तो फारसके विपत्तिके दिन दूर कर दो ताकि मैं अपना राज्य फिर ही उन्नत अवस्थामें छोड़ कर मर सकूँ जिसमें वह मुझे मिला था। यदि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लेंगे तो सिकन्दरके उस उपकारका बदला चुकाना भी मेरे लिए सम्भव हो सकेगा जो उसने मेरे प्रियजनोंके प्रति दयालुताका बर्ताव कर किया है। किन्तु यदि फारस राज्यकी दुर्दशाके दिन ही आ गये हों और यदि हमारा पतन अनिवार्य हो गया हो तो कृपा कर मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कीजिये कि साइरसके राजसिंहासनपर सिकन्दरको छोड़ कर और कोई न बैठे।"

इधर जब सिकन्दर फरात नदीके इस पारके देश जीत चुका, तब वह दाराका मुकाबला करनेके लिए आगे बढ़ा जो दस लाख आदमी साथ लेकर उसकी तरफ आ रहा था। रास्तेमें एक मजेदार घटना हुई। सेनाके शिविरके साथ जो नौकर थे उन्होंने एक बार अपनेको दो दलोंमें विभक्त कर लिया। एक दलके नेताका नाम रखा गया सिकन्दर और दूसरेके नेताका दारा। पहले तो वे लोग मिट्टीके ढेले एक दूसरेपर फेंकते रहे, किन्तु शीघ्र ही उन लोगोंमें मुक्केबाजी होने लगी और फिर लड़नेकी उत्तेजना बढ़ जाने पर पत्थरों और गदाओंका भी प्रहार होने लगा, यहाँ तक कि दोनों दलके लोगोंको अलग करना कठिन हो गया जब सिकन्दरने यह खबर सुनी तब उसने दोनों दलके नायकोंको द्वन्द्व-युद्ध द्वारा लड़ाईका निपटारा करनेकी आज्ञा दी और जिसने उसका नाम धारण किया था उसे उसने स्वयं अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित किया। दारा

नामधारी व्यक्तिको फिलोटसने सजाया। सारी सेनाकी आँखें इन दोनोंके युद्धपर लगी हुई थीं, क्योंकि उन्होंने इस घटनाके परिणामको अपनी भावी सफलताका सूचक माननेका निश्चय किया था। निदान बहुत देर-तक वीरतापूर्वक युद्ध करनेके पश्चात् सिकन्दर नामधारी व्यक्तिने दारा नामधारी व्यक्तिको परास्त कर दिया और इस विजयके उपलक्ष्यमें बारह गाँव इनाममें पाये।

दाराके साथ जो लड़ाइयाँ हुई उनमें सबसे बड़ी लड़ाई कदाचित् गागेमेलाकी थी। उस समय एक चन्द्रग्रहण पड़ा था जिसके ग्यारह दिन बाद सिकन्दर तथा दाराकी सेनाएँ परस्पर इतनी निकट आ पहुँचीं कि अपने अपने स्थानसे एक सेना दूसरीको भलीभाँति देख सकती थी। रात्रिका समय था। दाराने अपने सैनिकोंको अस्त्र-शस्त्र धारण कर कतार-में खड़े होनेका आदेश दिया और मशालके प्रकाशमें उसका सामान्य निरीक्षण किया। सिकन्दरके सैनिक इस समय सो रहे थे और वह स्वयं अपने तम्बूके बाहर एक ज्योतिषीके साथ कुछ विचित्र अनुष्ठान कर रहा था एवं भयके देवताके नामपर बलि चढ़ा रहा था। इसी समय जब सिकन्दरके सबसे पुराने सेनानायकोंने, जिनमें पारमेनियो प्रधान था, अपने सामनेके मैदानमें एक छोरसे दूसरे छोरतक शत्रुके सैनिकों द्वारा जलाये गये दीपकोंकी माला और आगकी लपटें देखीं और दूरसे सुन पड़नेवाली विशाल समुद्रकी गर्जनाकी तरह उनके शिविरमें होनेवाला असम्बद्ध कोलाहल सुना, तब वे इतनी बड़ी सेनाका ख्याल कर ऐसे घबड़ा गये कि थोड़ी देरतक आपसमें परामर्श करनेके बाद उन्होंने यही तै पाया कि शत्रुकी विशाल सेनाके साथ दिनमें युद्ध करना बहुत कठिन और भयानक है, इसलिए बलि चढ़ा कर जब सिकन्दर वापस लौटा तब उन्होंने उससे निवेदन किया कि दारापर रातमें आक्रमण किया जाय, क्योंकि ऐसा करनेसे रात्रिके अंधकारके कारण होनेवाले युद्धके खतरे प्रकट नहीं होने पावेंगे। यह सुन कर उसने जवाब दिया "मैं चोरोंकी

तरह लड़ कर विजय प्राप्त करना नहीं चाहता।" कुछ लोगोंके ख्यालसे सिकन्दरका यह उत्तर लड़कों जैसा एवं विचारशून्य था, क्योंकि इससे प्रकट होता है मानो वह खतरेकी ओरसे जान बूझकर आँख बन्द कर लेना चाहता था। किन्तु अन्य लोगोंकी दृष्टिमें इससे केवल यही सूचित होता है कि उसे अपनी तत्कालीन शक्तिपर पूरा विश्वास था और उसने भविष्यका ठीक ठीक अन्दाज़ा लगा कर ही ये शब्द कहे थे। वह नहीं चाहता था कि परास्त होने पर दाराको यह भ्रम हो कि रात्रिकी कठिनाइयोंके कारण ही मेरी हार हुई है और वह एक बार फिर युद्ध करनेकी तैयारी करे। पिछली बार भी जब वह पराभूत हुआ था, तब उसने समझा था कि पहाड़ों, तंग रास्तों तथा समुद्र सम्बन्धी कठिनाइयोंके कारण ही मेरी पराजय हुई है। यह निश्चित है कि सैनिकों या युद्ध-सामग्रीकी कमीके कारण उसका लड़ाईसे मुँह मोड़ना असंभव था, क्योंकि उसके साथ अब भी बहुत बड़ी सेना प्रस्तुत थी और अनेक बड़े बड़े प्रान्त अभीतक उसकी अधीनतामें थे। बिलकुल स्पष्ट और निर्भ्रान्त रूपसे पराजित होने पर ही उसकी हिम्मत तथा आशा टूट सकती थी और तभी उसके युद्धसे विरत होनेकी संभावना थी।

जब सिकन्दरका यह उत्तर पाकर वे लोग चले गये, तब वह अपने तम्बूमें जाकर लेट गया और रात भर खूब गाढ़ी नींदमें सोता रहा। बड़े सबेरे जब सेनापतियोंने आकर उसे इस प्रकार सोते देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ। निदान विलम्ब होते देख कर पारमेनियोने पास जाकर उसे जगा दिया और कहा "जब आप एक सबसे महत्वपूर्ण युद्ध करने जा रहे हैं, तब इतनी गाढ़ी नींदमें कैसे सो सकते हैं मानो युद्धमें सफलता ही प्राप्त कर चुके हों!" सिकन्दरने मुसकुराते हुए जवाब दिया "तो क्या सचमुच हम सफलता नहीं प्राप्त कर चुके हैं? क्या व्यर्थ ही यह आशा करते हुए कि दारा आकर हमसे युद्ध करेगा हम इस विस्तृत और वीरान देशमें उसके पीछे पीछे भटकते फिरनेकी परेशानीसे नहीं बच गये हैं?"

युद्धके पहले ही नहीं, बड़ेसे बड़े संकटके समय भी वह महापुरुषोंकी ही तरह व्यवहार करता था और चित्तकी यह शान्ति प्रदर्शित करता था जो भावी घटनाओंको पहलेसे ही भाँप लेनेकी क्षमता तथा अपनी सफलतामें अटल विश्वासके कारण उत्पन्न होती है। इस युद्धमें ही एक बार विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गयी थी और सफलताकी आशा नहीं रह गयी थी। सेनाके वाम भागको, जिसका सेनापति पारमेनियो था, शत्रुके अश्वारोहियोंने प्रबल आक्रमण कर तितर-बितर कर दिया और उसे पीछे हटना पड़ा। इसी समय शत्रु-सेनाकी एक और टुकड़ीने पीछेसे आकर खाद्य-सामग्री इत्यादिकी रक्षा करनेवाले सैनिकोंपर आक्रमण किया। इससे पारमेनियो इतना घबड़ा गया कि उसने सिकन्दरके पास आदमी भेजकर कहलाया कि यदि आप सामनेकी सेनामेंसे कुछ आदमी हमारी सहायताके लिए नहीं भेजते तो हमें खाद्य वस्तुओं तथा शिविरके सारकी अन्य आवश्यक सामग्रीसे हाथ धोना पड़ेगा। यह सन्देशा सिकन्दरको ठीक उस समय मिला जब वह अपने समीपस्थ सैनिकोंको शत्रुपर आक्रमण करनेका आदेश दे रहा था। उसने दूतोंसे कहा "जाओ, पारमेनियोसे कहना कि अवश्य ही तुम अपनी बुद्धि खो बैठे हो और अत्यधिक भयके कारण तुम्हें इतना भी ख्याल नहीं रह गया कि विजयी होने पर सैनिकोंको शत्रुकी खाद्यसामग्री मिल जाती है और यदि हार हुई तो अपनी सम्पत्ति और दासोंकी रक्षाकी फिक्र करनेके बजाय उन्हें केवल एक ही काम करना पड़ता है। वह है वीरतापूर्वक लड़ना और सम्मानके साथ प्राण दे देना।" इतना कह कर उसने अपना शिरस्त्राण धारण कर लिया और युद्धके लिए सन्नद्ध हो गया। अन्य अस्त्र-शस्त्र तो वह पहले ही ग्रहण कर चुका था। जबतक वह अपने सैनिकोंको तरतीबसे खड़ा करवाता रहा या जबतक वह उन्हें कोई आदेश या किसी तरहकी हिदायत देता रहा था जब वह उनका सामान्य निरीक्षण करने गया तब उसने प्रायः ब्यूसीफेलस घोड़ेपर सवारी नहीं की। ब्यूसीफेलस अब बुड्ढा होता जा रहा था, अतः

इन सब कामोंको करते समय यह एक दूसरे घोड़ेपर सवारी करता था। किन्तु जब उसे युद्धमें प्रत्यक्ष भाग लेना पड़ा तब उसने ब्यूसीफेल्सको ही चुन लेना। ज्यों ही वह उसपर सवार हुआ त्यों ही उसने शत्रुपर धावा बोल दिया।

सिकन्दरने उस दिन थेसेलियन तथा अन्य ग्रीक लोगोंके सामने एक लम्बा भाषण किया, जिससे प्रभावित होकर उन लोगोंने कई बार हर्षध्वनि की और सिकन्दरसे असभ्य जातियोंके विरुद्ध आक्रमण करनेकी प्रार्थना की। यह देख कर सिकन्दरने बायें हाथसे अपनी बरछी उठा ली और दाहिना हाथ आकाशकी ओर उठा कर देवताओंसे इस प्रकार प्रार्थना की—"यदि मैं सचमुच जुपिटर (बृहस्पति) देवताका पुत्र हूँ तो आप लोग कृपा कर ग्रीक लोगोंकी सहायता कीजिये और उन्हें अपूर्व शक्ति प्रदान कीजिये।" इसी समय अरिस्टेण्डर नामक शकुन बतलानेवाला सफेद चोगा पहन हुए वहाँ आया और उसने सब लोगोंको एक गृद्ध दिखलाया जो सिकन्दरके ठीक ऊपर मँडरा रहा था और जो बादमें शत्रुकी तरफ और उड़ता हुआ चला गया। यह देख कर ग्रीक सैनिकोंमें उत्साह उमड़ पड़ा और उन्होंने आपसमें परामर्श कर शत्रुपर आक्रमण कर दिया। आगे आगे घुड़सवार सेना थी और उसके पीछे झुण्डकी झुण्ड पैदल सेना था। सामनेकी पंक्तियोंमें खड़े हुए शत्रुके सैनिकोंसे इन लोगोंकी मुठभेड़ अच्छी तरह होने भी नहीं पायी थी कि वे भाग खड़े हुए। सिकन्दरने जोरोंसे उनका पीछा किया और उन्हें रणभूमिके ठीक मध्य भागमें ला पहुँचाया जहाँ दारा स्वयं उपस्थित था। यह ऊँचा पूरा और रूपवान् राजा एक ऊँचेसे रथपर बैठा हुआ था। अच्छेसे अच्छे बहुसंख्यक घुड़सवार शत्रुकी प्रतीक्षा करते हुए रथके चारों ओर खड़े हुए थे। सिकन्दरके आक्रमणकी प्रबलताके कारण सामनेके सवारोंको एकाएक पीछे हट जाना पड़ा जिससे पिछले भागमें खड़े हुए उन अश्वारोहियोंको भी अपना स्थान छोड़ना पड़ा जो अभीतक अपनी जगहपर डँटे हुए थे। सिकन्दरने उन्हें

शीघ्र ही तितर बितर कर दिया। केवल थोड़ेसे वीर और साहसी सैनिकोंने जम कर उसका मुकाबिला किया। वे अपने राजाके देखते देखते ही काट डाले गये।, दाराने जब देखा कि मेरी रक्षाके लिए जो सैनिक सामने रखे गये थे वे छिन्न भिन्न कर मेरी ही ओर खदेड़ दिये गये और लाशोंमें पहियोंके फँस जानेके कारण रथका आगे बढ़ाना या पीछे घुमाना ही कठिन हो गया है, तब उसे लाचार होकर रथ छोड़ देना पड़ा। एक घोड़ीपर सवार होकर वह भाग निकला। यदि ठीक इसी समय पारमेनियोने, सहायता माँगनेके निमित्त, पुनः सिकन्दरके पास दूत न भेजे होते तो दारा भाग कर भी नहीं बच सकता था। पूर्ण विजयके समय इस बाधाके आ पड़नेके कारण सिकन्दरको बहुत बुरा लगा, पर वह विवश था। उसने दाराका पीछा करना छोड़ कर पारमेनियोकी सहायताके लिए प्रस्थान किया। रास्तेमें ही उसे शत्रुकी पूर्ण पराजय एवं पलायनके समाचार मिले।

लड़ाई समाप्त हो जानेके बाद ऐसा प्रतीत होने लगा मानों फारसके साम्राज्यके दिन भी अब पूरे हो गये। सिकन्दर एशियाका राजा घोषित किया गया। उसने देवताओंको धन्यवाद दिया और उन्हें बलि चढ़ायी। अपने मित्रों तथा अनुयायियोंको उसने बड़ी बड़ी रकमें और अच्छी अच्छी जगहें प्रदान कीं। ग्रीसवालोंका सम्मान प्राप्त करनेकी इच्छासे उसने उन्हें लिख भेजा कि मैं तुम लोगोंको सब अत्याचारोंसे मुक्त कर दूँगा ताकि तुम्हें अपने ही क़ानूनोंके अनुसार चलनेकी स्वतंत्रता प्राप्त हो जाय। उसने लूटका कुछ हिस्सा इटलीके क्रोटोनियट लोगोंके पास भी भेजा। ऐसा करनेका उद्देश्य उनके नागरिक फॅलसके उत्साह और साहसके प्रति सम्मान प्रकट करना था। यह एक पहलवान था, जिसने मीडियाकी लड़ाईमें अपने खर्चसे प्रस्तुत किये गये एक पोतपर आरूढ़ होकर स्वयं भी संकटका सामना करनेके उद्देश्यसे सैलेमिसमें स्थित जहाजी बेड़ेका साथ दिया था, यद्यपि उस समय ग्रीसके अन्य उपनिवेशोंने

उससे सम्बन्ध होना अस्वीकार कर दिया था । इन सब बातोंसे स्पष्ट है कि सिकन्दर सब तरहके सद्गुणोंका कितना आदर करता था और प्रशंसनीय कार्योंकी स्मृति बनाये रखनेके लिए कितना इच्छुक था ।

यहाँसे सिकन्दर बेबीलान प्रान्तमें गया । बेबीलानने तुरन्त उसकी अधीनता स्वीकार कर ली । एक्बेटैनामें यह स्थान देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जहाँ पृथ्वीके एक छिद्रमेंसे झरनेकी तरह आग निरन्तर बहनेवाली धाराके रूपमें निकलती रहती है । पास ही नैपथा* नामक द्रव्यकी इतनी गहरी धारा बहती है कि जिससे एक झील सी बन जाती है । यह द्रव्य इतना उद्दीपक होता है कि आगकी लौका स्पर्श होनेके पहले ही केवल उस प्रकाशसे, जो उसके चारों ओर रहता है, जल उठता है । इसकी यह विशेषता दिखलानेके लिए वहाँके असभ्य निवासियोंने राजाके निवासस्थानको जानेवाली सड़कपर इसकी कुछ बूँदे छिड़क दीं और जब रात हुई तब हाथमें मशालें ले लेकर सड़कके दूसरे छोरपर खड़े हो गये । गीली जगहपर लपटके लगते ही यह तुरन्त भभक उठी और देखते देखते सारी सड़क एक छोरसे दूसरे छोरतक एक विस्तृत अग्निराशिमें परिणत हो गयी । एक बार सिकन्दरके एक पार्श्ववर्ती अनुचरने, जो स्नानादिके समय उसका मनोरंजन किया करता था, उससे प्रार्थना की कि गाना गाने वाले स्टीफेनस नामक नवयुवकपर (जो उस समय स्नानागारमें ही बाजूसे खड़ा था) प्रयोग कर इसका चमत्कार देखा जाय । "यदि उसका शरीर भी जल उठे और आग न बुझे तो यह अवश्य स्वीकार कर लेना पड़ेगा कि निस्सन्देह इसमें अपूर्व शक्ति है ।" भाग्यवश नवयुवकने भी तुरन्त यह प्रस्ताव मान लिया । ज्यों ही शरीरपर इसकी मालिश की गयी और उसे अग्निका स्पर्श कराया गया, त्यों ही उसकी सारी देह इस प्रकार जल उठी और आगने उसे इस तरह पकड़ लिया कि सिकन्दरके मनमें युवकके जीवनके सम्बन्धमें बड़ी चिन्ता एवं शंका उपस्थित हो गयी।

* खनिज तैलविशेष ।

यदि सौभाग्यसे सिकन्दरके स्नानार्थ बहुतसे मनुष्य जलपूर्ण पात्र लिये हुए वहाँ उपस्थित न होते, तो अग्निसे उसकी रक्षा करना असंभव हो जाता। इतना होते हुए भी बड़ी मुश्किलसे आग बुझायी जा सकी और स्टीफेनस-का शरीर इतना ज़्यादा जल गया कि बहुत दिनोंके बाद ही वह अच्छा हो सका।

सूसा ले लेने पर सिकन्दरको राज-भवनमें ४० हजार टैलैण्ट नक़द मिले। इसके अतिरिक्त और भी बहुतसा सामान तथा ख़ज़ाना प्राप्त हुआ जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसमें एक बैंगनी रंगकी पोशाक भी थी जिसका मूल्य पाँच हजार टैलैण्ट था। यद्यपि यह १९० वर्षसे वहाँ रखी हुई थी, फिर भी इसका रँग उतना ही नयासा और चमकदार बना हुआ था जितना युद्धमें था। इसका कारण यह बतलाया जाता है कि उन दिनोंमें वहाँ बैंगनी रंगसे कपड़ा रँगते समय शहदका और सफ़ेद टिंचरमें सफेद तेलका प्रयोग किया जाता था। इन दोनोंका रँग इतने समयके बाद भी फीका नहीं पड़ता। डिनान कहता है कि फारसके राजा नील तथा डैन्यूब नामक नदियोंसे पानी मँगाया करते थे जिसे वे अपनी शक्तिकी महत्ता तथा साम्राज्यका विस्तार सूचित करनेके लिए कोषागारमें रखवाया करते थे।

फारसका प्रवेश-मार्ग एक बहुत विकट देशमें होकर था और यद्यपि दारा स्वयं वहाँसे दूर हट गया था, फिर भी फारसके चुने हुए वीर उसकी रक्षामें तत्पर रहते थे। किन्तु सौभाग्यसे सिकन्दरको एक मार्गदर्शक मिल गया था। उसीकी सहायतासे उसने देशके भीतर प्रवेश किया। यहाँ उसने बहुतसे कैदियोंको तलवारसे क़त्ल करवा दिया। वह समझता था कि ऐसा करना उसके लिए लाभकारी होगा। यहाँ उसे सूसाकी अपेक्षा कम द्रव्य नहीं मिला। इसके सिवा और भी बहुतसी चीजें तथा ख़ज़ाना मिला जो कोई बीस हजार खच्चरों और पाँच हजार ऊँटोंपर लादा जा सकता था। उसने एक स्थानपर ज़र्कसीज़की एक बड़ी मूर्त्ति

पड़ी हुई देखी। राजभवनमें प्रवेश पानेके निमित्त सैनिकों द्वारा की गयी गड़बड़ीके समय यह ज़मीनपर गिरा दी गयी थी। उसे देख कर सिकन्दर चुपचाप खड़ा हो गया। फिर उसने उससे इस प्रकार प्रश्न किया मानों यह सजीव हो, "क्या हम लोग तुम्हारी ओर दृष्टिपात न कर चुपचाप एक किनारेसे निकल जायँ? तुमने एक बार ग्रीसपर चढ़ाई की थी, इसीसे आज तुम इस अवस्थामें पृथ्वीपर पड़े हुए हो। अथवा हम तुम्हारे उच्च विचारों एवं अन्य सद्गुणोंका ख्याल कर तुम्हें फिरसे उठा कर खड़ा कर दें?" थोड़ी देरतक मनमें कुछ विचार करनेके उपरान्त सिकन्दर वहाँसे चला गया और उसने मूर्त्तिकी ओर फिर कोई ध्यान नहीं दिया। जाड़ा उसने यहीं बिताया, क्योंकि यह चाहता था कि सैनिकोंकी थकावट दूर हो जाय तब आगे बढ़ा जाय। कहते हैं कि जब सिकन्दर प्रथम बार सुवर्ण-छत्रसे सुशोभित फारसके राजसिंहासनपर विराजमान हुआ तब हर्षातिरेकके कारण डेमेरेटस नामक व्यक्तिके, जो उसके पिताका मित्र था, नेत्रोंमें आँसू आ गये और वह उन ग्रीस-निवासियोंके लिए अफसोस करने लगा, जिन्हें मृत्युके कारण सिकन्दरको दाराके राजसिंहासनपर बैठा हुआ देख कर होनेवाले सुखसे वञ्चित रह जाना पड़ा था।

यहाँसे सिकन्दरने दाराके विरुद्ध प्रयाण करनेका इरादा किया। इसके पहले एक दिन उसने अपने अफसरोंके साथ बैठ कर मदिरापान करने तथा अन्य कार्यों द्वारा दिल बहलानेमें व्यतीत किया। इस समय उसने अपने पार्श्ववर्त्तियोंको यहाँ तक आज़ादी दे दी थी कि वे अपने साथ अपनी पत्नियोंको भी बैठा कर मद्यपान कर सकते थे। इनमें सबसे प्रसिद्ध थायस नामकी एक अथीनियन महिला थी। यह टालेमीकी पत्नी थी, जो बादमें मिस्रका शासक हुआ। इसने कुछ तो सिकन्दरकी प्रशंसा करनेके लिहाजसे और कुछ मज़ाकके तौरपर कहा कि सारे एशियामें शिविरके साथ साथ चलनेके कारण मुझे जो परिश्रम हुआ है, उसका आंशिक बदला मैं आज पा चुकी, क्योंकि आज फारसके सुविशाल राजप्रासादमें

ही मेरा स्वागत किया जा रहा है और मैं चाहूँ तो यहाँ बैठ कर फारसके राजाओंका भरपूर अपमान कर सकती हूँ। इससे भी अधिक प्रसन्नता मुझे तब होगी जब मैं सिकन्दरके देखते देखते उस जर्कसीज़के सभाभवनमें अपने हाथसे आग लगा सकूँगी जिसने अथेंज़ नगरको भस्मसात् किया था। यदि मैं ऐसा कर सकी तो आनेवाली सन्तान यह जान कर प्रसन्न होगी कि सिकन्दरके साथ जो स्त्रियाँ युद्ध-क्षेत्रको गयी थीं, उन्होंने ग्रीस-वालोंके साथ किये गये अत्याचारों एवं अपमानोंका ऐसा सख्त बदला लिया था जैसा बड़े बड़े सेनानायक भी समुद्रमें तथा पृथ्वीपर युद्ध कर-के नहीं ले सके थे। इन शब्दोंको सुन कर लोगोंने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की और उसके कथनका ज़ोरोंसे समर्थन किया। सिकन्दर भी इन लोगोंकी बातोंमें आ गया और तुरन्त सिंहासनसे उठ खड़ा हुआ। सिर-पर फूलोंकी माला डाल कर एवं हाथमें मशाल लेकर वह आगे आगे चला और उसके पीछे पीछे नाचते और चिल्लाते हुए अन्य लोग चले। उन्हे इस प्रकार जाते देख कर बचे हुए मकदूनियन सैनिक भी मनमें बहुत प्रसन्न होते हुए अपने अपने हाथमें मशाल लेकर दौड़े। उन्होंने ख्याल किया कि फारसके राजभवनको जला कर नष्ट कर देनेकी इच्छासे यह साफ ज़ाहिर होता है कि सिकन्दरका इरादा घर लौट जानेका है, वह इन असभ्य लोगोंके साथ नहीं रहना चाहता। सिकन्दरने राजप्रासादमें आग तो लगा दी, किन्तु बादमें उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ और उसने उसे बुझा देनेकी आज्ञा दी।

सिकन्दर स्वभावसे ही बहुत उदार था। ज्यों ज्यों उसका वैभव बढ़ता गया त्यों त्यों उसकी उदारता भी बढ़ती गयी। वह जो कुछ देता था बड़ी शिष्टताके साथ और बिना किसी हिचकिचाहटके देता था। एक बार ऐरिस्टन नामक एक सेना-नायक शत्रुके एक प्रसिद्ध वीरको मार कर उसका सिर सिकन्दरके पास ले आया और उसके सामने रख कर कहने लगा कि मेरे देशमें इस तरहकी भेंटके बदलेमें सोनेका प्याला देनेकी

प्याला है। सिकन्दरने मुसकुराते हुए कहा—"खाली प्याला न ? किन्तु मैं तुम्हारे सम्मानके लिए इसमें शराब पीता हूँ और इसे पुनः मदिरासे भर कर तुम्हें देता हूँ।" इसी तरह एक बार एक मामूली सैनिक राज-कोषका कुछ अंश खच्चरकी पीठपर लाद कर ले जा रहा था। मार्गमें जब खच्चर बिलकुल थक गया तब सैनिकने सारा बोझ अपनी पीठपर रख लिया और उसे लेकर चलने लगा। सिकन्दरने उसे अपनी शक्तिसे अधिक बोझ उठाये हुए देख कर पूछा कि बात क्या है ? जब उसे इसका कारण विदित हुआ, तब सैनिकको थकावटकी वजहसे अपनी गठरी उतारनेके लिए उद्यत देख कर उसने कहा—"अभी हिम्मत मत हारो, किसी तरह रास्ता तै कर डालो और इसे अपने लिए अपने ही तम्बूमें पहुँचा दो।" जो लोग उससे कोई वस्तु माँगते थे उनसे वह उतना नाखुश नहीं होता था जितना उनसे होता था जो उसकी दी हुई वस्तुको लेना अस्वीकार करते थे। इसीसे उसने एक बार फोशियनको लिखा था कि यदि तुम मेरी भेजी हुई भेंट अस्वीकार करोगे तो मैं भविष्यमें तुम्हें अपना मित्र नहीं समझूँगा। उसने सिरापियन नामक नवयुवकको, जो उसके साथ गेंद खेला करता था, कभी कुछ नहीं दिया, क्योंकि उसने उससे कभी कुछ नहीं माँगा। एक बार जब सिरापियनकी पारी आयी तब वह बराबर दूसरोंके सामने गेंद फेंकता रहा। सिकन्दरके यह पूछने पर कि तुम मेरी तरफ गेंदको क्यों नहीं आने देते, उसने जवाब दिया "क्योंकि आपने मुझसे गेंद माँगी ही नहीं।" यह उत्तर सुन कर सिकन्दर बहुत प्रसन्न हुआ और उसी दिनसे उसके प्रति उदारता दिखलाने लगा। अपने मित्रों और पार्श्ववर्तियोंको रुपया पैसा देनेमें वह कितना मुक्तहस्त था, यह उस पत्रसे प्रकट होता है जो ओलिम्पियसने उसे लिखा था। इसमें उसने सिकन्दरको सलाह दी थी कि "तुम्हें मित्रादिको भेंट देनेमें कुछ किफायतसे काम लेना चाहिए। इस समय तुम उन्हें राजाओंके बराबर बना देते हो, तुम उन्हें इतनी शक्ति और अवसर देते हो कि वे बहुतोंको अपने मित्र बनाते जाते हैं, किन्तु तुम

स्वय अपनेको साधनहीन बनाते जा रहे हो।" इस तरहके और भी कई पत्र उसने सिकन्दरके पास भेजे थे। पारमेनियोको उसने वगोआका जो मकान दिया था, उसमें कपडोंसे भरी हुई एक आलमारी थी। इनका मूल्य एक हजार टैलेण्टसे भी ज्यादा था। उसने एण्टीपेटरको एक पत्र लिखा था जिसमें उसे षड्यंत्रकारियोंसे अपनी रक्षा करनेकी गरजसे शरीररक्षक नियुक्त करनेकी आज्ञा दी थी। अपनी माताको भी उसने अनेक उपहार भेजे, किन्तु राज्य अथवा युद्ध सम्बन्धी बातोंमें उसे कभी हस्तक्षेप नहीं करने दिया। इसीसे कभी कभी वह सिकन्दरसे झगड पडती थी और यह उसकी रोषभरी बातें बडे धैर्यके साथ सह लेता था। एक बार एण्टीपेटरने अपने पत्रमें उसकी खूब निन्दा की। सिकन्दरने पत्र पढ कर कहा "एण्टीपेटर नहीं जानता कि माताके मुखपर दिखाई पडनेवाली आँसूकी एक बूँदके सामने ऐसी हजारों चिट्ठियोंका प्रभाव नष्ट हो जाता है।"

इस समय सिकन्दरके कृपापात्रोंमें विषयानुराग बढ़ता जा रहा था और उनकी रहन-सहन भी अधिक खर्चीली होती जा रही थी—यहाँ तक कि हैगनान अपने जूतोंमें चाँदीके नाल लगवाता था, लीओनेटसने कुश्ती लडते समय शरीरमें लगायी जानेवाली बुकनी ही मिस्रसे मँगानेके लिए अनेक ऊँट रख लिये थे, फिलोटसने दस दस मील लम्बे शिकारी जाल तैयार कराये थे, और ये सब लोग नहानेके पहले मामूली तेलके बजाय बहुमूल्य लेप लगाते थे तथा शरीरकी मालिश करने और हुक्म बजा लाने के लिए झुण्डके झुण्ड नौकर रखते थे। जब सिकन्दरको इसका हाल मालूम हुआ, तब उसने नरमीके साथ उनकी भर्त्सना की और उन्हें कई तरहसे समझाया। उसने कहा "मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि यद्यपि आप लोग कई बार द्वन्द्व युद्धमें भाग ले चुके हैं, फिर भी अपने अनुभवसे आप अभीतक यह नहीं समझ सके कि जो लोग स्वयं परिश्रम करते हैं वे उन लोगोंकी अपेक्षा अधिक मीठी और गहरी नींदमें सोते हैं जो अपना

कुछ काम नौकरों इत्यादिके द्वारा कराते हैं। क्या फारसदेशीय लोगोंकी रहन-सहनके साथ अपनी रहन सहनका मिलान करनेसे यह बात अभी तक आपके ध्यानमें नहीं आयी कि विषयानुरागी और आरामतलब होना बिल्कुल हेय है तथा परिश्रम करना और कष्ट उठाना ही श्रेष्ठ जनोंके योग्य एवं श्लाघ्य है? क्या आप लोगोंको अभी तक यह शिक्षा लेना बाकी ही है कि हम लोगोंको जो विजय प्राप्त हो रही है, वह तभी पूर्ण कही जा सकेगी जब हम पराजित जातियोंकी कमजोरियों तथा दोषोंसे अपनेको बचा सकेंगे?" स्वयं अपने आचरण द्वारा इस कथनका समर्थन करनेके विचारसे अब उसने पहलेकी अपेक्षा अधिक जोरोंके साथ शिकार खेलने तथा वीरतापूर्ण कामोंमें भाग लेना शुरू किया। कठिनाइयोंका सामना करने तथा जोखिम उठानेमें अब वह विशेष तत्परता दिखलाने लगा। एक बार वह एक सिंहसे भिड़ गया और द्वन्द्वयुद्धमें उसे पछाड़ कर ही छोड़ा। यह देख कर एक लैसीडीमोनियन राजदूतने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा "आपने सिंहके साथ सफलतापूर्वक द्वन्द्वयुद्ध करके यह दिखला दिया है कि राजाओंके योग्य पराक्रम करनेकी सामर्थ्य सिंहकी अपेक्षा आपमें ही अधिक है।" सिकन्दर दो विचारोंसे इस तरहके जोखिम उठाने-मे प्रवृत्त होता था। एक तो वह स्वयं अपनेको कष्ट झेलनेका आदी बनाना चाहता था, दूसरे, वह इस तरह अन्य लोगोंको भी वीरतापूर्ण एवं सज्जनोचित कार्य करनेके लिए प्रोत्साहित करना चाहता था।

किन्तु उसके अनुयायी, जो अब धनसम्पन्न एवं अभिमानी हो गये थे, कोई काम न करते हुए केवल मौज उड़ानेमें लगे रहना चाहते थे। वे युद्धसम्बन्धी यात्राएँ करते करते ऊब गये थे और अन्तमें यहाँतक नाखुश हो गये कि सिकन्दरकी निन्दा एवं उसके कार्योंकी तीव्र आलोचना करने लगे। किन्तु आवश्यकता पड़ने पर सिकन्दर अपने मित्रोंके प्रति बराबर वैसा ही दयापूर्ण एवं स्नेहमय बर्ताव करता था। जब उसने प्यूसेस्टीजके बारेमें यह खबर सुनी कि एक रीछने उसे काट

खाया है, तब उसने उसे एक पत्र भेजा। उसमें उसने यह शिकायत की कि "यद्यपि तुमने इस दुर्घटनाकी खबर और सब मित्रोंको दी, पर न जाने क्यों मुझे कुछ भी नहीं लिखा। तुम्हारा यह व्यवहार मुझे पसन्द नहीं आया। किन्तु जो हुआ सो हुआ, अब यह लिखो कि तुम्हारी तबियत कैसी है। संकटके समय तुम्हारे किसी साथीने तुम्हें अकेला तो नहीं छोड़ दिया था? यदि ऐसा हो तो मुझे सूचित करो, मैं उन्हें दण्ड दूँगा।" एक बार जब प्यूसेस्टीज बीमार पडा तो उसके अच्छे होने पर सिकन्दरने उसके चिकित्सकके पास एक पत्र भेजा जिसमें उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया गया था। क्रैटेरसकी रुग्णावस्थाके समय उसने एक अशुभ स्वप्न देखा। सबेरे उठते ही उसने देवताओंको बलि चढायी और उनसे उसे नीरोग कर देनेकी प्रार्थना की। जब उसे यह मालूम हुआ कि क्रैटेरसका चिकित्सक शीघ्र ही उसे एक जहरीली दवाका सेवन कराना चाहता है, तब उसने उसे फौरन लिख भेजा कि इस दवाके पिलानेमें खूब सावधानीसे काम लिया जाय। वह अपने मित्रोंके यश-अपयशका इतना ख्याल रखता था कि जब एफिअल्टीज तथा साइसस नामक दूतोंने सर्वप्रथम यह खबर उसे सुनायी कि हरपेल्स उसका पक्ष छोड कर भाग गया है, तब उसने उन्हे तुरन्त कारागृहको भेज दिया, मानों उन्होंने उस-पर मिथ्या दोषारोपण किया हो। जब उसने बूढे और अशक्त सैनिकोंको घर लौट जानेकी आज्ञा दी, तब यूरीलोकस नामक एक व्यक्तिने झूठे ही रोगियोंकी सूचीमें अपना नाम लिखा दिया। इस बातका पता लगने पर कि वास्तवमें वह रोगी नहीं है, उसने स्वीकार किया कि मैं एक रमणीसे प्रेम करता हूँ और उसके साथ समुद्रतटकी ओर जाना चाहता था। सिकन्दरके पूछने पर कि वह स्त्री किसके अधिकारमें है उसने जवाब दिया कि वह गुलाम नहीं है वरन् एक स्वतंत्र वेश्या है। तब सिकन्दरने यूलो-कससे कहा "यदि उपहार भेजनेसे या और किसी तरह समझानेसे तुम्हारी प्रियतमा तुम्हे मिल सकती हो, तो मैं तुम्हारी सहायता अवश्य

करूँगा; किन्तु इनके सिवा अन्य उपायोंका अवलम्बन हम लोग नहीं ले सकते क्योंकि यह जन्मसे एक स्वतंत्र स्त्री है।"

अपने मित्रोंकी सहायताके लिए सिकन्दर कितनी छोटी छोटी बातोंको लेकर पत्र लिखा करता था, यह देख कर आश्चर्य होता है। जब सेल्यूकसका एक दास सिल्लीशिया भाग गया, तब उसकी खोज करानेके सम्बन्धमें उसने एक पत्र लिखा था। इसी तरह एक बार क्रैटेरसके एक नौकरको पकड़ भेजनेके कारण सिकन्दरने प्यूसेस्टीज़को भी एक चिट्ठी लिखी थी जिसमें उसे बहुत धन्यवाद दिया गया था। कहते हैं, शुरू शुरूमें जब सिकन्दर बड़े बड़े मामलोंपर विचार करनेके लिए न्यायासनपर बैठता था, तब वादीके बयानके समय वह अपने हाथसे एक कान बन्द कर लिया करता था। उसे वह निष्पक्ष भावसे प्रतिवादीका वक्तव्य सुननेके लिए सुरक्षित रखता था। किन्तु बादमें इतने अधिक मुकदमे उसके सामने आने लगे, जिनमेंसे बहुतसे सच भी निकलते थे, कि धीरे धीरे उसके हृदयका यह भाव दूर होता गया और वह झूठी बातोंका भी विश्वास करने लगा; विशेष कर जब कोई उसकी निन्दा करता तो जीवन अथवा राज्यकी अपेक्षा कीर्तिको अधिक महत्त्व देनेके कारण, वह क्रोधके मारे मानो अंधा हो जाता था। उस समय वह निष्ठुर एवं पाषाणहृदयसा प्रतीत होने लगता था।

जैसा कि हम कह चुके हैं, अब सिकन्दर दाराका पता लगानेके लिए चल पड़ा। वह समझता था कि शीघ्र ही दूसरी लड़ाई होगी, किन्तु इसी समय खबर मिली कि बेससने दाराको पकड़ लिया है। यह समाचार पाकर उसने थेसैलियन लोगोंको घर भेज दिया और मामूली वेतनके अतिरिक्त उन्हें दो हजार टेलैण्ट इनामके तौरपर दिये। दाराका पीछा करनेमें जो समय लग रहा था और जो कष्ट उठाने पड़ रहे थे—ग्यारह दिनमें ४१२ मील रास्ता उन्हें तै करना पड़ा था—उनके कारण, विशेषकर पानीकी तकलीफसे परेशान होकर उसके अधिकतर सैनिक इस कार्यमें

ढिलाई करने लगे थे। एक बार पानीकी तलाशमें फिरते हुए कुछ निपन सैनिकोंको एक नदीमें थोड़ा-सा पानी मिल गया। वे थैलियोंमें भर कर, खच्चर पर लादे हुए दोपहरके समय उस जगह जहाँ सिकन्दर था। उसे प्यासके मारे बेहाल देख कर उन लोगोंने टोपीमें पानी भर कर उसे अर्पित किया। उसने पूछा "तुम यह किसके लिए लाये हो?" उन लोगोंने उत्तर दिया "अपने बच्चोंके लिए किन्तु यदि इससे आपके प्राणोंकी रक्षा हो सके तो हमें अपने बच्चे जीवित न रहनेकी विशेष चिन्ता न होगी, क्योंकि उनकी मृत्युसे जो क्षति होगी उसकी पूर्ति हम सहज ही कर सकेंगे।" उनके आग्रहसे उसने टोपी हाथमें ले ली और अपने चारों तरफ एक नज़र डाली। जब उसने देखा कि पासमें खड़े हुए सभी सैनिक सिर उठा उठा कर सतृष्ण नेत्रोंसे बराबर उसी ओर देख रहे हैं, तब उसने पानीसे भरी हुई टोपी धन्यवादपूर्वक ज्योंकी त्यों लौटा दी, उसमेंसे एक बूँद भी जल नहीं पिया। जल लानेवालोंकी ओर नज़र फेर कर उसने कहा कि "यदि केवल मैं ही पानी पीता हूँ तो अन्य सब लोग निराश हो जायँगे।" उसका यह आत्मत्याग एवं हृदयकी ऐसी उदारता देख कर सब लोग एक स्वरसे चिल्ला उठे "आप निश्चिन्त होकर आगे बढ़िये, हम लोग बराबर आपका साथ देंगे। आप जैसे राजाके संरक्षणमें हम लोगोंको न थकावटकी परवाह हो सकती है और न प्यासकी। आपके साथ हम अपनेको अमर समझते हैं।" यह कह कर वे लोग अपने घोड़ोंको चाबुक मारने लगे और आगे बढ़नेके लिए उतावली प्रकट करने लगे। किन्तु सब लोगोंके समान रूपसे प्रसन्नमुख एवं समुत्सुक होते हुए भी केवल साठ अश्वारोही ही सिकन्दरके साथ शत्रुके शिविरतक पहुँच सके। चारों ओर बिखरे हुए सोने चाँदीके ढेरोंको कुचलते हुए वे उन रथोंकी ओर चले जो सारथियोंके अभावसे इधर उधर भटक रहे थे और जिनमें प्रायः स्त्रियाँ बैठी हुई थीं। कुछ लोगोंने यह ख्याल कर कि शायद इनमेंसे किसीपर दारा भी हो

कहूँगा; किन्तु सामनेके कुछ रथोंको रोकनेकी चेष्टा की । अन्तमें बहुत कठि-
सकने बर्षोंबाद उन्होंने उसे एक रथपर बहुत घायल एवं मरणासन्न अवस्था-
अपनो । उसने उनसे थोड़ा पानी माँगा । पोलीस्ट्रेटसने उसे ठंढा पानी
लेकर पत्र जिसे पी कर दाराने कहा "यह मेरे दुर्भाग्यकी पराकाष्टा है कि आज
का एक हमेरे साथ जो उपकार किया है उसका बदला चुकानेमें भी मैं असम-
उसने एहूँ । किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि तुमने मेरे साथ जो मानवोचित
पकड़ शेव किया है, उसके लिए सिकन्दर तुम्हें अवश्य धन्यवाद देगा । मुझे
जिसाशा है कि सिकन्दरने मेरी माता, मेरी पत्नी तथा बच्चोंके साथ जो
त्रि अनुग्रह किया है, उसका बदला देवता लोग उसे देंगे । तुम सिकन्दरसे
कह देना कि मैं उसके प्रति कृतज्ञता स्वीकार करते हुए अपना यह दाहिना
हाथ उसे समर्पित करता हूँ ।" इतना कहते कहते उसने पोलीस्ट्रेटसका
हाथ अपने हाथमें ले लिया और हमेशाके लिए नेत्र बन्द कर लिये । जब
सिकन्दर वहाँ पहुँचा तब उसने बहुत दुःख प्रकट किया और अपना चोगा
उतार कर उसके मृत शरीरपर फैला दिया । कुछ समयके बाद जब बेसस
पकड़ा गया तब उसकी आज्ञासे उसे यह दण्ड दिया गया । पहले तो
दो वृक्षोंकी मोटी मोटी शाखाओंको झुका कर एक साथ बाँध दिया, फिर
प्रत्येक शाखाके साथ बेससकी एक एक टाँग मजबूतीसे कस दी गयी ।
अब शाखाओंके बीचका बन्धन खोल दिया गया जिससे वे बड़े वेगके
साथ पुनः अपने स्थानपर आ गयीं । प्रत्येक शाखाके साथ बेससके शरीर-
का वह भाग भी खिंचता चला गया जो उसके साथ बँधा हुआ था ।
दाराका मृत शरीर यथोचित शाही ठाटबाटके साथ उसकी माताके पास
भेज दिया गया और दाराके भाईको सिकन्दरने अपने मित्रवर्गमें सम्मि-
लित कर लिया ।

अब चुने हुए वीरोंके साथ उसने हिर्केनियामें प्रवेश किया । यहाँ
उसने खुले हुए समुद्रका एक बड़ा भाग देखा । इसका पानी अन्य समुद्रों-
के पानीकी अपेक्षा अधिक मीठा था । यह प्रधान समुद्रकी उन चार

साडियोंमेंसे एक है जो महाद्वीपके भीतर प्रवेश करती है। कोई इसे कास्पियन और कोई हिरकैनियन समुद्र कहते हैं। यहाँके लोगोंने सिकन्दरके घोडे ब्यूसीफेलसके साथ आये हुए लोगोंको एकाएक देख कर कैद कर लिया। घोडेको पकड कर वे लोग अपने साथ ले गये। यह सुन कर सिकन्दरने दूत भेज कर उनसे कहलाया कि यदि तुम मेरा घोडा नहीं लौटा देते तो मैं तुम सबको कत्ल करवा दूँगा, स्त्रियों और बच्चों तकके साथ रियायत न करूँगा। किन्तु जब उन लोगोंने उसकी बात मान ली और अपने नगर भी उसके हाथ समर्पित कर दिये, तब उसने उनके साथ दयापूर्ण बर्ताव ही नहीं किया, वरन् घोडा छोड देनेके बदले उन लोगोंको जो उसे पकड ले गये थे कुछ रुपया भी दिया।

यहाँसे वह पार्थिया पहुँचा, जहाँ उसने पहले पहल "असभ्य" जातिके लोगोंकी वेशभूषा ग्रहण की। सभवत सिकन्दरका ख्याल था कि ऐसा करनेसे उन्हें सभ्य बनानेके कार्यमें सरलता होगी, क्योंकि मनुष्यों पर प्राय अन्य किसी बातका उतना प्रभाव नहीं पडता जितना उनकी वेशभूषा और चाल-ढालको अपनानेका पडता है। यह भी हो सकता है कि सिकन्दर अपनी शासनविधिमें या रहन-सहनमें क्रमश परिवर्तन कर और मकदूनियन लोगोंको उनका आदी बना कर यह देखना चाहता था कि वे लोग भी फारसवालोंकी तरह अपने राजाकी भक्ति कर सकते हैं या नहीं। उसने विदेशियोंकी पूरी पूरी नकल नहीं की। फारस तथा मकदूनिया, दोनोंका सम्मेलन करते हुए उसने ऐसी पोशाक ग्रहण की जो बहुत बनावटी या चमकीली न होती हुई भी रोबीली थी। पहले तो वह यह पोशाक सिर्फ तभी पहनता था जब बर्हांवालोंसे बातचीत करता या जब वह तम्बूके भीतर केवल अपने मित्रों इत्यादिके साथ रहता, किन्तु बादमें वह उसे पहन कर बाहर भी निकलने लगा और सार्वजनिक सभाओंमें भी जाने लगा। यह देख कर मकदूनियन लोगोंको बडा दु ख होता, किन्तु उनके हृदयमें उसके अन्य सद्गुणोंके लिए इतना सम्मान था कि वे किसी किसी

बातमें उसकी ऐश्वर्य-लिप्सा एवं रुचि-वैचित्र्यको संतृप्त करना बुरा नहीं समझते थे । यशःप्राप्तिकी उसकी इच्छा इतनी प्रबल थी कि वह उसके पीछे अपने जीवनको भी जोखिममें डालनेसे नहीं हिचकता था । कुछ ही दिन पहले एक तीर चुभ जानेके कारण उसके पैरमें घाव हो गया था । एक बार गर्दनके पीछे उसे पत्थरकी ऐसी चोट लगी थी कि जिसके कारण बहुत दिनोंतक उसके नेत्रोंकी ज्योति मंद पड़ गयी थी । इतना होते हुए भी वह अपने मार्गसे कभी पीछे नहीं हटा, यहाँ तक कि जब वह लगातार कई दिनोंतक अतिसारसे पीड़ित था, तब ऐसी अवस्थामें भी उसने ओरेक्सरटीज़ नदी पार की और सीथियन लोगोंको भागनेके लिए विवश कर मीलोंतक उनका पीछा किया ।

यह ख्याल कर कि मकदूनियन लोग लड़ाई लड़ते लड़ते मनमें तङ्ग आ गये होंगे, उसने उन्हें अपने अपने निवासस्थानपर छोड़ दिया था । हिरकैनियामें चुने हुए केवल बीस हजार पैदल तथा तीन हजार अश्वारोही ही उसके साथ थे । इन्हें लक्ष्य कर उसने कहा—"इन देशोंके लोगोंने हमारा यथार्थ परिचय अभी नहीं पाया है, अतः यदि इस समय तुम लोग एशियाको जीतनेके पहले ही, उसे केवल भयभीत करके ही लौट जाना चाहते हो तो ये लोग तुम्हें तुच्छ दृष्टिसे देखेंगे और स्त्रियोंकी तरह शक्तिहीन समझेंगे । किन्तु मैं तुममेंसे किसीको भी उसकी इच्छाके विरुद्ध अपने साथ नहीं रखना चाहता । तुममेंसे जो चाहे, घर जा सकता है। मैं तो केवल इतना ही कहूँगा कि जब मैं संसार भरमें मकदूनियन लोगोंका प्रभुत्व स्थापित करने जा रहा था, तब थोड़ेसे मित्रों और कुछ स्वयंसेवकोंके अतिरिक्त और किसीने मेरा साथ नहीं दिया ।" क़रीब क़रीब यही बात सिकन्दरने एण्टीपेटरको भेजे गये पत्रमें भी लिखी थी । उसमें इतनी बात उसने और जोड़ दी थी कि मेरे शब्दोंको सुन कर वे सब एक स्वरसे चिल्ला उठे कि आप चाहे जहाँ चलना चाहें हम बराबर आपका साथ देंगे । जब इन लोगोंने उसके साथ जाना स्वीकार कर लिया, तब जो लोग पीछे

रह गये थे उन्हें भी साथ चलनेके लिए तैयार करनेमें कोई कठिनाई नहीं हुई।

इधर सिकन्दर यहाँके निवासियोंकी चालढालके अनुकूल बराबर अपनी रहन-सहनमें परिवर्त्तन करता जा रहा था और उन लोगोंको भी मकदूनियन तरीकोंमें ढालनेकी चेष्टा कर रहा था। उसका ख्याल था कि युद्धसम्बन्धी यात्राओंके कारण जब मैं स्वदेशसे बहुत दूर पहुँच जाऊँगा, तब शान्ति बनाये रखनेके लिए बल-प्रयोगके बजाय लोगोंकी उस सद्भावनाका सहारा लेना अधिक अच्छा होगा जो परस्परके हेलमेल और सम्पर्कसे उत्पन्न होगी। इस मतलबसे उसने तीस हजार लड़कोंको चुन लिया और ग्रीक भाषा सिखाने तथा मकदूनियन प्रणालीसे शस्त्र-विद्याकी शिक्षा देनेके लिए अनेक शिक्षक नियुक्त कर दिये।

उसके मित्रोंमेंसे हेफीस्टियन उसके सब कार्योंका समर्थन करता था और सिकन्दरकी देखादेखी वह भी अपनी रहन-सहनमें आवश्यक परिवर्तन करनेके लिए तत्पर रहता था, किन्तु क्रैटेरस अपने देशकी ही चालढालका अनुसरण करना अधिक पसन्द करता था। यह देखकर जिन मामलोंका सम्बन्ध फारसवालोंसे होता था उनमें सिकन्दर हेफीस्टियनसे काम लेता था, और जिनका सम्बन्ध ग्रीक या मकदूनियन लोगोंसे होता था, उनमें वह क्रैटेरससे सहायता लेता था। सामान्यतः वह हेफीस्टियनसे अधिक स्नेह करता था, किन्तु उसकी अपेक्षा क्रैटेरसका अधिक आदर करता था। इस तरह ये दोनों मित्र छिपे छिपे एक दूसरेसे द्वेष रखने लगे। भारत पहुँचने पर एक बार ये लोग आपसमें भिड़ गये और इनके मित्र भी इनकी सहायता करनेकी चेष्टा करने लगे। इसी समय सिकन्दरने आकर इन लोगोंको टोका और सबके सामने ही हेफीस्टियनको डाँट कर कहा "तुम बड़े मूर्ख हो। तुम इतना भी नहीं समझ सकते कि मेरे अनुग्रहके बिना तुम बिलकुल शक्तिहीन हो।" अलग ले जाकर क्रैटेरसको भी उसने खूब भर्त्सना की। फिर दोनोंको अपने सामने बुला कर परस्पर

मेल करा दिया और स्वयं एमनान तथा अन्य देवताओंकी शपथ खाकर कहा कि मैं तुम दोनोंको अन्य सब मनुष्योंसे ज्यादा चाहता हूँ, किन्तु यदि फिर कभी मैंने तुम लोगोंको परस्पर लड़नेके लिए उद्यत देखा, तो मैं तुम दोनोंको, या कमसे कम प्रथम आक्रमण करनेवालेको, अवश्य ही प्राण-दण्ड दूँगा। इस घटनाके बाद दोमेंसे एकने भी दूसरेको कभी अप्रसन्न करनेकी चेष्टा नहीं की।

मक्दूनियन लोगोंमें पारमेनियोके पुत्र फिलोटसका बड़ा नाम था। एक तो वह बड़ा वीर था और धैर्यपूर्वक युद्धकी तकलीफें सह लेता था, दूसरे वह सिकन्दरके बाद सबसे अधिक दानशील एवं मित्रोंपर स्नेह करनेवाला था। किन्तु उसे अपने धनका बड़ा घमण्ड था और वह प्रायः जान बूझ कर लोगोंको अपनी दानशीलता दिखलाना चाहता था। इसी-से बहुत लोग उससे चिढ़ते थे। कई बार सिकन्दरसे भी जाकर लोगोंने उसकी शिकायत की। जब सिलीशियामें दाराकी हार हुई और दमिश्कमें बहुतसी चीजें लूटमें प्राप्त हुईं, तब शिविरमें लाये गये कैदियोंमें एण्टीगोन नामकी एक सुन्दर युवती भी थी जो फिलोटसके हिस्सेमें पड़ी। एक बार मदिरापानके समय सैनिकोंकी तरह डींग मारते हुए उसने उक्त युवतीसे कहा "जितने बड़े बड़े काम किये गये हैं, सब मैंने या मेरे पिताने ही किये हैं, किन्तु उनका यश तथा राजा कहलानेका गौरव सिकन्दरको मिल रहा है।" युवतीके पेटमें यह बात न पची। उसने अपने एक मित्रसे इसकी चर्चा कर दी। इसने इसे एक और आदमी-पर प्रकट कर दिया। जब क्रैटेरसको यह बात मालूम हुई तब वह चुपकेसे उक्त स्त्रीको लेकर राजाके पास गया। युवतीके मुँहसे सब कुछ सुन कर सिकन्दरने उसे आज्ञा दी कि तुम इसी तरहकी बातें फिलोटससे किया करो और जो कुछ वह कहे उसकी सूचना समय समयपर मुझे दे दिया करो। फिलोटसको इसका कुछ पता तो था ही नहीं, अतः वह कभी गुस्सेमें आकर और कभी बड़ाई पानेकी इच्छासे एण्टीगोनके सामने

अनेक मूर्खतापूर्ण एवं अनुचित बातें बका करता। सिकन्दरको यथा-समय इनकी सूचना मिलती गयी, पर इस समय उसने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। इसका कारण यह हो सकता है कि वह फिलोटसके पिता पारमेनियोको बहुत चाहता था और उसकी राजभक्तिमें भी उसे विश्वास था, अथवा सम्भव है कि सेनापर इन पिता-पुत्रका जो दबदबा था, उसका ख्याल कर सिकन्दर चुप रह गया हो। किन्तु इसी समय एक घटना और हो गयी। लिमनस नामक एक मकदूनियनने सिकन्दरकी हत्या करनेका षड्यन्त्र रचा और उसने एक व्यक्तिको जिसे वह बहुत चाहता था, इस कार्यमें भाग लेनेके लिए आमंत्रित किया। इस व्यक्तिको यह बात अच्छी नहीं लगी और इसने इसकी चर्चा अपने भाईसे कर दी। फिर दोनों भाई मिल कर फिलोटसके पास गये और सिकन्दरसे भेंट करा देनेके लिए उससे प्रार्थना की, किन्तु न जाने क्यों फिलोटस उन्हें लेकर राजाके सामने नहीं गया। उसने बहाना बनाया कि राजा इस समय एक बहुत ज़रूरी काममें लगे हुए हैं। उन लोगोंने उससे दुबारा कहा, किन्तु उसने उन्हें फिर टाल दिया। तब एक और आदमीकी सहायतासे वे सिकन्दरके सामने उपस्थित हुए और उससे लिमनसके कुचक्रकी बात कह दी। साथ ही उन्होंने फिलोटसके टालमटोल करनेकी चर्चा भी उससे कर दी। सिकन्दरको यह हाल सुन कर बड़ा क्रोध आया। उसने तुरन्त लिमनसको पकड़ लानेके लिए एक सैनिक भेजा। लिमनसने उसपर आक्रमण किया और अन्तमें उसके हाथ मारा गया। यह सुन कर सिकन्दरको और भी अधिक खेद हुआ क्योंकि अब षड्यन्त्रका पता लगानेके लिए कोई साधन नहीं रह गया। अब सिकन्दरके मनमें फिलोटसके प्रति भी अप्रसन्नताके चिह्न नज़र आने लगे। मौक़ा देख कर फिलोटसके पुराने दुश्मन सामने आये और उन्होंने राजाको समझाना शुरू किया कि लिमनसके समान तुच्छ व्यक्तिकी इतने बड़े काममें हाथ डालनेकी हिम्मत नहीं पड़ सकती थी। वह अवश्य किसी अन्य व्यक्तिकी प्रेरणासे ऐसा

करने जा रहा था। इस सम्बन्धमें उन लोगोंकी परीक्षा गुप्त रूपसे ही जानी चाहिये जिन्होंने इसे छिपानेकी इतनी कोशिश की थी। जब राजाने उनकी बातोंकी ओर कुछ कुछ ध्यान देना शुरू किया, तब उन्होंने फिलोटसके विरुद्ध शंका उत्पन्न करानेवाले सैकड़ों कारण पेश किये। अन्तमें उनकी बातोंमें आकर राजाने फिलोटसको पकड़वा मँगाया। अब सारी बातें कबुलवानेकी गरजसे प्रधान अफसरोंके सामने उसे खूब यंत्रणा दी गयी। एक परदेके पीछे बैठ कर सिकन्दर भी सब बातें सुनने लगा। फिलोटसने बड़े दीनतापूर्ण स्वरमें और बड़ी कातरताके साथ हेफीस्टियनके सामने हाथ पाँव जोड़ना शुरू किया। यह देख कर सिकन्दर स्वयं बाहर निकल आया और फिलोटसको डाँट कर कहने लगा "फिलोटस, क्या तुम इतने अधम स्वभाववाले और कापुरुष हो? इतने भीषण काममें शरीक होनेकी तुम्हारी हिम्मत कैसे पड़ी?" निदान उसे प्राणदण्ड दिया गया। थोड़े ही समयके बाद उसका पिता पारमेनियो मीडिया नामक स्थानको भेज दिया गया और वहाँ उसे प्राणदण्डकी आज्ञा हुई। इसने फिलिपके राज्यकालमें बड़ा काम किया था। सिकन्दरके प्रौढ़वयस्क मित्रोंमें अकेले इसीने उसे एशियापर आक्रमण करनेके लिए प्रोत्साहित किया था। उसके तीन लड़कोंमेंसे जो सेनामें नियुक्त थे, दो तो पहले ही युद्धमें मारे जा चुके थे और अब वह स्वयं भी अपने तीसरे पुत्र सहित मृत्युदण्डका भाजन बना।

इसके कुछ ही दिनोंके बाद क्लाइटसकी खेदजनक मृत्युकी घटना हुई, जो सुननेमें तो फिलोटसकी मृत्युकी अपेक्षा अधिक अमानुषिक प्रतीत होगी, किन्तु यदि हम उस समयकी परिस्थितिको ध्यानमें रखें और कारण की ठीक ठीक समीक्षा करें तो यह स्पष्ट हो जायगा कि राजाके एक तरहके दुर्भाग्यसे ही उक्त घटना घटित हुई। उसके क्रोध और मदिरापानकी प्रवृत्तिके कारण ही क्लाइटसका दिमाग़ चढ़ गया था। बात यह हुई कि समुद्र-तटसे किसीने ग्रीसदेशीय फलोंकी एक पिटारी राजाके पास भेंटस्वरूप

भेजी। फल इतने सुन्दर और ताजे थे कि इन्हें देखकर सिकन्दरको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने चाहा कि क्लाइटस भी आकर इन्हें देखे और इनमेंसे कुछ वह भी ग्रहण करे। इसी उद्देश्यसे उसने उसे बुलवाया। क्लाइटस उस समय देवताको बलि चढ़ाने जा रहा था, यह संवाद पाते ही वह सब कुछ छोड़ कर तुरन्त चला आया। उसके पीछे पीछे वे तीन भेड़ें भी वहाँ जा पहुँचीं जिनपर बलिवेदीपर चढ़ाये जानेके पूर्व देवार्पित मदिराका कुछ अंश छिड़का जा चुका था। सिकन्दरको जब यह बात मालूम हुई तो उसने ज्योतिषियोंसे सलाह ली। उन्होंने इसे अपशकुन बतलाया। यह सुन कर उसने उन्हें क्लाइटसके अनिष्टनिवारणार्थ देवताओंको बलि चढ़ानेका आदेश दिया। सिकन्दरके चिन्तित होनेका एक कारण यह भी था कि उसने स्वयं तीन दिन पहले क्लाइटसके सम्बन्धमें एक बुरा स्वप्न देखा था। किन्तु क्लाइटस देवाराधनाके लिए नहीं रुका और सीधे राजाके साथ भोजन करनेके लिए चला आया। भोजन करनेके उपरान्त जब इन लोगोंने खूब मदिरापान कर लिया, तब वहाँ एकत्र हुए कुछ मनुष्योंने किसी कविकी रची हुई दो चार कविताओंका गाना शुरू किया। इनमें उन सेनानायकोंकी हँसी उड़ायी गयी थी जो हालमें 'असभ्य' लोगोंके साथ युद्ध करते समय पराजित हुए थे। वहाँ जो वयोवृद्ध लोग उपस्थित थे उन्हें ये कविताएँ अच्छी नहीं लगीं। उन्होंने गानेवालोंके साथ साथ कविता बनानेवाले-की भी भर्त्सना की। किन्तु सिकन्दर तथा उसके आसपासके नवयुवकों-को इनमें बड़ा आनन्द आया और वे लोग गानेवालोंको बढ़ावा देने लगे। निदान यह देख कर क्लाइटस, जिसने इस समयतक बहुत ज्यादा शराब पी ली थी और जो कुछ चिड़चिड़े स्वभावका था, अपनेको न सँभाल सका। वह चिल्ला उठा "असभ्य जातिके लोगों और शत्रुओंके बीचमें मकदूनियों-की इस प्रकार भद्द उड़ाना उचित नहीं है। यद्यपि दुर्भाग्यवश वे हार गये थे, फिर भी वे उन लोगोंसे ज्यादा काबिल आदमी हैं जो इस समय उनकी खिल्ली उड़ा रहे हैं।" इसपर सिकन्दरने कहा "मालूम होता

है तुम अपनी पैरवी आप कर रहे हो और अपनी कायरताको दुर्भाग्य कह कर छिपाना चाहते हो ।" क्लाइटसने बिगड़ कर कहा "जिसे आप मेरी कायरता कहते हैं, उसीने एक बार स्पिथ्रीडेटीजकी तलवारसे भागते समय एक देवपुत्रकी (आपकी) रक्षा की थी। मकदूनियन लोगोंने आपके लिए जो रुधिर बहाया है और जो जोखिम उठाये हैं, उन्हींके कारण आज आप इतने उच्च पदपर आसीन हैं कि फिलिपको अपना पिता अस्वीकार कर अपनेको एमन देवताका पुत्र कहनेकी हिम्मत करते हैं ।" सिकन्दरने क्रोधित होकर कहा "रे नराधम, क्या तू इसी तरह सर्वत्र मेरी बदनामी फैला रहा है और मकदूनियन लोगोंको राजविद्रोह करनेके लिए उत्तेजित कर रहा है? क्या तू समझता है कि तुझे इसकी सजा न मिलेगी?" क्लाइटसने उत्तर दिया " क्या यह काफी सजा नहीं है कि हमारे परिश्रमका यह बदला दिया जा रहा है? वे लोग सचमुच बड़े भाग्यशाली थे जो आज यह देखनेको जीवित नहीं हैं कि उनके देशवासियों-की कैसी दुर्दशा हो रही है, यहाँ तक कि उन्हें अपने राजातकसे भेंट करनेके लिए फ़ारसवालोंसे प्रार्थना करनी पड़ती है ।" इसी प्रकार क्लाइटसके मनमें जो कुछ आया बकता गया और सिकन्दरके पास बैठे हुए लोगोंने भी वैसा ही सख्त जवाब देनेमें कोर कसर नहीं की। प्रौढवयस्क और समझदार लोगोंने दोनों पक्षोंमें शान्ति स्थापित करनेका प्रयत्न किया, किन्तु व्यर्थ हुआ। इसी समय सिकन्दरने पासमें बैठे हुए दो फारस-देशीय सरदारोंसे पूछा "क्या आपकी रायमें यह सच नहीं है कि मकदू नियनोंकी तुलनामें ग्रीक लोगोंने वन्य पशुओंसे भिड़नेवाले असाधारण शक्तिसम्पन्न महावीरोंकी तरह व्यवहार किया है?" किन्तु इतना होते हुए भी क्लाइटस शान्त नहीं हुआ। उसने सिकन्दरसे कहा "आपको और कुछ कहना हो तो कहिये, अन्यथा आपने उन लोगोंको अपने साथ भोजन करनेके लिए क्यों बुलाया जो स्वतंत्रजन्मा हैं और जो अपने मनके विचार निर्भीकतापूर्वक प्रकट कर देनेके आदी हैं? बेहतर होता कि आप

असभ्य जातिके लोगों और गुलामोंके साथ ही रहते क्योंकि वे लोग आपकी यह सफेद रँगकी ईरानी ढंगकी पोशाक देख कर आपके सामने घुटने टेकनेमें कभी संकोच न करेंगे।" इन शब्दोंको सुन कर सिकन्दर उत्तेजित हो उठा। क्रोधके आवेशमें आकर उसने मेज़परसे एक सेव उठा कर क्लाइटसको खींच कर मारा और फिर अपनी तलवारके लिए इधर उधर देखने लगा, जिसे उसके एक शरीर-रक्षकने उठा कर अलग रख दिया था। कई लोगोंने आकर उससे शान्त होनेकी प्रार्थना की, किन्तु सब व्यर्थ हुआ। उनकी ओर ध्यान न देकर उसने जोरसे मकदूनियन भाषामें अपने रक्षकोंको पुकारा, जिससे उसकी भारी मानसिक उत्तेजना सूचित होती है। उसने एक सैनिकको रणभेरी बजानेकी सूचना दी और उसे तुरन्त इस आज्ञाका पालन करते न देख झपट कर एक घूँसा मारा, यद्यपि थोड़े ही समयके बाद उसने इस आज्ञाभंगके कारण उक्त सैनिककी बड़ी प्रशंसा की, क्योंकि यदि उसने ऐसा न किया होता तो सारी सेनामें यकायक गड़बड़ी मच जाती। क्लाइटस अब भी बक रहा था। बड़ी कठिनाईसे उसके मित्रोंने उसे जबरन कमरेके बाहर खींच लिया, किन्तु वह फिर तुरन्त दूसरे दरवाजेसे 'वहाँ' पहुँच' गया और तिरस्कारपूर्वक कविताकी दो-एक पंक्तियाँ पढ़ने लगा। अब सिकन्दरसे न रहा गया। उसने लपक कर एक सैनिकके हाथसे उसकी बरछी छीन ली और उसे सामने बढ़ते हुए क्लाइटसके शरीरमें घुसेड़ दिया। वह चीख मार कर तुरन्त गिर पड़ा। अब राजाका क्रोध भी ठंडा हो गया और उसके होश ठिकाने आ गये। जब उसने अपनेको चारों ओर मित्रोंसे घिरा हुआ देखा जो बिलकुल शान्त थे, तब उसने क्लाइटसके मृत शरीरसे बरछी खींच ली। वह उसे अपने गलेमें चुभोनेके लिए उद्यत हुआ कि इसी समय शरीर-रक्षकोंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे ज़बरन उसके निजी कमरेमें ले गये। सारी रात और दूसरे दिन सिकन्दर खूब रोता रहा। अन्तमें रोने चिल्लानेसे बिलकुल लस्त होकर वह

दिए कुछ मौन एवं निश्चेष्ट होकर पड़ रहा। केवल बीच बीचमें एकाध बार गहरी साँस ले लेता था। उसे इस प्रकार एकदम मौन देख कर अनिच्छा आर्शकासे कुछ मित्रोंने कमरेमें प्रवेश किया और उससे बातचीत करनेकी चेष्टा की किन्तु सिकन्दरने उनके कथनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। तब एरिस्टैण्डरने उसे उस स्वप्नका स्मरण दिलाते हुए, जो उसने देखा था, कहा कि यह तो एक दैवी घटना है जिसका घटित होना अनिवार्य था। इससे सिकन्दरका रंज कुछ कुछ कम हुआ। इसके बाद अनक्सरकस नामक एक तत्ववेत्ता बुलाया गया। उसने आते ही चिल्ला कर कहा "क्या जिसकी ओर सारे ससारकी आँखें लगी हुई हैं, वही यह सिकन्दर है जो जनापवादके भयसे इस प्रकार गुलामोंकी तरह बेवसीसे साथ रो रहा है? क्या वह स्वय कानून और न्यायकी परमावधि नहीं है? अपनी विजयोंके कारण वह अनेक देशोंका अनन्याधिपति बन गया है, अत वह जो कुछ करे वही उचित एव न्याय्य है। वह सामान्य लोगोंकी स्तुति अथवा निन्दासे परे है। कौन नहीं जानता कि बृहस्पति (जूपीटर) देवताके सम्बन्धमें यह जो कल्पना की गयी है कि उसके एक हाथमें न्यायका और दूसरेमें कानूनका सूत्र है, उसका मतलब यही है कि विजेताके सभी कार्य विधि विहित एव न्याय्य हैं?" इसी तरहकी बातें बना बनाकर अनक्सरक्सने सिकन्दरकी मानसिक वेदना कम कर दी, किन्तु साथ ही इन बातोंका यह प्रभाव भी उसपर पड़ा कि पहलेकी अपेक्षा अब वह अधिक साहसी एव निरंकुश बन गया।

अब सिकन्दरने भारतकी ओर यात्रा करनेका निश्चय किया। उसने देखा कि सैनिकोंके पास लूटका इतना सामान बढ़ गया है कि जिसके कारण यात्रा करतेमें उन्हें बड़ी असुविधा होती है। इसलिए सबेरा होते ही जब सारा सामान गाड़ियोंपर लाद दिया गया तब सबसे पहले उसने अपनी तथा अपने मित्रोंकी ही चीजोंमें आग लगा दी। फिर सेनाके अन्य लोगोंका सामान भी जला देनेकी आज्ञा उसने दे दी। विचार करते

समय यह कार्य जितना कठिन प्रतीत हुआ था वास्तवमें उतना कठिन प्रमाणित नहीं हुआ। बहुसंख्यक सैनिकोंने स्वयं आवेशमें आकर थोड़ी-सी अत्यावश्यक वस्तुओंको छोड़ कर शेष समस्त सामग्री अग्निपुंजमें होम दी। यह देख कर अपने कार्यक्रमको पूरा करनेके लिए सिकन्दरका उत्साह और भी बढ़ गया। अब वह अपराधियोंको दण्ड देनेमें भी ज़्यादा सख्ती करने लगा। उसने मिनान्दरको, जो यद्यपि उसका मित्र था, इसलिए प्राण-दण्डकी आज्ञा दी कि उसने एक दुर्गका परित्याग कर दिया था जो उसके सुपुर्द किया गया था। उसने ऑरसोडेटीज़ नामक एक असभ्य जातीय शासकको विद्रोह करनेके कारण स्वयं अपने हाथसे गोली मार दी।

जब ये लोग आमू दरिया (आक्सस नदी) के किनारे पहुँचे, तब सिकन्दरके सामानकी देखरेख करनेवाले कर्मचारीको तम्बू खड़ा करनेके लिए ज़मीन खोदते समय तैल जैसे सचिक्कण द्रव पदार्थका एक सोता नज़र आया। जब ऊपरकी ज़मीनका भाग हटा दिया गया, तब नीचे शुद्ध स्वच्छ तैलकी धारा बहती हुई देख पड़ी जिसमें खूब चिकनाहट और चमक थी। संभव है, आमू दरियासे इसका सम्बन्ध रहा हो, क्योंकि अन्य सब जलोंकी अपेक्षा उसका जल छूनेमें अधिक चिकना मालूम होता है और जो लोग उसमें स्नान करते हैं उनके शरीरपर एक तरहकी आब या चमक चढ़ जाती है। जो हो, सिकन्दर उसे देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। ज्योतिषियोंने कहा कि इससे यही सूचना मिलती है कि इस युद्धयात्रामें आपको यश तो अवश्य मिलेगा किन्तु साथ ही आपको इसमें परिश्रम ज्यादा पड़ेगा, अनेक कठिनाइयोंका सामना करना होगा, क्योंकि परिश्रम करनेसे उत्पन्न थकावटको दूर करनेके लिए ही ईश्वरने मनुष्यको तैल प्रदान किया है।

ज्योतिषियोंका यह अनुमान ठीक निकला, क्योंकि इसके बाद उसने जो लड़ाइयाँ लड़ीं उनमें उसे अनेक जोखिमें उठानी पड़ीं और उसका शरीर भी क्षत-विक्षत हो गया। किन्तु उसकी सेनाकी सबसे बड़ी

हानिका कारण जलवायुकी प्रतिकूलता तथा आवश्यक भोजनसामग्री इत्यादिकी कमी थी। यह दृढ़ताके साथ विघ्नबाधाओं एवं दैवकी प्रतिकूलतापर विजय पानेके प्रयत्नमें जुट गया। उसका ख्याल था कि साहसी मनुष्यके लिए किसी भी कठिनाईपर विजय पाना असंभव नहीं है और कायरोंके लिए कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं है। जब एक स्थानपर उसने सिसिमिथ्रीजको जा घेरा, जिसने एक अगम एवं अजेय किलाके पीछे आश्रय लिया था, तब अपने सैनिकोंको निराश होते देख कर उसने एक मनुष्यसे पूछा कि सिसिमिथ्रीज बड़ा साहसी आदमी है क्या? यह सुन कर कि वह तो महा डरपोक है, उसने कहा "तब तो विजय निश्चित है" और वास्तवमें हुआ भी ऐसा ही। एक बार नीसा नामक स्थानको घेरनेके लिए जाते समय रास्तेमें पड़नेवाली एक गहरी नदीका ख्याल कर उसके सैनिक कुछ ढिलाई करने लगे। यह देख कर वह उन लोगोंसे आगे बढ़ गया और नदीके ऊपर खड़ा होकर कहने लगा "मैं कितना अभागा हूँ कि मुझे तैरना भी नहीं आता।" फिर हाथमें अपनी ढाल लेकर वह साहसपूर्वक नदीमें घुस पड़ा। बड़ी कठिनाईसे लोगोंने उसे समझा बुझा कर इस कार्यसे विरत किया। तक्षिलाके राजाका भारतीय राज्य विस्तारमें मिस्र देशके बराबर था। यह अनेक हरित क्षेत्रों एवं फल-फूलोंसे युक्त था। राजा स्वयं बड़ा बुद्धिमान् समझा जाता था। सिकन्दरसे भेंट होने पर उसने कहा "यदि आपका उद्देश्य हम लोगोंको भोजन और जलसे वंचित रखनेका नहीं है—प्राय इन्हींके कारण बुद्धिमान् लोगोंको युद्ध करनेके लिए विवश होना पड़ता है—तो हम लोगोंको परस्पर युद्ध करनेसे क्या लाभ? यदि आप सोना चाँदी इत्यादि अन्य वस्तुओंके विषयमें कहते हों, और यदि आपकी अपेक्षा मेरे पास ये अधिक मात्रामें हों तो इनका कुछ भाग मैं आपको भी देनेको तैयार हूँ, किन्तु यदि आपके ही पास इनकी प्रचुरता हो तो मुझे आपसे कुछ चीजें लेनेमें कोई एतराज नहीं।" यह सुन कर सिकन्दर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने

उसका आलिंगन करते हुए कहा "क्या आप यह समझते हैं कि आपके ये मीठे शब्द सुन कर और यह शिष्ट व्यवहार देख कर मैं चुपचाप बैठा रहूँगा? क्या इन बातोंमें मैं आपके साथ प्रतिद्वन्द्विता नहीं करूँगा? आप कितना ही सौजन्यपूर्ण बर्त्ताव करनेका प्रयत्न करें, किन्तु निश्चय जानिये कि इस सम्बन्धमें आप मुझे परास्त न कर सकेंगे।" इसके बाद तक्षिलाके राजा द्वारा दी गयी भेंट उसने स्वीकार कर ली और बदलेमें अधिक बहुमूल्य वस्तुएँ उसके पास भेजवा दीं। उसने एक हजार टैलेण्ट नक़द भी उसे भेजे। यह जान कर उसके पुराने मित्र उससे बहुत अप्रसन्न हो गये, किन्तु इस व्यवहारके कारण अनेक तक्षिला-निवासियोंके हृदय उसके अनुकूल हो गये। इसी समय अनेक नगरोंकी रक्षाके लिए चुने हुए भारतीय सैनिकोंकी नियुक्ति की गयी। इन लोगोंने अपने कार्यमें इतनी तत्परता प्रदर्शित की कि सिकन्दरके नाकों दम आ गया। इसीसे जब एक नगरके साथ उसने सम्मानपूर्ण सुलह कर ली, तब थोड़े समयके लिए नियुक्त किये गये उन भारतीय सैनिकोंको उसने पकड़ लिया, जो युद्ध समाप्त होनेके बाद अपने अपने घर वापस जा रहे थे और उन्हें तलवारसे क़त्ल करा दिया। सिकन्दरका यह एक कार्य उसकी युद्धनीतिको कलंकित करता है, यद्यपि सामान्यतः वह न्याय एवं राजोचित प्रतिष्ठाके विरुद्ध कोई बात नहीं करता था। भारतके उन दार्शनिकोंसे भी वह चिढ़ गया जिन्होंने उसका साथ देनेवाले राजाओंकी निन्दा की थी और स्वतंत्र राज्योंसे उसका विरोध करनेका अनुरोध किया था। इनमेंसे कईको उसने पकड़वा मँगाया और फाँसीपर चढ़ा दिया।

सिकन्दरने स्वयं अपने पत्रोंमें पुरु राजाके साथ किये गये युद्धका वर्णन किया है। वह लिखता है कि दोनों सेनाएँ झेलम (हाइडेसपीज़) नदीके दोनों किनारोंपर पड़ी हुई थीं। सामनेके किनारेपर पुरुने युद्ध-क्रमसे अपने हाथी खड़े कर रखे थे। उनके मुँह हम लोगोंकी तरफ थे और वे नदी पार करनेके स्थानकी चौकसी कर रहे थे। मैंने शत्रुको भुलावा

देनेके इरादेसे अपने शिविरमें रात दिन शोरगुल करते रहनेकी आज्ञा दे रखी थी। एक अँधेरी रातको जब खूब वर्षा हो रही थी, तब जहाँ शत्रुकी सेना पड़ी हुई थी वहाँसे कुछ आगे बढ़ कर मैंने नदी पार करनेकी चेष्टा की और चुने हुए सवारों एवं थोड़ेसे पैदल सैनिकोंके साथ नदीके बीचमें स्थित एक छोटेसे टापूमें जा पहुँचा। यहाँ जोरोंकी आँधी और बिजलीके साथ घोर वृष्टि होने लगी। अपने कई आदमियोंपर बिजली गिरते देख कर भी मैं नहीं रुका। टापू छोड़ कर हम लोग किनारेकी ओर बढ़े। वर्षा अधिक होनेके कारण नदी खूब बढ़ गयी थी और धारा इतनी प्रखर हो गयी थी कि उसके कारण किनारेकी बहुत सी भूमि कट गयी थी। निदान बड़ी कठिनाईसे हम लोग किनारे लगे। वहाँकी जमीनपर पैर फिसलता था और वह इतनी कमजोर हो गयी थी कि उस पर जरा देर खड़ा होना भी खतरनाक था। इसी संकटमें पड़ कर मेरे मुँहसे ये शब्द निकल पड़े "हे अथेनियन लोगो, क्या तुम विश्वास करोगे कि तुम्हारी प्रशंसाका पात्र बननेके लिए मैं कैसे कैसे कष्ट सह रहा हूँ?" किनारेके पास हम लोगोंने नौकाएँ छोड़ दीं और अस्त्र शस्त्रसे सुसज्जित होते हुए भी छाती तक पानीमें चलते हुए ऊपर पहुँचे। पैदल सेनाको पीछे छोड़कर मैं सवारोंके साथ कोई बीस फर्लांग आगे बढ़ गया। मैंने सोचा कि यदि शत्रुने हमपर अश्वारोही सेनाके साथ आक्रमण किया तो हम उससे भली भाँति टक्कर ले सकेंगे और यदि उसने पैदल सैनिकोंको लेकर हमला किया तो थोड़ी देरके बाद मेरी पदाति सेना भी सहायतार्थ पहुँच जायगी। मेरा यह विचार ठीक निकला। शत्रुके एक हजार सवारों तथा साठ रथियोंने आगे बढ़ कर हम लोगोंपर आक्रमण किया। हमने शीघ्र ही उनके रथ छीन लिये और कोई चार सौ सवारोंको वहीं ढेर कर दिया। अब यह अनुमान कर कि मैं (सिकन्दर) भी नदी पार कर चुका हूँ, पुरु अपने थोड़ेसे सैनिकोंको इस उद्देश्यसे वहाँ छोड़ कर कि यदि बचे हुए मकदूनियन लोग नदी पार करना चाहें तो वे उन्हें रोकें, शेष सारी सेनाके साथ हमारी ओर

चल पड़ा। मैंने शत्रुकी विशाल सेनाका ख्याल कर एवं उसके हाथियोंसे मुठभेड़ बचानेके उद्देश्यसे अपनी सेनाको दो भागोंमें विभक्त कर दिया। एक भागका अधिपति मैं स्वयं बना और दूसरेका सेनापति कोनस हुआ। मैंने शत्रुके बायें पक्षपर और कोनसने दाहने पक्षपर आक्रमण किया। हम लोग दोनों पक्षोंके सैनिकोंको तितर-बितर कर देनेमें समर्थ हुए। अब ये लोग भाग कर मध्यभागमें पहुँचे जिससे हाथियोंके सामने काफी भीड़ हो गयी। वहाँ एकत्र होकर वे हमारे सैनिकोंके साथ गुत्थमगुत्था होकर लड़ने लगे। उन्हें पूर्णतया पराजित करनेमें हमें दिनके आठ घण्टे लग गये।

प्रायः सभी इतिहासकारोंने यह बात लिखी है कि राजा पुरु पूरे साढ़े चार हाथ लम्बा था और जब वह अपने हाथीपर बैठता था, जो स्वयं सबसे बड़ा हाथी था तब अपनी लम्बाई और मोटाईके कारण वह उसपर ऐसी ही शोभा पाता था जैसी कोई वीर योद्धा अपने घोड़ेपर चढ़नेसे पाता है। इस हाथीने सारी लड़ाईमें अपनी बुद्धिमत्ता एवं राजाकी रक्षामें बराबर सतर्क रहनेके अनेक विलक्षण प्रमाण दिये। राजामें जब तक कुछ भी शक्ति रही और वह युद्ध करने योग्य रहा, तब तक हाथी बड़े साहसके साथ आक्रमणकारियोंसे उसकी रक्षा करता रहा। जब उसे यह मालूम हुआ कि अनेक जख्मोंके कारण तथा शत्रुकी ओरसे छोड़े गये तीरों इत्यादिके कारण राजा बिलकुल लस्त होगया है, तब उसे भूपतित होनेसे बचानेके लिए वह धीरेसे घुटने मोड़ कर बैठ गया और अपनी सूँड़से उसके शरीरमें छिदे हुए तीरों इत्यादिको बाहर निकालने लगा। जब पुरु गिरफ्तार होगया तब सिकन्दरने उससे पूछा "तुम्हारे साथ कैसा वर्ताव किया जाय?" पुरुने उत्तर दिया "जो राजाओंके उपयुक्त हो।" सिकन्दरने यह सुन कर उसका राज्य उसे लौटा दिया और उसे अपने अधीन प्रान्ताधिकारीकी हैसियतसे शासन करनेकी अनुमति दे दी। उसने अपनी ओरसे और भी कुछ देश उसके राज्यमें मिला दिया। एक

और राज्यका जो इससे तिगुना था, शासन-भार उसने अपने मित्र फिलि के सिपुर्द कर दिया।

इस युद्धके थोड़े ही दिनोंके बाद उसका घोड़ा ब्यूसीफेल्स मर गया सिकन्दरको उसकी मृत्युसे उतना ही दुःख हुआ जितना अपने एक पुरा साथी अथवा गाढ़े मित्रके न रहनेसे होता है। उसके नामपर उसने झेलम नदीके किनारे एक नगर भी बसाया।

पुरु राजा के साथ जो युद्ध हुआ उसमें सिकन्दर विजयी तो हुआ किन्तु उससे मकदूनियन लोगोंकी हिम्मत टूट गयी। वे अब आगे नहीं बढ़ना चाहते थे। उन्होंने देखा कि यद्यपि पुरु राजाके साथ केवल बीस हजार पैदल तथा दो हजार सवार ही थे, फिर भी उसे परास्त करने में उनके छक्के छूट गये थे। इसीसे उन्होंने गंगा नदी पार करनेके सिकन्दरके प्रस्तावका विरोध किया। उन्होंने सुन रखा था कि इस नदीका पाट चार मील चौड़ा है और वह कोई ६०० फुट गहरी है। उन्हें यह भी खबर मिली कि नदीके उसपार कई राजाओंने ८० हजार सवार, दो लाख पैदल, अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित आठ हजार रथ तथा छः हजार लड़ाईके हाथी लेकर उनका सामना करनेकी तैयारी कर रखी है। उन्हें हतोत्साह करनेके ख्यालसे ही यह खबर उड़ा दी गयी हो ऐसा नहीं प्रतीत होता, क्योंकि कुछ ही दिनोंके बाद जब एण्ड्रोकोटस वहाँका शासक हुआ तब उसने तुरन्त पाँच सौ हाथी सेल्यूकसको भेंट किये और छः लाख सैनिकोंकी सहायतासे समूचे उत्तर भारतपर अधिकार कर लिया। सिकन्दरको अपने सैनिकोंका यह व्यवहार बहुत बुरा लगा। वह अपने तम्बूमें घुस गया और गुस्सेके साथ यह कहते हुए ज़मीनपर लेट गया कि आज तक तुम लोगोंने मेरी जो कुछ सहायता की है, उसके लिए मैं तुम्हें धन्यवाद नहीं दे सकता, क्योंकि मेरे लिए इस समय अपने देशको वापस जाना अपनी हार स्वीकार कर लेनेके बराबर ही है। अन्तमें मित्रोंके बारबार समझानेसे एवं तम्बूके द्वारपर खड़े हुए सैनिकोंका करुण-क्रन्दन

सुन कर उसका हृदय द्रवीभूत हो गया और उसने स्वदेशको लौटना स्वीकार कर लिया। किन्तु अपनी कीर्ति फैलानेके उद्देश्यसे वह अपने पीछे अनेक भ्रामक स्मृतिचिन्ह छोड़ता गया। जितने बड़े हथियार वह तथा उसके सैनिक धारण करते थे, उनसे कहीं बड़े हथियार तथा घोड़ोंके दाना खानेकी मामूलीसे बड़ी नादें और लगामें इत्यादि कई चीज़ें उसने जान बूझ कर इधर उधर रखवा दीं और जाते समय वहीं पड़ी रहने दीं। उसने देवताओंको बलि चढ़ानेके लिए वेदियाँ भी बनवा दी थीं।

अब सिकन्दरकी इच्छा समुद्र देखते चलनेकी हुई। इसी उद्देश्यसे उसने बहुसंख्यक डोंगियों तथा लट्ठों इत्यादिकी बनी नावें तैयार करायीं। फ़ुरसतके समय वह उन्हींपर सवार होकर नदीके बहावकी ओर यात्रा किया करता था। इस यात्राके समय भी वह कुछ न कुछ लड़ाई करता चलता था। कभी कभी किनारेपर उतर कर समीपस्थ नगरपर आक्रमण करता चलता और उन्हें अपने अधीन कर लेनेके बाद पुनः आगे बढ़ता। एक बार जब वह मलियन लोगोंके नगरोंमें पहुँचा, जो अपनी वीरताके लिए प्रसिद्ध थे, तब उसके प्राणोंपर आ बनी। शत्रुके सैनिकोंको तीरोंकी वर्षासे पीछे हटा कर सिकन्दर एक सीढ़ीकी सहायतासे दीवारपर चढ़ गया किन्तु उसके ऊपर पहुँचते ही सीढ़ी टूट गयी और वह वहाँ अकेला ही रह गया। नीचेसे शत्रुके सैनिकोंने पुनः उसपर बाण बरसाना आरम्भ कर दिया। अब आत्मरक्षाका और कोई उपाय न देख कर सिकन्दर हिम्मत करके नीचे, शत्रुके बीचमें, कूद पड़ा। उसके कवचकी तेज़ चमक एवं खनखनाहटसे शत्रुके आदमियोंको भ्रम हुआ मानो कोई ज्योतिर्मयी दिव्य आकृति उनके बीचमें उतर पड़ी हो। पहले तो वे भयके मारे पीछे हट गये, किन्तु बादमें सिकन्दरको पहचान कर और उसे केवल दो शरीर-रक्षकोंके साथ देखकर वे उसपर टूट पड़े। सिकन्दर बड़ी वीरतासे आत्मरक्षा कर रहा था। इतनेमें दूर खड़े हुए सैनिकने निशाना ठीक कर ऐसा बाण छोड़ा जो उसके कवचको छेद कर छातीके नीचे पसलोंमें धँस

गया। यह प्रहार इतनी शक्तिके साथ किया गया था कि सिकन्दर उसे सह कर खड़ा न रह सका। पीछे हट कर और एक घुटना टेक कर उसने अपनेको गिरनेसे बचाया। यह देख कर उसे मार डालनेकी इच्छासे वह मनुष्य अपनी तलवार लेकर झपटा और यदि सिकन्दरके दोनों शरीररक्षक बीचमें न आ गये होते तो उसका बचना मुश्किल था। शरीर रक्षकोंमें से एक तो वहीं ढेर हो गया, किन्तु दूसरा आहत होकर भी अभी सिकन्दरकी सहायता करनेके क़ाबिल था। इसी समय, अन्य कई प्रहारोंसे क्षतविक्षत होनेके बाद, सिकन्दरकी गर्दनपर इतने ज़ोरसे गदाका प्रहार हुआ कि उसे अपने बचावके लिए दीवारका सहारा लेना पड़ा। ठीक इस संकटके समय मक्दूनियन सेना भीतर घुस आयी और उसने चारों ओरसे सिकन्दरको घेर लिया। उसे बेहोश होकर गिरते देख कर तुरन्त उसके सैनिकोंने सँभाल लिया और अपने शिविरमें ले आये। बातकी बातमें सारी सेनामें उसके प्राणान्त हो जानेकी ख़बर उड़ गयी। किन्तु जब बड़ी कठिनतासे वे लोग बाणका ऊपरी भाग काटनेमें समर्थ हुए और अत्यन्त कष्टके साथ उसका कवच उतार सके, तब उसकी मूर्छा दूर हो गयी और वह पुन होशमें आ गया। यद्यपि अब कोई भय नहीं रह गया था, फिर भी उसकी कमज़ोरी बहुत दिनोंतक दूर नहीं हुई और वह बराबर औषधिका सेवन करता रहा। एक दिन जब मक्दूनियन लोग उसके दर्शनोंके लिए उतावले होकर तम्बूके बाहर एकत्र हो गये और बहुत शोर-गुल करने लगे, तब वह अपना चोग़ा पहन कर तुरन्त बाहर निकल आया। इसके बाद देवताओंके नामपर बलि चढ़ा कर उसने शीघ्र ही जलमार्गसे प्रस्थान कर दिया।

इस यात्रामें वह अपने साथ हिन्दुस्थानके दस दार्शनिकोंको क़ैदी बना कर लेता गया था। ये लोग किसी भी प्रश्नका उत्तर थोड़ेमें और तुरन्त बड़ी चतुरताके साथ देनेके लिए प्रसिद्ध थे। सिकन्दरने स्वयं कुछ प्रश्न किये और उनसे कह दिया कि यदि किसीने ठीक उत्तर नहीं दिया

तो उसे प्राणदण्ड दिया जायगा। उनमेंसे सबसे अधिक अवस्थावाले-को उसने निर्णायक बनाया। पहलेसे यह पूछा गया कि "आपकी रायमें मृत व्यक्तियोंकी संख्या ज़्यादा है या जीवित व्यक्तियोंकी," तब उसने उत्तर दिया "जीवित व्यक्तियोंकी, क्योंकि जिनकी मृत्यु हो गयी वे तो अब इस लोकमें रह ही नहीं गये।" दूसरेसे उसने पूछा "पृथ्वीपर सब-से अधिक पशु उत्पन्न होते हैं या समुद्रमें?" उसने जवाब दिया "पृथ्वी-पर, क्योंकि समुद्र तो पृथ्वीका ही एक भाग है।" तीसरेसे प्रश्न किया गया कि सबसे चालाक पशु कौन है? उसने कहा "वह जिसका पता अभी मनुष्य नहीं लगा सके हैं।" चौथेसे सिकन्दरने पूछा कि "सब्बासको क्रान्ति करनेके लिए उभाड़ते समय तुमने किस दलीलका सहारा लिया था?" "केवल यही कि या तो जीवित रहो या सम्मानपूर्वक मृत्यु स्वीकार करो।" पाँचवेंसे उसने पूछा "रात बड़ी है या दिन?" उत्तर मिला "दिन कमसे कम एक दिन बड़ा है।" सिकन्दरको इस उत्तरसे सन्तुष्ट होते न देख कर उसने फिर कहा "यदि विचित्र प्रश्नोंका उत्तर भी विचित्र हो तो इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिये।" तब उसने अगले व्यक्तिकी ओर फिर कर पूछा "लोकप्रिय बननेके लिए मनुष्यको क्या करना चाहिये?" उसने कहा "दूसरोंके मनमें भय उत्पन्न किये बिना उसे खूब शक्तिशाली बनना चाहिये।" इस प्रश्नके उत्तरमें कि मनुष्य देवता कैसे बन सकता है, सातवेंने कहा "वह कार्य करके जो अन्य लोगोंके लिए असंभव हो।" आठवेंने अपने प्रश्नके उत्तरमें कहा कि "मृत्युकी अपेक्षा जीवन अधिक प्रबल है, क्योंकि उसमें इतने कष्टोंको झेलनेकी शक्ति है।" नवें व्यक्तिसे उसने पूछा "तुम मनुष्यके लिए कब तक जीवित रहना अच्छा समझते हो?" उसने कहा "तबतक जब जीवनकी अपेक्षा मृत्यु अधिक वाञ्छनीय प्रतीत होने लगे।" अब उसने जिस व्यक्तिको निर्णायक बनाया था, उसकी ओर मुँह फेर कर अपनी राय प्रकट करनेके लिए कहा। उसने उत्तर दिया "मैं तो यही निश्चय कर सका हूँ कि इनमेंसे प्रत्येकने दूसरेकी अपेक्षा अधिक

खराब उत्तर दिया है।" सिकन्दरने कहा "यदि यही तुम्हारा निर्णय है, तो सबसे पहले तुम्हें ही प्राणदण्ड मिलना चाहिये।" उसने निवेदन किया "जी नहीं, यह आप क्या कहते हैं? आपने तो यह न कहा था कि जिसका उत्तर सबसे खराब होगा उसे ही सर्वप्रथम प्राणदण्ड दिया जायगा।" अन्तमें सिकन्दरने अनेक उपहार देकर सब लोगोंको विदा किया।

उनमें जो सबसे प्रसिद्ध दार्शनिक थे और शान्तिपूर्वक अपना जीवन बिता रहे थे, उनके पास सिकन्दरने डायोजेनीजके एक शिष्यको भेजा और उनसे कहलाया कि तुम लोग आकर मेरे साथ रहो। कैलेनस नामक तत्त्ववेत्ताने तो उसे उद्दण्डतापूर्वक आज्ञा दी कि "अपने कपड़े उतार कर फेंक दो और जो कुछ मैं कहता हूँ उसे नग्न होकर सुनो, नहीं तो चाहे तुम बृहस्पति देवताके पाससे ही क्यों न आये हो, मैं तुमसे एक शब्द भी न बोलूँगा।" किन्तु डण्डेमिसने उसके साथ अधिक शिष्टतापूर्वक व्यवहार किया और उसे साक्रेटीज (सुकरात), पाइथैगोरस तथा डायोजेनीजकी चर्चा करते हुए सुन कर कहा कि "वे लोग सचमुच बड़े विद्वान् थे। उनमें केवल इतना ही दोष था कि वे अपने देशके रीति रिवाजों और क़ानूनोंको बहुत अधिक महत्त्व देते थे।" तक्षशिलाके राजाके समझानेसे कैलेनस सिकन्दरके पास चला आया। एक बार एक राजनीतिक सिद्धान्त समझानेके लिए उसने एक सूखे हुए चमड़ेको जमीनपर पटक दिया और फिर उसके किनारोंको पाँवसे दबाया। जब वह एक भागको दबाता था, तब दूसरा उभड़ पड़ता था। अन्तमें जब उसने बीचमें पाँव रख कर चमड़ेको दबाया, तब उसका कुल भाग नीचेको दबा रहा, कहीं कोई अंश ऊपरको नहीं उभड़ा। इससे उसने सिकन्दरको यह समझाया कि आपको अपना अधिक समय साम्राज्यके मध्य भागमें ही बिताना चाहिये, उसकी बाह्य सीमापर नहीं।

नदियोंके मार्गसे समुद्रतक पहुँचनेमें उसे सात महीने लग गये। सिलस्टिस नामक टापूमें पहुँच कर उसने देवताओंको बलि चढ़ायी और

उनसे प्रार्थना की कि मैं स्वयं जहाँतक युद्ध-यात्रा कर आया हूँ, उससे अधिक और कोई मनुष्य न कर सके। इसके बाद उसने अपने बेड़ेको समुद्रके किनारे किनारे यात्रा करनेका आदेश दिया और स्वयं स्थलमार्गसे लौट पड़ा। खाद्य सामग्रीकी कमीके कारण ऑराइट देशमें उसे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। वहाँ उसकी सेनाका एक बड़ा भाग नष्ट हो गया। १२० हजार पैदल तथा १५ हजार अश्वारोहियोंमेंसे लगभग चतुर्थांश सैनिक ही भारतसे जीवित लौट सके। जिस वीरान देशमें होकर उन्हें जाना पड़ा, वहाँके निवासी बड़ी कठिनतासे अपना निर्वाह करते थे। उनके पास केवल थोड़ीसी भेड़ें थीं, जिनका मांस, निरन्तर समुद्रकी मछलियाँ खाते रहनेके कारण, बिल्कुल स्वादहीन और रद्दी होता था।

साठ दिनकी यात्राके बाद वह गेड्रोशिया पहुँचा। वहाँ आसपासके राजाओंने उसके आनेकी खबर पाकर पहलेसे ही प्रचुर खाद्यसामग्री एकत्र कर रखी थी। जब वह सेना समेत अपनी थकावट दूर कर चुका, तब पुनः आगे बढ़ा। रास्तेमें सात दिनतक बराबर खाना पीना होता रहा। आठ घोड़ों द्वारा धीरे धीरे खींचे जानेवाले एक लम्बे चौड़े ऊँचे तख्ते पर बने हुए मंचपर बैठकर सिकन्दर तथा उसके अन्तरंग मित्रगण विविध भोजन करने और आनन्द मनानेमें रात दिन मस्त रहते थे। इनके पीछे बहुसंख्यक रथ चलते थे जिनपर फूलोंकी मालाएँ पहने हुए तथा मद्यपानमें निरत उसके शेष मित्र एवं सेनापति इत्यादि सवार थे। इस समय न तो इन लोगोंके सिरपर शिरस्त्राण ही थे और न इनके हाथमें भाले तलवारें या बरछियाँ इत्यादि ही थीं। इनके बदले अब वे लोग मद्यपानके प्याले या गिलास ही हाथमें लिये हुए थे, जिन्हें वे बड़े बड़े कुण्डालों या घड़ोंमें डुबा कर शराबसे भर लेते थे और एक दूसरेके स्वास्थ्यकी कामना करते हुए साफ कर डालते थे। चारों ओर बाँसुरी और शहनाई इत्यादि बाजे बजते जाते थे तथा साथ साथ नाच गाना भी होता जाता था। जब सिकन्दर गेड्रोशियाके राजमहलोंमें पहुँचा, तब

फिर उसने कई दिन सेना सहित विश्राम करने तथा विविध भोजों इत्यादिमें सम्मिलित होनेमें बिताये।

इसी समय उसका नौ-सेनापति नीआरकस यहाँ आया और उसने अपनी समुद्रयात्राका ऐसा रोचक वर्णन सुनाया कि जिससे सिकन्दरने एक विस्तृत बेड़ा लेकर फरात नदीके मार्गसे होते हुए समुद्रकी यात्रा करनेका निश्चय किया। उसका इरादा अरब देश तथा अफ्रिकाका चक्कर करते हुए हरकुलीजके स्तंभोंके पाससे होते हुए भूमध्यसागरमें घुसनेका था। उसने तरह तरहके पोत बनाने और मल्लाहों इत्यादिका प्रबन्ध करनेकी आज्ञा दे दी किन्तु भारतयात्राके समय उसे जिन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा था, मलियन लोगोंके बीचमें उसकी जान जैसे संकटमें पड़ गयी थी और ओराइट प्रदेशमें जो उसकी सेनाका बड़ा भाग नष्ट हो गया था, इन सब बातोंकी खबर अब विजित प्रदेशोंमें फैल गयी थी और यह शंका प्रकट की जा रही थी कि इस समुद्रयात्रासे सिकन्दर जीता न लौटेगा। इन कारणोंसे विजित प्रदेशोंमें धीरे धीरे विद्रोहोंका सूत्रपात होने लगा जिनसे उत्तेजित होकर प्रान्ताधिकारी भी अन्याय एवं उद्दण्डताका व्यवहार करने लगे। वर्तमान परिस्थितिके विरुद्ध सर्वत्र असन्तोष फैल गया। स्वदेशातकमें तो ओलिम्पियस तथा क्लिओपेट्राने ऐण्टीपेटरके विरुद्ध विद्रोहका झंडा खड़ा कर दिया और उसका प्रदेश आपसमें बाँट लिया। ओलिम्पियसने ईपाइरसपर और क्लिओपेट्राने मकदूनियापर दखल जमाया। यह खबर पाकर सिकन्दरने कहा "मेरी माताने मकदूनियापर अधिकार जमानेकी चेष्टा न कर बड़ी बुद्धिमानीसे काम लिया है, क्योंकि यह निश्चित है कि मकदूनियन लोग कभी किसी स्त्रीके अधीन होकर रहना पसन्द नहीं करेंगे। अब उसने नीआरकसको पुनः अपने बेड़े सहित समुद्रतीरके प्रान्तोंकी ओर प्रस्थान करनेकी आज्ञा दी। फिर वह स्वयं अपने उन सेनानायकोंको दण्ड देनेके लिए चल पड़ा, जिनका व्यवहार असन्तोषजनक था। उसने अबूलिटीज़के एक पुत्र-

को स्वयं अपनी तलवारसे मार डाला। अबूलिटीज़ने उसके आनेकी खबर पाकर खाद्य-सामग्रीका प्रबन्ध तो किया न था, केवल तीन हजार सुवर्ण सिक्के (टलेण्ट) इकट्ठे कर रखे थे। जब वह अपनी भेंट लेकर सिकन्दरको अर्पित करनेके लिए गया, तब उसने उसे घोड़ोंके सामने डाल देनेको कहा। घोड़ोंने सिक्कोंको छुआ तक नहीं। तब सिकन्दरने कहा "तुम्हारी इस भेंटका हम क्या करें, बताओ।" ऐसा कह कर उसे बन्दीगृहमें भेज दिया।

जब सिकन्दर फारस देशमें पहुँचा, तब फारस देशीय राजाओंकी प्रथाके अनुसार उसने वहाँकी स्त्रियोंमें कुछ धन बँटवा दिया। फारसके राजा जब किसी युद्धयात्रासे लौटते थे, तब प्रत्येक स्त्रीको एक सुवर्ण-मुद्रा प्रदान करते थे। इस प्रथाके कारण अनेक राजाओंने तो बारंबार स्वदेश न लौटनेका नियम ही बना लिया था। ओकस तो इतना लालची था कि वह अपने सारे शासनकालमें एक बार भी जन्मभूमिको नहीं लौटा। जब सिकन्दरने साईरसकी समाधिको खुला हुआ पाया, तो उसने यह गर्हित कार्य करनेवाले पोलीमेक्स नामक मकदूनियनको प्राणदण्ड दिया और समाधिपर जो इबारत खुदी हुई थी उसे फिरसे ग्रीक अक्षरोंमें खुदवा दिया। उसमें लिखा था "महाशय, चाहे तुम कोई हो, और चाहे किसी देशसे आये हो (मैं जानता हूँ कि तुम आओगे अवश्य), यह जान लो कि मैं फारस-साम्राज्यका प्रस्थापक 'साइरस' हूँ। मेरे शरीरके ऊपर ज़मीनका जो छोटा सा टुकड़ा है, कृपा कर मुझे उसके नीचे ही पड़े रहने दो।" इन शब्दोंको पढ़ कर सिकन्दर विशेष प्रभावित हुआ। उसने ख्याल किया कि इस संसारमें मनुष्यकी सभी बातें कितनी अनिश्चित एवं परिवर्तन-शील हैं। इसी समय कैलेनसने, जो कुछ दिनोंसे पेटकी व्याधिसे पीडित था, प्रार्थना की कि मेरे लिए एक चिता तैयार करा दी जाय। वह घोड़े-पर बैठ कर चिताके पास पहुँचा और ईश्वरकी वंदना कर तथा अपने शरीर-पर जल छिड़क कर उसने आगमें डालनेके लिए सिरके कुछ बाल काटे

लिये। चितापर चढ़नेके पहले उसने पासमें खड़े हुए मकदूनियन लोगोंका आलिंगन किया और यह कह कर उनसे विदाई ली कि "आज- का दिन आप लोग अपने राजाके साथ आनन्द और विनोदमें व्यतीत कीजिये। मेरा विश्वास है कि बैबीलोनियामें शीघ्र ही पुनः आपके राजासे मेरी मुलाक़ात होगी।" इसके बाद वह अपना मुँह ढाँक कर चितापर लेट गया और अग्निके अत्यन्त निकट पहुँचने पर भी वह वहाँसे बिल्कुल नहीं हिला। इस प्रकार उन देशोंके तत्ववेत्ताओंमें प्रचलित प्रथाके अनुसार ही उसने अपने प्राण दिये। बहुत दिनोंके बाद एक और भारतीयने, जो सीज़रके साथ अथेंस गया था, इसी प्रकार अपने प्राण विसर्जित किये थे। चितास्थानसे लौटनेके बाद रात्रिमें सिकन्दरने अपने बहुतसे मित्रों और प्रधान अफसरोंको भोजनके निमित्त आमंत्रित किया और सबके सामने यह प्रस्ताव किया कि मदिरापानकी प्रतिद्वन्द्विता‌में आज जो व्यक्ति अन्य सब लोगोंको परास्त कर देगा उसे एक राजमुकुट पारितोषिक स्वरूप दिया जायगा। प्रोमेकसने बारह बोतलें खाली कर दीं और पुरस्कार प्राप्त कर लिया। किन्तु इस सफलताके तीन दिन बाद ही उसकी मृत्यु हो गयी। इसके बाद थोड़े ही समयके भीतर इकतालीस आदमियोंने और उसका अनुसरण किया।

जब वह सूसा पहुँचा तब उसने दाराकी लड़की स्टैटिराके साथ विवाह कर लिया और अपने अनेक मित्रोंका सम्बन्ध भी चुनी हुई फारस-कुमारियोंके साथ करा दिया। इन सब विवाहोंके कारण जो उत्सव मनाया गया, उसमें वे मकदूनियन लोग भी आमन्त्रित किये गये जो पहले ही फारस-देशीय महिलाओंका पाणिग्रहण कर चुके थे। इस वृहत् समारोहके समय कोई नौ हजार अतिथि इकट्ठे हुए थे। इनमें से प्रत्येक को सिकन्दरने देवताओंको अर्घ्य देनेके निमित्त एक एक सोनेका प्याला भेंट किया। उसकी इस विलक्षण उदारताके सम्बन्धमें इतना ही कहना काफी होगा कि उसने अपनी सेनाका कुल कर्ज भी जो ९८७० टेलण्टके

गरीब था स्वयं अदा कर दिया। एण्टीजेनीज़ नामक एक अफसरने, जो एक आँखसे काना था और जो वास्तवमें बिलकुल कर्ज़दार न था, अपना नाम कर्ज़दारोंकी सूचीमें लिखवा दिया। उसने एक आदमीको पेश कर उससे झूटमूठ ही कहला दिया कि मैंने इसे कर्ज़ दिया है। इस प्रकार ऋण चुकानेके बहाने राजासे उसने एक अच्छी रकम वसूल कर ली। जब इस धूर्तताका पता चला तब राजाको बड़ा गुस्सा आया और यद्यपि वह बड़ा बहादुर और साहसी योद्धा था, फिर भी सिकन्दरने उसे पदच्युत कर राज-दरबारसे बाहर निकाल दिया। पेरिन्थसकी लड़ाईके समय फ़िलिप-की अधीनतामें लड़ते हुए जब एक तीर इसकी आँखोंमें आ लगा, तब यह शत्रुको पीछे हटा देनेके लिए इतना दृढसंकल्प था कि न तो इसने वहाँ-से अलग होना स्वीकार किया और न किसीको वह तीर आँखसे खींचने ही दिया। अतः इस अपमानसे उसके हृदयपर बड़ा आघात पहुँचा। आत्मघात करनेकी संभावना देख कर सिकन्दरने उसे क्षमा कर दिया और जो रकम उसने धूर्ततापूर्वक प्राप्त कर ली थी, वह भी उसके पास रहने दी।

जिन तीस हज़ार लड़कोंको वह सुयोग्य शिक्षकोंकी देख रेखमें छोड़ गया था, उन्होंने उसके लौटने पर बड़ी उन्नति कर ली थी। उनका विलक्षण कौशल एवं गति-लाघव देख कर सिकन्दर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। अब मकदूनियन लोगोंको शंका होने लगी कि इन लोगोंके कारण राजा भविष्य-में हमारी इतनी क़दर नहीं करेगा। जब सिकन्दरने अशक्त एवं हाथ पाँव इत्यादि कट जानेसे बेकाम हुए सैनिकोंको घर लौटा देनेके ख्यालसे समुद्र तटकी ओर भेजना चाहा, तब सारी सेनाने इसे अन्याय समझा। लोग कहने लगे कि जबतक संभव था तबतक राजाने इनसे काम लिया और अब ये अपमानपूर्वक घर लौट जानेके लिए विवश किये जा रहे हैं। जिस अवस्थामें ये लोग राजाकी नौकरी करने आये थे, उससे अधिक खराब अवस्थामें इन्हें मित्रों और सम्बन्धियोंके बीच लौटना पड़ रहा है। इससे

तो यही अच्छा है कि राजा हम सभीको जवाब दे दे। यह समस्त मकदू-नियनोंको ही नौकरीके अयोग्य क्यों नहीं समझ लेता? अब तो उसके पास नाचनेवाले लड़के इतनी बड़ी संख्यामें इकट्ठे होगये हैं, कि यदि वह चाहे तो उन्हें साथ लेकर दिग्विजयके लिए प्रस्थान कर सकता है।" ये बातें सुन कर सिकन्दर बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने उन्हें खूब फटकारा और वहाँसे चले जानेको कहा। उसने फारस देशीय सैनिकोंमेंसे अपने संरक्षक एवं पार्श्ववर्ती अनुचर नियुक्त किये। जब मकदूनियन लोगोंने सिकन्दरको इन लोगोंके संरक्षणमें आते जाते देखा और अपनेको इस प्रकार बहिष्कृत एवं अपमानित होते पाया तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। निदान आपसमें परामर्श कर ये लोग निःशस्त्र होकर केवल एक एक वस्त्र धारण किये हुए, रोते कलपते राजाके तम्बूके पास पहुँचे और उससे प्रार्थना की कि हम लोगोंने जो नीचता और कृतघ्नता प्रकट की है उसका उपयुक्त दण्ड आप हम लोगोंको दीजिए। किन्तु इससे कोई लाभ नहीं हुआ। यद्यपि सिकन्दरका क्रोध अब कुछ कुछ शान्त हो गया था, फिर भी उसने इन लोगोंको अपने सामने नहीं बुलाया। ये लोग भी दो दिन और दो रात बराबर वहीं पड़े रहे और उससे बारम्बार दीनतापूर्वक क्षमा-याचना करते रहे। तीसरे दिन सिकन्दर बाहर निकला और उन्हें अत्यन्त विनीत भावसे पश्चात्ताप प्रकट करते देख कर स्वयं भी देरतक रोता रहा। फिर एक हलकी घुड़की देकर उसने विशेष अनुग्रह दिखलाते हुए उनसे बातचीत की। जो सैनिक अब कामके लायक नहीं रह गये थे, उन्हें उसने अच्छा इनाम देकर कार्य-मुक्त कर दिया और एण्टीपेटरको यह लिख दिया कि जब ये लोग घर पहुँच जावें तब समस्त सार्वजनिक समारोहों तथा नाट्यशालाओं इत्यादिमें इन्हें उच्च एवं सम्मानित आसनोंपर बैठानेका ख्याल रखा जाय। उसने यह भी आज्ञा दी कि मेरी अधीनतामें काम करते समय जिन लोगोंकी मृत्यु हुई हो, उनके लड़कोंको भी वही वेतन मिलता रहे जो उनके पिताओंको मिलता था।

जब यह मीडियाके एकबेटेना नामक स्थानमें आया, तब अपने समस्त आवश्यक कार्योंको पूरा कर यह पुन सार्वजनिक मेलों और तमाशोंसे अपना दिल-बहलाव करने लगा। इसी उद्देश्यसे उसने हालमें ही ग्रीससे तीन हजार अभिनेताओं एवं कलाविज्ञोंको बुलवाया था। किन्तु इस समय दुर्भाग्यसे हेफेस्टियनको ज्वर आने लगा। नवयुवक और सैनिक होनेके कारण वह आवश्यक पथ्य न कर सका। चिकित्सककी अनुपस्थितिमें उसने एक चिड़िया भुनवा कर खा ली। इसके सिवा शराब भी वह खूब पी गया। परिणाम यह हुआ कि बीमारी बढ़ गयी और शीघ्र ही उसका प्राणान्त हो गया। इस घटनाके कारण सिकन्दर शोकसे पागल हो उठा। उसने घोड़ों और खच्चरोंकी अयालें तथा पूँछ कटवा दीं ताकि उनसे भी एक सर्वव्यापी शोकका प्रदर्शन हो। बेचारे वैद्यको उसने फाँसी पर लटका दिया और सारे शिविरमें बाँसुरी या अन्य कोई बाजा बजानेकी मनाही कर दी। शीघ्र ही उसे अमन देवताका यह दिव्य सन्देश प्राप्त हुआ कि एक प्रमुख वीरकी तरह हेफेस्टियनके प्रति सम्मान प्रकट किया जाय और उसके नामपर बलि चढ़ायी जाय। फिर युद्ध द्वारा अपने शोककी उग्रता कम करनेके उद्देश्यसे वह मानो मनुष्योंका शिकार करनेके लिए चल पड़ा। उसने कोसियन लोगों पर चढ़ाई की और सारी जातिको तलवारसे कत्ल करवा डाला। इसे वह हेफेस्टियनकी आत्माके नामपर चढ़ायी गयी बलि कहता था। उसकी इच्छा थी कि हेफेस्टियनकी समाधि एवं उसके स्मारकको सुसज्जित करनेमें दस हजार टैलेण्ट व्यय किये जायँ और कारीगरी इतनी अच्छी हो एवं नक्शा इतना बढ़िया हो कि जितना धन व्यय किया जाय उसकी अपेक्षा उसका मूल्य अधिक जान पड़े। इसी उद्देश्यसे उसने स्टेसाक्रेटीज नामक चतुर कारीगरको बुलवाया जिसके प्रत्येक कार्यमें कोई न कोई अनूठापन या विलक्षणता रहती थी। एक बार पहले जब सिकन्दरसे उसकी भेंट हुई थी, तब उसने कहा था कि थ्रेसमें जो एथॉस

पहाड़ है, यह एक ऐसा पहाड़ है जो आवश्यक परिश्रम करनेसे मनुष्यकी आकृतिमें परिणत किया जा सकता है, अतः यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं उसे एक सुन्दरसे सुन्दर मानव-मूर्तिका रूप दे सकता हूँ जिसके बायें हाथमें दस हजारकी आबादीवाला एक शहर होगा और दाहिने हाथसे नदीकी एक मोटी धारा निकल कर समुद्रमें गिरती हुई दिखायी जायगी। यद्यपि सिकन्दरने उस समय यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया था, फिर भी अब वह स्वयं विशेषज्ञोंसे मिल कर इससे भी अधिक खर्चीले और दुस्साध्य मन्तव्योंके सम्बन्धमें परामर्श करने लगा।

जब वह बेबीलोनियाकी ओर जा रहा था, तब नीआरकस समुद्र-यात्रासे लौट कर फरात नदीमें होते हुए उसके पास पहुँचा। उसने सिकन्दरसे कहा कि कैल्डिया निवासी कुछ भविष्यद्वक्ताओंसे मेरी भेंट हुई थी। उन्होंने आपको बेबीलोनिया जानेसे मना किया था। सिकन्दरने इस कथनकी ओर ध्यान नहीं दिया। वह अपनी यात्रासे विरत नहीं हुआ। जब वह नगरकी दीवारोंके पास पहुँचा, तब उसने बहुतसे कौओंको आपसमें लड़ते हुए देखा। इनमेंसे कई गतप्राण होकर ठीक उसके पाँवोंके पास आ गिरे। जब उसे यह मालूम हुआ कि बेबीलोनियाके गवर्नरने यह जाननेके लिए देवताओंको बलि चढ़ायी थी कि सिकन्दरका अन्त किस प्रकार होगा, तब उसने पाइथैगोरस नामक भविष्यद्वक्ताको बुलवाया और उससे इस सम्बन्धमें पूछताछ की। पाइथैगोरसका उत्तर सुन कर सिकन्दर अप्रसन्न नहीं हुआ और न उसने उसे कोई क्षति ही पहुँचायी, किन्तु उसे नीआरकसकी सलाह न माननेका दुःख जरूर हुआ। वह प्रायः शहरके बाहर ही रहता था और आवश्यकतानुसार कभी एक स्थानपर, कभी दूसरेपर अपना तम्बू खड़ा करता था। इसके सिवा उसे और भी दो एक अजीब घटनाओंके कारण परेशानी हो रही थी। एक बहुत बड़े और सुन्दर सिंहपर जो उसने पाला था, एक गधा गिर पड़ा और उसने सिंहको ऐसी लात मारी कि वह मर गया। एक दिन उसने अपने कपड़े

उतार कर उपटन लगवाया और फिर गेंद खेलने लगा। इसी समय जब उसके पार्श्ववर्त्ती उसकी पोशाक उठाने गये तो उन्होंने एक आदमीको राजाके कपड़े पहिन कर सिंहासनपर चुपचाप बैठे देखा। जब उन्होंने पूछा कि तुम कौन हो, तब बहुत देरतक तो उसने कोई उत्तर ही नहीं दिया, किन्तु बादमें उसने कहा कि मेरा नाम डायोनीसियस है। मैं मेसीनियाका रहनेवाला हूँ। एक अपराध हो जानेके कारण मैं यहाँ लाया जाकर बहुत दिनोंसे कैद कर दिया गया था। इसी समय मुझे सिरापिसके दर्शन हुए। उसने मुझे बन्दीगृहसे मुक्त कर दिया और यहाँ लाकर राजाके कपड़े तथा मुकुट धारण कर सिंहासनपर बैठ जानेकी आज्ञा दी। जब सिकन्दरको यह बात मालूम हुई तो ज्योतिषियोंकी सलाहसे उसने उसे प्राण-दण्ड दिया। अब सिकन्दरका उत्साह कम हो गया। उसे देवताओंकी सहायताकी वैसी आशा नहीं रह गयी। उसे अपने मित्रोंसे भी आशंका होने लगी। विशेष कर एण्टीपेटर और उसके लड़कोंको वह सन्देहकी दृष्टिसे देखने लगा। एण्टीपेटरका एक लड़का उसका साकी था। दूसरा लड़का कैसण्डर था जो हालमें ही मकदूनियासे आया था। एक बार जब उसने असभ्य जातिके लोगोंको सिकन्दरके सामने जमीन पर लेटकर भक्ति प्रदर्शित करते देखा तो उसे हँसी आ गयी। इस पर सिकन्दरको इतना गुस्सा आया कि उसने दोनों हाथोंसे बाल पकड़ कर उसका सिर दीवारसे दे मारा। इसी तरह जब एण्टीपेटर पर दोषारोपण करनेवालोंको कैसेण्डरने जवाब देना चाहा, तब सिकन्दरने उसे डपट कर कहा "तुम क्या कहना चाहते हो? क्या तुम समझते हो कि यदि इन लोगोंपर एण्टीपेटरने सचमुच कोई जुल्म न किया होता तो केवल तुम्हारे पितापर झूठ-मूठ दोषारोपण करनेके उद्देश्यसे ये लोग इतनी दूरसे आनेका कष्ट उठाते?" यह सुन कैसण्डरने जवाब दिया "उनका यहाँ आना ही इस बातका सबूत है कि उनका अभियोग मिथ्या है, क्योंकि वे उन लोगोंसे इतनी दूर भाग आये हैं जो उनकी बातोंका यथोचित उत्तर दे सकते

थे।" इस पर सिकन्दरने मुसकरा कर कहा कि "यह अरस्तूके ढंगकी दलील है जिससे दोनों पक्षोंकी पुष्टि की जा सकती है किन्तु तुम यह निश्चय जानो कि यदि इन लोगोंपर वास्तवमें अन्याय हुआ है तो तुम्हें व तुम्हारे पिताको इसके लिए कठोर दण्ड भोगना पड़ेगा।" इन सब बातोंका कैसण्डरके मनपर ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि बहुत दिनोंके बाद, जब वह मकदूनियाका राजा और ग्रीसका अधिपति बन गया था, एक दिन डेल्फीमें सिकन्दरकी एक प्रतिमूर्ति देख कर वह एकदम डर गया, उसका सारा शरीर काँपने लगा, उसकी आँखकी पुतलियाँ ऊपर चढ़ गयीं और उसका सिर चकराने लगा। बहुत देरके बाद उसके होश ठिकाने हुए।

जब इन थोड़ी सी आश्चर्यजनक घटनाओंके कारण सिकन्दरके मनमें डर समा गया, तब वह छोटी छोटी बातोंसे भी भयभीत होने लगा। यदि जरा भी कोई अनहोनी सी बात होती तो वह उसे किसी दुर्घटनाका पूर्व चिह्न समझ लेता था। उसकी सभामें बहुतसे ज्योतिषी और भविष्यद्वक्ता आ जुटे थे, जो उसके लिए देवताओंको बलि चढ़ाया करते थे और उसे भावी घटनाओंकी सूचना दिया करते थे। जब हेफेस्टियनके सम्बन्धमें की गयी भविष्यद्वाणीके समाचार उसे मिले, तब उसकी उदासी दूर हो गयी। वह अब देवताओंको बलि चढ़ाने और मदिरा पानमें व्यस्त हो गया। स्वादिष्ट भोजन इत्यादिसे नीआरकसका सम्मान कर जब वह सोने जानेके पहले स्नान कर चुका, जैसी उसकी आदत थी, तब उसने मीडियसके साथ, उसके प्रार्थना करने पर, ब्यालू की। यहाँ उसने इतनी शराब पी ली कि उसे ज्वर हो आया। यह कहना ठीक नहीं कि उसकी पीठमें अकस्मात् ऐसी वेदना होने लगी मानो किसीने उसपर बरछीका प्रहार किया हो। इस तरहकी बातें उन लेखकोंने अपनी ओरसे गढ़ ली हैं जो समझते हैं कि ऐसे महान् व्यक्तिके सम्बन्धकी मृत्युमें कोई न कोई विलक्षण बात लिखना उनका धर्म है। अरिस्टाव्यूलस लिखता है कि ज्वरकी तेजीके कारण और प्याससे व्याकुल होकर सिकन्दरने खूब मदिरा पी ली जिससे शीघ्र

ही उसे सन्निपात हो गया और जूनकी तीस तारीखको उसका प्राणान्त हो गया।

उसके रोज़नामचेमें लिखा है कि अठारहवीं जूनको ज्वर-ग्रस्त होनेके कारण उसने अपने स्नानागारमें ही शयन किया। दूसरे दिन स्नान करनेके बाद वह अपने कमरेमें चला गया और वहाँ भी मीडियसके साथ चौपड़ खेलता रहा। शामको उसने फिर स्नान किया, देवताओंको बलि चढ़ायी और डट कर भोजन किया। रात्रिमें उसे फिर ज्वर हो आया। बीस तारीखको स्नानादिके उपरान्त वह नहानेकी कोठरीमें ही रहा और नीआरकसकी समुद्रयात्राका वृत्तान्त सुनता रहा। इक्कीस तारीखको भी उसने अपना समय इसी तरह बिताया। दूसरे दिन ज्वर बहुत बढ़ गया और उसने सेनामें खाली हुई जगहोंपर अनुभवी व्यक्तियोंको नियुक्त करनेके सम्बन्धमें प्रधान कर्मचारियोंसे बातचीत की। चौबीस तारीखको उसकी हालत खराब हो गयी। पचीसको वह नदीके उस पार वाले महलमें पहुँचा दिया गया। वहाँ उसे कुछ नींद तो आयी, किन्तु ज्वर कम नहीं हुआ। जब सेनापतिगण उससे मिलने आये तब उसकी बोली बन्द हो गयी थी। दूसरे दिन भी यही हालत रही। यह खबर पाकर मकदूनियन लोगोंने उसे मरा हुआ समझ कर खूब शोरगुल करना शुरू किया। अन्तमें विवश होकर उन्हें भीतर आनेकी अनुमति देनी पड़ी। उसी दिन यह पूछनेके लिए दो आदमी सिरापिसके मन्दिरको भेजे गये कि सिकन्दरको यहाँ ले आवें या नहीं। वहाँसे आदेश हुआ कि वह जहाँ है वहीं रहे। अट्ठाइस तारीखको संध्या समय उसकी मृत्यु हो गयी।

उस समय किसीको इस बातका शक नहीं हुआ था कि उसे ज़हर दिया गया है, किन्तु छः वर्ष बाद कुछ बातोंके आधारपर ओलिम्पियसने बहुतोंको प्राण-दण्ड दिया और कब्रमेंसे आइयोलेअसका शव भी निकाल कर बाहर फेंक दिया गया, मानो उसीने अपने हाथसे सिकन्दरको ज़हर दिया हो। कुछ लोगोंका कहना है कि अरस्तूकी सलाहसे एण्टीपेटरने यह

कुकृत्य किया था किन्तु बहुतोंका ख्याल है कि यह बिलकुल गढ़ी हुई बात थी। इसका एक प्रमाण यह भी है कि यद्यपि प्रान्ताधिकारियोंमें कई दिनों तक झगड़ा होता रहा, फिर भी सिकन्दरके शासका रंग बिलकुल नहीं बदला और न उसमें कोई अन्य परिवर्तन ही हुआ।

इस समय सिकन्दरकी पत्नी रोक्सैना गर्भवती थी, इसीसे मकदूनियन लोग उसकी बड़ी इज्जत करते थे। वह स्टैटिरा नामक अपनी सौतसे बहुत चिढ़ती थी, इसीलिये उसने एक जाली चिट्ठी भेज कर उसे अपने पास बुलवा भेजा। उसने उसे तथा उसकी बहिनको मरवा डाला और उनके शव एक कुएँमें फिकवा दिये। इस कार्यमें परडीक्सने उसकी विशेष सहायता की थी। राजाकी मृत्युके बाद यही आर्हीडियसकी आड़में राज्य-का सर्वेसर्वा बन रहा था। आर्हीडियस फिलिपका ही एक लड़का था। उसकी माताका नाम फिलिना था। यद्यपि लड़कपनमें इसका स्वास्थ्य अच्छा था और बुद्धि भी तेज थी किन्तु बड़े होने पर वह रोगग्रस्त रहने लगा और बुद्धि भी कमज़ोर होती गयी।

८—सीज़र।

जब सिला रोमका अधिपति हुआ, तब उसने चाहा कि सीज़र अपनी पत्नी कारनेलियाका परित्याग कर दे। यह प्रजातंत्रके एक मात्र शासक सिला-की पुत्री थी। सिलाने प्रलोभन भी दिये और धमकी भी दी, पर सफलता नहीं हुई। तब उसने कारनेलियाकी वह सम्पत्ति जब्त कर ली जो उसे दहेजमें मिली थी। सीज़रके प्रति सिलाके शत्रुभावका कारण यह था कि सीज़र मेरियसका सम्बन्धी था। प्रारम्भमें सिलाका ध्यान

इस ओर नहीं गया था। किन्तु जब बालक होते हुए भी सीज़रने जनताके सामने उपस्थित होकर पुरोहित बनाये जानेकी इच्छा प्रकट की, तब सिलाकी आँखें खुली। उसने ऐसा प्रबन्ध किया जिससे पुरोहितका पद उसे न मिल सका। जब उसने सीज़रका वध कर डालनेकी इच्छा की, तब एक मित्रने सलाह दी कि 'इस बालकके वध करनेसे आपको कोई लाभ न होगा।' सिलाने तुरन्त उत्तर दिया "इसे मामूली बालक ही मत समझो। यह मैरियसका भी नगड़दादा है।" जब सीज़रको सिलाके इस मनसूबेका हाल मालूम हुआ, तब वह सैबाइन लोगोंके देशमें जा छिपा। कुछ दिन एक मकानमें रहनेके बाद वह उसे छोड़ कर दूसरेमें चला जाता था। एक बार रातमें जब वह अपना सामान एक मकानसे दूसरे मकानमें ले जा रहा था, तब सिलाके सैनिकोंने उसे पकड़ लिया। उसने उनके कप्तान कारनेलियसको दो टैलैण्टकी घूस देकर अपना पीछा छुड़ाया। अब वह जहाजमें बैठकर बिथिनियाकी ओर चल पड़ा। कुछ दिन ठहरनेके बाद जब वह वहाँसे लौटने लगा, तब फारमेकुसा द्वीपके पास समुद्री डाकुओंके हाथमें फँस गया।

जब इन लुटेरोंने बीस टैलैण्टके बदले उसे छोड़ना स्वीकार किया, तब वह यह ख्याल कर हँसने लगा कि ये लोग मुझे जानते नहीं हैं, तभी इतने सस्तेमें मुझे छोड़नेको तैयार हैं। उसने बड़ी प्रसन्नताके साथ बीसके बजाय पचास टैलैण्ट देना स्वीकार कर लिया। शीघ्र ही उसने चारों ओर अपने आदमी उक्त रक़म एकत्र कर लानेके लिए भेज दिये। अब वह रक्तपिपासु सिलीशियन लोगोंके बीचमें प्रायः अकेला रह गया। उसके साथ केवल एक मित्र तथा दो अनुचर थे। फिर भी वह उनकी कोई परवाह नहीं करता था, यहाँ तक कि जब वह सोना चाहता था तब उनके पास आदमी भेज कर शोर न करनेके लिए आज्ञा दे देता था। अड़तीस दिनतक वह उनके साथ अपना मन-बहलाव करता रहा। वह जो पद्य बनाता अथवा जो भाषण तैयार करता, उसे उन लोगोंसे सुनाया

करता था। जो लोग उसकी रचनाकी प्रशंसा नहीं करते थे, उन्हें वह २ हुँ रूपर ही असभ्य और अशिक्षित कह दिया करता था। माइटीरसके क आ जाने पर यह छोड़ दिया गया। अब उसने तैयारी कर समुद्री लु का पीछा किया और अचानक उनपर हमला कर उनके कई जहाज ि लिये। उनका रुपया उसने अपने अधिकारमें कर लिया और लुटेरों परगेमसमें क़ैद कर दिया। अब उसने एशियाके प्रान्ताधिकारी जूनि ससे उन्हें दण्ड देनेके लिए कहा। जब उसकी ओरसे कुछ देर होते दे तो वह स्वयं परगेमस चला गया और वहाँ उसने क़ैदियोंको मृत्यु आज्ञा दे दी।

इस समय सिलाकी शक्ति बहुत कुछ कम हो गयी थी, अतः सीज़र मित्रोंने उसे रोम लौट आनेकी सलाह दी। किन्तु वह पहले रोड्स चल गया और वक्तृत्व कलाके विशेषज्ञ अपोलोनियसके विद्यालयमें भरती हो गया। इस विद्यालयमें सिसरो भी शिक्षा पाता था। कहते हैं, सीज़रको राजनीतिज्ञ एवं चतुर वक्ता बननेके लिए स्वाभाविक क्षमता प्राप्त थी और उसने इस सम्बन्धमें जो कुछ परिश्रम किया था उससे वह सुप्रसिद्ध वक्ताओंमें सहज ही द्वितीय स्थान पानेका अधिकारी कहा जा सकता है। इससे अधिक ख्याति प्राप्त करना उसे अभीष्ट भी न था। उसका विशेष ध्यान सर्वश्रेष्ठ योद्धा एवं शासक बननेकी ओर ही था, इसीसे वह उतना प्रसिद्ध वक्ता नहीं बन सका जितना अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तिके कारण बनना उसके लिए सम्भव था।

जब वह रोम लौट आया, तब उसने डोलाबेलापर कुशासनका दोषारोपण किया। ग्रीसके कई नगरोंने उसका समर्थन किया। डोला-बेला बरी कर दिया गया। सीज़रको ग्रीक लोगोंसे जो सहायता मिली थी, उसके बदलेमें उसने भी पबलियस अनटोनियसपर घूसखोरी इत्या-दिका अभियोग चलानेमें उनका समर्थन किया। इसका प्रभाव यहाँ तक पड़ा कि अनटोनियसको यह कह कर रोमके जनशासकोंके पास अपने

मुकदमेकी अपील करनी पड़ी कि ग्रीक लोगोंके बीचमें रहते हुए ग्रीसमें मेरे पक्षकी सुनाई नहीं हो सकती। रोममें मुकदमे इत्यादिके सम्बन्धमें बहस करते समय उसने ऐसा वाक्चातुर्य प्रदर्शित किया कि लोगोंपर उसकी धाक शीघ्र ही जम गयी। लोगोंसे बातचीत करनेका ढङ्ग तथा उनसे व्यवहार करनेका उसका तरीक़ा इतना अच्छा था कि उसे उनका स्नेहभाजन बननेमें भी विलम्ब न लगा। उसके घर जानेमें किसीके लिए कोई रोक टोक न थी। वह लोगोंको भोज तथा तमाशों इत्यादिमें सम्मिलित होनेके लिए निमंत्रण भी दिया करता था। इन सब कारणोंसे धीरे धीरे उसका राजनीतिक प्रभाव बढ़ता ही गया। प्रारम्भमें उसके शत्रुओंने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उनका ख्याल था कि सीज़रके पास जब रुपया नहीं रह जायगा तब उसका राजनीतिक प्रभाव अपने आप नष्ट हो जायगा, किन्तु जब उसकी शक्ति निश्चित रूपसे बढ़ गयी और जब सारी शासन-व्यवस्थाको बदल डालनेकी ओर उसकी प्रवृत्ति स्पष्ट रूपसे देख पड़ने लगी, तब उनकी आँखें खुलीं—उन्होंने समझ लिया कि कोई कार्य प्रारम्भमें चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, यदि उसकी सफलताके लिए बराबर प्रयत्न किया जाय तो बादमें वह विशेष महत्त्वपूर्ण एवं बृहद्रूप धारण कर लेता है और यदि शुरूमें किसी खतरेकी उपेक्षा कर दी जाय तो फिर बादमें ऐसा अवसर भी आ सकता है जब उसपर विजय पाना असम्भव हो जाय। सबसे पहले कदाचित् सिसरोको इस बातकी शंका हुई कि सीज़रकी मंशा राज्यमें हस्तक्षेप करनेकी है, अस्तु।

सीज़रको लोगोंकी कृपादृष्टिका प्रथम प्रमाण तब मिला जब वह उनके बहुमतसे सेनामें सार्वजनिक शासकका पद प्राप्त कर सका। उसकी लोकप्रियताका दूसरा उदाहरण उसकी बुआ जूलियाकी मृत्युके समयकी घटना है। यद्यपि जूलिया (सिलाके शत्रु) मेरियसकी पत्नी थी, फिर भी उसकी मृत्युपर उसने सर्वसाधारणके बीचमें खड़े होकर उसकी भूरि

भूरि प्रशंसा करते हुए एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया। उसकी अन्त्येष्टि क्रियाके समय उसने मेरियस तथा उसके पुत्रकी मूर्त्तियोंका प्रदर्शन भी किया। जबसे शासनसूत्र सिलाके हाथमें आया था, तबसे अभी तक कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं कर सका था, क्योंकि मेरियस पक्षके लोग उसी दिनसे राज्यके शत्रु समझे जाने लगे थे। जब कुछ लोगोंने उसका विरोध करना चाहा, तब सर्वसाधारणने जोरोंसे चिल्ला कर तथा तालियाँ बजा कर उसका समर्थन किया। रोममें अभीतक यह प्रथा प्रचलित थी कि प्रायः वृद्ध महिलाओंकी मृत्यु पर ही प्रशंसात्मक भाषण किये जाते थे। सीजरने पहले पहल इस प्रथाको भङ्ग कर अपनी पत्नीकी मृत्युपर भी, जो नवयुवती थी, ऐसा एक व्याख्यान दिया। उसके हृदयकी यह सौहार्द्रता देख कर लोग बहुत प्रसन्न हुए और वे उसे अत्यन्त कोमलचित्त एवं दयालु समझने लगे। पत्नीका अन्तिम संस्कार करनेके बाद वह एक न्यायाधीशका सहायक बनकर स्पेन चला गया। कुछ दिनोंके बाद वह स्वयं न्यायाधीशके पदपर नियुक्त हो गया। इस पदसे हटनेपर उसने पाम्पियाके साथ अपना तीसरा विवाह किया। इस समय उसके कारनेलिया नामकी एक लड़की थी जो उसकी पहली पत्नीसे उत्पन्न हुई थी और जिसका विवाह उसने बादमें महान् पाम्पीके साथ कर दिया। उसका खर्च इतना बढ़ा हुआ था कि किसी सार्वजनिक पदपर नियुक्त होनेके पूर्व कोई तेरह सौ टेलेण्टका कर्ज उसके ऊपर हो गया था। यह देख कर कई लोगोंका ख्याल हुआ कि जनताकी कृपाके सदृश अनिश्चित एवं अस्थायी वस्तुके लिए इतना अधिक व्यय करना बुद्धिमानी नहीं है, किन्तु वास्तवमें वह बहुत कम दाम देकर एक बहुमूल्य वस्तु खरीद रहा था। जब वह एपियन सड़कका निरीक्षक बनाया गया, तब उसने सार्वजनिक रुपयेके सिवा अपना भी बहुतसा रुपया खर्च कर दिया। जब वह खेल तमाशों इत्यादिका अधिपति बनाया गया, तब उसने हिंसक पशुओं इत्यादिसे लड़नेवाले ३२० जोड़ तैयार

किये और नाट्यशालाओं, जुलूसों, तथा सार्वजनिक भोजोंमें इतनी उदारताका परिचय दिया कि जिसकी तुलनामें उसके पूर्वगामी प्रायः सभी लोगोंके प्रयत्न फीके पड़ गये। सर्वसाधारणमें वह इतना लोकप्रिय हो गया कि लोग उसकी इस उदारताका बदला चुकानेके लिए उसे हमेशा नये नये पद तथा सम्मान दिलानेकी फिक्रमें रहा करते थे।

नगरमें दो दल थे। एक तो सिलाके अनुयायियोंका और दूसरा मेरियसके पक्षवालोंका जो बहुत गिरी हुई अवस्थामें था। सीज़रने दूसरे दलको ही अपनाना ठीक समझा। जब वह खेल तमाशोंका अधिपति था और लोग उससे बहुत प्रसन्न थे, तब उसने एक बार रातमें मेरियस तथा विजयकी प्रतिमाएँ चुपचाप उठवा कर बृहस्पति देवके मन्दिरमें रखवा दीं। दूसरे दिन प्रातःकाल लोगोंने जब सोनेसे चमकती हुई इन सुन्दर आकृतियोंको देखा जिन पर सिम्ब्रियन लोगोंके साथ किये गये युद्धमें प्रदर्शित मेरियसके पराक्रमका वर्णन खुदा हुआ था, तब उन्हें उस आदमीके साहसपर बड़ा आश्चर्य हुआ जिसने उक्त मूर्तियोंको वहाँपर प्रस्थापित किया था। यह निर्भीक व्यक्ति कौन था, इसका पता लगानेमें उन्हें देर न लगी। उसकी ख्याति शीघ्रतासे चारों ओर फैलने लगी। बहुतसे लोग उसकी सहायताके लिए तैयार हो गये। यह देख कर कुछ लोगोंने शोर मचाना शुरू किया कि कुलीन-सभाने क़ानून बना कर जिन सम्मानोंका प्रदर्शन रोक दिया था, उन्हें इस तरह पुनर्जीवित करनेका यह प्रयत्न वर्त्तमान शासनको नष्ट करनेकी चेष्टाका द्योतक है। सीज़रका यह कृत्य केवल इस बातकी थाह लेनेके लिए किया गया था कि भविष्यमें जो जो परिवर्त्तन मैं करना चाहता हूँ उनमें जनता कहाँतक मेरा साथ देनेके लिए तैयार है। किन्तु इससे मेरियसके पक्षवालोंका साहस बढ़ गया। वे बहुत बड़ी संख्यामें बृहस्पतिदेवके मन्दिरमें आ जुटे और सीज़रकी प्रशंसा करने लगे। यह देख कर शीघ्र ही कुलीन-सभाकी बैठक बुलायी गयी। उसमें एक सदस्यने बड़े तीव्र शब्दोंमें

सीज़रकी आलोचना की और कहा कि "सीज़र अब वर्तमान शासनको नष्ट करनेके लिए सुरंग नहीं खोद रहा है, बल्कि वह बहुत आगे बढ़ गया है। अब तो वह सुरंगमें बारूद बिछानेका प्रयत्न कर रहा है।" यह सुन कर सीज़रने अपने कृत्यपर अफसोस ज़ाहिर किया, जिससे कुलीन-सभा सन्तुष्ट हो गयी।

इसी समय मेटेलसका, जो प्रधान पुरोहित था, देहान्त हो गया और उसके पदके लिए केटुलस तथा इज़ाउरिक्स नामक दो उम्मेदवार खड़े हो गये। कुलीन-सभा पर इनका विशेष प्रभाव था। सीज़रने इसकी चिन्ता न की। उनके मुक़ाबलेमें उसने भी अपनेको उम्मेदवार-की हैसियतसे जनताके सामने पेश किया। सफलताकी आशा न देख कर केटुलसने सीज़रके पास संदेशा भेजा और उसे एक बड़ी रक़मका प्रलोभन देकर फाँसना चाहा। सीज़रने जवाब दिया कि यदि आवश्यकता हुई तो मैं चुनावके लिए इससे भी बड़ी रक़म कर्ज़ लेकर खर्च करनेको तैयार हूँ। चुनावके दिन जब सीज़रकी माता सजल नेत्रोंके साथ उसे विदा देने लगी तब उसने कहा "माता, आज तुम मुझे या तो प्रधान पुरोहितके पदपर आरूढ़ देखोगी या फिर देशसे निकला हुआ पाओगी।" जब वोट गिने गये तो सीज़रके पक्षमें सबसे अधिक वोट आये। यह देख कर कुलीन-सभाके सदस्य तथा अमीर लोग मनमें डर गये। उन्हें शंका होने लगी कि कहीं यह जनताको अन्य बातोंके लिए न उभाड़े। पीसो तथा केटुलसने तो सिसरोको इसलिए दोष देना शुरू किया कि उसने केटिलाइनके षड्यंत्रके समय अच्छा अवसर पाकर भी सीज़रको छोड़ दिया। केटिलाइनने वर्तमान शासनको उलट देनेका प्रयत्न किया था। साजिशका पूरा पूरा पता लगनेके पहले ही वह भाग गया था, किन्तु जाते समय अपना काम लेनटूलस तथा केथेगस नामक दो व्यक्तियोंको सौंप गया था। सीज़र भी गुप्त रूपसे उनकी सहायता करता था या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता। इतना निश्चित है कि कुलीन-सभाने उक्त दोनों

व्यक्तियोंको दोषी पाया और जब प्रधान शासक सिसरोने उन्हें दण्ड देनेके सम्बन्धमें सदस्योंकी राय पूछी, तब सीज़रके पहले बोलनेवाले प्रत्येक सदस्यने प्राणदण्डकी सलाह दी, किन्तु सीज़रने एक प्रभावशाली व्याख्यान द्वारा इस रायका विरोध किया। उसने कहा "मैं समझता हूँ कि जबतक पूरी पूरी जाँच न हो जाय और जबतक उनके मामलेपर भली भाँति विचार न किया जाय, तब तक ऐसे प्रतिष्ठित लोगोंको प्राण-दण्ड देना न्यायसंगत न होगा। ये इटलीके किसी भी शहरमें जहाँ सिसरोकी इच्छा हो, क़ैद किये जा सकते हैं। जब कैटिलाइनकी साजिशका पूरा पता लग जाय और वह परास्त कर दिया जाय, तब कुलीन-सभा शान्तिपूर्वक इस मामलेपर विचार करे तो अच्छा होगा। उस समय वह जैसा उचित समझेगी, वैसा निर्णय करेगी।"

सीज़रने इतनी चतुराईसे अपने मतका प्रतिपादन किया और ऐसी वाक्पटुता दिखलायी कि जिन लोगोंने उसके पीछे अपनी राय प्रकट की उन सबने उसके ही कथनका समर्थन किया। जो लोग उसके पहले बोल चुके थे उन्होंने भी अपनी राय बदल दी। किन्तु जब कैटुलस और कैटोकी बारी आयी, तब उन्होंने ज़ोरोंसे सीज़रके कथनका विरोध किया। कैटोने तो यहाँ तक कह दिया कि मुझे सीज़रपर भी सन्देह है। उसने इस मामलेमें इतना ज़ोर लगाया कि अन्तमें दोनों अभियुक्तोंको फाँसीकी ही सजाका हुक्म हुआ। ज्यों ही सीज़र सभा-भवनसे उठकर बाहर जाने लगा, त्यों ही बहुतसे नवयुवक नंगी तलवारें हाथमें लेकर उसपर टूट पड़े। कहते हैं, उस समय क्यूरियोने अपना चोगा उसके ऊपर फेंक कर उसकी रक्षा की और उसे वहाँसे हटा ले गया। सिसरोने स्वयं नवयुवकोंको इशारा किया कि वे उसे न मारें। इसका कारण या तो यह हो सकता है कि उसे जनता का भी भय था या यह कि सिसरो खुद इस तरह सीज़रके प्राण लेनेके विरुद्ध था। यदि यह बात सच है तो न जाने क्यों "सिसरो" ने अपनी पुस्तकमें इसका कुछ भी उल्लेख नहीं किया।

बादमें लोगोंने उसे दोष देना शुरू किया कि ऐसा अच्छा मौका हाथ आते हुए भी उसने मौकेको छोड़ दिया ।

अब सीज़र उपशासकके पदपर नियुक्त हुआ । इस समय एक ऐसी घटना हो गयी जिसके कारण उसे अपनी पत्नी पाम्पियाका परित्याग करना पड़ा । पब्लियस क्लोडियस नामक व्यक्ति, जो एक अमीर खान-दानमें पैदा हुआ था और जो अपनी बातचीतके लिए बहुत प्रसिद्ध था, अत्यन्त उच्छृंखल जीवन व्यतीत करता था । वह पाम्पियापर अनुरक्त था और पाम्पिया भी उससे घृणा नहीं करती थी । किन्तु सीज़रकी माता जो बड़े सदाचारकी स्त्री थी, हमेशा पाम्पियापर नज़र रखती थी, अतः किसी भी व्यक्तिके लिए उससे मिलना अत्यन्त कठिन और खतरनाक था । रोमन लोगोंकी एक देवीका नाम बोना है । ग्रीक-वालोंका कहना है कि यह बक्सदेव(डिनासदेव) की माता है जिसका नाम लेना वर्जित है । इसीसे जो स्त्रियाँ उसके नामपर उत्सव मनाती हैं, वे तम्बुओंको अंगूरकी लताओंसे ढाँक देती हैं । जब उत्सव मनाया जाता है, तब किसी पुरुषका पासमें खड़े रहना या मकानके भीतर ठहरना अनुचित समझा जाता है । उत्सव मनाने तथा पूजा इत्यादिका कुछ कार्य स्त्रियाँ केवल अपने बूतेपर करती हैं । जब उत्सवका समय आता है तब गृह-पति, जो प्रायः प्रधान शासक या उप-शासक होता है, घर छोड़ कर बाहर चला जाता है और उसके साथ ही घरके और मर्द भी वहाँसे हट जाते हैं । उत्सवका प्रधान कार्य रातमें होता है । स्त्रियाँ खेल-कूद तथा गाने-बजानेमें अपना समय बिताती हैं ।

इस समय पॉम्पियाको इस उत्सवकी तैयारी करते देख कर क्लोडियस-ने गानेवाली लड़कीका वेश धारण किया और पहलेसे सधी हुई दासीकी सहायतासे मकानके अन्दर प्रवेश किया । उसे एक स्थानपर बैठा कर दासी पॉम्पियाको इस बातकी खबर करने गयी । उसके आनेमें विलम्ब होते देख कर क्लोडियससे न रहा गया । वह तेज रोशनीसे अपनेको बचाता

हुआ एक कोठरीसे दूसरी कोठरीमें घूमने लगा। इतनेमें औरेलियाकी दासीने उसे देखा और उसे अपने साथ खेलनेके लिए बुलाया। ऐसा करनेसे इनकार करने पर उसने उसका नाम-धाम पूछा। क्लोडियसने कहा कि "मैं पॉम्पियाकी दासी एब्राकी सखी हूँ और उसीकी प्रतीक्षा कर रही हू।" क्लोडियसकी आवाज़ सुन कर उसे शंका हुई और वह भयके मारे "यह स्त्री नहीं पुरुष है, यह स्त्री नहीं पुरुष है" इस प्रकार चिल्लाती हुई जहाँ अन्य स्त्रियाँ बैठी हुई थीं, वहाँ भाग गयी। औरेलियाने पूजा इत्यादिकी सामग्री तुरन्त ढाँक दी और गाना-बजाना बन्द करा दिया। उसने सब दरवाज़ोंको बन्द करनेकी आज्ञा दी और रोशनी लेकर क्लोडियसको ढूँढ़ने लगी। क्लोडियस जो उसी दासीके कमरेमें जा छिपा था, तुरन्त पकड़ लिया गया। स्त्रियोंने उसे पहचान लिया और धक्के मार कर मकानके बाहर निकाल दिया। घर लौट कर उन लोगोंने सारा वृत्तान्त अपने अपने पतियोंसे कहा। सवेरा होते होते क्लोडियसके दुष्प्रयत्नकी कथा सारे नगरमें फैल गयी। न्यायाधीशने उसपर एक धार्मिक उत्सवमें विघ्न डालनेका अभियोग लगाया। कुलीन-सभाके कई सदस्योंने उसके नैतिक आचरणकी पोल खोलते हुए उसके विरुद्ध गवाही दी। किन्तु जनताने अमीरोंको इस प्रकार गुट बाँधते देख कर उनका विरोध किया और क्लोडियसके पक्षका समर्थन किया। जज लोग भी जनताका यह रुख देख कर डर गये। सीज़रने तुरन्त पाम्पियाका परित्याग कर दिया, किन्तु जब क्लोडियसके अपराधके सम्बन्धमें साक्ष्य देनेके लिए उससे कहा गया तब उसने कह दिया कि क्लोडियससे मुझे कोई शिकायत नहीं है। सीज़रका यह परस्परविरोधी व्यवहार देखकर अभियोक्ताने पूछा "तब आपने अपनी पत्नीका परित्याग क्यों किया?" सीज़रने जवाब दिया, "क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरी पत्नी ऐसी हो जिसके सदाचारके सम्बन्धमें किसीके मनमें ज़रा भी सन्देह उत्पन्न होनेकी सम्भावना हो।" कुछ लोगोंका कहना है कि सीज़रका सचमुच ऐसा ही ख्याल

था, किन्तु और लोगोंका अनुमान है कि क्लोडियसको बचानेके लिए जनताको उत्सुक देख कर उसे सन्तुष्ट करनेकी गरज़से ही सीज़रने ऐसा किया। जो हो, क्लोडियस अपने अपराधकी सज़ा पानेसे बच गया।

अब सीज़र उपशासक (प्रीटर) के पदसे हट गया था और स्पेनका प्रान्ताधिकारी बना दिया गया था। जब वह स्पेनके लिए प्रस्थान करने लगा, तब उसके ऋणदाताओंने चारों ओरसे उसे घेर लिया और उसे तंग करनेके लिए गड़बड़ करने लगे। लाचार होकर उसे रोमके सबसे धनी व्यक्ति क्रैससकी शरण लेनी पड़ी। क्रैसस भी पाम्पीके विरुद्ध सीज़रकी सहायता चाहता था क्योंकि सीज़रमें शक्ति भी थी और उत्साह भी था। इसलिये उसने उन महाजनोंके सम्मुख कानेका ज़िम्मा अपने ऊपर ले लिया जो अपना रुपया पानेके लिए अत्यधिक व्यग्र हो उठे थे। इस प्रकार जब उसने ८३० टैलेण्टका ऋण चुकानेका भार अपने ऊपर ले लिया, तब सीज़र अपने प्रान्तके लिए रवाना हो सका। जब वह आल्प्स पहाड़को पार करते समय एक छोटेसे गाँवमेंसे होकर निकला जिसके रहनेवाले अत्यन्त ग़रीब थे, तब उसके साथियोंने चिढ़ानेके लिए आपसमें यह प्रश्न किया "क्या यहाँके लोग भी बड़े बड़े ओहदे पानेके लिए एक दूसरेके हाथ जोड़ते फिरते हैं? क्या यहाँ भी बड़े बड़े लोगोंकी आपसकी लड़ाई दृष्टिगोचर होती है?" यह सुनकर सीज़रने गम्भीरतापूर्वक जवाब दिया "यदि मेरी बात पूछो तो मैं रोममें रह कर द्वितीय व्यक्ति बननेके बजाय इन लोगोंके बीचमें रह कर प्रथम व्यक्ति बनना ज़्यादा पसन्द करूँगा।" कहते हैं, इसी प्रकार एक बार स्पेनमें काम-काजसे छुट्टी पानेके बाद सिकन्दरके इतिहासका कुछ भाग पढ़ कर वह बहुत देर तक विचार-मग्न होकर बैठा रहा। फिर एकाएक व्याकुल होकर रो पड़ा। उसके मित्रोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने इसका कारण पूछा। इसने उत्तर दिया "क्या आप लोग भी ऐसा ख़्याल नहीं करते कि मेरा रोना उचित ही है, जब मैं यह देखता हूँ कि मेरी

ही जितनी अवस्थामें सिकन्दर अनेक देशोंपर विजय प्राप्त कर चुका था, और मैंने अभीतक एक भी काम ऐसा नहीं किया जो चिरस्मरणीय कहा जा सके ?" स्पेन आनेके बाद ही वह बड़ी तत्परतासे अपने काममें जुट गया था। पैदल सिपाहियोंकी जो बीस टुकड़ियाँ वहाँ पहलेसे मौजूद थीं, उनके सिवा दस नयी टुकड़ियाँ और उसने शीघ्र ही तैयार कर लीं। इन्हें साथ लेकर उसने कैलेसी और लसीटानी लोगोंपर आक्रमण किया और उन्हें जीत लिया। इसी प्रकार वह समुद्रके किनारे तक बढ़ता गया और उन जातियोंपर अधिकार जमाता गया जो इसके पहले कभी रोमन शासनके अन्तर्गत नहीं हुई थीं। फौजी मामलोंमें सफलता प्राप्त कर उसने मुल्की शासनमें भी अच्छी ख्याति प्राप्त की। उसने भिन्न भिन्न उपराज्योंमें परस्पर मेल स्थापित करनेकी कोशिश की और ऋण लेनेवालों तथा महाजनोंका मतभेद दूर करनेका भी प्रयत्न किया। उसने आज्ञा निकाली कि कर्ज़दारकी वार्षिक आमदनीका दो तृतीयांश ऋणदाता (महाजन) को दिया जाय, शेषांशका प्रबन्ध कर्ज़दार स्वयं करे। यह प्रबन्ध तब तक चलता रहे जब तक सारा ऋण चुका न दिया जाय। इन सब कार्योंके कारण, जब उसने स्पेन छोड़ा तब, उसका खूब नाम हो गया था।

रोमन लोगोंमें एक क़ानून है कि जो विजयके उपलक्ष्यमें निकाले गये जुलूसका अग्रणी बननेका सम्मान चाहता हो, उसे नगरके बाहर ही ठहरना चाहिये और वहींसे उत्तरकी प्रतीक्षा करनी चाहिये। इसके अतिरिक्त वहाँ एक क़ानून यह भी है कि जो प्रधान शासक (कौंसल) के पदके चुनावके लिए खड़े हों, उन्हें चुनावकी जगहमें स्वयं उपस्थित रहना चाहिये। सीज़र ठीक उसी समय घर पहुँचा जब प्रधान शासकोंका चुनाव होनेवाला था। उसने इन दो परस्पर-विरोधी कानूनोंके असमंजसमें पड़ कर कुलीन-सभासे प्रार्थना की कि यद्यपि कानूनके अनुसार मुझे नगरके बाहर ही ठहरना पड़ेगा, फिर भी मुझे चुनावके

सेनानायक या प्रान्ताधिकारी इत्यादि पदोंपर एक दूसरेको नियुक्त कराना अत्यन्त गर्हित है। जब सीज़रके साथी पाम्पियसने देखा कि उसके विरोधका विरोध करनेसे कोई लाभ न होगा और यह ख्याल किया कि न्यायालयमें मेरे मार डाले जानेकी आशङ्का है, तब वह अपने घरके भीतर ही रहने लगा और प्रधान शासकके पदकी शेष अवधि उसने वहीं समाप्त की। विवाह हो जानेके बाद पाम्पीने न्यायालयमें अपने सैनिक खड़े कर दिये और नये कानूनोंको स्वीकार करनेमें सर्वसाधारणकी सहायता की। साथ ही उसने आल्प्स पहाड़के दोनों तरफ समस्त गाल (फ्रांस) प्रान्तका शासन सीज़रको दिला दिया और पाँच वर्षके लिए उसे चार पलटनोंका अधिपति नियुक्त कर दिया। केटोने इन कार्रवाइयोंका विरोध करनेकी चेष्टा की, किन्तु सीज़र उसे पकड़ कर बन्दीगृहकी तरफ ले चला। उसने समझा था कि केटो रास्तेमें जनशासकों (ट्रिब्यून्स) से हस्तक्षेप करनेकी प्रार्थना करेगा। किन्तु उसने देखा कि केटो बिलकुल चुपचाप चलने लगा, उसने किसीसे एक शब्द भी नहीं कहा। केटोको इस हालतमें जाते देख कर अमीरोंको बड़ा गुस्सा आया और जनता भी, केटोके सद्गुणोंका ख्याल कर, बड़े उदास भावसे उसके पीछे पीछे चलने लगी। तब सीज़रने एक जन-शासकसे उसे बचानेके लिए, निजी तौरसे कहा। सिनेट सभाके अन्य सदस्योंमेंसे थोड़े ही सभामें गये थे, शेष अपने घर-पर ही रहे, क्योंकि वे सीज़रके सैनिकोंके कारण भयभीत थे। सीज़र जब कौंसलके पदपर आरूढ़ था, तब एक लज्जाजनक बात यह हुई कि जिस क्लोडियसने उसके घरमें प्रवेश कर उसकी पत्नीसे अनुचित सम्बन्ध स्थापित करना चाहा था, उसीको ट्रिब्यूनका पद दिलानेमें उसने उसकी सहायता की। सिसरोको बाहर निकालनेकी दृष्टिसे ही क्लोडियस जान-बूझ कर ट्रिब्यून चुना गया। सीज़रने अपनी सेनासे जा मिलनेके लिए तबतक शहरसे प्रस्थान नहीं किया जबतक सिसरो पराजित कर इटलीके बाहर नहीं निकाल दिया गया।

गॉलके युद्धोंके पहले सीज़रके जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली ये ही सिद्ध घटनाएँ हैं। इसके बादसे मानो उसने एक नये मार्गका अवलम्बन किया और नये कार्यक्षेत्रमें प्रवेश किया। इस समय उसने जो लड़ाइयाँ लड़ीं और गॉलपर विजय प्राप्त करनेके लिए जो युद्ध-यात्राएँ कीं, उनसे यह स्पष्ट प्रमाणित हो गया कि संसारके बड़ेसे बड़े एवं सुख्यात सेनापतियोंसे वह किसी प्रकार कम साहसी या कम कुशल सेनापति नहीं था। कई बातोंमें तो वह बड़े बड़े महारथियोंसे भी आगे बढ़ गया था। जिस देशमें उसे लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी थीं, उसकी कठिनाइयोंके लिहाजसे यदि वह एकको मात करता था, तो दूसरेसे अपने द्वारा जीते हुए प्रदेशके अधिक विस्तारके कारण बाजी मारता था और तीसरेसे इस बातमें बढ़ जाता था कि जिन शत्रुओंपर उसने जय पायी उनकी शक्ति और संख्या बहुत बड़ी थी। उसने अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं और बहुसंख्यक शत्रुओंका संहार किया। गॉलमें युद्ध करते हुए उसे दस वर्ष भी न हुए थे कि उसने आठ सौ नगरोंपर कब्जा कर लिया और कोई तीन सौ छोटे छोटे राज्यों (जिलों) पर विजय प्राप्त की। समय समयपर जितने शत्रुओंसे उसे युद्ध करना पड़ा उनकी सम्मिलित संख्या तीस लाखसे कम न होगी। इनमेंसे उसने दस लाखका संहार कर डाला और दस लाखको बन्दी बना लिया।

सीज़रके सैनिक सच्चे दिलसे उसे चाहते थे और उसके लिए अपनी जान देनेको तैयार रहते थे। विशेषकर जहाँ सीज़रके यश-अपयशकी बात होती वहाँ वे अपूर्व साहस और वीरता प्रदर्शित करते थे। एक बार जब मार्सेल्ज़के सामने जल-युद्ध हो रहा था, तब ऐसीलियस नामक एक सैनिकका दाहना हाथ तलवारके प्रहारसे बिलकुल कट गया; फिर भी उसने अपनी ढाल बायें हाथसे गिरने नहीं दी, बल्कि उसीसे दुश्मनोंके मुँहपर ऐसे प्रहार किये कि अन्तमें उसने उन्हें मार भगाया और जहाज-पर अधिकार कर लिया। ऐसा ही एक वीर सैनिक कैसियस स्कीह्वा था,

सेनानायक या प्रान्ताधिकारी इत्यादिके पदोंपर एक दूसरेको नियुक्त कराना अत्यन्त गर्हित है। जब सीज़रके साथी वाइबूलसने देखा कि उसके विरोधका विरोध करनेसे कोई लाभ न होगा और यह ख्याल किया कि न्यायालयमें मेरे मार डाले जानेकी आशङ्का है, तब वह अपने घरके भीतर ही रहने लगा और प्रधान शासकके पदकी शेष अवधि उसने वहीं समाप्त की। विवाह हो जानेके बाद पाम्पीने न्यायालयमें अपने सैनिक खड़े कर दिये और नये कानूनोंको स्वीकार करनेमें सर्वसाधारणकी सहायता की। साथ ही उसने आल्प्स पहाड़के दोनों तरफ समस्त गाल (फ्रांस) प्रान्तका शासन सीज़रको दिला दिया और पाँच वर्षके लिए उसे चार पलटनोंका अधिपति नियुक्त कर दिया। कैटोने इस कारवाईका विरोध करनेकी चेष्टा की, किन्तु सीज़र उसे पकड़ कर बन्दीगृहकी तरफ ले चला। उसने समझा था कि कैटो रास्तेमें जनशासकों (ट्रिब्यून्स) से हस्तक्षेप करनेकी प्रार्थना करेगा। किन्तु उसने देखा कि कैटो बिल्कुल चुपचाप चलने लगा, उसने किसीसे एक शब्द भी नहीं कहा। कैटोको इस हालतमें जाते देख कर अमीरोंको बड़ा गुस्सा आया और जनता भी, कैटोके सद्गुणोंका ख्याल कर, बड़े उदास भावसे उसके पीछे पीछे चलने लगी। तब सीज़रने एक जन-शासकसे उसे बचानेके लिए, निजी तौरसे कहा। सिनेट सभाके अन्य सदस्योंमेंसे थोड़े ही सभामें गये थे, शेष अपने घर पर ही रहे, क्योंकि वे सीज़रके सैनिकोंके कारण भयभीत थे। सीज़र जब कौंसलके पदपर आरूढ़ था, तब एक लज्जाजनक बात यह हुई कि जिस क्लोडियसने उसके घरमें प्रवेश कर उसकी पत्नीसे अनुचित सम्बन्ध स्थापित करना चाहा था, उसीको ट्रिब्यूनका पद दिलानेमें उसने उसकी सहायता की। सिसरोको बाहर निकालनेकी दृष्टिसे ही क्लोडियस जान-बूझ कर ट्रिब्यून चुना गया। सीज़रने अपनी सेनासे जा मिलनेके लिए तबतक शहरसे प्रस्थान नहीं किया जबतक सिसरो पराजित कर इटलीके बाहर नहीं निकाल दिया गया।

गॉलके युद्धोंके पहले सीज़रके जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली ये ही प्रसिद्ध घटनाएँ हैं। इसके बादसे मानो उसने एक नये मार्गका अवलम्बन किया और नये कार्यक्षेत्रमें प्रवेश किया। इस समय उसने जो लड़ाइयाँ लड़ीं और गॉलपर विजय प्राप्त करनेके लिए जो युद्ध-यात्राएँ कीं, उनसे यह स्पष्ट प्रमाणित हो गया कि संसारके बड़ेसे बड़े एवं सुख्यात सेनापतियोंसे वह किसी प्रकार कम साहसी या कम कुशल सेनापति नहीं था। कई बातोंमें तो वह बड़े बड़े महारथियोंसे भी आगे बढ़ गया था। जिस देशमें उसे लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी थीं, उसकी कठिनाइयोंके लिहाजसे यदि वह एकको मात करता था, तो दूसरेसे अपने द्वारा जीते हुए प्रदेशके अधिक विस्तारके कारण बाजी मारता था और तीसरेसे इस बातमें बढ़ जाता था कि जिन शत्रुओंपर उसने जय पायी उनकी शक्ति और संख्या बहुत बड़ी थी। उसने अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं और बहुसंख्यक शत्रुओंका संहार किया। गॉलमें युद्ध करते हुए उसे दस वर्ष भी न हुए थे कि उसने आठ सौ नगरोंपर कब्जा कर लिया और कोई तीन सौ छोटे छोटे राज्यों (जिलों) पर विजय प्राप्त की। समय समयपर जितने शत्रुओंसे उसे युद्ध करना पड़ा उनकी सम्मिलित संख्या तीस लाखसे कम न होगी। इनमेंसे उसने दस लाखका संहार कर डाला और दस लाखको बन्दी बना लिया।

सीज़रके सैनिक सच्चे दिलसे उसे चाहते थे और उसके लिए अपनी जान देनेको तैयार रहते थे। विशेषकर जहाँ सीज़रके यश-अपयशकी बात होती वहाँ वे अपूर्व साहस और वीरता प्रदर्शित करते थे। एक बार जब मार्सेल्ज़के सामने जल-युद्ध हो रहा था, तब ऐसीलियस नामक एक सैनिकका दाहना हाथ तलवारके प्रहारसे बिल्कुल कट गया, फिर भी उसने अपनी ढाल बायें हाथसे गिरने नहीं दी, बल्कि उसीसे दुश्मनोंके मुँहपर ऐसे प्रहार किये कि अन्तमें उसने उन्हें मार भगाया और जहाज-पर अधिकार कर लिया। ऐसा ही एक वीर सैनिक कैसियस स्कीव्हा था,

किन्तु यहाँ होने और मेरे बदलेमें दो एक मित्रोंको उम्मेदवारीकी अनुमति दी जाय। केटोने इस कानूनका सहारा लेकर इसका विरोध किया, किन्तु जब उसने सिनेटके कई सदस्योंको साथ सीजरके पक्षमें देखा, तब उसने दूसरी युक्ति सोची। वह इस प्रस्तावको लेकर दिन भर बहस ही करता रहा। परिणाम यह हुआ कि उस दिन इस सम्बन्धमें कोई निश्चय न हो सका। तब सीजरने विजयोत्सवका जुलूस निकालनेका विचार छोड़ दिया और कौंसलके पदके चुनावके लिए ही प्रयत्न करना आरम्भ किया। नगरमें प्रवेश करनेके बाद पहला काम उसने यह किया कि क्रैसस और पाम्पीमें मेल करा दिया। ये दोनों सज्जन रोमके सबसे अधिक शक्तिशाली पुरुष थे। इनमें परस्पर जो वैमनस्य था उसे दूर कर, इनकी सम्मिलित शक्तिके कारण सीजरने अपनी स्थिति और भी अधिक दृढ़ बना ली। इस प्रकार इस अच्छे कामके बहाने सीजरने वहाँ-के शासनमें एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी जिसे हम "क्रान्ति" ही कह सकते हैं। जिन लोगोंका यह ख्याल है कि रोमके गृहयुद्धोंका कारण पाम्पी और सीजरका आपसका झगड़ा था, वे भ्रममें हैं। वास्तवमें प्रजातन्त्रको नष्ट करनेके लिए इन दोनोंका एक हो जाना और फिर अपने अपने अभीष्टकी सिद्धिके लिए अलग अलग मार्गोंका अनुसरण करना ही गृहकलहका मूल कारण है। इन दोनोंकी मैत्रीका क्या परिणाम होगा, यह कैटोने पहले ही कह दिया था, पर उस समय लोगोंने उसे अकारण द्वेष करनेवाला और व्यर्थ ही झंझट डालनेवाला समझा, अस्तु।

निदान क्रैसस और पाम्पीकी सहायतासे सीजर कौंसल (प्रधान-शासक) चुन लिया गया। कैल्पर्नियस वाइबूलस उसका साथी नियुक्त हुआ। अपने पदपर आरूढ़ होते ही उसने ऐसे कई बिल पेश किये जिनका सर्वसाधारणके अधिकारोंकी रक्षा करनेवाले शासक (ट्रिब्यून) की ओरसे पेश किया जाना कदाचित् अधिक उपयुक्त होता। जन साधा-

रणको प्रसन्न करनेकी दृष्टिसे इनके द्वारा उसने जमीनके बँटवारे तथा उपनिवेशोंकी स्थापनाका प्रस्ताव किया। कुलीन-सभाके प्राय सभी स्वाभिमानी सदस्योंने उक्त बिलोंका विरोध किया। सीज़र तो ऐसा अवसर ढूँढ ही रहा था। उसने चिल्ला चिल्ला कर कहना शुरू किया कि यद्यपि मैं सामान्य जनताकी सहायता लेनेका विरोधी हूँ, फिर भी कुलीन-सभाके अपमानजनक एव कठोर व्यवहारसे विवश होकर अब उसकी शरण लेनी ही पडेगी। ऐसा कहकर वह कुलीन-सभा (सिनेट) के बाहर निकल आया और सामान्य जनताके सामने जाकर, क्रेसस तथा पाम्पीको अपने दाहिने बायें खडा कर, कहने लगा कानून सम्बन्धी जो मसविदे मैंने पेश किये हैं क्या आपको वे स्वीकार है? लोगोंने कहा "हाँ, हमें स्वीकार है।" तब उसने कहा कि ऐसी अवस्थामें आप लोग उन लोगोंके विरुद्ध मेरी सहायता कीजिए जिन्होंने तलवार लेकर मेरा विरोध करनेकी धमकी दी है। उन्होंने यह भी मजूर कर लिया। पाम्पीने अपनी तरफसे यह भी कहा कि मैं उनकी तलवारोंका जवाब अपनी तलवार और ढालसे दूँगा। ये शब्द अमीरोंको बहुत बुरे लगे, क्योंकि न तो ये पाम्पीके पदके अनुकूल थे और न कुलीन सभाके किसी सदस्यके ही योग्य थे। वे किसी उत्तेजित बालक या क्रोध भरे हुए पागल मनुष्यके उद्गारसे मालूम होते थे। पाम्पीसे अधिक दृढ सम्बन्ध स्थापित करनेकी दृष्टिसे सीज़रने अपनी लडकी जूलियाकी सगाई उसके साथ कर दी, यद्यपि सरवीलियस सिपियोके साथ उसके विवाहकी बातचीत हो चुकी थी। उसने सरवीलियससे कह दिया कि तुम्हारा विवाह पाम्पीकी लडकीके साथ कर दिया जायगा। कुछ समयके बाद सीज़रने पीसोकी पुत्री कल्पूरनियाके साथ शादी कर ली और आगामी वर्षके लिए पीसोको कान्सल (प्रधान शासक) के पदपर नियुक्त करा दिया। कैटोने जोरोंके साथ इसका विरोध किया और कहा कि इस प्रकार विवाह सम्बन्धोंसे लाभ उठाकर शासनको कलंकित करना एव स्त्रियोंके ज़रिये

सेनानायक या प्रान्ताधिकारी इत्यादिके पदोंपर एक दूसरेको नियुक्त कराना अत्यन्त गर्हित है। जब सीज़रके साथी पाम्पियसने देखा कि उसके विरोधका विरोध करनेसे कोई लाभ न होगा और यह ख्याल किया कि न्यायालयमें मेरे मार डाले जानेकी आशङ्का है, तब वह अपने घरके भीतर ही रहने लगा और प्रधान शासकके पदकी शेष अवधि उसने वहीं समाप्त की। विवाद हो जानेके बाद पाम्पीने न्यायालयमें अपने सैनिक खड़े कर दिये और नये कानूनोंको स्वीकार करनेमें सर्वसाधारणकी सहायता की। साथ ही उसने आल्प्स पहाड़के दोनों तरफ समस्त गाल (फ्रांस) प्रान्तका शासन सीज़रको लिख दिया और पाँच वर्षके लिए उसे चार पल्टनोंका अधिपति नियुक्त कर दिया। कैटोने इस कारवाईका विरोध करनेकी चेष्टा की, किन्तु सीज़र उसे पकड़ कर बन्दीगृहकी तरफ ले चला। उसने समझा था कि कैटो रास्तेमें जनशासकों (ट्रिब्यून्स) से हस्तक्षेप करनेकी प्रार्थना करेगा। किन्तु उसने देखा कि कैटो बिल्कुल चुपचाप चलने लगा, उसने किसीसे एक शब्द भी नहीं कहा। कैटोको इस हाल-तमें जाते देख कर अमीरोंको बड़ा गुस्सा आया और जनता भी, कैटोके सद्गुणोंका ख्याल कर, बड़े उदास भावसे उसके पीछे पीछे चलने लगी। तब सीज़रने एक जन-शासकसे उसे बचानेके लिए, निजी तौरसे कहा। सिनेट सभाके अन्य सदस्योंमेंसे थोड़े ही सभामें गये थे, शेष अपने घर-पर ही रहे, क्योंकि वे सीज़रके सैनिकोंके कारण भयभीत थे। सीज़र जब कौंसलके पदपर आरूढ़ था, तब एक लज्जाजनक बात यह हुई कि जिस क्लोडियसने उसके घरमें प्रवेश कर उसकी पत्नीसे अनुचित सम्बन्ध स्थापित करना चाहा था, उसीको ट्रिब्यूनका पद दिलानेमें उसने उसकी सहायता की।। सिसरोको बाहर निकालनेकी दृष्टिसे ही क्लोडियस जान-बूझ कर ट्रिब्यून चुना गया। सीज़रने अपनी सेनासे जा मिलनेके लिए तबतक शहरसे प्रस्थान नहीं किया जबतक सिसरो पराजित कर इटलीके बाहर नहीं निकाल दिया गया।

गॉलके युद्धोंके पहले सीज़रके जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली ये ही प्रसिद्ध घटनाएँ हैं। इसके बादसे मानो उसने एक नये मार्गका अवलम्बन किया और नये कार्यक्षेत्रमें प्रवेश किया। इस समय उसने जो लड़ाइयाँ लड़ीं और गॉलपर विजय प्राप्त करनेके लिए जो युद्ध-यात्राएँ कीं, उनसे यह स्पष्ट प्रमाणित हो गया कि संसारके बड़ेसे बड़े एवं सुख्यात सेनापतियोंसे वह किसी प्रकार कम साहसी या कम कुशल सेनापति नहीं था। कई बातोंमें तो वह बड़े बड़े महारथियोंसे भी आगे बढ़ गया था। जिस देशमें उसे लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी थीं, उसकी कठिनाइयोंके लिहाजसे यदि वह एकको मात करता था, तो दूसरेसे अपने द्वारा जीते हुए प्रदेशके अधिक विस्तारके कारण बाजी मारता था और तीसरेसे इस बातमें बढ़ जाता था कि जिन शत्रुओंपर उसने जय पायी उनकी शक्ति और संख्या बहुत बड़ी थी। उसने अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं और बहुसंख्यक शत्रुओंका संहार किया। गॉलमें युद्ध करते हुए उसे दस वर्ष भी न हुए थे कि उसने आठ सौ नगरोंपर कब्जा कर लिया और कोई तीन सौ छोटे छोटे राज्यों (जिलों) पर विजय प्राप्त की। समय समयपर जितने शत्रुओंसे उसे युद्ध करना पड़ा उनकी सम्मिलित संख्या तीस लाखसे कम न होगी। इनमेंसे उसने दस लाखका संहार कर डाला और दस लाखको बन्दी बना लिया।

सीज़रके सैनिक सच्चे दिलसे उसे चाहते थे और उसके लिए अपनी जान देनेको तैयार रहते थे। विशेषकर जहाँ सीज़रके यश-अपयशकी बात होती वहाँ वे अपूर्व साहस और वीरता प्रदर्शित करते थे। एक बार जब मार्सेल्ज़के सामने जल-युद्ध हो रहा था, तब ऐसीलियस नामक एक सैनिकका दाहना हाथ तलवारके प्रहारसे बिलकुल कट गया; फिर भी उसने अपनी ढाल बायें हाथसे गिरने नहीं दी, बल्कि उसीसे दुश्मनोंके मुँहपर ऐसे प्रहार किये कि अन्तमें उसने उन्हें मार भगाया और जहाज-पर अधिकार कर लिया। ऐसा ही एक वीर सैनिक कैसियस स्कीवा था,

जिसकी एक आँख युद्ध करते समय तीरके आघातसे बाहर निकल आयी थी तथा जिसके कन्धेमें एक बरछी और जाँघमें दूसरी घुसेड़ दी गयी थी। इतना होते हुए भी एक सौ तीस बाणोंका आघात अपनी ढालपर लेकर उसने दुश्मनको पुकारा मानो वह आत्म-समर्पण करना चाहता हो। किन्तु जब शत्रुके दो आदमी उसके पास पहुँचे, तब उसने एकका कंधा तलवारसे काट डाला और दूसरेके मुँहपर ऐसा धक्का मारा कि उसे विवश होकर पीछे हटना पड़ा। इसी समय कुछ मित्रोंने पहुँच कर उसकी प्राण-रक्षा की। इसी तरह एक बार ब्रिटेनमें कुछ बड़े बड़े अफसर दैवसंयोगसे एक दलदलमें फंस गये, जहाँ खूब पानी भरा हुआ था। ठीक इस विपत्ति-के समय शत्रुने उनपर हमला किया। सीज़रके देखते देखते एक मामूली सैनिक उनके बीचमें कूद पड़ा। अपनी विलक्षण शक्ति तथा पौरुष दिखला कर उसने उनकी रक्षा की और शत्रुको मार भगाया। अन्तमें वह खुद भी दलदलमें फँस गया और बड़ी कठिनाईसे अपना उद्धार कर सका, किन्तु ऐसा करते समय उसे अपनी ढालसे हाथ धोने पड़े। सीज़र और उसके अफसरोंने यह सब दृश्य देखा और उसकी बड़ी प्रशंसा की। वे लोग आगे बढ़कर बड़ी प्रसन्नताके साथ उससे मिले। किन्तु वह सैनिक बहुत उदास होकर एवं नेत्रोंमें जल भरकर सीज़रके पाँवोंपर गिर पड़ा और अपनी ढाल खो देनेका अपराध करनेके कारण क्षमाकी प्रार्थना करने लगा।

सैनिकोंमें इस प्रकार नाम कमाने और सम्मान प्राप्त करनेकी प्रवृत्ति-का प्रसार सीज़रके ही कारण हुआ था। विलक्षण साहस एवं धीरताके कार्योंके बदले समुचित पुरस्कार तथा सम्मान प्रदान कर वह उन्हें यह दिखला देता था कि युद्ध द्वारा वह जो धन एकत्र करता था उसे विषयो-पभोग अथवा अपनी निजकी वासनाओंकी तृप्तिमें न लगाकर अपूर्व साहस प्रदर्शित करनेवाले सैनिकोंको प्रोत्साहित एवं पुरस्कृत करनेके उद्देश्यसे [illegible] कोषकी तरह सुरक्षित रखता था। इसके सिवा ऐसा कोई

खतरा न था जिसका सामना करनेसे वह स्वयं जी चुराता हो और न ऐसा कोई मेहनतका काम ही था जिससे वह अपनेको बचाना चाहता हो। संकट-का सामना करनेमें उसकी तत्परता देखकर सैनिकोंको आश्चर्य नहीं होता था, क्योंकि वे जानते थे कि उसे अपने सुयश और प्रतिष्ठाका बड़ा ख्याल था, किन्तु उन्हें इस बातपर अवश्य आश्चर्य होता था कि जितनी उसमें शक्ति नहीं थी, उससे अधिक कठिनाइयाँ वह कैसे बरदाश्त कर लेता था। वह एक दुबला पतला आदमी था और उसका चमड़ा गोरा तथा मुलायम था। उसका दिमाग़ कमजोर था तथा उसे मृगीकी बीमारी भी थी। किन्तु अपने स्वास्थ्यकी कमजोरीके बहाने उसने अपनेको आराम-तलब नहीं बना लिया, प्रत्युत युद्धमें सलग्न रह कर ही अपनी समस्त व्याधियोंको दूर करनेकी चेष्टा की। वह प्राय लम्बी लम्बी यात्राएँ किया करता था। उसका भोजन बिलकुल सादा होता था और वह बहुधा मैदानमें रहा करता था। अनवरत परिश्रम करनेमें उसे बहुत आनन्द आता था। इन उपायोंकी सहायतासे वह अपने स्वास्थ्य-सुधार एवं शरीरकी पुष्टिकी चेष्टा करता था। वह प्राय अपने रथपर या पालकीमें ही सोता था और आराम करते समय भी किसी न किसी कामकी धुनमें ही रहता था। दिनमें जब वह किसी किले, शिविर इत्यादिका निरीक्षण करने जाता, तब उसके साथ एक नौकर रहता था जो उसकी बतायी हुई बातें लिखता जाता था। नगी तलवार हाथमें लिये हुए एक सैनिक भी उसके पीछे पीछे चलता था। रथपर वह इतनी तेजीसे यात्रा किया करता था कि जब वह पहली बार रोमसे चला था तो आठ दिनके भीतर रोन नदीके किनारे जा पहुँचा था। लड़कपनसे ही उसे घोड़ेपर चढ़नेका अच्छा अभ्यास था। वह अक्सर अपने दोनों हाथ पीठके पीछे इकट्ठे कर घोड़ेको तेजीके साथ दौड़ा दिया करता था। इस युद्धयात्रामें उसने इतना अभ्यास कर लिया था कि वह घोड़ेपर चढ़े चढ़े एक साथ दो तीन आदमियोंको चिट्ठियाँ लिखवाता चलता था। कहते हैं, मित्रोंको अत्यन्त

आवश्यक और महत्वपूर्ण समाचार भेजनेके लिए गुप्त लेखनप्रणालीका आविष्कार पहले पहल सीजरने ही किया। जब अन्य कामोंमें व्यस्त रहनेके कारण या नगरके अधिक विस्तारके कारण किसी आवश्यक बातके सम्बन्धमें स्वयं एक स्थानपर मिल कर परामर्श करनेका सुभीता नहीं होता था, तब यह इसी गुप्तप्रणालीका सहारा लेकर मित्रोंके पास खबर भेजा करता था। खाने पीनेकी चीजोंमें यदि कोई दोष रह जाता तो यह इसकी कोई परवाह नहीं करता था। एक बार जब यह किसी मित्रके यहाँ भोजन करने बैठा, तब तरकारीमें नमकके बजाय चीनीका स्वाद पा कर भी यह बिना कुछ कहे सुने उसे खा गया। जिन मित्रोंने इस सम्बन्धमें टीका टिप्पणी शुरू की, उन्हें उसने खूब फटकारा और कहा कि "यदि किसीको कोई चीज पसन्द न आवे तो उसके लिए इतना ही काफी है कि वह उसे न खाय। किन्तु इसके कारण किसीपर शिष्टताकी कमीका दोषारोपण करना स्वयं अपनी ही अशिष्टता प्रकट करना है।" एक बार आँधी पानीके कारण सड़कपरसे भाग कर उसे एक गरीब आदमीकी झोपड़ीमें आश्रय लेना पड़ा। उसमें बाहरके केवल एक ही आदमीके गुजर लायक जगह थी। इसीसे उसने अपने साथियोंसे कहा "ऊँचा स्थान पूज्यवरोंको और आवश्यक स्थान कमजोरोंको देना चाहिये।' यह कह कर उसने आज्ञा दी कि ऑपियसको, जो बीमार है, झोपड़ाके भीतर जगह दी जाय। वह स्वयं अपने साथियों सहित दरवाजके पास एक सायबानके नीचे सोया।

गॉलमें उसका पहला युद्ध हेल्वीशियन और तिगुरिनी लोगोंके साथ हुआ। इन्होंने अपने बारह नगरों एवं चार सौ गाँवोंको जला कर गालके उस भागकी ओर प्रस्थान किया जो रोमन प्रान्तके अन्तर्गत था। ये लोग बड़े साहसी थे और इनकी संख्या तीन लाख थी जिनमें एक लाख नब्बेके हजार योद्धा थे। तिगुरनी लोगोंके साथ सीजरने स्वयं युद्ध नहीं किया, किन्तु उसके आदेशानुसार लेबिईनसने उन्हें अरार नदीके

पास हराया। हेलवीशियन लोगोंने सीज़रपर उस समय एकाएक आक्रमण किया जब वह अपनी सेनाके साथ मित्र राज्यके एक नगरकी ओर बढ़ रहा था। उसे पीछे तो लौटना पड़ा किन्तु शीघ्र ही वह एक सुरक्षित स्थानमें पहुँच गया। यहाँ जब वह अपने सैनिकोंको एकत्र कर उनका व्यूहन कर चुका, तब उसके सामने उसका घोड़ा लाया गया। इसपर उसने कहा "जब मैं विजय पा चुकूँगा तब दुश्मनका पीछा करनेके लिए घोड़ेपर सवार होऊँगा, किन्तु इस समय तो यों ही हमला करना चाहिये।" इस प्रकार शत्रुकी सेनापर उसने पैदल ही आक्रमण किया। बहुत देरकी कठिन लड़ाईके बाद उसने सेनाके मुख्य भागको समरभूमिसे भगा दिया, किन्तु गाड़ियाँ इत्यादिकी कतार तोड़नेमें उसे बहुत अधिक कठिनाईका सामना करना पड़ा। यहाँ पुरुषोंने ही नहीं, बरन् स्त्रियों और बालकों तकने तबतक अपनी रक्षा करनेका प्रयत्न किया जबतक उनके टुकड़े टुकड़े नहीं कर दिये गये। आधी रात बीत जाने पर कहीं युद्ध समाप्त हुआ। सीज़रने इस विजयके बाद एक अच्छा काम यह किया कि युद्धसे भागे हुए शत्रुके आदमियोंको, जिनकी संख्या एक लाखसे ऊपर थी, एकत्र कर पुनः उस भूभागमें रहनेके लिए विवश किया जिसे उन्होंने वीरान कर दिया था। सीज़रको भय था कि यदि यह प्रदेश वीरान पड़ा रहा तो सम्भव है, जर्मन लोग उसपर अधिकार जमा लें।

उसका दूसरा युद्ध जर्मनोंसे गालकी रक्षाके लिए किया गया था, यद्यपि कुछ ही समय पहले उसके प्रयत्नसे उनका राजा एरियोविस्टस रोमका मित्र स्वीकार कर लिया गया था। किन्तु सीज़रके शासनमें और जो देश थे, उनके प्रति पड़ोसमें रहनेवाले जर्मनोंका व्यवहार असह्य हो उठा था और ऐसा मालूम होता था कि मौक़ा मिलते ही वे वर्तमान सम्बन्धका परित्याग कर गालपर आक्रमण करनेके लिए तुले बैठे हैं। किन्तु अपने अफसरोंको कुछ भयभीत देख कर, विशेष कर उन नव-

युवक सरदारोंको जो अपने सुख या लाभके लिए ही उसके साथ आये थे, उसने उन्हें एकत्र किया और सलाह दी कि आप लोग यहाँसे शीघ्र चले जायँ और अपनी इच्छाके विरुद्ध अपनेको युद्धके खतरेमें न डालें। मैं केवल दसवीं पल्टनको लेकर ही असभ्य जातिके लोगोंसे युद्ध करूँगा। यह खबर पाकर दसवीं पल्टनवालोंने अपनेमेंसे कुछ लोगोंको इस कृपाके लिए सीजरको धन्यवाद देनेके लिए भेजा। अन्य पल्टनोंने अपने अफसरोंकी निन्दा की और बड़े उत्साहके साथ सीजरका अनुसरण किया। कई दिनोंकी यात्राके बाद सब लोगोंने दुश्मनसे दो सौ फरलांगकी दूरीपर अपना पड़ाव डाला। एरियोविस्टसका साहस तो उसी समय ठण्डा पड़ गया जब उसने इन लोगोंके आनेकी खबर सुनी, क्योंकि उसे इस बातका ख्याल ही न था कि रोमन लोग जर्मनोंपर आक्रमण करेंगे। उसके सैनिक भी घबरा गये। घबराहटका एक कारण यह भी था कि नदियोंके भँवर तथा धाराओंके कलरव इत्यादिके आधारपर भविष्य-कथन करनेवाली स्त्रियोंने उन्हें अगले चन्द्रदर्शनके पहले युद्ध शुरू करनेसे मना किया था। सीजरने यह समाचार पाकर इसी समय उनपर आक्रमण करना उचित समझा। उसने उन अड्डों या पहाड़ियोंको जा घेरा जिन पर शत्रुसैनिक पड़ाव डाले हुए पड़े थे और उन्हें इतना तङ्ग किया कि वे लोग क्रुद्ध होकर युद्धार्थ बाहर निकल पड़े। सीजरने उन्हें परास्त कर दिया और चार सौ फरलांगतक उनका पीछा किया। एरियोविस्टसने अपनी थोड़ी सी बची हुई सेनाके साथ बड़ी कठिनाईसे राइन नदी पार की। कहते हैं, इस युद्धमें उसकी ओरके अस्सी हजार आदमी मारे गये।

युद्ध समाप्त होनेके बाद सीजरने जाड़ा बितानेके लिए अपनी सेना सेक्वनाइ प्रान्तमें छोड़ दी और स्वयं गालके उस भागमें चला गया जो पो नदीके इस पार था। यहाँसे वह रोमकी घटनाओंपर भी नजर रखना चाहता था। यहाँ रह कर उसने लोगोंकी सहानुभूति प्राप्त करनेकी चेष्टा की। रोमसे बहुसंख्यक मनुष्य उसके प्रति सम्मान प्रकट करनेके लिए

आते थे और वह उन्हें सन्तुष्ट कर बिदा करता था। जब तक गॉलमें युद्ध होता रहा, वह बराबर इसी तरह रोमकी सैनिक सामर्थ्यसे शत्रुको पराजित करता रहा और शत्रुसे पायी हुई सम्पत्तिके जरिये रोमन नागरिकोंकी सहानुभूति भी प्राप्त करता रहा। आश्चर्य इस बातका है कि पॉम्पीका ध्यान ही इस ओर नहीं गया।

जब उसने सुना कि बेलजी लोगोंने जो गॉलमें सबसे शक्तिशाली थे, विद्रोह कर दिया है और एक बड़ी सेना एकत्र कर ली है, तब वह तुरन्त उन्हें दबानेके लिए चल पड़ा। जब वे लोग गॉलके उन निवासियोंको तङ्ग कर रहे थे जो उसके मित्र थे, तब वह उनपर टूट पड़ा और उनके सबसे बड़े हिस्सेको शीघ्र ही पराजित कर भगा दिया। बात यह है कि यद्यपि उनकी संख्या बहुत बड़ी थी, फिर भी उन्होंने आत्मरक्षणकी बहुत कम चेष्टा की। जिन लोगोंने विद्रोह किया था उनमेंसे वे जातियाँ तो बिना युद्ध किये ही उससे आ मिलीं जो समुद्रके किनारे रहती थीं, इसलिए उसने अपनी सेनाके साथ उस प्रान्तके सबसे अधिक वीर और लड़ाकू नरहीभाइ लोगोंके विरुद्ध प्रयाण किया। इस जातिके लोग लगातार फैले हुए जङ्गलोंके देशमें रहते हैं। अपने बच्चों और सम्पत्तिको वनगहनमें छिपा कर ये लोग ६० हजारकी संख्यामें एकाएक सीज़रपर टूट पड़े जब वह पड़ाव डालनेमें लगा हुआ था। उन्होंने सीज़रकी घुड़सवार सेनाको शीघ्र ही परास्त कर दिया और उसकी बारहवीं तथा सातवीं पल्टनको घेर कर तमाम अफसरोंको मार डाला। यह हालत देख कर यदि सीज़र तुरन्त एक सैनिककी ढाल छीन कर अपनी सेनाके बीचमेंसे होते हुए शत्रुके पास न जा पहुँचा होता, और यदि इसी समय उसे संकटमें देख कर दसवीं पल्टनके सैनिक, जो पहाड़ियोंके शिखरपर सामान इत्यादिकी रक्षाके लिए तैनात थे, तुरन्त नीचे उतर कर शत्रुकी सेनाको चीरते हुए सीज़रके निकट न पहुँच गये होते, तो इस युद्धमें सम्भवतः एक भी रोमन जीवित न बचता। किन्तु अब सीज़रका यह

अपूर्व साहस देख कर रोमन सैनिकोंने अद्भुत धीरतासे युद्ध किया और यद्यपि अपनी पूरी शक्ति लगा कर भी वे शत्रुको समरभूमिसे भगा नहीं सके, फिर भी उसके बहुसंख्यक सैनिकोंको काट डालनेमें वे अवश्य सफल हुए। शत्रुके साठ हजार सैनिकोंमेंसे मुश्किलसे पाँच सौ सैनिक और चार सौ अफसरोंमेंसे कुल तीन अफसर ही जीवित बचे।

जब रोमन सिनेटको इस विजयके समाचार मिले, तब उसने १५ दिनों तक देवताओंको बलि चढ़ाने और उत्सव मनानेका प्रस्ताव पास किया। इतना लम्बा उत्सव अभीतक किसी भी विजयके उपलक्ष्यमें नहीं मनाया गया था। एक तो यह युद्ध ही बहुत भीषण हुआ था, दूसरे सीज़रकी लोकप्रियताके कारण उसके द्वारा प्राप्त इस तरहकी विजयको विशेष महत्त्व दिया जाना स्वाभाविक था। गॉलमें सब बातोंका यथोचित प्रबन्ध कर चुकनेके बाद, सीज़र जाड़ा बितानेके बहाने, रोमसे सम्पर्क बनाये रखनेके उद्देश्यसे फिर पो नदीके किनारे लौट आया। जो लोग भिन्न भिन्न पदोंके लिये उम्मेदवार थे, वे सब उससे सहायता मांगनेके लिए आते थे और सीज़र उन्हें काफी रुपया देता था जिसके द्वारा वे लोगोंसे वोट संग्रह करते और निर्वाचित हो जाने पर सीज़रकी शक्ति बढ़ानेका प्रयत्न करते थे। इसके सिवा रोमके बड़े बड़े प्रभावशाली एवं विख्यात पुरुष भी एकान्तमें उससे मिलने आते थे, उदाहरणार्थ पाम्पी, क्रैसस, तथा सार्डीनियाका गवर्नर एपियस। इस तरह एक बार वहां दो सौसे अधिक सिनेटर इकट्ठे हो गये थे। इन लोगोंके परामर्शसे निश्चय हुआ कि अगले वर्षके लिए पाम्पी तथा क्रैसस पुनः प्रधान शासक बनाये जायँ तथा सीज़रको आवश्यक व्ययके लिए और रुपया दिया जाय एवं अगले पांच वर्षोंके लिए सेनानायकके पदपर सीज़रकी नियुक्ति पुनः स्वीकृत की जाय। यह एक आश्चर्यकी बात थी कि जिन लोगोंको सीज़रसे इतना रुपया मिला था, उन्होंने सभाको उसे और रुपया देनेकी सलाह दी, मानो उसे रुपयेकी कमी थी!

कैटो उस समय वहां उपस्थित न था, उसे साइप्रस भेज कर लोगोंने पहले ही हटा दिया था। हाँ, कैटोका अनुसरण करनेवाला फैवोनियस अवश्य वहाँ था। जब उसने देखा कि मेरे विरोध करनेसे कोई लाभ न होगा, तब वह सभासे उठ गया और बाहर जाकर लोगोंको भड़कानेका उद्योग करने लगा, किन्तु कुछ तो क्रैसस और पाम्पीकी प्रतिष्ठाके कारण और कुछ सीज़रको प्रसन्न रखनेकी इच्छाके कारण किसीने उसके कथनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया।

जब सीज़रको यह मालूम हुआ कि राइन नदी पार कर जर्मनीकी दो जातियोंने गॉलपर आक्रमण किया है, तब वह अपनी सेनाके पास लौट गया। इनके साथ किये गये युद्धका वर्णन करते हुए सीज़रने लिखा है कि "जर्मनीकी उक्त जातियोंने सुलहकी बातचीत करनेके बहाने अपने दूत मेरे पास भेजे, किन्तु युद्ध स्थगित करते ही एक दिन जब मैं अपनी सेनाके साथ यात्रा कर रहा था, तब एकाएक शत्रुने हमपर हमला कर दिया। हम लोगोंको इस आक्रमणकी आशंका तो थी ही नहीं, अतः शत्रुके केवल आठ सौ सवारोंने हमारे पाँच हजार सवारोंको हरा दिया। किन्तु बादमें उन्होंने अपनी इस कारवाईके लिए क्षमा माँगते हुए पुनः अपने दूत भेजे। जो लोग इस प्रकार धोखा देनेसे नहीं हिचकते, उनका विश्वास करना मैंने उचित नहीं समझा। मैंने इनके दूतोंको हिरासतमें रख लिया और अपनी सेना लेकर उनपर आक्रमण कर दिया। जो लोग राइन नदी पार कर आये थे उनमेंसे चार लाख काट डाले गये। जो थोड़ेसे लोग भाग गये उन्हें जर्मनीके सुगम्ब्री लोगोंने शरण दी।" यह बहाना लेकर सीज़रने जर्मन लोगोंपर आक्रमण करनेका निश्चय कर लिया। वह सेना समेत राइन नदी पार करनेवाला प्रथम रोमन सेनापति कहे जानेकी कीर्त्ति प्राप्त करनेके लिए उत्सुक था। यद्यपि वह नदी बहुत चौड़ी थी और उसकी धारा भी उस जगह बहुत तेज़ थी, फिर भी उसने दस दिनके भीतर एक पुल तैयार करा लिया।

पुल परसे अपनी सेना ले जाते समय किसीने उसका विरोध नहीं किया, क्योंकि स्यूवी नामक, जर्मनीकी सबसे रणप्रिय जाति तकके लोग भाग कर जंगलोंमें जा छिपे थे। शत्रुके अनेक गाँवोंको जला कर एवं रोमन लोगोंके प्रति सहानुभूति रखनेवालोंको प्रोत्साहित कर वह पुनः गॉल लौट गया। उसकी ब्रिटेन यात्रा इससे भी अधिक प्रसिद्ध है, क्योंकि यह उसके अपूर्व साहसकी सूचक है। पश्चिमी समुद्रमें अपना बेड़ा ले जानेवाला अथवा युद्ध करनेके इरादेसे अपनी सेना अटलांटिक महासागरमें ले जाने-वाला वह पहला ही रोमन सेनापति था। इस टापूकी लघुताके कारण कई लोगोंको तो इसके अस्तित्वका ही विश्वास न था, अतः इसपर आक्र-मण कर सीजरने रोम साम्राज्यकी सत्ता ज्ञात जगत्‌की सीमाके बाहर भी स्थापित कर दी। वह वहाँ दो बार गया और वहाँके निवासियोंको उसने बड़े युद्धोंमें परास्त किया। शत्रुको तो उसने भारी क्षति पहुँचायी, किन्तु स्वयं कोई लाभ नहीं उठाया। वहाँवाले इतने ग़रीब थे कि उनके पास कोई ऐसी वस्तुएँ नहीं थीं जिनपर युद्ध समाप्त होने पर अधिकार किया जाता। उसने राजासे कुछ प्रतिभू ले लिये और उसपर कर बैठा कर पुनः गॉल देशको लौट आया। यहाँ उसे कुछ आवश्यक पत्र मिले जो रोमसे आये हुए थे। इनसे उसे अपनी पुत्री (अर्थात् पाम्पी की पत्नी) के प्रसूति रूपसे प्राणान्त होनेके समाचार मिले। जूलियाकी मृत्युसे सीजर और पाम्पी दोनोंको बड़ा दुःख हुआ।

सीजरकी सेना अब इतनी बड़ी हो गयी थी कि जाड़ा बितानेके लिए उसने उसे कई हिस्सोंमें बाँट कर अलग अलग शिविरोंमें रखना ठीक समझा। जब वह हमेशाकी तरह इस बार भी इटली चला गया, तब उसकी गैरहाजिरीमें सारे गॉलमें गड़बड़ी मच गयी। बड़ी बड़ी सेनाओंने निकल निकल कर रोमन सेनाके अड्डोंपर धावा किया और उन उन किलोंपर अधिकार करनेकी चेष्टा की जहाँ रोमन लोग ठहरे हुए थे। विद्रोहियोंके एक बड़े दलने कोटा और टिटूरियस तथा उनकी सारी

सेनाको घेर लिया और बाहरसे उनका सम्बन्ध विच्छेद कर दिया। फिर उनके साठ हजार सैनिकोंने सिसरो द्वारा परिचालित सेनाको जा घेरा। प्राय सभी रोमन सैनिक घायल हो गये और आत्मरक्षाके लिए शक्तिसे अधिक चेष्टा करनेके कारण बिल्कुल थक गये। वे लोग पूर्णतया पराजित होने ही वाले थे, किन्तु इसी समय सीजरको खबर लग गयी और यद्यपि वह वहाँसे काफी दूर था, फिर भी किसी तरह सात हजार सैनिक एकत्र कर बडी शीघ्रतासे वहाँ जा पहुँचा। यह सोच कर कि सात हजार सैनिकोंको परास्त करना कोई बडी बात नहीं है, शत्रुने उसे मार्गमें ही रोकना चाहा। सीजरने पहले तो सामना करनेसे बचनेका प्रयत्न किया, किन्तु बादमें वह एक ऐसे स्थानमें ठहर गया जहाँ उसके थोडेसे सैनिकोंके लिए शत्रुके बहुसंख्यक सैनिकोंके साथ युद्ध करनेमें विशेष सुभीता था। अपनी बडी संख्या और शक्तिके गर्वमें भूले हुए शत्रुके आदमियोंने ज्यों ही सीजरकी सेनापर आक्रमण किया त्यों ही उसने बाहर निकल कर इस दृढतासे उनका मुकाबला किया कि उनसे भागते ही बना।

अब गॉलके इस भागमें बहुत कुछ शान्ति स्थापित हो गयी। जाडेमें सीजरने प्रत्येक स्थानमें जा जाकर परिस्थिति समझने और खबरदारी रखनेका प्रयत्न किया। इस समय उसके पास तीन पल्टनें हो गयी थीं—दो तो पाम्पीने भेजी थीं और एक पो नदीके किनारेवाले देशमें अभी हालमें ही प्रस्तुत की गयी थी। किन्तु इसी समय युद्धकी आग पुन भडक उठी। यह पहलेसे भी अधिक भयकर थी और जाडेके कारण कठिनाइयाँ भी बढ गयी थीं। नदियोंका पानी जमकर बर्फ बन गया था, जगल हिमाच्छादित हो गया था और मैदानोंमें पानीकी मानो बाढ आ गयी थी। रास्तोंका या तो पता ही न चलता था या उनपर चलना कठिन था। इन सब कठिनाइयोंके कारण विद्रोहियोंको दबानेका प्रयत्न करना सीजरकी शक्तिके बाहर मालूम होता था।

विद्रोहियोंके सेनापतिने अपने सैनिकोंको कई सेनानायकोंकी अधी-

गतामें चोट पर सारे देशमें फैला दिया। रोममें सीज़रका विरोध होना शुरू हो गया है, यह समाचार पाकर उसने सारे गॉलमें एक साथ युद्ध छेड़नेका इरादा किया। किन्तु सीज़र, जो यह भलीभाँति समझता था कि युद्धमें सफलता पानेके लिए किस समय क्या करना चाहिये, तुरन्त वापस लौट पड़ा। जितने थोड़े समयमें जल्दसे जल्द चलनेवाला कोई दूत भी उसके पाससे समाचार लेकर न पहुँचता, उतने समयमें वह अपनी सारी सेना लेकर स्वयं घटनास्थलपर उपस्थित हो गया! रास्तेमें उसने कई स्थानोंपर लूटमार की और अनेक नगरोंपर अधिकार कर लिया। अन्तमें जब एदुई लोगोंने जो अभीतक अपनेको रोमन लोगोंके बन्धु कहते थे, उसका विरोध करना शुरू किया और जब वे विद्रोहियोंसे जा मिले तब उसके सैनिकोंको बड़ी निराशा हुई। यह देख कर सीज़र उस भूभागको छोड़ कर सेक्वनाई लोगोंके प्रान्तकी ओर बढ़ा जो उसके पक्षमें थे। वहाँ शत्रुने उसे चारों ओरसे जा घेरा। यद्यपि प्रारम्भमें सीज़रको बहुत अधिक कठिनाईका सामना करना पड़ा, फिर भी अन्तमें बहुत खून-खराबीके बाद वह विजयी हुआ।

परास्त होनेके बाद शत्रुके अधिकांश सैनिक अपने राजा सहित अलेशिया नामक नगरको भाग गये। सीज़रने उसपर घेरा डाल दिया। उसकी दीवारें बहुत ऊँची थीं और रक्षकोंकी संख्या भी काफी बड़ी थी। इधर सीज़रको एक और संकटका सामना करना पड़ा। गॉलके कोई तीन लाख चुने हुए वीर अस्त्रशस्त्रोंसे सुसज्जित होकर अलेशियाकी सहायताके लिए आ पहुँचे। इस प्रकार सीज़र दोनों तरफ शत्रुओंसे घिर गया। उसने दो दीवारोंकी आड़में रह कर अपने बचावका प्रयत्न किया। एक दीवार तो शहरकी तरफ और दूसरी बाहरसे आयी हुई शत्रु सेनाकी ओर खड़ी की गयी। इसमें सन्देह नहीं कि यदि बाहरसे आयी हुई तथा भीतरकी सेनाएँ परस्पर मिल जातीं तो सीज़रकी दुर्दशा बन जाती। इस भारी संकटका सामना करनेके कारण सीज़रकी प्रतिष्ठा बढ़ गयी।

अभूतपूर्व वीरताका प्रदर्शन कर उसने शीघ्र ही बाहरकी सेनाको परास्त कर दिया और इसी तरह थोड़े ही समयमें भीतरकी सेनाको भी ध्वस्त विध्वस्त कर दिया। अलेशियावालोंको लाचार होकर आत्मसमर्पण करना पड़ा।

सीज़रने बहुत पहलेसे पॉम्पीको नीचा दिखानेका और पॉम्पीने सीज़रको पराभूत करनेका निश्चय कर लिया था। क्रैससके भयके कारण अभीतक इन दोनोंमें कोई खटा-पटी नहीं हुई थी। पारथियामें उसके मारे जानेके बाद अब यदि इनमेंसे कोई अपनेको रोमका सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति बनाना चाहता, तो उसके लिए अपने प्रतिस्पर्द्धीको पराभूत करना ही काफी था। पॉम्पीको सीज़रसे विशेष भय नहीं था, क्योंकि वह समझता था कि मैंने स्वयं जिस सीज़रको अपने हाथसे बढ़ाया है, उसे परास्त करना मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं है। किन्तु सीज़र शुरूसे ही इस सम्बन्धमें सतर्क था। अपनेको इस द्वन्द्व-युद्धके लिए तैयार करनेके लिए ही वह चतुरतापूर्वक अन्यत्र चला गया था। गॉलमें युद्धका अनुभव प्राप्त कर उसने अपनी सेनाकी शक्ति बढ़ा ली थी और अपूर्व दृढ़ता एव साहसका परिचय दे कर अच्छी ख्याति भी प्राप्त कर ली थी। सीज़रने उन सब सुविधाओंसे भी लाभ उठाया जो स्वयं पॉम्पीने उसे दी थीं तथा जो उस समयकी विशेष परिस्थितिके कारण उसे मिल रही थीं। रोममें इस समय घूँसका बाजार गर्म था। जो लोग भिन्न भिन्न पदोंके लिये उम्मेदवार होते वे खुल्लम खुल्ला लोगोंको रुपया देकर उनके वोट प्राप्त करते थे। निर्वाचक लोग रुपया लेकर अपना वोट तो देते ही थे, साथ ही वे रुपया देनेवाले सज्जनोंके लिए आवश्यकता पड़ने पर धनुष बाण तथा तलवारका प्रयोग करनेके लिए भी तैयार रहते थे। इस प्रकार प्रायः चुनावके स्थलोंको रक्त-रंजित कर वे लोग नगरको अराजकताका शिकार बना कर बाहर चले जाते थे। ऐसी हालतमें बुद्धिमान् लोग अपने मनमें यही मनाते थे कि यदि इस पागलपन और अव्यवस्थाका अन्त

राजतंत्रकी स्थापनासे भी हो सके, तो कोई बड़ी बात नहीं। कुछ लोगोंने तो साफ साफ कहना शुरू किया कि एकतंत्र शासनसे ही अवस्था सुधर सकती है, अन्य किसी उपायसे नहीं और इसके लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति पॉम्पी ही है। पॉम्पी स्वयं ऊपरसे इनकार करते हुए भी बराबर इस बातकी कोशिशमें था कि किसी तरह वह रोमका सर्वेसर्वा घोषित कर दिया जाय। उसकी यह प्रवृत्ति देख कर कैटोने कुलीन सभा (सिनेट) को सुझाया कि वह उसे एक मात्र प्रधान शासक (कौंसल) बना देवे। कैटोने कहा कि ऐसा करनेसे उसे कानूनन एकाधिपत्य प्राप्त हो जायगा और वह जबरन सर्वेसर्वा बननेकी चेष्टा न करेगा। सभाने ऐसा ही किया। साथ ही उसने पॉम्पीके अधिकारमें स्पेन और आफ्रिकाके वे दोनों प्रान्त भी रहने दिये जो अभीतक उसके सिपुर्द थे। इनका शासन करनेके लिए पॉम्पीने सहायक नियुक्त किये और एक सेना भी रख ली जिसके वार्षिक खर्चके लिए खजानेसे एक हजार टैलेण्ट देनेका निश्चय हुआ।

यह समाचार पाकर सीजरने भी प्रधान शासकके पदपर नियुक्त किये जाने और वर्तमान प्रान्तोंपर भविष्यमें भी शासन करते रहनेकी प्रार्थना की। पॉम्पी इस समय कुछ नहीं बोला, किन्तु मारसेलस और लेण्टुलसने विरोध किया। ये लोग सीजरसे बहुत चिढ़ते थे। इन्होंने सीजर द्वारा गॉलमें स्थापित न्यू कोमम नामक उपनिवेशके निवासियोंसे रोमन नागरिकोंके विशेष अधिकार छीन लिये। मारसेलस उस समय प्रधान शासक था। उसने न्यू कोममके एक सिनेटरको जो उस समय रोममें था, कोड़से पीटे जानेकी आज्ञा दी और उससे कह दिया कि तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार यह सूचित करनेके लिए किया जाता है कि तुम रोमके नागरिक नहीं हो। उसने उसे यह भी आदेश दिया कि जब तुम वापस जाओ, तब सीजरको कोड़के ये निशान अवश्य दिखलाना। प्रधान शासकके पदसे मारसेलसके अलग हो जानेके बाद

सीजर गॉलमें एकत्र किये गये धनसे रोमके लोगोंको बहुमूल्य वस्तुएँ भेंटमें देने लगा। उसने जनशासक क्यूरियोका ऋण चुकता कर दिया और तत्कालीन प्रधान शासक पाउलसको डेढ़ हजार टेलैण्ट दिये जिससे उसने एक बढ़िया न्यायालय बनवाया। इन सब कारवाइयोंको देखकर पॉम्पीने अब स्वयं तथा अपने मित्रोंकी सहायतासे सीजरके स्थानमें अन्य पदाधिकारीकी नियुक्तिके लिए खुलम खुला प्रयत्न आरंभ कर दिया। उसने उन सैनिकोंको भी वापस बुला भेजा जो उसने सीज़रकी सहायताके लिए मँगनी दिये थे। सीजरने उन्हें लौटा दिया और प्रत्येकको जाते समय ढाई ढाई सौ ड्रेक्मा इनाम दिये। उनके साथ जो अफसर रोमको आया उसने ऐसी बातोंका प्रचार करना शुरू किया जो सीजरके अनुकूल न थीं। उसने पॉम्पीको भी विश्वास दिला दिया कि सीजरकी सेना उसकी बहुसंख्यक युद्ध यात्राओंके कारण इतनी ऊब उठी है कि यदि वह सीमा पार कर इटलीमें आ जावे तो वह तुरन्त पॉम्पीका साथ देनेको तैयार हो जायगी। इन बातोंपर विश्वास कर पॉम्पीने युद्धकी तैयारी शिथिल कर दी और किसी बातका खतरा न समझ कर सीजरके विरुद्ध, व्याख्यान देने और मत प्राप्त करनेके सिवाय, अन्य किसी उपायका अवलम्बन नहीं किया।

किन्तु सीजरने जो माँग पेश की वह देखनेमें बिलकुल उचित एवं न्यायसंगत मालूम होती थी। उसने प्रस्ताव किया कि मैं अपने अस्त्र शस्त्रोंका परित्याग किये देता हूँ, पॉम्पीको भी ऐसा ही करना चाहिये। हम लोगोंको अपने अपने पदसे अलग हो जाना चाहिये और अपने कार्यके लिए जनताके इनाम पानेकी आशा रखनी चाहिये। जो लोग मेरा सैनिक अधिकार तो छीन लेना चाहते हैं, किन्तु पाम्पीके हाथमें कुल अधिकार ज्योंके त्यों रहने देना चाहते हैं, वे उसे उस अत्याचारके लिए प्रोत्साहित करते हैं जो मेरा उद्देश्य बताया जाता है। जब सीज़रकी ओरसे क्यूरियोने लोगोंके सामने यह प्रस्ताव रखा, तब जनताने

उसकी प्रशंसा की। कुछ लोगोंने उसके ऊपर फूलोंकी वर्षा की। पाम्पीके ससुर सिपियोने कुलीन सभामें प्रस्ताव किया कि यदि सीजर एक निश्चित तिथिके भीतर अपने अस्त्र शस्त्रोंका परित्याग नहीं कर देता तो क्यों न वह देशका शत्रु समझा जाय? जब ऐण्टोनीने यह प्रस्ताव किया कि सीजर और पाम्पी, दोनोंको अपने पदसे हट जाना चाहिये, तब थोड़ेसे लोगोंको छोड़ कर और सब लोगोंने इसे मंजूर किया। इसपर सिपियो बहुत बिगड़ा और प्रधान शासक लेण्टुलस चिल्लाकर कहने लगा "डाकूके साथ तो सैनिक काररवाई करनेकी जरूरत है, उसके सम्बंधमें मत देनेसे काम नहीं चलेगा।" परिणाम यह हुआ कि फिलहाल कुलीन-सभाकी बैठक स्थगित कर देनी पड़ी।

इसके बाद सीजरके और भी पत्र आये, जो पहिलेसे भी अधिक नरम भाषामें लिखे गये थे। अब उसने यह इच्छा प्रकट की कि मैं सब कुछ छोड़ देनेको तैयार हूँ, केवल आल्प्सकी सीमाके भीतर गाल और दो पलटनें तबतक अपने अधीन रखना चाहता हूँ, जबतक मैं दुबारा कौन्सलके पदके लिए खड़ा न होऊँ। सुप्रसिद्ध वक्ता सिसरोके समझानेसे पाम्पी कुछ ढीला पड़ा। और सब बातें तो उसने मान लीं, किन्तु इतनी सेना उसके पास छोड़ना उसने स्वीकार नहीं किया। अब सिसरोने सीजरके मित्रोंको समझाया और उनकी सहायतासे सीजरको उक्त प्रान्तोंके अतिरिक्त केवल छ हजार सैनिक रखनेके लिए राजी किया। पाम्पी तो इतनी बात माननेके लिए तैयार था, किन्तु लेण्टुलसने इसपर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। उसने सीजरका पक्ष लेनेवाले ऐण्टोनी तथा क्यूरियोको सिनेट सभासे तिरस्कारपूर्वक बाहर निकाल दिया। इससे सीजरको अच्छा बहाना मिल गया। वह यह कह कर सैनिकोंको भड़का सकता था कि देखो यही ऐण्टोनी और क्यूरियो हैं जो इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हुए भी गुलामोंकी पोशाक पहन कर और किरायेकी गाड़ीमें बैठकर रोमसे भागनेके लिए विवश हुए थे।

उस समय सीज़रके पास तीन सौ सवार तथा पाँच हजार पैदलसे अधिक सेना न थी, क्योंकि उसकी शेष सेना आल्प्स् पहाड़के पीछे ही रह गयी थी और उसे बादमें आनेका आदेश दे दिया गया था। सीज़रने विचार किया कि इस समय मैं जो कुछ करना चाहता हूँ उसके लिए बड़ी सेनाकी जरूरत नहीं है। जरूरत सिर्फ इस बातकी है कि हमला बिलकुल अचानक किया जाय जिसमें दुश्मनकी सेनामें एकाएक गड़बड़ी मच जाय। इसीलिए उसने अपने सेनानायकों तथा अन्य अफसरोंको हिदायत कर दी कि वे लोग अपने हाथमें केवल एक एक तलवार लेकर जायँ और इस बातका ख्याल रखते हुए कि जहाँतक बने बहुत कम खूनखराबी की जाय, एक बारगी गॉलके प्रसिद्ध नगर ऐरीमीनमपर कब्जा कर लें। अपनी इस सेनाका भार हारटेनसियसके सिपुर्द कर वह स्वयं पशुओंके साथ भिड़नेवालोंका तमाशा देखता रहा। सन्ध्या होने पर उसने स्नान किया और बाहरके बड़े कमरेमें आकर उन लोगोंसे बातें करने लगा जिन्हें उसने भोजनके लिए आमंत्रित किया था। जब अँधेरा ज्यादा होने लगा, तब वह अपने आसन परसे उठ बैठा और शीघ्र ही वापस आनेकी आज्ञा देकर एवं तबतक ठहरनेके लिए उपस्थित लोगोंसे प्रार्थना कर वहाँसे चला गया। उसने अपने कई नज़दीकी मित्रोंको पहले ही आदेश दे दिया था कि वे लोग भी पृथक् पृथक् मार्गोंसे होकर निर्दिष्ट स्थानपर जा पहुँचें। वह स्वयं किरायेकी गाड़ीपर बैठ कर एक तरफको चल पड़ा और कुछ दूर जानेके बाद ऐरीमिनमकी ओर बढ़ने लगा। जब वह रूबीकन नदीके किनारे पहुँचा जो आल्प्सके इस तरफवाले गॉलको शेष इटलीसे पृथक् करती है, तब वह सोचने लगा कि अब मैं संकटमय मार्गमें प्रवेश करने जा रहा हूँ। यह ख्याल कर कि मैं कितने बड़े काममें हाथ लगा रहा हूँ, वह कुछ चिन्तित सा हो गया। उसने यात्रा रोक दी और स्थिरचित्तसे अपने भविष्यपर विचार करने लगा। मुँहसे उसने कुछ नहीं कहा, किन्तु मन ही मन उसने कई बार अपना इरादा बदला।

उसने कुछ मित्रोंसे भी सलाह की और कहा कि मेरे इस नदीके पार करनेसे मनुष्य जातिपर न जाने कितनी आपत्तियाँ आयेंगी और हमारी आगे आनेवाली सन्तानोंको न जाने इसका क्या वृत्तान्त पढ़नेको मिले। अन्तमें एक तरहके जोशमें आकर, सब तरहके बाधक विचारोंको दबा कर यह चिल्ला उठा। "जो होना हो सो हो, अब तो पासा पड़ गया।" यह कह कर वह नदीकी ओर बढ़ा। उस पार पहुँचने पर उसने यात्रामें खूब तीव्रता की और दिन निकलनेके पहले ही ऐरिमिनम पहुँच गया और उसपर अधिकार भी कर लिया।

ऐरिमिनमपर अधिकार होनेके बाद ही मानो प्रत्येक भूभाग और प्रत्येक समुद्रपर युद्ध होनेके लिए मार्ग खुल गया और प्रान्तकी सीमाओंके साथ साथ कानूनकी सीमाओंका भी उल्लङ्घन किया जाने लगा। ऐसा प्रतीत होता था मानो केवल स्त्री पुरुष ही इटलीके एक नगरसे भाग कर दूसरेको नहीं जाते थे, बरन स्वयं नगर ही मानो अपने अपने स्थान छोड़ कर आत्मरक्षाके लिए एक दूसरेकी शरण लेते थे। आस पासके स्थानोंसे भाग कर आये हुए लोगोंके कारण रोम नगरमें एक तरहकी बाढ़ सी आ गयी। मजिस्ट्रेटोंके लिए शासन करना असम्भव हो गया। बड़ेसे बड़ा वक्ता शान्ति स्थापित करनेमें असमर्थ था। उस समय लोगोंमें एक दूसरेके प्रति अत्यन्त उत्तेजित भाव दृष्टिगोचर हो रहे थे। इस परिवर्त्तनके कारण जिन लोगोंको खुशी हुई वे अपने भावोंको छिपा नहीं सके। पॉम्पी एक तो यों ही घबराया हुआ सा था, दूसरे वह लोगोंके मुँहसे तरह तरहकी बातें सुन कर और भी बदहवास सा हो गया था। कोई कहता था कि पॉम्पीने स्वयं सीज़रको अपना और वर्त्तमान शासनका विरोधी बनानेमें सहायता दी थी, इसीका यह परिणाम है। कुछ लोगोंका ख्याल था कि पॉम्पीने लेण्टुलसके हाथ सीज़रका अपमान होने दिया, यह अच्छा नहीं किया, क्योंकि सीज़र बहुत कुछ दबनेको तैयार था और उसकी शर्तें भी कड़ी नहीं थीं। एक बार सिनेट सभामें डींग मारते हुए पॉम्पीने कहा था

"युद्धकी तैयारीके लिए आप लोग चिन्तित न हों, क्योंकि मेरे एक बार ज़मीनपर पैर पटकनेके साथ ही सारा इटली देश सैनिकोंसे भर जायगा।" इस घटनाका स्मरण दिलाते हुए फैवोनियसने कहा "कृपा कर अब ज़मीन-पर पैर पटक कर देखिये, क्योंकि अब इसका समय आ गया है।" जो हो, इसमें सन्देह नहीं कि इस समय पॉम्पीके पास सीज़रकी अपेक्षा अधिक सेना थी, किन्तु घबराहटके मारे वह अपने विचारोंके अनुसार काम नहीं करने पाता था। झूठी अफ़वाहें सुन सुन कर वह इतना परेशान हो गया मानो दुश्मन बिलकुल सिरपर चढ़ आया हो और बराबर सफल हो रहा हो। उसने एक घोषणा प्रकाशित की कि नगरमें अराजकता फैल गयी है, अतः मैं बाहर जा रहा हूँ। सिनेट-सभाके सदस्यों तथा अन्य लोगोंको चाहिये कि देश-हितकी दृष्टिसे वे भी मेरा अनुकरण करें।

प्रधान शासक तथा सिनेट-सभाके कई सदस्य तुरन्त भाग गये। कुछ लोग जो पहले सीज़रके समर्थक थे, अपने विचारोंका कुछ भी ख्याल न कर, दूसरोंकी देखादेखी भागने लगे। इस समय रोमकी दशा उस जहाज़के सदृश थी जिसे मल्लाहोंने समुद्रकी सतहपर मनमाने टकरानेके लिए छोड़ दिया हो। किन्तु इस दुर्दशाके समय भी लोग पॉम्पीका साथ देनेको तैयार थे। वे रोमको मानो सीज़रकी शिविर-भूमि समझ कर ही वहाँसे निकल आये थे। सीज़रके लेबिइनस नामक एक मित्र तकने, जो गॉलके युद्धमें बड़े उत्साहके साथ उसकी ओरसे लड़ा था, उसका साथ छोड़ दिया और पॉम्पीके पक्षमें जा मिला। फिर भी सीज़रने उसके पास बहुत-सा धन और सामान भेजा। इसके बाद वह करफी-नियमकी ओर बढ़ा जहाँ पॉम्पीका सेनापति डोमीशियस सैनिकोंकी तीस टुकड़ियोंके साथ ठहरा हुआ था। सीज़रका सामना करनेमें अपनेको असमर्थ समझ कर उसने अपने चिकित्सकसे कहा कि मुझे ज़हर दे दो। चिकित्सकने एक सरहका शर्बत बना कर उसे दे दिया और वह तुरन्त उसे पी गया। किन्तु जब उसे मालूम हुआ कि लड़ाईके कैदियोंके

साथ सीज़र विशेष दया और नरमीका व्यवहार करता है, तब वह अपनी ग़लती पर बहुत अफसोस करने लगा। यह देख कर चिकित्सकने कहा कि "आप चिन्तित न हों, मैंने आपको नींद लानेवाली दवा ही दी है, ज़हर नहीं।" इतना सुनते ही वह बहुत प्रसन्न हुआ उसने तुरन्त सीज़रकी शरणमें जाकर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली, यद्यपि कुछ समयके बाद वह पुनः पॉम्पीकी ओर चला गया।

डोमीशियसके सैनिकोंको भी साथमें लेकर सीज़रने पॉम्पीके विरुद्ध प्रयाण किया। पॉम्पी तुरन्त दूसरे स्थानको चला गया। सीज़रका आ पहुँचना सुन कर वह जहाजमें बैठ कर भाग निकला। जलयानोंकी कमीके कारण सीज़र उसका पीछा न कर सका और रोमको लौट गया। इस प्रकार बिना रक्तपात किये ही साठ दिनोंके भीतर वह समस्त इटलीका अधिपति बन गया। जब वह रोम पहुँचा तो उसने उसे काफी शान्त पाया। सिनेट सभाके कई सदस्य भी अब वापस आ गये थे। उनसे भद्रतापूर्वक बातचीत करते हुए उसने कहा कि शान्ति स्थापित करनेके लिए पॉम्पीके पास यथोचित शर्तें भेजनी चाहिये। किन्तु किसीने इस ओर ध्यान नहीं दिया। जब वह सार्वजनिक कोषमेंसे कुछ रुपया निकालने लगा तो मेटेलसने कुछ क़ानूनोंका उल्लेख कर उसका विरोध किया। सीज़रने जवाब दिया कि "युद्धके समय क़ानूनोंकी ज्यादा परवाह नहीं की जा सकती। यदि तुम्हें मेरा कार्य अच्छा न लगता हो, तो चुपचाप यहाँसे चले जाओ। युद्धकालमें बोलनेकी इतनी स्वतन्त्रता नहीं दी जा सकती।" कुंजियाँ न मिलनेके कारण जब उसने खजानेका दरवाजा तोड़नेकी आज्ञा दी, तब मेटेलसने फिर कुछ कहना चाहा। इस बार सीज़रने ज़रा ज़ोरसे कहा "यदि तुम ज्यादा रुकावट डालोगे तो तुरन्त तुम्हारा सिर धड़से अलग कर दिया जायगा। तुम यह समझ लो कि इन शब्दोंके कहनेमें जितना कष्ट होता है, उतना उन्हें कार्यमें परिणत करनेमें न होगा।" सुन कर मेटेलस शान्त हो गया।

अब उसने स्पेन जानेकी तैयारी की। उसका इरादा था कि वहाँ जाकर पॉम्पीके सेनानायकोंको हराकर उनकी सेना और अधीनस्थ प्रान्तोंपर अधिकार कर लिया जाय। वह समझता था कि इस प्रकार जब मेरी शक्ति बढ़ जायगी और कोई दुश्मन भी न रह जायगा, तब पॉम्पीके विरुद्ध प्रयाण करनेमें सफलता शीघ्र ही मिल सकेगी। यहाँ कई बार उसे अपनी जान जोखिममें डालनी पड़ी और खाद्य वस्तुओंकी कमीके कारण सेनाको भी बड़ा कष्ट हुआ, किन्तु अन्तमें वह विजयी हुआ। केवल दोनों सेनानायक भाग निकले और पाम्पीसे जा मिले।

जब सीज़र रोमको लौट आया, तब कुछ ही दिनोंके बाद सिनेट सभाने उसे रोमका सर्वेसर्वा बना दिया। उसने निर्वासित व्यक्तियोंको पुनः रोममें बुला लिया और उन लोगोंके लड़कोंको पुनः रोमन प्रजाके अधिकार दे दिये जिन्हें सिलाने उक्त अधिकारोंसे वंचित कर दिया था। उसने व्याजका कुछ भाग माफ कर ऋणग्रस्त लोगोंका भार कम कर दिया। ग्यारह दिनोंके भीतर ही उसने सर्वेसर्वाका पद त्याग दिया और अपनेको प्रधान शासक तथा सेनापति (कौंसल) घोषित किया। अब वह पुनः युद्ध-यात्राके लिए चल पड़ा। उसने यात्रामें इतनी शीघ्रता की कि उसकी सेनाका एक बड़ा भाग बहुत पीछे रह गया। केवल छः सौ चुने हुए सवारों एवं पाँच पलटनोंके साथ ऐन जाड़ेके समय अर्थात् जनवरीके शुरूमें वह पोतारूढ़ हुआ। आइओनियन समुद्र पार कर उसने ओरिकम तथा अपोलोनिया नामक स्थान ले लिये और पिछड़े हुए सैनिकोंको ले आनेके लिए जहाजोंको ब्रण्डूज़ियम वापस भेज दिया। ये पिछड़े हुए सैनिक रास्ता चलते जाते थे और आपसमें कहते जाते थे "न जाने कब सीज़र हम लोगोंको चैन लेने देगा। वह हमें बराबर एक स्थानसे दूसरे स्थानको ले जाता है, मानो हम कभी थकते ही न हों। युद्ध करते करते हमारी तलवारें तक भोथरी हो गयीं, अब हमें अपनी ढालोंपर रहम करना चाहिये जो वर्षोंसे प्रहार सहती आ रही हैं! हमारे

जख्मोंको देख कर तो उसे समझ लेना चाहिये कि हम भी मनुष्य ही हैं और कष्टोंका अनुभव हमें भी होता है। स्वयं देवता लोग शीतकालका आगमन नहीं रोक सकते और न तूफानोंके उपस्थित होनेमें ही बाधा डाल सकते हैं। इतना होते हुए भी सीजर इतनी तेजीसे प्रयाण कर रहा है मानो वह दुश्मनका पीछा करनेके बजाय स्वयं अपनी जान लेकर भाग रहा हो।" इस तरहकी बातें करते करते जब वे ब्रुण्डूसियम पहुँचे, तब उन्हें मालूम हुआ कि सीजर तो पहले ही चला गया। अब उनके भाव बदल गये। वे अपनेको धिक्कारने लगे और इतने धीरे धीरे चलनेके कारण अपने अफसरोंको दोष देने लगे। ऊँचाईपर चढ़ कर वे उत्सुकता पूर्वक उन जहाजोंकी प्रतीक्षा करने लगे जो उन्हें सीजरके पास ले जानेवाले थे।

सीजर इस समय अपोलोनियामें ठहरा हुआ था, किन्तु उसके पास शत्रुसे युद्ध करनेके लिए काफी सेना न थी। सेनाके आनेमें विलम्ब होते देख कर वह अधीर हो उठा और उसने चुपचाप एक नौकामें बैठ कर ब्रुण्डूसियम जानेका निश्चय कर लिया, यद्यपि इस समय समुद्रपर शत्रुका नाविक बेड़ा जहाँ तहाँ फैला हुआ था। रात होते ही वह एक गुलामकी पोशाक पहन कर बिलकुल अकिंचन व्यक्तिकी तरह नावमें जा बैठा। उसे एनियस नदीके मार्गसे समुद्रमें पहुँचना था। कुछ दूर जाने पर मालूम हुआ कि समुद्रकी ओरसे तेज हवा चलनेके कारण नदीके मुखके इस तरफका जलभाग अत्यन्त क्षुब्ध हो रहा है और आगे बढ़ना असम्भव है। यह देख कर प्रधान मल्लाहने नौका लौटानेकी आज्ञा दे दी। अब सीजरने अपना परिचय देते हुए उससे कहा "मित्र, निराश मत होओ, निर्भय होकर चले चलो। इस समय सीजर और उसका सारा भविष्य तुम्हारे हाथमें है।" मल्लाहोंने यह सुन कर अपनी जान हथेली पर रख कर नाव आगे बढ़ानेकी कोशिश की, किन्तु सफलता नहीं हुई। नावमें पानी भरते देख कर और खतरा समझ कर सीजरको लौटनेके लिए लाचार होना पड़ा। किनारेपर उतरते ही उसके सैनिकोंके दलके दल दौड़ पड़े

और उसके कार्यकी निन्दा करने लगे। वे कहने लगे "क्या आपको अपनी और हमारी शक्तिपर विश्वास नहीं था? यद्यपि हम लोग संख्यामें कम हैं, फिर भी क्या आप हमारे साथ शत्रुपर विजय नहीं पा सकते थे? हम लोगोंको छोड़ कर उन लोगोंके लिए जो पीछे रह गये हैं आप नाहक अपनी जान इस तरह खतरेमें डालते हैं।"

इसके बाद ब्रण्डूज़ियमसे ऐण्टोनीकी अधीनतामें पिछड़ी हुई सेना भी आ गयी। अब सीज़रकी हिम्मत बढ़ गयी और उसने पाम्पीकी सेनासे युद्ध छेड़ दिया। सीज़रके लिए एक बड़ी कठिनाई यह थी कि उसके पास खानेपीनेकी सामग्रीका काफी प्रबन्ध नहीं था। इस सम्बन्धमें शत्रुकी स्थिति बहुत अच्छी थी। कई मुठभेड़ोंमें तो सीज़रकी विजय हुई किन्तु एक बार उसकी सेनाको इस तरह भागना पड़ा मानो उसके पूर्णतया पराजित होनेमें कोई सन्देह नहीं रह गया। पाम्पीने इस बार इतनी तेज़ीसे आक्रमण किया था कि सीज़रका एक भी सैनिक अपने स्थानपर खड़ा नहीं रह सका। मृतकोंसे खाइयाँ भर गयीं। सीज़रने भागते हुए सैनिकोंको रोकनेकी कोशिश की, पर सफल न हुआ। उसने चाहा कि कमसे कम झण्डेवाले तो अपने स्थानपर खड़े रहें, पर वे भी झण्डे पटक कर भागे। बत्तीस झण्डे शत्रुके हाथ लगे। स्वयं सीज़र भी घायल होते होते बचा। उसने अपने पाससे भागते हुए एक हृष्ट-पुष्ट सैनिकको पकड़ कर युद्धोन्मुख होनेकी आज्ञा दी। सैनिकने अपने प्राण संकटमें देख कर तुरन्त तलवारके कब्जेपर हाथ रखा मानो वह सीज़रपर वार करना चाहता हो, किन्तु इसी समय सीज़रके अंगरक्षकने उसकी भुजा काट डाली। सीज़र इस समय बड़े भारी संकटमें था। जब उसने सुना कि पाम्पीने हम लोगोंका अन्ततक पीछा करनेके बजाय पीछे हट जाना ही अच्छा समझा है, तब उसने अपने मित्रोंसे कहा "यदि आज शत्रुकी ओर कोई कुशल सेनापति होता तो उसकी पूर्ण विजय होनेमें ज़रा भी सन्देह नहीं था।" जब वह विश्राम करनेके लिए

अपने सम्पूमें गया, तब वह रात भर यही सोचता रहा कि "मैंने इस समय युद्ध छेड़नेमें बड़ी गलती की। जब मेरे सामने उर्वरा भूमि और मकदूनिया तथा थेसलीके वैभवसम्पन्न नगर थे, तब तो मैंने लड़ाई शुरू नहीं की, और अब समुद्रके किनारे, जहाँ शत्रुका एक शक्तिशाली बेड़ा खड़ा है, आकर खाद्य-सामग्रीके बिना कष्ट भोग रहा हूँ।" यही समझ कर प्रातःकाल उसने अपना शिविर वहाँसे हटा लिया और सिपियोसे युद्ध करनेकी गरजसे, जो उस समय मकदूनियामें था, आगे बढ़ा। उसका ख्याल था कि यदि पाम्पी वहाँ भी जा पहुँचा, तो उसे वहाँ इतनी सुविधा न मिलेगी जितनी यहाँ थी, और यदि वह न गया तो मैं सिपियोको परास्त कर ही सकूँगा।

यह खबर पाकर पाम्पीकी सेनाने बिना विलम्ब किये ही सीज़रका पीछा करनेका प्रयत्न किया। किन्तु पाम्पी इस समय युद्ध छेड़नेसे डरता था। उसके साथ सभी आवश्यक वस्तुएँ काफी तादादमें थीं, अतः उसने सोचा कि युद्ध करनेमें जितना विलम्ब किया जाय उतना ही अच्छा होगा। ऐसा करनेसे सीज़रके सैनिकोंका जी ऊब उठेगा और उनकी शक्ति भी क्षीण हो जायगी। साथ ही इस बीचमें उनकी खाद्यसामग्री भी समाप्त हो जायगी, अतः कुछ समयके बाद सीज़रको अवश्य ही आत्मसमर्पणके लिए विवश होना पड़ेगा।

पाम्पीको युद्ध छेड़नेमें देर करते देख कर और किसीने तो नहीं, पर कैटोने मन ही मन उसे बहुत धन्यवाद दिया, क्योंकि वह अपने देशवासियोंकी हत्या देख कर बड़ा दुःखी होता था। पिछली बार जब युद्ध हुआ था, तब सीजरकी तरफके कोई एक हजार आदमियोंके शव देख कर उसने आँखें बन्द कर ली थीं और मुँह ढाँक कर रोने लगा था। किन्तु कैटोके सिवाय अन्य सब लोगोंने शीघ्र युद्ध न शुरू करनेके कारण पाम्पीकी निन्दा की और उसे इस तरह बनाना शुरू किया कि इच्छा न रहते हुए भी उसे युद्धके लिए तैयार होना पड़ा।

जब दोनों सेनाएँ फारसेलिया नामक स्थानमें पहुंचीं और वहां उन्होंने पड़ाव डाला, तब पाम्पीने पुनः युद्ध न करनेका विचार किया, क्योंकि उसे कुछ अशकुन हुए थे और रातमें एक खराब स्वप्न भी उसने देखा था। किन्तु उसके साथियोंको अपनी सफलताका इतना अधिक विश्वास था कि डोमीशियस, स्पिन्थर तथा सिपियो आपसमें इस बात-पर झगड़ पड़े कि सीज़रके रिक्त स्थानपर किसकी नियुक्ति की जायगी। कुछ लोगोंने रोमको यह खबर भिजवा दी कि प्रधान शासकों एवं उपशासकोंके रहने योग्य कई मकान ठीक करके रखे जायँ। इन लोगोंका ख्याल था कि लड़ाई खतम होते ही उक्त पदोंपर हमारी नियुक्ति हो जायगी। घुड़सवार लोग विशेष रूपसे युद्धके लिए उत्सुक थे। वे अस्त्र-शस्त्रोंसे भली भाँति सुसज्जित थे और उन्हें अपने श्रेष्ठ घोड़ों तथा गठीले बदनका बहुत दर्प था। उनकी संख्या भी अपेक्षाकृत बड़ी थी—वे पाँच हजार थे, किन्तु सीजरके सवार कुल एक हजार ही थे। पैदल सेना भी सीज़रकी बीस हजार सेनाके मुकाबलेमें पाम्पीके पास पैंतालीस हजार थी।

अपने सैनिकोंको एकत्र कर सीज़रने कहा कि कारफीनियस दो पल्टनें लेकर आ रहा है और केलेनसके साथ भी १५ टुकड़ियाँ आ रही हैं, अतः आप लोग उनके आने तक ठहरना चाहते हैं या आप अकेले ही युद्ध करनेको तैयार हैं? सबने एक स्वरसे उत्तर दिया कि इस समय ठहरना ठीक नहीं, बल्कि आपको शीघ्र ही युद्ध शुरू करनेकी कोशिश करनी चाहिये। जब सीजरने देवताओंको बलि चढ़ा दी, तब उसने ज्योतिषीसे अपने भविष्यके सम्बन्धमें पूछा। उसने उत्तर दिया कि तीन दिनके भीतर आपके भविष्यका अन्तिम निर्णय हो जायगा। आपकी दशा एकदम बदल जायगी। यदि इस समय आप अपनेको अच्छी हालतमें समझते हैं तो समझ लीजिये कि आगे आपके दिन खराब हैं। यदि इस समय आप कष्टमें हैं तो आगे आप अवश्य सुखी होंगे।

सीजरने सोचा कि एक मंज़िल और चल कर तब युद्ध किया जाय। इस ख्यालसे उसने तम्बू उखाड़नेकी आज्ञा दे दी। इसी समय उसके जासूसोंने आकर ख़बर दी कि शत्रु-सेना आज ही युद्ध करना चाहती है। यह सुन कर सीजर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने देवताओंको बलि चढ़ाकर अपनी सेनाके तीन भाग किये—मध्यभाग डोमीशियस कैल्वीनसके सिपुर्द किया गया और वामभाग ऐन्टोनीके। दाहने भागका अधिपति वह स्वयं हुआ। जब उसने देखा कि शत्रुकी घुड़सवार सेना ठीक मेरे सामने खड़ी की जा रही है, तब उसने आज्ञा दी कि सेनाके पिछले भागसे छ टुकड़ियाँ आकर दाहने भागके ठीक पीछे खड़ी हो जायँ और उन्हें यह भी समझा दिया कि जब शत्रुके सवारोंका आक्रमण हो, तब किस तरह उनका सामना किया जाय। शत्रुने भी अपनी सेनाके तीन भाग किये। दाहनेका सेनापति पाम्पी स्वयं, बायेंका डोमीशियस तथा मध्यभागका सिपियो हुआ। सवारोंका ज्यादा ज़ोर वाम भागमें ही था, क्योंकि यही सीजरके दाहने भागके सामने पड़ता था। जब दोनों सेनाएँ युद्ध प्रारंभ करनेके लिए बिलकुल तैयार हो गयीं, तब पाम्पीने अपने पैदल सिपाहियों को, जो सामने थे, आज्ञा दी कि तुम लोग अपनी जगहपर खड़े रहो और तबतक चुपचाप शत्रुका प्रथम प्रहार सहते रहो जबतक उसके सैनिक काफी नज़दीक न आ जावें। सीजरके कथनानुसार पाम्पीने अपने पदातियोंको ऐसी आज्ञा देकर ग़लती की, क्योंकि उसने इस बातका ख्याल नहीं किया कि प्रथम आक्रमण प्रायः जिस ज़ोरसे होता है उसके कारण शत्रुकी विशेष हानि होनेकी संभावना रहती है। जब सीजर अपनी सेनाको आगे बढ़नेकी आज्ञा दे रहा था, तब उसने देखा कि उसका एक अनुभवी कप्तान अपने सैनिकोंको विशेष रूपसे प्रोत्साहित कर रहा था। सीजरने उससे कहा "क्रैसिनियस, क्या तुम्हें विजयकी पूरी आशा है, तुम्हारे इस प्रोत्साहनका क्या कारण है?" क्रैसिनियसने हाथ फैला कर ज़ोरसे कहा "हाँ सीजर, हम लोग बड़ी अच्छी तरह विजयी होंगे। चाहे

जीवित रहूँ या युद्धमें प्राण देकर स्वर्गगामी होऊँ, पर आज आपकी प्रशंसाका पात्र जरूर बनूँगा।" सबसे पहले इसीने शत्रुपर आक्रमण किया। इसके १२० सैनिकोंने भी इसका साथ दिया। शत्रु-सेनाको चीरते हुए ये लोग आगे बढ़ रहे थे कि किसीने इसके मुँहमें तलवार घुसेड़ दी जो दूसरी तरफ गरदनके ऊपर निकल आयी। जब पैदल सेना इस प्रकार युद्ध-क्षेत्रके मध्यभागमें लड़ रही थी, तब पाम्पीके घुड़सवारोंने आगे बढ़कर सीज़रके दाहने पक्षको घेर लिया। किन्तु वे लोग युद्ध शुरू भी नहीं कर पाये थे कि सीज़रके सैनिक दौड़ पड़े और उसने उन्हें जो आदेश पहलेसे दे रखा था, उसके अनुसार उन्होंने अपने बरछों इत्यादिसे पाम्पीके घुड़सवारोंकी जाँघों या टाँगोंमें कोई जख्म न कर चेहरोंपर ही प्रहार करनेकी चेष्टा की। सीज़र जानता था कि इन नवयुवक सवारोंको युद्धका अनुभव है ही नहीं, अतः इन्हें अपने लम्बे लम्बे सुन्दर बालों तथा चेहरोंके बचावकी ज्यादा फिक्र होगी। हुआ भी ऐसा ही। सवारोंने इस तरहके प्रहारोंसे बचनेके लिए अपनी आँखें बन्द कर लीं और दोनों हाथोंसे चेहरोंको ढाँक लिया। शीघ्र ही उन्हें पीठ दिखा कर भागना पड़ा। यह देख कर पाम्पी बिल्कुल घबड़ा गया और बिना कुछ कहे सुने चुपचाप अपने तम्बूमें जाकर बैठ गया। जब उसकी सेना परास्त हो गयी और शत्रु उसके तम्बूके पास आ पहुँचा, तब वह हड़बड़ाकर बोल उठा "ऐं! क्या वे लोग तम्बूमें भी आ पहुँचे?" ऐसा कह कर और भेष बदल कर वह तम्बूसे भाग निकला।

जब सीज़र पाम्पीके शिविरमें पहुँचा और उसने बहुसंख्यक मृतकोंको भूमिपर पड़े हुए देखा, तब वह बड़े दुःखके साथ कहने लगा "वे लोग यही चाहते थे, उन्होंने मुझे यह कठोर दृश्य उपस्थित करनेके लिए विवश किया। यदि इतने युद्धोंमें सफलता प्राप्त कर चुकनेके बाद मैं अपनी सेनाको विसर्जित कर देता तो मैं दोषी ठहराया जाता।" युद्धमें बन्दी बनाये गये पदातियोंको सीज़रने अपनी पैदल सेनामें भरती कर

लिया और मुख्य मुख्य अफ़सरोंको बिल्कुल क्षमा कर दिया। इनमें ब्रूटस भी था, जो बादमें उसकी हत्या करनेवाला हुआ।

अपनी विजयके स्मारकस्वरूप सीज़रने थेसेलियन लोगोंको स्वतंत्र कर दिया, फिर वह पाम्पीकी खोजमें निकला। थियोपाम्पसको प्रसन्न करनेके लिए नीडियन लोगोंको भी उसने मताधिकार प्रदान किया और एशियावालोंका तृतीयांश कर माफ़ कर दिया। जब वह सिकन्दरिया पहुँचा, जहाँ पाम्पी पहले ही मार डाला गया था, तब थियोडोटसने उसका सिर उसे अर्पित करना चाहा। सीज़रने उसकी ओर दृष्टिपात भी नहीं किया, केवल उसकी मुद्रा ले ली और रोने लगा। पाम्पीके जिन मित्रोंको मिस्र देशके राजाने कैद कर लिया था, उन्हें उसने छुड़वा दिया और स्वयं उनसे मित्रता करनेके लिए तैयार हो गया। रोममें रहने वाले अपने मित्रोंको उसने लिखा था कि विजयी होने पर मेरे लिए सबसे अधिक आनन्दकी बात यह हुई कि मैं अपने उन देशवासियोंके जीवनकी रक्षा कर सका जिन्होंने मेरे विरुद्ध शस्त्र ग्रहण किया था। मिस्रके साथ किये गये युद्धके सम्बन्धमें कुछ लोगोंका कहना है कि वह बहुत ही भीषण एवं बिल्कुल अनावश्यक था और उसका मुख्य कारण क्लिओपैट्राके प्रति सीज़रकी आसक्ति थी। अन्य लोगोंकी रायमें युद्धका कारण राजाके मंत्रियोंका, विशेषकर पोथीनस नामक ख्वाजाका व्यवहार था। इसने हालमें ही पाम्पीकी हत्या कर डाली थी और क्लिओपैट्राको देशसे निकलवा दिया था। अब वह सीज़रके विनाशके लिए छिपे छिपे साजिश कर रहा था (इसीसे अपने प्राणोंकी रक्षाके निमित्त आजकल सीज़र मदिरापान इत्यादिके बहाने रात रात भर जागता रहता था)। सीज़रके प्रति उसका व्यवहार असह्य था। सीज़रके सैनिकोंको खानेके लिए गया गुज़रा अनाज दिया जाता था। पूछने पर पोथीनस उत्तर देता था कि उन्हें इसीसे सन्तुष्ट हो जाना चाहिये, क्योंकि वे अपने भोजनके लिए दूसरे-पर आश्रित हैं। उसने आदेश दे दिया था कि सीज़रका भोजन मिट्टी या

लकड़ीके पात्रोंमें परोसा जाय, क्योंकि सोने तथा चाँदीके पात्र तो वह (सीज़र) अपना बाक़ी बचा हुआ कर्ज़ वसूल करनेके बहाने स्वयं उठा ले गया था। वर्त्तमान राजाके पिताने सीज़रसे १ करोड़ ७५ लाखका कर्ज़ लिया था। इसमेंसे एक करोड़का ऋण अभी बाकी था। सीज़रने अपनी सेनाका खर्च चलानेके लिए यह रकम वापस माँगी। पोथीनसने कहा कि इस समय तो आप अन्य महत्त्वपूर्ण कार्योंकी ओर ध्यान दीजिये, फिर कुछ समयके बाद आपका कर्ज़ धन्यवादपूर्वक चुकता कर दिया जायगा। सीज़रने जवाब दिया कि मिस्रवाले मुझे सलाह देनेका कष्ट न करें क्योंकि मैं उनसे मन्त्रणा करनेके लिए इच्छुक नहीं हूँ। उसने शीघ्र ही क्लिओपेट्राको चुपचाप अपने पास बुलवा भेजा।

क्लिओपेट्रा केवल एक पार्श्ववर्तीके साथ नावमें बैठ कर सन्ध्या समय राजभवनके पास जा उतरी। वह एक बिस्तरेकी चादरके नीचे लेट गयी। बिस्तरा सिरपर रख कर उक्त अनुचर फाटक पार करता हुआ सीज़रके कमरेमें जा पहुँचा। क्लिओपेट्राकी यह चतुराई देख कर और उसकी संगतिसे मुग्ध होकर सीज़रने उसके भाईके साथ इस शर्तपर उसका समझौता करा दिया कि भाईके साथ साथ वह भी शासक समझी जाय। इस समझौतेके उपलक्ष्यमें एक उत्सव भी मनाया गया जिसमें सीज़रके नाईको आपसमें बातचीत करते करते अचानक उस साजिशका पता लग गया जो राजाके सेनापति ऐकिल्स तथा पोथीनस द्वारा सीज़रके विरुद्ध की जा रही थी। बात मालूम होने पर सीज़रने भोज गृहमें एक पहरेदार नियुक्त कर दिया और पोथीनसको मरवा डाला। ऐकिल्स भाग कर अपनी सेनामें चला गया। उसने सीज़रके विरुद्ध ऐसा भयंकर युद्ध छेड़ा कि सीज़रको अपने थोड़ेसे सैनिकोंके साथ ऐसे प्रभावशाली नगर और इतनी बड़ी सेनाका सामना करना अत्यन्त कठिन हो गया। पहली कठिनाई तो यह थी कि शत्रुने उन नहरोंको पाट दिया जिनसे उसकी सेनाको पानी मिलता था। दूसरी कठिनाई थी शत्रुके हाथमें पड़नेसे

बचानेके लिए सीज़रको अपने जहाज़ोंको नष्ट कर देना और बन्दरगाहको जला देना। तीसरी कठिनाई फैरोके पासकी समुद्री लड़ाईके समय पैदा हुई। जब सीज़रने अपने आदमियोंको ज्यादा संकटमें देखा, तब वह उनकी सहायता करनेके लिए बाँधपरसे कूद कर एक नावमें जा बैठा। शत्रुके तंग करने पर वह समुद्रमें कूद पड़ा और बड़ी कठिनाईसे तैर कर पार हुआ। कहते हैं, इस समय कई पुस्तकोंकी हस्तलिखित प्रतियाँ उसके हाथमें थीं। यद्यपि उसपर अनेक तीर चलाये गये जिससे वह अपना सिर तक पानीके बाहर नहीं निकाल सकता था, फिर भी हाथके कागजोंको उसने ज़रा भी भींगने नहीं दिया। उसकी नाव शीघ्र ही डुबो दी गयी। अन्तमें जब राजा ऐक्रिलसके पास चला गया तब सीज़रने उन लोगोंपर आक्रमण किया और उन्हें जीत लिया। उस लड़ाईमें बहुत आदमी मारे गये और राजा भी इसके बाद कभी नहीं दिखाई दिया। अब वह शीघ्र ही क्लिओपेट्राको मिस्रकी रानी बना कर चला गया। थोड़े समयके बाद उसके एक पुत्र हुआ जो सीज़रसे सम्बन्ध होनेके कारण सीजेरियन कहलाया।

अब सीज़रने सीरियाके लिए प्रस्थान किया। वहाँ से वह एशियाको चला गया, जहाँ फारनेसीज़के हाथ पराजित होकर डोमीशियसको पौण्टस-से भागना पड़ा। फारनेसीज़ अभी और भी उसका पीछा करना चाहता था। उसने कई राजाओंको आमंत्रित किया। सीज़र तीन पल्टनें लेकर तुरन्त उसके विरुद्ध चल पड़ा। उसने उसे पौण्टससे बाहर निकाल दिया और उसकी सेनाको बिल्कुल परास्त कर दिया। यह सब काम इतनी शीघ्रतासे किया गया कि इसका वर्णन सीज़रने अपने एक मित्रको लिखे हुए पत्रमें केवल इन तीन चार शब्दोंमें किया था—मैं आया, देखा और विजयी हुआ।

यहाँसे वह इटली चला गया और उस वर्षके समाप्त होते होते, जिसमें वह दुबारा सर्वेसर्वा चुना गया था, रोम जा पहुँचा। अब

अगले वर्षके लिए वह प्रधान शासक (कौंसल) चुना गया। इस समय कुछ लोगोंने उसकी बदनामी शुरू की, क्योंकि उसने अपने उन विद्रोही सैनिकोंको कोई ज्यादा सख्त सजा नहीं दी जिन्होंने कॉस्कोनिअस और गल्बा नामक उपशासकोंकी हत्या कर डाली थी। उसकी बदनामीका एक कारण यह भी था कि उसके मन्त्रियोंमेंसे कोई बहुत उड़ाऊ, कोई अत्यन्त लोभी, कोई व्यभिचारी और कोई बहुत उद्दण्ड था। सीज़र यह सब कुछ जानता था, किन्तु उसे शासनकार्यमें इन लोगोंसे काफी सहायता मिलती थी, इसीसे वह इन्हें अलग नहीं कर सकता था।

फारसेलियाकी लड़ाईके बाद कैटो और सिपियो भाग कर आफ्रिका चले गये और वहाँ जूबा नामक राजाकी सहायतासे उन्होंने एक बड़ी सेना बटोर ली। सीज़रने इन लोगोंसे युद्ध करनेकी ठान ली। मकर संक्रान्तिके करीब वह सिसली जा पहुँचा और वहाँ समुद्रके किनारे ठहर गया। वायुकी अनुकूलता देखते ही तीन हजार पैदल और कुछ घुड़सवारोंको लेकर वह जहाजमें बैठ गया। इन लोगोंको यथास्थान पहुँचा कर वह यह देखनेके लिए वापस लौट पड़ा कि बची हुई सेना भी पीछे आ रही है या नहीं। यह सेना उसे मार्गमें ही मिल गयी और वह इसे लेकर पुनः शिविरको लौट आया। यहाँ उसे मालूम हुआ कि शत्रु-दलमें एक भविष्यद् वाणीके आधारपर यह विश्वास प्रचलित है कि सिपियोवंशके लोग आफ्रिकामें हमेशा विजयी होंगे। सीज़रकी सेनामें सिपियो सैल्युशियो नामका एक साधारण योद्धा था। शत्रुके सेनापति सिपियोका मजाक उड़ानेकी दृष्टिसे हो या उक्त भविष्यद्वाणीके ख्यालसे हो, सीज़रने इसे सेनापतिकी तरह, प्रत्येक युद्धमें अपनी सेनाके आगे चलनेको कहा। एक दिन सीज़रकी घुड़सवार सेनाके लोग एक आफ्रिकनका नाच देख रहे थे; इतनेमें एकाएक शत्रुसेनाने उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। बहुतसे सैनिक तो मारे गये, शेष भाग खड़े हुए। शत्रुने उनका पीछा किया। इस समय स्वयं सीज़र तथा असीनियस पोलिओने आकर

सहायता न दी होती एवं भागते हुओंको न रोका होता तो सीज़र-सेना बिलकुल पराम्त हो जाती और युद्ध ही समाप्त हो जाता। इसी तरह एक और मुठभेड़में सीज़रकी सेनाको नीचा देखना पड़ा था।

अपनी विजयसे प्रसन्न होकर सिपियो एक ऐसी लड़ाई लड़नेकी चेष्टा करने लगा जिसमें जय-पराजयका अन्तिम निपटारा हो जाय। इसी ख्यालसे उसने एक सेना एफ्रेनियसके अधिकारमें और दूसरी जूबाके अधिकारमें थोड़ी ही दूरीपर खड़ी कर दी और स्वयं थैप्ससके लिए चल पड़ा। यहाँ वह एक झीलके किनारे चारों ओरसे घिरा हुआ शिविर बनवाने लगा जो सैनिक काररवाइयोंके लिए केन्द्रस्थानका काम दे सके। जब सिपियो इस काममें लगा हुआ था, तब सीज़रने आश्चर्यजनक शीघ्रताके साथ एक घने जंगल और अगम भूमिको पार करनेके बाद शत्रुसेनाके एक भागको छिन्न भिन्न कर दिया और दूसरेपर सामनेसे आक्रमण कर दिया। इन लोगोंको हरा कर वह इस सुअवसरसे लाभ उठानेकी चेष्टा करता रहा। पहले ही धावेमें उसने एफ्रेनियसके शिविरपर अधिकार कर लिया और जूबाको भागनेके लिए विवश किया। इस प्रकार एक दिनके चन्द घण्टोंके भीतर ही तीन शिविर उसके अधिकारमें आ गये। शत्रुके पचास हजार सिपाही काम आये और उसके भी कोई ५० सैनिक मारे गये। जो लोग युद्धमें बन्दी बनाये गये, उनमें जो प्रधान शासक या उपशासककी हैसियतके थे, उनमेंसे कई तो मार डाले गये और कईने पहले ही अपने हाथसे अपनी हत्या कर डाली।

कैटोने यूटिकाकी रक्षाका भार अपने ऊपर लिया था, अतः वह इस युद्धमें शरीक नहीं हो सका। सीज़र उसे जीता ही पकड़ना चाहता था, किन्तु यह खबर पाकर उसे बड़ी निराशा हुई कि उसने तो पहले ही आत्मघात कर लिया है। उसने कहा "कैटो, तुम्हारी मृत्युसे मुझे बड़ी ईर्ष्या होती है, क्योंकि तुम्हारे प्राण बचानेसे जो सम्मान मिल सकता था, उससे तुमने मुझे वञ्चित कर दिया।"

रोम लौट कर सीजरने लोगोंके सामने अपनी विजयका खूब लम्बा चौड़ा वर्णन किया और कहा कि मैंने इतना बड़ा देश जीता है जहाँसे हम लोगोंको प्रति वर्ष दो लाख अधीनियन बुशल अनाज तथा ३० लाख पौण्ड (१५ लाख सेर) तेल मिल सकेगा। अब उसने मिस्र, पौण्टस, तथा आफ्रिकाकी विजयके उपलक्ष्यमें तीन जुलूस निकाले। इसके बाद उसने अपने सैनिकोंमें पारितोषिक बाँटे और सर्वसाधारणको भोजमें आमन्त्रित किया एवं उनके मनोरंजनार्थ विविध खेलों इत्यादिका आयोजन किया। इस भोजमें बाइस हजार लोगोंके लिए आसन डाले गये थे। खेल तमाशोंकी समाप्तिके बाद जब नगरवासियोंकी गणना की गयी, तब पता चला कि तीन लाख बीस हजारके स्थानमें अब कुल डेढ़ लाख व्यक्ति ही रह गये थे। गृहयुद्धके कारण जब केवल रोममें ही जनसंख्याका इतना ह्रास हो गया, तब इटलीके अन्य भागों तथा प्रान्तोंकी क्या दशा हुई होगी, इसका अन्दाज लगाना कठिन नहीं है।

अब सीजर चौथी बार कौन्सल (प्रधान शासक) चुना गया। इस बार वह पॉम्पीके लड़कोंसे युद्ध करनेके लिए स्पेन गया। पॉम्पीके पुत्र अभी कम उम्रके लड़के ही थे, फिर भी उन्होंने एक बड़ी सेना बटोर ली थी और ऐसा मालूम होता था कि उनमें सेनाका सञ्चालन करनेकी भी काफी योग्यता है। मुण्डाके पास गहरी लड़ाई हुई जिसमें सीजरके आदमियोंके नाकोंदम आगया। उन्हें लड़खड़ाते देख कर सीजर उनके सामने गया और चिल्ला कर कहने लगा "क्या इन छोकरोंके हाथ मुझे समर्पित कर देनेमें तुम्हें लज्जा नहीं आती ?" निदान अनेक प्रयत्न करने पर बड़ी कठिनाईसे वह दुश्मनको पीछे हटा सका। शत्रुके तीस हजार सैनिक खेत रहे और सीजरके भी एक हजार चुने हुए वीर इस युद्धमें काम आये। युद्धसे लौटने पर उसने अपने मित्रोंसे कहा "अन्य युद्धोंमें मैं प्राय विजयके लिए लड़ता था, किन्तु इस युद्धमें मुझे पहली बार अपने प्राणोंकी रक्षाके लिए लड़ना पड़ा।" पॉम्पीका छोटा लड़का तो

भाग गया, पर कुछ दिनोंके बाद टीटियस नामक व्यक्ति बड़े लड़केका सिर काट कर सीज़रके पास ले आया। सीज़रका यह अन्तिम युद्ध था। इस विजयके उपलक्ष्यमें उसने जो जुलूस निकाला उससे रोमन लोग बहुत असन्तुष्ट हुए, क्योंकि इस युद्धमें उसने विदेशी सेनापतियों या "असभ्य" राजाओंपर विजय नहीं पायी थी, बल्कि इसमें रोमके एक विख्यात महापुरुषके पुत्रों एवं कुटुम्बियोंका नाश किया गया था। अतः अपने ही देशके संकटका स्मरण करानेवाला जुलूस रोमन लोगोंको कैसे अच्छा लग सकता था?

इतना होते हुए भी रोमन लोगोंने चुपचाप उसका आधिपत्य स्वीकार कर लिया। उन्होंने देखा कि गृहयुद्धजनित कष्टोंसे बचनेका एक यही उपाय है कि शासनका दायित्व केवल एक आदमीके सिपुर्द कर दिया जाय, इसीसे उन्होंने सीज़रको जन्मभरके लिए अपना अधिनायक (डिक्टेटर) स्वीकार कर लिया। पहले पहल सिसरोने प्रस्ताव किया कि कुलीन-सभाकी ओरसे सीज़रको कुछ मानवोचित सम्मानसूचक उपाधियाँ दी जानी चाहिये। सिसरोके बाद अन्य लोगोंमें परस्पर प्रतिद्वन्द्विता होने लगी कि कौन उसे सबसे अधिक सम्मान प्रकट करनेवाली उपाधि दिये जानेकी सलाह दे सकता है। इन लोगोंने उसे ऐसी ऐसी उपाधियाँ देनेका प्रस्ताव किया कि सीधेसे सीधे आदमियोंके लिए भी उसका समर्थन करना असंभव हो गया। उसके दुश्मनोंका पक्ष अधिक प्रबल हो गया। सीज़रने विजयी होकर भी बन्दियोंके साथ दयाशीलताका बर्ताव किया, इसीसे उन्होंने प्रस्ताव किया कि सीज़रने लड़ाईके कैदियोंके प्रति जो क्षमाशीलता प्रदर्शित की थी, उसके कारण उसके नामपर क्षमादेवीका एक मन्दिर बनवाया जाय। सीज़रने उनमेंसे बहुतोंको तो बिलकुल माफ कर ही दिया था जो कि उसके विरुद्ध लड़े थे, साथ ही उसने कुछ लोगोंको—विशेषकर ब्रूटस और कैसियसको—सम्मान और पद भी प्रदान किये थे। पाम्पीकी मूर्तियोंको, जो गिरा दी गयी थीं, उसने फिर यथा

स्थान स्थापित करा दिया। जब उसके मित्रोंने उसे अपनी रक्षाके लिए कुछ शरीररक्षक नियुक्त करनेकी सलाह दी, तब उसने कहा कि "हमेशा मृत्युसे डरते हुए जीते रहनेकी अपेक्षा एक बार कभी मृत्युका सामना करनेको तैयार रहना अधिक अच्छा है। वह सर्वसाधारणकी सहानुभूतिको ही अपना सबसे बड़ा शरीर-रक्षक समझता था। उसने उन्हें पुनः एक सार्वजनिक भोजमें आमंत्रित किया और ग़रीबोंको अनाज बाँटा।

उसने ऊँची श्रेणीके लोगोंको भी प्रसन्न रखनेकी चेष्टा की। किसीको उसने भविष्यमें कौंसल (प्रधान शासक) या प्रीटर (उपशासक) बनानेकी और किसीको अन्य पद या सम्मान देनेकी प्रतिज्ञा की। सर्व-साधारणकी रज़ामन्दी और उनकी सदिच्छाओंके आधारपर शासन करनेको उत्सुकता प्रकट कर उसने लोगोंके मनमें इस आशाका सञ्चार कर दिया था कि वह सबको प्रसन्न रखनेकी चेष्टा करेगा।

सीज़रका जन्म बड़े बड़े काम करनेके लिए ही हुआ था। उसे नित्य नया सम्मान प्राप्त करनेकी धुन लगी रहती थी। अभीतक जितने वीरतापूर्ण कार्य उसने किये थे, उनसे उसको सन्तोष नहीं हुआ। अब वह इनसे भी बड़े कार्य करने एवं नूतन ख्याति प्राप्त करनेकी इच्छा करने लगा। इसीसे उसने निश्चय किया कि पारथियन लोगोंसे युद्ध किया जाय और उन्हें जीत कर हिरकैनिया होते हुए माउण्ट काकेशस तक पहुँचा जाय। वहाँसे उसका इरादा सिथिया लेते हुए, जर्मनीके सीमान्तवर्ती देशों और जर्मनीको भी जीत कर गॉलके मार्गसे इटली लौट आनेका था। जब इस लम्बी युद्ध-यात्राकी तैयारी की जा रही थी, तब उसने उस थल-डमरूमध्यको खोदवा डालनेका विचार किया जिसपर कॉरिन्थ शहर बसा हुआ है। उसका इरादा टाइबर नदीकी धाराको बदल देनेका भी था। वह चाहता था कि रोमसे सरसी-आईतक और आगे समुद्रतक एक नहर बना दी जाय जिससे रोमके साथ तिजारत करनेवाले व्यापारियोंके जहाज सीधे इसी मार्गसे आ जा

सकें। इसके सिवाय और भी कई महत्वपूर्ण कार्योंमें हाथ लगानेका इरादा विचार था।

सीज़र अपने इन सब मनसूबोंको कार्यमें परिणत नहीं कर सका, किन्तु काल-गणनाकी त्रुटियोंको दूर करनेके लिए उसने सौर कैलेण्डरमें सुधार करनेका जो कार्य प्रारंभ किया था, वह बहुत अच्छी तरह वैज्ञानिक ढंगसे सम्पन्न किया गया और उससे मानव-समाजका बड़ा हित हुआ। प्राचीन कालसे रोमन लोग देखते चले आ रहे थे कि उनके त्यौहार और देवताओंको बलि चढ़ानेके विशेष दिन, काल-गणनाकी त्रुटियोंके कारण बराबर हटते जा रहे थे, यहाँ तक कि एक ऋतुके पर्व उस ऋतुमें न पड़ कर दूसरी ऋतुमें पड़ने लगे थे। इस समय भी सौर वर्षकी गणनाका ठीक ठीक उपाय लोगोंको विदित नहीं था। केवल थोड़ेसे पुरोहित ही यथार्थ समय बतला सकते थे और वे बिना किसी तरहकी पूर्व सूचना दिये ही, जब चाहते तब, एक लौंदका महीना बढ़ा दिया करते थे जिसे वे लोग "मरसीडोनियस" कहते थे। नूमाने पहले पहल ऐसा एक महीना बढ़ाया था, किन्तु उससे समय-गणनाकी भूलका सुधार नहीं हो सका। सीज़रने इस समस्याका निपटारा करनेके लिए अपने समयके बड़े बड़े दार्शनिकों तथा ज्योतिषियोंको आमंत्रित किया और उस समय काल निर्णयकी जो जो पद्धतियाँ प्रचलित थीं, उनके आधारपर एक नयी एवं अधिक शुद्ध पद्धति तैयार की गयी जो रोमन लोगोंमें अभीतक प्रचलित है। किन्तु सीज़रका यह महत्वपूर्ण कार्य भी उन लोगोंको अच्छा न लगा जो उसकी उच्च स्थितिसे जलते थे, अस्तु।

उसके प्रति असन्तोष एवं घृणाका एक मुख्य कारण उसकी राजा बननेकी इच्छा थी। इसी इच्छाके कारण पहले पहल जनताको उससे असन्तुष्ट होनेका मौक़ा मिला और उसके दुश्मनोंको उसकी बदनामी फैलानेके लिए एक अच्छा बहाना प्राप्त हो गया। जो लोग उसे राजाका पद दिलानेके पक्षमें थे, वे कहा करते थे कि सिबिल्लकी पुस्तकोंमें लिखा

है कि जब रोमन लोग राजाकी अधीनतामें पार्थियन लोगोंसे युद्ध करेंगे, तभी उन्हें जीत सकेंगे, अन्यथा नहीं। एक बार जब सीज़र एल्बासे रोमको लौट रहा था तब कुछ लोगोंने "राजा" कह कर उसका अभिवादन कर ही डाला, किन्तु जब उसने देखा कि लोगोंको यह पसन्द नहीं है, तब उसने बनावटी अप्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा कि मेरा नाम सीज़र है, राजा नहीं। यह सुन कर सब लोग शान्त रहे। इसी तरह एक बार जब सिनेट-सभाने उसे कुछ विशेष सम्मान प्रदान करना स्वीकार किया और जब प्रधान शासक तथा उपशासक सिनेट-सभाके अन्य सदस्योंके साथ स्वयं यह समाचार सुनानेके लिए उसके पास गये, तब वह अपने आसनसे उठा तक नहीं, मानो वे लोग बिलकुल मामूली स्थितिके आदमी हों जिनसे उसका कोई परिचय न रहा हो। उसके इस व्यवहारसे सिनेटरोंको ही नहीं, सर्वसाधारणको भी बुरा लगा, क्योंकि उन्होंने सिनेटसभाके अपमानको समस्त प्रजातन्त्रका ही अपमान समझा। सीज़रको अपनी ग़लती शीघ्र ही मालूम हो गयी। वह घर जाकर एक जगह लेट गया और अपना गला खोल कर मित्रोंसे कहने लगा कि यदि कोई चाहे तो मेरे गलेमें छुरी भोंक दे, मैं तैयार हूँ। बादमें उसने यह बहाना बनाया कि मुझे एक बीमारी है जिसके कारण खड़े होकर बातचीत करनेसे मेरा दिमाग़ ठिकाने नहीं रहता, इसीसे मैं उठ न सका। किन्तु वस्तुत. यह बात नहीं थी। संभवतः वह उठना चाहता था, किन्तु उसके एक चापलूस मित्रने यह कह कर उसे रोक दिया "क्या आप भूल गये कि आप सीज़र हैं? आप तो इन लोगोंसे बड़े हैं ही, इन्हें सम्मान प्रकट करने दीजिये।"

लोगोंके असन्तुष्ट होनेका एक और अवसर उस समय आया जब सीज़रने जनशासकोंके साथ दुर्व्यवहार किया। उस समय रोमन लोगोंमें 'ल्यूपर केलिया' नामक एक उत्सव मनाया जाता था, जो शुरू शुरूमें गड़रियोंका त्योहार था। इसमें अनेक नवयुवक सरदार तथा न्यायाधीश अपने अपने कपड़े उतार कर, केवल एक एक अधोवस्त्र धारण किये हुए,

सारे शहरमें इधरसे उधर दौड़ा करते थे और रास्तेमें जो कोई मिलता था उसे विनोदके तौरपर चमड़ेके कोड़ेसे मारते जाते थे। अच्छे अच्छे घरानों तककी अनेक स्त्रियाँ जान बूझ कर रास्तेमें खड़ी हो जाती थीं और कोड़ेका आघात सहनेके लिए, शिक्षकों द्वारा पीटे जानेवाले स्कूलके लड़कोंकी तरह, अपने हाथ फैला दिया करती थीं। उनका विश्वास था कि ऐसा करनेसे सगर्भा स्त्रियोंको प्रसवमें कोई कष्ट नहीं होता और जो स्त्रियाँ बन्ध्या होती हैं उन्हें सन्तान प्राप्त होती है। यह उत्सव देखनेके लिए सीज़र बहुमूल्य वस्त्र पहन कर मंचपर रखी हुई सोनेकी कुर्सीपर जा बैठा। कौंसल (प्रधान शासक) होनेके कारण ऐण्टोनीको भी इस अवसरपर दौड़ना पड़ा था। जब वह न्यायालयमें पहुँचा और लोगोंने उसके लिए रास्ता साफ कर दिया, तब वह सीधे सीज़रके पास चला गया। उसने सीज़रको एक राजमुकुट अर्पित करना चाहा। यह देख कर पासमें खड़े हुए कुछ लोगोंने इसका विरोध किया, किन्तु जब सीज़रने मुकुट लेना अस्वीकार कर दिया, तब सब लोगोंने एक स्वरसे हर्षध्वनि की। ऐण्टोनीने दुबारा उसे मुकुट पहनानेकी कोशिश की। विरोधकी आवाज़ फिर सुनाई दी। जब सीज़रने पुनः उसे लेनेसे इनकार कर दिया, तब समस्त उपस्थित जनताने पुनः हर्षध्वनि की। सर्वसाधारणका यह रुख देख कर सीज़रने वह मुकुट बृहस्पति देवके मन्दिरमें रखवा दिया। इस घटनाके कुछ दिनोंके बाद सीज़रकी मूर्तियाँ राजमुकुट धारण किये हुए देखी गयीं। फ्लैवियस तथा मरल्स नामक दो जन-शासकोंने जाकर उनके मुकुट उतार लिये। उन्होंने पता लगा कर उन लोगोंको भी गिरफ्तार कर लिया, जिन्होंने राजा कहकर सीज़रका अभिवादन किया था और उन्हें कैदकी सजा दे दी। सर्वसाधारण हर्षध्वनि करते हुए उनके पीछे पीछे चले और उन्हें ब्रूटसके नामसे पुकारने लगे, क्योंकि ब्रूटसने ही सबसे पहले राजाओंकी परम्परा भङ्ग की थी और एकतंत्र शासनकी शक्ति कुलीन सभा तथा जनताको हस्तान्तरित कर दी थी। सीज़र-

को यह बात बहुत बुरी लगी। उसने उक्त दोनों जन शासकोंको पद-च्युत कर दिया और उनपर दोषारोपण करते समय सर्वसाधारणको भी ताने दिये।

यह देख कर सर्वसाधारणका ध्यान उस मार्कस ब्रूटसकी तरफ गया जो उक्त ब्रूटसका ही वंशज एवं कैटोका भतीजा तथा दामाद था। यद्यपि ब्रूटस स्वयं एकतन्त्र शासनका कट्टर विरोधी था, फिर भी वह सीज़रके विरुद्ध कोई काम करनेमें असमर्थ था, क्योंकि फारसेलियाकी पराजयके बाद सीजरने उसे जीवनदान दिया था और उसके कहनेसे उसके कई मित्रों-को भी क्षमा कर दिया था। इसके सिवाय सीज़र अभीतक उसके ऊपर पूरा पूरा विश्वास करता था।

सीजरकी मृत्युके पहले अनेक विलक्षण घटनाएँ एवं अपशकुन दृष्टि-गोचर हुए। कहते हैं, लोगोंने कुछ ऐसे आदमियोंको परस्पर लड़ते हुए देखा जिनके शरीर अग्नि निर्मितसे मालूम होते थे। एक सैनिकके नौकरके हाथसे आगकी ऐसी लपट निकल रही थी मानो उसका हाथ बच न सकेगा। किन्तु दैवयोगसे हाथ बच गया। इसी प्रकार जब सीज़र एक पशुकी बलि चढा रहा था, तब मालूम हुआ कि उक्त पशुके दिल है ही नहीं। यह बड़ा अपशकुन समझा गया, क्योंकि कोई भी प्राणी बिना दिलके जीवित नहीं रह सकता। बहुतोंके कथनानुसार एक बार एक भविष्यद्-वक्ताने उससे कहा था कि तुम मार्चके ईडीजके दिन बड़ा भारी सकट उठानेके लिए तैयार हो जाओ। जब यह दिन आ गया, तब सिनेट जाते समय सीजरने व्यग्यके साथ भविष्यद्वक्तासे कहा "मार्चका ईडीज तो आ गया।" उसने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया "हाँ आ तो गया, पर वह अभी बीत तो नहीं गया।" मारे जानेके एक दिन पहले उसने मारकस लेपिडसके यहाँ भोजन किया। वहाँ जब मेजपर बैठ कर वह कुछ पत्रों-पर हस्ताक्षर कर रहा था, तब बातचीतमें यह प्रश्न उठा कि मृत्युका सबसे अच्छा प्रकार कौन हो सकता है। अन्य किसी व्यक्तिके बोल-

नेके पहले ही सीज़रने उत्तर दिया कि "एकाएक होनेवाली मृत्यु सबसे अच्छी है।"

इसके बाद जब वह रात्रिमें शयन कर रहा था, तब अचानक उसके कमरेके कुछ दरवाजे और खिड़कियाँ खुल गयीं। आवाज सुन कर वह चौंक उठा। कमरेके भीतर आनेवाले चन्द्रमाके प्रकाशमें उसने देखा कि उसकी पत्नी कल्पूर्निया अभीतक बेलबर सो रही है। सीज़रने देखा कि स्वप्नके आवेशमें वह अस्पष्ट रूपसे कुछ कह रही है और बीच बीचमें सिहर उठती है। ऐसा मालूम हुआ मानों वह सीज़रके लिए ही रो रही थी और यह समझ रही थी कि सीज़र क़त्ल कर डाला गया है और उसकी लाश उसके हाथमें है। जो हो, प्रातःकाल उसने सीज़रसे प्रार्थना की कि आज आप बाहर मत जाइये और सिनेट-सभाकी बैठक दूसरे दिनके लिए स्थगित कर दीजिये। स्वयं सीज़रके मनमें भी तरह तरहकी शंकाएँ उठ रही थीं। इसी समय पुरोहितोंने आकर खबर दी कि आज हमने जितनी बार बलि चढ़ायी, उतनी बार कोई न कोई अपशकुन अवश्य हुआ। यह सुन कर सीज़रने सिनेटकी बैठक स्थगित करानेके लिए ऐण्टोनीको भेजनेका निश्चय किया।

इस समय डेसीमस ब्रूटसने, जो सीज़रका विश्वासपात्र होते हुए भी उसके विरुद्ध रचे गये षड्यन्त्रमें शरीक था, ख्याल किया कि यदि सीज़रने सिनेट सभाकी बैठक स्थगित करा दी तो सम्भव है कि बीचमें इस साजिशका भेद खुल जाय। अतः उसने भविष्यद्वक्ताओंका मज़ाक उड़ाते हुए सीज़रसे कहा "सिनेट-सभाके सदस्य आपके आदेशसे ही एकत्र हुए हैं। वे एक मतसे यह राय प्रकट करनेको तैयार हैं कि आप इटलीके बाहरवाले सब प्रान्तोंके राजा समझे जायँ और इटलीको छोड़ कर अन्य सब स्थलोंमें आप राजमुकुट भी धारण किया करें। यदि इस समय आप सभाकी बैठक स्थगित कर देते हैं तो उन लोगोंको यह कहनेका मौक़ा मिलेगा कि आपने उनकी अवहेलना की। यदि कोई मनुष्य जाकर

तरहकी प्रार्थनाएँ कीं, किन्तु सीज़रने उन्हें अस्वीकार कर दिया। जब उन लोगोंने कुछ धृष्टता प्रदर्शित की, तब सीज़रने उन्हें खूब डाँटा। इसी समय टिलियसने दोनों हाथोंसे पकड़ कर उसका अँगरखा खींचना शुरू किया। यही उसपर आक्रमण करनेके लिए पूर्व संकेत था। सबसे पहले कैस्काने उसकी गर्दनपर वार किया, किन्तु इससे उसे ज्यादा चोट नहीं आयी। इसके बाद अन्य लोगोंने भी प्रहार किया। सीज़रने पहले तो आत्मरक्षाकी चेष्टा की और लोगोंको सहायताके लिए पुकारा, किन्तु जब उसने स्वयं ब्रूटसको तलवार लपलपाते हुए आगे बढ़ते देखा तब उसने अँगरखेके एक छोरसे अपना मुँह ढँक लिया और अपनी गरदन झुका दी। मरते समय उसका शरीर पॉम्पीकी मूर्त्तिके पास ही जाकर गिरा जिससे उसकी चौकी तक सीज़रके रक्तसे रंजित हो गयी। ऐसा प्रतीत होता था मानो पॉम्पीने स्वयं अपने शत्रुसे प्रतिकार लेनेकी क्रियाका सञ्चालन किया हो और उसे बुरी तरहसे घायल कर—कहते हैं उसे कुल तेईस जगह चोट लगी थी—अपने चरणोंपर ला गिराया हो।

सीज़रकी हत्याके उपरान्त ब्रूटसने खड़े होकर लोगोंको उसका कारण समझाना चाहा, किन्तु कुलीन-सभाके सदस्य इतने घबड़ा गये थे कि वे वहाँ ज़रा देर भी नहीं ठहरे। उन्होंने घटनाका वर्णन सुना सुना कर अन्य लोगोंको भी इतना भयभीत कर दिया कि कुछ तो अपने अपने दरवाजे बन्द कर घरोंमें घुस गये और कुछ अपनी दूकानें या कोठियाँ छोड़ छोड़ कर भाग खड़े हुए। सीज़रके मित्र ऐण्टोनी और लेपिडस चुपचाप भाग कर अन्य मित्रोंके यहाँ जा छिपे। ब्रूटस तथा उसके अनुयायी, जिन्हें अपना काम पूरा किये अभी अधिक समय नहीं हुआ था, अपना एक दल बना कर एवं हाथमें नंगी तलवारें लिये हुए सिनेट-भवनसे बृहस्पति देवके मन्दिरकी ओर रवाना हुए। मार्गमें वे सर्व-साधारणसे कहते जाते थे कि अब आप लोग पुनः स्वतन्त्रतापूर्वक अपने काममें लग जाइये। यदि रास्ता चलते चलते किसी भले आदमीसे भेंट हो जाती तो वे उसे

अपने साथ ले लेनेकी चेष्टा करते थे। फलतः इनमेंसे कुछ लोग उनके जुलूसके साथ हो लिये और इस प्रकार उनके पीछे पीछे चलने लगे मानो वे भी साज़िशमें शरीक रहे हों।

दूसरे दिन ब्रूटस अन्य लोगोंके साथ बृहस्पति देवके मन्दिरसे आया और उसने सर्वसाधारणके सामने एक भाषण किया। लोगोंने भाषण सुनते समय न तो कोई हर्ष ही प्रकट किया और न उनके चेहरोंपर क्रोधके ही कोई लक्षण दृष्टिगोचर हुए। उनके मौन-साधनसे ऐसा प्रतीत होता था मानो सीज़रकी हत्यापर उन्हें दया आती थी और ब्रूटसको वे आदरकी दृष्टिसे देखते थे। जो कुछ हो गया था उसे भूल जानेके लिए सिनेटने क़ानून बना दिये और सब दलोंमें पुनः ऐक्य स्थापित करनेके लिए प्रयत्न किया। उसने निश्चय किया कि सीज़रके प्रति देवताओंके सदृश सम्मान प्रकट किया जाय और उसके किसी भी कार्यकी, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, निन्दा न की जाय। इसके सिवा ब्रूटस तथा उसके साथी प्रान्तोंके अधिपति बना दिये गये। अब सब लोगोंने सोचा कि प्रत्येक बातका निपटारा भली भांति हो गया और देशमें पुनः शान्ति स्थापित हो गयी।

किन्तु जब सीज़रका दानपत्र खोला गया, जिससे यह विदित हुआ कि वह प्रत्येक नागरिकके लिए काफ़ी बड़ी रक़म छोड़ गया है, और जब उसका क्षतविक्षत शरीर बाज़ारमेंसे घुमाया गया, तब सर्वसाधारण अपनेको शान्त न रख सके। उन्होंने बहुतसी बेंचें, टेबल, दरवाजे इत्यादि इकट्ठे कर लिये और उनपर सीज़रकी लाश रख कर उसे जला दिया। कुछ लोग इस चितामेंसे एकाध जलती हुई लकड़ी हाथमें लेकर षड्यन्त्रकारियोंके मकानोंमें आग लगानेके लिए दौड़े और कुछ लोग सारे शहरमें घूम कर इसलिये उनकी तलाश करने लगे कि यदि वे मिल जायँ तो उनके शरीरके टुकड़े टुकड़े कर दिये जायँ, किन्तु वे असफल हुए, क्योंकि उन्होंने अपनी सुरक्षाका आवश्यक प्रबन्ध पहले ही कर रखा था।

६—डेमिट्रियस

अनेक बुद्धिमान् मनुष्योंकी चिरकालसे यह धारणा रही है कि विषयोंका प्रत्यक्ष कलाओं और इन्द्रियों द्वारा एक ही प्रकारसे होता है। किन्तु हम देखते हैं कि परस्पर विरोधी विषयोंमें अन्तर निकालनेकी विधि और परिणाम दोनोंके एकसे नहीं होते। ज्ञानेन्द्रियोंका यह कार्य नहीं है कि वे कालेको छोड़ कर श्वेतको ग्रहण कर लें या मधुर तथा मृदुलको तिक्त और कठोरसे अधिक पसन्द करें। उनका काम सिर्फ संवेदनाओंको मस्तिष्कतक पहुँचा देना है। पर कलाएँ, जो बुद्धि द्वारा प्रेरित होती हैं, ज्ञानेन्द्रियोंकी तरह निष्क्रिय न होकर भलेका ग्रहण तथा बुरेका त्याग करती हैं और इस प्रकार पहली श्रेणीके विषयोंपर सम्यक् ध्यान देनेके साथ साथ, परीक्षाके ही विचारसे सही, दूसरी श्रेणीके विषयोंपर भी कुछ न कुछ ध्यान देना पड़ता है। स्वास्थ्य ठीक करनेके लिए आयुर्वेदको रोगोंकी जाँच करनी पड़ती है और संगीतशास्त्र स्वरोंके असामञ्जस्यकी समीक्षा कर स्वरसाम्य उत्पन्न करता है। इसी प्रकार आचार, नीति, तथा न्यायशास्त्र द्वारा हम यह जान सकते हैं कि कौन कौनसे कार्य सम्मानपूर्ण, न्यायानुमोदित, एवं उपयोगी हैं और कौन कौनसे गर्हित, अन्याय्य एवं हानिकारक। इन शास्त्रोंकी दृष्टिमें बुराइयोंकी जानकारी न होनेका दावा करना युक्तियुक्त नहीं है। जो धर्माचरणके साथ जीवन व्यतीत करना चाहता है उसके लिए इनकी जानकारी लाजिमी है। प्राचीन कालके स्पार्टन लोग अपने भोजोंके अवसरपर किसी दासको खूब शराब पिला कर सबके सामने इस उद्देश्यसे खड़ा कर देते थे जिसमें नवयुवक लोग अपनी आँखों देख सकें कि नशेमें लोगोंकी क्या हालत हो जाती है। यद्यपि किसी व्यक्तिका आचरण सुधारनेके निमित्त दूसरेको आचार भ्रष्ट करना मानवोचित नहीं कहा जा

सकता, फिर भी हमें आशा है कि इन जीवनियोंके साथ, उदाहरणके तौर पर कुछ ऐसे मनुष्योंका जीवनचरित रखना बुरा न समझा जायगा जिन्होंने अपनी कामुकताके निमित्त अपनी शक्तिका दुरुपयोग किया है और ज्यों ज्यों उनका अभ्युदय होता गया है त्यों त्यों उनका दुराचरण भी बढ़ता गया है। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम इस प्रकारकी जीवनी देकर पाठकोंका मनोरंजन करना चाहते हैं या अपनी पुस्तकमें सब तरहके चरित्रोंका समावेश करना चाहते हैं। हमारा अभिप्राय सिर्फ यही है जिससे प्रेरित होकर इसमेनियस नामक थीबन अपने वाद्ययंत्रपर शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकारके स्वर छेड़ कर शिष्योंसे कहा करता था "देखो, इस प्रकार बजाना चाहिए, इस प्रकार नहीं।" एँटिजेनिडसका कथन है कि यदि नवयुवकोंको पहले अशुद्ध वाद्य सुननेको मिले, तो फिर बादमें शुद्ध वाद्य सुननेमें उन्हें विशेष आनन्द आयगा। इसी प्रकार हम समझते हैं कि यदि हम लोग दुराचारियोंके चरित्रसे बिल्कुल अनभिज्ञ ही न रहें तो सदाचारियोंके चरित्रोंका अधिक उत्साहपूर्वक और विशेष सावधानीके साथ अनुकरण कर सकेंगे।

इसी सिद्धान्तको सामने रख कर इन महापुरुषोंकी जीवनियोंमें डेमिट्रियस और ऐण्टोनीको भी स्थान दिया गया है जिनके सम्बन्धमें अफलातूनका यह कथन कि प्रतिभाशाली व्यक्ति बड़ेसे बड़े दुर्गुणोंके जन्मदाता हो सकते हैं और उच्च सद्गुणोंके भी जनक बन सकते हैं। जैसा कि इनकी जीवनीसे स्पष्ट होगा, ये सभी बातोंमें एक दूसरेसे मिलते जुलते थे। दोनोंकी मृत्यु भी क़रीब क़रीब एक ही प्रकारसे हुई। कुछ लोगोंका कथन है कि डेमिट्रियस ऐंटिगोनसके भाईका पुत्र था, पर विधवा होने पर उसकी माताने ऐंटिगोनसके साथ विवाह कर लिया। डेमिट्रियस ऐंटिगोनसके से डील डौलका नहीं था पर इसका रूप और आकार इतना सुन्दर था कि कलाकार ठीक वैसी ही प्रतिमा या चित्र नहीं बना सकते थे। उसकी शक्लसे प्रेम और भय दोनों तरहके भाव टपकते

सीजरकी हत्याके पूर्ववाली रातको उसके एक मित्र सिन्नाने स्वप्न देखा कि सीजर उसे अपने साथ भोजन करनेके लिए बुला रहा है और उसके इनकार करने पर भी उसने उसे जबरदस्ती अपने पास खींच लिया। दूसरे दिन जब उसने यह खबर सुनी कि सीजरकी लाश बाजारमें जलायी जा रही है, तब रातमें देखे हुए स्वप्नके कारण सशंक एवं ज्वरग्रस्त होते हुए भी, उसकी स्मृतिके प्रति सम्मान प्रकट करनेके लिए वह वहाँ गया। एक आदमीके कहनेसे लोगोंको ज्यों ही मालूम हुआ कि इसका नाम सिन्ना है, त्यों ही भ्रमवश यह ख्याल कर कि यह भी साजिशमें शामिल था—यद्यपि वास्तवमें इस नामका षड्यंत्रकारी एक दूसरा ही व्यक्ति था—उन्होंने इसे पकड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डाला।

इस घटनासे भयभीत होकर ब्रूटस और कैसियस शीघ्र ही नगर छोड़ कर बाहर चले गये। इसके बाद इन लोगोंने क्या किया और किस तरह इनका प्राणान्त हुआ, इसका वर्णन ब्रूटसकी जीवनीमें किया गया है। मृत्युके समय सीजरकी उम्र छप्पन वर्षकी थी। जिस साम्राज्य एवं शक्तिकी प्राप्तिके लिए वह जन्म भर अपने जीवनको खतरेमें डालता रहा, उसे अनेक कठिनाइयोंके बाद वह उपलब्ध तो अवश्य कर सका, किन्तु इसके सिवाय और कोई लाभ उसे नहीं हुआ। नामकी कोरी महत्ता एवं पारस्परिक द्वेष उत्पन्न करनेवाली ख्याति ही उसके हाथ लगी। फिर भी जीवनके प्रत्येक कार्यमें उसने जिस अलौकिक प्रतिभाका परिचय दिया था, वह उसकी मृत्युके बाद भी लोगोंको उसकी हत्याका बदला लेनेके लिए प्रेरित करती रही।

कैसियसके सम्बन्धमें एक उल्लेखनीय बात यह हुई कि जब वह फिलीपीकी लड़ाईमें हार गया, तब उसने उसी खंजरसे अपना प्राणान्त किया जिससे उसने सीजरकी हत्या की थी। उस समय अलौकिक घटना-सूचक जो चिह्न दृष्टिगोचर हुए थे, उनमें एक पुच्छलतारा था, जो सीजरकी मृत्युके बाद एक हफ्तेतक देख पड़ा, फिर गायब हो गया। इसके

सिवा सूर्यका प्रकाश भी कुछ धुँधला सा हो गया था और उसकी गर्मी भी कुछ घट गयी थी। यह हालत साल भर रही। कहते हैं, इसीसे उस वर्ष कोई भी फल अच्छी तरह नहीं पक सके। गर्मीकी कमीके कारण पूर्ण परिपक्व अवस्थाको प्राप्त होनेके पहले ही ये मुरझा जाते थे और पेड़से गिर जाते थे। इसके सिवा ब्रूटसको जो दिव्याकृति दिखाई दी थी, उससे प्रकट होता है कि देवताओंको भी यह कृत्य अच्छा नहीं लगा।

एक बार रात्रिके समय शिविरमें बैठ कर ब्रूटस अपनी सेनाको एबीडासमे उस पार महाद्वीपको ले जानेके सम्बन्धमें विचार कर रहा था। उस समय और लोग सो रहे थे, पर उसे नींद कहाँ? कहते हैं जितने मनुष्योंने कभी किसी सेनाका सञ्चालन किया है, उनमें ब्रूटस ही सबसे कम सोनेवाला था। उसमें देरतक जागते रहनेकी और बिना विश्राम लिये ही लगातार काम करते रहनेकी सबसे अधिक स्वाभाविक क्षमता थी। उसने ख्याल किया मानो दरवाजेपर कोई आवाज हुई हो और ज्यों ही उसने उस ओर नजर डाली त्यों ही लैम्पके फीके प्रकाशमें उसे एक विशालकाय विलक्षण मनुष्याकृति सी देख पड़ी। कुछ कुछ भयभीत सा होकर उसने पूछा "तुम कौन हो?" आकृतिने उत्तर दिया "तुम्हारा काल। तुम मुझे फिलीपीमें देखोगे।" इसके बाद वह वहाँसे तिरोभूत हो गयी। यथासमय ब्रूटसने फिलीपीके पास ऐण्टोनी और आक्टेवियस सीजरके खिलाफ अपनी सेना एकत्र की। पहली लड़ाईमें उसने अपने शत्रुको हरा दिया और सीजरका शिविर लूट लिया। दूसरी लड़ाईके पहलेवाली रातमें ब्रूटसने वही अलौकिक आकृति पुन देखी पर वह कुछ बोली नहीं। ब्रूटसने समझ लिया कि अब मेरी मृत्यु निकट आ गयी। फिर भी वह युद्धमें नहीं मारा गया। जब उसने अपने सैनिकोंको हारा हुआ देखा, तब वह एक शिलापर चढ़ गया और एक मित्रकी सहायतासे छातीमें अपनी तलवार चुभो कर प्राण विसर्जन कर दिये।

९—डेमिट्रियस

नेक बुद्धिमान् मनुष्योंकी चिरकालसे यह धारणा रही है कि विषयोंका प्रत्यक्ष कलाओं और इन्द्रियों द्वारा एक ही प्रकारसे होता है। किन्तु हम देखते हैं कि परस्पर विरोधी विषयोंमें अन्तर निकालनेकी विधि और परिणाम दोनोंमें एकसे नहीं होते। ज्ञानेन्द्रियोंका यह कार्य नहीं है कि वे कालेको छोड़ कर श्वेतको ग्रहण कर लें या मधुर तथा मृदुलको तिक्त और कठोरसे अधिक पसन्द करें। उनका काम सिर्फ संवेदनाओंको मस्तिष्कतक पहुँचा देना है। पर कलाएँ, जो बुद्धि द्वारा प्रेरित होती हैं, ज्ञानेन्द्रियोंकी तरह निष्क्रिय न होकर भलेका ग्रहण तथा बुरेका त्याग करती हैं और इस प्रकार पहली श्रेणीके विषयोंपर सम्यक् ध्यान देनेके साथ साथ, परीक्षाके ही विचारसे सही, दूसरी श्रेणीके विषयोंपर भी कुछ न कुछ ध्यान देना पड़ता है। स्वास्थ्य ठीक करनेके लिए आयुर्वेदको रोगोंकी जाँच करनी पड़ती है और संगीतशास्त्र स्वरोंके असामञ्जस्यकी समीक्षा कर स्वरसाम्य उत्पन्न करता है। इसी प्रकार आचार, नीति, तथा न्यायशास्त्र द्वारा हम यह जान सकते हैं कि कौन कौनसे कार्य सम्मानपूर्ण, न्यायानुमोदित, एवं उपयोगी हैं और कौन कौनसे गर्हित, अन्याय्य एवं हानिकारक। इन शास्त्रोंकी दृष्टिमें बुराइयोंकी जानकारी न होनेका दावा करना युक्तियुक्त नहीं है। जो धर्माचरणके साथ जीवन व्यतीत करना चाहता है उसके लिए इनकी जानकारी लाजिमी है। प्राचीन कालके स्पार्टन लोग अपने भोजोंके अवसरपर किसी दासको खूब शराब पिला कर सबके सामने इस उद्देश्यसे खड़ा कर देते थे जिसमें नवयुवक लोग अपनी आँखों देख सकें कि नशेमें लोगोंकी क्या हालत हो जाती है। यद्यपि किसी व्यक्तिका आचरण सुधारनेके निमित्त दूसरेको आचार भ्रष्ट करना मानवोचित नहीं कहा जा

सकता, फिर भी हमें आशा है कि इन जीवनियोंके साथ, उदाहरणके तौर पर कुछ ऐसे मनुष्योंका जीवनचरित रखना बुरा न समझा जायगा जिन्होंने अपनी कामुकताके निमित्त अपनी शक्तिका दुरुपयोग किया है और ज्यों ज्यों उनका अभ्युदय होता गया है त्यों त्यों उनका दुराचरण भी बढ़ता गया है। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम इस प्रकारकी जीवनी देकर पाठकोंका मनोरंजन करना चाहते हैं या अपनी पुस्तकमें सब तरहके चरित्रोंका समावेश करना चाहते हैं। हमारा अभिप्राय सिर्फ यही है जिससे प्रेरित होकर इसमेनियस नामक थीबन अपने वाद्ययन्त्रपर शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकारके स्वर छेड़ कर शिष्योंसे कहा करता था "देखो, इस प्रकार बजाना चाहिए, इस प्रकार नहीं।" ऐंटिजेनिडसका कथन है कि यदि नवयुवकोंको पहले अशुद्ध वाद्य सुननेको मिले, तो फिर बादमें शुद्ध वाद्य सुननेमें उन्हें विशेष आनन्द आयगा। इसी प्रकार हम समझते हैं कि यदि हम लोग दुराचारियोंके चरितसे बिल्कुल अनभिज्ञ ही न रहें तो सदाचारियोंके चरित्रोंका अधिक उत्साहपूर्वक और विशेष सावधानीके साथ अनुकरण कर सकेंगे।

इसी सिद्धान्तको सामने रख कर इन महापुरुषोंकी जीवनियोंमें डेमिट्रियस और ऐण्टोनीको भी स्थान दिया गया है जिनके सम्बन्धमें अफलातूनका यह कथन कि प्रतिभाशाली व्यक्ति बड़ेसे बड़े दुर्गुणोंके जन्मदाता हो सकते हैं और उच्च सद्गुणोंके भी जनक बन सकते हैं। जैसा कि इनकी जीवनीसे स्पष्ट होगा, ये सभी बातोंमें एक दूसरेसे मिलते जुलते थे। दोनोंकी मृत्यु भी करीब करीब एक ही प्रकारसे हुई। कुछ लोगोंका कथन है कि डेमिट्रियस ऐंटिगोनसके भाईका पुत्र था, पर विधवा होने पर उसकी माताने ऐंटिगोनसके साथ विवाह कर लिया। डेमिट्रियस ऐंटिगोनसके से डील डौलका नहीं था पर इसका रूप और आकार इतना सुन्दर था कि कलाकार ठीक वैसी ही प्रतिमा या चित्र नहीं बना सकते थे। उसकी शक्लसे प्रेम और भय दोनों तरहके भाव टपकते

थे और उसके व्यवहार भी प्रायः ऐसे ही थे। भोज और उत्सव आदिमें यह बहुत नम्र पर युद्धमें कठोर हो जाता था।

अपने माता पिताके प्रति उसकी प्रगाढ़ भक्ति और प्रेम था। कहा जाता है कि एक बार आखेटसे लौटने पर यह सीधे अपने पिताके कमरेमें चला गया। उस समय ऐंटिगोनस बाहरसे आये हुए कुछ राजदूतोंके साथ बातचीत कर रहा था। आगे बढ़ कर प्रणाम करनेके अनन्तर वह उसी हालतमें, हाथमें भाला लिये ही, उसके पास बैठ गया। वार्तालाप समाप्त होने पर दूत बाहर जा ही रहे थे कि उसने पुकार कर कहा "यह भी कह देना कि हम दोनों किस प्रकार साथ रहते हैं।" इस वाक्यसे उसका यह अभिप्राय था कि जहाँ पिता पुत्र ऐसे सद्भावके साथ एक दूसरेसे मिल कर रहते हैं, वहाँ शासन अवश्य ही सबल और सुरक्षित होगा। राजकीय अधिकारमें साझेदारी नहीं चल सकती, इसमें ईर्ष्या और अविश्वास उत्पन्न हो जाते हैं, किन्तु सिकन्दरके प्रथम और सबसे प्रतापी उत्तराधिकारी ऐंटिगोनसने पुत्रके सशस्त्र पासमें खड़े रहने पर भयभीत न होनेमें अपना गौरव समझा था। वस्तुतः सिकन्दरके सभी वंशजोंमें सिर्फ ऐंटिगोनसका ही कुल ऐसा था जिसमें कई पीढ़ियों तक इस प्रकारका अपराध नहीं सुना गया। सच पूछो तो केवल फिलिप ही इस वंशमें ऐसा व्यक्ति हुआ जिसने अपने पुत्रकी हत्या की थी। दूसरे नरेशोंके खानदानोंमें पुत्रों, पत्नियों, माताओं तथा स्त्रियोंकी हत्याओंके अनेक उदाहरण मिलते हैं; अपनी सुरक्षाके लिए भाईकी हत्या करा देनेकी प्रथा तो मानो गणितके सिद्धान्तोंकी तरह ध्रुव और अनिवार्य समझी जाती थी।

डेमिट्रियस निसर्गतः दयालु और अच्छी प्रकृतिका था। मिथ्रिडेटीज नामका उसका एक समवयस्क साथी था, जो उसके पिता ऐंटिगोनसकी भी सेवा किया करता था। एक बार ऐंटिगोनसने स्वप्न देखा कि उसने किसी अच्छे स्थानमें सुनहले बीज बोये हैं और उसमें सुनहली फसल भी

उग आयी है। कुछ ही देरके बाद उसने देखा कि डंठलके अतिरिक्त वहाँ और कुछ नहीं रह गया है। इसी चिन्तामें वह खड़ा था कि कहींसे यह आवाज आयी कि मिथ्रिडेटीज़ सुनहली फसलको काट कर पांटस ले गया। इस स्वप्नने ऐंटिगोनसको मिथ्रिडेटीज़के प्रति सन्देहमें डाल दिया। उसने डेमिट्रियससे इस स्वप्नकी चर्चा की, किन्तु इसके पहले ही उसने उससे यह शपथ करा ली थी कि वह इस सम्बन्धमें किसीसे कुछ न कहेगा। फिर उसने मिथ्रिडेटीज़को मार डालनेका अपना निश्चय भी उसपर प्रकट कर दिया। इससे डेमिट्रियसको बहुत रंज हुआ। जब प्रति दिनकी तरह मिथ्रिडेटीज़ उसके पास आया तो और मित्रोंसे धीरे धीरे उसे अलग ले जा कर उसने मुखसे कुछ न कहते हुए भालेकी नोकसे लिख कर शीघ्रातिशीघ्र निकल भागनेको कहा। मिथ्रिडेटीज़ उसका संकेत समझ कर रातको ही भाग कर कैपेडोशिया चला गया। ऐंटिगोनसका स्वप्न शीघ्र ही सत्य भी प्रमाणित हो गया क्योंकि वहाँ (पांटसमें) एक विस्तृत उर्वर भूभागपर उसका अधिकार हो गया और उसीसे पांटसके राजघरानेका आरंभ हुआ जिसे, आठवीं पीढ़ीमें, रोमनोंने समाप्त कर दिया। आरम्भमें डेमिट्रियस कितना दयालु और न्यायप्रिय था, यह इस घटनासे बिलकुल स्पष्ट हो जाता है।

एम्पीडाक्लीजका मत है कि प्रेम और घृणा ही परस्पर युद्धोंके कारण होते हैं। सिकन्दरके उत्तराधिकारियोंमें भी—विशेष कर उनमें जो पार्श्ववर्ती या एक दूसरेके हितके विरोधी होते थे—शत्रुताका भाव भयंकर रूपमें मौजूद था। ऐंटिगोनस और टालेमीपर यह बात पूरी तरह लागू थी। जिस समय ऐंटिगोनस फ्रीजियामें था, उसी समय उसे खबर मिली कि टालेमी साइप्रससे सीरिया जाकर नगरोंको अपने अधिकारमें कर रहा है। उसने डेमिट्रियसको, जिसकी अवस्था अभी सिर्फ २२ वर्ष की थी, टालेमीका मुकाबला करनेके लिए भेज दिया। डेमिट्रियसको अपने पहले ही नेतृत्वमें बड़ी बड़ी कठिनाईयोंका सामना करना पड़ा। भला सिकन्दर-के साथ रह कर युद्धशिक्षा पाये हुए टालेमीका मुकाबला, जो स्वयं कई

युद्धोंमें ख्याति प्राप्त कर चुका था, एक नवयुवक एवं अनुभवहीन नायक कहाँ तक कर सकता था? पर यह हुआ कि गाजाके पास युद्धमें डेमिट्रियसकी पराजय हुई, उसके आठ हजार सैनिक रणबन्दी हुए तथा पाँच हजार खेत रहे, कोष तथा शिविर आदिपर भी शत्रुने अधिकार कर लिया। पर टालेमीने ये वस्तुएँ तथा उसके मित्रोंको लौटाते हुए कहला भेजा 'साम्राज्य और कीर्तिके लिए ही हम लोगोंका युद्धमें प्रवृत्त होना उचित है।" इन्हें पाकर डेमिट्रियसने देवताओंसे प्रार्थना की—"हे देव, मुझे टालेमीका ऋणी न बनाये रख कर शीघ्र बदला चुकानेका अवसर दे।" अन्यान्य नवयुवकोंकी तरह पहले प्रयासमें विफल हो जानेसे यह हतोत्साह नहीं हुआ, बल्कि इसके विपरीत भाग्यके परिवर्तन देखे हुए अनुभवी नायकोंकी तरह पुनः सैन्य-सम्प्रहमें जुट गया और युद्धके लिए आवश्यक तैयारी करने लगा।

एँटिगोनसको डेमिट्रियसकी हारकी खबर मिली तो उसने कहा कि टालेमीने बालकोंको हराया है, अब वयस्कोंके साथ उसे लड़ना पड़ेगा, किन्तु पुत्रका उत्साह भग्न न होने देनेके विचारसे दूसरी बार भी सेनाका नेतृत्व उसीको ग्रहण करने दिया।

कुछ ही कालके अनन्तर टालेमीका उपसेनापति सिलीज महती सेनाके साथ युद्ध-भूमिमें आ डटा और पहले युद्धमें पराजित होनेसे तुच्छ समझ कर डेमिट्रियसको सीरियासे ही निकाल बाहर करनेका मनसूबा बाँध लिया। किन्तु इस प्रकारकी धारणा बाँध कर उसने अपनेको धोखा ही दिया, क्योंकि डेमिट्रियसने अचानक आक्रमण कर सेनापति और उसके सैनिकोंको बन्दी बना लिया और कोष भी अपने अधिकारमें कर लिया। पर उसे इन वस्तुओंकी प्राप्तिसे उतनी खुशी नहीं हुई जितनी उन्हें लौटा सकनेका मौका मिलनेसे हुई। उसने ईश्वरको इसलिये धन्यवाद नहीं दिया कि आज उसे इतना धन और ऐसी विजय मिली, वरन् इसलिये दिया कि उसने उसे टालेमीके ऋणसे उद्धार पानेका अवसर प्रदान किया।

फिर भी उसने अपनी इच्छासे कुछ न कर पिताकी अनुमतिके लिए लिखा। स्वेच्छापूर्वक कार्य करनेकी अनुमति मिल जाने पर उसने टालेमीके पास सिलीज़ तथा उसके मित्रोंको अपनी ओरसे बहुत सी वस्तुएँ भेंटमें देकर लौटा दिया। इस पराजयके कारण टालेमीको सीरियासे हट जाना पड़ा। एंटिगोनस इस समय सेलीनीमें था किन्तु विजयकी खुशीमें शरीक होनेके लिए वह भी वहाँसे चला आया और अपने विजयी पुत्रको देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

शीघ्र ही डेमिट्रियस नबाटियन अरबोंका दमन करनेके लिए भेज दिया गया। यहाँ वह एक ऐसे प्रदेशमें जा पहुँचा जहाँ पानीका बिलकुल अभाव था किन्तु बर्बरोंने उसकी दृढ़ता और साहस देख कर उसका सामना करनेका साहस नहीं किया, इसलिए वह लूटका बहुतसा माल और सात सौ ऊँट लेकर लौट आया। इसके कुछ ही काल अनन्तर सेल्यूकसने, जिसने एंटिगोनसके द्वारा बैबिलनसे निकाल बाहर किये जाने पर पुनः अपने भूभागपर अधिकार कर लिया था, भारतकी सीमापर रहनेवाली तथा काकेशस पहाड़के पासकी कुछ जातियोंका दमन करनेके विचारसे युद्ध-यात्रा की। डेमिट्रियसने यह ख्याल कर कि उसने ईराककी रक्षाके लिए बहुत कम सैनिक छोड़े होंगे, एकाएक फरात नदीको पार कर बैबिलोनियामें प्रवेश किया। दो दुर्गोंमेंसे एकपर अधिकार हो जाने पर उसने वहाँकी रक्षक-सेनाको भगा दिया और अपने सात हजार सैनिक रख दिये। इसके अनन्तर वह शेष सैनिकों द्वारा नगरकी लूट करा कर समुद्र-तटकी ओर चला गया। इन कार्यों द्वारा उसने सेल्यूकसको अपनी सत्ता और भी अच्छी तरह जमानेका अवसर दिया, क्योंकि देशको उजाड़ करनेका यही अभिप्राय मालूम होता था कि उसपर अब इसका कोई हक नहीं रहा और वह उसे शत्रुके अधीन ही समझता था।

सीरिया होकर लौटते समय उसे टालेमी द्वारा हेलीकार्नेससके अवरोधका समाचार मिला। सहायताके लिए इसके वहाँ पहुँचते ही टालेमी

अवरोध उठा कर चला गया। पीड़ितोंको सहायता पहुँचानेसे इस प्रवृत्तिसे ऐंटिगोनस और डेमिट्रियसकी ख्याति चारों ओर फैल गयी। अब उनके मनमें टालेमी तथा कैसेंडरकी गुलामीसे यूनानको मुक्त करनेकी इच्छा हुई। इस प्रकारके न्यायानुमोदित और गौरवास्पद युद्धमें कभी किसी नरेशने हाथ नहीं डाला था। इन्हें बर्बरोंके दमनसे जो कुछ धन प्राप्त हुआ वह ग्रीस देशका गौरव बढ़ानेके लिए ग्रीसवालोंके हितमें ही लगा दिया गया।

युद्ध आरंभ करनेका निश्चय हो जाने पर ऐंटिगोनसके एक मित्रने अथेंज़को यूनानका प्रवेश-द्वार समझ कर उसे अपने अधिकारमें रखनेकी राय दी, पर उसने इसपर ध्यान नहीं दिया। उसने उत्तर दिया "मुझे तो जनताकी मैत्रीके अतिरिक्त अन्य किसी प्रवेश-द्वारपर अधिकार रखनेकी आवश्यकता नहीं है। अथेंज़से, जो संसारका बुर्ज है, हमारा यशःप्रकाश चारों ओर फैलेगा।" इसलिये डेमिट्रियस अपने साथ पाँच हज़ार टैलेण्टकी रकम और ढाई सौ पोतोंका बेड़ा लेकर अथेंजके लिए चल पड़ा, जहाँ डेमिट्रियस नामक फलेरियन कैसेण्डरके स्थानमें शासन कर रहा था और जहाँ म्युनीचियाके दुर्गमें एक अच्छी सेना प्रस्तुत थी। डेमिट्रियस, जो बड़ी खूबीके साथ कार्योंका संचालन कर रहा था, २६ मईको पाइरीअसमें जा धमका। नगरवालोंको उसके आगमनकी कोई खबर नहीं थी। उसका बेड़ा आते हुए देख कर उन लोगोंने समझा कि यह टालेमीका है और इसी विचारसे उन लोगोंने स्वागतकी भी तैयारी की। बादमें जब नायकोंको अपनी भूल मालूम हुई, तो वे शीघ्रतासे शत्रुका मुकाबला करनेके लिए बढ़े, पर, शत्रुके एकाएक पहुँच जानेसे उन लोगोंमें गड़बड़ी मच गयी। बन्दर अरक्षित पाकर डेमिट्रियसने आसानीसे भीतर प्रवेश किया। लोगोंने उसे पोत परसे खड़े होकर शान्तिपूर्वक बातें सुननेके लिए अनुरोध करते देखा। सर्वसाधारणकी अनुमति मिलने पर उसने उच्च स्वरसे घोषित किया कि मैं यहाँ अपने पिताकी आज्ञासे आया हूँ,

यहाँकी रक्षिणी सेनाको हटा कर अथेंजवालोंको दासतासे मुक्त करने और उनके पुराने विधानों तथा शासनतन्त्रको पुनः स्थापित करनेके अतिरिक्त मेरे यहाँ आनेका और कोई उद्देश्य नहीं है।

इस घोषणाको सुन कर सबने अपने हथियार रख दिये और हर्ष ध्वनि-के साथ इस प्रस्तावको स्वीकार करते हुए उससे उतरनेका अनुरोध किया। फलेरियन तथा उसके दलके लोगोंने विजयीका स्वागत करनेके अतिरिक्त और कोई उपाय न देख कर—चाहे पीछे वह अपने वचनका पालन करे या न करे—क्षमायाचनाके लिए दूत भेज दिये। डेमिट्रियस बड़े प्रेमसे उनसे मिला और उनके साथ अपने पिताके एक मित्र ऐरिस्टाडेमेसको भेज दिया। फलेरियनको इस परिवर्तित शासनमें, शत्रुकी अपेक्षा अपने नागरिकोंकी ही ओरसे अधिक भय था। पर डेमिट्रियस बराबर उसके सम्बन्धमें सावधान रहता था। उसने उसकी ख्याति तथा सज्जनता आदिका खयाल कर उसे सकुशल थीब्ज पहुँचवा दिया। अथेंजवालोंको उसने विश्वास दिलाया कि नगर देखनेकी उत्कट इच्छा होते हुए भी शत्रु-सेनाको जबतक यहाँसे निकाल बाहर न करूँगा, तबतक मैं इस आनन्द से अपनेको वंचित रखूँगा। उसने नगरके साथ शत्रु-सेनाका सम्बन्ध विच्छेद करनेके लिए दुर्गको चारों ओरसे प्राचीर और खाईसे घिरवा दिया और तब मेगाराके लिए चल पड़ा जहाँ कैसेंडरकी दूसरी सेना विद्यमान थी।

मेगारा पहुँचने पर उसे खबर मिली कि पालीपरचनके पुत्र सिकन्दरकी परम सुन्दरी स्त्री क्रेटसिपॉलिस इस समय पेट्रीमें है और मुझसे मिलना चाहती है। अतः उसने मेगारामें अपनी सेना छोड़ कर सिर्फ थोड़से अश्वारोहियोंके साथ पेट्रीका रास्ता लिया। पेट्रीके निकट पहुँचने पर अपने दलसे अलग हट कर उसने अपना खेमा लगवाया जिसमें उस रमणीके आनेका किसीको पता न चले। शत्रुओंके एक दलको इस बातकी खबर लग गयी, उसने इसके खेमेपर फौरन हमला कर दिया। डेमिट्रियस

एक मैला कुचैला लबादा पहन कर वहाँसे निकल पड़ा जिससे शत्रुओंके चंगुलमें फँसनेसे बच गया। उन्होंने स्त्रीमें और वहाँकी वस्तुओंपर अधिकार कर लिया। मेगारापर डेमिट्रियसका कब्जा हो जानेके बाद सैनिक इसे लूटनेको चले पर अथेंसवालोंने बीच बिचाव कर नगरकी रक्षा कर ली। शत्रु-सेनाको मार भगानेके बाद नगरकी स्वाधीनता घोषित कर दी गयी। इन्हीं सब कार्योंमें यह व्यस्त था कि एकाएक स्टिल्पो नामक दार्शनिककी, जो जन-समूहसे पृथक् एकान्त स्थानमें रहना पसन्द करता था, उसे याद आयी। उसने उसे बुला कर पूछा—"आपकी तो कोई चीज नहीं ली गयी है?" उसने उत्तर दिया—'नहीं, मुझे ऐसा कोई व्यक्ति नजर नहीं आया जो ज्ञानकी चोरी करनेमें समर्थ हुआ हो।' सैनिकोंने प्रायः सभी दासोंको चुपकेसे अपने अधिकारमें कर लिया था। डेमिट्रियसने विदा होते समय स्टिल्पोके प्रति सम्मान प्रदर्शन करते हुए कहा—"मैं आपके नगरको बिलकुल आजाद बनाये जा रहा हूँ।" इस पर उसने उत्तर दिया—"ठीक है, क्योंकि तुमने हम लोगोंका काम काज करनेके लिए एक भी दास नहीं रहने दिया।"

इसके बाद मेगारासे लौट कर डेमिट्रियस म्युनीचिया चला गया। उसने वहाँकी शत्रु-सेनाको भगा कर दुर्ग नष्ट कर दिया। तदनन्तर अथेंसवालोंके आग्रह करने पर नगरमें जाना भी स्वीकार कर लिया। उसने सर्व-साधारणको एकत्र कर आम तौरसे घोषणा कर दी कि अब पुरानी शासन-प्रणाली पुनः स्थापित हो गयी। उसने अपने पिताकी ओरसे बहुत सा गेहूँ और सौ पोतोंके बनाने लायक लकड़ी देनेका वचन भी दिया। इस प्रकार अथेंसमें पन्द्रह वर्ष बाद प्रजातन्त्रकी पुनः स्थापना हुई। इस बीचमें कहनेके लिए तो वहाँ कुलीनतन्त्र था पर वास्तवमें उसे एकतन्त्र ही समझना चाहिये, क्योंकि वहाँके शासक डेमिट्रियस फेलेरियनपर किसी प्रकारका नियंत्रण नहीं था। डेमिट्रियसके इन सत्कार्योंके लिए अथेंसवालोंने उसे ऐसे ऐसे सम्मान दिये कि उसकी निन्दा होने लगी।

उन्होंने सर्वप्रथम इसको तथा ऐंटिगोनसको नरेशकी उपाधि दी जो सिर्फ सिकन्दर और फिलिपके वंशजोंके लिए ही प्रयुक्त होती थी। यही नहीं, ये लोग 'रक्षकों' और देवताओंके नामसे भी पुकारे जाने लगे। वर्ष-गणनामें भी परिवर्तन हो गया। पवित्र देववस्त्र* पर और देवताओंके साथ इन दोनोंके चित्र भी अंकित करनेका निश्चय कर दिया गया। जिस स्थानपर डेमिट्रियस रथसे उतरा था, वहाँ एक वेदी बना कर उसका नाम 'डेमिट्रियसका अवतरण' रखा गया। इन दोनों व्यक्तियोंके नामपर दो नयी जातियोंका नामकरण हुआ और वहाँकी कौंसिलमें, जिसमें पाँच सौ सदस्य होते थे, ५० प्रतिनिधि प्रत्येक नयी जातिसे और लिये गये जिससे कुल संख्या छः सौ हो गयी। स्ट्राटाक्लीज नामक एक व्यक्तिने यह निश्चय कराया कि जो लोग ऐंटिगोनस और डेमिट्रियसके पास दौत्य-कार्यसे जायँ उन्हें भी वही उपाधि दी जाय जो उन मनुष्योंको दी जाती थी जो यूनानी राज्योंकी ओरसे डेलफी तथा आलिंपियाके लिए नियमित पूजा ले जाया करते थे। यह स्ट्राटाक्लीज बड़ी ओछी प्रकृतिका आदमी था और भाँड़पना कर लोकप्रियता संग्रह करनेका प्रयत्न करता था। जब अमारगसके जलयुद्धमें अथेंजवालोंकी हार हुई, तब इसने सबसे पहले आकर नगरमें जीतकी खबर फैला दी और देवताओंके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने आदिका प्रस्ताव भी कर दिया। कुछ देरके बाद लोग पराजयकी खबर ले कर पहुँचे। जब लोगोंने उसका नाम ले कर हल्ला मचाना शुरू किया तो वह उनके सामने आकर कहने लगा कि "मैंने आप लोगोंको दो दिन प्रसन्न रख कर कौन सी क्षति पहुँचायी है?" इस बातसे स्पष्टतः मालूम हो जाता है कि यह किस प्रकारका आदमी था।

एक व्यक्ति और था जो स्ट्राटाक्लीजको भी मात करता था। उसने

* हर पाँचवें वर्ष अथेंज वाले मिनर्वाका उत्सव मनाते थे और जुलूसमें बिना आस्तीनके एक लबादा निकालते थे जिसपर मिनर्वाके कार्योंके तथा प्रसिद्ध प्रसिद्ध वीरोंके चित्र अंकित होते थे।

यह प्रस्ताव किया कि जब डेमिट्रियसका यहाँ आगमन हो तो उसका स्वागत ठीक वैसा ही हो जैसा सीरीज़ (अन्नकी अधिष्ठात्री देवी) और बक्कस (विलासदेव) का होता है। जो व्यक्ति स्वागतके लिए सबसे अच्छी तैयारी करेगा उसे राज्यकी ओरसे देवताओंकी पूजाके लिए रकम मिलेगी। अथेंसवालोंने म्युनीचियन मासका नाम बदल कर 'डेमिट्रियन' और बक्कसका उत्सव बदल कर डेमिट्रियसका उत्सव कर दिया। प्रायः इन परिवर्तनोंके साथ कुछ न कुछ दैवी प्रकोप भी लक्षित होता गया। जब पवित्र देववस्त्र, जिसपर इन दोनोंके चित्र भी अंकित हो चुके थे, जुलूसके साथ घुमाया जा रहा था, तब एक ऐसा बवण्डर आया कि उसके झोकेमें पड़ कर यह ऊपरसे नीचेतक विदीर्ण हो गया; एक प्रकारकी विषलता, जो आस पासके गाँवोंमें भी शायद ही कहीं देख पड़ती थी, इन नये देवताओंकी वेदीके चारों ओर बहुत ज्यादा उपज गयी; विलासदेव (बक्कस) के उत्सवका जुलूस आदि भी रोक देना पड़ा क्योंकि उस दिन इतनी अधिक हिमवर्षा होने लगी कि अंगूर आदिकी ही लताएँ नहीं, बल्कि गेहूँके पौधे भी, नष्ट हो गये। इसपर स्पाटाक्लीजके फिलिपिडीज नामक एक शत्रुने एक प्रहसनमें उसपर इस प्रकार आक्षेप किया—

> "हमारी अँगूरकी लताएँ हिमवर्षासे क्यों नष्ट हुई?
> पवित्र देववस्त्र दो खंडोंमें क्यों विदीर्ण हो गया?
> जिसने देवताओंका सम्मान मनुष्योंको दिलाया है वही इसका कारण है।
> यह प्रहसन नहीं, वरिक वही, जनताकी विपत्तियोंका मूल कारण है।"

लिसीमेक्स नामक राजा फिलिपिडीजको बहुत मानता था। इसके सम्बन्धमें वह अथेंसवालोंका बहुत कुछ उपकार किया करता था। यह सदाचारी था और बखेड़ोंसे बहुत दूर रहता था। एक दिन लिसीमेकसने कृतज्ञताके भावमें उससे बुला कर पूछा "मैं तुम्हें कौनसी वस्तु भेंट करूँ?" उसने उत्तर दिया "राज्यके गुप्त भेदोंके अलावा जो आपकी इच्छा हो।" मैंने यहाँपर जान बूझ कर फिलिपिडीज़का उल्लेख किया है,

क्योंकि मुझे इस कथामें स्ट्राटाक्लीज़ नामक सार्वजनिक वक्ताके साथ साथ इस प्रहसनकारका भी समावेश करना उचित प्रतीत हुआ।

स्फेटस-निवासी ड्रोमोक्लाइडीज़ने जो प्रस्ताव पेश किया, यह तो पहले-की सभी मूर्खताओं और चाटूक्तियोंको मात करनेवाला था। जब देल्फी-की देवीसे यह दर्याफ्त करनेका प्रश्न छिड़ा कि ढालें किस प्रकार समर्पित की जायँ, तो उसने प्रस्ताव किया कि ऐसा न कर हम लोगोंको डेमि-ट्रियससे ही आप्तवचन लेना चाहिये। प्रस्तावकी शब्दावली इस प्रकार थी—"जनता शुभ मुहूर्तमें यह निर्णय करती है कि एक नागरिक 'नगर-रक्षक' की सेवामें भेजा जाय और वह उक्त नगर-रक्षककी आवश्यक पूजा कर दर्याफ्त करे कि किस धार्मिक तथा भव्य विधिसे ढालोंके समर्पणका कार्य किया जाय और इस सम्बन्धमें उसका जो आदेश हो, जनता उसीका अनुसरण करे।" इस प्रकारके कार्योंसे लोगोंने उसका दिमाग, जो अभी उतना परिपक्व नहीं था, बिल्कुल फेर दिया।

जब वह अथेंजमें ठहरा हुआ था, तभी उसने यूरीडाइस नामक एक विधवासे विवाह किया जो प्राचीन मिल्टियाडीज़के वंशमें थी और पहले पति साइरेनी-नरेश आफेल्टसके मर जाने पर पुनः अथेंज़ चली आयी थी। अथेंज़वालोंने इस विवाहसे अपने नगरको गौरवान्वित समझा पर डेमिट्रि-यस इस सम्बन्धमें बहुत स्वच्छन्द था, उसने एक ही साथ कई स्त्रियोंसे विवाह कर लिया था जिनमें फीला ज्येष्ठा और सबसे अधिक सम्मानित थी। इस सम्मानका कारण एक तो यह था कि वह एँटिपेटर जैसे प्रसिद्ध नरेशकी लड़की थी और दूसरा यह कि इसका विवाह क्रैटेरसके साथ हुआ था जिसे मकदूनियाके लोग सिकन्दरके उत्तराधिकारियोंमें सबसे अधिक मानते थे। इन्हीं कारणोंसे ऐण्टीगोनसने उसके साथ विवाह करनेके लिए डेमिट्रियसको बाध्य किया था, नहीं तो अवस्थाके विचारसे यह सम्बन्ध उचित न था, क्योंकि डेमिट्रियस तरुण था और फीलाकी अवस्था उससे कहीं अधिक थी। पहले डेमिट्रियस विवाह करनेको राजी नहीं था, पर

उसके पिताने यूरीपाइडीज़का विवाह पर निम्नलिखित उक्ति कुछ परिवर्तित कर उसके कानमें कही—स्वाभाविक प्रवृत्तिके अनुकूल हो या न हो किन्तु यदि लाभ होता हो तो मनुष्यको अवश्य विवाह कर लेना चाहिये (नौकरीके स्थानमें 'विवाह' रख दिया गया था।) पर धोखा गया अन्य स्त्रियोंके प्रति सम्मानका भाव उसकी उपपत्नियोंमें अनुरक्त होनेसे नहीं रोक सका। उसकी कामुकता उस समयके प्रायः सभी नरेशोंसे बढ़ी हुई थी।

इसी बीच उसके पिताने उसे टालेमीके साथ साइप्रसमें युद्ध करनेके लिए जानेका आदेश दिया। यूनानसे पृथक् होनेकी इच्छा न होने पर भी उसे वहाँ जाना पड़ा। वह भरसक वहाँका काम, जो उत्तम होनेके साथ ही उसके लिए गौरवास्पद भी था, छोड़ना नहीं चाहता था, इसलिए उसने क्लियोनाइडीजको जो टालेमीकी और कारिन्थकी सेनाका नायक था, रुपये लेकर नगरोंको स्वाधीन कर देनेको लिखा। उसके इनकार करने पर इसने कुछ अतिरिक्त सेना लेकर साइप्रसकी यात्रा कर दी और पहुँचने के साथ ही टालेमीके भाई मेनेलेअसपर आक्रमण कर उसे परास्त कर दिया। इसके बाद फौरन टालेमी महती स्थल- और जल सेनाके साथ आ धमका। कुछ कालतक तो दोनों ओरसे ऐसे ही संवादोंका आदान प्रदान होता रहा जिनमें भर्त्सना और डींगके सिवा और कुछ नहीं होता था। टालेमीकी ओरसे कहा जाता था "जल्दी निकल भागो, नहीं तो सारी सेनाके एकत्र हो जाने पर तुम्हारा कहीं पता भी न रहेगा।" इसके उत्तरमें डेमिट्रियसकी ओरसे कहा जाता था—"यदि तुम सिंहिअन और कारिंथसे अपनी सेना हटा लो तो हम तुम्हें चुपचाप चले जाने देंगे।" यही दोनों नहीं बल्कि उस समयके सभी नरेश युद्धके भारी परिणामके सम्बन्धमें चिन्तित थे, क्योंकि इस युद्धका पारितोषिक साइप्रस या सीरिया न होकर सर्वोपरि प्राधान्य था।

टालेमी अपने साथ डेढ़ सौ युद्धपोत लेकर आगे बढ़ा और उसने मेनेलेअसको साठ पोतोंके साथ सलामिसके पोताश्रयसे निकल कर डेमिट्रि-

उसकी सेनाके पिछले भागपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। डेमिट्रियसने इन साठ पोतोंका मुकाबला करनेके लिए सिर्फ दस पोत रखे क्योंकि पोताश्रयका प्रवेशमार्ग बन्द करनेके लिए इतने पोत काफी थे; उसने अपनी स्थलसेनाको अन्तरीपके अन्तिम छोरतक तैनात कर दिया और स्वयं एक सौ अस्सी पोत लेकर युद्धमें प्रवृत्त हुआ। उसने इतनी बहादुरी और वेगके साथ आक्रमण किया कि टालेमीको सिर्फ आठ पोतोंके साथ पीठ दिखा कर भागना पड़ा। उसके सत्तर पोत आरोहियों आदिके साथ पकड़ लिये गये और शेष युद्धमें नष्ट हो गये। भारवाहक पोतोंपर जितने शस्त्रास्त्र, यंत्र, दास-दासियाँ तथा मित्र आदि थे, वे डेमिट्रियसके हाथ आ गये। रण-बन्दियोंमें लेमिया नामक एक महिला भी थी जो पहले वेणु बजानेके लिए प्रसिद्ध थी पर अब जिसने वेश्यावृत्ति ग्रहण कर ली थी। गिरती हुई अवस्थाके कारण इसके सौन्दर्यका भी ह्रास हो चला था, फिर भी तरुण डेमिट्रियसपर इसने ऐसा जादू डाला कि जहाँ और स्त्रियाँ तो डेमिट्रियसके प्रति अनुरक्त थीं वहाँ डेमिट्रियस सिर्फ लेमियापर मुग्ध था।

जलयुद्धके बाद मेनेलेअसने सामना न कर अपने सारे पोतों और सारी सेनाके साथ, जिसमें बारह सौ अश्वारोही तथा बारह हजार पैदल थे, आत्मसमर्पण कर दिया। यह विजय स्वयं ही बड़े गौरवकी चीज़ थी, ऊपरसे डेमिट्रियसने शत्रुओंके साथ मानवोचित बर्ताव कर इसका महत्व और भी बढ़ा दिया। उसने बड़े सम्मानके साथ शवोंकी अन्त्येष्टि की और फिर शत्रुओंके सभी रणबन्दियोंको मुक्त कर दिया। यह खयाल कर कि कहीं बादमें अथेंज़वालोंको भूल न जाऊँ उसने बारह सौ आदमियोंके निमित्त पूरे पूरे शस्त्रास्त्र भेज दिये।

एँटिगोनसके पास यह शुभ संवाद पहुँचानेका भार सबसे बड़े चापलूस दरबारी मिलेटस-निवासी ऐरिस्टोडेमसको सौंपा गया। इस मौके-पर उसने अपनी सारी कला खर्च कर डालनेकी ठानी। सीरियाके पास

पहुँचने पर उसने पोतको किनारेपर न आने देकर कुछ दूर समुद्रमें ही लंगर डलवा दिया और साथियोंको उसीपर ठहरा कर अकेला ही एक नाव द्वारा तट पर पहुँच कर राजप्रासादकी ओर बढ़ा। ऐंटिगोनस बड़ी व्यग्रताके साथ युद्धके परिणामकी प्रतीक्षा कर रहा था जो सर्वथा स्वाभाविक ही था। दूतके आनेकी खबर मिलने पर वह इतना आतुर हो उठा कि उसके लिए राजप्रासादके अन्दर ठहरना मुश्किल हो गया। समाचार जाननेके लिए उसने ऐरिस्टोडेमसके पास लगातार कई पदाधिकारी भेजे पर वह उन्हें कोई उत्तर न दे गम्भीर मुद्रा धारण कर चुपचाप आगे बढ़ता गया। ऐंटिगोनस सबसे अधीर हो उससे मिलनेके लिए द्वारपर चला आया। ऐरिस्टोडेमसके चारों ओर लोगोंकी भीड़ इकट्ठी हो गयी। युद्धका फल जाननेके लिए सबके सब राज प्रासादकी तरफ चल पड़े। ऐंटिगोनसको उसकी बात सुनने लायक फासलेपर देख कर उसने हाथ फैला कर कहा—"ऐंटिगोनस नरेशकी जय हो, हम लोगोंने टालेमीको जलयुद्धमें पराभूत कर सोलह हजार आठ सौ आदमियोंको रणबंदी बनाया है।' ऐंटिगोनसने उत्तरमें कहा—"स्वागत ऐरिस्टोडेमस, पर तुमने इस शुभ सम्वादके लिए हम लोगोंको व्यथित करनेका उपाय किया था, इस कारण पारितोषिकके लिए तुम्हें देरतक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

अब जनताने पहले पहल ऐंटिगोनस और डेमिट्रियसको 'नरेश' की उपाधिसे भूषित किया। उसके मित्रोंने शीघ्र ही उसके सिरपर ताज पहना दिया। उसने एक ताज अपने पुत्रके लिए फौरन भेज दिया और उसके साथ जो पत्र भेजा गया उसमें 'डेमिट्रियस नरेश' कह कर सम्बोधन किया गया। जब यह समाचार मिस्र पहुँचा तो टालेमीके अनुयायियोंने भी, यह दिखलानेके लिए कि वे इस पराजयसे जरा भी विचलित नहीं हैं, टालेमीको 'नरेश' की उपाधिसे भूषित किया। यह रोग सक्रामककी तरह फैल गया। सिकन्दरके अन्य उत्तराधिकारियों तथा लिसीमेकस और सेल्यूकस आदिने भी यह उपाधि ग्रहण कर ली। कैसेंडर अपना नाम

पूर्ववत् लिखता गया हालाँ कि और लोग पत्रों आदिमें 'नरेश' ही कह कर उसका सम्बोधन करते थे। इस उपाधिसे इन लोगोंके केवल नाम और पदमें ही वृद्धि नहीं हुई, वे अब अपनेको कुछ और ही समझने भी लगे। चालढाल, वातचीत तथा व्यवहार आदि सभीमें प्रधानताद्योतक भाव परिलक्षित होने लगे। जिस प्रकार कोई अभिनेता किसी राजाका वेष धारण करने पर अपनी चालढाल, स्वर, और बोलचालका ढंग आदि बदल लेता है, ठीक वही हालत इन शासकोंकी भी हो गयी। अब इनकी दंड-व्यवस्था भी पहलेकी अपेक्षा अधिक कठोर हो गयी, क्योंकि अब इनका वह छद्मवेश, जिसके कारण इनको नम्रता दिखलानी पड़ती थी, नहीं रह गया था। सिर्फ एक ही खुशामदी आवाज़ने संसारमें क्रान्ति मचा दी।

साइप्रसको विजयसे ऐंटिगोनसका हौसला बहुत बढ़ गया। अब उसने स्वयं टालेमीके विरुद्ध यात्रा की और सहायताके लिए डेमिट्रियसको जल-सेनाके साथ बुलाया। युद्धके परिणामका अनुमान एक स्वप्नसे हो गया जो ऐंटिगोनसके एक मित्रने इस रूपमें देखा था। "ऐंटिगोनस अपनी सारी सेनाके साथ इस प्रकार दौड़ रहा है मानो कोई दौड़ हो रही हो। पहले तो उसने बड़ी स्फूर्ति और शक्ति दिखलायी पर पीछे क्रमशः उसकी शक्ति मन्द पड़ती गयी और अन्तमें उसने देखा कि वह थकित और क्लान्त हो पीछे पीछे आ रहा है।" ऐंटिगोनस तथा उसकी स्थल-सेनाको कई कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा और डेमिट्रियसके पोत, तूफान आ जाने के कारण, एक खतरनाक किनारेपर जहाँ कोई पोताश्रय भी न था बह कर जा लगे और कई नष्ट भी हो गये। इस प्रकार यह युद्धयात्रा बिलकुल बेकार गयी। ऐंटिगोनस अब सैनिक कार्योंके योग्य नहीं रह गया था। इसका एक कारण तो यह था कि उसकी अवस्था अस्सी वर्षकी हो गयी थी और दूसरा जो कि पहले से भी अधिक सबल था, यह था कि उसका शरीर बहुत पृथुल था। इसलिए उसने सेना-विभागका सारा

कार्य अपने पुत्रको सौंप दिया जो कुछ तो भाग्य अनुकूल होनेके कारण और कुछ अपनी योग्यताके बलपर सारे कार्योंका सम्पादन सुचारु रूपसे कर लेता था। उसकी विलासप्रियता, फिजूलखर्ची तथा कामुकताने उसके कामोंमें कोई विशेष बाधा नहीं पड़ती थी, क्योंकि शान्तिके समय तो डेमिट्रियस उक्त विषयोंमें बिलकुल लीन हो जाता था पर युद्धके समयमें यह संयमियोंसे भी अधिक संयम रखनेमें बाजी मार ले जाता था।

जब लेमियाने डेमिट्रियसके हृदयपर अधिकार जमा लिया, तब कुछ दिनोंके बाद उसे कहीं बाहर जाना पड़ा। वहाँसे लौट कर वह पिताको अभिवादन करने गया। उसने इस प्रकार अपने पिताका चुम्बन पुनः पुनः प्रेमपूर्वक किया कि एंटिगोनसने हँस कर कहा "मालूम होता है, तुमने मुझे लेमिया समझ लिया है।" एक बार एंटिगोनस डेमिट्रियसके बीमार होनेकी खबर पाकर उसे देखने गया। द्वारपर उसे एक सुन्दर युवती मिली जो डेमिट्रियसके पाससे लौट रही थी। भीतर जाकर वह चारपाईपर बैठ गया और उसकी नाड़ी देखने लगा। डेमिट्रियसने कहा "बुखार तो अभी हट गया है।" एंटिगोनसने कहा—"हाँ, ठीक है, आते समय द्वारपर उससे मेरी भेंट हुई थी।" वह अपने पुत्रके महत्कार्योंके विचारसे उसके दोषोंके प्रति इसी प्रकार नरमी दिखलाया करता था। सीथियन लोगोंकी यह चाल थी कि मद्यपानमें प्रवृत्त होने पर वे धनुषकी टंकार किया करते थे, मानों विलासिताके प्रभावमें विलीन होती हुई वीरता एवं साहसको जागरित करनेका प्रयत्न करते हों। पर डेमिट्रियसकी हालत विचित्र थी। यदि वह विलासितामें पड़ता था तो इसके अलावा उसे और कुछ नहीं सूझता था और जब काममें लग जाता था तो फिर विलासिताकी उसे याद भी न आती थी। वह विलासिताके समय युद्धके विचारोंको और युद्धके समय विलासिताके विचारोंको अपने पास फटकने नहीं देता था। यही कारण है कि उसकी इस विलासप्रियताके कारण उसके सैनिक कार्योंमें कोई बाधा नहीं पड़ती थी। युद्ध-संचा-

एनकी अपेक्षा युद्धकी तैयारीमें उसकी योग्यता और भी विशेष रूपसे देख पड़ती थी। यदि आवश्यकतासे अधिक रसद प्रस्तुत न होती तो उसे सन्तोष ही नहीं होता था। अपने पोतों और यंत्रोंकी बनावट इत्यादिमें कुछ न कुछ सुधार करते रहनेमें उसे बड़ा आनन्द आता था। वाद्य, मनोरंजन और चित्रकला आदिमें अपनी प्रतिभाका दुरुपयोग न कर वह नये नये ढगके यंत्र आदि बनाया करता था।

कहते हैं, मकदूनिया नरेश ईरोपस भी अपना अवकाश मेज और लैंप तैयार करनेमें लगाया करता था, ऐटलस उर्फ फिलोमीटर शाहीबागमें तरह तरहके जहरीले पौधे लगाने और मौसिममें उनके फलोंसे अर्क निकाल कर उनका गुण जाननेके प्रयत्न द्वारा अपना मनबहलाव किया करता था। पार्थियाके नरेश बाणोंके फल तेज करना ही अपने लिए बहुत अधिक समझते थे, पर डेमिट्रियसकी बनायी हुई चीजोंमें केवल उसकी प्रतिभा और कुशलता ही नहीं पायी जाती थी, बल्कि वे चीजें भी शाहोंके ही योग्य हुआ करती थीं। जिन लोगोंके विरुद्ध उसके पोत भेजे जाते थे, वे ही तटसे गुजरते हुए उक्त पोतोंको देख कर मुग्ध हो जाते थे और जिन नगरोंका वह अवरोध करता था उसीके निवासी प्राचीरोंपर चढ चढ कर उसके यन्त्रोंको देखा करते थे। लिसीमेकस, जो डेमिट्रियसका सबसे बड़ा शत्रु था, जब सिलीशिया प्रदेशके सोली नगरका घेरा उठानेके लिए उसे बाध्य करने आया तो उसने युद्धयन्त्रों और पोतोंकी सञ्चालन विधि देखनेकी इच्छा प्रकट की। इन्हें देख कर वह इतना प्रभावित हुआ कि इनकी प्रशंसा करता हुआ चुपचाप चला गया। रोडियन लोगोंने भी, जिनके नगरपर उसने घेरा डाला था, सन्धि हो जाने पर उसकी शक्ति और अपनी वीरताके स्मारक स्वरूप कुछ यन्त्रोंको वहाँ रहने देनेका अनुरोध किया था।

रोडियन लोग टालेमीके सहायक थे, इसी कारण उनसे इसका युद्ध छिड़ा था और इस घेरेमें डेमिट्रियसने प्राचीरमें अपना सबसे बड़ा यन्त्र

भिड़ाया था। यह यन्त्र नीचे वर्गाकार था और ऊपर क्रमशः पतला होता गया था। आधारकी प्रत्येक भुजाकी लम्बाई २४ हाथ थी और ऊँचाई ३३ हाथ। अन्दर इसमें कई खाने थे और प्रत्येक खानेमें, सामनेकी तरफ, एक खिड़की थी जिसमेंसे सैनिक सभी प्रकारके अस्त्रोंका उपयोग कर सकते थे। इसके भीतर भिन्न भिन्न प्रकारके सैनिक भरे रहते थे। सबसे बढ़कर आश्चर्यजनक बात तो यह थी कि इतना बड़ा होने पर भी चलने पर यह इधर उधर न झुक कर एक सीधमें चलता था। इसके चलते समय भयंकर शब्द होता था जिससे देखनेवाले प्रसन्न होनेके साथ ही साथ भयभीत भी होते थे।

इसी अवरोधके समय डेमिट्रियसने साइप्रससे दो लौह कवच मँगवाये जिसमेंसे प्रत्येकका वज़न बीस सेरसे अधिक नहीं था। इनके निर्माता ज़ोइलसने इनकी खूबी दिखलानेके लिए २६ पगपर स्थित यंत्रसे हथियार चलानेको कहा। निशाना ठीक लगा पर कवचपर इसका विशेष प्रभाव न पड़ कर एक साधारण खरोचका-सा चिह्न होगया। डेमिट्रियसने इनमें-से एक तो अपने लिए रखा और दूसरा अपने सबसे बली तथा वीर सेनापति ऐल्सीमसको दे दिया; इसका सारा कवच तौलमें दो टैलेंट होता था, पर अन्य सैनिकोंके लिए एक टैलेंट वजनका कवच काफी होता था। यह सेनापति इसी अवरोधके समय रंगशाला (सभाभवन) के पासवाले युद्धमें वीरगतिको प्राप्त हुआ।

रोडियन लोग बड़ी वीरतापूर्वक अवरोधका सामना कर रहे थे, इससे डेमिट्रियस विशेष रूपसे कुछ नहीं कर सका। इन लोगोंका एक कार्य इसे बहुत बुरा लगा जिससे चिढ़ कर वह अवरोध नहीं हटा रहा था। डेमिट्रियसका एक पोत इन लोगोंके हाथ आ गया था जिसपर कुछ सामान, वस्त्र और उसकी स्त्री फीलाके पत्र आ रहे थे। इन लोगोंने अथेंज़-वालोंके कार्यका अनुकरण न कर, जिन्होंने अपने शत्रु फिलिप नरेशकी डाक पकड़ने पर उसके सभी पत्रोंको तो पढ़ लिया पर उसकी स्त्री आ-

लिम्पियसके पत्र बिना मुहर तोड़े ही ज्योंके त्यों लौटा दिये थे, इन सब चीजोंको टालेमीके पास भेज दिया। क्रुद्ध होते हुए भी डेमिट्रियसने अवसर मिलने पर इसका बदला नहीं लिया। कॉनसनिवासी प्रोटोजेनीज़ रोडियन लोगोंके लिए एक चित्र तैयार कर रहा था जो क़रीब क़रीब तैयार था। डेमिट्रियसके हाथमें यह चित्र पड़ जाने पर रोडियन लोगोंने एक दूत भेज कर इसे नष्ट न करनेकी प्रार्थना की। प्रार्थनाके उत्तरमें उसने कहा "मैं अपने पिताकी तस्वीरें भले ही जला दूँ पर ऐसी श्रमसाध्य कलाकी वस्तु नष्ट करनेका विचार भी नहीं कर सकता।" प्रोटोजेनीज़ सात वर्षोंसे इस चित्रपर परिश्रम कर रहा था। कहते हैं, अपेलीज नामक सुप्रसिद्ध चित्रकार इस चित्रको देख कर ऐसा विस्मित हुआ कि कुछ देरतक उसके मुँहसे कोई शब्द ही नहीं निकल सका। यह चित्र बादमें रोम चला गया और वहीं कई चित्रोंके साथ भस्मीभूत हो गया।

रोडियन लोग इस युद्धसे ऊब गये थे। डेमिट्रियस भी इसका अन्त करनेके लिए कोई बहाना ढूँढ रहा था और दैवयोगसे एक मिल भी गया। अथेंजवालोंने बीच बिचाव कर यह तै कर दिया कि रोडियन लोग टालेमीको छोड़ कर और किसीके साथ युद्ध छिड़ने पर, एँटिगोनस और डेमिट्रियसका ही साथ देंगे।

अथेंज़वालोंने कैसेंडरके विरुद्ध जो उनके नगरपर घेरा डाले हुए था, डेमिट्रियससे सहायता करनेकी प्रार्थना की। अतः वह ३३० पोत और महती स्थल-सेना लेकर वहाँ जा पहुँचा। उसने कैसेंडरको एटिकासे सिर्फ निकाल बाहर ही नहीं किया बल्कि उसका पीछा कर थर्मोपाइलीमें पूर्णतः पराभूत भी किया। हेराक्लीया, नामक स्थानके निवासियोंने स्वेच्छासे आत्मसमर्पण कर दिया और मकदूनियाके छः हजार सैनिक भी उससे आ मिले। वहाँसे चल कर उसने थर्मोपाइलीके सभी यूनानी नगरोंको स्वाधीन कर दिया, बीओशिअन लोगोंके साथ मैत्री कर ली, सेंक्रीपर अधि-

धार पर लिया और पहले तथा पैनयटकको पैरीस्टाइल लेनासे भुक्त कर अथेन्सवालोंको लौटा दिया। हालाँ कि अथेन्सवालोंने पहले ही बहुत सी ऊँची ऊँची पदवियाँ दे रखी थीं, फिर भी इस मौकेपर वे अपनी चाटुकारितासे बाज न आये। उसे पार्थेननके पिछले हिस्सेमें रहनेको स्थान दे दिया गया और वह मिनर्वा देवीका अतिथि भी करार दिया गया, जो वस्तुतः उस देवीके मन्दिरमें प्रवेश पाने और उस पवित्र कुमारी देवीका आतिथ्य ग्रहण करनेके योग्य न था। एक बार युद्धयात्रामें उसका भाई फिलिप एक ऐसे घरमें ठहरा हुआ था जिसमें तीन युवती महिलाएँ थीं। एंटिगोनसने घरवालोंको पुत्र कर उसके सामने ही कहा "मेरे पुत्रको ऐसे घरमें क्यों रखा है जहाँ अधिक आदमियोंके कारण स्थानका सङ्कोच है? उसके लिए कोई और जगह ठीक कर दो।" डेमिट्रियसको और किसी खयालसे नहीं तो कमसे कम सबसे बड़ी बहनके विचारसे (जैसा कि वह कहा करता था) मिनर्वाके प्रति आदर करना चाहिए था पर ऊँची श्रेणीके स्त्री पुरुषोंके साथ बड़े बुरे तरीकेसे पेश आकर और साथ ही लेमिया, डीमो आदि वेश्याओंका क्रीडास्थल बना कर उसने मन्दिरको अपवित्र कर दिया।

अथेंस नगरके महत्वके विचारसे हम बहुत सी क्षुद्र बातोंके सम्बन्धमें मौन ग्रहण कर लेते हैं, पर डेमाक्लीज नामक नवयुवककी सदाचारप्रियता और साहसका उल्लेख न करना भी ठीक न होगा। उसकी उम्र अभी कम ही थी और वह इतना सुन्दर था कि यह विशेषण उसका उपनाम ही हो गया था। यह सौन्दर्य डेमिट्रियसकी आँखोंसे छिपा न रह सका। डेमिट्रियसके दूतोंने भय और प्रलोभन द्वारा उसे वशमें करनेकी बहुत कोशिश की पर उसका मन जरा भी विचलित नहीं हुआ। उसने सार्वजनिक खेलों और अखाड़ों आदिका परित्याग कर दिया, सिर्फ स्नानागारमें एकाकी जाया करता था। डेमिट्रियस ताकमें लगा रहता था, एक दिन मौका पाकर अकेले वहाँ जा पहुँचा। बेचारा लड़का पासमें कोई

मददगार न देख कर खौलते हुए पानीके कंडालमें कूद पड़ा। यह सत्य है कि उसकी बुरी मौत हुई पर वह उसके देश और गुणोंके सर्वथा उपयुक्त थी।

क्लोनेटसका आचरण इससे सर्वथा भिन्न था। जनताके नाम डेमिट्रियसका पत्र लाकर उसने अपने पिताका जुर्माना माफ कराया और इससे उसे हर्ष भी हुआ पर इसका परिणाम यह हुआ कि स्वयं तो अपमानित हुआ ही, अपने देशपर भी उसने विपत्ति ढाह दी। जनताने जुर्माना तो माफ कर दिया पर आगेके लिए आदेश कर दिया कि कोई व्यक्ति डेमिट्रियसकी सिफारिश न लावे। पर जब यह मालूम हुआ कि डेमिट्रियसने इसे अपमान समझ कर क्रोध प्रकट किया है, तो उन लोगोंने भयभीत होकर इस आदेशको रद्द ही नहीं किया बल्कि प्रस्तावकको और समर्थकोंमेंसे भी कुछको फाँसी तथा देश-निर्वासनकी सजा दे दी। उन लोगोंने यह भी निर्णय किया कि भविष्यमें डेमिट्रियसकी ओरसे जो जो आदेश दिये जायँ वे देवताओंके प्रति पवित्र और मनुष्योंके लिए न्याय्य माने जायँ। एक उच्चवर्गीय व्यक्तिके यह कहने पर कि स्ट्राटाक्लीज़के ये शब्द पागलपनसे भरे हुए हैं, लिउकोनोके डेमॉक्रीजने कहा कि उसके लिए पागलपनके शब्द न कहना मूर्खताकी ही बात होती। स्ट्राटाक्लीजको तो अपनी चापलूसीकी वजहसे शीघ्र ही अच्छा पुरस्कार मिला किन्तु डेमाक्रीज़पर इस कथनके कारण अभियोग लाया गया और उसे नगरनिर्वासनका दंड दिया गया।

इसके अनन्तर डेमिट्रियसने पेलॉपनेससमें प्रवेश किया। वहाँ किसीने उसका मुकाबला नहीं किया, शत्रुओंने या तो अपने नगर समर्पित कर दिये या वहाँसे भाग गये। उसने एक्टी और आर्केडियापर भी अधिकार कर लिया एवं आर्गस, सिशिअन और कारिन्थको उनकी सेनाके नायकोंको सौ टैलैंट देकर उनसे खाली करा लिया। इसी समय आर्गसमें जूनोका उत्सव पड़ा और डेमिट्रियसने खेलों आदिमें स्वयं अध्यक्षका पद ग्रहण

लिया। यहाँपर उसने मालेसियन नरेश ईएसिडोजकी पुत्री डीडेमियासे विवाह किया। सिसिअनके लोग नगरके बाहर रहते थे। उसने एक अंदेशी जगह पसन्द कर वहाँ सबको रहनेकी राय दी और अपने नामपर नगरका नाम भी बदल कर डेमिट्रियस कर दिया। यहाँ इसस्थमसपर रियासतोंका एक सम्मेलन हुआ जिसमें बहुतसे लोग एकत्र थे। इन्होंने सिकन्दर और फिलिपकी तरह डेमिट्रियसको सारे यूनानका अधिनायक करार दिया। पर डेमिट्रियस शक्ति और सफलतामें अपनेको इन लोगोंसे कहीं आगे बढ़ा हुआ समझता था। सिकन्दरने किसी नरेशकी न तो उपाधि छीनी थी और न अपनेको कभी सम्राट् ही कहा था, हालाकि उसने कितने ही लोगोंको स्वयं राजा बनाया था। पर डेमिट्रियस अपने और अपने पिताके व्यतिरिक्त और किसीको इस उपाधिके योग्य नहीं समझता था। दावत आदिमें जब उसके अनुयायी उसे तथा उसके पिताको नरेश की उपाधिसे एवं सेल्यूकसको गज पतिकी, टालेमीको प्रधान सेनापतिकी, लिसीमेकसको कोषाध्यक्षकी और ऐगाथोक्लीजको सिसिली द्वीपके शासक-की उपाधिसे भूषित कर मदिरापानके समय स्वास्थ्य-कामना करते थे, उस समय डेमिट्रियस मारे आनन्दके गद्गद हो उठता था। और नरेश तो उसके इस दर्पकी बात सुन कर सिर्फ हँस देते थे पर लिसीमेकस उस पर बहुत गुस्सा होता था, क्योंकि वह कोषाध्यक्ष मान कर इसे हिजड़ेकी श्रेणीमें समझता था (पूर्व देशोंके नरेश प्रायः हिजड़ोंको ही कोषाध्यक्ष बनाया करते थे)। लिसीमेकस ही उसका सबसे बड़ा शत्रु था। एक बार लेमियाके प्रति उसकी आसक्तिपर चुटकी लेते हुए उसने कहा कि "आज तक मैंने किसी वेश्याको रानीका पार्ट करते हुए नहीं देखा था।" यह सुन कर डेमिट्रियसने जवाब दिया "मेरी वेश्या लिसीमेकसकी पेनीलोपसे कम वफादार नहीं है।"

अथेन्स वापस आनेकी तैयारी करते समय उसने प्रजातन्त्रको लिखा कि मैं पहुँचनेके साथ ही दीक्षा लेकर एक साथ छोटे बड़े सभी संस्कारोंको

पूरा करना चाहता हूँ। पर यह बात न तो पहले कभी हुई थी और न न्यायानुमोदित थी, क्योंकि लघु संस्कार फरवरीमें तथा उच्च सितम्बरमें हुआ करता था और इसके एक वर्ष बाद अन्तिम विधि हुआ करती थी। जनसभामें डेमिट्रियसके पत्र जब पेश किये गये तो पाइथोडोरस नामक मशालचीके सिवा और किसीको इस माँगका विरोध करनेका साहस न हुआ, पर इस विरोधका कोई फल नहीं हुआ, क्योंकि स्ट्राटाक्लीजने उस महीनेका नाम बदल कर आवश्यक महीनेका नाम कर देनेका निश्चय करा लिया। इस प्रकार डेमिट्रियसका लघु संस्कार पूरा करा लिया गया और फिर दूसरे निश्चय द्वारा महीनेका नाम आवश्यक महीनेमें परिवर्तित कर दिया गया जिससे उच्च संस्कार भी पूरा हो गया। इस प्रकार एक ही मासमें सब रस्म अदा हो गयी। प्रहसनकार फिलिपिडीजने इसी कारवाईके सम्बन्धमें स्ट्राटाक्लीजका लक्ष्य करते हुए कहा था—

भय-भर चाटुवाद रख सकता एक मासमें सारा वर्ष।

डेमिट्रियसको मिनर्वा देवीके मन्दिरमें स्थान देनेके प्रस्तावके सम्बन्धमें उसने कहा था—

परम पूत मन्दिरन कहँ देत बनाय सराय।
संग कुमारी देविके वेश्या रखत बुलाय॥

डेमिट्रियसने इस नगरमें जितने दुराचार किये उनमेंसे निम्नलिखित घटनाके कारण अथेंजवालोंको सबसे अधिक दुःख हुआ। उसने अल्प समयमें ही ढाई सौ टैलेण्ट एकत्र करनेकी आज्ञा दे दी और जब बड़ी सख्तीके साथ वसूल कर यह रकम उसके सामने लायी गयी तो उसने इसे लेमिया तथा दूसरी उपपत्नियोंको साबुन खरीदनेके लिए दे दिया। इससे जो आर्थिक क्षति हुई वह तो हुई ही, साथ ही इससे उनका जो अपमान हुआ वह उन्हें बहुत बुरा मालूम हुआ। कुछ लेखकोंका कहना है कि यह बर्ताव थेसलीवालोंके साथ हुआ था, अथेंजवालोंके साथ नहीं। जो हो, किन्तु

इसमें सन्देह नहीं कि लेमियाने राजाको भोज देनेके लिए स्वयं बहुत रकम ली थी। यह दावत इतने ठाटबाटसे हुई कि लिनसिअस जैसे प्रसिद्ध लेखकने इसका वर्णन करना आवश्यक समझा।

लेमियामें डेमिट्रियसकी विशेष अनुरक्ति और उसका ठाटबाट देख कर उसकी और स्त्रियाँ ही नहीं बल्कि उसके मित्र भी उससे द्वेष करने लगे। एक बार डेमिट्रियसके दूतोंको लैसीमेक्सने अपने बदन परके शेरके पंजेके चिन्ह दिखलाये जिसके साथ वह सिकंदर द्वारा पिंजड़ेमें बन्द कर दिया गया था। इस पर दूतोंने मुसकुराते हुए कहा कि हमारे स्वामी भी चिन्हरहित नहीं हैं, वे भी अपनी गर्दन पर 'लेमिया' के चिन्ह दिखला सकते हैं जो खूँखार जानवरसे किसी तरह कम नहीं है। बड़े आश्चर्यकी बात है कि जिसने अवस्था अधिक होनेके कारण फीलाका पाणिग्रहण करनेमें इतनी आपत्ति की थी, वही लेमियाका, जिसकी अवस्था पहली भेंटके समय ही ढल चुकी थी, दास बन गया। एक बार सायंकालके भोजनके समय लेमिया वेणु बजा रही थी। डेमिट्रियसने डीमोसे पूछा "उसके बारेमें तुम्हारा क्या ख्याल है?" डीमोने कहा कि मैं उसे बुड्ढी समझती हूँ। इसी तरह एक बार डेमिट्रियसके पास बहुतसी मिठाई आयी तो उसने कहा कि 'देखो, मेरे लिये लेमिया कैसे कैसे उपहार भेजती है।' डीमोने उत्तर दिया 'यदि आप मेरी वृद्धा माताको अपनी उपपत्नी बना लें तो वह और भी बढ़िया चीजें भेज सकती है।'

अब इस जीवनीका दुःखान्त आरम्भ होता है। अनेक राजाओंने आपसमें एक गुट बना कर एक साथ ही ऐंटिगोनसपर आक्रमण करनेकी तैयारी की। डेमिट्रियसको अपने पिताकी सहायताके लिए यूनान छोड़ना पड़ा। उसे अपनी अवस्थासे बढ़ कर कार्य करते देख कर डेमिट्रियसका उत्साह और भी बढ़ गया। यदि ऐंटिगोनसने छोटी-मोटी रिआयतें कर दी होतीं और अपनी साम्राज्य लिप्सा कुछ मर्यादित रखी होती तो सिकन्दरके उत्तराधिकारियोंमें उसका ही नहीं, उसके पुत्रका भी प्राधान्य अक्षुण्ण

बना रहता। पर वह मदसे चूर हो रहा था और उसकी बातें तथा कार्य भी ऐसे अपमानजनक होते थे कि तरुण एवं शक्तिशाली नरेश उन्हें सह नहीं सकते थे। यही बातें उसके विरुद्ध गुट कायम करनेमें प्रेरक हुईं। गुटका समाचार मिलने पर वह दर्पसे बोल उठा—"मैं इस गुट और सम्मिलित सेनाको उसी प्रकार भंग कर तितर बितर कर दूँगा जिस प्रकार पक्षियोंका झुंड किसी बालकके पत्थर फेंकने या ताली बजाने पर उड़ जाता है। वह सत्तर हज़ार पैदल, बारह हज़ार अश्वदल और ७५ हाथियोंके साथ युद्ध-स्थलमें प्रस्तुत हुआ। गुटकी सेनामें चौंसठ हज़ार पैदल, साढ़े बारह हज़ार घुड़सवार, चार सौ हाथी और एक सौ बीस रथ थे। जब दोनों सेनाएँ एक दूसरेको दृष्टिगोचर हुईं तो ऐंटिगोनसके भावमें स्पष्ट परिवर्तन देख पड़ने लगा। अन्य युद्धोंमें तो वह बराबर प्रसन्न, दृढ़संकल्प तथा शत्रुओंकी ओरसे बेफिक्र देख पड़ता था और साथ ही शत्रुओंके प्रति हँसीकी बातें भी किया करता था, पर इस बार वह प्रायः सचिन्त एवं मौन दिखाई देता था। एक दिन उसने सेनाके समक्ष अपने पुत्रको प्रस्तुत कर उसे अपना उत्तराधिकारी भी नियत किया। उसने डेमिट्रियसको अलग अपने खेमेमें ले जाकर बहुत देरतक उससे बातचीत की। यह सबसे बढ़ कर असाधारण बात थी क्योंकि वह अपने पुत्र तकको एकान्तमें ले जाकर अपने विचार उसपर प्रकट नहीं करता था। स्वयं जो कुछ निश्चय कर लेता था, उसीके अनुसार लोगोंको कार्य करनेका आदेश देता था। कहा जाता है कि एक बार डेमिट्रियसके यह पूछने पर कि यहाँसे पड़ाव कब उठेगा, उसने क्रुद्ध होकर जवाब दिया "क्या तुमको इस बातकी आशंका है कि सारी सेनामें केवल तुम्हींको कूचके नगाड़ेका शब्द नहीं सुन पड़ेगा?"

अपशकुनोंके कारण उनका उत्साह और भी भंग होता जा रहा था। डेमिट्रियसने एक स्वप्न देखा, जिसमें सिकन्दरने शानदार फौजी ठाठमें आकर उससे पूछा कि भावी युद्धके समय कौनसा शब्द प्रयुक्त होगा।

उसमें डेमिट्रियसके 'वृहस्पति' तथा 'विजय' कहने पर सिकन्दरने कहा—'तब मैं तुम्हारे शत्रुओंके पास जा रहा हूँ, वे मेरा स्वागत करनेको तैयार हैं।' युद्धके लिए सेनाके व्यूहबद्ध हो जाने पर ऐंटिगोनस अपने खेमेसे निकलने लगा तो किसी चीज़से ठोकर खाकर गिर पड़ा जिससे सुंहपर गहरी चोट आयी। सँभलने पर उसने ऊपर हाथ उठा कर देवताओंसे प्रार्थना की कि या तो मुझे विजय प्रदान कीजिए अथवा पराजयका ज्ञान होनेके पहले ही मृत्यु दीजिए। मुठभेड़ शुरू हो जाने पर डेमिट्रियसने, जिसके साथ सर्वोत्कृष्ट अश्वदल था, सेल्यूकसके पुत्र ऐंटिओकस-पर भीषण आक्रमण किया और सेनाके पीठ फेरने पर उसका पीछा भी करने लगा। विजयकी उमङ्गमें वह पीछा करते हुए इतनी दूर निकल गया कि लौट कर पैदल सेनाकी सहायता नहीं कर सका, क्योंकि शत्रुओंने हाथियोंको बीचमें रख कर उसका मार्ग रोक दिया। यही ऐंटिगोनसकी पराजयका मुख्य कारण भी हुआ। सेल्यूकस ऐंटिगोनसकी अश्वदलसे अरक्षित पैदल सेनापर आक्रमण न कर इस प्रकार अपनी स्थिति बनाये रहा जिसमें उसे मालूम हो कि अब आक्रमण हो ही रहा है। इसमें उसने दो लाभ देखे—एक तो यह कि इससे सेना भयभीत हो जायगी और दूसरा यह कि जो लोग शत्रुपक्षसे पृथक् होना चाहेंगे उनके लिए इधर आनेका मौका मिल जायगा। इसका फल भी सेल्यूकसकी आशाके अनुकूल ही हुआ। बहुतसे सैनिक तो उसके पक्षमें आ गये और शेष भाग खड़े हुए। पर वृद्ध नरेश ऐंटिगोनस अपने स्थानसे नहीं हटा। जब उसके एक पार्श्ववर्ती मनुष्यने कहा कि देखिए आपके ऊपर आक्रमण करनेके लिए शत्रुओंका दल आ रहा है, तो उसने कहा कि 'वे और करेंगे क्या? डेमिट्रियस भी मेरी सहायताके लिए आता ही होगा।" इसी आशासे प्रेरित होकर वह अन्ततक अपने पुत्रके लिए चारों ओर दृष्टि दौड़ाते हुए डटा रहा। जब कई आदमियोंके वार एक ही साथ होने लगे तो वह और अधिक न सँभल सका। उसके अन्य साथी तो भी दो

ग्यारह हो गये; सिर्फ लारीसा-निवासी थोरैक्स ही उसके शवके पास रह गया।

अब विजयी नरेशोंने ऐंटिगोनसके साम्राज्यको कई हिस्सोंमें विभक्त कर अपने अपने राज्यमें मिला लिया। डेमिट्रियस पाँच हजार पैदल और चार हजार घुड़सवारोंके साथ तेज़ीसे भाग निकला। एफेसस पहुँचने पर लोगोंका ऐसा अनुमान था कि वह अर्थाभावकी स्थितिमें मन्दिरका कोप हस्तगत कर लेगा, पर उसने जान बूझ कर इसे छोड़ दिया और इस आशंकासे कि कहीं सैनिक लालचमें आकर ऐसा कर बैठें, वह फौरन पोतारूढ़ हो यूनानकी तरफ चल दिया। उसे सबसे अधिक आशा अथेंज़की ओरसे थी क्योंकि उसने अपनी स्त्री, पोत तथा कोप अथेंज़वालोंके ही साथ छोड़ दिया था और उसे दृढ़विश्वास था कि अथेंज़वालोंके प्रेमसे बढ़ कर मेरे लिए और कोई सुरक्षित आश्रय-स्थान नहीं है। सिक्कडीज़ पहुँचने पर उसे अथेंज़के दूत मिले। इन्होंने प्रार्थना कर कहा "आप नगरमें प्रवेश करनेका विचार न करें क्योंकि नागरिकोंने यह निर्णय किया है कि हम किसी भी नरेशको नगर-प्राचीरके अन्दर न आने देंगे; डीडेमियाको उन्होंने उपयुक्त सम्मानके साथ मेगारा भेज दिया है।" अबतक डेमिट्रियस अपने दुःखोंको धैर्य और शान्तिपूर्वक सहन करता रहा था, पर दूतोंकी बात सुन कर वह क्रोध और आश्चर्यके मारे आपेसे बाहर हो गया, आशा और विश्वासके प्रतिकूल उनकी मैत्रीको इस संकटके समय निस्तत्त्व एवं कृत्रिम प्रमाणित होते हुए देख कर उसका हृदय विदीर्ण हो गया। राजा या शासकके प्रति जनताका अनुराग है या नहीं, इसका निश्चय उसके अत्यधिक सम्मान-प्रदर्शनसे नहीं किया जा सकता, क्योंकि भयकी हालतमें भी इस प्रकारका सम्मान प्रदर्शित किया जा सकता है। जनताका यह व्यवहार भय और प्रेम दोनोंका परिणामभूत हो सकता है, इसलिए विवेकशील नरेश जनताद्वारा निर्मित अपनी प्रतिमाओं तथा चित्रों अथवा देवतुल्य

उपाधियोंकी ओर विशेष ध्यान न देकर अपने ही आचरण और कार्योंकी ओर ध्यान देते हैं और इन्हींके आधारपर उन सम्मानोंके वास्तविक या केवल आवश्यकतासे प्रेरित होनेका निर्णय करते हैं। यह प्रायः देखा जाता है कि जो नरेश प्रजाके अनिच्छुक मनकी भेंट—अत्यधिक सम्मान स्वीकार करता है, उससे वह बहुत अधिक घृणा करती है।

अथेंसवालोंके व्यवहारसे डेमिट्रियसके दिलको गहरी चोट पहुँची, पर वह ऐसी परिस्थितिमें न था कि इसका बदला ले सके। उसने मीठे शब्दोंमें ही उनपर कुछ आक्षेप करते हुए अपने पोतोंको मँगवा भेजा। पोतोंके पहुँचने पर वह इसथ्मसकी ओर गया, पर वहाँकी हालत और भी गयी बीती थी—नगरोंसे उसकी सेना हटा दी गयी थी और उसके बहुतसे सैनिक शत्रुओंके पक्षमें मिलते जा रहे थे। पाइरसको यूनानमें छोड़ कर वह करसोनीसस चला गया। वहाँ उसने लिसीमेकसके स्थानोंको लूट कर अपनी सेना बढ़ायी जिससे वह कुछ बातमें लायक हो गयी। और नरेशोंने इस सम्बन्धमें उसके साथ कुछ छेड़छाड़ नहीं की क्योंकि लिसीमेकसके प्रति किसीका प्रेम नहीं था, उसकी शक्तिके ही कारण लोग उससे भय खाते थे।

इसके कुछ ही दिन पश्चात् सेल्यूकसने डेमिट्रियसकी फीलासे उत्पन्न पुत्री स्ट्रैटोनाइसीके साथ विवाह करनेका प्रस्ताव उसके पास भेजा। सेल्यूकसके एँटिओकस नामक एक पुत्र भी था जो फारसी महिला अपामा से उत्पन्न हुआ था, पर उसका राज्य इतना विशाल था कि वह एका-धिक उत्तराधिकारियोंके लिए भी पर्याप्त था। डेमिट्रियसके साथ सम्बन्ध-स्थापनका एक और प्रबल कारण यह था कि लिसीमेकसने टालेमीकी एक कन्याका और उसके पुत्र ऐगाथोक्लीज़ने दूसरी कन्याका पाणिग्रहण किया था। डेमिट्रियसने इसे भाग्योदयका साधन समझ कर अपनी पुत्री और सारे बेडेके साथ सीरियाके लिए शीघ्र ही प्रस्थान कर दिया। इस समुद्रयात्रामें उसे कई बार तटवर्ती स्थानोंमें उतरना पड़ा।

वह सिलीशियाके एक भागमें भी ठहरा जो ऐंटिगोनसकी पराजयके बाद साम्राज्यका बटवारा होनेपर कैसेंडरके भाई प्लिसटार्कसके हिस्सेमें पड़ा था। उसने डेमिट्रियसका तटपर ठहरना अपने अधिकारमें हस्तक्षेप समझा और सामान्य शत्रु डेमिट्रियसके साथ, अन्यान्य नगरोंकी राय लिये बिना ही, अलग सन्धि करनेकी शिकायत करनेके लिए सेल्यूकसके पास स्वयं चला गया।

इसकी सूचना मिलने पर डेमिट्रियसने अवसर देख कर क्विण्डा नगर पर अचानक आक्रमण कर दिया और कोषके बचे हुए १२०० टैलेंट लेकर चलता हुआ। रोससमें सेल्यूकससे उसकी भेंट हुई। दोनों ओरसे साफ साफ, शाही तरीकेसे बातचीत होने लगी। पहले सेल्यूकसने अपने शिविरमें डेमिट्रियसको और फिर डेमिट्रियसने अपने पोतपर सेल्यूकसको दावत दी। बिना रक्षकों या शस्त्रोंके ही दोनों सभा-समितियों तथा मनोरंजन आदिकी जगहोंपर मिलने और एक दूसरेके यहाँ जाकर वार्तालाप करने लगे। अन्तमें सेल्यूकस डेमिट्रियससे विदा होकर स्ट्रैटोनाइसीके साथ ठाटबाटसे ऐण्टिअक पहुँचा। तबतक डेमिट्रियसने सिलीशियापर अधिकार कर फीलाको प्लिसटार्कसके आक्षेपोंका उत्तर देनेके निमित्त उसके भाई कैसेण्डरके पास भेज दिया। यहीं पर इसकी स्त्री डीडेमा उससे मिलनेके निमित्त यूनानसे आयी, पर थोड़े ही दिनोंके अनन्तर रोग-ग्रस्त हो कर काल-कवलित हो गयी। इसके कुछ ही काल पीछे सेल्यूकसके बीच-बिचावसे टालेमी और डेमिट्रियसमें समझौता हो गया और उसने टालेमीकी पुत्री टालेमेइससे विवाह करना भी स्वीकार कर लिया। अब तक तो सेल्यूकसकी ओरसे औचित्य और सम्मानपूर्ण व्यवहार होता रहा, पर शीघ्र ही उसने कुछ रुपये देकर डेमिट्रियससे सिलीशिया लेना चाहा। उसके इनकार करने पर वह क्रोधमें आकर टायर और साइडन लेनेका हठ करने लगा। उसका यह व्यवहार अन्याय्य और कठोर था। जिसका साम्राज्य सीरियन सागरसे भारततक फैला हुआ था, उसका दो

छोटेसे नगरोंके लिए अपने श्वसुरसे झगड़ना, जो दैवके भयंकर प्रकोपमें पड़ा हुआ था, नीचता और स्वेच्छाचारिताके सिवा और क्या हो सकता है। उसने अफलातूनके इस कथनको कि "धनी होनेका एक मात्र उपाय सम्पत्तिकी वृद्धि करना नहीं बल्कि इच्छाओंको घटाना है" चरितार्थ कर दिखाया, क्योंकि जो अधिकसे अधिक प्राप्त करनेकी चेष्टामें बराबर लगा रहता है वह बड़ीसे बड़ी सम्पत्तिका स्वामी होकर भी निर्धन ही बना रहेगा।

पर डेमिट्रियसने, जिसका उत्साह अभी कम नहीं हुआ था, बड़ी दृढ़ताके साथ कहला भेजा कि इप्सस जैसे हजार युद्धोंमें हार जाने पर भी मैं सेल्यूकसके सदृश जामाताकी कभी खुशामद न करूँगा और इसी सिद्धान्तके अनुसार उसने इन नगरोंकी रक्षाके लिए यथेष्ट प्रबन्ध भी किया। इसी समय उसे यह सूचना मिली कि अथेंज़वालोंमें दलबन्दी हो जानेके कारण लैकारीज़ने अपना अधिकार जमा लिया है। उसने सोचा कि अगर मैं इस समय एकाएक अथेंज़ पहुँच जाऊँ, तो नगरपर अनायास ही अधिकार हो जायगा। अपने विशाल बेड़ेके साथ वह समुद्र तो सकुशल पार कर गया पर एटिकाके तटके पाससे होकर जाते समय एक भयंकर तूफान आया जिसमें डेमिट्रियसके बहुतसे पोत सैनिकों समेत बह गये। उसने थोड़ेसे ही सैनिकोंके साथ युद्ध आरंभ कर दिया पर इससे कुछ होते जाते न देख कर दूसरा बेड़ा तैयार करनेका आदेश भेज दिया और तबतक अपने साथके सैनिकोंको लेकर पेलापनेससमें प्रविष्ट हो मेसेना नगरपर घेरा डाल दिया। इस आक्रमणमें उसकी जान ही खतरेमें पड़ गयी थी, क्योंकि इंजन द्वारा फेंका हुआ एक हथियार उसके जबड़ेको छेदता हुआ उसके मुँहमें चला गया था। चंगा हो जाने पर उसने कुछ विद्रोही नगरोंका दमन किया और इल्यूसिस तथा रैमनस पर अधिकार कर आसपासके स्थानोंको वीरान कर दिया। उसने गेहूँसे लदे हुए अथेंज़ जानेवाले एक पोतको पकड़ कर व्यापारी और नाविक दोनोंको

फाँसीपर लटका दिया जिससे और व्यापारी भी भयभीत हो गये, फल यह हुआ कि अर्थेंज़में भयंकर दुर्भिक्ष फैल गया; गेहूँके साथ और और चीज़ोंका भी अभाव ही था। एक बुशल नमकका मूल्य बढ़कर ४० ड्रैक्मा और चतुर्थांश बुशल गेहूँका तीन सौ ड्रैक्मा हो गया। अर्थेंज़वालों· की सहायताके लिए टालेमीने डेढ सौ पोत भेजे पर इन पोतोंसे उन्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा, क्योंकि उसी समय पेलापनेसस और साइप्रससे डेमिट्रियसके पास बहुतसे पोत आ जानेके कारण ये लंगर उठा कर चलते बने। स्वेच्छाचारी लैकारीज भी नगरको भाग्यके भरोसे छोड़ कर चुपकेसे भाग निकला।

यद्यपि अर्थेंज़वालोंने पहले यह निश्चय किया था कि जो व्यक्ति डेमिट्रियसके साथ सन्धि या समझौता करनेका नाम भी लेगा उसे प्राणदंड दिया जायगा, पर अब उन्होंने स्वयं डेमिट्रियसके पासका द्वार खोल कर उसके शिविरमें दूत भेजा। इसका कारण यह नहीं था कि वे डेमिट्रियसके अनुग्रहके आकांक्षी थे; बात यह थी कि वे अकालसे इस क़दर तबाह हो रहे थे कि उन्हें लाचार होकर ऐसा करना पड़ा। इस बीचमें बड़ी बड़ी भयंकर घटनाएँ घटित हुईं। कहा जाता है कि किसी घरमें पिता-पुत्र अपने जीवनसे निराश हो साथ ही बैठे हुए थे कि इतनेमें घरकी छतसे एक मरा चूहा गिरा। दोनों ही चूहेकी तरफ लपके और इसीके लिए आपसमें लड़ पड़े। एपीक्यूरस नामक दार्शनिकने थोड़ीसी मूँगपर अपने तथा अपने शिष्योंके प्राण बचाये जिन्हें वह कुछ दाने रोज़ गिनकर बाँटा करता था।

देशकी इसी स्थितिमें डेमिट्रियसने नगरमें प्रवेश कर सभाभवनमें नागरिकोंको एकत्र होनेकी घोषणा की। अपने सैनिकोंसे उसने रंगशालाके चारों ओर खड़ा कर दिया, रंगमंचके दोनों ओर अपने रक्षकोंको रख दिया और स्वयं पात्रोंके प्रवेश मार्गसे रंगमंचपर आ गया। पहले तो लोग उसे देख कर बहुत भयभीत हुए पर उसके कोमल स्वर और मृदु

नहीं हुआ। देमित्रियसने भी अपनी ओरसे उसको कोई मौक़ा नहीं दिया। स्वास्थ्य खराब होनेके कारण मद्यपान करनेमें असमर्थता प्रकट कर वह शीघ्र ही जलपान परसे उठ गया। दूसरे दिन वह वहाँसे विदा होनेकी तैयारी करने लगा। देमित्रियसने उससे कह दिया कि "एक ऐसा समाचार मिला है जिसके कारण लाचार होकर मुझे जाना पड़ रहा है। मैं इतने शीघ्र आपसे विदा हो रहा हूँ, इसके लिए आप क्षमा करेंगे। यदि अवकाश मिला तो मैं आपसे पुनः मिलूँगा।" अलेक्जेंडरको बड़ी खुशी हुई, सिर्फ इसी बातपर नहीं कि वह जा रहा है, बल्कि इस बातपर कि वह उसके किसी अपराधके कारण नहीं बल्कि स्वेच्छासे जा रहा है। उसने थेसली तक साथ चलनेका भी उससे अनुरोध किया। लारीसा पहुँचने पर दोनों ओरसे निमंत्रण आने जाने लगे पर दोनोंके मनमें एक दूसरेके प्रति कपट-भाव भरा हुआ था। इस सौजन्यपूर्ण व्यवहारका फल यह हुआ कि अलेक्जेंडर डेमित्रियसके जालमें फँस गया। अलेक्जेंडर रक्षकोंके साथ इस आशंकासे नहीं जाया करता था कि डेमित्रियस भी इसी प्रकारकी साव-धानीसे काम लेने लगेगा। जो दाव वह अपने शत्रुपर लगा रहा था, वह स्वयं उसीपर लग गया। एक दिन वह डेमित्रियसके यहाँ दावतमें शामिल हुआ। डेमित्रियस बीचमें ही उठ गया, इससे अलेक्जेण्डर भी भय-भीत होकर उसके साथ उठ कर चला। द्वारपर पहुँचने पर डेमित्रियस प्रहरियोंसे सिर्फ इतना ही कह कर कि मेरे पीछे आनेवालेको यमलोक पहुँचा दो, बाहर चला गया। प्रहरियोंने अलेक्जेंडरको तथा उसके उन मित्रोंको जिन्होंने उसे सहायता पहुँचानेकी कोशिश की, टुकड़े टुकड़े कर डाला। इनमेंसे एकने मरते समय कहा 'तुम लोगोंने हम लोगोंसे एक दिन पहले ही अपना काम पूरा कर लिया।'

प्रकाश डालना चाहता है, वे कुछ स्थिर हुए और सम्मानपूर्वक उसका स्वागत करनेको तैयार हुए। उसके आने पर बहुत कुछ कहने सुननेकी आवश्यकता नहीं प्रतीत हुई। मातृहत्याके कारण एंटीपेटरसे वे घृणा करते थे, और दूसरा कोई योग्य शासक उन्हें नजर नहीं आ रहा था, ऐसी हालतमें डेमिट्रियसको ही 'नरेश' घोषित करनेका निश्चय कर वे उसे मकदूनिया ले गये। जो मकदूनियावाले घरपर ही थे वे भी इस परिवर्तनके विरुद्ध न थे, क्योंकि कैसेण्डरने सिकन्दरके परिवारके साथ जो दुर्व्यवहार किया था उसका स्मरण उनको ज्योंका त्यों बना हुआ था। प्रथम एंटीपेटरके सुशासनके प्रति उनके हृदयमें जो अच्छे भाव अवशिष्ट थे, वे भी डेमिट्रियसके हित साधक हुए क्योंकि उसकी स्त्री फीला एंटीपेटरकी ही पुत्री थी और इससे उत्पन्न उसका लड़का, जो अब अपने पिताके साथ युद्ध भूमिमें कार्य करता था, इस राज्यका न्याय्य उत्तराधिकारी था।

इसी खुशीके बीचमें उसे समाचार मिला कि टालेमीने उसकी माता तथा बच्चोंको उपहार तथा सम्मान देकर बिदा कर दिया है और उसकी पुत्री स्ट्रैटोनाइसीका, जिसका विवाह पहले सेल्यूकससे हुआ था, सेल्यूकसके पुत्र एंटिओकसके साथ पुनर्विवाह हुआ है और वह उत्तर एशियाकी रानी घोषित की गयी है।

एंटिओकस, स्ट्रैटोनाइसीपर, जिसे सेल्यूकससे एक पुत्र भी उत्पन्न हो चुका था, आसक्त हो गया था। पहले तो उसने इस वासनापर विजय पानेकी चेष्टा की, पर इसमें उसे सफलता नहीं मिली। अन्तमें यह सोचकर कि मेरी इच्छा नीति विरुद्ध तो है ही और किसी प्रकार पूरी भी होनेवाली नहीं है, उसने बीमारीके बहाने खाना पीना छोड़ कर अपना अन्त करनेकी ठान ली। उसका वैद्य इरेसिस्ट्रेटस फौरन ताड़ गया कि यह शारीरिक रोग नहीं बल्कि प्रणयका रोग है। पर इस प्रणयका पात्र कौन है, इसका पता लगाना कठिन था। वह रोगग्रस्त राजकुमारके

परंतारा कोई भाव न देख कर उनका चित्त स्थिर हुआ। उसने बड़े कोमल शब्दोंमें उनकी कुछ भर्त्सना की, और पुनः उनके प्रति अनुग्रह दिखलाते हुए बाकी मात्रामें खाद्य पदार्थ देकर उनकी इच्छाके अनुकूल ही शासक नियुक्त कर दिये। डेमोक्लीज नामक एथन्सके लोगोंको तरह तरहसे गुणगान करते हुए और मौखिक कृतज्ञताके बदले कुछ कार्य कर दिखानेके लिए उत्सुक देखकर यह प्रस्ताव किया कि पाइरियस और म्युनीचिया डेमिट्रियस नरेशको समर्पित कर दिये जायँ। यह प्रस्ताव स्वीकृत हो जाने पर डेमिट्रियसने अपनी ओरसे वहाँ एक और सेना रख दी जिसमें जनता कोई ऐसा बखेड़ा न पैदा कर दे जिससे उसे और कार्योंसे विरत होना पड़े।

एथेंसपर अधिकार होनेके बाद शीघ्र ही डेमिट्रियसने लैसीडीमनकी तरफ ध्यान दिया। मैनटिनियाके पास वहाँके राजा आर्कीडेमससे युद्ध हुआ जिसमें विजय-लक्ष्मी डेमिट्रियसपर ही प्रसन्न हुई। इसके बाद वह लैकोनियामें प्रविष्ट हुआ। स्पार्टाके पास दूसरे युद्धमें भी आर्कीडेमस ही पराजित हुआ, इसके दो सौ सैनिक खेत रहे और पाँच सौ रणबन्दी बनाये गये। एक प्रकारसे नगर उसके अधिकारमें आ ही चुका था जिसे अबतक किसीने नहीं लिया था, पर भाग्यका जैसा उलट फेर इसे देखनेको मिला वैसा शायद ही किसी नरेशको मिला हो। कभी तो भाग्य इसे अभ्युदयके शिखरपर चढ़ा देता था और कभी अवनतिके गड्ढेमें ढकेल देता था, कभी इसे गौरवान्वित कर देता और कभी दयनीय दशामें लाकर रख देता था। उसने अपने घोरतम सङ्कटके समय दैवको एस्किलसके शब्दोंमें इस प्रकार सम्बोधित किया था—

गिरिपर चढ़ाते, गर्तमें ही फिर गिरानेके लिए।

इसी समय, जब कि उसे चारों ओरसे अधिकार और राज्य विस्तार-की आशा बँध रही थी, उसे सूचना मिली कि लिसीमेकसने तुम्हारे एशियाके समस्त नगरोंपर अधिकार जमा लिया है, टालेमीने सलामिसके

अतिरिक्त सारा साइप्रस कब्जेमें कर लिया है और सलामिसमें तुम्हारी माता तथा बच्चे बेतरह घिरे हुए पड़े हैं। यद्यपि एक ओर तो भाग्यने यह भयंकर समाचार सुनवा कर उसे लैसीडीमनसे पृथक् किया, किन्तु साथ ही दूसरी ओर उसके लिए अभ्युदयका द्वार भी उन्मुक्त कर दिया। बात यह हुई कि कैसेंडरके मरने पर उसका बड़ा लड़का फिलिप गद्दीपर बैठा, पर थोड़े ही दिनोंके बाद यह भी काल-कवलित हो गया। उत्तराधिकारका प्रश्न लेकर दोनों छोटे भाई एक दूसरेके विरोधी हो गये। एँटीपेटर नामक एक भाईने अपनी माताको मार डाला, इस पर दूसरे भाई अलेक्जेंडरने यूनानी शासकोंको सहायताके लिए बुलाया। पाइरसने सबसे प्रथम पहुँच कर अपनी सहायताके पुरस्कारमें मकदूनियाका एक वृहत् खंड ले लिया। खतरनाक पड़ोसी बन जानेके कारण अलेक्जेंडरको उसकी ओरसे शंका होने लगी। डेमिट्रियसकी शक्ति और ख्यातिसे वह भली भाँति परिचित था। कहीं पाइरससे भी अधिक भयंकर शत्रु सिरपर आकर बैठ न जाय, इस खयालसे वह उससे रास्तेमें ही मिलनेके लिए डायम चला गया। अभिवादन और धन्यवाद आदिके अनन्तर अलेक्जेंडरने उसे यह सूचित करते हुए कि अब आपकी सहायताकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी, भोजन करनेके लिए अपने यहाँ निमंत्रित किया। वे पहलेसे ही एक दूसरेको सन्देहकी दृष्टिसे देखते थे। डेमिट्रियस दावतमें शामिल होनेके लिए चल चुका था; मार्गमें किसीने आकर उससे कह दिया कि भोज करते समय ही तुम मार डाले जाओगे। डेमिट्रियसने इससे विचलित न होकर केवल अपनी गति कुछ मन्द कर दी। सेनानायकोंको सेना प्रस्तुत रखनेका आदेश भेज कर वह अपने साथ केवल अंगरक्षकों आदिको, जिनकी संख्या अलेक्जेंडरके आदमियोंसे अधिक ही थी, लेकर चल दिया और उसने उनको आज्ञा दे दी कि जबतक मैं दस्तरख्वानसे न उठूँ तबतक सब लोग उसी कमरेमें सतर्क होकर डटे रहें। अलेक्जेंडरके आदमियोंको डेमिट्रियसके अंगरक्षकोंकी अधिक संख्याके कारण कुछ करनेका साहस

नहीं हुआ। डेमिट्रियसने भी अपनी ओरसे उसको कोई मौक़ा नहीं दिया। स्वास्थ्य ख़राब होनेके कारण मद्यपान करनेमें असमर्थता प्रकट कर वह शीघ्र ही दस्तरख्वान परसे उठ गया। दूसरे दिन वह वहाँसे विदा होनेकी तैयारी करने लगा। डेमिट्रियसने उससे कह दिया कि "एक ऐसा समाचार मिला है जिसके कारण लाचार होकर मुझे जाना पड़ रहा है। मैं इतने शीघ्र आपसे विदा हो रहा हूँ, इसके लिए आप क्षमा करेंगे। यदि अवकाश मिला तो मैं आपसे पुनः मिलूंगा।" अलेक्ज़ेंडरको बड़ी खुशी हुई, सिर्फ़ इसी बातपर नहीं कि वह जा रहा है, बल्कि इस बातपर कि वह उसके किसी अपराधके कारण नहीं बल्कि स्वेच्छासे जा रहा है। उसने थेसली तक साथ चलनेका भी उससे अनुरोध किया। लारीसा पहुँचने पर दोनों ओरसे निमंत्रण आने जाने लगे पर दोनोंके मनमें एक दूसरेके प्रति कपट-भाव भरा हुआ था। इस सौजन्यपूर्ण व्यवहारका फल यह हुआ कि अलेक्ज़ेंडर डेमिट्रियसके जालमें फँस गया। अलेक्ज़ेंडर रक्षकोंके साथ इस आशंकासे नहीं जाया करता था कि डेमिट्रियस भी इसी प्रकारकी साव-धानीसे काम लेने लगेगा। जो दाव वह अपने शत्रुपर लगा रहा था, वह स्वयं उसीपर लग गया। एक दिन वह डेमिट्रियसके यहाँ दावतमें शामिल हुआ। डेमिट्रियस बीचमें ही उठ गया, इससे अलेक्ज़ेण्डर भी भय-भीत होकर उसके साथ उठ कर चला। द्वारपर पहुँचने पर डेमिट्रियस प्रहरियोंसे सिर्फ इतना ही कह कर कि मेरे पीछे आनेवालेको यमलोक पहुँचा दो, बाहर चला गया। प्रहरियोंने अलेक्ज़ेंडरको तथा उसके उन मित्रोंको जिन्होंने उसे सहायता पहुँचानेकी कोशिश की, टुकड़े टुकड़े कर डाला। इनमेंसे एकने मरते समय कहा 'तुम लोगोंने हम लोगोंसे एक दिन पहले ही अपना काम पूरा कर लिया।'

रातको चारों ओर आतंक और घबराहट फैल गयी। प्रातःकाल होने-पर मकदूनियावालोंको डेमिट्रियसके आक्रमणकी आशंका थी, किन्तु आक्र-मणके बदले यह समाचार पाकर कि वह उनसे मिलकर अपने कार्योंपर

प्रकाश डालना चाहता है, वे कुछ स्थिर हुए और सम्मानपूर्वक उसका स्वागत करनेको तैयार हुए। उसके आने पर बहुत कुछ कहने सुननेकी आवश्यकता नहीं प्रतीत हुई। मातृहत्याके कारण एँटीपेटरसे वे घृणा करते थे, और दूसरा कोई योग्य शासक उन्हें नजर नहीं आ रहा था, ऐसी हालतमें डेमिट्रियसको ही 'नरेश' घोषित करनेका निश्चय कर वे उसे मकदूनिया ले गये। जो मकदूनियावाले घरपर ही थे वे भी इस परिवर्तनके विरुद्ध न थे, क्योंकि केसेण्डरने सिकन्दरके परिवारके साथ जो दुर्व्यवहार किया था उसका स्मरण उनको ज्योंका त्यों बना हुआ था। प्रथम एँटीपेटरके सुशासनके प्रति उनके हृदयमें जो अच्छे भाव अवशिष्ट थे, वे भी डेमिट्रियसके हित साधक हुए क्योंकि उसकी स्त्री फीला एँटीपेटरकी ही पुत्री थी और इससे उत्पन्न उसका लड़का, जो अब अपने पिताके साथ युद्ध भूमिमें कार्य करता था, इस राज्यका न्याय्य उत्तराधिकारी था।

इसी खुशीके बीचमें उसे समाचार मिला कि टालेमीने उसकी माता तथा बच्चोंको उपहार तथा सम्मान देकर बिदा कर दिया है और उसकी पुत्री स्ट्रैटोनाइसीका, जिसका विवाह पहले सेल्यूकससे हुआ था, सेल्यूकसके पुत्र एँटिओक्सके साथ पुनर्विवाह हुआ है और वह उत्तर एशियाकी रानी घोषित की गयी है।

एँटिओकस, स्ट्रैटोनाइसीपर, जिसे सेल्यूकससे एक पुत्र भी उत्पन्न हो चुका था, आसक्त हो गया था। पहले तो उसने इस वासनापर विजय पानेकी चेष्टा की, पर इसमें उसे सफलता नहीं मिली। अन्तमें यह सोचकर कि मेरी इच्छा नीति विरुद्ध तो है ही और किसी प्रकार पूरी भी होनेवाली नहीं है, उसने बीमारीके बहाने खाना पीना छोड़ कर अपना अन्त करनेकी ठान ली। उसका वैद्य इरैसिस्ट्रेटस फौरन ताड़ गया कि यह शारीरिक रोग नहीं बल्कि प्रणयका रोग है। पर इस प्रणयका पात्र कौन है, इसका पता लगाना कठिन था। वह रोगग्रस्त राजकुमारके

कमरेमें दिन भर ठहरा करता था और जब कोई सुन्दर स्त्री या पुरुष उसे देखने आता तो वह यह देखता रहता था कि उसके आनेसे एंटिओकसके मुखमंडलपर कोई परिवर्तन देख पड़ता है या नहीं, क्योंकि इस प्रकारके परिवर्तन आन्तरिक भावोंके द्योतक होते हैं। उसने देखा कि और किसी रमणीके आने पर तो नहीं पर स्ट्रेटोनाइसीके पुत्रार्थ या अपने पति सेल्यूकसके साथ आने पर उसकी आवाज लड़खड़ाने लगती है, उसका मुखमंडल खिल उठता है, उसके तृषित नेत्र औरोंकी दृष्टि बचा कर उसके सौन्दर्यामृतका पान करने लगते हैं, एकाएक सारा शरीर प्रस्वेदित हो जाता है, उसकी नाड़ी विषम गतिसे चलने लगती है और आवेग इतना बढ़ जाता है कि वह मूर्छित होकर गिर पड़ता है।

इन लक्षणोंको देखकर एवं सोच विचारके बाद वह इसी परिणामपर पहुँचा कि यदि राजकुमारका अभिलषित पदार्थ स्ट्रेटोनाइसीके अतिरिक्त और कुछ होता तो वह अपनी जान देनेका हठ न कर उसे प्रकट कर देता। पर कठिनाई तो यह थी कि यह बात सेल्यूकसपर प्रकट कैसे की जाय। पुत्रके प्रति सेल्यूकसके प्रगाढ़ प्रेमका विचार करते हुए उसने इसे प्रकट करनेकी हिम्मत बाँध ली। एक दिन अवसर देख कर उसने सेल्यूकससे कहा—"यह प्रणयका रोग है और यह प्रणय इस प्रकारका है कि इसे पूरा करना या निवारण करना सर्वथा असंभव है।" नरेशने आश्चर्यके साथ पूछा "असंभव क्यों?" वैद्यने उत्तर दिया कि वह मेरी स्त्रीपर आसक्त है। सेल्यूकसने कहा "आश्चर्य! तो क्या हमारा मित्र इरेसिस्ट्रेटस हमारे पुत्र और एक मात्र उत्तराधिकारीकी जीवन-रक्षाके लिए अपनी स्त्रीका त्याग न कर सकेगा?" वैद्यने उत्तर दिया "आप तो राजकुमारके पिता ही हैं, पर आप भी ऐसा नहीं कर सकते। मान लीजिए, राजकुमार स्ट्रेटोनाइसीपर आसक्त हो जाय, तो क्या आप पिता होकर भी ऐसा कार्य करना स्वीकार कर सकेंगे जैसा आप मुझे करनेको कह रहे हैं?" सेल्यूकसने उत्तर दिया 'यदि ईश्वर या मनुष्य कोई भी उसकी आसक्ति तुम्हारी स्त्री परसे

टा कर मेरी खीपर कर देता तो मुझे असीम आनन्द होता। यदि ऐंटि-ओकसकी जीवन रक्षामें स्ट्रैटोनाइसी ही नहीं, मुझे अपना सारा साम्राज्य भी दे देना पड़े, तो मैं इसके लिए तैयार हूँ।" उसने ये शब्द आँसू पोंछते हुए बड़े आवेशमें आकर कहे। वैद्यने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा यदि तुम्हारा विचार ऐसा है तो इरैसिस्ट्रेटसकी कोई आवश्यकता नहीं है। तुम्हीं, जो कि पिता, पति और नरेश हो, अपने परिवारके लिए सर्वोत्तम वैद्य हो।' सेल्यूकसने शीघ्र ही जन सभाकी एक बैठक की और सबसे सम्बोधित करते हुए कहा 'यह मेरी इच्छा है कि ऐंटिओक्सका विवाह स्ट्रैटोनाइसीके साथ कर दिया जाय और ऐंटिओकस उत्तर एशिया-का राजा तथा स्ट्रैटोनाइसी वहाँकी रानी घोषित कर दी जाय। मेरा विश्वास है कि ऐंटिओक्स, जो मेरा आज्ञाकारी पुत्र है, इससे कभी इनकार न करेगा और यदि, प्रथा न होनेके कारण, यह बात रानीको अस्वीकार हो तो मुझे आशा है कि उसके मित्र उसे इस बातपर विचार करनेके लिए राजी करेंगे कि जो बात राजाको अङ्गीकार और राज्यके लिए हितकारी है, वह न्याय्य होनेके साथ साथ सम्मान्य भी है।' कहा जाता है, इसी प्रकार ये दोनों—ऐंटिओकस और स्ट्रैटोनाइसी—परस्पर विवाह-सूत्रमें आबद्ध हुए।

अब हम पुन डेमिट्रियसकी ओर आते हैं। मक्दूनियापर अधिकार हो जाने पर उसने शीघ्र ही थेसलीपर भी अधिकार प्राप्त कर लिया। पेलापनेससके अधिकांशपर तथा डमरूमध्य (इस्टमस) के इस पार मेगारा और अथेंज नगरपर उसका अधिकार पहलेसे ही था, इसलिए अब उसने बीओशियन लोगोंका दमन करना चाहा। पहले इन लोगोंने उचित शर्तोंपर समझौता करनेका प्रस्ताव किया, किन्तु इसी समय सहायताके लिए क्रियोनिमस नामक स्पार्टनके पहुँच जाने पर वहाँके प्रमुख व्यक्ति पाइसिसने सामना करनेका बढ़ावा दिया जिससे समझौतेकी बात समाप्त हो गयी। पर डेमिट्रियसने घेरा डाल कर अपने यन्त्रोंको नगर प्राचीरमें ज्यों ही भिड़ाया त्यों ही क्रियोनिमस भयभीत होकर चुपकेसे चल

क्यों परेशान हो रहे हो? क्या ये मृत सैनिक भी तुम्हारे पास रसदकी भाँति लेकर पहुँचेंगे?' सैनिकोंको यह दिखलानेके लिए कि मुझे अपनी जान तुम लोगोंकी जानसे अधिक प्यारी नहीं है, ऐंटिगोनस खतरेकी जगहपर उनके साथ चला गया भालेके आघातसे उसकी गर्दन इस तरह जख्मी हो गयी कि उसकी जान ही खतरेमें पड़ गयी। इतना होने पर भी घेरा जारी रहा और अन्तमें नगरपर अधिकार हो गया। डेमित्रियसके नगरमें प्रवेश करने पर लोगोंको आशंका थी कि वह बहुत अधिक दंड देगा पर उसने सिर्फ तेरहको प्राणदंड और इससे कुछ ही अधिक लोगोंको देश-निर्वासनका दंड देकर शेषको क्षमा कर दिया। इस प्रकार थीब्ज़ नगर पुनः निर्माण होनेके समयसे दस वर्षके भीतर दो बार अधिकारमें लाया गया।

इसके बाद शीघ्र ही पाइथियन अपोलोके उत्सवका दिन आ गया। ईटोलियन लोगोंने डेल्फी जानेका मार्ग रोक दिया था, इसलिए डेमित्रियसने अथेंज़में ही उत्सव मनाया। इसके समर्थनमें उसने यह दलील पेश की कि अपोलो अथीनियन जातिके प्रवर्तक और पैतृक देव हैं, इसलिए उनकी पूजाका उपयुक्त स्थान भी अथेंज़ ही हो सकता है।

वहाँसे डेमित्रियस मकदूनिया चला गया। स्वयं अपने ही स्वभावकी अस्थिरतासे नहीं बल्कि यह देख कर कि मकदूनियावाले प्रायः युद्धमें तो आज्ञानुवर्ती होते हैं किन्तु शान्तिके समय षड्यंत्र किया करते हैं, उसने ईटोलियन लोगोंके विरुद्ध यात्रा कर दी। देशको विध्वस्त कर विजयका कार्य पूरा करनेके लिए उसने एक अच्छी सेनाके साथ पांटाकसको वहाँ रख दिया और शेष सेनाके साथ पाइरसका मुकाबला करनेके लिए आगे बढ़ा। पाइरस भी इसका सामना करनेके लिए चल पड़ा था, पर संयोगवश विभिन्न मार्ग ग्रहण करनेके कारण दोनों सेनाएँ परस्पर नहीं मिलीं। उधर डेमित्रियसने ईपाइरसमें प्रवेश कर सारे प्रदेशको वीरान कर डाला, इधर पाइरसने पांटाकसपर आक्रमण कर दिया। युद्धमें दोनों नायकोंने एक दूसरेको आहत किया, पर विजयलक्ष्मी पाइरसपर ही

दिया। बीओशियन लोगोंने अपनेको परिस्थित देख कर आत्मसमर्पण कर दिया। डेमिट्रियसने इन नगरोंपर सेना नियुक्त कर एक बड़ी रकम वसूल की और हाइरोनिमसको बीओशियाका शासक एवं सेनाध्यक्ष नियुक्त कर दिया। विजय प्राप्त करने पर उसने लोगों—विशेष कर पाइसिस—के साथ नरमीसे बर्ताव किया। उसने उसे बन्दी बना कर भी कोई क्षति नहीं पहुँचायी, बल्कि शिष्टता और नम्रतापूर्वक बर्ताव करते हुए उसे थेस्पिईका प्रधान मजिस्ट्रेट भी बना दिया। इसके कुछ ही समय बाद लिसीमेकसको ड्रोमीचीटीजने बन्दी कर लिया। थ्रेसकी गद्दी खाली समझ कर उसपर अधिकार करनेकी आशासे डेमिट्रियस फौरन उस ओर चल पड़ा। इसपर इधर बीओशियन लोगोंने विद्रोह कर दिया और उधर यह समाचार आया कि लिसीमेकस पुनः स्वतन्त्र हो गया। क्रुद्ध होकर डेमिट्रियस लौट पड़ा और बीओशियन लोगोंको अपने पुत्र ऐंटिगोनस द्वारा पराजित देख कर उसने थीब्स पर घेरा डाल दिया। उधर पाइरस थेसलीमें घुस कर थर्मोपाइलीतक बढ़ आया था, इसलिए उसने घेरेका भार अपने पुत्रके सिपुर्द कर दिया और शेष सेनाके साथ शत्रुका सामना करनेके लिए यात्रा की। पाइरस तेजीसे भाग खड़ा हुआ। डेमिट्रियस थेसलीकी रक्षाके लिए दस हजार पैदल तथा एक हजार अश्वारोही रख कर पुनः घेरेपर लौट आया। वहाँ उसने अपना प्रसिद्ध अवरोधयन्त्र भी मँगवाया। यह भारी यन्त्र बड़ी कठिनाईसे दो मासमें केवल दो फर्लांग लाया जा सका। बीओशियन लोग भी बड़ी वीरताके साथ शत्रुओंका सामना कर रहे थे। डेमिट्रियस किसी लाभकी आशासे नहीं, बल्कि शत्रुताके भावसे प्रेरित होकर, अपने सैनिकोंको बार बार आक्रमण करनेके लिए बाध्य करता था। इस कार्यमें बहुतसे सैनिकों का नाश होते देख नवयुवक ऐंटिगोनसने अपने पितासे कहा 'महोदय, इतने वीर सैनिकोंकी जान हम लोग मुफ्त ही क्यों खो रहे हैं?' उसकी इस आजादीके भावसे क्रुद्ध होकर उसने कहा 'आखिर इसके लिए तुम

क्यों परेशान हो रहे हो? क्या ये मृत सैनिक भी तुम्हारे पास रसदकी माँग लेकर पहुँचेंगे?' सैनिकोंको यह दिखलानेके लिए कि मुझे अपनी जान तुम लोगोंकी जानसे अधिक प्यारी नहीं है, एंटिगोनस खतरेकी जगहपर उनके साथ चला गया। भालेके आघातसे उसकी गर्दन इस तरह जख्मी हो गयी कि उसकी जान ही खतरेमें पड गयी। इतना होने पर भी घेरा जारी रहा और अन्तमें नगरपर अधिकार हो गया। डेमिट्रियसके नगरमें प्रवेश करने पर लोगोंको आशका थी कि वह बहुत अधिक दंड देगा पर उसने सिर्फ तेरहको प्राणदंड और इससे कुछ ही अधिक लोगोंको देश-निर्वासनका दड देकर शेषको क्षमा कर दिया। इस प्रकार थीब्ज नगर पुनः निर्माण होनेके समयसे दस वर्षके भीतर दो बार अधिकारमें लाया गया।

इसके बाद शीघ्र ही पाइथियन अपोलोके उत्सवका दिन आ गया। ईटोलियन लोगोंने डेल्फी जानेका मार्ग रोक दिया था, इसलिए डेमिट्रियस-ने अथेंसमें ही उत्सव मनाया। इसके समर्थनमें उसने यह दलील पेश की कि अपोलो अथीनियन जातिके प्रवर्तक और पैतृक देव हैं, इसलिए उनकी पूजाका उपयुक्त स्थान भी अथेंज ही हो सकता है।

वहाँसे डेमिट्रियस मकदूनिया चला गया। स्वय अपने ही स्वभावकी अस्थिरतासे नहीं बल्कि यह देख कर कि मकदूनियावाले प्राय: युद्धमें तो आज्ञानुवर्ती होते हैं किन्तु शान्तिके समय षड्यन्त्र किया करते हैं, उसने ईटोलियन लोगोंके विरुद्ध यात्रा कर दी। देशको विध्वस्त कर विजयका कार्य पूरा करनेके लिए उसने एक अच्छी सेनाके साथ पाटाकसको वहाँ रख दिया और शेष सेनाके साथ पाइरसका मुकाबला करनेके लिए आगे बढ़ा। पाइरस भी इसका सामना करनेके लिए चल पडा था, पर संयोगवश विभिन्न मार्ग ग्रहण करनेके कारण दोनों सेनाएँ परस्पर नहीं मिलीं। उधर डेमिट्रियसने ईपाइरसमें प्रवेश कर सारे प्रदेशको वीरान कर डाला, इधर पाइरसने पाटाकसपर आक्रमण कर दिया। युद्धमें दोनों नायकोंने एक दूसरेको आहत किया, पर विजयलक्ष्मी पाइरसपर ही

प्रसन्न हुई। इसमें पांटाकसके पाँच हजार सैनिक बन्दी हुए और बहुतसे खेत रहे। डेमिट्रियसके लिए सबसे बुरी बात तो यह हुई कि शत्रुकी हैसियतसे पाइरसके प्रति शत्रुताका भाव तो कम पर उसकी वीरताके कारण प्रशंसाका भाव अधिक मात्रामें उत्पन्न हुआ। युद्धमें स्वयं अधिक भाग लेनेके कारण मकदूनियन लोगोंमें उसका गौरव बहुत बढ़ गया। बहुतसे लोग कहने लगे कि सिर्फ इसी नरेशमें सिकन्दरकी वीरताकी झलक देखनेको मिलती है। दूसरे नरेश, और खासकर डेमिट्रियस, अभिनेताओंकी तरह सिकन्दरका सिर्फ स्वाँग रचते हैं, इनमें केवल उसकी शान-शौकत और शाही रंग ही देख ही पड़ता है। डेमिट्रियस तो सच मुच नृप वेशधारी अभिनेता ही प्रतीत होता था। वह तरह तरहसे अपने शरीरको अलंकृत किया करता था और दोहरा मुकुट सुनहले किनारेवाले रेशमी वस्त्र तथा जरीदार जूते पहना करता था। उसके लिए बहुत दिनोंसे एक बड़ी शानदार पोशाक तैयार हो रही थी जिसपर तरह तरहके चित्र बननेवाले थे, पर उसके दुर्दिन आजानेके कारण वह अधूरी ही रह गयी। इसके बाद भी मकदूनियामें ठाटबाट पसन्द करने वाले बहुतसे नरेश हुए पर किसीने इसे धारण करनेका विचार नहीं किया।

मकदूनियावाले सिर्फ उसके स्वाँगसे ही नहीं चिढ़ते थे, उसका व्ययसाध्य एवं विलासपूर्ण रहन सहन और उससे मिलने या वार्तालाप करनेकी कठिनाई और भी अधिक कुढ़न पैदा करती थी। पहले तो वह जल्द मिलता ही नहीं था, यदि मिलता भी था तो उसका व्यवहार दर्पसे भरा हुआ होता था। यूनानके और लोगोंकी अपेक्षा अथेंजवालोंको वह अधिक मानता था, फिर भी अथेंजके दूतोंको उसके उत्तरकी पूरे दो वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। एक बार ऐसीडीमनवालोंने उसके पास केवल एक ही दूत भेजा। उसने इसमें अपना अपमान समझ कर क्रोधसे पूछा। "क्या यह सत्य है कि ऐसीडीमनवालोंने सिर्फ एक ही दूत भेजा है?" दूतने संक्षेपमें उत्तर दिया, "जी हाँ, एक नरेशके लिए एक दूत।"

एक दिन जब वह बाहर टहलने निकला, तब उसकी मुद्रासे ऐसा मालूम होता था कि वह लोगोंसे मिलना और बातचीत करना अस्वीकार न करेगा। इसी समय लोगोंने उसे बहुतसे प्रार्थना-पत्र दिये, सबको उसने चोगेके जेबमें रख लिया, लोग बड़ी प्रसन्नताके साथ उसके पीछे पीछे हो लिये। पर ऐक्सिअस नदीके पुलपर पहुँचते ही उसने सभी प्रार्थना-पत्रोंको नदीमें डाल दिया। उसकी यह करतूत देख कर मकदूनियन लोग जल भुन कर खाक हो गये; उन्होंने इसे अपने ऊपर शासन न समझ कर अपना अपमान ही समझा। उसका यह व्यवहार उन लोगोंको और भी बुरा मालूम हुआ जिन्होंने फिलिपके दयापूर्ण कार्योंसे स्वयं देखा था या जिनकी चर्चा देखनेवालोंसे सुनी थी। एक दिन रास्तेपर एक बुढ़ियाने प्रार्थना सुननेके लिए बहुत हठ किया। उसने तंग आकर कहा कि मुझे फुरसत नहीं है। बुढ़ियाने उत्तर दिया कि तब तो तुम्हें राजा होना ही नहीं चाहिये। बुढ़ियाकी यह बात उसे इस तरह लग गयी कि घर आने पर वह सब काम छोड़ कर कई दिनोंतक सिर्फ दरख्वास्त करनेवालोंसे मिलता रहा। उसने सबसे पहले उक्त बुढ़ियाको ही दरख्वास्त करनेका मौका दिया। वस्तुतः न्यायवितरणसे बढ़ कर राजाके लिए और कोई कर्तव्य नहीं है। टिमोथियसके कथनानुसार 'युद्धदेव स्वेच्छाचारी' और पिंडारके कथनके अनुसार 'न्याय सारे संसारका विधिनिहित प्रभु है।' होमरने यह कहीं नहीं कहा है कि 'जोवसे किसी नरेशको नगरोंकी विजयके निमित्त बड़े बड़े यंत्र या पीतलके मुखवाले पोत मिलते थे। राजाको क़ानून और न्याय मिलनेकी बात ही उसने लिखी है, जिनका पालन करना उसका कर्तव्य है। इसी प्रकार उसने किसी शूरवीर किन्तु अन्यायी और उद्धत स्वभाववाले राजाको नहीं, वरन् सबसे अधिक न्यायी राजाको ही बृहस्पति देव (जुपिटर) का निकट मित्र कहा है पर डेमिट्रियस बृहस्पति देवको जो नाम दिया जाता है उसके प्रतिकूल अर्थवाले नामको ही पसन्द करता था। 'जुपिटर' नगरोंका संरक्षक कहलाता

था पर डेमिट्रियसका उपनाम 'नगर विध्वंसक' था। शान्ति तथा सुखोपभोगका संयोग होने पर धर्मका स्थान अशान्ति ग्रहण कर लेती है और अन्यायके कार्य ही गौरव बढ़ानेवाले समझे जाने लगते हैं। डेमिट्रियस जबमें सख्त बीमार पड़ा हुआ था, तबतक पाइरस मकदूनियामें घुस कर एडेसा तक पहुँच गया, पर नीरोग होने पर उसने इसे निकाल बाहर किया और बादमें इसके साथ मेल भी कर लिया, क्योंकि अब वह पड़ोसियोंके साथ छोटे छोटे झगड़ोंमें न फँस कर अपने पिताके खोये हुए सारे साम्राज्यको पुनः प्राप्त करनेके प्रयत्नमें लगना चाहता था। उसने अनठानवे हजार पैदल और क़रीब बारह हजार घोड़सवार एकत्र कर लिये थे, पारिय और पेला आदिके नौकाश्रयोंमें पाँच सौ युद्ध पोत तैयार हो रहे थे और वह स्वयं घूम घूम कर कारीगरोंको इनके बनानेकी विधि बतलाया करता था। सारा संसार, उसके कार्योंपर नहीं बल्कि उसके वृहद् आयोजनपर आश्चर्यचकित हो रहा था, क्योंकि इसके पूर्व किसी व्यक्तिने डांडोंकी सोलह पंक्तियोंवाला पोत नहीं देखा था, पीछे तो टालेमी फिलोपेटरने चालीस पंक्तियोंवाला एक पोत बनवाया था जिसकी लम्बाई दो सौ अस्सी हाथ और आगेका हिस्सा अड़तालीस हाथ ऊँचा था। इस पोतपर चार सौ नाविक और चार हजार खेनेवाले रहते थे और इनके अलावा लगभग तीन हजार सैनिक इसपरसे युद्ध कर सकते थे। पर यह पोत सिर्फ दिखलानेके लिए था, कामके लिए नहीं। यह तटपर बने हुए भव्यभवनसा ही खड़ा रहा करता था, क्योंकि इसको चलाना आसान काम न था। पर डेमेट्रियसके पोतोंकी बात और ही थी, वे देखनेमें भव्य होनेके साथ ही युद्धमें काम देनेवाले भी थे, क्योंकि वे विशाल होनेके साथ साथ तीव्रगामी भी थे।

एशियाके विरुद्ध यह तैयारी देख कर सेल्यूकस, टालेमी और लिसीमेकसने अपने बचावके लिए गुट कायम किया। इन लोगोंने मकदूनिया पर आक्रमण करनेके लिए पाइरससे एक ही साथ प्रार्थना की और उसे यह

सुझाया कि इस सन्धिसे तुम अपनेको बद्ध न समझो क्योंकि डेमिट्रियसने तुम्हारे लाभके लिए यह सन्धि न कर औरोंके साथ यथारुचि भिड़नेके लिए की है। पाइरसके यह स्वीकार कर लेने पर डेमिट्रियसको, जो अभी तैयारीमें ही लगा हुआ था, चारों ओरसे युद्धका सामना करना पड़ा। टालेमीने एक बृहत् बेड़ेके साथ यूनानपर आक्रमण कर दिया; थ्रेसकी तरफसे लिसीमेकस मकदूनियामें घुस गया और पाइरस एपिराटकी ओरसे देशको वीरान करने लगा। यूनानकी रक्षाका भार अपने पुत्रपर छोड़ कर डेमिट्रियस मकदूनियाको बचाने और लिसीमेक्सका सामना करने चला। मार्गमें उसे यह समाचार मिला कि पाइरसने वीरोआ नगरपर अधिकार कर लिया है। सेनिकोंमें यह समाचार फैलनेके साथ ही विनयानुशासनका अन्त हो गया, कोई रोने और कोई क्रोध प्रगट करने लगा और कोई डेमिट्रियसको भला बुरा कहने लगा। अब वे लोग उत्तेजित होकर चिल्लाने लगे कि हम यहाँ नहीं ठहरेंगे, बरन अपने देश, अपने कुटुम्बियों और मित्रोंकी रक्षाके लिए अग्रसर होंगे। यह सब केवल बहाना था, वस्तुतः वे लोग विद्रोह करके लिसीमेकसकी ओर जाना चाहते थे। डेमिट्रियसने यथासंभव उन्हें लिसीमेकससे दूर ही रखनेका प्रयत्न किया, क्योंकि वह उन्हींके देशका था और वे सिकन्दरके साथ सम्बन्ध होनेके कारण उससे प्रेम भी करते थे। पाइरस उनके लिए विदेशी एवं अपरिचित था, वे उससे युद्ध कर सकते थे। उसने सोचा कि ये मुझे छोड़ कर उसकी तरफ कभी न झुकेंगे, पर उसका यह अनुमान बिल्कुल गलत निकला, जैसा कि पाइरसकी सेनाके पास पड़ाव डालने पर बिल्कुल स्पष्ट हो गया। मकदूनियावाले उसकी वीरताकी बराबर प्रशंसा किया करते थे और प्राचीन कालसे युद्धमें सबसे अधिक वीरता दिखलानेवालेको ही राजा होनेके योग्य समझनेके आदी थे। उनको यह भी मालूम हुआ कि पाइरस बन्दियोंके साथ दयापूर्वक व्यवहार कर रहा है। सारांश यह कि वे डेमिट्रियसके स्थानमें किसी अन्य व्यक्तिको ही देखना चाहते थे और वह व्यक्ति यदि

पाइरस हो तो वे और भी सन्तुष्ट थे। पहले तो कुछ सैनिक चुपकेसे भाग भाग कर पाइरसकी ओर जाने लगे, पर पीछेसे सबने विद्रोह ही खड़ा कर दिया। अन्तमें कुछ लोगोंने डेमिट्रियसके पास जाकर स्पष्ट रूपसे कह दिया कि यदि तुम अपना बचाव चाहते हो तो फौरन भाग निकलो, क्योंकि मकदूनियावालोंने यह संकल्प कर लिया है कि अब वे तुम्हारी विलासिता-की तृष्णा मिटानेके लिए अपने प्राण संकटमें न डालेंगे। अन्यान्य कथनोंकी अपेक्षा ये वाक्य तो कुछ कोमल और शिष्टतापूर्ण थे। इस पर वह अपने खेमेमें चला गया, शाही लिबास उतार कर अलग कर दिया और साधारण कपड़े पहन कर चुपकेसे निकल भागा। विद्रोही सैनिक उसके खेमेको लूट ही रहे थे तबतक, पाइरस वहाँ आ गया। उसको देखते ही सैनिक शान्त हो गये और सारी सेनाने उसकी अध्यक्षता स्वीकार कर ली। लिसीमेकस और पाइरसने मकदूनियाका राज्य आपसमें बाँट लिया जिसे बिना किसी विघ्नबाधाके डेमिट्रियसने सात वर्षोंतक अपने अधिकारमें रखा था।

तन कुछ सोकर डेमिट्रियस कैसेंड्री चला गया जहाँ उसकी स्त्री फीला थी। डेमिट्रियसको निर्वासित और एक साधारण व्यक्तिकी स्थितिमें देख कर उसे इतना शोक हुआ कि उसने विष खाकर जान दे दी। फिर भी डेमि-ट्रियस, जो कुछ बच रहा था उसका संग्रह करनेके निमित्त, यूनान गया। जो मित्र या अफसर बच गये थे उन्हें उसने एकत्र किया। सॅफोक्लिसने 'सोफोक्लीज' नामक नाटकमें उसके भाग्यके परिवर्तनका चित्र इस प्रकार खींचा है।

भाग्य-चक्र मम निसिदिन घूमत।
कबौं गर्त महँ जाइ परत हौं, ऊँचो सिखर कबौं हौं चूमत।
यथा एक सम रहि न सकति है हूँनिसिलौं विधु सुन्दर सूरत॥
लखियत प्रथम रेख सी नभमें शेष कला पुनि क्रम क्रम पूरत।
ह्वै सब अँग पूरन पुनि छीजत अंतकाल सोइ तम महँ दूरत॥

यह चित्र डेमिट्रियसके भाग्य पर विशेष रूपसे लागू होता है। कभी तो उसके महत्त्वका अस्तित्व बिलकुल लुप्त हो जाता था और कभी अपनी पूरी मात्रामें प्रकट हो जाता था। इस समय भी उसकी शक्ति धीरे धीरे बढ़ने लगी और उसे पुनः आशाकी झलक देख पड़ने लगी। पहले उसने साधारण व्यक्तिकी पोशाकमें नागरिकोंके सामने भाषण किया और बिना किसी राजकीय चिन्हके नगरोंमें भ्रमण किया, पर जब उसे पूरी आशा हो गयी और उसके पास सेना तथा साम्राज्यके कुछ अंग भी प्रस्तुत हो गये तो उसने थीब्सोंमें पुनः प्राचीन तंत्रकी स्थापना कर दी। अथेंसवालोंने अब उसका परित्याग कर दिया था। उन्होंने दोनों रक्षक देवोंके पुजारी डिफिलसको हटा दिया और पुरानी पद्धतिके अनुसार प्रधान शासकोंकी पुनः नियुक्ति की। जब उन्हे यह मालूम हुआ कि डेमिट्रियस वस्तुतः उतना शक्तिहीन नहीं है तो उन्होंने मकदूनिया दूत भेज कर पाइरससे रक्षाके लिए प्रार्थना की। डेमिट्रियसने क्रोधमें आकर नगरपर घेरा डाल दिया। अथेंसवालोंने इस संकटकी हालतमें क्रेटीज नामक सुप्रसिद्ध दार्शनिकको भेजा जिसने कुछ तो तर्क द्वारा और कुछ अनुनय-विनय कर उससे घेरा उठवा लिया। इसके अनन्तर उसने अपने सभी पोतोंको एकत्र किया और अपनी सेनाको, जिसमें अश्वदलके व्यतिरिक्त ग्यारह हज़ार पदाति थे, पोतारूढ़ कर लिसीमेकससे केरिया और लीडिया हस्तगत करनेके विचारसे एशियाकी तरफ यात्रा की। माइलीटस पहुँचने पर फीलाकी बहिन यूरीडाइस उससे मिली। वह अपने साथ टालेमीसे उत्पन्न टालेमिअस नामक अपनी एक पुत्रीको लेती आयी थी जिसका विवाह डेमिट्रियससे ठीक हो चुका था। उसका पाणिग्रहण कर वह फौरन अपने उद्देश्यकी पूर्तिमें चल पड़ा। आरंभमें उसका भाग्य चमकता सा देख पड़ा। कई नगरोंने उसके पक्षमें होकर उसका स्वागत किया और सार्डिस आदि कुछ नगरोंको उसने बलपूर्वक भी हस्तगत किया; लिसीमेकसके कुछ सेनापति भी सेना और धनके साथ उससे आ मिले।

पर लिसीमेकसके पुत्र एगाथोक्लीजके ससैन्य पहुँचने पर वह पहले आर्मीनिया और फिर मीडिया तथा उत्तरके प्रदेशोंपर अधिकार करनेके विचारसे हट कर फ्रीजिया चला गया क्योंकि उसके विचारमें उन स्थानोंपर अधिकार हो जानेसे भागनेवालेके लिए सैकड़ों मार्ग मिल सकते थे। एगाथोक्लीज उसका पीछा करने लगा। कई खण्डयुद्धोंमें डेमिट्रियसकी ही जीत रही पर एगाथोक्लीजने खाद्य पदार्थोंके संग्रह करनेमें उसे बहुत तङ्ग किया और उसके सैनिक भी उसके उद्देश्यको नापसन्द करने लगे, क्योंकि उन्हें यह सन्देह होने लगा कि यह हमें आर्मीनिया और मीडियाकी तरफ तो नहीं ले जा रहा है। उसकी सेनामें दिनोंदिन दुर्भिक्षका प्रकोप बढ़ता गया। इसके साथ ही लाइकस नदी पार करते समय किसी ग़ल्तीसे बहुतेरे सैनिक डूब कर मर गये। ऐसी भयङ्कर विपत्तियोंके पड़ने पर भी उसके सैनिक मजाक करनेसे बाज नहीं आते थे। एक दिन किसी सैनिकने ओडीपसका पहला पद्य, कुछ परिवर्तनके साथ लिख कर उसके तम्बूके द्वारपर लटका दिया जो इस प्रकार था—

'कहाँ लिये जाते हो हमको अन्ध ऐंटिगोनसके पुत्र ?'

अन्तमें दुर्भिक्षके साथ महामारी भी फैल गयी। जब सैनिक जैसे तैसे पदार्थोंको खाकर अपनी क्षुधा मिटाते हैं तो महामारीका शुरू होना भी स्वाभाविक है। अपने आठ हजार सैनिकोंसे हाथ धोकर वह टारससकी तरफ लौट पड़ा। यह नगर सेल्यूकसके राज्यमें पड़ता था, इसलिए लूटपाट मचा कर वह उसे क्रुद्ध करना अच्छा नहीं समझता था। इधर एगाथोक्लीजने टारसके पहाड़ी मार्ग रोक रखे थे और उधर सैना भूखों मर रही थी। वह लाचार होकर लूटपाट मचाती तो उसे रोकना भी असम्भव ही था। इन बातोंका विचार कर उसने सेल्यूकसको एक पत्र लिखा जिसमें पहले तो अपने दुर्भाग्यका उल्लेख किया और फिर निकट सम्बन्धका हवाला देते हुए इस सङ्कटापन्न स्थितिमें सहायताकी प्रार्थना की।

सेल्यूकसने इन पत्रोंसे दयार्द्र होकर उन प्रान्तोंके शासकोंसे डेमिट्रियसके लिए नरेशोचित वस्तुएँ तथा सेनाके लिए रसद प्रस्तुत कर देनेका आदेश दे दिया। पर पेट्रोक्लीजने, जिसके विचारोंका बहुत आदर होता था और जो सेल्यूकसका विश्वस्त मित्र भी था, उसे यह सुझाया कि इस सेनाका व्ययभार उठाना कोई विशेष बात नहीं है पर डेमिट्रियसको अपने राज्यमें ठहरने देना नीतिविरुद्ध है, क्योंकि वह इस समयके सभी नरेशोंमें उग्र होनेके साथ साथ साहसिक कार्योंका आदी भी है, और इस समय वह ऐसी परिस्थितिमें पड़ा है जिसमें कोमल प्रकृति वाले भी मनमाने एवं अन्यायपूर्ण कार्य करनेकी ओर प्रवृत्त हो जा सकते हैं। इन बातोंसे प्रभावित होकर सेल्यूकस एक महती सेनाके साथ सिलीशियाकी ओर बढ़ा। सेल्यूकसके इस परिवर्तनसे भयभीत और विस्मित होकर वह टॉरस पर्वतके सबसे सुरक्षित स्थानपर चला गया। सेल्यूकसके पास दूत भेज कर उसने इस प्रकार प्रार्थना की—"यदि आप चाहें तो मुझे स्वतन्त्र बर्बर जातियोंमें वहीं अपनी सेनाके साथ एक छोटेसे राजाके रूपमें रहनेकी स्वतन्त्रता प्रदान कर मेरी कठिनाइयों और भ्रमणका अन्त कर सकते हैं और यदि यह स्वीकार न हो तो शीतकालमें मेरी सेनाको खाद्य पदार्थ देकर इस गयी बीती हालतमें शत्रुओंके हाथमें पड़नेसे मुझे बचानेकी कृपा करें।" डेमिट्रियसके इन दोनों प्रस्तावोंको सेल्यूकसने सन्देहकी दृष्टिसे देखा। इसीसे उत्तरमें उसने कहला भेजा कि यदि तुम दो मासके बाद हट जानेका निश्चय दिलानेके लिए प्रतिभूके रूपमें अपने प्रधान मित्रोंको मेरे पास रख दो, तो मैं तुम्हें कैटेनियामें रहनेकी अनुमति दे सकता हूँ। इसी बीच उसने सीरियाके सभी मार्गों पर किलेबन्दी भी करा दी। चारों ओरसे वन्य पशुकी तरह अपनेको घिरा हुआ पाकर डेमिट्रियसको साहसिक कार्य करनेके लिए बाध्य होना पड़ा। वह सारे देशमें लूटपाट मचाने लगा। सेल्यूकसके खंडयुद्ध छेड़ने पर जीत भी उसीकी रही। नुकीले धुरोंके रथोंका आक्रमण होने पर उसने

आक्रमणोंको मार भगाया और सीरिया जानेवाले मार्गोंकी रक्षा करने वाली सेनाको परास्त कर मार्गोंपर भी अधिकार कर लिया। इन सफलताओंसे उत्साहित होकर उसने सेल्यूकसके साथ मर्यादाके लिए निपट लेनेकी ठानी। सेल्यूकस भी कुछ कम चिन्तित न था। भय तथा अविश्वासके कारण वह लिसीमेकससे सहायता लेना नहीं चाहता था। और डेमिट्रियससे भी युद्ध करनेका उसे साहस नहीं होता था, क्योंकि वह उसके साहससे भलीभाँति परिचित था और उसके भाग्यको निम्नतम तलसे उच्चतम शिखरपर चढ़ते भी कई बार देख चुका था। इसी बीचमें डेमिट्रियसपर एक भीषण रोगका आक्रमण हो गया जिससे उसकी शक्ति भी जाती रही और उसकी सारी व्यवस्था भी अस्तव्यस्त हो गयी, उसके कुछ सैनिक तो शत्रुपक्षमें हो गये और कुछ उसे छोड़ कर चले गये। चालीस दिनोंके बाद, जब उसमें कुछ करने धरनेकी शक्ति आयी तो अपनी शेष सेनाके साथ वह प्रकट रूपसे तो सिलीशियाकी तरफ बढ़ा, पर रातको कूचका नगाड़ा बजाये बिना ही उसने अपना पड़ाव तोड़ दिया और दूसरे रास्तेसे घूम कर अमेनस पर्वतको पार करते हुए सिरेस्टिका तक देशको लूट कर वीरान कर दिया। इसपर सेल्यूकस भी उसकी तरफ बढ़ा और उसने उससे कुछ ही फासलेपर अपना पड़ाव डाला। डेमिट्रियस रातको एकाएक आक्रमण करनेके विचारसे अपनी सेना लेकर चला। सेनाके पास पहुँचनेके समयतक सेल्यूकसको इसकी कोई खबर नहीं थी, वह गाढ़ी नींदमें सो रहा था। इसी समय डेमिट्रियसका पक्ष छोड़कर गये हुए एक सैनिकने उसे इसकी सूचना दी जिससे उसे बिछावनसे कूद कर खतरेका घण्टा बजानेका अवसर मिल गया। घोड़ेपर सवार होनेके लिए पादत्राण पहनते समय उसने अपने मित्रोंसे कहा "कैसे भयङ्कर जङ्गली जानवरसे हम लोगोंका पाला पड़ा है!" पड़ावमें शोरगुल सुन कर डेमिट्रियसको मालूम हो गया कि शत्रुओंको इसकी खबर मिल गयी है, इसलिए वह उलटे पाँव लौट आया। प्रभात होनेपर डेमिट्रियसने

सेल्यूकसको युद्धके लिए सिरपर सवार देखा। उसने एक नायकको एक पार्श्वका सामना करनेके लिए भेज दिया और दूसरे पार्श्वके मुकाबलेमें स्वयं जाकर शत्रुको नीचा दिखाया। तबतक सेल्यूकस अपने घोड़ेसे उतर कर और शिरस्त्राण उतार कर सिर्फ एक ढाल लिये हुए डेमिट्रियसकी किरायेकी सेनाके सामने चला गया और अपनी ओर आनेका अनुरोध करने लगा। उसने सैनिकोंको यह सुझाया कि मैं सिर्फ तुम्हीं लोगोंके खयालसे अबतक छोड़ता आया हूँ। इसपर सबकेसब उसको 'नरेश' कह कर अभिवादन करते हुए उसके झण्डेके नीचे आ गये।

डेमिट्रियस इसे अपने भाग्यका अन्तिम परिवर्तन समझ कर अमेनस पहाड़की घाटियोंकी तरफ भाग गया और बहुत थोड़े मित्रों तथा अनुयायियोंके साथ घने जंगलमें प्रवेश कर रातको उसीमें ठहरा। उसका विचार वहाँसे जाकर कॉनसमें अपने बेड़ेके पास पहुँचने और वहाँसे समुद्रके रास्ते भागनेका था, पर उस दिनके लिए भी रसद पासमें न देख कर कोई और उपाय ढूँढ़ने लगा। इसी समय उसका एक मित्र सॉसिजेनीज़ चार सौ अशर्फियाँ लेकर वहाँ पहुँचा। इस रकमकी सहायतासे उसे समुद्रतक पहुँचनेकी आशा हो गयी। संध्या होने पर वह घाटियोंकी तरफ बढ़ा पर अग्नि देख कर उसे मार्गमें शत्रुओंके होनेका अनुमान हो गया, इसलिए वह पुनः वहीं लौट आया। इस बार उसके सभी मित्र साथ न थे; कुछ तो उसका साथ छोड़ कर चले ही गये और जो शेष रह गये थे उनमें भी पहलेका उत्साह नहीं रह गया था। उनमेंसे एकके यह कहने पर कि डेमिट्रियस सेल्यूकसके हाथमें अपनेको समर्पित कर देता तो अच्छा था, वह अपने कलेजेमें तलवार भोंकनेको प्रस्तुत हो गया पर कुछ मित्रोंने उसे रोक कर इस कथनके अनुसार चलनेको राजी कर लिया और उसने सेल्यूकसके पास इसकी सूचना भेज दी।

इस समाचारको सुन कर सेल्यूकसने अपने पार्श्ववर्ती लोगोंसे कहा—"यह डेमिट्रियसका नहीं बल्कि मेरा सौभाग्य है जो उसकी रक्षा कर

रहा है, क्योंकि उसके प्रति दयालुता और उदारताका बर्ताव करनेसे मेरे ही गौरवकी वृद्धि होगी।" उसने अपने निजी अफसरोंको राजाओंके योग्य एक मंच तथा शानशौकतसे स्वागत करने योग्य वस्तुएँ प्रस्तुत करनेकी आज्ञा दी। सेल्यूकसके कर्मचारियोंमें एपोलोनाइडीज नामक एक व्यक्ति था जो डेमिट्रियसका पूर्व परिचित था। सेल्यूकसने इसे सबसे योग्य व्यक्ति समझ कर डेमिट्रियसके पास यह कहनेको भेजा कि घबड़ानेकी कोई बात नहीं है, यहां तुम्हारा स्वागत मित्र और सम्बन्धी की ही तरह होगा। सेल्यूकसका यह सद्भाव देख कर पहले तो थोड़ेसे पर बादमें सभी सरदार तथा अफसर यह समझ कर कि अब राजाके यहाँ डेमिट्रियसका ही बोलबाला रहेगा, उसके प्रति सर्वाधिक सम्मान-प्रदर्शन करनेमें प्रतिस्पर्द्धा करने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि अनुकम्पाका भाव द्वेषमें परिवर्तित हो गया और बुरी प्रकृति तथा द्वेष बुद्धिवाले सेल्यूकसको मनुष्यत्वके मार्गसे विचलित करनेके लिए उसे यह भय दिखलाने लगे कि डेमिट्रियसको देखनेके साथ ही सेना अत्यधिक क्षुब्ध हो गयी है। इधर तो एपालोनाइडीज तथा उसके साथ और भी बहुतसे आदमी डेमिट्रियसके प्रति सेल्यूकसके अनुग्रहपूर्ण वचनोंका उल्लेख कर रहे थे तथा वह अपने भाग्यको कोसते और आत्मसमर्पणको अपमान समझते हुए भी अच्छे दिनोंकी आशामें इन्हें भूलता जा रहा था, तबतक उधर पासेनियसने एक हजार सैनिकोंके साथ आकर उसे चारों ओरसे घेर लिया और उसके साथके लोगोंको भगा दिया। वह उसे सेल्यूकसके पास न ले जाकर सीरियन कार्सोनीजके प्रायद्वीपमें गया और उसपर कड़ा पहरा बैठा दिया। वहाँ उसके लिए पर्याप्त नौकर और सामान आदिका प्रबन्ध कर दिया गया, साथ ही उसके लिए वायुसेवन, अश्वारोहण और आखेट आदिकी भी काफी सहूलियत कर दी गयी। देशका परित्याग किये हुए उसके मित्र भी उससे मिल सकते थे। सेल्यूकस भी उसे पत्र द्वारा आश्वासन दिलाया करता था कि ऐंटिओकस

और स्ट्रैटोनाइसीके आने और समझौतेकी शर्तें तै हो जाने पर तुम शीघ्र ही मुक्त कर दिये जाओगे।

अपनी स्थितिपर विचार कर डेमिट्रियसने अपने पुत्र तथा अथेंज़ और कारिंथके अपने अफसरों एवं मित्रोंको लिख कर सूचित किया कि मेरे नामसे भेजे गये पत्रोंका, चाहे उनपर मेरी मुहर भी हो तो भी, विश्वास न करें, और मुझे मृत समझ कर, मेरे उत्तराधिकारी ऐंटिगोनसके निमित्त अवशिष्ट नगरोंकी यथाशक्ति रक्षा करें। पिताकी कैदका समाचार मिलने पर राजकुमार शोकसे विह्वल हो गया। उसने अन्यान्य नरेशोंको पत्र लिखे और स्वयं सेल्यूकसको भी लिखा कि यदि आप मेरे पिताको मुक्त कर दें तो मैं अपना बचा हुआ राज्य और अपनेको प्रतिभूके रूपमें आपके हाथ सौंप दूँगा। कई नगरों तथा राजाओंने भी ऐंटिगोनसकी प्रार्थनाका समर्थन किया। सिर्फ लिसीमेकसने डेमिट्रियसका अन्त करनेके बदले सेल्यूकसको एक बड़ी रकम देनेके लिए लिखा। पर सेल्यूकस उसे पहलेसे ही उपेक्षाकी दृष्टिसे देखता आया था, इस अवसरपर उसकी दृष्टिमें वह और भी तुच्छ जँचने लगा। फिर भी सेल्यूकस, ऐंटिओकस और स्ट्रैटोनाइसीको बीचबिचावका मौका देकर आभारी करनेके विचारसे उसकी मुक्तिका समय टालता ही गया।

डेमिट्रियसने दुर्भाग्यके इस झोंकेको धैर्यके साथ सहन कर लिया। कुछ समय बीतने पर इसका आदी हो जानेके कारण अब यह उसे उतना नहीं खलता था। आरम्भमें कुछ दिनोंतक वह बराबर व्यायाम और शिकार आदि करता रहा, पर धीरे धीरे ये सब छूटते गये और वह आलसी तथा अकर्मण्य होता गया। वह या तो वर्तमान स्थितिके ख्यालोंसे बचनेके लिए, जो होश दुरुस्त रहनेपर बराबर मनमें आया करते थे, अथवा सचमुच यह समझ कर कि यही अभीष्ट सुखमय जीवन है जिसे छोड़ कर मैं महत्वाकांक्षाकी मृगतृष्णामें व्यर्थ भटक रहा था और स्वयं कष्ट उठाते हुए औरोंको भी कष्ट दे रहा था, अपना अधिकांश समय

मद्यपान और चौसर खेलनेमें बिताने लगा और समझने लगा कि जिस सुखके लिए मैंने शस्त्रास्त्र, पोत तथा सेनाकी सहायता ली थी वह आराम तलबी, एवं आलस्य आदिके रूपमें अनायास प्राप्त हो गया। वास्तविक आनन्द और सुखोपभोगका ज्ञान न होनेके कारण ही अज्ञानी नरेश विलासिताके उद्देश्यसे धर्मका मार्ग छोड़ कर युद्धों आदिमें प्रवृत्त होते हैं।

इस प्रकार इस प्रायद्वीपमें तीन वर्ष आलस्य और विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करनेके कारण रोग ग्रस्त हो चौवन वर्षकी अवस्थामें डेमिट्रियस इस संसारसे विदा हो गया। उसकी मृत्युके कारण सेल्यूकसकी बड़ी निन्दा हुई और स्वय उसे भी डेमिट्रियसके प्रति अनुचित सन्देहोंके कारण बहुत दुःख हुआ, क्योंकि उसे तो ड्रोमोचीटीजके कार्यका अनुकरण करना चाहिए था जिसने थ्रेसियन और बर्बर होते हुए भी अपने बन्दी लिसी मेकसके साथ उदार एवं नरेशोचित वर्ताव किया था।

डेमिट्रियसकी अन्त्येष्टिमें भी कुछ विचित्रता देखी गयी। यह मालूम होने पर कि पिताकी राख यूनान लायी जा रही है, एँटिगोनस अपने सारे पोतोंके साथ उसे लेनेके लिए आगे बढ़ा। ईजियन समुद्रके टापूके पास उसे ठोस सुवर्णके पात्रमें वह राख दी गयी जिसे उसने नायकके पात पर रखा। जिन नगरोंके तट पर वह पोत ठहरता था, वहाँके निवासी इसे अलंकृत करनेके लिए मुकुट और अन्त्येष्टिनियामें सहायता देनेके लिए कुछ नागरिक भेजते थे।

बेड़ा कारिंथ पहुँचा तो लाल रेशमी वस्त्रसे ढका हुआ और मुकुटसे अलंकृत वह पात्र पोतके पिछले भागमें दृष्टिगोचर हुआ। तटपर नवयुवकोंकी एक सेना उसका स्वागत करनेके लिए खड़ी थी। जेनोफैंटस नामक प्रसिद्ध वेणुवादक सकरुण स्वरमें वेणु बजा रहा था। गानके साथ डाँड भी करुणापूर्ण स्वरमें ताल दे रहे थे। एँटिगोनसको शोकसूचक वस्त्र पहने और रोते हुए देख कर तटवर्ती दर्शक शोकाभिभूत हो गये। कारिंथमें राख

तथा अन्यान्य सम्मान प्रदान करनेके अनन्तर वह पात्र डेमिट्रियस नामक नगरमें लाया गया जिसे डेमिट्रियसने अपने नाम पर बसाया था।

फीलासे डेमिट्रियसके ऐंटिगोनस और स्ट्रेटोनाइसी यही दो सन्तानें थीं। किन्तु उसीके नामके उसके दो पुत्र और भी थे जिनमें एककी माता एक इलीरियन महिला थी और दूसरेकी टालेमेइस। डीडेमियासे भी एलेक्जेंडर नामक एक लड़का था जो मिसमें ही रहा और वहीं स्वर्गवासी हुआ। कुछ लोगोंका कथन है कि उसे कारेबस नामका एक और भी लड़का था जो यूरीटाइससे पैदा हुआ था। उसके वंशमें कई पीढ़ियोंतक राज्य चला। अन्तिम नरेश पर्स्यूजके समयमें रोमनोंने मकदूनियाको अपने अधिकारमें कर लिया।

१०—ऐण्टोनी।

मार्क ऐण्टोनी प्रसिद्ध वकील ऐण्टोनीका पौत्र था जिसे मेरियसने सिलाका साथ देनेके कारण मार डाला था। इसका पिता ऐण्टोनी था जिसे लोग 'क्रीटन' कह कर पुकारा करते थे। राजनीतिक संसारमें क्रीटनकी कोई गणना न थी, हाँ, दयालुता, ईमानदारी और उदारताके कारण वह विशेष प्रसिद्ध था। उसके इन गुणोंका परिचय इस छोटी सी घटनासे भली भाँति मिल जायगा। वह विशेष धनी नहीं था, इस कारण उसकी स्त्री बड़ी बुद्धिमत्ताके साथ उसके उदार स्वभावपर कुछ नियंत्रण रखा करती थी। उसके एक मित्रने आर्थिक संकटमें पड़ कर उससे सहायताके लिए प्रार्थना की। ऐण्टोनीके पास उस समय रुपये न थे, इसलिए उसने बाल बनानेके बहाने एक रजतपात्रमें नौकरसे जल मँगवाया। नौकरके चले जाने पर उसने मित्रको वह पात्र दे दिया और उससे कहा

कि इसे बेचकर आप अपना काम चलाइये। पात्रके गायब होने पर घरमें बहुत हल्ला मचा। जब उसने देखा कि नौकरोंपर इसके लिए कड़ाई की जा रही है, तो अपनी स्त्रीसे सभी घटना बता कर क्षमाके लिए प्रार्थना की।

उसकी स्त्रीका नाम जूलिया था। यह सीजरके वंशकी थी और बड़ी गुणवती तथा नम्र स्वभाववाली रमणी थी। पतिके मर जाने पर उसने कार्नेलियस लेंटुलसके साथ विवाह कर लिया। मार्क ऐण्टोनीकी शिक्षा इसी समय जूलियाकी देखरेखमें हुई। सिसरोने केटिलाइनके षड्यंत्रमें शामिल होनेके कारण कार्नेलियस लेंटुलसको मार डाला। सिसरो और मार्क ऐण्टोनीके बीच भयानक शत्रुता बनी रहनेका कदाचित् यही प्रथम कारण था। मार्क ऐण्टोनीका कथन है कि जूलियाको अपने पतिका शव प्राप्त करनेके लिए सिसरोकी स्त्रीसे प्रार्थना करनी पड़ी थी। पर यह बात सत्य नहीं मालूम होती क्योंकि सिसरोने, जब वह प्रधान शासक था तब, किसी भी मृत व्यक्तिकी अन्त्येष्टि क्रियामें बाधा नहीं डाली। ऐण्टोनीका बदन सुडौल और सुन्दर था। वह दुर्भाग्यवश क्यूरियो नामक एक मद्यप और व्यभिचारीकी कुसंगतिमें पड़ कर स्वयं भी वैसा ही बन गया और पानीकी तरह रुपया बहाने लगा। अल्पावस्थामें ही उसपर ढाई सौ टेलेंटका ऋण चढ़ गया जिसके लिए क्यूरियो उसका जामिन बना था। जब उसके पिताको इस बातकी सूचना मिली तो उसने ऐण्टोनीको अपने घरसे निकाल बाहर किया। क्यूरियोसे पृथक् होने पर उसने क्लोडियस नामक दुष्ट जन शासकका दामन पकड़ा जो अत्यन्त उद्धत स्वभावका था। उसके प्रमादपूर्ण कार्यों तथा उसके शत्रुओंकी बढ़ती हुई संख्यासे भयभीत होकर ऐण्टोनी यूनान चला गया और वहाँ युद्धविद्या तथा वक्तृत्वकलाका अभ्यास करने लगा। उस कालमें वक्तृता देनेकी "एशियायी शैली" विशेष रूपसे प्रचलित थी। ऐण्टोनीको स्वभावतः यह शैली पसन्द आयी, क्योंकि यह उसके आडम्बरपूर्ण स्वभावके बिलकुल अनुकूल थी।

यूनानमें कुछ दिन रहनेके बाद उसे सीरियामें युद्ध करनेके निमित्त साथ जानेका प्रधान शासक (कौन्सल) गेबिनियसका निमंत्रण मिला। खानगी तौर पर जानेसे उसने इनकार कर दिया। पर बादमें अश्वदलका नायक नियुक्त होने पर वह उसके साथ चला गया। उसकी पहली कार-रवाई ऐरिस्टोव्यूलसके विरुद्ध हुई जिसने यहूदियोंको विद्रोह करनेके लिए उभाड़ा था। दीवारपर सर्व-प्रथम वही चढ़ा, सो भी उस भागमें जहाँ वह सबसे ऊँची थी। उसने ऐरिस्टोव्यूलसको दुर्गसे बाहर खदेड़ दिया और केवल मुट्ठीभर सैनिकोंके साथ उसकी महती सेनाको युद्धमें परास्त कर दिया। इसमें बहुतसे सैनिक खेत रहे और ऐरिस्टोव्यूलस अपने पुत्रके साथ बन्दी बना लिया गया। इस युद्धका अन्त हो जानेके पश्चात् टालेमीने गेबिनियससे प्रार्थना की कि आप मिस्रमें आकर मुझे राज्य प्राप्त करनेमें सहायता दीजिए। इस कार्यके लिए दस हज़ार टैलेंट पुरस्कार निश्चित हुआ। अधिकांश अफसर इस यात्राके विरुद्ध थे; गेबिनियस बड़ी रकमका प्रलोभन होते हुए भी, आगा पीछा कर रहा था, पर ऐण्टोनीने साहसिक कार्योंमें प्रवृत होनेकी आकांक्षा और आश्रयार्थी टालेमीको प्रसन्न करनेके विचारसे प्रेरित होकर गेबिनियससे प्रार्थना स्वीकार कर लेनेका अनुरोध किया। जहाँ अन्य लोगोंने पेल्यूशिअमकी यात्राको भावी युद्धसे भी अधिक संकटाकीर्ण बतलाया, क्योंकि वहाँ जानेमें सरबोनिसके दलदलके रास्ते एक विस्तृत मरुभूमिको पार करना पड़ता था, वहाँ ऐण्टोनीने अपने अश्वदलके साथ जाकर केवल मुहानेपर ही नहीं बल्कि पेल्यूशिअम नगरपर भी अधिकार कर लिया और वहाँके सैनिकोंको बन्दी बना लिया। उसके इस कार्यसे सेनाकी यात्राके लिए एक निरापद मार्ग खुल गया और प्रधान नायककी विजयके लिए स्थिति भी बहुत कुछ अनुकूल हो गयी। इस अवसरपर सम्मान प्राप्त करनेकी उसकी अभिलाषा उसके दलके लिए ही नहीं, बल्कि उसके शत्रुओंके लिए भी लाभदायक प्रमाणित हुई; क्योंकि टालेमीने

पेन्यूशिअम नगरमें प्रवेश करने पर प्रतिशरके भावावेशमें नागरिकोंका वध करना चाहा किन्तु ऐण्टोनीने दृढतापूर्वक इसका विरोध कर उसको इस भयंकर कार्यसे विरत कर दिया। ऐसे तो सेनासे संबंध रखनेवाले प्राय सभी कार्योंमें उसकी योग्यता और उत्साह देख पडता था, पर एक बार पीछेकी ओर जाकर शत्रुओंके पृष्ठ भागपर आक्रमण कर सामनेकी ओर युद्ध करने वालोंके लिए विजयश्री सुलभ करनेमें उसने अपने विशेष रण-कौशलका परिचय दिया। इस कार्यके लिए उसे सम्मान तथा पारितोषिक भी मिले।

वीरगति प्राप्त आर्केलिअसके शवके प्रति उसने जो मनुष्योचित बर्ताव किया, उसे साधारण व्यक्तियोंने भी अच्छी तरह देखा। यह व्यक्ति उसका घनिष्ट मित्र था पर कर्तव्यसे बाध्य होकर उसे इसके विरुद्ध युद्ध करनेमें प्रवृत्त होना पडा था। उसके धराशायी होनेकी खबर मिलनेके साथ ही ऐण्टोनीने शव तलाश करनेकी आज्ञा दे दी और शाही ठाटबाटके साथ उसे दफनाया। इस प्रकारके बर्तावके कारण सिकन्दरियावालोंमें उसका यश फैल गया और रोमन लोग भी उसकी प्रशंसा करने लगे।

ऐण्टोनीका रूप भव्य था—ऊँचा ललाट, लम्बीसी सुन्दर दाढ़ी और नुकीली नाक थी। हरकुलीजके चित्रों या प्रतिमाओंमें जैसी बहादुरी-की झलक देख पडती है, वैसी ही इसमें भी देख पडती थी। इस सम्बन्ध-में एक पुरानी कथा चली आती है कि ऐण्टोनीके वंशका प्रवर्तक हरकुलीज-का पुत्र ऐण्टियन था। यदि ऐण्टोनीने चालढाल और वेशभूषामें उसका अनुकरण कर इस बातको सत्य प्रमाणित करनेका प्रयत्न किया हो, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। बाहर निकलते समय वह प्राय वेस्टकोट पहनता, एक लम्बी तलवार लगा लेता और ऊपरसे एक मोटा लबादा भी धारण कर लेता था, जो कार्य सर्वसाधारणके लिए अरुचिकर हो सकता था, उसीके कारण वह सैनिकोंकी सदिच्छाओंका पात्र बन गया। उनके साथ वार्तालाप करते समय वह उन्हींके जैसा गँवारू उच्चारण करता था, उनके साथ खुलेआम खानपान करता, यहाँ तक कि एक ही

दस्तरख़्वानपर खा लिया करता था। सैनिकों और मित्रोंके प्रति उसका उदारभाव ही उसके अभ्युदयका आधार था और इसीकी बदौलत हजारों अनियमित कार्योंके होते हुए भी उसका अधिकार अक्षुण्ण बना रहा। निम्नलिखित घटनासे उसकी उदारताका परिचय भलीभाँति मिल जायगा। एक बार उसने अपने एक मित्रको ढाई लाख ड्रैकमा (एक रजत-मुद्रा) दिये जानेकी आज्ञा दी। उसके नौकरने इतनी बड़ी रक़म देनेकी बातसे विस्मित होकर एक विशेष स्थानपर मुद्राराशि रख दी जिसमें उधरसे गुजरते समय उसपर उसकी दृष्टि पड़ सके। उसने इसे देख कर पूछा कि यह किस लिये है। नौकरने उत्तर दिया कि यह वही भेंटवाली रक़म है जो दी जानेवाली है। ऐण्टोनीने उसका ईर्ष्याभाव समझ कर उसे और भी जलानेके निमित्त कहा 'मैंने तो समझा था कि यह कोई बड़ी रक़म होगी, पर यह तो बहुत कम है, इसे दूना कर दो।'

इस समय रोम दो दलोंमें विभक्त हो गया था। कुलीन जनता तो पाम्पीके पक्षमें थी किन्तु सर्वसाधारण सीज़रको सेनाके साथ गॉल प्रान्तसे बुला लेनेके पक्षमें थे। क्यूरियोने, जो ऐण्टोनीका मित्र था और पाम्पीका साथ छोड़ कर सीज़रकी ओर हो गया था, ऐण्टोनीको भी सीज़रके पक्षमें कर लिया। उसने अपनी प्रचुर सम्पत्ति और वक्तृत्वशक्तिके प्रभावसे ऐण्टोनीको पहले जनशासक (ट्रिब्यून) और फिर शकुन-शास्त्रीके पदपर नियुक्त करा दिया। ऐण्टोनीके अधिकारारूढ़ होते ही सीज़रको उसकी उपयोगिताका प्रमाण मिलने लगा। सबसे पहले उसने प्रधान शासक मार्सेलसका विरोध किया जो पाम्पीको पुरानी पलटनें रखने और नयी पलटनें खड़ी करनेका अधिकार दिलाना चाहता था। इस अवसरपर उसने यह आदेश निकलवाया कि पेदल सेना तो पार्थियन लोगोंसे लड़नेके निमित्त बाइबूलसके पास सीरिया भेज दी जाय और पाम्पीकी सेनामें कोई भरती न हो। इसी प्रकार जब कुलीन-सभा सीज़रके पत्रोंको लेना या पढ़ने देना स्वीकार नहीं कर रही थी, तब एण्टोनीने जनशासकके अधि-

कारका उपयोग कर उन्हें पत्र सुनाया। सीज़रकी प्रार्थना युक्तियुक्त और मर्यादित होनेके कारण बहुतेरे लोग उसके पक्षमें हो गये। अन्ततः सिनेट (कुलीन-सभा) में दो प्रश्न उपस्थित किये गये—'क्या पाम्पीको अपनी सेना भंग कर देनी चाहिये?' अथवा 'क्या सीज़रको अपनी सेना तोड़ देनी चाहिए?' पहले प्रश्नके पक्षमें केवल थोड़ेसे और दूसरेके पक्षमें अधिकांश सदस्य थे। तब ऐण्टोनीने खड़े होकर पूछा 'यदि यह कहा जाय कि सीज़र और पाम्पी दोनों ही अपनी अपनी सेना तोड़ दें, तो इस सम्बन्धमें आपकी क्या राय है?' लोगोंने बड़ी हर्षध्वनिके साथ इस प्रस्तावका स्वागत किया और इसपर मत लेनेकी इच्छा प्रकट की। किन्तु जब प्रधान शासकोंने इसका विरोध किया, तब सीज़रके मित्रोंने और भी कुछ प्रस्ताव पेश किये जो किसी प्रकार अयुक्त नहीं जान पड़ते थे। कैटोने इन प्रस्तावोंको अस्वीकृत कर दिया और प्रधान शासक लेंटुलसने ऐण्टोनीको सभा-भवनसे बाहर चले जानेकी आज्ञा दी। इसपर ऐण्टोनी उन्हें शाप देकर वहाँसे चला गया। उसने नौकरका भेष बना लिया और केवल क्विंटस कैसियसको साथ लेकर एक किरायेकी गाड़ीपर बैठ कर फौरन सीज़रके पास चला गया। वहाँ पहुँचनेके साथ ही इन लोगोंने कहा कि रोममें कोई कार्य क़ानूनके मुताबिक नहीं हो रहा है, जनशासक भी अपने बोलनेके अधिकारसे वंचित कर दिये जाते हैं; जो न्यायके समर्थनमें खड़े होते हैं वे निकाल बाहर किये जाते हैं और खतरेमें भी पड़ते हैं।

इसपर सीज़रने अपनी सेनाके साथ इटलीमें प्रवेश किया। सिसरोके शब्दोंमें तो एक प्रकारसे ऐण्टोनी ही रोमके गृहयुद्धका कारण था, पर यह बात ठीक नहीं जँचती क्योंकि सीज़र ऐसे हलके दिमाग़का आदमी नहीं था कि केवल क्रोधके आवेशमें आकर इतने भारी कार्यमें प्रवृत्त होता, वह अपना कार्यक्रम पहले ही निश्चित कर चुका था। हाँ, इनके नौकरकी पोशाकमें किरायेकी गाड़ीपर भागनेसे शत्रुता सम्बन्धी कार्य आरम्भ करनेमें उसका उत्तेजित होना सम्भव है। सिकन्दर और साइरसकी तरह

सीज़र भी महत्वाकांक्षासे प्रेरित होकर संसारका सर्वश्रेष्ठ मनुष्य बनना चाहता था, पर पाम्पीके जीवित रहते वह अपने लक्ष्यतक नहीं पहुँच सकता था।

सीज़रके रोम पहुँचने पर पाम्पी इटली छोड़ कर भाग गया। अब सीज़रने उसकी स्पेनवाली पलटनोंपर हमला करनेका विचार किया और पाम्पीका पीछा करनेके लिए एक बेड़ा प्रस्तुत कराया; तबतक उसने रोमका शासन लेपिडसके सिपुर्द कर दिया और इटली तथा सेनाका शासन ऐण्टोनीके अधीन कर दिया। ऐण्टोनीकी मिलनसारीके कारण सैनिक उसे शीघ्र ही चाहने लगे, क्योंकि वह उनके साथ खान-पान करता और अपनी शक्तिभर उन्हें उपहार भी दिया करता था। किन्तु अन्य लोगोंको उसका चालचलन इतना पसन्द नहीं था, क्योंकि वह पीड़ितोंकी प्रार्थनापर मुस्तैदीसे ध्यान नहीं देता था, काम करते समय अधीर हो उठता था और कामुकताके लिए तो बदनाम ही हो चुका था। सीज़रका शासन स्वेच्छाचारपूर्ण न होने पर भी उसके मित्रोंके दुराचारके कारण लोगोंकी घृणाका विषय हो गया था। ऐण्टोनी भी ऐसे मित्रोंमेंसे एक था। ऐण्टोनीके हाथमें सबसे अधिक अधिकार होनेके कारण सबसे अधिक बदनामीका कारण भी वही समझा जाता था। स्पेनसे वापस आनेपर सीज़रने उसके अनियमित कार्योंकी ओरसे आँखें बन्द कर लीं। उसने ऐंटोनीको जो सैनिक पद दिया था उसके सम्बन्धमें शिकायत करनेकी कोई गुंजाइश नहीं थी, क्योंकि ऐण्टोनी वीर तथा कुशल सेनानायक था।

सीज़र ब्रण्डूज़िअममें पोतारूढ़ होकर थोड़ेसे सैनिकोंके साथ आयोनियनकी ओर चला गया। वहाँसे उसने अपना बेड़ा वापस कर दिया और ऐण्टोनी तथा गेबिनियसको सेनाके साथ पोतारूढ़ हो मकदूनियाके लिए शीघ्र प्रस्थान करनेका आदेश भेजा। जाड़ेका मौसिम और मार्ग संकटाकीर्ण होनेके कारण गेबिनियस भयभीत हो रहा था, इसलिए वह अपनी सेना बहुत दूरतक स्थलमार्गसे ही ले गया। ऐण्टोनीने इस

आशंकासे कि कहीं सीजर शत्रुओंसे घिर कर पराजित न हो जाय, ल्विबोको, जो ब्रण्डुजियम बन्दरमें घेरा डाले ठहरा हुआ था, मार भगाया और उसके पोतोंको अपने पोतोंसे घेर घेरकर विरत होनेके लिए बाध्य किया। इस प्रकार अवसर पाकर उसने बीस हजार पैदल और आठ सौ अश्वारोहियोंके साथ पोतारूढ़ होकर वहाँसे प्रस्थान कर दिया। शत्रुओंने उसे देख कर पीछा किया पर उत्तरकी ओरसे तूफान आ जानेके कारण समुद्र इतना क्षुब्ध हो गया कि शत्रु उसके पासतक नहीं पहुँच सके। तूफानके कारण उसके जहाज चट्टानसे टकराते टकराते बच गये पर शत्रुओंके कई जहाज चकनाचूर हो गये। शत्रुओंकी इस विपत्तिसे ऐण्टोनीने लाभ भी उठाया। उसने कई मनुष्योंको बन्दी बनाया और लूटमें बहुतसा माल प्राप्त किया। उसने लीसस नगरपर भी अधिकार जमा लिया और यथा समय अतिरिक्त सेनाके साथ सहायतार्थ पहुँच कर सीजरके कार्यक्रमको सफल बनानेकी आशा उत्पन्न कर दी।

इसके बाद जितने युद्ध हुए ऐण्टोनीने उनमेंसे प्रत्येकमें ख्याति प्राप्त की। उसने दो बार भागती हुई सेनाको पुनः युद्धमें प्रवृत्त कर शत्रुको परास्त किया। युद्ध सम्बन्धी ख्यातिकी दृष्टिसे सीजरके बाद उसीका नाम था। उसकी योग्यताके सम्बन्धमें सीजरकी क्या धारणा थी, यह बात फारसेलियाके युद्धमें बिल्कुल स्पष्ट हो गयी। ऐण्टोनीको सबसे योग्य समझ कर ही दक्षिण पार्श्व अपने नायकत्वमें रख कर उसने वाम पार्श्वका नायक उसे बनाया था। इस युद्धके उपरान्त सूत्रधार नियुक्त होने पर सीजर स्वयं तो पॉम्पीका पीछा करने चला और ऐण्टोनीको अश्वदलका नायक बना कर रोम भेज दिया। अधिकारकी दृष्टिसे सूत्रधारके बाद यही पद है और प्रथमकी अनुपस्थितिमें इस पदाधिकारीका ही शासन चलता है। सूत्रधारका निर्वाचन हो जाने पर जन शासकोंको छोड़ कर और शासक अधिकारवञ्चित हो जाते हैं।

डोलाबेला नामक एक जनशासक, जो नवयुवक होनेके कारण परि-

वर्तन बहुत पसन्द करता था, कर्ज रद्द करनेका प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला था। इस कार्यमें वह ऐण्टोनीकी सहायता प्राप्त करना चाहता था, वह उसका मित्र था और सार्वजनिक हितके कार्योंमें बहुत उत्साह दिखलाता था। किन्तु ऐमीनियस और टेबीलियस इस प्रस्तावके विरुद्ध थे। इसी समय ऐण्टोनीको अपनी स्त्रीके साथ डोलाबेलाके अनुचित सम्बन्ध होनेका सन्देह हुआ और इसी कारण उसने उसे पृथक् भी कर दिया। परिणाम यह हुआ कि ऐंटोनीने ऐमीनियससे मिलकर डोलाबेलाका विरोध किया। डोलाबेलाने बलपूर्वक विधान बनवानेके विचारसे सभा भवन पर अधिकार कर लिया था। सिनेटकी ओरसे बल प्रयोग करनेका आदेश मिलने पर ऐण्टोनीने आक्रमण कर उसके बहुतसे आदमियोंको मार डाला। इस मुठभेड़में ऐण्टोनीके भी कुछ आदमी हताहत हुए।

उसके इस कार्यसे सर्व साधारण उससे अप्रसन्न हो गये। केवल यही एक ऐसा काम नहीं था जिससे वह लोगोंमें अप्रिय होता जाता था। विचारवान् तथा सज्जन पुरुष उसके नाचरंगमें मस्त रहने, उसकी फजूल खर्ची, तथा दिनमें सोनेकी आदत और कामुकता इत्यादिके कारण उसे घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। वह नटों और भाँड़ोंके विवाहोत्सवमें भोज दिया करता था। कहा जाता है कि एक नटके विवाहोत्सवमें वह रात भर मदिरा पीता रहा। प्रात काल एक जरूरी कामसे उसे सभा भवनमें जाना पड़ा। वहाँ लोगोंके सामने ही उसने वमन कर दिया। उसके एक मित्रको उसका चोगा सँभालना पड़ा जिसमें वह खराब न हो जाय। सर्गियस नामक नटके साथ उसकी बड़ी घनिष्टता थी और साइथेरिस नामक नटीका उसके हृदयपर बहुत कुछ अधिकार था। वह यात्रामें भी उसका साथ नहीं छोड़ती थी और उसका ठाटबाट उसकी मातासे किसी प्रकार कम न होता था। वह सफरमें ऐसे सुन्दर और उत्तम पात्रोंको लेकर चलता था जो किसी विजयोत्सवके जुलूसके लिए विशेष उपयुक्त हो सकते थे, बड़ी बड़ी दावतोंके लिए नदियों और उपवनोंके पास मार्गपर खेमे

गढ़वाता था, अपने रथमें शेर जुतवाता था और वेश्याओं तथा गायिकाओंको भलेमानसोंके घरमें ठहरा दिया करता था। उसके ये कार्य लोगोंको बहुत बुरे मालूम होते थे। इसकी तुलनामें सीज़रकी रहन सहनका विचार कर लोगोंकी अप्रसन्नताकी मात्रा और भी बढ़ जाती थी, क्योंकि उधर सीज़र कष्टमय सैनिक जीवन बिता रहा था, इधर ऐंटोनी भोग-विलासमें लिप्त हो रहा था और साथ ही साथ उसमे प्राप्त अधिकारोंका दुरुपयोग कर नागरिकोंका अपमान भी कर रहा था।

इस प्रकारके आचार विचारके कारण रोममें कई तरहकी गड़बड़ी फैल गयी, जिससे सैनिकोंको उत्पात और लूटपाट मचानेका मौक़ा मिल गया। सीजरने रोम वापस आने पर डोलावेलाको माफ़ कर दिया और तीसरी बार प्रधान शासक चुने जाने पर ऐण्टोनीको न लेकर लेपिडसको अपना सहायक बनाया। जब पॉम्पीका भवन बिकने लगा तब एण्टोनीने उसे खरीद लिया। किन्तु जब रुपया अदा करनेको कहा गया तो आँख दिखलाने लगा। उसका ख्याल था कि मुझे अपनी पूर्व सेवाओंका काफ़ी पुरस्कार नहीं मिला। इसीसे वह सीजरके साथ आफ्रिका नहीं गया। सीज़र भर्त्सना आदिके द्वारा उसके चालचलनपर नियंत्रण भी रखने लगा। अब उसने विवाह करनेका विचार कर राजविद्रोही क्लोडियसकी विधवा फुलवियाको पसन्द किया। यह स्त्री घरके कामोंका नाम तक न लेती थी और केवल अपने पतिपर ही शासन चलानेसे सन्तुष्ट न होकर शासकों और सेनापतियोंपर भी हुकूमत करना चाहती थी। ऐण्टोनीको भार्याभक्त बनानेके निमित्त क्लिओपेट्रा फुलवियाके प्रति विशेष रूपसे कृतज्ञ थी। क्लिओपेट्राके साथ सम्बन्ध होनेके पूर्व ऐण्टोनी विनयके पाठमें पूरा अभ्यस्त हो चुका था।

फुलवियाको खुश रखनेके लिए ऐण्टोनी तरह तरहके आनन्द दायक मूर्खतापूर्ण कार्य किया करता था। जब स्पेनमें विजय प्राप्त कर सीजर रोम लौट रहा था, तब ऐण्टोनी तथा और भी बहुतेरे लोग उसकी अग-

यानी करने गये। उसी समय यह अफवाह उड़ी कि सीज़रका वध कर शत्रु इटलीपर चढ़े आ रहे हैं। ऐण्टोनी फौरन रोम चला आया और नौकरका भेष बना कर यह बहाना किया कि मैं ऐण्टोनीका पत्र फुलवियाके पास लाया हूँ। वह अपना सिर ढँके हुए था। सामने उपस्थित किये जाने पर फुलवियाने पूछा कि 'ऐण्टोनी सकुशल तो हैं न? इस प्रश्नका कोई उत्तर न देकर उसने चुपचाप एक पत्र उसके हाथमें दे दिया और जब वह इसे खोलने लगी तो उसके कन्धोंपर हाथ डालकर उसका चुम्बन किया। इसी प्रकारके बहुतसे विनोदपूर्ण कार्य वह किया करता था।

जब सीज़र स्पेनसे लौटा तो बहुतेरे प्रमुख नागरिक कई मंजिल आगेसे उसकी अगवानीके लिए गये, पर सीज़रने विशेष सम्मान ऐण्टोनीका ही किया। उसने उसे अपने ही रथमें स्थान देकर उसका गौरव बढ़ाया। ब्रूटस अलबिनस और आक्टेवियस सीज़रकी भतीजीका लड़का, जो बादमें रोमका सम्राट् हुआ—इनके पीछे पीछे आते थे। पाँचवीं बार प्रधान शासक बनाये जाने पर सीज़रने ऐण्टोनीको सहायकका पद दिया पर सीज़र स्वयं डोलाबेलाको अपने पदपर अधिष्ठित कर पृथक् होना चाहता था, इसलिए उसने कुलीन-सभापर अपना मन्तव्य प्रकट कर दिया। ऐण्टोनीने डोलाबेलाकी भरपूर निन्दा कर इस प्रस्तावका घोर विरोध किया। डोलाबेलाने भी बदलेमें ऐण्टोनीको खूब गालियाँ सुनायीं। इन दोनोंके इस अभद्र व्यवहारसे अप्रसन्न होकर सीज़रने इस विषयको स्थगित कर दिया। जब यह प्रस्ताव पुनः उपस्थित किया गया तो ऐण्टोनीने कहा कि पक्षियोंके उड़ानसे यह प्रस्ताव अशुभ-सूचक प्रमाणित होता है *। सीज़र लाचार होकर चुप रह गया, जिससे डोलाबेलाके हृदयको गहरी चोट पहुँची। सीज़र इन दोनोंमें किसीको कुछ नहीं समझता था।

* शकुनशास्त्रीके पदपर अधिष्ठित होनेके कारण ऐण्टोनीको इस प्रकार कहनेका अधिकार था।

जब इन दोनोंके सीजरके विरुद्ध दुरभिसन्धिमें सम्मिलित होनेकी शिकायत उसके पास पहुँची तो उसने निरादरपूर्वक कहा "मुझे इन मोटेताजे मनुष्योंकी कोई परवाह नहीं है, अगर कुछ चिन्ता है तो सिर्फ विवर्ण और क्षीण-काय लोगोंकी।" विवर्ण और क्षीण काय लोगोंसे उसका अभिप्राय ब्रूटस और कैसियससे था जिन्होंने बादमें उसका काम तमाम कर दिया। ऐण्टोनीने अनजाने ही अपने एक कार्यसे इनको इस ओर प्रवृत्त कर दिया। एक बार रोमन लोग लुपरकेलिया† (वृकोत्सव) मना रहे थे। सीजर ऊँचे मंचपर बैठ कर दौड़ देख रहा था। इस उत्सवमें कई कुलीन नवयुवक तथा उच्च शासक बदनमें तेल लगा लेते हैं और चमड़ेकी पट्टी हाथमें लेकर चारों ओर दौड़ते हैं और जो मिलता है उसे खेलमें पीटते भी हैं। ऐण्टोनी भी दौड़में शामिल हुआ था पर उसने इस उत्सवकी विधियोंपर कुछ ध्यान न देकर एक मुकुटमें लँपेट वृक्षकी जयमाला लपेट ली और मचके पास दौड़ कर चला गया। वहाँ उसने मित्रोंसे ऊपर उठाये जाकर, सीजरको राष्ट्रपति मानते हुए, वह मुकुट पहिनाना चाहा। सीजरने इसे धारण करनेमें अनिच्छा प्रकट की। इसपर जनताने खूब हर्षध्वनि की। ऐण्टोनी हठ करता गया पर सीजर बराबर इनकार करता रहा। ऐण्टोनीको तो उसके मित्रगण प्रोत्साहन दे रहे थे और सीजरका समर्थन जनता कर रही थी। बात यह थी कि रोमन लोग राजकीय शक्तिजन्य सभी बातोंको सहन कर सकते थे पर वे राजाके नामसे ही, उसे अपनी स्वाधीनताका विघातक समझ कर, डरते थे। इस व्यवहारसे अत्यन्त दुःखित होकर सीजरने अपनी गर्दन झुका कर कहा—"मैं अपनी जान देनेको तैयार हूँ, जो चाहे मेरा अन्त कर दे।" अन्तमें वह मुकुट उसकी एक मूर्तिको पहना दिया गया, लेकिन जनदासकोंने इसे उतार लिया। इसपर जनता इनके पीछे पीछे हर्षध्वनि करती हुई इनके घर तक गयी। पर सीजरको यह बात बहुत बुरी लगी, जैसा कि बादमें

† देखिए रोमुलस पृष्ठ ४६, ४७

स्पष्ट हो गया, क्योंकि उसने सभी जन शासकोंको पृथक् कर दिया। इन घटनाओंसे ब्रूटस और केसियसको अपने प्रयत्नमें बहुत सहायता और प्रोत्साहन मिला। वे ऐण्टोनीको भी अपने इस कार्यमें सहायक बनाना चाहते थे पर सिर्फ ट्रेबोनियस इसका विरोधी था। उसने उन्हें बतलाया कि सीजरकी अगवानीके लिए जाते समय मैं प्रायः उसीके साथ था, मैंने इस कार्यके सम्बन्धमें संकेत द्वारा उससे कहा भी पर उसने इस भेदको न खोलते हुए भी बराबर अपनी असम्मति प्रकट की। इस पर यह प्रस्ताव किया गया कि सीजरके साथ ही साथ ऐण्टोनीका भी काम तमाम कर दिया जाय, पर ब्रूटसने इसका विरोध कर कहा कि न्याय और विधानके समर्थनमें जो कार्य किया जाता है उसके साथ अन्यायका सम्पर्क नहीं होना चाहिए। इसके अलावा ऐण्टोनीकी वीरता और पदाधिकारसे वे लोग भय भी खाते थे। अन्तमें यह निश्चय हुआ कि घरमें सीजरका काम तमाम करते समय ऐण्टोनीको बाहर ही किसी बहानेसे बातचीत करनेमें उलझा कर रोक लिया जाय।

सीजरकी हत्या होने पर ऐण्टोनी दासके भेषमें वहाँसे भाग निकला। उसने यह देख कर कि षडयन्त्रकारी केपिटोल (बृहस्पति देवके मन्दिर) में एकत्र हैं और हत्याकाडकी तरफ उनकी प्रवृत्ति नहीं है, उनको अपने यहां आमंत्रित किया तथा अपने पुत्रको प्रतिभूस्वरूप भेज दिया। रातको केसियसने उसके साथ और ब्रूटसने लेपिडसके साथ भोजन किया। दूसरे दिन कुलीन सभाको आमन्त्रित कर उसने क्षमादानका और ब्रूटस तथा कैसियसको प्रान्तोंका शासनाधिकार देनेका प्रस्ताव किया जिसे सभाने स्वीकार भी कर लिया। इस प्रकार उसने ऐसी कठिन परिस्थितिको नामवरी के साथ सँभाल लिया और रोमको गृहयुद्धसे बचाकर अपनी राजनीतिज्ञता का परिचय दिया। पर गौरवमदने उसे इस विचार मार्गसे विचलित कर दिया। उसे यह अनुभव होने लगा कि यदि मैं अपने लोकप्रभावसे ब्रूटसको नीचा दिखा सकूँ तो रोममें मैं ही सर्वश्रेष्ठ हो जाऊँ। इस

विचारसे प्रेरित होकर उसने न्यायालयमें सीजरका शव प्रदर्शित किये जाने पर अन्त्येष्टिके समयका भाषण प्रारंभ किया। सीजरकी प्रशंसासे लोगोंको प्रभावित होते देख कर उसने हत्या सम्बन्धी करुणोत्पादक वार्तोंके वर्णनसे उन्हें और भी द्रवित करनेका प्रयत्न किया। भाषण समाप्त करते समय उसने रक्तरंजित और शस्त्र विदीर्ण वस्त्रको शवसे उतार लिया तथा ऊपर उठा कर सबको दिखलाया। साथ ही साजिश करनेवालोंको बदमाश और हत्यारा भी कह डाला। लोगोंपर इसका ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने न्यायालयके टेबुलों और बेंचोंको तोड़ कर अन्त्येष्टिके लिए चिता सजायी। दाह-संस्कार विधिवत् हो जाने पर चितासे जलती लकड़ियाँ खींच कर वे षडयंत्रकारियोंके मकानोंपर हमला करनेके लिए चल पड़े।

ब्रूटस और उसके दलके लोग नगर छोड़ कर भाग निकले और सीजरके मित्र ऐण्टोनीसे आ मिले। सीजरकी विधवा कलपूर्नियाने अपना सारा खजाना—चार हजार टैलेंट—ऐण्टोनीको सौंप दिया। सीजरके सभी कागज जिनमें उसके भावी कार्यक्रमका ब्योरा था उसे दे दिये गये। उसने बड़ी बुद्धिमत्ताके साथ इन चीजोंका उपयोग किया। उसने अपनी ओरसे कुछ नामोंको जोड़ कर कुछ मित्रोंको शासक और कुछको कुर्सील-सभाका सभ्य बना दिया। कुछ निर्वासितोंको बुला लिया और कुछको कारागारसे मुक्त कर दिया। इन सब कार्योंके सम्बन्धमें उसने यह कह दिया कि सीजरकी ऐसी ही आज्ञा थी। इस समय ऐण्टोनीका ही सर्वोपरि अधिकार था—वह स्वयं प्रधान शासक था, उसका एक भाई उप शासक (प्रेटर) और दूसरा जनशासक (ट्रिब्यून) था।

सीजरके उत्तराधिकारी आक्टेवियसके अपोलोनियासे वापस आनेके समय रोमकी यही हालत थी। सबसे पहले उसने सीजरके मित्र ऐण्टोनीसे मिल कर रुपये तथा स्तूपधन आदिके सम्बन्धमें कहा। पहले ऐण्टोनीने इसपर कुछ ध्यान नहीं दिया और कह दिया कि तुम्हारे लिए सीजरकी सम्पत्तिका प्रबन्धक बननेकी चेष्टा करना निरा पागलपन

है। तुम्हारे मित्रोंको चाहिये कि वे तुम्हें नेक सलाह देकर तुम्हें इस काममें रोकें।

पर आक्टेवियस सीज़र भी चुप रह जानेवाला आदमी न था। ऐण्टोनीने उसका अपमान करनेमें कोई बात उठा नहीं रखी। जनशासकके पदके लिए दरख्वास्त करने पर ऐण्टोनीने उसका विरोध किया। सिनेटने सीज़रको सुनहली कुर्सीपर बैठनेका अधिकार दे रखा था। जब आक्टेवियसने इसका उपयोग किया तो ऐण्टोनीने उसे जनताको प्रसन्न करनेके प्रयत्नसे बाज न आनेकी हालतमें क़ैद कर लेनेकी धमकी दी। आक्टेवियस सिसरो और ऐण्टोनीके अन्यान्य शत्रुओंसे मिल गया और इनके ज़रिये उसने सिनेटमें भी अपना सिक्का जमा लिया। धीरे धीरे अनुभवी सैनिक भी उसके पक्षमें आने लगे। यह सब देख कर ऐण्टोनीने उसके साथ सुलह कर लेनेमें ही अपनी भलाई समझी।

सुलह हुई और शीघ्र ही इसका अन्त भी हो गया। उसी रात ऐण्टोनीने स्वप्न देखा कि मेरे दाहिने हाथपर बिजली गिरी है। कुछ दिन बाद उसे यह भी मालूम हुआ कि आक्टेवियस मेरी जान लेनेकी फ़िक्रमें है। आक्टेवियस सीज़रने अपनी निर्दोषता प्रमाणित करनेकी चेष्टा की, पर उसकी बातोंका विश्वास नहीं किया गया। फल यह हुआ कि दोनोंकी शत्रुता पुनः ज्योंकी त्यों हो गयी। अब ये दोनों बाहरकी पल्टनोंको उपहार और प्रलोभन द्वारा एक दूसरेसे पहले पहुँच कर अपनी ओर लानेके प्रयत्नमें चले।

उस समय सिसरोका नगरपर बहुत अधिक प्रभाव था। उसने जनताको ऐण्टोनीके विरुद्ध कर दिया और उसे देशका शत्रु घोषित करने, उपशासक सम्बन्धी दंड आदि चिन्होंको छोटे सीज़र (आक्टेवियस) को दिलाने और उसे इटलीसे बाहर खदेड़नेके लिए प्रधान शासकोंको आदेश देनेके लिए कुलीन-सभाको बाध्य किया। मोडेनाके निकट दोनों सेनाओंका सामना हुआ। आक्टेवियस सीज़र भी इस युद्धमें उपस्थित था।

साथ गुप्त मंत्रणा करनेके विचारसे इन लोगोंने लीलियस और क्लोडियस नामक दो व्यक्तियोंको स्त्रीके भेषमें उसके पास भेजा। इन लोगोंने ऐण्टोनीको लेपिडसपर आक्रमण करनेकी राय दी और यह विश्वास दिलाया कि हम लोग काफी संख्यामें केवल स्वागत ही करनेके लिए तैयार नहीं रहेंगे बल्कि यदि आप चाहें तो लेपिडसको मार भी डालेंगे। ऐण्टोनीने दूसरी बात पसन्द नहीं की। दूसरे दिन उसने अपनी सेनाके साथ नदी पार की जो उसके और लेपिडसके बीचमें पड़ती थी। लेपिडसके सैनिकोंको अपनी ओर बराबर हाथ बढ़ाते और मोर्चेबन्दीसे बाहर निकलते देख कर ऐण्टोनीको बड़ी तसल्ली हुई।

लेपिडसके शिविरपर अधिकार हो जाने पर ऐण्टोनीने उसके साथ सज्जनतापूर्वक बर्ताव किया। उसने पिता कह कर उसका अभिवादन किया और वस्तुतः सब अधिकार उसके हाथमें होते हुए भी लेपिडसका अधिनायकका पद और सम्मान पूर्ववत् रहने दिया। उसके इस व्यवहारसे प्रसन्न होकर प्लैंकस, जो उससे थोड़ी ही दूरपर एक महती सेनाके साथ था, उससे आ मिला। इस प्रकार ऐण्टोनी एक बार पुनः शक्तिसम्पन्न हो इटली लौटा। इस समय उसके साथ सत्रह पैदल पलटनें और दस हजार अश्वारोही थे। इसके अलावा उसने गॉलमें अपने मित्र वैरियसकी अध्यक्षतामें छः पलटनें रख छोड़ी थीं।

आक्टेवियसने यह देख कर कि सिसरोका उद्देश्य राष्ट्रमण्डलको पुनः स्वाधीन बनाना है, उसका साथ छोड़ दिया और ऐण्टोनीसे समझौता कर लिया। ये दोनों लेपिडससे मिले और फिर नदीके एक छोटे-से टापूमें तीनोंकी मंत्रसमिति बैठी। इन लोगोंने मौरूसी जायदादकी तरह साम्राज्यका आपसमें बँटवारा कर लिया। इसमें उन्हें किसी कठिनाईका सामना नहीं करना पड़ा। कठिनाई तो इस प्रश्नके सम्बन्धमें थी कि किसका वध किया जाय और कौन छोड़ दिया जाय, क्योंकि इनमेंसे प्रत्येक अपने मित्रोंकी रक्षा कर शत्रुओंका नाश करना चाहता

था। अन्तमें शत्रुओंका नाश करनेकी इच्छाने मित्रोंकी रक्षा करनेके भावको दबा दिया। परिणाम यह हुआ कि आक्टेवियसने सिसरोको ऐंटोनीके, और ऐंटोनीने अपने मामा ल्यूशियस सीज़रको आक्टेवियसके ज़िम्मे कर दिया, ऐपिडसको स्वयं ही अपने भाई पॉलसका काम तमाम करना पड़ा। कुछ लोगोंका कथन है कि पहले दोनों व्यक्तियोंने पाल्सके वधका काम लेपिडसके ही सुपुर्द किया था पर उसने उसे इन्हीं लोगोंके जिम्मे कर दिया। मेरी समझमें इस प्रकारका निष्ठुर और बर्बर जातियों जैसा वध-व्यापार कभी न हुआ होगा। शत्रुसे मित्रका विनिमय कर एक ही साथ मित्र और शत्रु दोनोंका नाश किया गया। मित्रोंका वध तो अत्यन्त ही भयङ्कर कार्य था, क्योंकि इसके लिए शत्रुता या द्वेषका भी बहाना नहीं था।

गुट कायम होने पर सैनिकोंने विवाह सम्बन्ध द्वारा इसे दृढ़ करनेकी इच्छा प्रकट की। इसके अनुसार सीजरका विवाह ऐन्टोनीकी पुत्री क्लोडियासे होना निश्चित हुआ। यह तै हो जाने पर वध्य व्यक्तियोंकी सूची तैयार की गयी जो तीन सौकी संख्यापर पहुँच गयी। सिसरोका वध होने पर ऐन्टोनीने उसका सिर और दाहिना हाथ, जिससे उसने फिलिपिक्स* नामक ग्रन्थ लिखा था, काट कर लानेकी आज्ञा दी। इन्हें देख कर वह हँसने और प्रसन्नता प्रकट करने लगा। आँखें तृप्त कर लेने पर उसने इन्हें न्यायालयके मंचपर रखनेके लिए भेज दिया। शवको इस प्रकारसे अपमानित कर उसने अपनी शक्ति और तत्प्रदत्त अधिकारोंका दुरुपयोग ही किया। जब हत्यारोंने ऐंटोनीके मामा ल्यूशियस सीजरका पीछा किया तो वह भाग कर अपनी बहिनके घरमें घुस गया। हत्यारोंने दीवार तोड कर घरमें प्रवेश किया। वे लोग कमरेमें जबरदस्ती घुसना ही चाहते थे कि उसकी बहिन हाथ फैला कर दर्वाजेपर खडी हो गयी और कहने लगी कि

---

* इस ग्रन्थमें सिसरोने ऐण्टोनीके विरुद्ध किये गये अपने चौदह भाषण लिपिबद्ध किये थे।

मैं तुम्हें ल्यूशियस सीजरका वध कदापि नहीं करने दे सकती, जबतक तुम स्वयं मेरा वध नहीं कर डालते, जो तुम्हारे सेनापतिकी जननी हूँ। इस उपायसे उसने अपने भाईको बचा लिया।

रोमन लोग इस त्रिगुटको बड़ी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। सबसे अधिक निन्दा ऐण्टोनीकी होती थी क्योंकि एक तो वह अवस्थामें सीजरसे और अधिकारमें लेपिडससे बड़ा हुआ था, दूसरे कंडिनाइयोंके जालसे मुक्त होने पर वह पुन दुर्व्यसनोंका शिकार हो गया था। पाम्पी महान् जैसे संयमी, विनयी और तीन विजय-जुलूसोंसे गौरवान्वित व्यक्तिके भवनमें रहनेके कारण उसकी विलासिता तथा कामुकता और भी लोगोंकी घृणाका कारण हो गयी थी। शासकों, अधिनायकों तथा राजदूतोंके लिए उसके घरमें प्रवेश पाना दुस्तर था, पर नटों, बाजीगरों, और मद्यप चाटुकारोंके लिए उसका द्वार बराबर खुला रहता था। लूट द्वारा प्राप्त अधिकांश धन इन्हीं लोगोंकी भेंट होता था। जनता यह देख कर जलभुन कर खाक हो जाती थी। त्रिगुटने धन प्राप्त करनेमें बड़ी धींगाधींगीसे काम लिया। दंडित व्यक्तियोंकी जायदादें जप्त कर बेच दी गयीं और मिथ्यारोप द्वारा उनकी विधवाएँ तथा सन्तानें उनसे वंचित कर दी गयीं। जनतापर अनुचित करभार लाद दिया गया। यह पता लगने पर कि देवदासियोंके पास विदेशियों तथा नागरिकोंकी धन राशि जमा है, वह उनसे बलपूर्वक छीन ली गयी। निदान ऐंटोनीकी बेहद फजूल खर्चीकी ही तरह उसकी धनलोलुपता देख कर सीजरने कोषका बटवारा करा लिया, इसके साथ ही सेना भी बाँट ली गयी। ऐंटोनी और सीजरने ब्रूटस और कैसियसके विरुद्ध यात्रा की और रोमका शासनकार्य लेपिडसके सिपुर्द कर दिया गया।

शत्रुओंके सम्मुख पहुँचने पर ऐंटानीने कैसियसके और सीजरने ब्रूटसके आमने सामने डेरे डाले। सीजरसे विशेष रूपसे कुछ करते धरते न बन पड़ा पर ऐण्टोनीको अपने प्रयत्नमें बहुत कुछ सफलता मिली।

सीज़रने युद्धसे भाग कर किसी प्रकार अपनी जान बचायी, पर इस सम्बन्धमें उसने अपने ग्रंथमें लिखा है कि एक मित्रके स्वप्नके कारण मैं युद्धसे हट गया। कैसियसको ऐण्टोनीने परास्त कर दिया। कुछ लोगोंका कहना है कि युद्धमें ऐंटोनी उपस्थित नहीं था, बादमें पीछा करनेवालोंके साथ हो गया। कैसियसको ब्रूटसकी विजयका कुछ भी पता न था, इससे निराश हो कर उसने अपने एक मुक्त दास द्वारा अपना वध करा लिया। इसके कुछ ही दिन बाद दूसरा युद्ध हुआ, जिसमें ब्रूटस भी पराजित हो गया। उसने भी ग्लानिके कारण आत्महत्या कर ली। सीज़र इस समय अस्वस्थ था, अतः पहली विजयकी तरह इस विजयका भी सारा श्रेय ऐण्टोनीको ही मिला। ब्रूटसके शवपर खड़े होकर उसने उसके प्रति कुछ अपशब्द भी कहे, क्योंकि उसने उसके भाई केयसको मिसरोकी हत्याके बदले मकदूनियामें मार डाला था। ऐसा प्रतीत होता है कि ऐंटोनी अपने भाईके वधके सम्बन्धमें ब्रूटसकी अपेक्षा हार्टेन्सियसको अधिक दोषी समझता था, क्योंकि उसने अपने भाईके समाधि-स्थानपर उसके वध करनेकी आज्ञा दे दी। उसने ब्रूटसके शवपर अपना बहुमूल्य लबादा डाल कर दाह-संस्कारका कार्य एक मुक्त दासके सुपुर्द कर दिया। पर इस व्यक्तिने शवके साथ लबादेको न जलाकर उसे अपने लिए रख छोड़ा और संस्कारके लिए जो रकम मिली थी उसमेंसे भी बहुत कुछ बचा लिया। इस अपराधमें ऐण्टोनीने उसे भी प्राणदंड दिया।

अब सीज़र रोम लाया गया। किसीको उसके अधिक दिनोंतक जीवित रहनेकी आशा न थी। पूर्वीय प्रान्तोंपर चेहरी लगानेके विचारसे ऐण्टोनीने एक महती सेनाके साथ यूनानमें प्रवेश किया। प्रत्येक सामान्य सैनिकको पाँच हज़ार ड्रैकमा देनेकी प्रतिज्ञा की गयी थी, इसलिये कर लगाना आवश्यक हो गया था। उसने यूनानियोंके प्रति व्यवहारमें विवेक और गंभीरतासे काम लिया। पंडितोंके वादविवाद, सार्वजनिक आमोद-प्रमोद एवं धार्मिक कृत्योंमें भी वह भाग लिया करता था और निष्पक्ष होकर

न्याय करता था। यूनानका प्रेमी—विशेष कर अथेंसका प्रेमी कहलानेसे जिसे उसने अनेक वस्तुएँ समर्पित की थीं, उसे बड़ी प्रसन्नता होती थी। मेगारा-निवासी उसपर यह प्रकट करना चाहते थे कि हमारे पास भी उसके देखने योग्य पदार्थ हैं, अत उन्होंने अपना परिषद् भवन दिखलानेके निमित्त उसे आमंत्रित किया। जब वह भवन देख चुका, तब लोगोंने इस सम्बन्धमें उसकी सम्मति चाही। उसने कहा कि यह भवन संकुचित और जीर्ण है। उसने पाइथियन अपोलोके मन्दिरकी पैमाइश करायी मानो इसकी मरम्मत कराना चाहता हो और सचमुच उसने सिनेटसे ऐसी इच्छा प्रकट भी की थी।

ल्यूशियस सेनसोरिनसको यूनानमें रख कर वह एशिया चला गया और वहाँ जा कर जहाँ जहाँ कोई बड़ी धनराशि विद्यमान होनेकी खबर उसे मिली, वहाँ वहाँ जा कर उसपर अपना अधिकार कर लिया। राजा लोग उसके द्वारपर हाजिरी देते थे और रानियाँ उसकी कृपा प्राप्त करनेके लिए उपहार देने तथा उसकी दृष्टिमें सुन्दर मालूम पड़नेके प्रयत्नमें चढ़ा ऊपरी करती थीं। इस प्रकार उधर सीजर रोममें क्रान्तियों और युद्धोंके मारे परेशान था और इधर ऐण्टोनी, कोई कार्य न होनेके कारण, अपने पूर्व परिचित विलासितामय जीवनका पुन स्वागत कर रहा था। उसके दरबारमें नाचने-गानेवालों और भाँडोंका जमघट लगा रहता था।

ऐण्टोनीके एफेससमें प्रवेश करने पर स्त्रियाँ वारुणी देवीकी सेविकाओंकी पोशाकमें और पुरुष तथा लड़के गन्धर्व देवकी पोशाकमें उसके आगे आगे चलते थे। सारे नगरमें इस प्रकारकी सजावट हुई थी, मानो मदनोत्सव मनाया जा रहा हो। सर्वत्र बक्कसदेव (विलासदेव) के नामसे उसका स्वागत किया जाता था।

कुछ लोगोंके लिए तो वह वस्तुत बक्कस ही था, पर और लोग उसे जंगली एवं निठुर समझते थे, क्योंकि कई कुलीनोंकी सम्पत्ति छीन कर उसने चाटुकारों और भुक्खड़ोंको दे डाली। बहुतसे जीवित लोग

मृत करार दिये गये और उनकी सम्पत्ति जप्त करनेका काम गुर्गोंके सुपुर्द कर दिया गया। सिर्फ एक बार बढ़िया भोजन तैयार करनेके उपलक्ष्यमें उसने एक रसोइयेको एक मैगनेशियन नागरिककी सारी रियासत पारितोषिक रूपमें दे दी। जब उसने दूसरी बार प्रजापर टैक्स लगानेकी इच्छा प्रकट की, जनताके प्रतिनिधि हाइब्रियसने मोटे शब्दोंमें कहा "यदि आप सालमें दो बार कर लेना चाहते हैं तो कृपया हमारे लिए दो ग्रीष्म कालों और दो बार फसल काटनेकी भी योजना कर दीजिये।" फिर कुछ कटुताके साथ उसने कहा 'एशियाने आपको दो लाख टैलेंट दिये हैं। यदि वह रकम आपको न मिली हो तो अपने सभासदोंसे दर्याफ्त करें और यदि मिलने पर खर्च हो गयी हो तो इसके लिए हम लोग क्या करें? हम अपनी स्थितिसे लाचार हैं।" इन वाक्योंने ऐण्टोनी-को मर्माहत कर दिया। बात यह थी कि उसके नामपर बहुतसे ऐसे काम हो जाते थे जिनका उसको पता भी नहीं लगता था। इसका कारण उस-का आलस्य न था, प्रत्युत यह था कि वह अपने पार्श्ववर्तियोंकी बातोंका अविश्वास नहीं कर सकता था। वह अत्यन्त सरल स्वभावका था। उसे अपने दोषोंका ज्ञान शीघ्र नहीं होता था। मालूम हो जाने पर वह बहुत अधिक पश्चात्ताप करता और क्षतिग्रस्त व्यक्तियोंसे माफी माँगनेके लिए बराबर तैयार रहता था। वह आवश्यकतासे अधिक इनाम दिया करता था और कभी कभी कठोरताके साथ दंड भी देता था, किन्तु साधारणतया कठोरताकी अपेक्षा उदारताकी ही मात्रा अधिक बढ़ी हुई थी। वह दूसरों-के साथ खूब छूट किया करता था और स्वयं भी सुननेके लिए तैयार रहता था। स्वतंत्रताके साथ बात चीत करनेका उसका यह स्वभाव ही उसकी अनेक आपत्तियोंका मूल कारण था। उसे स्वप्नमें भी विश्वास न था कि जो लोग इतनी आजादीके साथ मुझसे हँसी दिल्लगी कर सकते हैं, वे मुँह-देखी कहेंगे और महत्वपूर्ण कार्योंमें भी मुझे धोखा देंगे। उसे इस बातका न था कि चाटुकार लोग अपनी बातोंमें निर्भीकताका भी कुछ पुट

रख दिया करते हैं। वे अच्छी तरह जानते थे कि आज़ादीसे मिलनेका फल यह होगा कि वह हमारी सहमति या आज्ञाकारिताको एक तरहकी शिष्टता मात्र न समझ कर हमारे दृढ़ विश्वासही सूचक ही समझेगा।

इस प्रकारका ऐण्टोनीका स्वभाव था। इसी समय क्लिओपेट्राके प्रेमने बीचमें आकर उसके सर्वनाशका कार्य पूरा कर दिया। इससे उसके दुर्गुण जो सुषुप्त अवस्थामें पड़े हुए थे, जाग्रत् हो उठे, उसकी विषयाग्नि प्रज्वलित हो उठी और उसकी रही सही धार्मिक प्रवृत्ति भी बिलकुल नष्ट हो गयी। क्लिओपेट्रापर युद्धमें कैसियसकी सहायता करनेका दोषारोप किया गया था, इसलिये पार्थियन लोगोंके विरुद्ध यात्रा करने पर ऐण्टोनीने उक्त आरोपके सम्बन्धमें जाँच करनेके लिए क्लिओपेट्राको सिलीशियामें बुलवाया। दूतने उसका सौन्दर्य और ठाटबाट देखनेके साथ ही समझ लिया कि ऐसी महिलाके लिए ऐण्टोनीकी अप्रसन्नतासे डरनेका कोई कारण नहीं है, बल्कि यही उसके हृदयपर अपना पूरा प्रभाव जमा लेगी। अतः उसने शिष्टता प्रदर्शन कर सजधजके साथ ऐण्टोनीसे सिलीशियामें मिलनेकी प्रार्थना की और उसे विश्वास दिलाया कि ऐण्टोनी अत्यन्त नेक अधिनायक है, उससे डरनेकी कोई बात नहीं है। दूतके इन शब्दोंसे तथा अपनी सौन्दर्य-शक्तिके कारण जिसके द्वारा उसने सीज़र और युवक पॉम्पीको मुग्ध किया था, उसे इतना आत्मविश्वास हो गया कि ऐण्टोनीके हृदयपर विजय प्राप्त करनेमें उसे किसी तरहका सन्देह नहीं रहा। जिस समय सीज़र और पॉम्पी उसके कृपापात्र थे उस समय उसकी अवस्था थोड़ी थी और साथ ही उसे अनुभव भी न था। पर ऐण्टोनीसे वह उस अवस्थामें मिलनेवाली थी जब कि सौन्दर्यके साथ परिपक्व बुद्धि भी मौजूद रहती है। अपने विशाल राज्य और मर्यादाके अनुरूप धन, आभूषण और उपहार लेकर, अपने शारीरिक सौन्दर्यका ही विशेष रूपसे भरोसा करते हुए, उसने सिलीशियाकी यात्रा आरम्भ कर दी।

ऐण्टोनी और उसके मित्रोंके जल्दी पत्र मिलने पर उसने उनकी

उपेक्षा की और यात्रामें कोई शीघ्रता नहीं की। वह एक शानदार पोत पर सवार हो सीडनस नदीसे यात्रा कर रही थी। पोतके पिछले भागपर सोना चढ़ा हुआ था, बादवान बैंगनी रेशमी कपड़ेका था, और डाँड़ चाँदी-के बने थे, जो बाजेके तालपर चलाये जाते थे। रानी रति जैसा सुन्दर वेष धारण कर एक चँदोवेके नीचे बैठी हुई थी जिसपर सोनेका असाधारण काम किया गया था। मंचके दोनों ओर कामदेवके सदृश दो लड़के खड़े होकर पंखा झल रहे थे। उसकी दासियाँ भी परम सुन्दरी थीं और इनकी पोशाक देवकन्याओं तथा सौन्दर्यकी अधिष्ठात्री देवियोंकी सी थी। ये जहाज चलानेमें भी सहायता करती थीं। अनेक सुगन्धित पदार्थोंकी महँक पोतोंकी ओरसे निकल कर किनारोंपर फैल रही थी जहाँ दर्शकोंकी भीड़ लग गयी थी। उसे देखनेके लिए नगरके इतने लोग चले आये थे कि ऐण्टोनी न्याय-मंचपर एकाकी ही रह गया था। ऐण्टोनीने क्लिओपेट्राको भोजनके लिए अपने यहाँ निमंत्रित किया पर उसके यह प्रकट करने पर कि पहले ऐण्टोनीको ही मेरे यहाँ आना और मेरे आगमन पर सौजन्य प्रदर्शन करना चाहिए, उसने ऐसा ही किया। उसकी शानदार तैयारी देख कर वह बड़ा प्रसन्न हुआ, विशेष कर उस दीपमालाको देख कर तो उसके आश्चर्यका ठिकाना ही न रहा जो एक ही साथ अनेक शाखाओंको झुका देनेसे दृष्टिगोचर हो उठी थी। शाखाओंपर दीपकोंकी सजावट इस तरह की गयी थी कि उनसे वर्गाकार या वृत्ताकार चित्र बन जाते थे। दूसरे दिन ऐण्टोनीने उसे भोजनके लिए निमंत्रित किया और तैयारी आदिमें क्लिओपेट्राको मात करना चाहा, पर उसे शीघ्र ही अपनी हीनताका पता चल गया। ऐण्टोनीका मजाक भद्दा और फौजी ढंगका देख कर क्लिओपेट्राने भी वही ढंग अख्तियार किया और उसके साथ बर्ताव करनेमें संकोच आदिको ताकपर धर दिया। वस्तुतः वह इतनी सुन्दर न थी कि और किसीके साथ उसके सौन्दर्यकी तुलना न हो सके या सभी देखनेवाले उससे अवश्य ही प्रभावित हो जायँ, पर उसकी बुद्धि इतनी

तीव्र और तौर-तरीके इतने आकर्षक थे कि सम्पर्कमें आनेवाला कोई भी व्यक्ति अपनेको उसके प्रभावसे नहीं बचा सकता था। उसका कण्ठ स्वर अत्यधिक मधुर था। जब वह बोलती थी, तब ऐसा मालूम होता था मानो किसी तंत्रीके तारोंसे मर्यादित स्वर निकल रहा है। उसे कई भाषाओंका ज्ञान था। ऐसा शायद ही कोई राजदूत होगा जिसके साथ वार्तालाप करनेके लिए उसे दुभाषियेकी जरूरत पड़ती रही हो।

ऐण्टोनी उसके मोह पाशमें ऐसा फँसा कि इधर तो उसकी स्त्री फुलविया रोममें शस्त्र धारण कर सीजरका सामना कर रही थी तथा पार्थियन सेना लेबिईनसकी अध्यक्षतामें सीरियामें प्रवेश करने जा रही थी और इधर वह सिकन्दरियामें क्लिओपेट्राके साथ बालकों जैसी क्रीड़ामें अपना सबसे बहुमूल्य पदार्थ—समय—नष्ट कर रहा था। वे प्रतिदिन एक दूसरेसे मिलते थे और उनके सत्कार तथा दावत आदिके लिए जैसी तैयारी होती थी, उसका विश्वास दिलाना कठिन है। अंफीसाके हकीम फिलोटसने, जो उस समय सिकन्दरियामें विद्याध्ययन कर रहा था, मेरे पितामहसे कहा था कि—'ऐंटोनीके एक पाचकसे परिचय होनेके कारण मैं भोजनकी तैयारी देखनेके ख्यालसे एक दिन भोजनालयमें गया तो देखा कि भिन्न भिन्न प्रकारके अनेकानेक खाद्य पदार्थोंके अलावा आठ जंगली सूअर समूचेके समूचे भूने जा रहे हैं। खाद्य पदार्थोंका परिमाण देख कर खानेवालोंकी बृहत् संख्यापर मैंने विस्मय प्रकट किया तो पाचक हँस पड़ा और कहने लगा—खानेवालोंकी संख्या केवल बारह है पर हर एक रिकाबी बारी बारीसे खाना तैयार करके सजायी जाती है। अगर किसी चीजमें एक पलका भी हेरफेर हुआ तो वह चीज बेकार हो जाती है। इसके अलावा ऐंटोनीके समय और रुचिका भ कोई निश्चय नहीं रहता, सम्भव है वह तत्काल भोजन करे, यह भी सम्भव है कि एक घंटेके बाद करे, हो सकता है कि वह मदिरा ही माँग बैठे, यह भी सम्भव है कि वह खाना पीना छोड़ कर गप करनेमें ही लग जाय। इस प्रकार उसके

समयका कोई निश्चय न होनेके कारण हर वक्त भोजन तैयार रखनेकी जरूरत पड़ती है।' कुछ कालके अनन्तर फिलोटस कुलवियासे उत्पन्न ऐण्टोनीके बड़े पुत्रका गृहवैद्य नियुक्त हुआ। जब ऐण्टोनीका पुत्र अपने पिताके साथ भोजन नहीं करता था तो अपने और और मित्रोंके साथ इस हकीमको भी प्रायः अपने दस्तरख्वानपर खिलाया करता था। एक दिन एक दूसरा हकीम दस्तरख्वानपर बहुत ऊँची आवाजमें बोलने और गुस्ताखी करने लगा तो फिलोटसने सोफिस्टोंकी भ्रान्त तर्कप्रणाली—'ज्वरकी किसी किसी अवस्थामें रोगी ठण्डा पानी पी सकता है, जो ज्वर-ग्रस्त है वह ज्वरकी ही किसी न किसी अवस्थामें है, इसलिए ज्वरमें सदा ठण्डा पानी पीना चाहिए" यह कर उसका मुख बन्द कर दिया। यह आदमी बिलकुल अवाक् हो गया, इससे ऐण्टोनीका पुत्र प्रसन्न होकर हँसने लगा। उसने बहुमूल्य पात्रोंकी ओर संकेत कर कहा—'फिलोटस, यहाँ जितनी चीजें नजर आती हैं मैं उन्हें इनामके तौरपर तुम्हें देता हूँ।' फिलाटसने इसके लिए धन्यवाद दिया पर उसकी अवस्थाका ख्याल करते हुए इनामके लिए यह चीजें उसे बहुत अधिक मूल्यकी प्रतीत हुईं। जब एक नौकर इन पात्रोंको एक सन्दूकमें बन्द करके उसके पास मुहर लगानेके लिए लाया तो उसने इनकार कर दिया क्योंकि उसे इन्हें स्वीकार करनेमें भय मालूम हुआ। इसपर उस नौकरने कहा 'तुम डरते क्यों हो? क्या तुम नहीं जानते कि यह इनाम ऐण्टोनीके पुत्रका है जो तुम्हें इसकी तौलके बराबर सुवर्ण दे सकता है। यदि तुम मेरी राय पसन्द करो तो मैं कहूँगा कि तुम इन चीजोंका मूल्य ले लो, क्योंकि सम्भव है, इनमें कुछ ऐसी पुरानी या कारीगरीकी वस्तुएँ हों जिन्हें ऐण्टोनीको पृथक् करनेमें दुःख मालूम हो।" मेरे पितामह कहते थे कि फिलोटस यह कथा प्रायः कहा करता था।

अब क्लिओपेट्राका हाल सुनिए। प्लेटोने चाटुकारिताके केवल चार ही ढंग माने हैं, पर इस रमणीको हजार ढंग मालूम थे। ऐण्टोनी हर्ष या

विसय चाहे जिस स्थितिमें होता, क्लिओपेट्रा उसके मनोरंजनके लिए कुछ न कुछ नयी सामग्री अवश्य प्रस्तुत कर देती थी। वह बराबर उसके सिरपर सवार रहती थी, दिन रातमें उसे कभी अलग नहीं होने देती थी। वह उसके साथ पासा खेलती, मदिरा पान करती, आखेटमें जाती और जब वह शस्त्र-संचालनका अभ्यास करता तो खड़ी खड़ी देखती रहती थी। रातको वह दासीका भेष बना कर नागरिकोंके द्वार या खिड़कीके पास जाकर छेड़खानी किया करती थी। ऐण्टोनी भी दासका भेष बना कर उसके साथ जाया करता था। इस सैरमें उन्हें बेतरह अपमानित और कभी कभी बुरी तरह आहत भी होना पड़ता था। यह सत्य है कि कुछ लोग इस प्रकारके कार्यसे अप्रसन्न थे पर अधिकांश लोगोंके लिए यह मनोरंजन ही था। वे कहा करते—'हम लोग ऐण्टोनीके प्रति बड़े कृतज्ञ हैं क्योंकि वह अपने अभिनयका दुःखांक रोमके लिए सुरक्षित रख कर हास्यांक हम लोगोंको दिखला रहा है।' उसके मूर्खतापूर्ण कार्योंका उल्लेख करना अनावश्यक प्रतीत होता है, फिर भी उसके मछलीके शिकार-की कथा छोड़ देना ठीक न होगा। एक दिन वह क्लिओपेट्राके साथ मछली-का शिकार कर रहा था। क्लिओपेट्राके सामने शिकारमें कामयाबी हासिल न होनेके कारण उसे बड़ी लज्जा हुई, इसलिए उसने अपने नौकरोंको डुबकी मार कर पहलेकी मारी हुई मछली बंसीमें फँसानेके लिए कह दिया। ऐण्टोनीने तीन-चार दिनोंतक इसी युक्तिसे काम लिया, पर क्लिओपेट्रा उसकी यह युक्ति ताड़ गयी। फिर भी ऊपर ऊपर उसने आस पासके लोगोंसे उसकी कुशलताकी बड़ी तारीफ की। उसने दूसरे दिन इस बातको प्रत्यक्ष दिखलानेके लिए उन सबोंको आमंत्रित भी किया। दूसरे दिन दर्शकोंकी भीड़ नावपर इकट्ठी हो गयी। ऐण्टोनीने ज्यों ही बंसी पानीमें लटकायी त्यों ही क्लिओपेट्राने एक गोताखोरको पकायी हुई मछली उसकी बंसीमें फँसानेको कह दिया। ऐण्टोनीने यह समझ कर कि शिकार फँसा हुआ है, डोरी खींच ली। इसपर खूब ठहाका मचा। क्लिओपेट्राने

कहा, "ऐ सेनानायक, यह बंसी और डोर हम फराओंके हिस्सेमें रहने दो, तुम्हारा शिकार नगर, प्रान्त या राज्य है।"

जब वह इस प्रकारकी वाहियातोंमें लीन था, उसी समय उसके पास दो जगहोंसे दूत आये—एक तो रोमसे यह सन्देश लाया कि उसका भाई ल्यूशियस और स्त्री फुल्विया सीज़रसे पराजित हो इटली छोड़ कर भाग गये हैं; दूसरेने यह समाचार दिया कि लेबिएनस और पार्थियनोंने फरात तथा सीरियासे लेकर लीडिया और आयोनिया तक एशियाको आक्रान्त कर रखा है।

इस सन्देशने उसका नशा तोड़ दिया। वह पार्थियनोंका मुकाबला करनेके लिए चल पड़ा और फीनीशियातक गया भी, पर फुल्वियाके करुणापूर्ण पत्रोंने उसका विचार पलट दिया और वह दो सौ पोतोंके साथ इटलीकी ओर बढ़ा। उसके कुछ ऐसे मित्र, जो इटलीसे भाग आये थे, उसे मार्गमें मिल गये। उन लोगोंसे उसे यही मालूम हुआ कि रोमकी गड़बड़ीका मुख्य कारण स्वयं फुल्विया है; उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति हिंसात्मक कार्यों और कलहकी ओर है। इस बार ईर्ष्याके कारण उसकी प्रवृत्ति और भी उत्तेजित हो गयी है, क्योंकि उसे आशा है कि इटलीकी गड़बड़ीके कारण क्लिओपेट्रासे उसका (एण्टोनीका) पिंड छूट जायगा। यह अभागिनी अपने पतिसे मिलनेके निमित्त आगे जा रही थी पर मार्गमें ही उसका देहान्त हो गया।

इस घटनाने सीज़रके साथ समझौता करनेके निमित्त एक अवसर प्रस्तुत हो गया। एण्टोनीके इटली पहुँचने पर सीज़रने शत्रुताका कोई भाव प्रकट नहीं किया। इनके मित्रोंने बीच-बिचाव कर दोनोंमें समझौता करा दिया। पूर्वी प्रान्त एण्टोनीके अधिकारमें, पश्चिमी प्रान्त सीज़रके और आफ्रिका लेपिडसके अधिकारमें रहा। प्रधान शासकके पद स्वयं न स्वीकार करनेकी हालतमें उनकी व्यवस्थाका भार इन्हींके ऊपर रख दिया गया

ये शर्तें सबने स्वीकार की, फिर भी कोई दृढ़तर बन्धन वाञ्छनीय था। दैवयोगसे एक ऐसा अवसर मिल भी गया। सीज़रके आक्टेविया नामकी एक सौतेली बहिन थी। सीज़र इसे बहुत मानता था और वस्तुतः यह स्त्री बड़ी ही सुन्दर एवं गुणवती थी। कुछ ही दिन पहले इसके पति केयस मार्सिलसका देहान्त हो गया था और इधर ऐण्टोनीकी स्त्री फुलवियाका भी देहान्त हो चुका था, इससे विवाह-सम्बन्धकी चर्चा आरम्भ हो गयी। क्लिओपेट्राके साथ साधारण सम्बन्धकी बात तो नहीं, पर वैवाहिक सम्बन्धकी बात ऐण्टोनीने बिलकुल इनकार कर दी। लोकमत आक्टेवियाके साथ विवाहके पक्षमें था। लोगोंको यह आशा थी कि ऐण्टोनीपर आक्टेवियाके सौन्दर्य, सम्मान और बुद्धिका काफी प्रभाव पड़ेगा और सबके सब आपसमें मैत्रीके बन्धनमें बँधे रहेंगे। शर्तें तै हो जाने पर विवाहके निमित्त दोनों रोम गये। कुलीन-सभाने उस समय अपना वह क़ानून, जिसके अनुसार पतिके मरनेके बाद दस मासतक विधवाएँ अपना पुनर्विवाह नहीं कर सकती थीं, स्थगित कर दिया।

पॉम्पीके पुत्र सेक्सटसने, जो उस समय सिसिलीका स्वामी था, इटलीमें तबाही मचा रखी थी और मेनस तथा मेनेक्रेटीज़की अध्यक्षतामें बहुतसे दस्यु-पोतोंको समुद्रपर फैला रखा था जिससे और पोतोंको खुले समुद्रमें प्रवेश करनेका साहस नहीं होता था। रोमसे भागने पर सेक्सटस ऐण्टोनीकी माता और स्त्री (फुलविया) के साथ बड़ी नरमियतसे पेश आया था, इसलिए उसके साथ भी समझौता कर लेना आवश्यक प्रतीत हुआ। मिसेनम अन्तरीपके छोर पर इन तीनोंका सम्मिलन हुआ। सेक्सटसके साथ उसका सामुद्रिक बेड़ा था और ऐण्टोनी तथा सीज़रके साथ स्थल सेना। इसमें यह तै हुआ कि सिसिली और सार्डीनिया सेक्सटसके ही अधिकारमें रहें, बशर्ते कि वह समुद्रको दस्युओंसे खाली कर दे और नियत परिमाणमें कुछ गल्ला रोम भेज दे। इसके अनन्तर उन्होंने एक दूसरेको भोजके लिए निमंत्रित किया।

पहली दावत सेक्सटसकी देनी पड़ी। ऐण्टोनीके यह पूछने पर कि कहाँ बैठकर भोजन किया जायगा, उसने सेनापतिके पोतकी ओर संकेत करते हुए उत्तर दिया "'यहाँ'—बस यही एक पैतृक प्रासाद मुझे अपने पिता पॉम्पीसे मिला है।" उसने उन्हें एक पुलके द्वारा, जो अन्तरीपकी नोकसे लेकर पोत तक बना हुआ था, ले जाकर बड़े आदर सत्कारके साथ भोजन कराया। भोजन करते समय, जब कि ऐण्टोनी और क्लिओपेट्रापर व्यङ्ग कर खूब मजाक हो रहा था, मेनसने आकर धीरेसे सेक्सटससे कहा "यदि आप तार काटनेकी आज्ञा दें तो आप सिसिली और सार्डीनियाके ही नहीं, बल्कि सारे रोम साम्राज्यके अधिपति हो जायँगे।" कुछ देर सोचनेके बाद उसने उत्तर दिया—"मुझसे पूछे बिना ही तुम कर लेते तो बात दूसरी थी, पर अब मैं सन्धिकी प्रतिज्ञा भङ्ग करनेमें असमर्थ हूँ।" इसके पश्चात् ऐण्टोनी और सीजरकी ओरसे दावत हो जाने पर वह सिसिली चला गया।

इस समझौतेके बाद ऐण्टोनीने पार्थियनोंको रोकनेके विचारसे वेण्टीडियसको एशियाकी ओर भेजा और स्वयं सीजरको प्रसन्न करनेके विचारसे स्वर्गीय सीजरका पौरोहित्य स्वीकार कर लिया। राजनीतिक तथा महत्वपूर्ण मामलोंमें दोनों बड़े मेलजोलसे काम करते थे पर आमोद-प्रमोद तथा खेल कूद आदिमें सीजरका बराबर विजयी होना ऐण्टोनीको बहुत खलता था। उसके यहाँ एक शकुन शास्त्री रहता था जो गणित ज्योतिष बहुत अच्छा जानता था। इसने क्लिओपेट्राके साथ अहसान दिखलानेकी गरजसे हो या सचमुच ऐसा समझ कर ऐण्टोनीसे कहा कि "तुम्हारे नक्षत्र स्वयं कान्तिमान् होने पर भी सीजरके नक्षत्रोंके प्रकाशसे आक्रान्त एवं आच्छादित हैं, ऐसी परिस्थितिमें उस युवकसे यथासम्भव दूर रहना ही तुम्हारे लिए श्रेयस्कर है।" रोज रोजकी घटनाएँ भी ज्योतिषीकी बातको सत्य प्रमाणित करती थीं, यहाँ तक कि मुर्गोंकी लड़ाईमें भी सीजरके ही मुर्गोंकी जीत होती थी। इन सब बातोंका ऐण्टोनीपर

ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि वह गृह-प्रबन्धका भार सीजरपर छोड़ कर आक्टेविया और नवजात पुत्रीको साथ लेकर यूनान चला गया।

ऐण्टोनी शीतकाल अथेंजमें व्यतीत कर रहा था। यहीं उसको वेण्टीडियसकी विजयका संवाद मिला। सारे यूनानमें भोज और उत्सव मनाया गया। इस विजयके उपलक्ष्यमें अथेंजमें जो पारितोषिकवाले खेल हुए उनमें स्वयं उसने निरीक्षकका काम किया।

युद्धके लिए प्रस्थान करते समय उसने पवित्र जेतूनकी माला और, एक देववाणीके अनुसार, क्लेपसिड्रा नदीके जलसे भरा हुआ कलश साथमें ले लिया। इस बीचमें पार्थियन राजकुमार महती सेनाके साथ सीरियाकी ओर बढ़ रहा था। मार्गमें ही वेंटीडियसने युद्धमें उसे पराजित कर दिया। इसमें अत्यधिक पार्थियन सैनिक खेत रहे, स्वयं राजकुमार भी मारा गया। लगातार तीन युद्धोंमें पराजित होनेके कारण पार्थियनोंको मीडिया और ईराककी सीमा पार करनेका अब साहस नहीं रहा। ऐण्टोनीके मनमें ईर्ष्या उत्पन्न होनेके भयसे वेंटीडियस पार्थियनोंका पीछा कर और अपना महत्त्व बढ़ाना नहीं चाहता था, इसलिए उसने कुछ ऐसे राष्ट्रोंकी तरफ मुड कर, जिन्होंने रोमके विरुद्ध सिर उठाया था, अधीनता स्वीकार करायी। उसने समोसता नगरपर घेरा डाल कर ऐण्टिओकस-को घेर लिया। उसने अधीनता स्वीकार करते हुए एक हजार टैलेंट देना स्वीकार किया पर ऐण्टोनीने किसी भी शर्तपर सन्धि करनेका निषेध कर दिया। जिसमें लोग यह न कहें कि ऐण्टोनी अपने सहायकोंके ही भरोसे विजयी बना हुआ है, इसलिए उसने स्वयं इस घेरेका संचालन करना चाहा। शर्तें अस्वीकार होने पर अवरुद्ध लोगोंने जी तोड़कर अपनी रक्षाका कार्य आरम्भ किया। फल यह हुआ कि बहुत दिनोंतक घेरा डाले रह कर भी ऐण्टोनी कुछ कर न सका। अन्तमें लाचार होकर केवल तीन सौ टैलेंट पर उसने सन्धि कर ली। ऐण्टोनी स्वयं अथेंज लौट आया। वेण्टीडियसको विजयका जुलूस निकालनेके लिए रोम भेज दिया।

पार्थियनोंपर विजय प्राप्त करनेके उपलक्ष्यमें सर्वप्रथम वेण्टीडियसको ही विजय-जुलूसका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसके वंशका कुछ पता न था, पर ऐण्टोनीके साथ होनेके कारण उसे अपनी योग्यताका परिचय देनेका अवसर मिल गया। यदि वास्तवमें देखा जाय तो वेण्टीडियस जैसे महानायकोंकी ही बदौलत ऐण्टोनीका आतङ्क और नाम फैला हुआ था।

इसके थोड़े ही दिन बाद सीज़रकी बदनीयतीकी खबर पाकर ऐण्टोनीने तीन सौ युद्ध पोतोंके साथ इटलीके लिए प्रस्थान किया। ब्रंडूज़िअमका बन्दरगाह ठहरनेके लिए न मिलने पर वह टारेंटम चला गया। वहाँ आक्टेवियाने, जो तीसरी बार गर्भवती थी, ऐण्टोनीसे अपने भाई सीज़रके पास जानेकी अनुमति ले ली। संयोगवश मार्गमें ही सीज़रसे उसकी भेंट हो गयी। उसने उससे विनयपूर्वक कहा 'आप मेरी विचित्र स्थितिपर ध्यान दें; संसारमें सबसे सुखी महिलाको सबसे भाग्यहीना न बनावें। संसारकी दृष्टि मेरी ही ओर लगी हुई है क्योंकि मैं ऐण्टोनीकी स्त्री और सीज़रकी बहिन हूँ। अगर बिना सोचेविचारे आप दोनों युद्धमें प्रवृत्त हो जायँ तो उसका परिणाम और चाहे जो कुछ हो पर मेरे लिए तो अवश्य ही बुरा होगा।' इस अनुनय विनयसे सीज़रका हृदय पिघल गया और वह शान्तिके विचारोंके साथ टारेंटमकी ओर अग्रसर हुआ। उसके आगमनसे सर्वसाधारणको बड़ा आनन्द हुआ। वे शान्त भावसे प्रेरित इतनी बड़ी जलसेना तथा स्थलसेना और अधिनायकोंका प्रेमपूर्ण व्यवहार देख कर बड़े प्रसन्न हुए। पहले ऐण्टोनीने सीज़रको भोजनके लिए निमंत्रण दिया जिसे उसने आक्टेवियाके लिहाजसे स्वीकार कर लिया। अन्तमें दोनोंमें यह तै हुआ कि सीज़र पार्थिया सम्बन्धी कार्योंके लिए ऐण्टोनीको दो पल्टनें रखने दे और इसके बदलेमें ऐण्टोनी सौ सशस्त्रपोत सीज़रको प्रदान करे। आक्टेवियाने अपने पतिसे और बीस हल्के पोत दिलवाये, और सीज़रसे ऐण्टोनीके लिए एक हज़ार पैदल सैनिक। सीज़रने शीघ्र ही सिसिलीपर अधिकार प्राप्त करनेके निमित्त पॉम्पीके

विरुद्ध यात्रा की और ऐण्टोनी अपनी स्त्री, उसकी सन्तान तथा पहली स्त्री फुल्वियाकी सन्तानको भी सीजरकी रक्षामें छोड़ कर एशियाकी ओर चला।

सीरिया पहुँचने पर क्लिओपेट्राके प्रति उसका प्रेम, जो बहुत दिनोंसे प्रसुप्तावस्थामें पड़ा हुआ था और मालूम होता था कि उसके विवेकके कारण बिल्कुल नष्ट हो गया है, एकाएक जागरित हो गया, संयमकी बागडोर हाथसे जाती रही। उसने अपनी मर्यादा आदिका कुछ खयाल न कर क्लिओपेट्राको सीरिया लानेके लिए त भेज दिया। उसके आने पर उसने बहुतसी बहुमूल्य चीजें भेंटके रूपमें दीं, कई अच्छे अच्छे प्रान्त भी उसे दे डाले जिससे रोमन लोग बहुत अप्रसन्न हुए। यह सत्य है कि उसने कई रङ्कोंको नरेश और कई नरेशोंको रङ्क बना दिया था, पर इसमें रोमनोंके लिए अप्रसन्नता या लज्जाकी कोई बात न थी। उसने क्लिओपेट्रासे उत्पन्न अपने युग्मज पुत्रोंका घरेलू नाम 'सूर्य' और 'चन्द्र' रखा था, यह बात भी उन्हें बेतरह खलती थी। पर अपकीर्तिके कार्मोपर किस प्रकार सुचारुताका रङ्ग चढ़ाया जाता है, यह बात ऐंटोनी भलीभाँति जानता था। अपने कार्योंके समर्थनमें उसने यह दलील पेश की कि रोम-साम्राज्यका महत्व दूसरोंको राज्य प्रदान करनेमें है न कि दूसरोंका राज्य लेनेमें, संसारमें अपने उत्तम रक्तका प्रसार करनेका सबसे अच्छा उपाय यही है कि हर एक स्थानमें राजवंश चलाया जाय, मेरे पूर्वज इसी प्रकार हरकुलिजसे उत्पन्न हुए थे। उसने वंशोत्पत्तिका क्षेत्र एक ही स्त्रीतक सीमित न कर कई स्त्रियोंके सम्बन्ध द्वारा बहुतसे वंशों को चलाया।

जब फ्राटीज अपने पिता हाइरोडीजकी हत्या कर बादशाह बन बैठा, तब बहुतसे पार्थियन सरदार भाग कर ऐण्टोनीके आश्रयमें चले गये। इनमें शक्ति और महत्वकी दृष्टिसे मोनीसस सबसे बड़ा हुआ था। ऐण्टोनीने मोनीससको थेमिस्टाक्लीज और अपनेको फारसका शाहंशाह खयाल

करते हुए उसे सौ न मगर प्रदान किये, पर जब क्रार्टावसे मोर्गीसमयों गुहताका विभाग दिखाया, तो ऐण्टोनीने उसे वापस लौटा लिया। इस अवसरपर उसने फ्रार्टाजको धोखा देनेकी योजना की। मेरवी प्रवृत्ति प्रकट कर उसने सिर्फ उन्हीं झण्डों और चिन्होंको माँगा जो क्रेससके युद्धमें ले लिये गये थे और उन रणबन्दियोंको भी लौटाने-को कहा जो उस समयतक जीवित थे। उसने क्रिओपेट्राको मिस्र भेज कर अरब और आर्मीनियासे होकर यात्रा की। यहाँपर उसके सहायक भी आ मिले जिनमें आर्टावास्डीजकी सेना सबसे बड़ी थी। इस समय ऐण्टोनीकी सेनामें कुल मिलाकर साठ हजार पैदल और दस हजार अश्वा-रोही थे। सहायकोंकी सेना, अश्वारोही मिलाकर, लगभग तीस हजार थी।

इतनी बड़ी सेना, जिसके कारण सारा एशिया त्रस्त हो गया था, क्रिओपेट्राके प्रति उसके प्रेमके कारण, बिल्कुल बेकार साबित हो रही थी। क्रिओपेट्राके साथ शीतकाल व्यतीत करनेके लिए वह आतुर हो रहा था, इसलिए उसने युद्ध आरंभ करनेमें बड़ी जल्दबाजी कर दी। जिस प्रकार जादूके प्रभावमें आया हुआ आदमी जादूगरके ही इशारेपर नाचा करता है, उसी प्रकार ऐण्टोनीका ध्यान सर्वदा क्रिओपेट्राकी ही ओर लगा रहता था। उसे देश विजयकी अपेक्षा क्रिओपेट्राके पास लौट जाना ही अधिक प्रिय था। एक हजार मीलकी यात्रा करनेके बाद उसके लिए उचित तो यह था कि आर्मीनियामें ठहर कर शीतकाल व्यतीत करता जिससे उसके सैनिकोंको काफी विश्राम भी मिल जाता और वसन्तका आरम्भ होने पर पार्थियन सैनिकोंके छावनियोंसे निकलनेके पहले ही, मीडियापर आक्रमण करता, पर वह अपनी धुनमें इतना व्यस्त था कि इतनी देरतक नहीं ठहर सकता था। आर्मीनियाको बायीं ओर छोड़ते हुए उसने एट्रोपटीनी प्रान्तमें प्रवेश किया और सारे प्रदेशको उजाड़ कर दिया। उसने जल्दबाजीमें अपने बड़े बड़े इञ्जिन भी पीछे छोड़ दिये जो अवरोधके लिए परमावश्यक थे और यदि किसी प्रकार वे क्षतिग्रस्त हो जाते तो एशियामें उनकी

मरम्मत भी नहीं हो सकती थी। ये इंजिन तीन सौ गाड़ियोंपर एक टुकड़ीकी देखरेखमें, जिसका अध्यक्ष स्टेटिएनस था, आ रहे थे। ऐण्टोनीने मीडियाके एक प्रसिद्ध नगर फ्राटाका, जिसमें राजमहिषी और राजपुत्र ठहरे थे, अवरोध किया। इंजिनोंकी आवश्यकता पड़ने पर उसे भूल मालूम हुई। नगरके चारों ओर बाँध बना कर घेरेका काम चलाया जा रहा था। इसी समयमें फ्राटीज एक महती सेनाके साथ आ पहुँचा। इंजिनोंके पीछे रह जानेकी बात मालूम होने पर उसने रक्षकोंपर आक्रमण करनेके लिए अश्वारोहियोंकी एक सेना भेज दी। फल यह हुआ कि रक्षक दलके एक हजार सैनिक खेत रहे, इंजिन तोड़ फोड़ डाले गये और बहुतसे लोग कैद भी हो गये जिनमें पालीमोन नरेश भी था।

युद्धके आरंभमें ही इतनी भारी क्षति पहुँचनेके कारण ऐण्टोनीकी सेना अत्यधिक हतोत्साह हो गयी। आर्मीनिया-नरेश आर्टावास्डीज़ अच्छे परिणामकी कोई आशा न देख कर अपनी सेनाके साथ ऐण्टोनीसे पृथक हो गया, हालांकि इसीने युद्धके लिए सबसे अधिक उत्तेजना भी दिया था। अपनी सफलतासे प्रोत्साहित होकर पार्थियन लोग रोमनोंके पास पहुँच कर उन्हें छेड़ने लगे। ऐण्टोनीने यह सोच कर कि यदि सैनिकोंको चुपचाप यों ही पड़े रहने दिया जाय तो उनके निरुत्साह तथा भयकी मात्रा और भी बढ़ जायगी, अश्वारोहियोंकी सेना, दस पल्टनें और शास्त्रीय सेनाकी तीन टुकड़ियाँ साथमें लेकर कुल गल्ला वगैरह लूटनेके विचारसे बाहर जानेका निश्चय किया। उसने यह भी सोचा कि इस प्रकार मैं शत्रुओंको युद्धमें भी प्रवृत्त कर सकता हूँ। इसे कार्यान्वित करनेके निमित्त पड़ाव छोड़ कर वह एक दिनकी राह पर निकल गया। जहाँ जहाँ शत्रु सैनिकोंको आक्रमणके लिए तैयार देख कर युद्ध संकेत लटकानेकी आज्ञा दे दी पर साथ ही साथ उसने खेमोंको भी तोड़ दिया जिससे यह प्रतीत होता था कि वह युद्धकी तैयारी न कर घरकी राह ले रहा है। वह शत्रुओंके पास होकर अपनी सेना ले चला। पार्थियन लोग रोमनोंका

तरीका और विनय आदि देख कर मन ही मन उनकी प्रशंसा करने लगे। आक्रमणका संकेत होने पर अश्वारोही पार्थियन सैनिकोंपर टूट पड़े। पहले तो उन्होंने बहादुरीके साथ इनका सामना किया पर पल्टनोंके पहुँचने पर वे और अधिक न ठहर सके। ऐण्टोनीने, इस आशासे कि पुन युद्धकी संभावना न रहे, बहुत दूरतक उनका पीछा किया पर इस युद्धसे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। अन्तमें मालूम हुआ कि केवल तीस सैनिक रणबन्दी हुए हैं और अस्सी खेत रहे। विजयमें अत्यल्प लाभ और पराजयमें अत्यधिक हानिका खयाल कर ऐण्टोनीके दलको बड़ी ग्लानि हुई।

दूसरे दिन ऐण्टोनी अपने सैनिकोंको लेकर पुनः घेरेकी ओर चला। मार्गमें कई जगह शत्रु-सैनिकोंका मुकाबला करनेके अनन्तर बड़ी कठिनाई-से वह नगरके पास पहुँचा। तबतक उसके सैनिक, जो बाँधकी रक्षाके लिये रखे गये थे, भयभीत हो वहाँसे चल दिये थे। ऐण्टोनीने इन भागे हुए सैनिकोंको दस दसके हिस्सोंमें विभक्त कर प्रत्येक हिस्सेके एक एक सैनिकको चिट्ठी डाल कर प्राणदंड दिया और शेषको भोजनमें गेहूँके बदले जौ देनेकी आज्ञा दी।

दोनों दलोंके लिए युद्ध असह्य भार प्रतीत हो रहा था, ऐण्टोनीके लिए तो युद्ध-सचालन और भी कठिन होता जा रहा था क्योंकि बिना मारकाट किये गल्ला मिलनेका कोई जरिया न होनेसे दुर्भिक्षकी आशंका हो रही थी। दूसरी ओर फ्राटीज इस बातसे डर रहा था कि यदि रोमन लोग कुछ दिन और घेरा डाले पड़े रहें तो सभी सैनिक मेरा साथ छोड़ कर भाग जायँगे, क्योंकि जाड़ेके दिनोंमें वे मैदानमें रहना कभी स्वीकार न करेंगे। इस अवसरका निवारण करनेके लिए उसने यह चाल चली। उसने रोमनोंसे परिचित सैनिकोंको यह आदेश दे दिया कि वे गल्ले आदिकी लूट करते समय रोमनोंका विशेष पीछा न कर कुछ गल्ला आदि लूट लेने दें और उनकी वीरताकी प्रशंसा करते हुए यह जाहिर करें कि

हमारे नरेशका रोमनोंको सर्वश्रेष्ठ वीर कहना बिलकुल जायज है। बादमें वे अपने घोड़ोंसे उतर रोमन सैनिकोंके पास आकर यह कहने लगे 'ऐण्टोनी बड़ा ही हठी है, फ्राटीज़ मेलकर इन वीर सैनिकोंकी जान बचाना चाहता है पर वह सुलहका कोई अवसर न देकर सबसे खराब और भयानक शत्रुओं—दुर्भिक्ष और शीतकाल—की प्रतीक्षा कर रहा है। इन दोनों शत्रुओंसे बच सकना कठिन है; रोमनोंके प्रति सदिच्छा होने पर भी हम लोग उनकी कुछ सहायता न कर सकेंगे।

इन बातोंकी सूचना पाकर ऐण्टोनीने इनसे पुछवाया कि आप अपनी ओरसे ये बातें कह रहे हैं या पार्थियन नरेशकी आज्ञासे। इनके यह विश्वास दिलाने पर कि हमारे नरेशके ये विचार हैं, ऐण्टोनीने अपने कुछ मित्रोंको झण्डे और रणबन्दियोंकी माँगके साथ भेजा। उसने यह खयाल किया कि अगर कोई माँग पेश न की जाय तो लोग यही समझेंगे कि लौटनेका अधिकार मिल जानेमें ही वह अपना अहोभाग्य समझता है। पार्थियन नरेशने उत्तरमें कहा कि झंडा तथा कैदी नहीं लौटाये जा सकते, हाँ, यदि ऐण्टोनी वापस जाना चाहता है तो निरापद रूपसे जा सकता है।

सामान इत्यादि बाँधने और तैयारी करनेमें कुछ दिन व्यतीत होने पर ऐण्टोनीने वहाँसे प्रस्थान कर दिया। उसकी भाषणशक्ति बहुत अच्छी होने पर भी लज्जा या शोक या दोनोंके ही कारण इस अवसरपर उसने भाषणका कार्य एक दूसरे व्यक्तिके सुपुर्द कर दिया। कुछ लोगोंने इससे बुरा माना पर अधिकांश लोग इसका वास्तविक कारण समझ गये और तरस खाकर उसके प्रति और भी ध्यान देने लगे।

ऐण्टोनीने, जिस राहसे आया था उसी राहसे, जो वृक्षहीन विस्तृत मैदानसे होकर जाती थी, लौटनेका विचार किया पर एक मार्डिया-निवासीने, जो पार्थियनोंकी चालसे भलीभाँति वाकिफ था और जो इभिनों-पर आक्रमण होनेके समय अपनी सचाईका प्रमाण दे चुका था, पहाड़को दाहिनी ओर रखते हुए उसके पास ही पाससे जानेकी राय दी क्योंकि मैदानसे

होकर जानेमें अश्वारोही धनुर्धारियोंका आक्रमण होने पर ऐण्टोनीके सैनिकोंको मैदानमें आत्मरक्षाके लिए कोई साधन न मिलता। उसने यह भी सुझाया कि फ्राटीजने चालबाजीसे घेरा उठा कर रास्तेमें सेनाको तहस-नहस करनेका निश्चय किया है। उसने ऐसे मार्गसे सैनिकोंको आर्मीनिया तक ले जानेका विचार प्रकट किया जिसमें यात्रा भी लम्बी न हो और सैनिकोंको आवश्यक पदार्थ भी मिलते रहें। सन्धि हो जानेकी हालतमें ऐण्टोनी पार्थियनोंके प्रति अविश्वास करना नहीं चाहता था, पर निकटतम और निर्वासित मार्गसे होकर जानेकी बात उसे पसन्द आ गयी, इसलिए जब उसने उक्त मार्डियनसे विश्वासका निश्चय कराना चाहा तो उसने कहा कि जबतक सेना निरापद रूपसे आर्मीनिया न पहुँच जाय तबतक मैं बाँध कर रखा जाऊँ। दो दिनोंतक बन्धनमें ही उसने मार्गप्रदर्शन किया। तीसरे दिन शत्रुओंकी ओरसे आशङ्काका कोई कारण न देख कर निश्चिन्त हो ऐण्टोनीके सैनिक आरामके साथ यथारुचि जा रहे थे, इतनेमें उक्त मार्डियन नदीका बाँध टूटा हुआ और गन्तव्य मार्ग जलप्लावित देख कर फौरन समझ गया कि शत्रुओंने मार्ग रोक कर हानि पहुँचानेके विचारसे यह कार्य किया है, इसलिए उसने ऐण्टोनीको सचेत रहनेकी राय दी क्योंकि शत्रु पासमें ही मौजूद थे। अभी ऐण्टोनी अपने सैनिकोंको यथास्थान रख ही रहा था कि पार्थियन लोग रोमनोंको घेर लेनेके विचारसे चारों ओरसे आ धमके। पर रोमनोंकी ओरसे जोरदार मुकाबला और अपने आदमियोंक ऽ त ह त होते देख कर वे हट गये। दूसरी बार फिर उन्होंने तैयारी कर आक्रमण किया पर अश्वदलके सामने उन्हें पीठ दिखानी पड़ी और वे उस दिन फिर नजर नहीं आये।

उनके आक्रमणका ढंग देख कर ऐण्टोनीने अपनी सेनाको एक विशेष ढगसे व्यूहबद्ध कर उनका मुकाबला करनेका आदेश दिया, पर उनके भागने पर दूरतक पीछा करनेका निषेध कर दिया। इस प्रकार यादके चार दिनोंतक पार्थियन लोगोंको ही रोमनोंकी अपेक्षा अधिक क्षति

पहुँचती रही। इससे उनका उत्साह बहुत ढीला पड गया। फलतः वे शीत अधिक बढ़ जानेका बहाना कर वापस जानेके लिए जोर देने लगे।

पाँचवे दिन फ्लेवियस गेल्स नामक एक बहादुर अफसरने कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर दिखलानेकी इच्छासे सभाके अग्र तथा पृष्ठ भागसे कुछ अश्वारोहियोंके लिए ऐण्टोनीसे प्रार्थना की। सैनिक मिल जाने पर उसने शत्रुओंको तो परास्त कर दिया पर आदेशानुसार वापस न जाकर अपने स्थानपर ही डटा रहा। मुख्य सेनासे वह कितनी दूर हट गया है, इस बातपर कुछ अफसरोंने उसका ध्यान भी आकृष्ट किया पर उसने कुछ परवा न की। टिटियस नामक शासक गेल्सके इतने वीर सैनिकोंको नष्ट करानेके विचारकी निन्दा करता हुआ झण्डे लेकर लौट पडा, पर गेल्स अपने पासके आदमियोंको लेकर पुनः शत्रुओंसे भिड गया। शत्रुओंसे अपना दल घिरते हुए देख कर उसने सहायताके लिए सवाद भेजा। इसपर कुछ नायकोंने, विशेष कर केनीडियसने, जो ऐण्टोनीका कृपापात्र था, उसकी रक्षाके लिए एक छोटीसी टुकडी भेज दी। इसी प्रकार एकके हारने पर दूसरी टुकडी भेजनेकी भूल होती रही। यदि सारी सेना उसकी रक्षाके लिए पहुँच गयी होती तो यह क्षति न पहुँची होती। अन्तमें ऐण्टोनीने स्वयं आकर शत्रुओंका मुकाबला किया और अपने सैनिकोंको आगे बढनेसे रोका।

इस युद्धमें तीन हजार रोमन खेत रहे, पाँच हजार आहत हुए और गेल्स बाणोंके घावसे शीघ्र ही कालकवलित हो गया। ऐण्टोनी स्वयं प्रत्येक खेमेमें जा जाकर आहतोंकी देखभाल करने और सहानुभूति प्रकट करने लगा। ऐण्टोनीके इस कार्यका सैनिकोंपर बडा गहरा प्रभाव पडा। वे ऐण्टोनीके प्रति ऐसे भक्तिभावसे प्रेरित थे कि उसको चिन्ताके आगे अपने कष्टोंकी जरा भी परवा नहीं करते थे। ऐण्टोनीका उच्च वंश, वक्तृत्व शक्ति, सरलता, उदारता और प्रत्येक व्यक्तिके साथ घनिष्ठता आदि बातें भी सैनिकोंमें उसके प्रति भक्तिभाव उत्पन्न करनेमें विशेष सहायक थीं।

इस अन्तिम विजयसे शत्रु लोग इतने उत्साहित हो गये कि अधीरता और शान्तिके स्थानमें उनमें रोमनोंके प्रति घृणाका भाव उदय होने लगा और वे रातको छापा मारनेके विचारसे रोमनोंके शिविरके पास ही ठहरे रहे। प्रातःकाल होते होते कुछ नये सैनिक भी आ मिले जिससे उनकी संख्या चालीस हजार हो गयी। फ़ारीज़ स्वयं तो कभी युद्धमें शामिल नहीं हुआ पर विजयका उसे इतना दृढ़ विश्वास था कि उसने अपने अङ्गरक्षकों तकको भेज दिया। भाषण द्वारा सैनिकोंमें आवेश उत्पन्न करनेके लिए ऐण्टोनीने शोकसूचक वस्त्र लानेकी आज्ञा दी पर उसके मित्रोंने उसे रोक दिया। तब उसने अधिनायकका चोग़ा धारण कर उनके सम्मुख भाषण किया जिसमें उसने विजयी सैनिकोंकी प्रशंसा की एवं भागे हुए सैनिकोंकी भर्त्सना की। विजयी सैनिकोंने तो उत्तरमें सफलताकी आशा दिलायी और भागे हुए लोगोंने कहा कि हम प्रति दस पीछे एकका प्राणदण्ड या अन्य कोई दण्ड सहनेके लिए तैयार हैं, आप हमारे अपराधोंको भूल जायँ और कृपा कर इन बातोंके पीछे अपना चित्त खिन्न न करें। इसपर ऐण्टोनीने हाथ ऊपर उठा कर इस प्रकार प्रार्थना की—"हे देवगण, आप लोगोंने मेरे ऊपर पूर्वमें जो अनुग्रह प्रदर्शन किया है, उसका बदला चुकानेके लिए यदि कुछ दण्ड देना चाहते हों, तो वह दण्ड केवल मुझे मिले पर मेरे सैनिकोंको विजय प्रदान करें।"

दूसरे दिन रोमनोंने सुव्यवस्थित रूपमें यात्रा आरम्भ की। रोमनों-को उत्साहपूर्ण देख कर पार्थियन सेनाको बड़ा आश्चर्य हुआ। एक पहाड़के अंचलके पास, जिससे होकर रोमनोंको जाना पड़ा, पार्थियन सेना बाण बरसाने लगी। सैनिकोंने अपने अपने सम्मुखके सैनिकको छिपाते हुए इस प्रकार ढालकी ओट लगा दी कि बाणवर्षासे उनकी पूरी रक्षा हो गयी। ढालकी ओटमें बैठे हुए सैनिक ऐसे मालूम होते थे मानों किसी छाजनपर एक दूसरेसे मिला कर खपरे डाल दिये गये हों या थियेटरमें क्रमशः ऊपर उठते हुए दर्शकोंके आसन लगे हों। पार्थियन सैनिकोंने

रोमनोंको घुटनोंपर बैठे हुए देख कर यह समझा कि ये थक कर स्त हो गये हैं, इसलिए उन्होंने धनुष-बाण छोड़ कर अपने भालोंसे रोमनों-पर आक्रमण किया। रोमन उछल कर खड़े हो गये। उन्होंने भालोंके युद्धमें पार्थियन सेनाका अग्रभाग बिलकुल नष्ट कर दिया एवं शेषका मुख मोड़ कर ही दम लिया। इसके अनन्तर रोमनोंकी गति बहुत कुछ कम हो गयी। अकाल भी धीरे धीरे अपना भयङ्कर रूप दिखलाने लगा। उन्हें जो कुछ गल्ला मिल सकता था, वह भी युद्धके ही द्वारा प्राप्त होता था और उसे भी पीस कर रोटी बनानेके लिए उनके पास कोई साधन न था; इन सब चीजोंको उन्हें पीछे ही छोड़ देना पड़ा था क्योंकि सामान ढोनेवाले घोड़े आहतोंको ढोनेमें लगे हुए थे। गल्लेका भाव सेनामें इतना ऊँचा हो गया था कि जौ भी चाँदीके बराबर तौल कर बिकता था। उन्हे ऐसे पौधोंका भी सहारा लेना पड़ता था जो भोजनके काममें शायद ही आते हों। एक बार तो उन्होंने एक ऐसा पौधा खा लिया था जो बिलकुल घातक था। पहला फल तो यह हुआ कि सभी खानेवाले पागल हो गये और बड़ी तत्परताके साथ प्रस्तर-खण्ड उठा उठाकर इधर उधर करने लगे मानो यह कोई महत्वपूर्ण कार्य रहा हो। सारे कैम्पमें पत्थर उठानेका ही दृश्य चारों ओर दिखाई दे रहा था। अन्तमें पित्त वमन करके धराशायी होने लगे। सैनिकोंकी यह दुर्दशा और पार्थियनोंको बराबर पीछा करते हुए देख कर ऐण्टोनीपर कैसी बीत रही होगी, इसका अनुमान सहज ही किया जा सकता है।

कुछ बन पड़ते न देख कर पार्थियनोंने गल्ला लूटनेवालोंके साथ पुनः भद्रोचित बर्ताव करना शुरू किया। वे धनुषसे प्रत्यंचा उतार कर रोम-नोंके पास आकर कहने लगे—'अब हम लोग अपने घर जा रहे हैं। यही हमारे प्रतीकारका अन्तिम कार्य था; कुछ मीडियन सेना थोड़ी दूरतक आप लोगोंका पीछा करेगी सो भी आप लोगोंको क्षति पहुँचानेकी गरजसे नहीं, बल्कि कुछ ग्रामोंकी रक्षाके विचारसे।" यह कह वे मित्रता प्रकट

करते हुए उन्हें अभिवादन और आलिंगन करने लगे। इनके इस कार्यसे रोमनोंके मनमें पुन विश्वास हो गया और ऐण्टोनी पर्वत मार्ग छोड़ कर मैदानकी सड़कसे जानेको तैयार हो गया, क्योंकि उस मार्गमें पानीका अभाव था। यात्राके लिए वह तैयारी ही कर रहा था कि इतनेमें मिथ्रिडेटीजने, जिसका भाई मोनीसेस ऐण्टोनीकी शरणमें गया था और जिसे तीन नगर उसने दिये थे, पड़ावमें आकर कुछ कहनेकी इच्छा प्रकट की। उससे बात करनेके लिए पार्थियन जाननेवाला एक दुभाषिया बुलाया गया। दुभाषियेके आनेपर उसने सम्मुखकी पर्वतमाला दिखा कर बतलाया कि सारी पार्थियन सेना आप लोगोंकी घातमें वहीं ठहरी हुई है। उन्हें यह आशा है कि आप उनकी बातोंका विश्वास कर पर्वत मार्गसे न आकर मैदानके रास्ते जायेंगे। यह सत्य है कि पर्वत मार्गसे जानेमें जलका अभाव रहेगा और तकलीफ भी अधिक होगी पर मैदानके मार्गमें जानेमें आप अपना अन्त ही समझें।

इतना कहकर मिथ्रिडेटीज वहाँसे चला गया। ऐण्टोनीने अपने सलाहकारोंकी बैठक कर मार्डियन पथ दर्शकसे पूछा तो उसने भी मिथ्रिडेटीजकी ही बातोंका समर्थन किया। ऐण्टोनीने सैनिकोंको साथमें काफी पानी लेकर चलनेका आदेश देकर पर्वतीय मार्ग ही ग्रहण किया। पार्थियन लोग रात भर उनके पीछे पीछे चले और प्रात काल होते होते उन्होंने रोमन सेनाके पृष्ठ भागपर आक्रमण कर दिया। उस रातको रोमन सैनिक लगातार तीस मील चले थे। सारी रात जागने और क्लान्तिके कारण वे युद्ध कर सकनेकी स्थितिमें नहीं थे। ऐसी हालतमें शत्रुओंको सिरपर सवार देख कर रोमनोंका दिल बैठ गया। उन्हें पग पगपर युद्ध करना पड़ता था, इससे प्यासके कारण उनकी और भी दुर्गति हो रही थी। अग्र भागके सैनिक पासमें एक नदी देख कर, जिसका पानी कुछ कालापन लिये साफ और ठण्डा था, उसके पास चले आये। उन्होंने शत्रुओंको भगा कर उस नदीका जल पिया। पीनेके साथ ही उनके पेटमें दर्द शुरू

हो गया और प्यास पहलेसे भी अधिक हो गयी। मार्डियनने इस नदीके सम्बन्धमें पहले ही सचेत कर दिया था पर सैनिक जल पीनेका लोभ संवरण न कर सके। ऐण्टोनी हरएकके पास दौड कर थोडा धैर्य धारण करनेकी प्रार्थना करने लगा और यह आश्वासन देने लगा कि यहाँसे कुछ ही दूरीपर एक नदी है जिसका पानी बहुत अच्छा है और मार्ग भी ऐसा है कि पार्थियन अश्वारोही हम लोगोंका पीछा न कर सकेंगे। ऐण्टोनाने वहीं डेरे लगवाने और युद्धमें प्रवृत्त लोगोंको डेरोंकी छायामें कुछ विश्राम लेनेके विचारसे पीछे हटनेका आदेश कर दिया।

अभी खेमे खडे ही किये जा रहे थे और पार्थियन लोग, जैसा कि वे प्राय किया करते थे, हट ही रहे थे कि मिथ्रिडेटीजने आकर यह राय दी कि रोमनोंको जल्दसे जल्द दूसरी नदीके पास पहुँच जाना चाहिये क्योंकि पार्थियन लोगोंने उसे पार न कर वहींतक पीछा करने का निश्चय किया है। सूचना मिलनेपर ऐण्टोनीने बहुतसे सुवर्णपात्र पारितोषिक स्वरूप मिथ्रिडेटीजके पास भेजे। अपनी पोशाकके अन्दर जितना छिपा सकता था उतना लेकर वह चला गया। सूर्यास्त होनेके पूर्व ही ऐण्टोनीने वहासे प्रस्थान कर दिया। उस रात शत्रुओंकी ओरसे कोई आक्रमण नहीं हुआ। हा, रोमनोंने परस्परके ही कार्योंसे अपनी और भी दुर्गति की। सैनिक आपसमें ही मारकाट कर एक दूसरेका द्रव्य लूटने और छीनने लगे। उन्होंने ऐण्टोनीके भी पात्रादिको तोड फोडकर आपसमें बाँट लिया। शोर गुल सुन कर ऐण्टोनीने यह समझा कि पार्थियनोंने आक्रमण करके सेनाको छिन्न भिन्न कर दिया है, इसलिये उसने अपने एक मुक्तदास रैमनसको, जो उसका अंगरक्षक था, शपथ देकर कहा कि जब मैं आज्ञा दूं, तुम मेरे कलेजेमें तलवार भोंक देना और मेरा सिर भी काट देना जिसमें मैं पार्थियनोंके हाथमें जीवित न पड़ूं और मरने पर भी मेरी पहचान न हो सके। ऐण्टोनी तथा उसके मित्र त्रास और शोककी स्थितिमें पडे हुए थे कि मार्डियन पथदर्शकने आकर उनमें नवजीवनका

संचार कर दिया। उसने कहा कि हवाकी ठण्डक और समयके हिसाबसे मालूम होता है कि हम लोग अभीष्ट नदीके बिल्कुल पास पहुंच गये हैं। इसी समय और लोगोंने आकर सूचना दी कि यह शोर-गुल सैनिकोंकी आपसकी लूट-मारके कारण हो रहा था। इस अवस्थाको दूर करनेके लिए ऐण्टोनीने ठहरनेका आदेश दे दिया।

प्रभात होते होते सेनामें शान्ति स्थापित होने लगी थी, किन्तु इसी समय पार्थियनोंने पृष्ठ भागपर वाण-वर्षा आरम्भ कर दी। हल्की फौज मुकाबलेके लिए आगे बढ़ी और गुरुशस्त्र धारण करनेवाले पहलेकी तरह ढालोंकी ओटमें अपनी रक्षा करने लगे। पर पार्थियनोंको और आगे बढ़नेका साहस नहीं हुआ। अग्र भाग धीरे धीरे आगे बढ़ता हुआ नदीके सम्मुख पहुंच गया। यहां रोमन सैनिकोंने जी भरकर पानी पिया क्योंकि नदीको देखते ही पार्थियनोंने अपने धनुषसे प्रत्यंचा उतार दी और रोमनोंसे उनकी वीरताकी भूरि भूरि प्रशंसा कर कहने लगे कि अब तुम लोग स्वच्छन्दतापूर्वक जा सकते हो। नदी पार करते समय कोई आक्रमण नहीं हुआ। अन्तिम युद्धके छठें दिन रोमन सेना ऐरेक्सीज नदीके किनारे पहुँची। यही नदी मीडियाको आर्मीनियासे पृथक् करती है। नदीकी गहराई और तेज प्रवाह देख कर उसे पार करना सकटपूर्ण मालूम होता था। सेनामें एक अफवाह भी फैल गयी थी कि पार्थियन लोग यहाँ घातमें बैठे हुए हैं, नदी पार करते समय आक्रमण कर देंगे। निरापद रूपसे नदी पार कर आर्मीनियाकी सीमामें पहुँचने पर उन्हें ऐसी खुशी हुई मानो तूफानमें पड़े हुए पोतको तट नजर आ गया हो। वे आनन्दके मारे पृथ्वीका चुम्बन और एक दूसरेका आलिंगन करने लगे। अब धनधान्य-पूर्ण स्थल भागसे इन्होंने यात्रा आरंभ की। बहुत दिनोंतक इच्छाभर भोजन न मिलनेके कारण मार्गमें सैनिकोंने प्रत्येक चीज इतनी अधिक मात्रामें खा ली कि उन्हें जलोदर और अतीसार हो गया।

यहाँ ऐण्टोनीने अपनी सेनाका निरीक्षण किया तो पता चला कि

बीस हजार पैदल और चार हजार अश्वारोही मरे हैं जिनमें अधिकांश, शत्रुओंके नहीं, बल्कि रोगोंके शिकार हुए हैं। इस यात्रामें इन्हें २७ दिन लगे और इस बीचमें इन्होंने पार्थियनोंको १८ युद्धोंमें पराजित किया, हालाँकि इन विजयोंसे विशेष लाभ नहीं हुआ क्योंकि ये उनका पीछा कर सकनेमें असमर्थ थे। यह स्पष्ट है कि आर्टावास्डीजने ही ऐण्टोनीको आक्रमणके लाभसे वंचित किया था, क्योंकि अगर वह अपने अश्वारोही दलको लेकर न चला आया होता तो पराजयके बाद उसकी सेना उन्हींके ढंगपर उनका पीछा कर सकती और फिर पार्थियनोंको सिर उठानेका साहस न हुआ होता। इस कारण सारी सेना आर्टावास्डीजसे बदला लेनेके निमित्त आर्मीनियापर चढ़ दौड़नेके लिए लालायित थी, पर युद्ध सामग्री और थकावट आदिका विचार कर ऐण्टोनीने ऐसा करना उचित नहीं समझा और निमन्त्रण तथा आश्वासन देकर उसे मिलनेके लिए राजी किया। आने पर उसने उसको बंधनमें डाल दिया और सिकन्दरिया पहुंचने पर उसे विजय जुलूसके साथ घुमाया। ऐण्टोनीका यह कार्य नागरिकोंको बहुत बुरा मालूम हुआ।

खैर, यह तो बादकी बात है। सम्प्रति वह जाड़ेके मध्यकालमें हिम वर्षाके कारण कष्ट उठाता हुआ समुद्रतटवर्ती श्वेतग्राम (व्हाइट विलेज) में पहुंचा। मार्गमें उसके आठ हजार सैनिक शीताधिक्यसे नष्ट हो गये। यहाँ ठहर कर वह क्लिओपेट्राके आगमनकी प्रतीक्षा करने लगा। उसके आगमनमें देर होते देख कर वह मद्यपानमें समय व्यतीत करने लगा। इस समय उसे भोजन करना भी भार सा प्रतीत होता था। वह दस्तरखान छोड़ कर यह देखनेके लिए दौड़ जाता था कि क्लिओपेट्रा आ रही है या नहीं। अन्तमें क्लिओपेट्रा बन्दरगाहमें आ पहुँची। वह अपने साथ सैनिकोंके लिए बहुतसे वस्त्र और द्रव्य भी लेती आयी थी। कुछ लोगोंका कहना है कि वह सिर्फ वस्त्र ही ले आयी थी, द्रव्य तो ऐण्टोनीने अपने पाससे उसके नामपर बाँटा था।

रोमनोंसे युद्धमें प्राप्त हुए माल्के बटवारेके सम्बन्धमें पार्थिया-नरेश फ्राटीज और मीडियानरेशमें शीघ्र ही झगड़ा उठ खड़ा हुआ। मीडिया-नरेशने युद्धमें सहायता देनेके लिए ऐण्टोनीसे प्रार्थना की और वह नये सिरेसे युद्ध चलानेके लिए इच्छुक भी था पर इधर आक्टेवियाने, जो रोममें थी, ऐण्टोनीसे मिलनेकी इच्छा प्रकट करते हुए सीजरसे जानेकी अनुमति चाही। सीजरने भी, अपनी बहिनकी इच्छा-पूर्तिके विचारसे तो नहीं, बल्कि सम्मानपूर्वक उसका स्वागत न होनेपर युद्धका अच्छा बहाना मिलनेके विचारसे जानेकी अनुमति दे दी। उसके अथेन्स पहुँचने पर ऐण्टोनीने युद्ध यात्रापर जानेकी बात लिखते हुए उसे वहीं ठहरनेका आदेश दिया। इस समाचारसे उसे बड़ा दुःख हुआ क्योंकि उसकी समझमें युद्ध तो केवल बहाना था। वह अपने साथ सैनिकोंके लिए वस्त्र, भारवाहक पशु, द्रव्य और अफसरोंके लिए भेंट, तथा दो हजार चुने हुए शासकीय सैनिक ले आयी थी। ये सब चीजें कहाँ रखी जायँ, इस सम्बन्धमें उसने पत्र लिख कर ऐण्टोनीकी अनुमति चाही।

क्लिओपेट्रा आक्टेवियाके आगमनसे बहुत डरती थी। उसे भय था कि आक्टेविया अपने उच्च वंश, सीजरके साथ सम्बन्ध और उत्तम आचार-व्यवहारके प्रभावसे मुझे अपने पतिसे वंचित कर देगी। इसलिए उसने विरहिणीका स्वांग रचना शुरू किया। आहार घटा कर अपना शरीर क्षीण कर लिया। जब ऐण्टोनी कमरेके भीतर आता तो वह उसे निर्निमेष नेत्रोंसे देखती और उसके जाने पर अर्द्धमूर्छित सी हो जाती। अपनेको अश्रुपात करनेकी अवस्थामें दिखलानेका वह विशेष प्रयत्न करती और ज्यों ही ऐण्टोनीकी दृष्टि उसके आंसुओंपर पड़ती त्यों ही वह उन्हें पोंछ कर मुंह फेर लेती जिसमें यह मालूम हो कि वह अश्रुपातकी बात उसपर प्रकट होने देना नहीं चाहती। इसी अवस्थामें ऐण्टोनीने मीडिया जानेकी ठानी। क्लिओपेट्राके दूतों और दूतियोंने भी ऐण्टोनीकी कठोरता आदिका उल्लेख कर उसको प्रभावित करनेका प्रयत्न आरम्भ किया। वे कहते थे—

"आरवेरियाका विवाह एक राजनीतिक उद्देश्यकी पूर्तिके लिए हुआ था। ऐण्टोनीकी भार्या कहलानेका सम्मान ही उसके लिए काफी है। बेचारी क्लिओपेट्रा इतने बड़े राष्ट्रकी सम्राज्ञी होते हुए भी उपपत्नीके अतिरिक्त और कुछ नहीं कहला सकती। वह केवल उसके साथ रहने भरसे ही सन्तुष्ट है, यदि वह इससे भी वंचित कर दी जाय तो उसका अन्त ही समझना चाहिये।" इन बातोंसे ऐण्टोनी इतना विचलित हुआ कि वह मीडियाके युद्धका प्रश्न ग्रीष्मकाल तक स्थगित कर क्लिओपेट्राके प्राणत्यागकी आशंकासे सिकन्दरिया लौट गया। फिर भी कुछ कालके बाद उसने मीडिया जाकर वहाँके नरेशसे सन्धि कर ली और क्लिओपेट्रासे उत्पन्न अपने पुत्रका विवाह मीडिया-नरेशकी अल्पवयस्का कन्याके साथ कर दिया। इसके अनन्तर गृह-युद्धकी संभावनाके सम्बन्धमें विचार करता हुआ वह वापस चला आया।

जब आक्टेविया अथेंससे लौटी तो सीज़रने यह खयाल कर कि उसका अपमान हुआ है, उसे एक दूसरे ही मकानमें रहनेको कहा पर उसने अपने पतिका गृह छोड़ना अस्वीकार कर दिया और सीज़रसे प्रार्थना की कि मेरे कारण शस्त्र ग्रहण करनेकी आवश्यकता नहीं है। यह बड़ी अपकीर्तिकी बात होगी कि रोम साम्राज्यके दोनों अधिनायक—एक तो स्त्रीप्रेमके कारण और दूसरा ईर्ष्याके कारण—नागरिकोंको गृह-युद्धमें प्रवृत्त करें। उसने ऐण्टोनीके घरकी मान-मर्यादा अक्षुण्ण बनाये रखी और फुल्वियाकी सन्तानकी भी अपनी ही सन्तानकी तरह देख भाल करती रही। आगतोंके सत्कारमें भी किसी प्रकारकी कमी नहीं होने पायी। ज़रूरत पड़ने पर वह आगतोंके लिए सीज़रसे भी सिफारिश कर देती थी। पर उसके इस आचरणसे भी ऐण्टोनीको क्षति ही पहुँच रही थी क्योंकि ऐसी अच्छी महिलाके प्रति असद्व्यवहारके कारण रोमन लोग ऐण्टोनीसे और भी चिढ़ते जा रहे थे। सिकन्दरियामें उसने अपने पुत्रोंमें जो राज्यका बटवारा किया, उससे रोमनोंका उसके प्रति और भी रोष बढ़ गया। उसने व्यायामस्थलमें चाँदीके चबूतरेपर दो सुवर्णके सिंहासन रखवा कर

पैरके पास कुछ छोटे छोटे सिंहासन रखवाये । बड़े सिंहासन तो क्लिओ-पेट्रा तथा स्वयं उसके लिए थे और छोटे उसके पुत्रोंके लिए रखे गये थे । यहाँ उसने सर्वसाधारणको एकत्र कर क्लिओपेट्राको मिस्र, साइप्रस, लीबिया, आफ्रिका और कोलोसीरियाकी रानी और सीज़रसे उत्पन्न उसके पुत्रको संयुक्त शासक घोषित किया । क्लिओपेट्रासे उत्पन्न अपने पुत्रोंको उसने राजराजेश्वरकी उपाधिसे भूषित कर दिया । सिकन्दरको आर्मि-निया, मीडिया तथा विजित होने पर पार्थिया देनेकी और टालेमीको फोनीशिया, सीरिया तथा सिलीशिया प्रदान करनेकी घोषणा की । सिकन्दर मीडियाकी और टालेमी महान् सिकन्दरके उत्तराधिकारियोंकी पोशाकमें सर्वसाधारणके सम्मुख उपस्थित किये गये । माता पिताको अभिवादन करनेके अनन्तर एकका मक्दूनियाके रक्षकदलने और दूसरेका आर्मी-नियाके रक्षकदलने स्वागत किया । क्लिओपेट्रा उस समय आइसिस देवीकी पोशाकमें थी । सर्वसाधारणमें उपस्थित हो कर उसने अपना परिचय नयी आइसिस देवीके नामसे ही दिया ।

सीज़रने कुलीन सभामें इन बातोंकी चर्चा छेड़कर और लोगोंसे ऐण्टोनीकी निन्दा कर उन्हें उसके विरुद्ध कर दिया । एण्टोनीने भी सीज़रपर कुछ आरोप किये जिनमें ये मुख्य थे—सीज़रने पाम्पीसे विजित सिसिलीका अभीतक बटवारा नहीं किया, युद्धके लिए मैंने जो पोत दिये थे उन्हें उसने अपने पास रख छोड़ा है, उसने सह-शासक लेपिडसको पदच्युत कर उसकी सेना और कर आदि अपने अधिकारमें कर लिया है और लगभग सारा इटली अपने सैनिकोंमें वितरण कर हमारे सैनिकोंके लिए कुछ भी नहीं रखा है । इन आरोपोंके उत्तरमें सीज़रने कहा कि दुराचरणके कारण लेपिडसको च्युत करना पड़ा है, यदि ऐण्टोनी आर्मी-नियामें हिस्सा दे तो मैं युद्धमें प्राप्त वस्तुओंका फौरन बटवारा कर दूँ, इटलीमें ऐण्टोनीके सैनिकोंको कुछ भी नहीं मिल सकता क्योंकि उन्होंने मीडिया और पार्थिया अपने हिस्सेमें रख लिये हैं ।

आरोपोंका उत्तर आर्मीनियामें मिला। उसने कैनीडियसको सोलह पल्टनोंके साथ समुद्रकी तरफ रवाना किया, लेकिन स्वयं क्लिओपेट्राके साथ एफेसस चला गया। यहाँ उसने अपना बेड़ा ठीक किया जिसमें आठ सौ भारवाहक पोत थे। डोमीशिअस तथा अन्यान्य मित्रोंकी रायसे ऐण्टोनीने क्लिओपेट्राको मिस्र जाकर युद्धकी प्रतीक्षा करनेको कहा पर उसे यह आशंका हुई कि कहीं आक्टेवियाके बीच-बिचाव करने पर दोनोंमें समझौता न हो जाय, इसलिए उसने कैनीडियसको उत्कोच देकर अपने पक्षमें कर लिया। उसने ऐण्टोनीसे कहा कि क्लिओपेट्राका यहाँ रहना अच्छा है, क्योंकि उसके उपस्थित रहनेसे मिस्री सेना उत्साहके साथ लड़ेगी; योग्यताकी दृष्टिसे भी क्लिओपेट्रा, जो एक बड़े राष्ट्रपर बहुत दिनोंतक शासन कर चुकी है और जिसने आपके सहवासमें बहुत कुछ सीख लिया है, आपके सहायक नरेशोंसे किसी प्रकार कम न प्रमाणित होगी। सीज़रके सौभाग्यसे ऐण्टोनीने कैनीडियसकी बात मान ली। ऐण्टोनी क्लिओपेट्राके साथ सेमॉस द्वीप जाकर भोग-विलासमें डूब गया। एक ओर तो सीरियासे लेकर लारिया तकके नरेशों और शासकोंको युद्धमें सहायता देनेके लिए आदेश दिया जा रहा था और दूसरी ओर अभिनेताओं तथा गायकोंकी फौज सेमासके लिए रवाना हो रही थी, सारा संसार युद्धकी भयंकरतासे कराह रहा था पर सेमास द्वीप इन्द्रका दरबार बन रहा था। प्रत्येक नगरने बलिदानके लिए एक एक बैल भेजा। ऐण्टोनीके सहायक नरेश भोज और उपहार देनेमें परस्पर होड़ करने लगे। लोग मन ही मन कहने लगे कि युद्धके आरम्भमें तो उत्सवोंकी इतनी भरमार है, विजय पर क्या होगा।

इसके अनन्तर एण्टोनी गायकोंके निवासके लिए प्राइईनीमें प्रबन्ध कर क्लिओपेट्राके साथ अथेंज़ चला गया। वहाँ भी भोजों और उत्सवोंका वही ताँता रहा। अथेंज़में निवास करते समय वहाँके नागरिकोंने आक्टेवियाके प्रति अत्यधिक सम्मान दिखलाया था। ईर्ष्यासे प्रेरित होकर क्लिओपेट्रा भी नागरिकोंके प्रति अनुग्रह दिखलाने लगी। इसके बदलेमें

नागरिकोंने भी उसके प्रति सम्मान-प्रदर्शनका निश्चय कर उसके पास एक प्रतिनिधिमंडल भेजा। एथेंसके नागरिककी हैसियतसे ऐण्टोनी ही इस मण्डलका प्रधान था और उसीने इस अवसरपर भाषण भी किया।

इस समय ऐण्टोनीने कुछ आदमियोंको भेजकर आक्टेवियाको अपने रोम नगरस्थ भवनसे निकलवा दिया। वह अपने भाग्यपर रोने लगी, विशेष कर इस ख्यालसे कि मैं भी गृह-युद्धका कारण समझी जाऊँगी। रोमन लोग आक्टेवियाकी हालतपर, विशेष कर ऐण्टोनीकी मूर्खतापर तरस खाने लगे क्योंकि यौवन और सौन्दर्यके विचारसे आक्टेविया क्लिओ-पेट्रासे कहीं बढ़कर थी।

जब सीजरको एण्टोनीके बृहद् आयोजनकी सूचना मिली तो वह इस बातसे भयभीत हो गया कि कहीं उसे ग्रीष्म ऋतुमें युद्धमें प्रवृत्त न होना पड़े। इस समय युद्ध छिड़नेसे वह बड़ी कठिनाईमें पड़ता, क्योंकि उसके पास कोई सामग्री प्रस्तुत नहीं था और कर लगाने पर लोगोंमें असन्तोष बढ़ रहा था। नागरिकोंपर आयका चतुर्थांश और मुक्त लोगों-के लड़कोंपर अष्टमांश कर लगाया गया था। सीजरके इस कार्यसे इटली-में बड़ी गड़बड़ी मच गयी। इस मौकेसे लाभ न उठा कर ऐण्टोनीने बड़ी भारी भूल की। उसने अनावश्यक विलम्ब कर सीजरको अपनी तैयारी पूरी करने और लोगोंको शान्त करनेका काफी मौका दे दिया। क्लिओपेट्राके दुर्व्यवहारके कारण टिटिअस और प्लैंकसने जिनका रुतबा प्रधान शासकका था और जो ऐण्टोनीके मित्र भी थे, सीजरके पक्षमें जाकर ऐण्टोनीकी वसीयतका भेद उसपर प्रकट कर दिया। यह वसीयतनामा देवदासियोंके पास था। इन्होंने इसे देनेसे इनकार कर दिया और कहला भेजा कि यदि सीजर चाहे तो स्वयं आकर इसे ग्रहण कर सकता है। सीजरने ऐसा ही किया और इसमेंसे अपने कामकी बातें चुनकर कुलीन-सभामें खुल आम उन्हें पढ़ सुनाया। बहुतोंने इस कार्य को बुरा माना क्योंकि मृत्युके बाद होनेवाली बातोंको लेकर दोषारोप

करना सर्वथा अन्याय्य था। ऐण्टोनीने अपनी अन्त्येष्टिके सम्बन्धमें जो कुछ लिखा था, उसपर सीज़रने बहुत ज़ोर दिया। उसने लिखा था— "यदि मैं रोममें भी मरूँ तो मेरा शव शाही सजधजके साथ न्यायालयसे ले जाकर क्लिओपेट्राके पास सिकन्दरिया भेज दिया जाय। सीज़रके एक आश्रित कैलवीसियसने भी क्लिओपेट्राके संबंधमें ऐण्टोनीपर ये आरोप किये—उसने परगेनसका पुस्तकालय, जिसमें दो लाख पुस्तकें थीं, क्लिओपेट्राको दे दिया, एक भोजके अवसरपर बहुतसे अतिथियोंके समक्ष, किसी प्रतीज्ञाकी पूर्तिके सम्बन्धमें उसने उसका चरण स्पर्श किया; उसने एफेसियनोंसे सम्राज्ञीके रूपमें उसकी वंदना करवायी थी, नरेशों और शासकोंके दरबारमें स्फटिक तख्तोंपर लिखे हुए क्लिओपेट्राके जो प्रणयपत्र आते थे उन्हें वह उच्च स्वरसे पढ़ा करता था; एक बार फर्नियस नामक एक प्रसिद्ध रोमन वक्ता अपना भाषण कर रहा था, उसी समय क्लिओपेट्रा परिषद्-भवनसे निकली, ऐण्टोनी सार्वजनिक कार्य छोड़ कर उसके साथ हो लिया और उसे घरतक पहुँचा आया।

सर्व-साधारणने कैलवीसियसकी इन बातोंका विश्वास नहीं किया। ऐण्टोनीके मित्र जनताको उसके पक्षमें बनाये रखनेका प्रयत्न करने लगे। उन्होंने अपने दलके एक व्यक्ति जेमिनियसको ऐण्टोनीके पास उसे सचेत करानेके निमित्त भेजा, जिसमें वह अपने पद आदिसे वंचित होकर रोमका शत्रु न घोषित कर दिया जाय। यूनानमें पहुँचनेके साथ ही जेमिनियस पर आक्टेवियाका गुप्तचर होनेका सन्देह किया जाने लगा। भोजनके समय गये-गुजरे स्थानमें बैठा कर उसका अपमान किया जाता था। सब प्रकारकी अवमानना सहन करता हुआ वह ऐण्टोनीसे दो दो बातें करनेका अवसर ढूँढ रहा था। यूनान आनेका प्रयोजन पूछने पर उसने उत्तर दिया कि और बातें तो कभी शान्तिके समय कहूँगा पर एक बात, जो बिल्कुल स्पष्ट है, यह है कि क्लिओपेट्रा मिस्र भेज दी जाय तो सब काम बन जायगा। ऐण्टोनीको इस बातपर क्रुद्ध होते हुए देख क्लिओ-

पेट्राने कहा, "जेमिनियस, तुमने यह अच्छा किया कि बिना तंग किये ही अपना भेद प्रकट कर दिया।" जेमिनियस इसके बाद शीघ्र ही रोम वापस चला गया। क्लिओपेट्राके अनुचरोंसे तंग आकर मार्कस सिलेनस और डेलियस आदि ऐण्टोनीके कई मित्र उससे पृथक् हो गये।

युद्धकी तैयारी कर लेने पर सीज़रने क्लिओपेट्राके विरुद्ध लड़ाई घोषित करने और एण्टोनीको उन अधिकारोंसे वंचित करनेका निर्णय कराया, जिनका उपभोग वह स्वयं न कर क्लिओपेट्राको करने देता था। उसने कहा कि ऐण्टोनीपर जादू चल गया है, वह अपने वशमें नहीं है। हम-लोग ऐण्टोनीके विरुद्ध नहीं बल्कि खोजा मार्डियन, पोथीनस, क्लिओपेट्रा-की अनुचरी आइरस और चार्मियनके विरुद्ध युद्ध-यात्रा कर रहे हैं क्योंकि ये ही लोग समस्त कार्योंका संचालन कर रहे हैं।

युद्धके पूर्व कई विचित्र घटनाएँ घटित हुईं—ऐण्टोनीका पिसाउरम नामक एक उपनिवेश भूकम्पके कारण समुद्रके गर्भमें चला गया। अल्बा-स्थित ऐण्टोनीकी प्रतिमासे पसीना निकलने लगा और बार बार पोंछने पर भी निकलता ही रहा। उसके पेट्रीमें रहते रहते ही हरकुलीज़का मन्दिर बिजली गिरनेसे खण्ड खण्ड होगया; अथेंज़में बकस (विलास देव) की प्रतिमा दानवोंके युद्धसे प्रसूत हवाके झोंकेसे गिरकर भग्न हो गयी। ऐण्टोनीका इनसे विशेष सम्बन्ध था क्योंकि वह अपनेको हरकुली-ज़का वंशज और बकसका अनुयायी मानता था। उसी वायु-प्रवाहने य्यूमेनीज़ और ऐटलसकी ठोस मूर्तियोंको भी गिरा दिया पर पासकी और मूर्तियाँ ज्योंकी त्यों खड़ी रहीं। क्लिओपेट्राके राजकीय पोत 'ऐण्टो-नियस' पर भी एक विचित्र बात देखनेमें आयी। कुछ अबाबीलोंने पोतके पृष्ठ भागपर अपना घोंसला बनाया था। पर दूसरी अबाबीलोंने उन्हें वहाँसे खदेड़ कर उनके बच्चोंको मार डाला।

युद्धके आरम्भमें ऐण्टोनीके पास पाँच सौ सुसज्जित युद्ध-पोत और एक लाख पैदल तथा बारह हजार अश्वारोही थे। अफ्रिका आदि

कई देशोंके नरेशोंने युद्धमें स्वयं भाग लिया और पाटस आदि कई देशों-के नरेशोंने सहायता भेजी थी। सीजरके पास ढाई सो युद्धपोत, अस्सी-हजार पैदल और उतने ही अश्वारोही थे। ऐण्टोनीका राज्य फरात और आर्मीनियासे लेकर आयोनियन समुद्र और इलीरियातक तथा सीजरका राज्य इलीरियासे लेकर पश्चिमी समुद्र और वहाँसे लेकर तस्कन और सिलीशियन सागरतक फैला हुआ था। अफ्रिकामें इटली, गॉल और स्पेनके सामनेका सारा तट—हरकुलीज स्तम्भ तक—सीजरके अधिकारमें और साइरीनीसे ईथीओपिया तकके सारे प्रदेश ऐण्टोनीके अधिकारमे थे।

पर ऐण्टोनी क्लिओपेट्राकी इच्छाओंका इस तरह गुलाम हो रहा था कि सिर्फ उसको खुश करनेके लिए, स्थल-सेना काफी अच्छी होते हुए भी उसने जलयुद्धमें ही विजय प्राप्त करनेकी ठानी, हालाँ कि उसके पोतोंके अध्यक्ष नाविक आदि न होनेके कारण मुसाफिरों और हलवाहों आदिको पकड़ पकड़ कर काम ले रहे थे। सीजरके पोत दिखलानेके लिए नहीं बने थे, उनपर आवश्यक शस्त्रादिके साथ कुशल आदमी रखे गये थे और वे हलके तथा तीव्रगामी भी थे। वे सबके सब टरेंटम तथा ब्रण्डूजिअमके बन्दरोंमें ठहरे हुए थे। उसने वहींसे ऐण्टोनीको कहला भेजा कि युद्धको व्यर्थ ही अधिक दिनोंतक न चला कर अपनी सारी शक्तिके साथ निकल आवें। मैं आपके जहाजोंके ठहरनेके लिए बन्दर और स्थल-सेनाके शिविरके लिए पर्याप्त स्थान देनेको तैयार हूँ। उत्तरमें उसने, उससे अधिक अवस्थाका होते हुए भी, द्वन्द्व-युद्धके लिए आह्वान किया और यदि द्वन्द्व-युद्ध स्वीकार न हो तो फारसेलियाके मैदानमें, जहाँ सीजर और पॉम्पीने अपना निपटारा किया था, मिलनेका प्रस्ताव किया। ऐण्टोनी अपने बेडेके साथ ऐक्टियममें ठहरा हुआ था, तबतक सीजरने आयोनियन समुद्रको पार कर ईपाइरसमें लैंडलपर अधिकार कर लिया। ऐण्टोनीको इससे क्षुब्ध होते देखकर, क्योंकि उसकी स्थलसेना वहाँसे

दूर थी, क्लिओपेट्राने मज़ाक करते हुए पूछा 'क्या सीज़रका टोडल्में आना इतना खतरनाक है ?'

प्रातःकाल होते होते ऐण्टोनीने शत्रुओंको अपनी ओर अग्रसर होते देखा। यह ख्याल कर कि मेरे पोत, जो अस्त्र-शस्त्र तथा सैनिकों आदिसे हीन हैं, सीज़रके पोतोंके सामने ठहर न सकेंगे, उसने रेनेशालोंको अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित कर बैठा दिया जिससे शत्रुओंको मालूम हो कि ये पोत युद्धके लिए बिलकुल तैयार हैं। सीज़र चक्रमेमें आकर वापस चला गया। कहा जाता है कि ऐण्टोनीने कुशलतापूर्वक जलका सम्बन्ध भी विच्छिन्न कर दिया था। इसी समय ऐण्टोनीने क्लिओपेट्राकी इच्छाके विरुद्ध डोमीशिअसके साथ बड़ी दयालुताका बर्ताव किया। ज्वरकी अवस्थामें ही जब डोमीशिअस एक छोटीसी नौकामें बैठ कर सीज़रकी ओर चला गया, तब ऐण्टोनीने उसके इस कार्यको बुरा मानते हुए भी उसकी चीजों, मित्रों तथा नौकरोंको उसके पास भेज दिया। डोमीशिअसका शीघ्र ही प्राणान्त हो गया मानो विश्वासघात प्रकट हो जानेपर उसने आत्मग्लानिवश स्वयं ही प्राण दे दिये हों। ऐमिण्टस और डीओटेरस नामक दो नरेश भी इसी प्रकार सीज़रकी ओर चले गये।

ऐण्टोनीका बेड़ा बिलकुल अनुपयुक्त प्रमाणित हुआ, इस कारण अब उसका ध्यान स्थल-सेनाकी ओर आकृष्ट हुआ। कैनीडियसने भी, जो पलटनोंका नायक था, अपनी राय अब बदल दी और क्लिओपेट्राको वहाँसे वापस कर थ्रेस या मक्दूनियामें जाकर स्थल युद्धद्वारा निपटारा करनेके पक्षमें विचार प्रकट किया, क्योंकि गेटीके नरेश डिकोमीज़ने भी सेनाद्वारा ऐण्टोनीकी सहायता करनेका वचन दिया था। समुद्रपर सीज़रका आधिपत्य स्वीकार कर लेना वेजा भी न था, क्योंकि सिसलीमें युद्ध-संचालन कर उसने जलयुद्धमें काफी अनुभव प्राप्त कर लिया था। इसके अलावा ऐंटोनी ऐसे स्थलयुद्धके सुयोग्य सेनापतिके लिए अपने सुशिक्षित सैनिकोंका स्थल-युद्धमें उपयोग न कर पोतोंपर विभक्त कर देना सर्वथा

हास्यास्पद था। पर क्लिओपेट्रा इन सब बातोंके होते हुए भी जलयुद्ध द्वारा ही भाग्यका निपटारा करनेपर तुली हुई थी; कारण यह था कि उसकी दृष्टि विजयपर नहीं थी, किन्तु युद्धमें असफल होनेकी रङ्गत देखकर भाग निकलनेकी सुविधापर थी।

शिविरसे लेकर जहाजोंके ठहरनेके स्थानतक दो ऊँची दीवारें खड़ी की गयी थीं जिनके अन्दर ऐण्टोनी बिना किसी खतरेकी आशंकाके इधर उधर घूमा करता था। सीज़रके एक नौकरने दीवारोंके अन्दर घूमते समय ऐण्टोनीको पकड़नेकी तरकीब बतलायी और कुछ आदमी इसी उद्देश्यसे भेजे भी गये पर उन्होंने शीघ्रतामें ऐण्टोनीके आगे आगे जानेवाले आदमीको पकड़ लिया और ऐण्टोनी बचकर निकल गया।

जल-युद्ध द्वारा ही निपटारा करनेका निश्चय हो जानेपर ६० पोतोंको छोड़कर सभी मिस्री पोत भस्मीभूत कर दिये गये। अच्छे अच्छे पोत चुन कर उनपर २० हजार पैदल सैनिक और दो हजार धनुर्धारी रखे गये। इसपर एक धुरंधर योद्धाने जो पदातिका अनुभवी नायक था और जिसका बदन घावके चिन्होंसे भरा हुआ था, ऐण्टोनीसे कहा 'आप इन घावोंका अविश्वास कर इन सड़े गले तख्तोंका क्यों भरोसा करते हैं? मिस्री और फेनीशियन लोगोंको जल-युद्धमें निपटने दीजिए किन्तु हम लोगोंको स्थल-युद्धमें मुकाबिला करनेका अवसर दीजिये क्योंकि हम लोगोंने स्थल-युद्धमें ही विजय या वीरगति प्राप्त करना सीखा है।' ऐण्टोनीने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया, सिर्फ हाथ और सिरके संकेतसे उसको प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ गया, हालाँकि सफलताकी उसे भी बहुत कम आशा थी।

उस दिन तथा बादके तीन दिनोंतक समुद्र बहुत क्षुब्ध रहा, इससे युद्ध न हो सका। ऐण्टोनी और पब्लीकोला दाहिनी पंक्तिके नायक थे, कोलियस वाम पंक्तिका और मार्कस आक्टेवियस तथा मार्कस इन्स्टीयस मध्य भागके नायक थे। वाम भागका नेतृत्व एग्रिपाके सिपुर्द कर सीज़र स्वयं दक्षिण भागका नायक बना। स्थल-सेनामें केनीडियस ऐण्टो-

नीकी ओरसे नायक था और टारस सीज़रकी ओरसे। दोनों सेनाएँ समुद्र-तटपर व्यूहबद्ध खड़ी थीं। ऐण्टोनी एक डोंगीपर सवार होकर एक पोतसे दूसरे पोतके पास जाता और सैनिकोंको एक स्थान पर जमकर युद्ध करनेका आदेश देता था। उसने नाविकोंको इस प्रकार पोतोंको स्थिर रखने को कहा मानो वे लंगर डाले खड़े हों। सीज़रके बारेमें कहा जाता है कि कुछ रात रहते ही वह अपने पोतोंका निरीक्षण करने निकला। मार्गमें एक गदहेवालेसे उसकी भेंट हुई। सीज़रने उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम सौभाग्य और गदहेका नाम "विजेता" बतलाया। बादमें विजय प्राप्त होने पर सीज़रने उस स्थानपर विजय-स्मारक बनाते हुए गदहेवाले तथा उसके गदहेकी पीतलकी प्रतिमा स्थापित की। अपने पोतोंका निरीक्षण करनेके अनन्तर जब सीज़रने शत्रुपोतोंपर नजर डाली तो उन्हें गतिहीन देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ देरतक तो उसकी यही धारणा रही, इस कारण वह अपने पोतोंको एक मीलके अनन्तरपर रखे रहा। मध्याह्नके समय समुद्रमें तूफान उठने पर ऐण्टोनीके सैनिक अपने भारी पोतोंके भरोसे विजयकी दृढ़ आशासे लड़नेके लिए अधीर हो रहे थे, इसलिए उन्होंने अपनी वामपंक्ति आगे बढ़ा दी। यह देख कर सीज़रको बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने शत्रुके भारी पोतोंको खुले समुद्रमें आगे निकल आनेका मौका देनेके लिए, जिसमें हलके पोतोंसे उन्हें परिवेष्टित कर लेनेमें सहूलियत हो, उसने अपनी दाहिनी पंक्ति और पीछे हटा ली।

युद्धका आरम्भ होने पर जहाजोंमें परस्पर भिड़न्त नहीं हुई, क्योंकि ऐण्टोनीके पोत भारी होनेके कारण टकर मारनेका काम सफलतापूर्वक नहीं कर सकते थे और सीज़रके पोतोंको सामनेसे या बगलसे टकर लेनेका साहस ही नहीं होता था। मालूम होता था कि किसी दुर्ग रक्षित स्थान पर आक्रमण हो रहा हो और दूसरी ओरसे उसकी रक्षा हो रही हो। सीज़रके चार-पाँच पोत एक साथ मिल कर ऐण्टोनीके एक पोतपर आक्रमण करते थे। सीज़रके सैनिक नीचेसे अस्त्र-शस्त्रका प्रयोग कर रहे थे

ओर ऐण्टोनीके ऊपरसे गोलियाँ आदिकी वर्षा कर रहे थे। एग्रिपाके पंक्तिभंग करनेका प्रयत्न करने पर पब्लिकोलाको लाचार होकर मध्य भागसे पृथक् हो जाना पड़ा। इस पर मध्य भागमें कुछ गड़बड़ी सी मच गयी। पलड़ा दोनों ओर बराबर था, अभी किसीकी जीत नहीं हुई थी। इसी बीचमें क्लिओपेट्राके साठों पोत पाल उड़ा कर पोतोंके मध्यसे भागते हुए देख पड़े। वायुके अनुकूल पेलापनेससकी ओर उन्हें जाते हुए देख कर शत्रुओंको बड़ा आश्चर्य हुआ। इसी स्थलपर ऐण्टोनीने यह बात प्रमाणित कर दी कि वह सेनापतिके योग्य विचारों और उद्देश्योंसे प्रेरित न था। 'प्रणयीकी आत्मा उसमें न रह कर प्रणयपात्रमें ही रहती है' यह बात जो मजाकमें कही जाती है, उसे उसने पूर्णतः चरितार्थ कर दिखाया। मानो उसने क्लिओपेट्राका अंश होकर जन्म लिया था, इसलिए वह उसकी छायाकी तरह उसके साथ ही रह सकता था। क्लिओपेट्राका पोत जाते हुए देख वह अपनेको और न रोक सका; सीरियाके सिकन्दर (अलेग्जेंडर) और सेलियसके साथ पोतारूढ़ हो वह उसके पीछे चल पड़ा और सैनिकोंकी, जो उसीके लिए अपना रक्त बहा रहे थे, उसने कुछ भी परवा न की।

ऐण्टोनीको पीछे पीछे आते देख कर क्लिओपेट्राने उसे अपने पोतपर आनेका संकेत किया। पास पहुँचने पर वह पोतपर चढ़ा लिया गया किन्तु क्लिओपेट्राको देखे या अपनेको दिखाये बिना वह पोतके अग्र भागपर चला गया और किसीसे कुछ बात न कर तथा मुखको हाथोंसे ढँक कर चुपचाप बैठ गया। इसी समय सीज़रके कुछ हलके पोत पीछा करते हुए देख पड़े। ऐण्टोनीके पोत घुमानेकी आज्ञा देने पर और सब तो फिर गये पर यूरीक्लीज़ नामक एक लेकोनियनने आगे बढ़ कर उसपर भाला फेंकना चाहा। ऐण्टोनीने पोतके अग्रभागपर खड़े होकर पूछा "यह कौन है जो ऐण्टोनीका पीछा कर रहा है?" उत्तर मिला—"मैं हूँ लैकारीज़का पुत्र यूरीक्लीज़ जो अपने पिताके वधका बदला लेनेका इच्छुक हूँ।" ऐण्टोनीने

क्षियाओंको दबानेके अपराधमें प्राणदण्ड दिया था। उसने ऐण्टोनीपर तो आक्रमण नहीं किया पर श्री पोतोंपर अधिकार कर लिया, जिनमेंसे एक पर ऐण्टोनीके बहुमूल्य पात्र आदि रखे हुए थे। ऐण्टोनी तीन दिनोंतक चिन्तामग्न रहा और इस बीचमें लज्जा या रोषके कारण क्लिओपेट्रासे मिला तक नहीं। टीनेरम पहुँचने पर अनुचरियोंने प्रयत्न कर दोनोंमें परस्पर वार्तालाप कराया और बादमें दोनोंको एक साथ भोजन कराया तथा उनके शयनका प्रबन्ध किया। अबतक बहुतसे भारवाहक पोत और मित्र उसके पास पहुँच गये। उन्होंने उसे सूचित किया कि बेड़ा तो बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट हो गया, पर स्थल-सेना अभी सुरक्षित है। उसने कैनीडियसको सेना लेकर मकदूनिया होते हुए शीघ्रातिशीघ्र एशिया जानेका आदेश भेज दिया और स्वयं अफ्रिका जानेका विचार कर बहुमूल्य पदार्थोंसे भरा हुआ एक पोत आपसमें बाँट लेनेके लिए मित्रोंको दे दिया। साथ ही सीजरके साथ मेल होने तक इन भारवाहक पोतोंको सुरक्षित रखने तथा मित्रोंको आश्रय देनेके लिए कारिंथमें रहनेवाले एक मुक्त दासको पत्र भी लिख दिया।

ऐण्टोनीकी यही परिस्थिति थी। उसके बेड़ेने बहुत देरतक सीजरके बेड़ेका सामना किया। चार बजेके लगभग तूफान आनेसे जहाज तितर बितर हो गये। लगभग पाँच हजार सैनिक काम आये और, जैसा कि सीजरने लिखा है, उसके तीन सौ पोतोंपर शत्रुका अधिकार हो गया। केवल कुछ ही लोगोंने ऐण्टोनीको भागते हुए देखा था, इससे बहुतोंको उसके पलायनका विश्वास ही नहीं होता था। उन लोगोंके लिए यह बात कल्पनातीत थी कि उनका सेनानायक, जिसके अधीन उन्नीस पलटनें और बारह हजार अश्वारोही थे, जिसने भाग्यके बहुतसे उलट-फेर देखे थे, ऐसी कायरताके साथ उनका साथ छोड़ सकेगा। वे इस आशासे प्रेरित होकर कि हमारा नायक शीघ्र ही आ जायगा, बड़ी हिम्मतके साथ और उसके प्रति भक्ति भावसे प्रेरित होकर सीजरके बार बार कहलाने पर भी, अपने पक्षपर सात दिनोंतक डटे रहे। अन्तमें ऐण्टोनीके पलायनका निश्चय

और कैनीडियस आदि अफसरों द्वारा परित्यक्त होने पर उन्होंने आत्म-समर्पण कर दिया। इसके अनन्तर सीज़र अथेंज़ चला गया।

लीबिया पहुँचने पर ऐण्टोनीने क्लिओपेट्राको तो पेरीटोनियमसे मिस्र भेज दिया और स्वयं सिर्फ दो अनुचरों—एरिस्टोक्रेटीज़ और ल्यूसियस—को लेकर एक वीरान मरुभूमिमें चला गया।

ऐण्टोनीको जब यह समाचार मिला कि अफ्रिकाकी सेनाका नायक भी सीज़रके पक्षमें हो गया है, तो उसने आत्महत्या करनेका संकल्प किया पर उसके मित्रोंने उसे रोक दिया। सिकन्दरिया आने पर उसने देखा कि क्लिओपेट्रा अपने बचावके निमित्त एक साहसपूर्ण कार्यमें लगी हुई है।

लाल सागर और मिस्रके पार्श्ववर्ती समुद्रके बीच एक डमरूमध्य है जो लगभग ३८ मील चौड़ा है। क्लिओपेट्राने यहीं लालसागरमें अपना सारा बेड़ा एकत्र करने और मालमत्तेके साथ यहाँसे किसी ऐसे स्थानमें जानेका आयोजन किया था, जहाँ न तो किसीकी दासतामें रहना पड़े और न किसीसे युद्ध करनेका मौका आवे। पर पेट्राके अरबोंने जो पोत पहले पहुँचे उनको भस्मीभूत कर दिया और ऐण्टोनीको भी अपनी सेनाके तितरबितर होनेकी कोई न खबर थी, इसलिए क्लिओपेट्राने यह योजना छोड़ दी और उसके राज्यमें जो प्रवेशमार्ग थे उनकी किलेबन्दी करने लगी। ऐण्टोनी नगर और मित्रमण्डलीका साथ छोड़ कर फेरॉसके पास एक छोटेसे मकानमें चला गया जो उसने समुद्रमें बाँध बँधवा कर बनवाया था। यहाँ वह सबसे पृथक् होकर टाइमनकी तरह अपना जीवन व्यतीत करने लगा।

यह टाइमन अथेंज़का नागरिक था। यह मानव-समाजसे तो बड़ी घृणा करता था पर वीर अल्सीबाइअडीज़को बहुत प्यार करता था। ऐपेमेंटसको यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। उसके कारण पूँछने पर टाइमनने उत्तर दिया कि यही व्यक्ति अथेंज़का सर्वनाश करेगा, इसीलिए इसको प्यार करता हूँ। ऐपेमेंटसकी प्रकृति उससे मिलती जुलती थी,

इसलिए वह इससे कभी कभी मिल लेता था। एक बार एक भोजमें दोनों साथ ही भोजन कर रहे थे। ऐपेमेंटसने जब भोजकी तारीफ की तो टाइमनने उत्तर दिया—'यदि तुम यहाँ न होते तो वस्तुत यह अच्छा भोज था।" एक बार जनसभाकी बैठक हो रही थी, वह आकर व्याख्यान मंचपर चढ़ गया। इस विचित्र बातको देख कर जब सब लोग चुपचाप आश्चर्यके साथ उसकी ओर देखने लगे तो उसने कहा—'अथेन्सके नागरिको, मेरे अधिकारमें जमीनका एक छोटासा टुकड़ा है जिसमें अञ्जीरका एक दरख्त है, इस दरख्तसे बहुतसे नागरिकोंने फाँसी लगाकर अपनी जीवनयात्रा समाप्त की है। अब मैंने इस जमीनपर एक मकान बनानेका विचार किया है। इसलिए मैं सबके सुलेआम कह देता हूँ कि आप लोगोंमें अगर कोई फाँसी लगा कर अपना अन्त चाहता हो तो दरख्त कटनेके पहले ही यह काम कर ले।" मरने पर समुद्रके पास हेलमें उसकी समाधि बनायी गयी। समाधि बन जानेके बाद ऐसी विचित्र लीला हुई कि तटपरकी कुछ जमीन नीचे धँस गयी और समाधिके चारों ओर समुद्रका पानी इतना अधिक हो गया कि मनुष्यके जाने योग्य न रहा। उसकी समाधिपर यह स्मारक वाक्य खुदा हुआ है—

दुखोंसे मैं बिन माँग कर यहाँ कर रहा हूँ विश्राम।
बढ़ो, नरकगामी तुम होओ, किन्तु न पूछो मेरा नाम ॥*

कहा जाता है कि स्वयं उसने ही ये पँक्तियाँ लिखी थीं। पर जिस पद्यका प्राय उल्लेख किया जाता है उसका लेखक कैलीमेकस है। वह यह है—

इस समाधिमें मानवद्रोही टैमन करता है विश्राम।
दो अभिशाप, हटो तुम दुखी! आनेका मत लेना नाम ॥†

---

* Here am I laid, my life of misery done,
Ask not my name, I curse you every one

† Timon, the misanthrope, am I below,
Go, and revile me, traveller, only go

टाईमनके सम्बन्धमें इतना ही कहना काफी है, वैसे तो उसके विषयमें बहुतसी बातें कही जाती हैं, अस्तु। एक्टियममें सेनाके विनष्ट होनेका समाचार लेकर स्वयं कैनीडियस यहाँ आया। इसके अनन्तर जुडिदाके हिरोद तथा अन्यान्य नरेशोंके सीज़रके पक्षमें जानेकी सूचना मिली। ऐण्टोनीने देख लिया कि अब मेरा साथ देनेवाला कोई नहीं है। पर इन सब बातोंसे वह ज़रा भी क्षुब्ध नहीं हुआ बल्कि इन झंझटोंसे छुटकारा पानेकी आशामें उसे प्रसन्नता ही हुई। वह समुद्री निवासको छोड़कर क्लिओपेट्राके पास चला गया। वहाँ उसने नागरिकोंको खूब दावतें दीं। क्लिओपेट्रासे उत्पन्न सीज़रका पुत्र तरुणोंमें भरती हुआ और फुलवियासे उत्पन्न ऐण्टोनीका पुत्र ऐंटीलस बालिग़ करार दिया गया। इन बातोंकी खुशीमें कई दिनोंतक भोज आदि होते रहे।

पहले क्लिओपेट्रा और ऐण्टोनीने 'आदर्श मंडल' नामक एक समाज स्थापित किया था। अब इन लोगोंने 'मरणेच्छुक समाज' नामक एक दूसरा समाज क़ायम किया। इसमें केवल वही लोग शामिल हो सकते थे जो इनके साथ मरनेको तैयार थे। इसमें आमोद-प्रमोदका सिलसिला भंग नहीं होने पाया था। इधर क्लिओपेट्रा भिन्न भिन्न प्रकारके विषोंका संग्रह भी करती जाती थी। किस विषका पान करनेसे कितनी तकलीफ होती है, इस बातकी जानकारीके लिए वह प्राणदंड पाये हुए अपराधियोंपर विषोंका प्रयोग करती थी। जिन विषोंसे जल्द मृत्यु होती थी, उनमें तकलीफ भी अधिक होती थी। इससे वह अब विषैले जन्तुओंका प्रयोग करने लगी। अन्तमें उसने निश्चय किया कि काल-सर्पका दंश मृत्युके लिए विशेष उपयुक्त है क्योंकि इसमें रोना कराहना कुछ नहीं है, सुस्ती क्रमशः बढ़ती जाती है, ललाटपर थोड़ा पसीना निकल आता है, आदमीको किसी प्रकारका कष्ट या पीड़ा नहीं होती बल्कि गाढ़ी नींदमें सोये हुए मनुष्यकी तरह छेड़ छाड़ होनेसे ही उसे तकलीफ होती है।

इसी समय एशियामें सीज़रके पास दूत भेजा गया। क्लिओपेट्राने

अपने पुत्रोंके निमित्त मिस्रके राज्यके लिए और ऐण्टोनीने साधारण व्यक्ति की हैसियतसे मिस्रमें रहनेकी अथवा, यदि यह अधिक मालूम हो तो, एथेंज जानेकी अनुमतिके लिए प्रार्थना की। उसके अधिकांश मित्र पृथक् हो गये थे। जो थे वे पूर्णतया विश्वसनीय नहीं थे, इस कारण ऐण्टोनीके पुत्रका शिक्षक यूफ्रोनिअस दूतके तौर पर भेजा गया।

सीजरने ऐण्टोनीके किसी प्रस्तावकी ओर ध्यान नहीं दिया पर क्लिओपेट्राको उत्तर दिया कि अगर तुम ऐण्टोनीका वध करा दो या उसे मिस्रसे निकाल दो तो मैं तुम्हें अपने अनुग्रहका विश्वास दिलाता हूँ। उसने दूतके साथ ही अपने मुक्त दास थिरसस्को, जो वार्तालाप आदिमें बहुत चतुर था, भेजा। क्लिओपेट्राके साथ बहुत देरतक उसकी बातचीत होते देखकर और उसके द्वारा उसका विशेष सम्मान होनेके कारण ऐण्टोनीको ईर्ष्या होने लगी। उसने उसे पकड़वा कर खूब कोड़े लगवाये और तब उसे वापस कर दिया। साथ ही उसने सीजरको लिख दिया कि मैं अपनी इस परिस्थितिमें इसकी धृष्टता सहन करनेमें असमर्थ हूँ। यदि मेरा यह कार्य तुम्हें नागवार गुजरे तो तुम मेरे मुक्त दास हिपारकसके साथ जो तुम्हारे यहाँ है, इसका बदला चुका लेना। इसके बाद क्लिओपेट्रा सन्देह मिटाने और उसकी ईर्ष्याका उपशमन करनेके निमित्त उसके प्रति और भी ध्यान देने लगी। क्लिओपेट्राकी वर्षगाँठ स्थितिके अनुसार ही मामूली तरीकेसे मनायी गयी पर ऐण्टोनीकी जन्म तिथिके समय विशेष समारोह किया गया। जो लोग याचक होकर आये थे वे धन कुबेर होकर वापस गये। इस समय एग्रिपाने रोम जानेके निमित्त सीजरको कई पत्र लिखे, इससे युद्ध कई दिनोंके लिए स्थगित रहा।

शीतकाल व्यतीत होने पर सीजरने स्वयं तो सीरिया होकर यात्रा प्रारम्भ की किन्तु उसके सेनानायक अफ्रीका होते हुए आगे बढ़े। पेल्यूशिअमपर अधिकार हो जाने पर यह अफवाह उड़ी कि सेल्यूकसने इसे समर्पित कर दिया है और इसमें क्लिओपेट्राकी भी स्वीकृति है। क्लिओ-

पेट्राने अपनी मफाईमें सेल्यूकसकी स्त्री और बच्चोंको वध करनेके निमित्त ऐण्टोनीके सिपुर्द कर दिया। क्लिओपेट्राने आइसिसके मन्दिरके पास ही कई मीनारें तथा इमारतें बनवायी थीं जो ऊँचाई और कारीगरीके लिहाजसे अद्वितीय थीं। उसने अपना सारा खजाना, अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ तथा सन आदि शीघ्र जलनेवाली चीजें भी इन्हीं इमारतोंमें रखवा दीं। सीजरको भय हुआ कि कहीं वह निराश हो कर इन्हें भस्मीभूत न कर दे, इसलिए वह आगे बढ़ते समय क्लिओपेट्राको उसके प्रति सद्व्यवहार करनेकी आशा बराबर दिलाता गया। सीजरने हिपोड्रोममें पहुँच कर अपना डेरा डाला। ऐण्टोनीने भयानक आक्रमण कर उसके अश्वदलको भगा दिया और सेना-को भी पीछे हटा दिया। वहाँसे वह मनमें प्रसन्न होता हुआ क्लिओपेट्राके पास आया और उसने अपने एक दासको, जिसने इस युद्धमें बडी बहादुरी दिखलायी थी, उसके सामने उपस्थित कर दिया। क्लिओपेट्राने उसे सुवर्ण-का शिरस्त्राण और कवच पारितोषिक स्वरूप दिये। वह उन्हें लेकर उसी रात सीजरके पास चला गया।

इसके बाद ऐण्टोनीने शस्त्र-युद्धके लिए सीजरका आह्वान किया। इसके उत्तरमें उसने लिखा कि तुम्हें अपने जीवनका अन्त करनेके लिए और बहुतेरे उपाय मिल जायँगे। ऐण्टोनीने यह खयाल कर कि गौरवमयी मृत्यु युद्धमें ही मिल सकती है, स्थल और समुद्र दोनों ओरसे एक बार प्रयत्न करनेका संकल्प किया। भोजमें अच्छी अच्छी चीजें परसने और खूब शराब ढालनेका आदेश देते हुए उसने अनुचरोंसे कहा कि शायद कल तुम लोग किसी औरके दास हो जाओ और मैं धराशायी होकर सदाके लिए चल बसूँ, इसलिए आज तुम लोग अच्छी तरह मेरी सेवा कर लो। उसके पार्श्ववर्ती मित्र उसकी इस प्रकारकी बातें सुनकर रो पडे। यह देख उसने उनको आश्वासन देते हुए कहा कि सम्मानपूर्वक मरना विजयसे कम नहीं है! मध्य रात्रिके समय, जब कि सारा नगर निस्तब्ध हो रहा था और अगले दिनकी भयङ्करताका खयाल कर उदासी आदिके कारण इस निस्त

स्थतार्की प्रगाढ़ता और भी बढ़ती जा रही थी, एकाएक सभी प्रकारके वाद्यों तथा नृत्य-गानादिकी आवाज कर्णकुहरोंमें प्रवेश करने लगी। मालूम होता था, मानो कामदेव अपने दलबलके साथ किसीके ऊपर आक्रमण करने जा रहा हो। कोलाहलपूर्ण जलूस नगरके मध्य भागसे निकल कर उस द्वारतक जाता हुआ प्रतीत हुआ जो शत्रु सेनाके निकटतम था। वहाँ पहुँचने पर आवाज और ऊँची हो गयी। इसके बाद शीघ्र ही वह एकाएक विलीन हो गयी। लोगोंकी यह धारणा हुई मानो ऐण्टोनी जिन बक्कसदेवकी उपासना किया करता था, वह उसका परित्याग कर चले गये हैं।

प्रात काल होते ही वह अपनी सेना लेकर नगरके बाहर एक ऊँचे स्थानसे अपने बेड़ेका कार्य निरीक्षण करने लगा। आमने सामने होने पर ऐण्टोनीके सैनिक शत्रुओंका अभिवादन करने लगे और फिर दोनों मिल-कर सीधे नगरकी ओर चल पड़े। इसके साथ ही ऐण्टोनीका अश्वदल भी उसे छोड़कर सीजरके पक्षमें चला गया। पदातिके पराजित होने पर वह नगरमें चला गया और कहने लगा कि क्लिओपेट्राने धोखा देकर मुझे उन शत्रुओंके हाथ सौंप दिया है जो उसीके कारण मेरे शत्रु हुए हैं। इस डरसे कि कहीं ऐण्टोनी नैराश्यकी हालतमें मुझे क्षति न पहुँचावे, क्लिओपेट्राने अपने भवनमें जाकर भीतरसे दरवाजा मजबूतीके साथ बन्द कर लिया और अपने मरनेका संवाद ऐण्टोनीके पास भेज दिया। ऐण्टोनी इसका विश्वास कर बोल उठा—"ऐण्टोनी, अब देर कैसी? भाग्यने अब वह बहाना भी छीन लिया जिसकी वजहसे तुम जीनेकी इच्छा कर सकते थे।" अपने कमरेमें जाकर उसने बख्तर ढीला कर कहा "क्लिओपेट्रा, मैं तुम्हारी मृत्युसे विचलित नहीं हुआ हूँ, क्योंकि शीघ्र ही तुम्हारे साथ मेरा मिलाप हो जायगा, मुझे दु ख सिर्फ इसी बातका है कि इतना बड़ा सेनानायक औरतसे भी कम साहसी प्रमाणित हो।" ऐण्टोनीके साथ ईरोस नामक एक विश्वासपात्र दास था। उसने उसे

इसलिए नियुक्त किया था कि जब आवश्यकता प्रतीत हो, उसका काम तमाम कर दे। ऐण्टोनीने इस समय उसे यह प्रतिज्ञा याद दिलायी। ईरोसने मानो उसका वध करनेके लिए ही तलवार निकाली पर घूमकर अपने ही ऊपर हाथ साफ कर लिया। उसके पैरके पास ज्योंही वह धराशायी हुआ, त्योंही ऐण्टोनीने "शाबास ईरोस, तुमने अपने स्वामीको उस कार्यका तरीक़ा बतला दिया है जिसे करनेका तुम्हें साहस नहीं था" कहकर अपने कलेजेमें तलवार भोंक ली और पलंगपर लेट गया। घाव इतना गहरा न था कि शीघ्र ही मृत्यु हो जाय। पलंगपर लेटनेके बाद रक्तस्राव बन्द हो गया। होशमें आते ही उसने पार्श्ववर्तियोंसे इस कष्टसे मुक्त करनेकी प्रार्थना की पर वे सब उसको रोते-कराहते हुए छोड़ कर वहाँसे नौ दो ग्यारह हो गये। तबतक क्लिओपेट्राका मन्त्री उसे ले जानेके निमित्त वहाँ आ गया।

क्लिओपेट्राके जीवित होनेका विश्वास हो जाने पर ऐण्टोनीने नौकरोंको आज्ञा दी कि मुझे उठाकर वहाँ ले चलो। वे उसे क्लिओपेट्राके भवनके द्वार तक ले गये। क्लिओपेट्राने दरवाज़ा नहीं खोला, खिड़कीसे देखकर रस्सा लटका दिया। उसने तथा उसकी दोनों अनुचरियोंने, जिन्हें उसने अपने साथ रखा था, बड़ी कठिनाईसे ऐण्टोनीको ऊपर खींचा। जो लोग वहाँ मौजूद थे, उनका कहना है कि हम लोगोंको ऐसा करुणोत्पादक दृश्य देखनेका अवसर कभी नहीं मिला था। खूनसे लथपथ, मृतप्राय ऐण्टोनी क्लिओपेट्राकी तरफ हाथ जोड़े हुए था, तीनों औरतें अपनी शक्ति भर उसे ऊपर खींच रही थीं और नीचेसे लोग उनको बढ़ावा दे रहे थे। ऊपर खींच लेने पर क्लिओपेट्राने ऐण्टोनीको पलंगपर लिटा दिया; अपने वस्त्र नोच डाले, उसके रक्तसे अपनी शकल बिगाड़ ली और छाती पीट कर 'नाथ! स्वामी! सम्राट!' आदि कहती हुई चिल्लाने लगी। ऐण्टोनीने उसे शान्त कर कुछ शराब माँगी। इसके अनन्तर उसने क्लिओपेट्राको अपनी व्यवस्था करनेकी राय देते हुए कहा कि तुम सीज़रके मित्रोंमें

केवल प्रोक्यूलीयसका विश्वास कर सकती हो; मेरे गत सुखमय-जीवनका स्मरण कर भाग्यके इस फेरपर चिन्ता मत करो, क्योंकि मेरा जीवन बड़ा ही शानदार हुआ है। मेरी मृत्यु भी नीचतापूर्ण नहीं है, मैंने रोमनकी तरह विजय प्राप्त की है, और एक रोमनसे ही पराजित भी हुआ हूँ। ऐण्टोनीकी मृत्युके कुछ पहले प्रोक्यूलीयस सीज़रके पाससे आया, क्योंकि पेटमें तलवार भोंकनेके बाद ऐण्टोनी जब क्लिओपेट्राके पास पहुँचाया गया तो उसका एक दास रक्तरंजित खड्ग छुपकेसे लेकर सीज़रके पास चला गया। इसे देखकर सीज़र भीतर चला गया और अपने सहशासक तथा सम्बन्धीके स्मरणमें कुछ देर तक रोया, फिर अपने मित्रोंको बुलाकर अपने तथा ऐण्टोनीके पत्रोंको पढ़कर सुनाया जिनसे यह प्रतीत होता था कि उसके नम्रतापूर्वक और समझदारीके साथ लिखने पर भी ऐण्टो-नीके उत्तर गर्वोक्तिपूर्ण और अपमानजनक होते थे। इसके अनन्तर उसने प्रोक्यूलीयसको क्लिओपेट्राके पास किसी उपायसे उसे अपने वशमें कर-नेके निमित्त भेजा। एक तो उसे यह भय था कि कहीं उसका खजाना गायब न हो जाय, दूसरे, जुलूसमें क्लिओपेट्राके रहनेसे उसका गौरव बहुत बढ़ जाता, पर क्लिओपेट्रा भी खूब सचेत थी। वह भवनके भीतरसे बात करती थी और प्रोक्यूलीयस छड़दार द्वारके बाहरसे। वह तो अपने पुत्रके लिए अपना राज्य माँगती थी और यह उसे सीज़रके सद्व्यव-हारका आश्वासन दिलाता था।

क्लिओपेट्राके स्थानको भलीभाँति देख कर प्रोक्यूलीयस लौट आया। अब गैलियस उससे बात करनेके लिए भेजा गया। इसने जान बूझ कर बात बहुत बढ़ा दी, तबतक प्रोक्यूलीयस उस खिड़कीके पासतक सीढ़ी लगाकर जिससे ऐण्टोनी ऊपर खींचा गया था, दो आदमियोंके साथ चढ़ गया और जहाँ क्लिओपेट्रा खड़ी थी उस तरफ बढ़ा। एक अनुचरी उसे आता देखकर चिल्ला उठी—"बदनसीब क्लिओपेट्रा, तुम जीवित ही गिरफ्तार हो गयीं।" घूमकर प्रोक्यूलीयसको देखनेके साथ ही क्लिओपेट्राने

कटार-भोंककर आत्महत्या करनेका प्रयत्न किया पर उसने दौड़कर उसको दोनों हाथोंसे पकड़ लिया और कहा—"क्लिओपेट्रा, लज्जाके कारण तुम अपनेको और सीज़रको क्षति पहुंचा रही हो। न जाने क्यों तुम सीज़र-को सद्व्यवहारका अवसर नहीं देना चाहती और दयालु सेना-नायकके सिरपर धोखेबाजी एवं निष्ठुरताके कलंकका टीका लगाना चाहती हो।" उसने कटार हाथसे लेकर यह देखनेके लिए उसकी जामा-तलाशी ली कि उसने कहीं कोई विष तो नहीं छिपा रखा है। इसके अनन्तर सीज़रने इपेफ्रोडिटस नामक एक मुक्त दासको क्लिओपेट्राके प्रति शिष्टतापूर्ण बर्ताव करने और उसे जीवित रखनेका प्रयत्न करनेका आदेश देकर भेजा।

इसी समय सीज़रने एरियस नामक दार्शनिकको साथ लेकर अलेक्-ज़ेण्ड्रिया (सिकन्दरिया) में प्रवेश किया। सीज़र उसके हाथसे हाथ मिला-कर बातें करता जा रहा था। वह वहाँके नागरिकोंको यह दिखलाना चाहता था कि उनके एक नागरिकका कैसा सम्मान हो रहा है। व्यायाम-शालामें जाकर वह एक मञ्चपर खड़ा हो गया। फिर नागरिकोंको, जो भय और दहशतके मारे उसके आगे ज़मीनपर पड़ गये थे, खड़े होनेका आदेश देकर उसने कहा—"मैं सब लोगोंको अपराधसे मुक्त करता हूं, क्योंकि एक तो मुझे सिकन्दरका ख्याल है जिसने तुम्हारे इस नगरका निर्माण किया है। दूसरे, मुझे इस नगरका ख्याल होता है जो विशाल होनेके साथ अत्यन्त सुन्दर भी है और तीसरे, मैं अपने मित्र एरियसको सन्तुष्ट करना चाहता हूँ।"

सीज़रने एरियसका अत्यधिक सम्मान किया और उसके बीचबिचाव-से बहुतोंकी जानें बच गयीं जिनमें तर्कशास्त्रका अध्यापक फिलास्ट्रेटस विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। वह किसी विषयपर बहुत देरतक धारा-वाहिक भाषण कर सकता था पर एकेडेमीका दार्शनिक होनेका दावा नहीं कर सकता था। सीज़रने उसके आचरणसे तंग आकर उसकी प्रार्थना-पर ध्यान देनेसे इनकार कर दिया, इसलिए वह लम्बी सफेद दाढ़ी बढ़ा-

कर और शोकसूचक वस्त्र धारण कर एरियसके पीछे पीछे यह पद्य गाता फिरता था—"बुद्धिमान् जन बुद्धिमान्का निश्चय ही करते हैं त्राण।" सीजरने यह देखकर उसे क्षमा कर दिया पर इस क्षमाका कारण उस-पर दया दिखलानेका भाव न होकर एरियसको अपकीर्तिसे बचानेका उद्देश्य था।

फुलवियासे उत्पन्न एण्टोनीके पुत्र ऐण्टिल्सको उसके शिक्षक थीओडोरसने धोखा देकर मरवा डाला। सैनिक जब उसे तलवारके घाट उतार रहे थे, उसी समय उक्त शिक्षकने उसके गलेका बहुमूल्य रत्न चुपकेसे लेकर जेबमें रख लिया। अपराधसे इनकार करने पर उसे प्राणदण्ड दिया गया। क्लिओपेट्राके पुत्रोंके साथ अंगरक्षक रख दिये गये थे और उनका सम्मान भी किया जाता था। क्लिओपट्रासे उत्पन्न प्रधान शासक सीजरका पुत्र सीसेरियन काफी धन देकर भारतकी तरफ भेज दिया गया था पर उसका शिक्षक रोडन, जो थीओडोरसकी ही तरह ईमानदार बनता था, यह प्रलोभन देकर कि सीजर तुम्हें नरेश बनाना चाहता है, - उसे लौटा लाया। सीजरने एरियससे इसके सम्बन्धमें पूछा तो उसने उत्तर दिया 'बहुतसे सीजरोंका होना ठीक नहीं।' क्लिओपेट्राकी मृत्युके बाद इसका वध कर दिया गया।

कई नरेशों तथा प्रमुख सेनानायकोंने विधिपूर्वक अन्त्येष्टि करनेके निमित्त सीजरसे ऐण्टोनीके शवके लिए प्रार्थना की पर वह उसे क्लिओपेट्रासे नहीं ले सकता था, क्योंकि क्लिओपेट्राने बड़े ठाट-बाटके साथ उसे समाधिस्थ किया था और इच्छानुसार खर्च करनेकी उसे सीजरसे अनुमति भी मिल गयी थी। शोककी अधिकता और छाती पीटनेकी चोटसे क्लिओपेट्रा ज्वरग्रस्त हो गयी। इस बहाने भोजनसे परहेज करने और इसी प्रकार बिना छेड़ छाड़के मृत्युका आलिंगन करनेकी उसे आशा होने लगी। उसने अपने खास हकीम आलिम्पससे सारा भेद खोल दिया और उससे इस कार्यमें सहायक होनेकी भी प्रार्थना की। पर सीजरको क्लिओपेट्रा-

पर सन्देह हो गया, इसलिए उसने उसके लड़कोंके साथ कठोरता करनेका भय दिखला कर उसे भोजन और ओषधि स्वीकार करनेके लिए राज़ी कर लिया।

कुछ दिनोंके बाद सीज़र स्वयं क्लिओपेट्रासे मिलने और तसल्ली देनेके विचारसे गया। उस समय वह एक मामूली बिस्तरपर केवल एक वस्त्र धारण कर लेटी हुई थी। सीज़रके भीतर प्रवेश करने पर वह उसी हालतमें लपक कर उसके पैरोंपर गिर पड़ी। उसके बाल बिखरे हुए थे, चेहरा बदशकल हो गया था, आँखें भीतर धस गयी थीं और आवाज़ भी लड़खड़ा रही थी। दुःखसे व्याकुल हो कर उसने अपने शरीरको जो यातनाएँ दी थीं, उनके चिह्न उसके बदनपर स्पष्टतः झलक रहे थे। उसके अंग प्रत्यंगसे शोकजन्य कृशता व्यक्त हो रही थी। इतना होने पर भी सौन्दर्यकी मात्रा उसमें अभी अवशिष्ट थी जो उसके शोकके आवरणको भेद कर प्रस्फुटित हो रही थी। सीज़र उसको पलंगपर बैठा कर उसके पास ही बैठ गया। क्लिओपेट्राने अपने पक्षका समर्थन कर कहा कि मैंने जो कुछ किया है, वह स्थिति और ऐण्टोनीके भयसे प्रेरित होकर किया है। सीज़रको प्रत्येक बातका खंडन करते हुए देखकर उसने अनुनय-विनयका ढंग ग्रहण किया जिससे यह स्पष्ट हो रहा था कि वह जीवित रहना चाहती है। अन्तमें उसने अपने खज़ानेकी सूची सीज़रको दे दी। इसे देखकर सेल्यूकस नामक उसके एक दासने उसपर यह आरोप किया कि इसमें बहुत सी चीजें छोड़ दी गयी हैं। इसपर क्लिओपेट्राने लपक कर उसके केश पकड़ लिये और मुँहपर कई मुक्के जमाये। सीज़र जब मुस्कराते हुए उसे रोकने लगा, तो उसने कहा—'सीज़र, क्या यह बुरा लगनेकी बात नहीं है कि तुम तो मेरी इस परिस्थितिमें भी मुझसे मिलने आये हो और यह मेरा नौकर होकर भी औरतोंके खिलौने अपने पास रख छोड़नेका दोषारोप कर रहा है; फिर ये खिलौने मैंने अपने लिए नहीं, बल्कि आक्टेविया और लिवियाको भेंट-

स्वरूप दे कर उनके द्वारा तुम्हारा अनुग्रह प्राप्त करनेके उद्देश्यसे रख छोड़े हैं। सीज़र उसकी बातोंसे प्रसन्न हुआ और उसे पूरा विश्वास हो गया कि यह जीना पसन्द करती है। अन्तमें उन वस्तुओंका यथारुचि उपयोग करनेका आदेश देकर वह इस विश्वासके साथ विदा हुआ कि अब यह रंग-पर आ गयी है, पर वस्तुतः उसने सीज़रको कपट-जालमें फँसा लिया।

सीज़रके मित्रोंमें कार्नेलियस डोलाबेला नामक एक प्रसिद्ध तरुण व्यक्ति था। क्लिओपेट्राको उसने अपने हृदयमें स्थान दे रखा था। उसने क्लिओपेट्राको गुप्त रूपसे कहला भेजा कि तुम अपने बालबच्चोंके साथ तीन दिनमें यहाँसे भेज दी जाओगी, क्योंकि सीज़रने सीरिया होते हुए वापस जानेका निश्चय किया है। इसका मतलब समझ कर उसने स्वर्गीय ऐण्टोनी-को पूजा चढ़ानेकी' सीज़रसे अनुमति चाही। अपनी अनुचरियोंके साथ जाकर वह समाधिस्थानका आलिंगन करते हुए इस प्रकार रोकर कहने लगी—"प्रियतम ऐण्टोनी, अभी थोड़े ही दिन हुए हैं कि मैंने इन्हीं हाथोंसे तुम्हें समाधिस्थ किया था। उस समय हाथ स्वतंत्र थे पर आज मैं बन्धनमें हूँ। रक्षकोंकी निगरानीमें ही मैं तुम्हें यह अन्तिम श्रद्धांजलि प्रदान कर रही हूँ, इन्हें इस बातका भय है कि कहीं मैं शोकके आवेशमें अपने इस शरीरकी दुर्दशा न कर लूँ जो विजय-जलूसके लिए सुरक्षित रखा गया है। यही मेरा अन्तिम सम्मान और अन्तिम पूजा है, क्योंकि ये लोग मुझे शीघ्र ही एक दूरस्थ देशमें ले जानेवाले हैं। जीवितावस्थामें तो हम लोगोंको कोई पृथक् नहीं कर सका; हाँ, मृतावस्थामें पृथक् हो जायँगे। तुम रोमन होकर मिस्रमें अन्तिम नींद ले रहे हो और मेरी समाधि इटलीमें होगी। मिस्रके देवताओंने हमारा परित्याग कर दिया है, यदि रोमके देवताओंकी हमारे ऊपर कुछ भी कृपा हो तो वे हमें जलूसमें निकाल कर तुम्हें अपमानित होनेसे बचावें और तुम्हारे साथ इसी समाधिमें विश्राम लेने दें, क्योंकि अब मेरे लिए जीवन असह्य भार हो गया है।"

इस प्रकार अपनी किस्मतपर रोनेके बाद इस भाग्यहीना रानीने समाधिपर फूल चढ़ाकर उसका चुम्बन किया और फिर स्नानकी तैयारी की। स्नानके बाद भोजन करने बैठी। इसके थोड़ी ही देर बाद एक किसान एक टोकरी अंजीर लेकर द्वारपर पहुँचा। द्वार-रक्षकोंके पूछने पर उसने ऊपरकी पत्तियाँ हटाकर टोकरी दिखला दी। रक्षकोंके अंजीरोंकी प्रशंसा करने पर उसने उन्हें भी कुछ देनेकी इच्छा प्रकट की, पर उन्होंने लेना स्वीकार न कर उसे बिना किसी प्रकारके सन्देहके भीतर ले जानेकी आज्ञा दे दी। क्लिओपेट्राने सीज़रके पास एक मुहरबन्द चिट्ठी भेज दी और अपनी दो अनुचरियोंके सिवा सबको बाहर कर भीतरसे किवाड़ बंद कर लिये। पत्रमें ऐण्टोनीके साथ ही समाधिस्थ किये जानेकी सकरुण प्रार्थना देखकर सीज़रको यह समझनेमें देर न लगी कि बात क्या है। पहले तो वह शीघ्रतामें स्वयं जानेको उठ खड़ा हुआ पर यह विचार बदल कर उसने क्लिओपेट्राको देखनेके लिए दूसरोंको भेज दिया। तबतक वहाँ फुर्तीसे काम निकाल लिया गया था। सीज़रके आदमी बड़ी तेज़ीसे आये पर रक्षकोंमें इस प्रकारका कोई भाव नहीं देखा जिससे प्रकट होता कि कोई विशेष घटना हुई है। दरवाज़ा खोलने पर दूतोंने देखा कि क्लिओपेट्रा सुवर्ण-सिंहासनपर निष्प्राण पड़ी हुई है और आइरस नामक एक दासी उसके पैरोंके पास मरी पड़ी है तथा चार्मियन नामक दूसरी दासी जिसका अन्त बहुत क़रीब था और जो मुश्किलसे अपना मस्तक ऊपर उठा सकती थी, अपनी स्वामिनीका मुकुट ठीक कर रही है। सीज़रके एक दूतने क्रोधमें आकर पूछा 'चार्मियन, क्या यह अच्छी बात हुई है?' उसने उत्तर दिया—"सर्वथा उचित; और यही मिस्री नरेशोंके वंशजके लिए योग्य भी था।" यह कहनेके साथ ही उसने अपनी इहलीला समाप्त कर दी।

कुछ लोगोंका कहना है कि अंजीरोंके साथ पत्तियोंमें एक काल सर्प छिपाकर लाया गया था। क्लिओपेट्राने इस प्रकारकी व्यवस्था इसलिए की थी जिसमें बिना देखे ही वह उसका दंश कर ले। पत्तियाँ हटाने

पर सर्पको देखकर उसने अपना हाथ उसके आगे कर दिया। औरोंका कहना है कि एक जलपात्रमें यह काल सर्प छिपा कर रखा गया था और उसने एक सुवर्णके सूजेसे उसे छेड़ कर हाथमें डंस कराया। यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि सत्य क्या है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि वह एक खोखले काँटेमें, जिससे वह अपने बाल बाँधा करती थी, विष छिपाकर रखती गयी थी। पर न तो उसके बदनपर विषका कोई चिन्ह नजर आया और न उस भवनके अन्दर काला सर्प ही पाया गया। हाँ, उस घरके द्वारके सामने बालुकापर किसी सरीसृपके रेंगनेका चिन्ह अवश्य देख पड़ा था। कुछ लोगोंने यह कहा है कि उसके हाथपर सर्प-दंशके दो चिन्ह थे। सीजरने भी इस बातका समर्थन किया था, क्योंकि जलूसमें क्लिओपेट्राकी जो प्रतिमा निकाली गयी थी उसके हाथपर सर्प भी बना हुआ था। उसकी मृत्युसे निराश होते हुए भी सीजरने उसके साहसकी बड़ी प्रशंसा की और शाही ठाट बाटके साथ उसे ऐण्टोनीके साथ ही समाधिस्थ करनेकी आज्ञा दे दी। उस समय क्लिओ-पेट्राकी अवस्था उनचालीस वर्षकी थी। इसके अन्तिम २२ वर्ष मिस्रके शासन और ऐण्टोनीके सहवासमें व्यतीत हुए थे। ऐण्टोनीकी अवस्था कुछ लोग ५३ वर्ष और कोई कोई ५६ वर्ष बतलाते हैं। ऐण्टोनीकी सभी प्रतिमाएँ नष्ट कर दी गयीं पर क्लिओपेट्राकी ज्योंकी त्यों छोड़ दी गयीं, क्योंकि उसके एक मित्र आर्कीबियसने उनको बचानेके विचारसे सीजरको दो हजार टैलेंट दिये थे।

ऐण्टोनीके, उसकी तीनों स्त्रियोंसे, सात सन्तानें थीं। सबसे बड़े पुत्र एंटीलसको सीजरने मरवा डाला था। आक्टेवियाने अपनी सन्ता-नोंके साथ ही औरोंका भी लालन-पालन किया। क्लिओपेट्रासे उत्पन्न क्लिओपेट्रा नामक पुत्रीका विवाह नृपवर जूबाके साथ हुआ। फुल्-वियासे उत्पन्न ऐण्टोनी आक्टेवियाके कारण इतना गौरवान्वित हो गया था कि एग्रिपा और लिवियाके पुत्रोंके बाद सीजरके कृपापात्रोंमें इसी-

का स्थान था। आक्टेवियाके अपने पहले पति मार्सेलससे दो कन्याएँ और मार्सेलस नामक एक पुत्र था; एक कन्याका विवाह उसने एग्रिपासे कर दिया। लड़केका पालनपोषण सीज़रने अपने पुत्रकी तरह किया और उसे अपनी कन्या विवाह दी। पर थोड़े-ही दिनों बाद उसके लड़केकी मृत्यु हो जानेसे सीज़र उत्तराधिकारकी चिन्तामें पड़ गया। यह देख आक्टेवियाने सीज़रको अपनी (सीज़रकी) कन्याके साथ एग्रिपाका विवाह करने पर राज़ी किया जिससे उसकी (आक्टेवियाकी) लड़कीको तलाक़ देना पड़ा। उसने इस लड़कीका विवाह नवयुवक ऐण्टोनीके साथ कर दिया। आक्टेवियाकी ऐण्टोनीसे उत्पन्न दो कन्याओंमेंसे एकका विवाह डोमीशियस अहीनोबारबसके साथ और दूसरीका, जिसका नाम ऐंटोनिया था और जो सौन्दर्य तथा सद्गुणोंकी खान ही थी, लिवियाके पुत्र एवं सीज़रके जामाता ड्रससके साथ हुआ।

डेमिट्रियस और ऐएटोनीकी तुलना।

इन दोनोंके ही जीवन भाग्यके उलट-फेरके अच्छे उदाहरण हैं; इसलिए पहले यह देखना चाहिए कि ये किस प्रकार गौरवान्वित और शक्तिशाली हुए। डेमिट्रियसको राज्य और शक्ति वरासतमें ही मिली थी क्योंकि ऐंटिगोनस सिकन्दरके उत्तराधिकारियोंमें सबसे अधिक प्रभावशाली था। डेमिट्रियसके बालिग़ होनेके पहले ही वह एशियाका अधिकांश विजित कर चुका था। इसके प्रतिकूल ऐण्टोनीका पिता सदाचारी तो था, पर न तो उसमें सैनिक शक्ति थी और न ऐण्टोनीको हस्तान्तरित करनेके लिए कोई ख्याति ही उसने प्राप्त की थी। सीज़रके स्थानमें वह स्वयं राज्यका उत्तराधिकारी बन बैठा। उसने इतनी शक्ति संचय कर ली कि साम्राज्यको दो भागोंमें विभक्त कर अच्छा भाग स्वयं अपने अधिकारमें ले लिया। युद्ध-सञ्चालनार्थ स्वयं न जाकर उसने अपने नायकों द्वारा पार्थियनोंको पराभूत किया और काकेशसकी बर्बर जातियोंको कास्पियन सागरतक मार

भगाया। जो उसकी अपकीर्तिके कारण थे, वही उसकी महत्ताके साधन थे। ऐंटिगोनसने ऐंटीपेटरकी पुत्री फिलाके साथ, दोनोंकी अवस्थामें विषमता होते हुए भी, डेमिट्रियसका विवाह करनेमें अपना गौरव समझा पर क्लिओपेट्राके साथ ऐन्टोनीका विवाह-सम्बन्ध असम्मान्य समझा गया, यद्यपि क्लिओपेट्रा समृद्धि और शानशौकतमें उस समयके प्राय: सभी नरेशोंसे बढ़ी हुई थी। ऐन्टोनीका महत्त्व इतना बढ़ गया था कि संसार उसे उसकी जो आकांक्षाएँ थीं उनसे अधिक ऊँचे कार्योंके योग्य समझता था।

साम्राज्याधिकारके औचित्यपर विचार किया जाय तो डेमिट्रियस दोषी नहीं ठहरता, क्योंकि वह ऐसे लोगोंपर शासन करता था जो बराबर राजाओं द्वारा शासित होते आये थे, पर ऐन्टोनीके सम्बन्धमें यह बात नहीं कही जा सकती। रोमनोंने सीजरके शासनसे अभी अभी अपना पिंड छुड़ाया था कि इसने उनको पुन दासताके बन्धनसे जकड़ कर स्वेच्छाचारी शासनकी नीति ग्रहण की। उसका सबसे बड़ा कार्य—ब्रूटस और केसियसका पराभव—अपने देश और सहनागरिकोंको स्वाधीनतासे वंचित करनेके उद्देश्यसे प्रेरित था। डेमिट्रियसने, अपने अच्छे दिनोंमें, यूनानकी स्वाधीनता अक्षुण्ण बनाये रखी और बाहरी सेनाको नगरोंसे निकाल बाहर किया पर ऐन्टोनी तो रोममें स्वाधीनताका दावा करनेवालोंको तलवारके घाट उतारनेकी डींग मारा करता था। दान एक ऐसा विषय है जिसके कारण ऐन्टोनीकी विशेष प्रशंसा हुई, पर इसमें भी डेमिट्रियस ऐन्टोनीसे आगे बढ़ गया था क्योंकि ऐन्टोनी जिस कदर अपने मित्रोंको देता था उससे कहीं अधिक तो डेमिट्रियस अपने शत्रुओंको दे डालता था। ब्रूटसको सम्मानके साथ समाधिस्थ करनेके कारण ऐन्टोनीकी प्रसिद्धि है पर डेमिट्रियसने अपने सभी शत्रुओंके शवोंके साथ इसी प्रकारका वर्ताव किया और रणबन्दियोंको धन एवं पुरस्कार देकर टालेमीके पास वापस कर दिया।

अभ्युदयके समय दोनों ही उच्छृंखलता एवं प्रमादके शिकार होकर विलासिताके गड्ढेमें गिरे, पर हम डेमिट्रियसको आमोद-प्रमोदकी वेदीपर आवश्यक कार्योंकी बलि चढ़ाते नहीं देखते, केवल अवकाशके समयमें ही वह मनोरंजनकी ओर प्रवृत्त होता था। युद्ध-भूमिमें जाते समय उसके भालेमें माधवीकी लता नहीं लिपटी होती थी और न उसके शिरस्त्राणसे इत्रकी सुगंधि ही निकलती थी; वह अन्तःपुरसे युद्धके लिए प्रस्थान नहीं करता था। सारांश यह कि विलासितामें लिप्त होकर वह कभी किसी युद्धमें पराभूत नहीं हुआ। ऐण्टोनीकी हालत कुछ और ही थी। जिस प्रकार हरकुलीज़के चित्रोंमें हम लोग ओंफली द्वारा उसकी गदा और व्याघ्रकी खाल अपहृत होते देखते हैं, उसी प्रकार हम क्लिओपेट्राको उसके शरीरसे शस्त्र उतारते हुए पाते हैं। जिस समय उसे युद्धमें रहना चाहिए था, उस समय उसे हम नृत्यशाला तथा विहारस्थलोंमें विचरण करते हुए देखते हैं। पेरिसने युद्धमें पराजित होकर हेलेनकी गोदमें आश्रय लिया था, पर ऐण्टोनीने क्लिओपेट्राका अनुसरण करनेके लिए विजय-लक्ष्मीको लातसे ठुकरा दिया।

डेमिट्रियसके लिए विधानतः बहुविवाहका निषेध नहीं था। फिलिप तथा सिकन्दरके समयसे ही मकदूनियाके नरेशोंमें यह प्रथा चली आ रही थी। इसने भी कई विवाह किये पर यह सभी स्त्रियोंका सम भावसे सम्मान करता था। पहले पहल ऐण्टोनीने ही दो स्त्रियोंका एक साथ पाणिग्रहण कर एक ऐसा कार्य किया जो कभी किसी रोमनने नहीं किया था। यही नहीं, उसने एक विदेशी उपमंत्रीको सन्तुष्ट करनेके लिए अपनी धर्मपत्नीको निकाल बाहर किया। डेमिट्रियसको तो इन विवाहोंसे कोई क्षति नहीं पहुँची पर ऐण्टोनीका विवाहके ही कारण सर्वनाश हुआ।

अनुचित सम्बन्धोंके विषयमें डेमिट्रियसका पलड़ा बहुत नीचा था। इतिहासकारोंका कथन है कि अथेंसवाले कुत्तोंको, प्रकाश्य रूपसे समागम करनेके आदी होनेके कारण, दुर्गप्राचीरके बाहर खदेड़ देते थे, पर डेमिट्रियस

मिनर्वाके मन्दिरमें ही वारांगनाओंको बुलाया करता था और अथेंसकी कुलांगनाओंको आचार भ्रष्ट किया करता था। विषयासक्ति तथा क्रूरता परस्परविरोधी भाव हैं, पर डेमिट्रियसमें ये दोनों मौजूद थे। अथेंसके कई सुन्दर तथा सदाचारशील तरुण व्यक्तियोंने उसकी विषयासक्तिके कारण अपने प्राणोंसे हाथ धोये। संक्षेपमें हम कह सकते हैं कि विषयासक्तिके कारण ऐण्टोनीने तो स्वयं अपना अपकार किया पर डेमिट्रियसने औरोंको क्षति पहुँचायी।

माता पिता तथा आत्मीय गुरुजनोंके प्रति बर्तावके सम्बन्धमें डेमिट्रियसपर किसी प्रकारका दोषारोप नहीं किया जा सकता किन्तु ऐण्टोनीने तो सिसरोका वध करनेके लिए उसके बदलेमें अपने मामाको समर्पित कर दिया था। यदि ऐण्टोनीने अपने मामाको समर्पित न कर वध भी लिया होता तो भी उसका यह अपराध सर्वथा अक्षम्य था। सन्धियों तथा प्रतिज्ञाओंके भगके सम्बन्धमें दोनों अपराधी साबित होते हैं। आर्टावेजेसकी गिरफ्तारी और अलेक्जेण्डर (सिकन्दर) के वधके सम्बन्धमें ऐण्टोनीकी ओरसे जो दलीलें दी जा सकती हैं वे सत्य हैं, पर डेमिट्रियस अपने कार्योंके समर्थनके लिए झूठे बहाने ढूँढा करता था, हानि पहुँचाने पर पश्चात्ताप करना तो दूर रहे, उसने एक क्षतिग्रस्त व्यक्तिके ही सिरपर अपराध मढ़ दिया।

डेमिट्रियसके कार्य स्वय उसकेही द्वारा सम्पादित हुए थे, पर ऐण्टोनीकी विजयें उसकी अनुपस्थितिमें उसके सहायकों द्वारा प्राप्त हुई थीं। दोनोंने अपने ही दोषोंके कारण साम्राज्यसे हाथ धोया। हाँ, इन दोषोंके रूपमें भेद अवश्य था। मकदूनियावालोंने डेमिट्रियसके विरुद्ध बलवा कर उसका परित्याग कर दिया पर ऐण्टोनीने उन लोगोंका परित्याग किया जो उसीके लिए अपना रक्त बहा रहे थे। डेमिट्रियसने अपने दुराचरणसे अपने सैनिकोंकी सहानुभूति खो दी और ऐण्टोनीने अपने सैनिकोंके प्रेम और सहानुभूतिकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। दोनोंमें किसीकी भी

मृत्युकी प्रशंसा नहीं की जा सकती, बल्कि डेमिट्रियसके सम्बन्धमें तो और भी घृणा उत्पन्न होती है, क्योंकि उसने अपनेको बन्दी बना दिया और केवल लोभकी तृष्णा शांत करनेके निमित्त तीन वर्षोंतक कैदखानेकी हवा खाता रहा। ऐण्टोनीने भीरुतामय तथा अपमानजनक तरीकेसे अपना अन्त किया पर उसने यह कार्य ठीक समयके भीतर अर्थात् अपने शरीरपर शत्रुओंका अधिकार होनेके पहले ही सम्पादित किया।

११—डायन

अब मैं डायन तथा ब्रूटसके जीवनचरित्र लिखने जा रहा हूँ। मैंने जान बूझकर रोम तथा ग्रीस, दोनों ही देशोंके समसंख्यक महापुरुषोंका जीवन-वृत्तान्त देनेकी चेष्टा की है, जिसमें एकेडेमीपर कोई यह दोषारोपण न कर सके कि उसने दोमेंसे किसी एक देशका पक्षपात किया है। डायनने तो अफलातून-की संगतिमें ही रहकर उसका शिक्षामृत पान किया था और ब्रूटसने भी उसके दार्शनिक सिद्धान्तोंके अनुरूप शिक्षा पायी थी। दोनों मानों एक ही विद्यालयके विद्यार्थी थे और दोनोंको एक सदृश ही सम्मानित जीवन व्यतीत करना सिखलाया गया था। दोनोंने अपने कार्योंसे, जिनमें बहुत कुछ समानता है, अपने आचार्य और पथ-प्रदर्शकके इस कथनकी सत्यता प्रमाणित कर दी कि "जबतक शक्ति और सफलताके साथ न्याय एवं दूरदर्शिताका सम्मिलन नहीं होता, तबतक सार्वजनिक कार्योंका उनका वास्तविक महत्त्व प्राप्त नहीं होता।"

इन महापुरुषोंको अपने जीवनमें जो जो सुख-दुःख उठाने पड़े उनमें भी बहुत कुछ समानता है, यद्यपि इस सादृश्यका कारण उनका अपना

प्रयत्न नहीं प्रत्युत दैवसंयोग ही है। दोनोंने बड़े बड़े वष्ट उठाकर और अनेक कठिनाइयोंका सामना कर अपने अपने अभीष्टकी सिद्धिका प्रयत्न किया, किन्तु असमय ही इस संसारसे चल बसनेके कारण दोनों अपने प्रयत्नमें पूर्ण सफलता नहीं पा सके। इससे भी अधिक आश्चर्यकी बात यह है कि कुछ अद्भुत घटनाओंके जरिये दोनोंको ही अपनी आसन्न मृत्यु-की पूर्व सूचना मिल गयी थी। मृत्युके कुछ ही समय पहले दोनोंको एक भीषण आकृति देख पड़ी थी। बहुतसे लोग इन सब बातोंको नहीं मानते। उनका ख्याल है कि किसी भी मनुष्यको, जिसके होश-हवास दुरुस्त हों, इस तरहकी कोई विलक्षण आकृति या छाया कभी दृष्टिगोचर नहीं होती। केवल बालकों, भोली भाली स्त्रियों, अथवा मानसिक व्याधिसे ग्रस्त मनु-ष्योंके दिमागमें ही मतिभ्रम या शारीरिक उत्तेजनाके समय, ऐसी वे सिर पैर-की एवं असाधारण कल्पनाएँ उठा करती हैं, जब कि वास्तविक भूत-प्रेत अन्ध विश्वासके रूपमें उनके सिरके भीतर ही बैठा रहता है। किन्तु डायन तथा ब्रूटस दोनों ही पूर्ण विद्वान् और तत्त्ववेत्ता थे। वे यों ही किसी कल्पनासे भ्रान्तिमें नहीं पड़ सकते थे और न सहसा भय उत्पन्न करनेवाली किसी बातसे ही धोखा खा सकते थे। जब इन लोगोंको भी इस तरहकी छाया देख पड़ी, और उन्होंने तुरन्त अपने मित्रोंको बुलाकर अपनी आँखों देखी बातका वर्णन किया, तब यह मेरी समझमें नहीं आता कि हम इस विवादग्रस्त प्राचीन विषयकी सत्यतामें क्यों विश्वास न करें कि कुछ दुष्ट प्रेतात्माएँ सज्जनोंके प्रति ईर्ष्या भावसे प्रेरित होकर एवं उनके सत्कार्योंमें विघ्न उपस्थित करनेकी इच्छासे, उनके मनमें भय तथा विक्षोभ उत्पन्न करने की चेष्टा करती हैं। उन्हें सन्मार्गसे डगमगा देनेका प्रयत्न करते समय उनका ध्यान कदाचित् इस बातकी तरफ रहता है कि यदि ये लोग लगातार एवं दृढ़तापूर्वक सत्कार्योंके सम्पादनमें ही संलग्न रहेंगे तो सम्भव है कि मृत्युके उपरान्त हमारी अपेक्षा ये अधिक सुखमय स्थिति प्राप्त कर सकें। जो हो, अब मैं इस प्रश्नको यहीं छोड़कर अपने वास्तविक विषयकी ओर बढ़ता हूँ।

प्रथम डायोनीशियसने राज्यका अधिकार पाकर तुरन्त सिराक्यूस-निवासी हरमोक्रेटीज़की पुत्रीके साथ विवाह कर लिया। किन्तु नूतन शासनके सुदृढ़ रूपसे स्थापित होनेके पूर्व वहांके नागरिकोंने जो विद्रोह किया था, उसमें उस महिलाके साथ ऐसा अनाचार हुआ कि लज्जावश उसने आत्महत्या कर डाली। डायोनीशियसकी सत्ता पुनः सुस्थापित हो गयी, तब उसने एक साथ ही दो स्त्रियोंसे विवाह किया। इनमेंसे एक तो लोकाइनी रहनेवाली डोरिस थी और दूसरी सिसिलीकी ऐरिस्टोमैची थी जिसके पिताका नाम हिपैरिनस था। यह सिराक्यूसका सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति था और जब डायोनीशियस प्रथम बार युद्धका सेनापति चुना गया, तब उसका समकक्ष था। कहते हैं, डायोनीशियसने दोनों महिलाओं-के साथ एक ही दिन विवाह किया था और यह कोई नहीं बतला सकता था कि उनमेंसे पहले उसने किसका पाणिग्रहण किया था। दोनोंके प्रति समान रूपसे ही वह प्रेम प्रदर्शित करता था। भोजनके समय दोनों ही उसके साथ बैठती थीं और शयनगृहमें भी दोनों अपनी अपनी पारीसे प्रवेश करती थीं। सिराक्यूस-निवासी तो चाहते थे कि एक विदेशी महिलाकी तुलनामें उनके देशकी रमणी (ऐरिस्टोमैची) को ही अधिक ऊंचा स्थान मिले। डोरिस अन्य देश-निवासिनी अवश्य थी, पर उसके पक्षमें एक बात यह थी कि सौभाग्यसे उसके एक पुत्र हो गया था जो वंशका उत्तराधिकारी था, किन्तु ऐरिस्टोमैचीसे चिर कालतक कोई सन्तान ही नहीं हुई। डायोनीशियसकी बड़ी इच्छा थी कि उससे भी कोई सन्तान होवे, इसीसे जब उसे यह शक हुआ कि डोरिसकी मांने ऐरिस्टोमैचीको कोई ऐसी दवा खिला दी है जिससे उसके कोई बच्चा न होने पावे, तब उसने उसे मरवा डाला।

डायन ऐरिस्टोमैचीका भाई था और वह बड़ा लायक आदमी था, इसीसे डायोनीशियस उससे बहुत खुश था। उसने अपने कोषाध्यक्षोंको आज्ञा दे रखी थी कि डायन जितना द्रव्य माँगे उसे तुरन्त दे दिया

जाय। यद्यपि डायन अपने उच्च चरित्र तथा सद्विचारों एवं अपूर्व साहसके कारण पहले ही प्रसिद्ध हो चुका था, फिर भी अकस्मात् अफलातूनके साथ सम्पर्क हो जानेके कारण उसके गौरवका और भी अधिक विकास होता गया। मालूम होता है, मानो ईश्वर स्वयं चाहता था कि सिसिलीकी निवासी अपनी खोयी हुई स्वाधीनता पुनः प्राप्त कर लें, इसीसे उसने अफलातूनको इटलीसे सिराक्यूज भेज दिया और उसके साथ डायनका परिचय करा दिया। डायनकी अवस्था इस समय छोटी ही थी, किन्तु था वह बड़ा कुशाग्रबुद्धि। सदाचारकी जो कुछ शिक्षा उसे अफलातूनसे मिलती थी, उसे वह तुरन्त ग्रहण कर लेता था और उसके अनुसार कार्य करनेके लिए उत्सुक हो उठता था। यद्यपि उसका पालन-पोषण निरंकुश शासककी अधीनतामें हुआ था और वह एक ऐसे जीवनका आदी हो गया था जिसकी एक विशेषता तो क्षुद्र आज्ञा-पालन और निम्न बने रहना एवं दूसरी दुर्गुणों तथा ऐशो आराममें मग्न रहना थी, फिर भी बुद्धिका प्रथम आभास होते ही और उस तत्वविज्ञानका अध्ययन आरम्भ करते ही, जिसमें सद्गुणोंके अनुसरणपर विशेष महत्व दिया जाता है, उसकी आत्मा एक नूतन ज्योतिसे जगमगा उठी। उसे नवयुवकों जैसे अपने सीधे सादे विचारों तथा अपने स्वभावसे यह विश्वास हो गया कि यदि ऐसे ही विचारों और बुद्धिका आस्वादन डायोनीसियसको कराया जाय तो उसपर ऐसा ही आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ेगा। इसीसे उसने विशेष रूपसे प्रयत्न करके और खूब समझा बुझाकर डायोनीसियसको अवकाशके समय अफलातूनका उपदेश सुननेके लिए राजी किया।

अफलातूनके साथ बैठने पर साधारणतया मानव-सदाचारके संबन्धमें विवाद होने लगा। जब कष्टसहिष्णुताके विषयमें बात-चीत होने लगी, तब अफलातूनने साबित किया कि अन्य लोगोंकी अपेक्षा निरंकुश शासकोंमें यह गुण शायद ही कभी पाया जाता हो। इसके बाद अफलातूनने न्यायका विषय छेड़ा। न्यायी मनुष्य कितना सुखी होता

है और अन्यायी कितना दुःखी, यह दिखलानेके लिए जो दलीलें वह पेश करने लगा, उन्हें सुनकर डायोनीशियस घबरा उठा। उसके शब्दोंसे मन ही मन मानो वह अपनेको दोषी समझने लगा। अन्य श्रोताओंको अफ़लातूनकी तारीफ़ करते और उसके सिद्धान्तोंसे मुग्ध होते देखकर वह बहुत अप्रसन्न हुआ। अन्तमें बहुत तंग आकर उसने गुस्सेके साथ अफ़लातूनसे पूछा "आपको सिसिली आनेकी क्या ज़रूरत आ पड़ी थी?" अफ़लातूनने उत्तर दिया "मैं एक सदाचारी मनुष्यकी खोजमें आया हूँ।" यह सुनकर डायोनीशियसने कहा "तब तो मालूम होता है कि आपका परिश्रम व्यर्थ ही गया।" डायनने समझा कि डायोनीशियसने गुस्सेमें आकर जो कुछ कह दिया उतनेमें ही मामला खतम हो जायगा, अब इसके आगे और कोई काररवाई न की जायगी, इसीसे अफ़लातूनके कहने पर उसने उसे उस नौकामें पहुँचा दिया जो स्पार्टानिवासी पोलिस-को ग्रीस ले जा रही थी। किन्तु इधर डायोनीशियसने चुपचाप पोलिस-को समझा दिया कि "जहाँतक बन पड़े अफ़लातूनको तुम रास्तेमें ही मार डालना और यदि ऐसा न कर सको तो उसे गुलाम कह कर बेच देना। अफ़लातून तुम्हारे इस व्यवहारसे कुछ भी बुरा न मानेगा, वह जैसा न्यायी पहले था वैसा ही बना रहेगा। अपनी आज़ादी खोकर भी वह अपनेको उसी तरह सुखी रख सकेगा।" इसीसे, कहते हैं, पोलिसने उसे ईजिना ले जाकर बेच दिया। उस समय अथेंसके साथ ईजिनावालोंका युद्ध चल रहा था, अतः उन्होंने यह आदेश निकाल रखा था कि हमारे समुद्र-तटपर यदि कोई भी अथीनियन पाया जायगा तो वह तुरन्त बेच दिया जायगा। इधर इस घटनाके बाद भी डायनपर डायोनीशियसकी वैसी ही कृपादृष्टि बनी रही, यहाँतक कि कई दायित्वपूर्ण कार्य उसके सिपुर्द किये गये और वह कई बार विशेष दौत्य-कार्यके लिए कार्थेज भेजा गया। इसमें उसे अच्छी ख्याति प्राप्त हुई।

डोरिससे डायोनीशियसके तीन बच्चे थे और एरिस्टोमैचीसे चार,

जिनमें दो लड़कियाँ थीं। इनमेंसे एकका नाम था सोफ्रोज़िन और दूसरीका ऐरीटी। सोफ्रोज़िनका विवाह उसके पुत्र (अर्थात अपने सौतेले भाई) छोटे डायोनीशियसके साथ हुआ था और ऐरीटीका उसके भाई (अर्थात अपने चाचा) थीरीडीज़के साथ। थीरीडीज़की मृत्युके बाद ऐरीटी डायनकी पत्नी बन गयी। जब डायोनीशियस बीमार पड़ा और उसकी मृत्यु निकट मालूम पड़ने लगी, तब डायनने उससे ऐरिस्टोमैर्कीके पुत्र-पुत्रियोंके सम्बन्धमें बातचीत करनेकी कोशिश की, किन्तु चिकित्सकोंने उसे रोक दिया। रोगीके कहनेसे उन्होंने उसे निद्रा लानेवाली एक दवा पिला दी, जिससे उसे एक तरहकी बेहोशी आ गयी और बादमें उसकी मृत्यु भी हो गयी।

फिर भी जब छोटे डायोनीशियसने अपने मित्रोंसे परामर्श करनेके लिए पहली ही बार सभा की, तब डायनने वर्तमान परिस्थितिके सम्बन्धमें इस योग्यतासे बहस की कि उसके सामने अन्य सभी राजनीतिज्ञ बच्चों जैसे मालूम होने लगे और उन्होंने अपनी अपनी जो राय जाहिर की थी, उससे यह प्रतीत होने लगा मानो वे उचित सलाह देनेवाले मंत्री न होकर हाँमें हाँ मिलानेवाले गुलाम ही हों, क्योंकि उन्होंने डरते डरते नासमझीसे ऐसी ही बातें कहीं जिन्हें सुनकर डायोनीशियस प्रसन्न होता, यद्यपि उनसे उसकी भलाई होनेकी सम्भावना नहीं थी। किन्तु उन्हें सबसे अधिक आश्चर्य डायनके उस प्रस्तावसे हुआ जो कारथेजियन लोगोंसे शीघ्र ही होनेवाली लड़ाईका भय दूर करनेके सम्बन्धमें था। डायनने डायोनीशियससे कहा कि यदि आप शान्ति चाहते हों, तो मैं इसी समय आफ्रिका जानेको तैयार हूँ। वहाँ मैं सम्मानपूर्ण शर्तोंपर सब कुछ तै करा दूँगा। किन्तु यदि आप युद्ध करना ही पसन्द करें तो मैं आपकी सहायताके लिए स्वयं पचास नौकाएं प्रस्तुत करने और उन्हें अपने ही खर्चसे सुसज्जित रखनेको तैयार हूँ।

डायोनीशियसको उसके चित्तकी

उसने बड़ी प्रसन्नताके साथ उसकी सहायता लेना स्वीकार कर लिया। किन्तु अन्य सभासदोंने ख्याल किया कि इसकी महत्तासे हमारी बदनामी होने लगेगी और हमारा कोई महत्त्व नहीं रह जायगा, इसीसे उन्होंने हर तरहसे उसे नवयुवक डायोनीशियसकी निगाहोंमें गिराने और उसकी निन्दा करनेकी कोशिश की। उन्होंने कहना शुरू किया कि अपनी समुद्री शक्ति बढ़ाकर डायन एकारुक सरकारपर हमला करनेकी फिक्रमें है और वह उसी नाविक शक्तिकी सहायतासे ऐरिस्टोमैचीके पुत्रोंको प्रधान अधिकार दिलाना चाहता है। किन्तु डायनके प्रति द्वेष-भाव उत्पन्न करनेवाली सबसे बड़ी बात तो उसकी रहन-सहन और अन्य लोगोंसे पृथक् रहनेकी प्रवृत्ति थी। उसका स्वभाव उन सब सभासदोंके स्वभावसे भिन्न था जो शुरूसे ही चापलूसी कर या अन्य क्षुद्र उपायों द्वारा डायोनीशियसके कृपापात्र बननेकी चेष्टा करते आ रहे थे। उनका काम ही यह था कि उसके आनन्दोपयोगके लिए नित्य नयी नयी सामग्री उपस्थित करना और उसे शराब तथा कामिनियोंके साथ दिल-बहलाव करनेमें व्यस्त रखना। इन सब कारणोंसे उसकी निरंकुशता, भट्टीमें तपानेसे मुलायम हुए लोहेके सदृश, पीड़ित व्यक्तिको कुछ अधिक मन्दीभूत और सह्य प्रतीत होने लगती थी। उसके अत्याचारोंकी तीक्ष्णताका ऐसा अनुभव होनेका कारण उसकी क्षमाशीलता नहीं, प्रत्युत व्यसनशीलताके कारण उत्पन्न नैतिक अधःपात ही था। इस प्रवृत्तिके कारण उसके ऊपर जो एक तरहकी शिथिलतासी छाती जाती थी, उसने शीघ्र ही उन "सुदृढ़ शृंखलाओं" को तोड़ दिया जिनसे जकड़ कर उसका पिता, मृत्युके पहले, अपना राज्य सुरक्षित बना गया था। कहते हैं, एक बार उसने आमोद-प्रमोदका जो जलसा शुरू किया वह बराबर तीन महीनोंतक चलता रहा। इसमें लम्पटता और मद्यपानकी प्रधानता थी। इतने दिनोंतक चाहे कैसा ही आवश्यक कार्य क्यों न रहा हो, कोई भी व्यक्ति उससे मिलने नहीं पाता था और न उस मण्डलीके भीतर ही कोई व्यक्ति किसी गम्भीर विषयकी

चर्चा छेड़ सकता था। नाचने, गाने, शराब पीने और हँसी मज़ाकमें ही सारा समय बीतता था।

अतः डायोनीशियसके सभासदोंके मनमें डायनके प्रति द्वेषभाव होना स्वाभाविक ही था। वह उनकी तरह न तो आमन्दोपभोगमें ही मग्न रहता था और न उनके खेल-तमाशों या हँसी-मज़ाकमें ही शरीक होता था। उसकी सुशीलतासे चिढ़कर वे लोग उसके सद्गुणोंका ऐसा वर्णन किया करते थे जिससे सुननेवालेको वे दुर्गुणों जैसे ही प्रतीत होने लगते थे। उसकी गम्भीरताको वे अहंमन्यता और स्पष्ट व्यवहारको स्वेच्छाधारिता कहा करते थे। सचमुच उसके स्वभावमें कुछ ऐसा शीलापन, कड़ाई एवं अन्य लोगोंसे अलग रहनेकी प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती थी जिसके कारण केवल डायोनीशियस ही नहीं, उसके मित्रतक कभी कभी उसकी संगतिसे ऊब जाते थे। यद्यपि वे लोग उसकी स्वाभाविक उदारता और सुशीलतासे खूब परिचित थे, फिर भी उन्हें एकाध बार यह स्वीकार ही करना पड़ा कि जिन लोगोंके साथ उसे व्यवहार करना पड़ता था उनसे वह इतनी शिष्टतापूर्वक और इतने प्रेमके साथ पेश नहीं आता था, जितना उसके जैसे आदमीके लिए आवश्यक था। इस समयकी परिस्थिति ऐसी थी कि डायन ही शासनका प्रधान स्तम्भ समझा जाता था, किन्तु इतना वह खूब अच्छी तरह जानता था कि डायोनीशियसकी सदिच्छा अथवा दयालुताके कारण नहीं वरन् उसकी तात्कालिक आवश्यकताके कारण ही मैं इस समय इतने उच्च पदपर स्थित हूँ।

यह ख्याल कर कि शायद इसका कारण डायोनीशियसका अज्ञान और उसकी शिक्षाहीनता ही हो, उसने उसे अच्छी शिक्षा प्राप्त करनेके लिए समझाया और नीतिविज्ञानकी कुछ बातोंसे उसका परिचय करा देनेकी भी चेष्टा की। डायनको आशा थी कि ऐसा करनेसे सदाचारमय जीवनके प्रति उसका भय दूर हो जायगा और उसे सत्कार्योंमें प्रसन्नता ने लगेगी। डायोनीशियसका स्वभाव अत्यन्त अत्याचारी शासकों जैसा

ं, किन्तु उसके पिताको भय था कि यदि वह ज़्यादा बातें समझने और बुद्धिमान् तथा अनुभवी लोगोंसे बातचीत करने लगेगा तो है वह मेरे विरुद्ध कोई षड्यंत्र रच डाले और मुझे राजगद्दीसे उतार सीसे उसने अपने पुत्रको मकानके भीतर ही बन्द करके रखा, जहाँ न्य लोगोंकी संगतिके अभावमें, तथा अपना समय और किसी अच्छे व्यतीत करना न जाननेके कारण, छोटे छोटे रथ, मोमबत्तियाँ, मोंढ़े टूल), मेजें तथा लकड़ीकी अन्य चीजें बनानेमें ही व्यस्त रहता था। योनीसियसका पिता इतने शकी स्वभावका था—दूसरे लोगोंका वह ना कम विश्वास करता था—कि अपने पुत्रके बालतक वह किसी नाईके ज़ारोंसे नहीं कटवाने देता था। उसका एक कारीगर ही जलते हुए यलेसे बालोंको ज़रा ज़रा जला दिया करता था। वह अपने भाई या तीजे तकको अपने निजी कपड़े पहने हुए अपने कमरेमें नहीं घुसने देता ा। अन्य लोगोंकी तरह जबतक उन्हें भी द्वार-रक्षक बिलकुल नंगा कर अच्छी तरह देख नहीं लेता था और अपने सामने नये कपड़े नहीं पहना देता था, तबतक वे उसके सामने दाखिल नहीं हो सकते थे। एक बार उसका भाई एक जगहकी स्थितिका वर्णन कर रहा था। उसका नक्शा खींचनेके लिए उसने एक प्रहरीके हाथकी छोटी बरछी ले ली। इसपर वह उससे बहुत नाराज़ हुआ और जिस सैनिकने उसे बरछी दी थी, उसे उसने फाँसीपर लटका दिया। वह कहा करता था कि मेरे मित्र जितने ही समझदार होंगे मैं उनपर उतना ही अधिक सन्देह करूँगा, क्योंकि यदि उनका वश चले तो निरंकुश शासककी प्रजा बने रहनेके बजाय वे स्वयं ही निरंकुश शासक बन जायँ। उसने अपने एक सेनानायकको केवल इसलिए मरवा डाला कि उसने (सेनानायकने) स्वप्नमें उसे मार डाला था। उसने ख्याल किया कि जाग्रत अवस्थामें उसने अवश्य ऐसा कोई विचार किया होगा, तभी तो उसने इस तरहका स्वप्न देखा। वह इतना डरपोक और इतना शकी था, किन्तु जब एक बार अफलातूनने उसे

चर्चा छेड़ सकता था। नाचने, गाने, शराब पीने और हँसी मज़ाकमें ही सारा समय बीतता था।

अतः डायोनीसियसके सभासदोंके मनमें डायनके प्रति द्वेषभाव होना स्वाभाविक ही था। वह उनकी तरह न तो आनन्दोपभोगमें ही मस्त रहता था और न उनके खेल-तमाशों या हँसी-मज़ाकमें ही शरीक होता था। उसकी सुशीलतासे चिढ़कर ये लोग उसके सद्गुणोंका ऐसा वर्णन किया करते थे जिससे सुननेवालेको वे दुर्गुणों जैसे ही प्रतीत होने लगते थे। उसकी गम्भीरताको वे अहंमन्यता और स्पष्ट व्यवहारको स्वेच्छाचारिता कहा करते थे। सचमुच उसके स्वभावमें कुछ ऐसा रोबीलापन, कड़ाई एवं अन्य लोगोंसे अलग रहनेकी प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती थी जिसके कारण केवल डायोनीसियस ही नहीं, उसके मित्रतक कभी कभी उसकी संगतिसे ऊब जाते थे। यद्यपि ये लोग उसकी स्वाभाविक उदारता और सुशीलतासे खूब परिचित थे, फिर भी उन्हें एकाध बार यह स्वीकार ही करना पड़ा कि जिन लोगोंके साथ उसे व्यवहार करना पड़ता था उनसे वह इतनी शिष्टतापूर्वक और इतने प्रेमके साथ पेश नहीं आता था, जितना उसके जैसे आदमीके लिए आवश्यक था। इस समयकी परिस्थिति ऐसी थी कि डायन ही शासनका प्रधान स्तम्भ समझा जाता था, किन्तु इतना वह खूब अच्छी तरह जानता था कि डायोनीसियसकी सदिच्छा अथवा दयालुताके कारण नहीं वरन् उसकी तात्कालिक आवश्यकताके कारण ही मैं इस समय इतने उच्च पदपर स्थित हूँ।

यह ख्याल कर कि शायद इसका कारण डायोनीसियसका अज्ञान और उसकी शिक्षाहीनता ही हो, उसने उसे अच्छी शिक्षा प्राप्त करनेके लिए समझाया और नीतिविज्ञानकी कुछ बातोंसे उसका परिचय करा देनेकी भी चेष्टा की। डायनको आशा थी कि ऐसा करनेसे सदाचारमय जीवनके प्रति उसका भय दूर हो जायगा और उसे सत्कार्योंसे प्रसन्नता होने लगेगी। डायोनीसियसका स्वभाव अत्यन्त अत्याचारी शासकों जैसा

नहीं था, किन्तु उसके पिताको भय था कि यदि वह ज्यादा बातें समझने लगेगा और बुद्धिमान् तथा अनुभवी लोगोंसे बातचीत करने लगेगा तो सम्भव है वह मेरे विरुद्ध कोई षड्यंत्र रच डाले और मुझे राजगद्दीसे उतार दे। इसीसे उसने अपने पुत्रको मकानके भीतर ही बन्द करके रखा, जहाँ वह अन्य लोगोंकी संगतिके अभावमें, तथा अपना समय और किसी अच्छे ढगसे व्यतीत करना न जाननेके कारण, छोटे छोटे रथ, मोमबत्तियाँ, मोढ़े (स्टूल), मेजें तथा लकड़ीकी अन्य चीजें बनानेमें ही व्यस्त रहता था। डायोनीशियसका पिता इतने शकी स्वभावका था—दूसरे लोगोंका वह इतना कम विश्वास करता था—कि अपने पुत्रके बालतक वह किसी नाईके औजारोंसे नहीं कटवाने देता था। उसका एक कारीगर ही जलते हुए कोयलेसे बालोंको जरा जरा जला दिया करता था। वह अपने भाई या भतीजे तकको अपने निजी कपड़े पहने हुए अपने कमरेमें नहीं घुसने देता था। अन्य लोगोंकी तरह जबतक उन्हें भी द्वार रक्षक बिल्कुल नंगा कर अच्छी तरह देख नहीं लेता था और अपने सामने नये कपड़े नहीं पहना देता था, तबतक वे उसके सामने दाखिल नहीं हो सकते थे। एक बार उसका भाई एक जगहकी स्थितिका वर्णन कर रहा था। उसका नक्शा खींचनेके लिए उसने एक प्रहरीके हाथको छोटी बरछी ले ली। इसपर वह उससे बहुत नाराज हुआ और जिस सैनिकने उसे बरछी दी थी, उसे उसने फाँसीपर लटका दिया। वह कहा करता था कि मेरे मित्र जितने ही समझदार होंगे मैं उनपर उतना ही अधिक सन्देह करूँगा, क्योंकि यदि उनका वश चले तो निरंकुश शासककी प्रजा बने रहनेके बजाय वे स्वयं ही निरंकुश शासक बन जायँ। उसने अपने एक सेनानायकको केवल इसलिए मरवा डाला कि उसने (सेनानायकने) स्वप्नमें उसे मार डाला था। उसने ख्याल किया कि जाग्रत अवस्थामें उसने अवश्य ऐसा कोई विचार किया होगा, तभी तो उसने इस तरहका स्वप्न देखा। वह इतना डरपोक और इतना शकी था, किन्तु जब एक बार अफलातूनने उसे

संसारके जीवित पुरुषोंमें सबसे अधिक धीर माना स्वीकार नहीं किया था, तब वह उससे बहुत अप्रसन्न हुआ था।

जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, जब डायनने देखा कि आवश्यक शिक्षाकी कमीके कारण ही छोटे डायोनीसियसका चरित्र समुन्नत नहीं हो सका है, तब उसने उसे पुनराध्ययन करनेकी सलाह दी। उसने उसे अफलातूनसे सिसिली आनेकी प्रार्थना करनेके लिए भी समझाया और जब वह आ गया तब उसके उपदेशानुसार चलनेके लिए भी बार बार उससे कहता रहा। उसने डायोनीसियसके दिमागमें यह बात बैठा देनेकी कोशिश की कि "अफलातूनकी शिक्षा माननेसे आप अपने स्वभावको सत्य और धर्मके अनुकूल तथा अपने जीवनको परमात्माके अनुरूप बना सकेंगे और जिस प्रकार परमात्माके नियंत्रणसे सब तरहकी गड़बड़ दूर होकर विश्व-मात्रमें सुव्यवस्था एवं सामञ्जस्य स्थापित हो जाता है, उसी प्रकार आप भी अपने तथा अपनी सारी प्रजाके जीवनमें सुख और शान्तिकी स्थापना कर सकेंगे। आपकी न्यायप्रियता और नम्रता देखकर प्रजाजन आपमें अनुरक्त हो जायँगे। वे आपको अपने पिताके तुल्य समझने लगेंगे और आपकी आज्ञा माननेके लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इस समय तो भय और आवश्यकताके कारण विवश होकर ही उन्हें अपनी इच्छाके विरुद्ध आपका सम्मान करना पड़ता है, किन्तु तब यह बात नहीं रहेगी। अनधिकारी निरंकुश शासक न होकर तब आप उनके न्याय्य राजा कहला सकेंगे। भय और शक्ति, वेतनभोगी दस हजार विदेशी सैनिकोंकी सेना, और एक बड़ा जहाजी बेड़ा—ये वे सुदृढ़ जंजीरें नहीं हैं, जैसा कि आपके पिताका ख्याल था, जो राजसिंहासनको सुरक्षित बनाती हैं। राज्यको स्थायी बनानेके लिए प्रजाके मनमें राजाके प्रति उस उत्साह और प्रेमकी आवश्यकता है जो उसकी न्यायप्रियता एवं क्षमा-शीलतासे उत्पन्न होते हैं। इसके सिवा, यह कितनी निन्दनीय बात है कि राजा सुन्दरसे सुन्दर पोशाक पहनने भव्य भवनमें रहनेकी तो फिक्र करे, पर अपनी बुद्धि और

बोलने चालनेका ढंग सामान्य प्रजाजनकी अपेक्षा अधिक प्रशस्त बनानेकी चेष्टा न करे और न अपने मनको राजाके उच्च पदके अनुरूप बनानेका ही प्रयत्न करे।"

डायन इस सम्बन्धमें नवयुवक राजासे प्रायः बातचीत किया करता था और बीच बीचमें मौक़ा देखकर अफलातूनके सुने हुए कथनोंका भी उल्लेख कर दिया करता था, जिनसे प्रभावित होकर डायोनीशियस उक्त तत्त्ववेत्ताके दर्शनार्थ और उसके व्याख्यान सुननेके लिए समुत्सुक हो उठा। उसने उसे बुलानेके लिए अथेंज़को चिट्ठी पर चिट्ठी भेजी। डायनने भी शीघ्र आनेके लिए उससे अनुरोध किया। इटलीमें रहनेवाले पाइथैगोरियन सम्प्रदायके कई तत्त्ववेत्ताओंने भी उसके पास पत्र भेजे और प्रार्थना की कि कृपया आकर इस नयी उम्रके राजाको अपने सदुपदेशोंसे प्रभावित कीजिए और इसे उच्छृङ्खल एवं निरंकुश बननेसे बचाइये। अफलातूनने ख्याल किया कि यदि मैं इन लोगोंका कहना नहीं मानता तो ये लोग समझेंगे कि मैं कोरा उपदेश करनेवाला ही हूँ, उपदेशके अनुसार आचरण करनेवाला नहीं। इस लाछनसे बचनेके लिए उसने सिसिली आनेका निश्चय किया। उसने अपने मनमें यह भी विचार किया कि यदि मैं एक आदमीको सुधार सका जो अन्य बहुसंख्यक लोगोंका मुखिया एवं पथ प्रदर्शक है, तो उसके जरिये तमाम सिसिली द्वीपके निवासियोंका सुधार सम्भव हो सकेगा।

किन्तु डायनके शत्रुओंने ख्याल किया कि यदि अफलातून यहाँ आ जायगा तो डायोनीशियसमें अवश्य बहुत कुछ परिवर्त्तन हो जानेकी संभावना है, इसीसे उन्होंने कह सुनकर फिलिस्टस नामक विद्वान्‌को जिसे निरंकुश शासकोंकी कार्य-प्रणालीका विशेष अनुभव था, देश निकालेसे वापस बुलानेके लिए डायोनीशियसको राजी किया। उन्हें आशा थी कि उसके कारण अफलातून और उसके तत्त्वविज्ञानका कोई असर डायोनीशियसपर नहीं पड़ने पावेगा और न उसके निरंकुश शासनमें कोई परि-

वर्त्तन ही होने पायेगा। सचमुच फिलिस्टसने आनेके साथ ही उनकी यह आशा पूरी करनेका प्रयत्न जोरोंसे आरम्भ कर दिया। इधर कुछ लोगोंने डायनपर तरह तरहके दोषारोपण कर राजाको उसके विरुद्ध भड़कानेकी चेष्टा की। उन्होंने कहा कि डायन वर्त्तमान शासनको नष्ट कर देनेके लिए थीओडोटीज तथा हेराक्लिडीज़के साथ पत्र व्यवहार कर रहा है। सम्भव है, ऐसी कोई बात रही भी हो, क्योंकि डायनने सोचा हो कि यदि अफलातूनकी शिक्षाके प्रभावसे डायोनीशियसके अत्याचारोंकी मात्रा कम न हुई और उसके सुधारकी कोई आशा नहीं दिखाई दी तो उसे सिंहासनसे उतार कर राज्यकी बागडोर सिराक्यूसन लोगोंके हाथमें दे देना ही ठीक होगा। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि वह लोकतन्त्र शासन प्रणालीका पक्षपाती था। हाँ, निर्दोष एवं सुदृढ़ कुलीनतन्त्रके अभावमें वह निरंकुश शासनकी अपेक्षा लोकतन्त्र प्रणालीको ज्यादा पसन्द करता था।

यही उस समयकी हालत थी जब अफलातूनने सिसिलीमें प्रवेश किया। उसके स्वागतके समय शिष्टता एवं सम्मानका अभूतपूर्व प्रदर्शन किया गया। जहाज परसे उतरनेके साथ ही उसे ले जानेके लिए विशेष रूपसे अलंकृत एक रानरथ पहलेसे ही तैयार रखा गया था। उसके आनेकी खुशीमें डायोनीशियसने स्वयं अपने हाथसे देवताओंको बलि चढ़ायी। शीघ्र ही लोगोंने देखा कि राजाकी ओरसे दिये गये भोजोंमें अब उतनी धूम-धामका प्रदर्शन नहीं होता और उसके दरबारमें भी अब विशेष शिष्टता एवं सौम्यता देख पड़ती है, यहाँ तक कि स्वयं डायोनीशियस अब अपने कामकाजमें अधिक दयालुता एवं भलमनसाहतका व्यवहार करने लगा है। इससे उन्हें शासनमें शीघ्रातिशीघ्र सुधार होनेकी आशा होने लगी। कुछ दिनोंके बाद जब देवताओंको बलि चढ़ाते समय पुरोहितने, अपने नित्यके अभ्यासके अनुसार, निरंकुश शासनके निर्विघ्न रूपसे चिरकाल तक कायम रहनेके लिए प्रार्थना की, तब डायोनी-

पास ही खड़ा था, चिल्ला कर कहा "अब हमारे लिए ऐसी बद्दुआ मत माँगो।" यह सुनकर फिलिस्टस तथा उसके साथियोंको बड़ी चिन्ता होने लगी। उन्होंने अनुमान किया कि जब इतने थोड़े सम्पर्कसे ही अफलातूनने डायोनीशियसके विचारोंमें इतना परिवर्त्तन उत्पन्न कर दिया है, तब अधिक घनिष्टता हो जाने पर वह उसपर ऐसा प्रभाव स्थापित कर लेगा कि फिर उसका प्रतिकार करना असंभव हो जायगा। इसीसे उन्होंने सम्मिलित रूपसे, खुले आम, डायनकी बदनामी शुरू की। वे चारों तरफ यह कहते फिरते थे कि डायनने अफलातूनके कुतर्कोंका प्रभाव डालकर डायोनीशियस पर एक तरहका जादूसा कर दिया है। उसका इरादा यह है कि जब डायोनीशियस स्वेच्छासे राज्य-त्याग करनेके लिए तैयार हो जाय, तब उसके हाथसे शासन-सूत्र लेकर मैं उसे अपनी बहिन ऐरिस्टोमैचीके पुत्रोंके हवाले कर दूँ। कुछ लोगोंने यह भी कहा कि जो अथीनियन लोग पहले एक बार अपने साथ जहाजी बेड़ा तथा एक बड़ी स्थल सेना लेकर सिसिली आये थे और सिराक्यूस नगरपर अधिकार करनेके बजाय स्वयं बुरी तरह परास्त हुए थे, वे अब एक कूटतार्किककी सहायतासे डायोनीशियसके शासनको उलट देनेकी चेष्टा कर रहे हैं। वे उसे अपने दस हजार भालेदार संरक्षकोंको अलग कर देने और चार हजार जहाजोंके बेड़ेको तथा दस हजार घोड़सवारोंकी सेनाको भंग करनेकी सलाह दे रहे हैं। साथ ही वे उसे एक काल्पनिक सुखकी प्राप्तिके लिए पाठशालाओंमें जाकर शिक्षा प्राप्त करनेको कह रहे हैं, जब कि इसी बीचमें डायन और उसके भागिनेय निश्चिन्त होकर अनियंत्रित शक्ति एवं धन तथा सुखोंका उपभोग कर सकेंगे।

इस प्रकार डायनके प्रति लोगोंके मनमें पहले तो साधारण सन्देह उत्पन्न किया गया, फिर धीरे धीरे अधिक स्पष्ट रूपसे प्रतिकूल भावोंकी अवतारणा की गयी। डायनके हाथकी लिखी हुई एक चिट्ठी भी बीचमें ही रोक कर डायोनीशियसके पास पहुँचा दी गयी। इसमें डायनने कारथे-

जिनियन प्रतिनिधियोंको लिखा था कि जब आप डायोनीशियससे सन्धिके सम्बन्धमें बातचीत करना चाहें, तब सीधे उसके पास जानेके पूर्व यदि मुझसे मिल लिया करें तो आप जो कुछ चाहेंगे उसे प्राप्त करनेमें विशेष कठिनाई नहीं होगी। यह पत्र पढ़कर डायोनीशियसने फिलिस्टससे सलाह ली और फिर डायनको अपने साथ समुद्रके किनारे ले गया। वहाँ उसने उक्त पत्र डायनको दिखलाया और उसपर कारथेजिनियन लोगोंसे मिलकर अपने खिलाफ साजिश करनेका दोषारोपण किया। जब डायनने अपनी सफाईमें कुछ कहना चाहा, तब डायोनीशियसने उसे बोलने नहीं दिया वरन् उसको एक नावमें बैठाकर मांझियोंको उसे इटलीके किनारे ले जानेकी आज्ञा दी।

जब यह बात सब लोगोंको मालूम हुई, तब स्वयं डायोनीशियसके अन्तःपुरमें ही बड़ा कोलाहल और क्रन्दन शुरू हुआ। डायोनीशियसने औरतोंको तथा डायनके सम्बन्धियों और मित्रोंको यह कहकर शान्त करनेकी चेष्टा की कि मैंने डायनको देशसे निष्कासित नहीं किया है, उसे केवल थोड़े समयके लिए बाहर भेज दिया है, क्योंकि मुझे भय था कि गुस्सेमें आ कर कहीं मैं उसके साथ कोई ऐसा सलूक कर बैठूँ जिससे बादमें मुझे पछताना पड़े। उसने दो जहाज भी उसके रिश्तेदारोंके सिपुर्द कर दिये और उन्हें इस बातकी इजाजत दे दी कि वे डायनकी जितनी सम्पत्ति और उसके लिए जितने नौकर चाहें उतने पैलोपोनीससमें उसके पास भेज सकते हैं।

डायन बहुत धनवान् था और उसने अपना मकान राजसी ठाटबाटसे सजा रखा था। उसके मित्रोंने उसका बहुतसा बहुमूल्य सामान जहाजमें लादकर उसके पास भेज दिया। इसके साथ ही राजमहिलाओं तथा उसके अनेक अनुयायियों द्वारा दिये गये अनेक अमूल्य उपहार भी उसके समीप पहुँचा दिये गये। इस प्रकार जहाँ तक धन और सम्पत्ति का सम्बन्ध था, उसने ग्रीक लोगोंके बीचमें काफी रोब जमा लिया और

उन्हें यह सोचनेका अवसर दिया कि जब एक निर्वासित व्यक्तिकी विभूतिका यह हाल है, तब स्वयं डायोनीशियसके वैभवका क्या ठिकाना हो सकता है।

डायोनीशियसने अफलातूनको भी आराम तथा सम्मानके साथ रखने के बहाने शीघ्र ही किलेके भीतर बन्द कर दिया और उसपर पहरा बैठा दिया ताकि वह संसारके सामने यह न कहता फिरे कि डायनके साथ कितना अन्याय किया गया। इतने दिनोंतक साथ रहने और प्रायः नित्य ही बैठकर आपसमें बातचीत करनेके कारण डायोनीशियस अफलातूनकी संगति पसन्द करने लगा था, यहाँ तक कि वह उसपर प्रेम करने लगा था किन्तु उस प्रेममें भी एक तरहकी निरंकुशताका भाव था। वह चाहता था कि मेरी दयालुताके बदले अफलातून केवल मुझसे ही स्नेह करे और संसारके अन्य सभी मनुष्योंकी अपेक्षा मेरी ओर ही विशेष ध्यान दिया करे। वह अपने सभी कार्योंकी प्रधान व्यवस्था इस शर्तपर उसके सिपुर्द करनेको तैयार था कि अफलातून डायनकी मित्रताको उसकी मित्रतासे अधिक महत्त्व न दे। उसका यह विलक्षण प्रेम अफलातूनके लिए विशेष कष्टदायक हो गया। डायोनीशियस बारम्बार उससे क्रुद्ध हो जाता और रूठ बैठता था, किन्तु कुछ ही समयके बाद क्षमा प्रार्थना करता और पुनः मित्रता कायम रखनेके लिए अनुरोध करने लगता था। कभी तो वह अफलातूनका शिष्य बनने और उसके तत्त्व विज्ञानका अध्ययन करनेके लिए अत्यधिक उत्सुकता प्रकट करता और कभी उन लोगोंके सामने, जो अफलातूनकी शिक्षाका विरोध करते थे, अपने इस कार्यके सम्बन्धमें लज्जित होने लगता और खयाल करने लगता कि यह शिक्षा अन्तमें मुझे ले बैठेगी।

इसी समय युद्ध छिड जानेके कारण उसने अफलातूनको विदा कर दिया। उसने उससे डायनको ग्रीष्म ऋतुमें बुला लेनेकी प्रतिज्ञा कर दी। किन्तु फिर शीघ्र ही उसे तोड दिया। हाँ, डायनकी जायदादसे जो

आमदनी होती थी वह अलबत्ता उसके पास बराबर भेज दी जाती थी। उसने अफलातूनको लिख भेजा कि मैं अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार डायनको ग्रीष्म कालमें नहीं बुला सका, इसका मुझे दुःख है, किन्तु ज्योंही शान्ति स्थापित हो जायगी त्योंही मैं उसे बुला लूँगा। इस बीचमें आप भी कृपया शान्त रहिये और ग्रीक लोगोंमें मेरे इस कार्यकी निन्दा मत कीजिए। अफलातूनने डायनको दार्शनिक अध्ययनमें लगा कर डायोनीशियसके कहनेके अनुसार चलनेकी चेष्टा की।

डायन अपने प्रवासके समय अथेंसके उत्तरीय नगरमें रहता था, किन्तु उसने अपने मनोविनोदके लिए देहातमें भी कुछ जगह खरीद ली थी। जब वह सिसिली जाने लगा, तब यह जगह उसने स्प्यूसिपस नामक एक साथीको दे दी जो अथेंसमें उसके पास प्रायः आया करता था। यह व्यक्ति बड़ा हँसमुख और मिलनसार प्रकृतिका था। अफलातूनने ख्याल किया कि यदि कुछ दिन इसका और डायनका साथ हो जायगा तो डायनके स्वभावकी उग्रता अवश्य कुछ कम हो जायगी, इसीसे उसने स्वयं चेष्टा कर इन दोनोंके परस्पर मिलते रहनेका प्रबन्ध कर दिया था। डायन कभी कभी ग्रीसके अन्य नगरोंको देखनेके लिए भी जाया करता था और वहाँके महा पुरुषों तथा सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञोंसे मुलाकात किया करता था। उत्सव इत्यादिके समय वह उनके जलसों और नाचगाने आदिमें भी शरीक हुआ करता था। अपने संयम, औदार्य, एवं साहसके कारण तथा अपनी तर्कप्रियता और दार्शनिक विचारोंकी अभिरुचिके कारण वह शीघ्र ही लोगोंके स्नेह एवं प्रशंसाका भाजन बन गया। अनेक नगरोंमें तो उसे सार्वजनिक सम्मानसूचक पद भी प्रदान किये गये। लैसीडीमोनियन लोगोंने डायोनीशियसकी अप्रसन्नताकी परवाह न कर उसे स्पार्टाका नागरिक स्वीकार कर लिया।

कुछ समयके बाद डायनको ग्रीक लोगोंका कृपापात्र बनते देखकर डायोनीशियसने ईर्ष्यावश उसकी आमदनी भेजना बन्द कर दिया और

अफलातूनके कारण कहीं तत्ववेताओंमें इस सम्बन्धमें मेरी बदनामी न फैल जावे, यह ख्याल कर उसने अपने दरबारमें अनेक सुप्रसिद्ध विद्वानोंको एकत्र कर लिया। विवादमें उनसे आगे बढ़ जानेकी इच्छासे प्रेरित हो कर वह प्रायः उन दलीलोंका, कई बार तो बिलकुल अशुद्ध रूपसे, प्रयोग कर दिया करता था जो अफलातूनकी संगतिमें रहते समय उसके दिमाग़में चढ़ गयी थीं। अब वह पुनः उसकी संगतिकी इच्छा करने लगा। उसे यह सोचकर बड़ा अफसोस हुआ कि जब मुझे अफलातूनकी संगति प्राप्त थी, तब मैंने उससे अधिक लाभ नहीं उठाया और उसके बहुमूल्य उपदेशोंको अधिक ध्यानसे नहीं सुना। अन्य स्वेच्छाचारी शासकोंकी तरह उसकी इच्छाओंके भी औचित्य अथवा अनौचित्यकी कोई सीमा तो थी ही नहीं और न एक बार मनमें किसी बातकी इच्छा उत्पन्न होनेके बाद वह सहज ही उसे छोड़नेवाला था, अतः उसने तुरन्त ही अफलातूनको पुनः बुलवानेका प्रयत्न शुरू कर दिया। उसके कहनेसे आर्काइटस नामक पिथैगोरियन तत्त्ववेत्ताने उसे लिवा लानेके लिए अपने एक मित्रको भेजा और स्वयं एक पत्रमें साफ साफ लिख दिया कि यदि अफलातूनका पुनरागमन सिसिलीमें नहीं हुआ तो डायनके प्रति किसी तरहकी रियायत या दयालुताकी आशा नहीं की जा सकती, किन्तु यदि उसका यहाँ आना हो सका तो डायनकी जो कुछ इच्छा होगी उसकी पूर्त्तिका भरोसा किया जा सकता है। डायनको भी अपनी बहिन तथा स्त्रीकी चिट्ठियाँ मिलीं। दोनोंने ही उसे लिखा था कि आप अफलातूनसे आग्रह कीजिए कि वह डायोनीशियसकी यह प्रार्थना मान ले और इस प्रकार उसे अन्य कोई अनर्थ कर बैठनेका मौक़ा न दे। निदान अफलातूनको पुनः सिसिलीके लिए प्रयाण करना पड़ा। उसके आनेसे डायोनीशियसको बड़ी खुशी हुई और सिसिलीनिवासी भी प्रसन्न हुए, क्योंकि वे बड़ी उत्सुकतापूर्वक यह मना रहे थे कि किसी प्रकार अफलातून आ कर फिलिस्टसको नीचा दिखा दे तो दार्शनिक सिद्धान्तोंके सामने स्वेच्छाचारी

शासनको भी सिर झुकाना पड़े। राजमहिलाएँ भी उसे अनुकूल दृष्टिसे देखती थीं। डायोनीसियसका तो उसके ऊपर इतना विश्वास था कि उसने उसे अपने यहाँ इत्यादिकी तलाशी लिये बिना ही उसके पास चले आनेकी आज़ादी दे रखी थी, यद्यपि यह रियायत और किसीके साथ नहीं की जाती थी। उसने कई बार अफलातूनको बहुतसा धन प्रदान करनेकी चेष्टा की, किन्तु अफलातूनने प्रत्येक बार अपनी असम्मति प्रकट की। यह देखकर साइरीनीनिवासी एक व्यक्तिने एक बार कहा था कि डायोनीसियसको विशेष कुछ खर्च किये बिना ही उदार कहलाने का श्रेय प्राप्त हो जाता है, क्योंकि जो लोग सब कुछ लेनेके लिए तैयार रहते हैं उन्हें तो वह कुछ देता नहीं है, किन्तु अफलातूनको, जो कुछ भी लेना नहीं चाहता, वह राशि राशि द्रव्य देनेके लिए उत्सुक है।

मामूली शिष्टाचारके बाद जब अफलातूनने डायन विषयक बातचीत शुरू की, तब डायोनीसियसने पहले तो इधर उधरके बहाने बनाये, फिर शीघ्र ही प्रत्यक्ष रूपसे उसकी शिकायत शुरू की। उसने अनेक मद्द उपायोंसे डायनके प्रति अफलातूनका स्नेह कम करनेका प्रयत्न किया। अफलातूनने कुछ समयतक बड़े धैर्यसे काम लिया और डायोनीसियसकी झूठी सच्ची बातें सुनकर भी अपनी अप्रसन्नता प्रकट नहीं होने दी। इसी बीचमें एक दिन अफलातूनके एक शिष्यने सूर्य्यग्रहणके सम्बन्धमें भविष्य-द्वाणी की जो यथा समय सत्य प्रमाणित हुई। इसपर डायोनीसियसने उसकी बड़ी तारीफ की और उसे एक चाँदीका टैलैण्ट इनाम दिया। तब ऐरिस्टिपसने हँसी हँसीमें कहा कि मैं भी एकाध बड़ी घटनाके सम्बन्धमें भविष्यद्वाणी कर सकता हूँ। लोगोंके प्रार्थना करने पर उसने कहा कि "मैं यही भविष्यद्वाणी करता हूँ कि अफलातून और डायोनीसियसमें शीघ्र ही अनबन हो जायगी।"

अन्तमें डायोनीसियसने डायनकी ज़ायदाद बेच डाली और उससे जो धन मिला उसे अपने काममें खर्च कर डाला। उसने अफलातूनको भी

राजभवनके उद्यानसे हटाकर उन प्रहरियोंके बीचमें ठहरा दिया जिन्हें वह स्वयं किरायेपर नौकर रखे हुए था और जो शुरूसे ही अफलातूनको घृणाकी दृष्टिसे देखते थे।

जब आर्काइटसको अफलातूनकी नज़रकैदका हाल मालूम हुआ, तब उसने तुरन्त डायोनीशियसके पास एक नौका भेजी और उससे कहवाया कि अफलातूनकी रक्षाकी जिम्मेदारी मैंने अपने ऊपर ली थी और मेरा विश्वास कर ही वह सिसिली आया था, अतः आप कृपाकर उसे शीघ्र ही वहाँसे मुक्त कर दीजिए। अफलातूनके मनमें मेरे प्रति कोई प्रतिकूल भाव न रह जाय, यह ख्याल कर विदा करनेके पूर्व उसने उसे खूब दावतें दीं और उसके साथ अत्यन्त सौजन्यपूर्ण बर्ताव किया। किन्तु एक दिन वह अपने हृदयका भाव नहीं छिपा सका और अफलातूनसे कहने लगा "इसमें सन्देह नहीं कि जब आप घर पहुँच कर उन तत्त्ववेत्ताओंसे बातचीत करेंगे जो आपके मित्र हैं, तब आप मेरी शिकायत करेंगे और मेरे अनेक दोषोंपर विचार करेंगे।" यह सुनकर अफलातूनने मुसकुरा कर कहा "मैं समझता हूँ कि हमारी विद्वद्-परिषद्को अपने विविध विषयोंके विवादसे इतनी फ़ुरसत ही नहीं मिलेगी कि वह कुछ समय आपके सम्बन्धमें विवाद करनेमें लगा सके।" इस प्रकार अफलातूनको वहाँसे छुटकारा मिला।

इसके समाचार पाकर डायनको बड़ा गुस्सा आया और जब उसे अपनी पत्नीके साथ किये गये सलूककी खबर मिली, तब वह खुल्लम खुल्ला डायोनीशियसका शत्रु बन गया। इस सम्बन्धमें डायोनीशियसके साथ अफलातूनका भी पत्र-व्यवहार हुआ था। डायनके निर्वासनके बाद जब डायोनीशियस अफलातूनको विदा करने लगा, तब उसने उससे कहा था कि "आप डायनसे निजी तौर पर पूछकर लिखिये कि यदि उसकी पत्नीका पुनर्विवाह कर दिया जाय तो उसे कोई आपत्ति तो न होगी?" बात यह है कि लोगोंका यह ख्याल हो गया था कि डायन अपने विवाहसे सन्तुष्ट नहीं है और वह अपनी पत्नीको नहीं चाहता। संभव है, यह बात गलत

हो और उसके शत्रुओं द्वारा फैलायी गयी हो। अस्तु, जब अफलातून अथेन पहुँचा और उसने डायनसे बातचीत कर ली, तब डायोनीशियसके नाम एक पत्र लिखा। उसमें उसने ऐसी सांकेतिक भाषामें, जो केवल डायोनीशियसकी ही समझमें आ सकती थी, यह सूचित किया कि डायन इस प्रस्तावके बिलकुल खिलाफ है और यह बिलकुल स्पष्ट है कि यदि यह कार्यमें परिणत किया गया तो इसे वह अपना बड़ा भारी अपमान समझेगा। यह पत्र पाकर उस समय वह अपनी बहिन (डायनकी पत्नी) से कुछ नहीं बोला, किन्तु जब बादमें डायनसे उसके पुनर्मेलकी कोई आशा नहीं रह गयी और अफलातून भी दुबारा बुलाया जाकर फिर वापस भेज दिया गया, तब उसने डायनकी पत्नी ऐरीटीको, उसकी इच्छाके विरुद्ध, अपने एक कृपापात्र टिमोक्रेटीजके साथ विवाह करनेके लिए विवश किया। इस कार्यमें वह उतनी भी न्यायप्रियता और दयालुता नहीं दिखा सका, जितनी उसके पिताने दिखायी थी। जब उसके पिताकी बहिनका पति पोलिक्सेनस, उसके साथ शत्रुता हो जानेके कारण, भयवश सिसिलीसे भाग गया, तब उसने अपनी बहिनको बुलाकर उसपर यह दोषारोपण किया कि "अपने पतिके भागनेका इरादा जान कर भी तुमने मुझे इसकी खबर नहीं दी।" रमणीने निर्भीकतापूर्वक उत्तर दिया "भाई, क्या तुम मुझे इतनी अधम पत्नी या डरपोक स्त्री समझते हो कि यदि मुझे अपने पतिके भाग जानेका विचार मालूम होता तो मैं उसके साथ न चली गयी होती और उसके सुख दुःखकी संगिनी बनती? मुझे इस सम्बन्धमें कुछ भी विदित नहीं था, यदि होता तो मुझे स्वेच्छाचारी डायोनीशियसकी बहिन कहलानेकी अपेक्षा निर्वासित पोलिक्सेनसकी पत्नी कही जानेका गौरव प्राप्त होता।" कहते हैं, डायोनीशियसको उसका यह निर्भीक उत्तर बहुत पसन्द आया और सिराक्यूसन लोगोंने भी उसके साहस एवं शीलकी तारीफ की, यहाँ तक कि निरंकुश शासनका अन्त होनेके बाद भी उसके पद और राजकुलोचित सम्मानमें कमी नहीं हुई, अस्तु।

इसके बादसे डायनने लड़ाईकी तैयारी करनी शुरू की। अफलातून-का इससे कोई ताल्लुक न था, क्योंकि एक तो वह बुड्ढा हो गया था, दूसरे उसे डायोनीशियस द्वारा की गयी मेहमानदारीका भी ख्याल था। किन्तु स्प्यूसिपस तथा उसके अन्य मित्रोंने उसका साथ दिया और उसे यह कहकर सिसिलीका उद्धार करनेके लिए प्रोत्साहित किया कि समस्त सिसिली-निवासी खुले दिलसे तुम्हारा स्वागत करनेको तैयार हैं। जब अफलातून सिराक्यूसमें रहता था, तब वह तो नागरिकोंसे उतना नहीं मिलता जुलता था, पर स्प्यूसिपस अपना काफी समय उनके साथ बिताता था। उसने यह भली भांति समझ लिया था कि वहाँके रहने-वाले एक चित्तसे रात दिन यही मनाते थे कि डायन इस कार्यको अपने जिम्मे ले ले और चाहे उसके पास सैनिकों, शस्त्रों अथवा जहाज़ोंकी कितनी ही कमी क्यों न हो, एक बार यहाँ आकर केवल हमारा नेतृत्व ग्रहण कर ले। इस स्थितिसे प्रोत्साहित हो कर डायनने, अपना वास्तविक उद्देश्य छिपाते हुए, मित्रोंको लिख दिया कि आप लोग निजी तौरसे जितने सैनिकोंका संग्रह कर सकें, करें। अनेक राजनीतिज्ञ एवं तत्त्ववेत्ताओं-ने भी उसका समर्थन किया। एक छोटे द्वीपमें कुल सैनिक एकत्र हुए। इनकी संख्या आठ सौसे भी कम थी, किन्तु ये सबके सब बड़े बहादुर और अत्यन्त अनुभवी थे। इनका अद्वितीय साहस एवं दुर्दान्त पराक्रम सिसिलीके हजारों लोगोंको प्रोत्साहित करनेके लिए काफी था।

किन्तु इतना होते हुए भी जब इन लोगोंको पहले पहल यह मालूम हुआ कि डायोनीशियसके विरुद्ध लड़ाई लड़नी होगी, तब ये बहुत परे-शान हुए और डायनको दोष देने लगे कि उसने जोशमें आकर पागल मनुष्यकी तरह बिना सोचे विचारे, अपनेको और हम लोगोंको इस प्रकार निश्चित मृत्युके गड्ढेमें ढकेल दिया। इन्हें अपने सेनानायकोंपर भी क्रोध आया कि उन्होंने अपना उद्देश्य पहले ही क्यों नहीं प्रकट कर दिया। किन्तु जब डायनने सब लोगोंको सम्बोधन करते हुए एक व्याख्यान दिया

और निरंकुश शासनकी कमजोरी दिखलाते हुए यह कहा कि तुम लोगोंको स्वयं सेनानायकोंका पद ग्रहण करना पड़ेगा, सैनिकोंका नहीं, क्योंकि समस्त सिसिलीनिवासी राज्य क्रान्तिके लिए बहुत पहलेसे ही तैयार बैठे हैं, तब वे लोग शान्त हुए।

गरमीका मौसिम आधा बीत चुका था। रात्रिके समय शीतल मन्द समीर बह रहा था और आकाशमें पूर्ण चन्द्रमा सुशोभित था। इसी समय डायनने अपोलो (सूर्य) देवताको बलि चढ़ानेका बृहत् आयोजन किया। अस्त्र शस्त्रोंमें सुसज्जित अपने सैनिकोंको वह पूरे ठाटबाटके साथ मन्दिरमें ले गया और बलि चढ़ा चुकनेके बाद बाहर एक प्रशस्त मैदानमें बैठाकर उसने बड़े आदरके साथ उन्हें भोजन कराया। जब उन लोगोंने सोने चाँदीके बहुमूल्य पात्रोंको तथा उन सुन्दर मेजोंको देखा जिनपर भोजन सजाया गया था, तब उन्होंने अपने मनमें ख्याल किया कि जो मनुष्य यौवनावस्था पार कर चुका है और जिसके पास इतनी अधिक सम्पत्ति है, वह कभी ऐसे खतरनाक कामोंमें हाथ नहीं डाल सकता, जब तक उसे सफलताकी अच्छी आशा न हो और मित्रोंकी सहायताका पूरा भरोसा न हो। इसके बाद मन्त्रोच्चारण और प्रार्थना समाप्त होते ही चन्द्र ग्रहण लग गया। यह देखकर डायनको तो कोई आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि वह ग्रहण होनेका कारण समझता था, किन्तु सैनिकोंको अवश्य इससे बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्हें घबड़ाया हुआसा देखकर मिल्टस नामक भविष्य द्रष्टाने समझाया कि आप लोग चिन्तित न हों, आप अवश्य सफल होंगे। ग्रहणसे केवल यही सूचित होता है कि इस समय जो व्यक्ति अत्यन्त प्रकाशमान और तेजस्वी है, वह शीघ्र ही अधकारसे घिर जायगा और उसका तेज बिल्कुल फीका पड़ जायगा। इस समय डायोनीशियस-से बढ़ चढ़कर और कोई नहीं है, इससे स्पष्ट है कि हम लोगोंके सिसिली पहुँचते ही उसका वैभव एकदम क्षीण हो जायगा। इस तरह मिल्टसने सैनिकोंकी शंका दूर करनेका प्रयत्न किया। किन्तु जब डायनके जहाजके

पिछले भागपर भौरोंका एक झुण्ड आ कर बैठ गया, तब उसने डायन तथा उसके मित्रोंसे निर्जी तौर पर कह दिया कि हम लोग जो जो महत्कार्य करने जा रहे हैं, उनमें हमें सफलता तो मिलेगी किन्तु यह सफलता क्षणिक ही होगी। इसी समय डायोनीशियसने भी कई आश्चर्यजनक बातें देखीं। एक गरुड़पक्षी किसी शरीर-रक्षकके हाथसे एक छोटा भाला छीनकर ऊपर उड़ गया और कुछ देरके बाद उसे समुद्रमें टपका दिया। क़िलेके पास ही लहरानेवाला समुद्रका जल दिन भरके लिए मीठा और पीने लायक हो गया, जैसा कि कई लोगोंने चख कर अनुभव किया। इन लक्षणोंको देखकर भविष्यद्वक्ताओंने बतलाया कि डायोनीशियसके राज्यमें शीघ्र ही अशान्ति और बलवेका आरंभ हो जायगा। समुद्रजलके मीठे हो जानेसे उन्होंने यह अर्थ निकाला कि सिराक्यूसन लोगोंके विपत्तिके दिन अब सुखके दिनोंमें परिणत हो जायँगे। उसी प्रकार गरुड़के, जो देवराज जुपिटरका पक्षी समझा जाता है, भाला या बरछी लेकर उड़ जानेसे यह मालूम होता है कि देवताओंके प्रधानकी इच्छा वर्त्तमान शासनका विध्वंस कर देनेकी है, अस्तु।

डायनके कुल आदमी दो जहाजोंमें बँट गये। इनके सिवा तीन नौकाएँ और उसके साथ थीं। सैनिकोंके पास जो अस्त्र-शस्त्र थे, उनके अतिरिक्त उसने दो हजार ढालें और बहुसंख्यक बरछे इत्यादि तथा प्रचुर मात्रामें विविध खाद्य पदार्थ भी साथमें रख लिये थे। बारह दिनतक समुद्र-यात्रा करनेके बाद, तेरहवें दिन ये लोग पैकाइनस नामक सिसिलीके अन्तरीपके पास पहुँचे। प्रधान मल्लाहने यहीं ही उतरनेकी सलाह दी, क्योंकि यदि हवाके कारण उन्हें पुनः समुद्र-तटसे दूर हट जाना पड़ा तो दक्षिणसे आनेवाली हवाकी प्रतीक्षामें फिर कई दिन लगातार यों ही इधर उधर चक्कर काटते हुए बिताने पड़ेंगे। किन्तु डायनने शत्रुके इतने पास उतरना ठीक नहीं समझा। वह पैकाइनससे आगे बढ़ गया। थोड़ी दूर जानेके बाद ही वायुकी प्रतिकूलताके कारण सारा जहाजी बेड़ा समुद्-

तटसे दूर हट गया। इसी समय जोरोंकी आँधी और वर्षा शुरू हो गयी। घबड़ाहटके मारे मल्लाहोंके होश ठिकाने नहीं रहे। अब उन्हें मालूम हुआ कि हम लोग तो आफ्रिकाकी ओर बढ़े चले जा रहे हैं। धीरे धीरे तूफान शान्त हुआ। जब अनुकूल हवा चलने लगी, तब ईश्वरका स्मरण कर ये लोग आफ्रिकासे सिसिलीके लिए फिर चल पड़े और पाँच दिनमें इटलीके छोटेसे नगर मिनोआमें जा पहुँचे। वहाँका गवर्नर साइनेलस सौभाग्यसे डायनका मित्र था। उसे यह तो मालूम ही न था कि ये जहाज डायनके हैं, अत उसने उसके आदमियोंको किनारे उतरनेसे रोका किन्तु वे लोग नहीं माने, अपनी अपनी तलवारें हाथमें लेकर सामनेकी ओर दौड़ पड़े। उन्होंने किसीके प्राण लेनेकी चेष्टा नहीं की, क्योंकि डायनने मना कर दिया था, फिर भी उन्होंने वहाँके लोगोंको पीछे हटा दिया और उस स्थानपर कब्जा कर लिया। ज्योंही दोनों सेनापतियोंने एक दूसरेको देखा त्योंही दोनोंने एक दूसरेको नमस्कार किया और डायनने वह नगर पुन साइनेलसको सौंप दिया। साइनेलसने डायनके सैनिकोंका स्वागत किया और डायनको जिस चीजकी जरूरत हुई, वह लाकर उसे दी।

सौभाग्यसे इस समय डायोनीशियस सिसिलीमें नहीं था। वह कुछ जहाजोंके साथ इटली गया हुआ था। अत यात्राकी थकावट दूर करनेके लिए अधिक समयतक विश्राम करनेके बजाय सैनिकोंने डायनसे प्रार्थना की कि इस सुअवसरसे लाभ उठाते हुए तुरन्त आक्रमण कर दिया जाय। डायनने अपना बहुतसा सामान साइनेलसके पास छोड़कर और उसे यथासमय भेजवा देनेका अनुरोध कर सीधे सिराक्यूसके लिए प्रस्थान कर दिया।

डायनके आनेकी खबर पा कर टिमोक्रैटीजने, जिसके साथ डायनकी पत्नीका पुनर्विवाह हुआ था और जो इस समय सिराक्यूसमें स्थित डायोनीशियसके मित्रोंमें सर्वप्रधान था, तुरन्त एक दूतको डायोनीशियसके पास रवाना कर दिया और उसके हाथ कुछ चिट्ठियाँ भी रख दीं जिनमें

डायनके आनेका तथा अन्य आवश्यक हाल लिखा था। उसने यथासंभव इस बातकी भी चेष्टा की कि शहरमें किसी प्रकारकी गड़बड़ न मचने पावे और लोग भयभीत होकर घबड़ा न जावें। चिट्ठियाँ लेकर जो आदमी भेजा गया था, वह एक अजीब आफतमें फँस गया। जब वह इटली पहुँचा, तब एक स्थानपर उसे अपना एक मित्र मिल गया जो अपने साथ देवार्पित बलिका कुछ अंश प्रसाद रूपमें लिये हुए था। मित्रने मांसका एक टुकड़ा इसे भी दे दिया। यह उसे अपने थैलेमें रखकर तेजीके साथ फिर चल पड़ा। रातमें बहुत देरतक चलते रहनेके कारण जब उसे नींद आने लगी तब वह रास्तेके पास ही एक स्थानमें सो गया। यहाँसे जंगल थोड़ी ही दूर पर था। थोड़ी देरके बाद एक भेड़िया आया और थैलेमें मांसकी गंध पा कर उसे मुँहसे दबाकर उठा ले गया। इसमें वे सब चिट्ठियाँ भी थीं जो वह डायोनीशियसको देनेके लिए लाया था। जागने पर उस आदमीने थैलेकी बहुत खोज की, पर जब उसका कोई पता नहीं लगा, तब उसने चिट्ठियोंके बिना डायोनीशियसके पास जाना ठीक नहीं समझा, अतः वह एक जगह जाकर बहुत समयके लिए छिप गया।

अतः डायोनीशियसको सिसिलीके युद्धकी खबर बहुत देरके बाद मालूम हुई। इधर जब डायन आगे बढ़ा तब मार्गमें कैमेरिनियन लोग उसके साथ हो गये और सिराक्यूसके देहातके लोग भी बड़ी संख्यामें उससे आ कर मिल गये। डायनने जान बूझ कर जो शोर-गुल मचाना शुरू किया उसे सुनकर लिओंटिनीवाले और कैम्पेनियन लोग भी टिमोक्रैटीज़का साथ छोड़कर भाग खड़े हुए। यह खबर पा कर डायनने रातके समय अपना पड़ाव उठा लिया और अनेपस नदीके किनारे जा पहुँचा जहाँसे शहर कुल दस फर्लांग और रह जाता था। यहाँ ठहर कर उसने उदीयमान सूर्यसे मनौती मानते हुए बलि चढ़ायी। भविष्यद्वक्ताओंने कहा कि देवताओंने आपको विजय प्रदान करनेकी प्रतिज्ञा की है। मार्ग चलते समय लगभग पाँच हजार मनुष्य उसके साथ आ मिले थे। उन्हें उस

समय जो हथियार मिल सके वही उन्होंने ग्रहण कर लिये थे, किन्तु उनका साहस और उत्साह खूब बढ़ा हुआ था। जब उन लोगोंने आगे बढ़नेके लिए कहा गया, तब वे लोग इस प्रकार जय जयकार एवं हर्षध्वनि करते हुए दौड़े मानो डायनको पहले ही विजय मिल चुकी हो।

सिराक्यूसके बड़े बड़े और भले आदमी सफेद पोशाक पहने हुए फाटकपर आ कर उससे मिले। जनता डायोनीशियसके अनुयायियोंके पीछे पड़ गयी। जनसमूहने उसके उन गुप्तचरोंके तो प्राण ही ले लिये जो अत्यन्त दुष्ट स्वभावके थे और जो इस अभिप्रायसे सारे शहरमें तथा सब तरहके लोगोंके बीच दिन रात घूमा करते थे कि डायोनीशियसके सम्बन्धमें जो कुछ चर्चा सुनाई पड़े, उसके समाचार तुरन्त उसके पास पहुँचा दिया करें।

दुर्गकी रक्षाके लिए जो फौज नियत की गयी थी, उसके पासतक पहुँचना असंभव समझ कर टिमोक्रैटीज़ घोड़ेपर चढ़कर नगरके बाहर भाग गया। वह जिधरसे निकलता था उधर ही भय और घबराहट फैल जाती थी, क्योंकि वह सर्वत्र डायनकी सेना तथा उसकी शक्तिका वर्णन बहुत बढ़ा चढ़ाकर करता जाता था जिससे यह न मालूम पड़े कि बिना किसी उपयुक्त कारणके ही वह भाग खड़ा हुआ है। इस समयतक डायन भी आ पहुँचा। वह आगे आगे एक बहुमूल्य सैनिक पोशाक पहने जाता था और उसके अगल बगलमें मालाएँ पहने हुए उसका भाई मेगाक्लीज़ तथा कैलीपस नामक अथीनियन था। विदेशी सैनिकोंमेंसे सौ उसके संरक्षक बनकर पीछे चलते थे और उनके कई अफसर अन्य सैनिकोंको तरतीबसे लेते चलते थे। सिराक्यूसन लोग सड़कके किनारे खड़े हो कर इस प्रकार उनका स्वागत करते थे मानो वे उनके आगमनको एक पवित्र एवं धार्मिक समारोह समझ रहे थे, जो अड़तालीस वर्षके बाद स्वतंत्रता एवं लोकप्रिय शासनका पुनः प्रवेश करानेके निमित्त किया जा रहा था।

डायनने नगरमें प्रवेश करनेके बाद यह घोषणा कर दी कि मैं अपने भाईके साथ निरंकुश शासनका अन्त करनेके लिए आया हूँ और सिरा-क्यूसन लोगों तथा सिसिलीके अन्य निवासियोंको यह विश्वास दिलाता हूँ कि आजसे वे अपनेको डायोनीशियसके स्वेच्छाचारी शासनसे मुक्त समझें। फिर लोगोंके सामने खड़े हो कर स्वयं भाषण करनेके लिए उत्सुक होनेके कारण उसने नगरके ऐक्रेडिना नामक भागके लिए प्रयाण किया। नागरिकोंने सड़कके दोनों ओर अपने अपने घरोंके सामने टेबिल रखकर उसपर मद्य-पानादिके पात्र सजा दिये और बलि चढ़ानेके लिए पशु लाकर बाँध दिये। जब वह किसी मकानके दरवाजेके पाससे गुजरता, तब लोग उसपर फूलों और आभूषणोंकी वर्षा करते तथा हर्षध्वनिके साथ देवताकी तरह उसका स्वागत करते थे। किलेके एक ऊँचे और खुले स्थानमें डायोनीशियसने एक बड़ीसी धूपघड़ी लगवा दी थी। उसीके शिखरपर चढ़कर डायनने लोगोंको सम्बोधन कर एक वक्तृता दी और उन्हें अपनी स्वतंत्रताकी रक्षा करने और उसपर डटे रहनेकी सलाह दी। व्याख्यान सुनकर जनताने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और डायन तथा मेगाक्लीजको पूर्ण अधिकार देकर अपना सेनापति बनाया। उनके अनुरोध करने पर बीस आदमी और उनके साथी बना दिये गये। इनमेंसे दस उन लोगोंमेंसे लिये गये जो उनके साथ ही प्रवाससे लौटे थे। ज्योतिषियोंको यह शुभ शकुन देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि डायनने जब लोगोंके सामने व्याख्यान दिया था, तब उसके पाँवोंके नीचे वही विशाल स्मारक था जिसके बनवानेमें डायो-नीशियसने इतना परिश्रम किया था। किन्तु यह ख्याल कर कि सेनापति बनाये जानेके समय जिस धूपघड़ीपर वह खड़ा था उसका सम्बन्ध सूर्यसे है, उन्हें यह शंका होने लगी कि जो बड़े बड़े कार्य उसने किये हैं उनमें शीघ्र ही कोई महान् परिवर्त्तन होगा और संभव है कि उसे शीघ्र ही किसी विपत्तिका सामना करना पड़े।

इसके बाद डायनने जाकर एपीपोलीपर अधिकार कर लिया और

यहाँ जो नागरिक कैद थे, उन्हें मुक्त कर दिया। फिर दुर्गके चारों ओर घेरा डालनेके इरादेसे उसने एक दीवार बनवायी। सात दिनोंके बाद डायोनीशियस भी समुद्र-मार्गसे आ पहुँचा। इसी समय गाड़ियोंमें लदकर ये सब अस्त्र शस्त्र, बारूद तथा गोले इत्यादि भी आ गये जिन्हें डायन साइनेल्सके पास छोड़ आया था। डायनने इन्हें नागरिकोंमें बाँट दिया और वे लोग यथासंभव इसकी सहायता करनेके लिए प्रस्तुत हो गये।

डायनसे सन्धिकी बातचीत करनेके लिए डायोनीशियसने अपने दूत भेजे। उसने बातचीत करनेसे इनकार कर दिया और कहा कि जो कुछ बातचीत करनी हो, वह खुले तौरसे स्वतन्त्रता पाये हुए सिराक्यूसन लोगोंसे ही की जाय। अतः अब उसने सर्वसाधारणके पास अपने दूत भेजे और उन्हें विश्वास दिलाया कि तुम लोगोंका कर भार हलका कर दिया जायगा और युद्ध-यात्राओंका बोझ भी तुमपर नहीं डाला जायगा, इस सम्बन्धमें जो कुछ निश्चय किया जायगा, तुम लोगोंकी स्वीकृतिसे ही किया जायगा। ये शर्तें सुनकर सिराक्यूसन लोग हँसने लगे। तब डायनने दूतोंको समझा दिया कि जाकर डायोनीशियससे कह दो कि वह राज्यत्यागके सिवाय अन्य अन्य बातोंके सम्बन्धमें जनतासे बातचीत करनेका विचार छोड़ दे। उसने उससे यह भी कहला दिया कि यदि तुम सचमुच राजसिंहासन छोड़ दो, तो मैं यह कभी नहीं भूलूँगा कि तुम मेरे निकट सम्बन्धी हो और तुम्हें सब तरहकी सहायता देनेका प्रयत्न करूँगा। डायोनीशियसने अपनी स्वीकृति प्रदर्शित की और दूतोंको भेजकर यह इच्छा प्रकट की कि यदि तुम लोगोंमेंसे दो तीन आदमी मेरे पास आकर सन्धिका अन्तिम रूप तै कर लें तो बहुत अच्छा हो। इसपर डायनकी सलाहसे कुछ आदमी डायोनीशियसके पास भेज दिये गये। अब दुर्गसे ये समाचार आने लगे कि डायोनीशियस स्वेच्छासे ही राज्यका परित्याग कर देगा, किन्तु वास्तवमें यह सब उसकी चालबाजी ही थी।

उसने सन्धिकी बातचीत तै करनेके लिए प्रतिनिधियोंको कैद कर लिया और सुबह होते होते वेतनभोगी विदेशी सैनिकोंको डायनके द्वारा तैयार करायी गयी दीवार नष्ट कर देनेके लिए भेज दिया। उन लोगोंने अचानक सिराक्यूसन लोगोंपर इस भयंकरतासे आक्रमण किया कि वे अपनी जगहपर खड़े नहीं रह सके। डायनके विदेशी सैनिकोंका एक दल उनकी रक्षाके लिये आगे बढ़ा, किन्तु तुमुल कोलाहलके कारण अपने अफसरोंकी आज्ञातक सुननेमें वे असमर्थ थे, अतः क्या करना चाहिये, क्या न करना चाहिये इसका ही निश्चय वे नहीं कर सके। यह देखकर डायनने ख्याल किया कि मैं जैसा करूंगा, उसीका ये लोग अनुसरण करेंगे। अतः उसने तुरन्त शत्रुकी भीड़पर आक्रमण कर दिया। उसके आसपास खूब ज़ोरोंकी लड़ाई शुरू हो गयी, क्योंकि उसे दोनों पक्षके लोग भलीभांति पहचानते थे। यद्यपि इस समय उसमें न तो पहले जैसी ताक़त रह गयी थी और न अब शरीरमें उतनी फुर्ती ही थी, फिर भी अदम्य उत्साह एवं दृढ़ निश्चयके कारण वह बहुत देरतक शत्रुका सामना कर सका। किन्तु बादमें जब वह वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए शत्रुको पीछे हटा रहा था, तब उसके हाथमें बरछीकी चोट लगी। इस समयतक उसका कवच भी बेकाम हो गया था और वह बर्छों, तीरों इत्यादिसे आहत होकर पृथ्वीपर गिर पड़ा। उसके सैनिकोंने दौड़कर उसे उठा लिया और शिविरमें पहुंचा दिया। मरहमपट्टी होनेके बाद सेनाका संचालन टिमोनिडीजके सिपुर्द कर वह घोड़ेपर सवार हो गया और सारे शहरमें घूम घूमकर उन सिराक्यूसन लोगोंको एकत्र करने लगा जो रणक्षेत्रसे भागे जा रहे थे। उसने विदेशी सैनिकोंकी एक और टुकड़ी बुला ली जो ऐकैडिनामें पहरा दे रही थी। शत्रुके सैनिक इस समय बिलकुल त्रस्त हो चुके थे और अपना मनसूबा बदल देनेका इरादा कर रहे थे। उन्होंने आशा की थी कि हम एकाएक आक्रमण कर शीघ्र ही सारे शहरपर कब्ज़ा कर लेंगे किन्तु जब उन्हें अत्यन्त साहसी और अनुभवी योद्धाओंसे लोहा लेना पड़ा, तब

उनकी हिम्मत टूट गयी और वे दुर्गकी तरफ हटने लगे। उनका हटना था कि ग्रीक सैनिकोंने और भी ज़ोरोंसे उन्हें पीछे हटाना शुरू किया। अन्तमें उन लोगोंको भागकर क़िलेके भीतर शरण लेनी पड़ी। यह महत्व-पूर्ण विजय प्रधानतया विदेशी सैनिकोंकी वीरताके कारण प्राप्त हुई थी, अतः सिराक्यूसन लोगोंने उन्हें इसके बदलेमें बहुत इनाम दिया। उन सैनिकोंने भी अपनी ओरसे एक सुवर्ण मुकुट डायनको अर्पित किया।

कुछ समयके बाद डायनके पास डायोनीशियसके भेजे हुए दूत आये। ये उसके कुटुम्बकी स्त्रियोंकी ओरसे कुछ चिट्ठियाँ लाये थे। इनमेंसे एक चिट्ठीके ऊपर लिखा था "हिपेरिनसकी ओरसे पिताजीकी सेवामें"। यह डायनके लड़केका नाम था। जिन चिट्ठियोंमें औरतोंकी प्रार्थनाएँ लिपिबद्ध थीं, वे सब खुलेआम पढ़ी गयीं, किन्तु जब उस पत्रकी बारी आयी जो डायनके पुत्रका लिखा हुआ समझा जाता था, तब दूतोंने उसे सर्वसाधारणके सामने खोलकर पढ़े जानेसे रोका। डायनने उनका कहना नहीं माना और उसकी मोहर भी तोड़वा डाली। वह वास्तवमें डायोनीशियसका ही लिखा हुआ था और उसमें इस तरहकी बातें लिखी हुई थीं जिन्हें सुनकर सिराक्यूसन लोगोंके मनमें डायनके प्रति सन्देह उत्पन्न हो जाय।

जब यह पत्र पढ़ा गया और डायनके हृदयपर इसका कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा, तब उसके हृदयकी सचाई और उसके उदार विचारोंसे प्रसन्न होनेके बजाय सिराक्यूसन लोग अपने मनमें यह सन्देह करने लगे कि डायोनीशियसका निकट सम्बन्धी होनेके कारण डायन अवश्य ही उसका पक्षपात करेगा और उसकी रक्षा करनेकी चेष्टा करेगा। अतः अब वे किसी अन्य नेताकी खोज करने लगे। इसी समय उन्हें यह समाचार पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि हेराक्लिडीज भी स्वदेशको लौट रहा है। यह मनुष्य उन लोगोंमेंसे था जिन्हें डायोनीशियसने निर्वासित कर दिया था। यह एक वीर योद्धा और अच्छा सेनापति था, किन्तु इसके

स्वभावमें दृढ़ता नहीं थी। यदि किसी महत्वपूर्ण पदपर इसे किसी अन्य साथीके साथ मिलकर काम करना पड़ता तो उसके साथ इसका निर्वाह होना कठिन था। एक बार पेलोपोनीससमें डायनके साथ उसका झगडा हो गया था और उसने अपने ही बूतेपर निश्चय किया था कि जितने जहाज और जो कुछ सेना उसके पास थी, उसीको लेकर डायोनीशियसपर आक्रमण किया जाय। जब वह अपने जहाजोंके साथ सिराक्यूस पहुँचा, तब उसने डायोनीशियसको पहलेसे ही घिरा हुआ पाया और सिराक्यूसन लोगोंको अपनी विजयपर प्रसन्न होते और इतराते हुए देखा। इसलिए अब वह तुरन्त अपनेको लोकप्रिय बनानेकी चेष्टा करने लगा। उसे अपने प्रयत्नमें सफलता भी शीघ्र ही मिल गयी, क्योंकि सर्वसाधारणको डायनके व्यवहारकी गंभीरता अच्छी नहीं लगती थी, जिसे वे एक तरहकी अहंमन्यता ही समझते थे। फिर विजय मिल जानेके कारण वे इतने असावधान हो गये थे और उन्हे अपने उज्वल भविष्यका इतना विश्वास हो गया था कि लोकसत्तात्मक शासनकी स्थापना होनेके पहले ही वे अपने नेताओंसे चिकनी-चुपडी बातें तथा खुशामदकी आशा करने लगे थे और इनमें हेराक्लिडीज पहलेसे ही विशेष चतुर था।

अब सिराक्यूसन लोगोंने एक सभा करके हेराक्लिडीजको अपना नौ-सेनापति निर्वाचित किया, किन्तु जब डायनने आकर यह कहा कि हेराक्लिडीजको इस पदपर नियुक्त करनेका तो मतलब यही है कि मेरे अधिकार वापस ले लिये गये, क्योंकि नौसेनाका सञ्चालन अन्य व्यक्तिके सिपुर्द हो जाने पर मैं आपका प्रधान सेनापति कहाँ रह गया, तब उन्होंने अपना निर्णय बदल दिया। इच्छा न होते हुए भी उन्हें हेराक्लिडीजकी नियुक्ति रद्द कर देनी पड़ी। इस घटनाको हुए दो चार दिन भी न बीतने पाये थे कि डायनने हेराक्लिडीजको आमन्त्रित कर अपने घर बुलाया और उसे दिष्टतापूर्वक समझा दिया कि इस समय आपसमें

एक झगडा खडाकर तुमने ठीक नहीं किया, क्योंकि यदि हमने इस समय जरासी भी गलती की तो सारा मामला चौपट हो जायगा। इसके बाद उसने सर्वसाधारणकी एक और सभा आमंत्रित की और वहां हेराक्लीडीजको नौसेनापति बनानेकी सिफारिश की। उसने नागरिकोंको समझा बुझाकर अपनी ही तरह हेराक्लिडीजको भी शरीररक्षक रखने देनेके लिए राजी कर लिया।

हेराक्लिडीज ऊपरसे तो डायनके प्रति बडा आदर सम्मान प्रकट करता था और उसका बडा एहसान मानता था, किन्तु भीतर ही भीतर लोगोंको उसके खिलाफ भडकानेका प्रयत्न करता था। उसका यह व्यवहार देखकर डायन बडा परेशान था। उसने ख्याल किया कि यदि मैं डायोनीसियसको किला छोड देनेकी अनुमति दे देनेके पक्षमें सलाह देता हूँ तो मुझपर यह दोषारोपण किया जायगा कि मैं डायोनीसियसको बचाना चाहता हूँ और यदि मैं इस लाञ्छनसे बचनेकी इच्छासे दुर्गके चारो ओर घेरा डाले ही पडा रहता हूँ तो लोग समझेंगे कि मैं जान बूझकर ज्यादा दिनोंतक युद्ध जारी रखना चाहता हूँ ताकि मैं और अधिक समयतक सेनापति बना रह सकूँ, तथा नागरिकोंको भयभीत करता रहूँ।

नगरमें सोसिस नामका एक बदमाश रहता था जो अत्यन्त धूर्त होते हुए भी जनताका कृपापात्र था, क्योंकि वह उचित-अनुचितका ख्याल न कर बेधडक बोलनेवाला था और लोग यह दिखलाना चाहते थे कि मनमानी तौरसे चाहे जो कुछ बोल सकनेका अधिकार सर्वसाधारणको प्राप्त है। एक दिन एक सभामें खडे होकर इस आदमीने नागरिकोंको खूब फटकारा और कहा कि तुम सब लोग महामूर्ख हो जो इतना भी नहीं समझ सकते कि तुमने एक नीतिभ्रष्ट एवं मद्यसेवी निरंकुश शासकके बदले अब एक संयमी और सतर्क व्यक्तिका स्वेच्छाचारी शासन स्वीकार कर लिया है। इस प्रकार सबके सामने अपनेको डायनका शत्रु

घोषित कर वह वहाँसे चला गया। दूसरे दिन लोगोंने उसे आम सडकों-पर इस तरह भागते हुए देखा मानो कुछ लोग उसका पीछा कर रहे हों और वह अपनी जान बचानेके लिए इधर उधर दौड रहा हो। उसके सिरपर चोटके निशान थे और वह खूनसे लथपथ था। जब उसका शोर-गुल सुनकर बहुतसे लोग बटुर आये, तब उसने उनसे कहा कि डायनके आदमियोंने मुझे मारा है। ऐसा कहकर उसने उन्हें वे जख्म दिखला दिये जो उसके सिरपर मौजूद थे। बहुतसे लोगोंने उसके कथनपर विश्वास कर डायनको भला बुरा कहना आरंभ किया और इस प्रकार प्राणापहरणका भय दिखला कर लोगोंको स्वेच्छापूर्वक बोलनेसे रोकनेके उसके प्रयत्नकी तीव्र निन्दा की। इसी उत्तेजित अवस्थामें जब सब लोग एक स्थानपर एकत्र हो रहे थे, तब डायनने आकर उन्हें समझाना शुरू किया कि सोसिस डायोनीशियसके एक शरीररक्षकका भाई है और उसने इसे नगरमें कोलाहल और सनसनी फैलानेके लिए ही भेजा था। डाक्टरोंने भी जख्मकी जाँच करके कहा कि वह अपने ही हाथसे बनायी गयी है। यदि कोई दूसरा आदमी तलवारसे प्रहार करता तो झोंकेके कारण घाव बीचमें ज्यादा गहरा होता, किन्तु यह बहुत हल्का था और बीचमें तथा आसपास एक ही जैसा था। इसके अतिरिक्त अनेक विश्वसनीय लोगोंने एक छुरा लाकर सभामें पेश किया और कहा कि हमने सोसिसको रुधिर-से सराबोर होकर सडकोंपर दौडते हुए देखा था। उसने हमसे कहा कि डायनके सैनिकोंने अभी अभी आक्रमण कर मुझे जख्मी कर दिया है। मैं किसी तरह अपने प्राण बचाकर भागा चला आ रहा हूँ। यह सुनकर हम लोग तुरन्त उनका पीछा करनेको दौडे, पर हमें वहाँ कोई नहीं दिखाई दिया, केवल जिस स्थानसे हमने सोसिसको आते देखा था, वहाँ एक पत्थरके नीचे छिपा हुआ यह छुरा हमारे हस्तगत हुआ। कुछ समयके बाद स्वयं सोसिसके नौकरोंने आकर गवाही दी कि सोसिस आज बड़े सवेरे ही हाथमें छुरा लेकर घरसे बिल्कुल अकेला निकला था। यह

सुनकर सर्वसाधारणने तुरन्त ही सर्वसम्मतिसे गेलिसमको प्राणदण्ड देनेका निश्चय किया। डायनसे असन्तुष्ट होनेके लिए उन्हें इस बार भी कोई कारण नहीं मिला।

फिर भी वे लोग उसके सैनिकोंसे अभीतक बराबर चिढ़ते थे। अब तो प्रधानतया समुद्रपर ही युद्ध होनेके कारण वे उन्हें बिल्कुल व्यर्थ समझने लगे थे। डायोनीशियसकी सहायताके लिए फिलिस्टस एक बड़ा भारी बेड़ा लेकर आया था, अत सर्वसाधारणका ख्याल था कि अब उक्त सैनिकोंकी कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी क्योंकि वे वास्तवमें भूमिपर ही लड़नेवाले सैनिक थे। सिराक्यूसन लोग तो यहातक समझते थे कि उक्त सैनिकोंकी रक्षा उल्टे हमें ही करनी पड़ेगी, क्योंकि हम लोग समुद्रके किनारे रहनेवाले हैं और जहाजोंमें ही हमारी शक्ति केन्द्रित है। समुद्रपर युद्ध करते समय एक बार उन्होंने फिलिस्टसको कैद कर लिया था, इसीसे उनका दिमाग इतना चढ़ गया था। एफोरसने तो लिखा है कि जब फिलिस्टसने अपने जहाजपर शत्रुका कब्जा होते देखा, तब उसने आत्महत्या कर ली, किंतु टिमोनीडीज, जो बराबर सब घटनाओंके समय उपस्थित था, कुछ और ही लिखता है। वह कहता है कि फिलिस्टसका जहाज जमीनपर आगे बढ आनेके कारण वह जिन्दा ही पकड लिया गया था। उसके हथियार छीन लिये गये और यद्यपि इस समय वह सत्तर वर्षका बुड्ढा हो गया था, फिर भी लोगोंने उसे नगा कर तरह तरहसे अपमानित किया। इसके बाद उसका सिर काट डाला गया और उसका शरीर, सड़कोंपर घसीटते फिरनेके लिए, शहरके लड़कोंको दे दिया गया। टीमियस उसकी दिल्लगी उड़ानेके लिए लिखता है कि लड़कोंने उसके लंगड़े पाँवमें रस्सी बाँधकर चारों ओर घसीटना शुरू किया। सिराक्यूसन लोग उस मनुष्यको इस प्रकार बँधा हुआ एवं पैरके बल घसीटा जाता देखकर प्रसन्न होते थे और मजाक उड़ाते थे क्योंकि उसने डायोनीशियसको सलाह दी थी कि घोड़ेपर चढ़कर सिराक्यूससे भागनेके बजाय आपको

तबतक यहीं ठहरना चाहिये जबतक पैर पकड़ कर लोग आपको जबरदस्ती खींच कर बाहर न निकाल दें। किंतु फिलिस्टसने स्वयं लिखा है कि डायोनीशियसको ऐसी सलाह किसी दूसरेने दी थी, मैंने उससे ऐसी कोई बात नहीं कही थी।

टाइमीअसने व्यर्थ ही फिलिस्टसके खिलाफ अपने दिलका गुबार निकालनेकी चेष्टा की है। उसने अपने जीवनकालमें जिन लोगोंको किसी तरहकी हानि पहुँचायी हो, वे यदि क्रोधमें आकर उसके मृत शरीरका अपमान करें तो यह किसी तरह क्षम्य समझा जा सकता है, किन्तु जो लोग बादमें इतिहास लिखने बैठते हैं और जिन्हें उसके हाथ कोई हानि नहीं उठानी पड़ी, प्रत्युत जिन्होंने उसकी रचनाओंसे लाभ ही उठाया है, उन्हें कमसे कम आत्मसम्मानका ख्याल कर विपत्तियोंके कारण उनका मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिये, क्योंकि भलेसे भले आदमी भी प्रायः विपत्तिमें फँस जाते हैं। इसके विपरीत एफोरसने आवश्यकतासे अधिक फिलिस्टसकी प्रशंसा की है। यद्यपि उसने बड़ी चतुरताके साथ उसके अन्यायपूर्ण कृत्यों एवं निष्ठुर व्यवहारोंको सदिच्छाप्रेरित साबित करनेकी चेष्टा की है और उसके लिए शिष्ट एवं सम्मानपूर्ण शब्दोंका प्रयोग किया है, किन्तु अपनी सारी शक्ति भर प्रयत्न करनेपर भी वह इस बातको नहीं छिपा सका है कि वह स्वेच्छाचारी शासकोंका बड़ा भारी समर्थक और शक्ति तथा व्यसनशीलताका पुजारी था। मैं तो समझता हूँ कि वही मनुष्य उचित मार्गका अनुसरण करता है जो न तो फिलिस्टसकी आवश्यकतासे अधिक प्रशंसा करता है और न विपत्तियोंके कारण उसका अपमान करता है।

फिलिस्टसकी मृत्युके बाद डायोनीशियसने दूत भेजकर डायनसे कहलाया कि मैं दुर्ग समर्पित करनेको तैयार हूँ और सारे अस्त्रशस्त्र, खाद्यसामग्री तथा दुर्गकी रक्षा करनेवाले सैनिक भी तथा उनका पाँच महीनोंका वेतन भी आपके सिपुर्द कर दूँगा, किन्तु शर्त यह है कि मैं

बिना रोकटोकके समुद्रतट तक आ सकें और वहाँ सिराक्यूसके एक भूभागकी आमदनी भी मेरे पास भेज दी जाया करे। डायनने शर्तें अस्वीकृत कर दीं और उसे सिराक्यूसन लोगोंसे बातचीत करनेकी सलाह दी। उन लोगोंने सोचा कि थोड़े ही समयके भीतर हम डायोनीशियसको जिन्दा पकड़ लेंगे, इसलिए उन्होंने तुरन्त उसके दूतोंको लौटा दिया। डायोनीशियसने दुर्गकी रक्षाका भार तो अपने बड़े पुत्रके सिपुर्द कर दिया और आप चुने हुए लोगोंको तथा आवश्यक सम्पत्ति अपने साथ लेकर जहाजमें बैठकर भाग निकला। दैववशात् नौ सेनापति हेराक्लिडीज तथा उसके बेड़ेको उसके भागनेका कोई पता ही नहीं लगा।

इस असावधानीके कारण लोग हेराक्लिडीजसे असन्तुष्ट हो गये, किन्तु उसने हिप्पो नामक एक कुशल वक्ताको भेजकर लोगोंके सामने यह प्रस्ताव रखवाया कि जमीनका बराबर बराबर बँटवारा होना चाहिये, क्योंकि स्वाधीनताका प्रथम रूप आपसकी समानता ही है और गुलामीके साथ दरिद्रताका अविच्छिन्न सम्बन्ध है। हेराक्लिडीजने भी इस प्रस्तावके पक्षमें एक भाषण किया और डायनके प्रयत्नको जो इसके खिलाफ था, उसके विपक्षी दलकी सहायतासे विफल कर दिया। अन्तमें बहुमतसे प्रस्ताव स्वीकृत हो गया और यह भी निश्चय हुआ कि विदेशी सैनिकोंको कोई वेतन न दिया जाय तथा डायनके अत्याचारोंसे बचनेके लिए नये सेनानायकोंका चुनाव किया जाय। जिस प्रकार लम्बी बीमारी खाकर कोई रोगी स्वास्थ्यके प्रथम लक्षण देखकर जल्दबाजीके मारे कुपथ्य कर बैठता है और अपने चिकित्सकके कहनेकी ओर ध्यान नहीं देता, उसी प्रकार वर्षोंतक स्वेच्छाचारी शासनसे पीड़ित रहनेके बाद लोगोंने एकाएक अपने पाँवोंपर खड़े होनेमें इतनी उतावली की कि वे पद पदपर ठोकर खाने लगे और अपने उद्धारक डायन तकका विरोध करने लगे।

जब सेनानायकोंका निर्वाचन करनेके लिए सार्वजनिक सभाकी आयो जना की गयी, तब ग्रीष्म ऋतुका मध्य होते हुए भी पन्द्रह दिनोंतक बराबर

इस भयंकर रूपसे बादल गरजते रहे और ऐसे ऐसे भयानक अपशकुन होते रहे कि लोगोंको किसी भावी दुर्घटनाकी आशंकासे नये सेनापतियोंकी नियुक्तिका काम बारम्बार स्थगित कर देना पडा। निदान एक दिन अच्छा मौसिम देखकर नेताओंने अपने अपने अनुयायियोंको एकत्र किया और कार्यारम्भ कर दिया, किन्तु इसी समय एक बैल, जो लोगोंकी भीड देखकर या शोर गुल सुनकर पहले कभी नहीं भडकता था, एकाएक ऐसा बिगडा कि अपना बन्धन तोडकर बडे गुस्सेके साथ उसी तरफ झपटा जहाँ सभा हो रही थी। लोग भयभीत होकर इधर उधर भागने लगे। बैल भी मानों उन्हें खदेडता हुआ चारों ओर दौड रहा था। फिर भी सिराक्यूसन लोगोंने किसी तरह पचीस सेनानायकोंका निर्वाचन किया, जिनमें हेराक्लीडीज भी एक था और यह कहकर डायनके आदमियोंको फुसलानेकी चेष्टा की कि यदि तुम डायनका पक्ष छोडकर हमारी ओर आ जाओ, तो तुम सिराक्यूसके नागरिक समझ लिये जाओगे और तुम्हें यहाँके नागरिकोंके कुल अधिकार मिल जायगे। डायनके सैनिक उन लोगोंके बहकानेमें नहीं आये। उन्होंने अपना साहस एव डायनके प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित करनेके लिए तुरन्त अपनी अपनी तलवारें हाथमें ले लीं और डायनको अपने बीचमें कर सकुशल नगरके बाहर निकाल ले गये। उन्होंने किसीपर हाथ नहीं चलाया। हा, जो लोग मार्गमें मिल जाते थे उनकी कृतघ्नता और क्षुद्रता दिखला कर उन्होंने उनकी भर्त्सना अवश्य की। नागरिकोंने पहले तो यह ख्याल कर उनकी उपेक्षा की कि ये संख्यामें थोडे हैं और किसीपर वार भी नहीं करते, किंतु बादमें उनके मनमें यह विचार आया कि हम लोग यहा काफी बडी तादादमें मौजूद हैं और यदि चाहें तो शीघ्र ही इन्हें काट डाल सकते हैं। यही समझ कर वे पीछे उनपर टूट पड़े।

अब डायन बडे धर्म-सकटमें पडा। उसने सोचा कि यदि मैं लडता हूँ तो मुझे अपने ही देशवासियोंका वध करना पडेगा और

यदि नहीं लड़ना तो ये लोग मेरे वफ़ादार सैनिकोंको बिल्कुल काट डालेंगे। उसने दुश्मनसे भरे हुए क़िलेकी ओर इशारा कर सिराक्यूसन लोगोंसे बहुत अनुनय विनय किया किन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ। तब उसने अपने सैनिकोंको आज्ञा दी कि किसीको चोट मत पहुँचाओ, किंतु यों ही चिल्लाते हुए और हथियारोंका आवाज़ करते हुए आगे बढ़ो। उन्होंने ऐसा ही किया। इसपर सभी सिराक्यूसन लोग भाग गये हुए, एक भी मनुष्य अपनी जगहपर खड़ा न रह सका। डायनने अपने आदमियोंको तुरन्त लौट पड़नेकी आज्ञा दी और उन्हें लिओनटिनीज़ लोगोंके नगरकी ओर प्रस्थान करनेको कहा।

नये सेनानायकोंको इस प्रकार भागते देखकर नगरकी स्त्रियाँतक हँसने लगीं। इस लज्जाका निवारण करनेके लिए अब उन लोगोंने नागरिकोंको पुनः शस्त्रग्रहण करनेकी आज्ञा दी और डायनका पीछा किया। एक नदीके पास उन्होंने डायनके आदमियोंको जा मिलाया। कुछ घुड़सवारोंने आगे बढ़कर डायनपर हमला किया। उन्होंने देखा कि इस बार डायन उतना शान्त नहीं है और न इस समय उसके हृदयमें अपने देशवासियोंके प्रति वैसा स्नेह-भाव ही है, वरन् अब उसके चेहरेपर क्रोधके स्पष्ट लक्षण देख पड़ते हैं और उसकी मुखाकृतिसे यह बात साफ़ झलक रही है कि अब वह ज़रा-सा भी अपमान बरदाश्त करनेको तैयार नहीं है, यहाँतक कि उसने अपने सैनिकोंको बेधड़क युद्ध करनेकी आज्ञा दे दी है। यह देखकर थोड़ी ही देर बाद वे लोग पहलेसे भी अधिक कायरतापूर्वक भागे और शहरमें पहुँच कर ही साँस ली।

लिओनटिनीज़ोंने बड़े सम्मानके साथ डायनका स्वागत किया और उसके सैनिकोंको आर्थिक सहायता दी। उन्होंने दूत भेजकर सिराक्यूसन लोगोंसे कहलाया कि आप लोगोंको इन सैनिकोंके साथ अधिक अच्छा व्यवहार करना चाहिये था और इन्हें इनाम भी देना चाहिये था। उन लोगोंने इनके कहनेपर ध्यान नहीं दिया और उलटे अपने आदमी भेजकर

डायनपर विविध आरोप किये। जब लिओनटिनीज़ोंने एक सभा करके इन आरोपोंपर विचार किया, तब उन्हें सारा दोष सिराक्यूसन लोगोंका ही मालूम पड़ा। इन्होंने शेखीमें आकर अपने मित्रोंके इस निर्णयकी कोई परवाह नहीं की और उन लोगोंको छोड़कर, जो उनसे डरें नहीं और उनका कहना न मानें, अन्य किसीको अपना सेनानायक बनाना अस्वीकार कर दिया।

इसी समयके लगभग डायोनीशियसने नीआपोलिस-निवासी निपसियसकी अध्यक्षतामें, दुर्गकी रक्षा करनेवाले सैनिकोंका वेतन और खाद्य-सामग्री लेकर एक बेड़ा भेजा। सिराक्यूसन लोगोंने इसे युद्धमें परास्त कर दिया और उसके चार जहाज़ छीन लिये, किन्तु उन्होंने अपनी सफलताका दुरुपयोग किया। आनन्दोन्मत्त होकर वे मदिरापान एवं विविध मौजोंमें जुट गये और अपने अभीष्टकी ओरसे इतने लापरवाह हो गये कि ठीक उस समय जब उन्हें दुर्गपर अधिकार कर लेनेकी पूरी आशा हो गयी थी, वे अपने नगरको ही अपने हाथसे खो बैठे। निपसियसने इस अवसरसे लाभ उठाकर तुरन्त आक्रमण कर दिया और वह आत्म-रक्षाके लिए बनायी गयी उनकी दीवारों इत्यादिको नष्ट कर शहरमें घुस गया। उसने अपने आदमियोंको मनमाने तौरसे लूटमार करनेकी इजा-ज़त दे दी।

अब सिराक्यूसन लोगोंकी आँखें खुलीं, किन्तु इतनी शीघ्रतामें वे कर ही क्या सकते थे। शहरमें लूट-फसाद अच्छी तरह शुरू हो गया था। शत्रुके आदमी चहारदीवारीको तोड़ फोड़ रहे थे। वे लोग पुरुषों-का तो वध कर डालते थे, किन्तु स्त्रियों तथा बच्चोंको घसीट घसीट कर क़िलेमें कैद कर रहे थे। यह दुर्दशा देखकर प्रत्येक समझदार आदमीका ध्यान डायनकी ओर गया, किन्तु उसका नाम लेनेकी किसीकी हिम्मत नहीं हुई, क्योंकि लोगोंने उसके साथ बड़ी कृतघ्नताका व्यवहार किया था। निदान परिस्थितिके कारण लाचार होकर वृद्ध सैनिकों और घुड़-

सवारोंने चिल्लाकर कहा कि डायनको तथा उसके पेलोपोनीशियन सैनिकोंको शीघ्र बुलवाइये। उनके मुँहसे ये शब्द निकले ही थे कि सब लोग खुशीके मारे एक बार ही उसका नाम लेकर चिल्ला उठे और इच्छा करने लगे कि यदि वह इस समय आकर पुन हमारा नेतृत्व करे तो कितना अच्छा हो। ये लोग अभी यह नहीं भूले थे कि भीषणसे भीषण संकटके समय वह कितने साहस एवं वीरतासे लड़ता था और शत्रुपर आक्रमण करते समय कितना जोश एवं कितना विश्वास हमारे हृदयमें भर देता था। उन्होंने तुरन्त थोड़ेसे घुड़सवारोंको उसे बुला लानेके लिए भेजा। वे लोग पूरी शक्तिके साथ घोड़ोंको दौड़ाते हुए शामतक डायनके पास पहुँच गये। उसपर नजर पड़ते ही वे तुरन्त घोड़ोंपरसे कूद पड़े और उसके पैरोंपर गिर पड़े। आँखोंमें आँसू भर कर उन्होंने सिराक्यूसन लोगोंकी घोर विपत्तिका हाल डायनको सुनाया।

यह संवाद पाकर डायन तुरन्त सभाभवनकी ओर चला और वहाँ यह खबर सुनकर शीघ्र ही सर्वसाधारण भी आ जुटे। सिराक्यूसन लोगोंके दूतोंने वहाँके कष्टोंका वर्णन किया और विदेशी सैनिकोंसे उस दुर्व्यवहारको भूल जानेकी प्रार्थना की जो उनके साथ किया गया था। जब ये लोग अपना वक्तव्य समाप्त कर चुके, तब सारे सभाभवनमें सन्नाटा छा गया। अब डायनने खड़े होकर कुछ कहना चाहा, किन्तु शोकावेगके कारण उसकी आँखोंमें आँसू भर आये और वह कुछ बोल न सका। उसकी यह आन्तरिक व्यथा देख कर उसके सैनिकोंको बड़ा दुःख हुआ, किन्तु उन्होंने उसे धैर्य धारण करने और हृदयके आवेगको रोकते हुए अपने विचार प्रकट करनेकी प्रार्थना की। जब उसका चित्त कुछ ठिकाने हुआ, तब उसने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया—पेलोपोनीसस निवासी मेरे सैनिको और संघके मेरे मित्रो, मैंने आप लोगोंको यहाँ इसलिए बुलाया है कि आप यह निश्चय कर सकें कि आपकी भलाई किस बातमें है। यदि मेरी बात आप पूछें तो जब सिराक्यूसकी यह दुर्दशा हो रही

है, तब मेरे लिए अपने हिताहितके सम्बन्धमें विचार करनेका कोई प्रश्न ही नहीं रह जाता। चाहे मैं उसे विनष्ट होनेसे बचा न सकूँ पर मैं उसकी रक्षाके लिए जाऊँगा अवश्य और वहीं अपने देशके साथ भस्मसात् हो जाऊँगा। यदि आप हम लोगोंकी सहायता करना चाहते हों, जो इस समय बिलकुल विवेकशून्य और अभागे हो रहे हैं, तो इससे आपके सुयशकी वृद्धि ही होगी। किन्तु यदि इस समय सिराक्यूसन लोगोंकी रक्षाके लिए अग्रसर होनेका आपका मन न हो, तो मैं ईश्वरसे इतनी ही प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको उस वीरताका उचित पुरस्कार दे जो आपने पहली बार उनकी सहायता करते समय प्रदर्शित की थी। आपने मुझपर जो कृपा की थी, उसके लिए भी मैं परम कृतज्ञ हूँ। आशा है, मेरा स्मरण करते समय आप इस बातकी चर्चा करना न भूलेंगे कि जब आपकी बदनामी की गयी और आपको क्षति पहुँचानेका प्रयत्न किया जाने लगा, तब मैंने आपका साथ नहीं छोड़ा, और न विपत्ति एवं दुर्भाग्यके समय अपने देशवासियोंको ही धोखा दिया।

वह अपना भाषण समाप्त भी नहीं करने पाया था कि उसके सैनिक जोशके मारे उछलने कूदने लगे और हर्षध्वनि करते हुए नगरकी सहायता करनेके लिए अपनी उत्सुकता प्रकट करने लगे। उन्होंने डायनसे तुरन्त प्रयाण करनेका अनुरोध किया। सिराक्यूसन दूतोंने उन्हें गलेसे लगा लिया और डायन तथा उसके सैनिकोंकी भलाईके लिए ईश्वरसे प्रार्थना की। शोर गुल कम होने पर डायनने सब लोगोंको घर जाकर युद्ध-यात्राके लिए तैयार होनेकी आज्ञा दी। वे लोग भोजन इत्यादिसे निपट कर और अस्त्रशस्त्रोंसे सुसज्जित होकर शीघ्र ही निर्दिष्ट स्थानपर जमा हो गये। उन्होंने निश्चय किया कि आज रातमें ही पहुँच कर नगरका उद्धार किया जाय।

उधर सिराक्यूसमें डायोनीशियसके सैनिकोंने दिन भर तो खूब लूट-पाट की और उत्पात मचाया, किन्तु रात होते ही वे लोग क़िले ...

गये। यह देख कर पूट उत्पन्न करानेवाले नेताओंकी हिम्मत फिर बढ़ गयी। उन्होंने समझा कि इतनी देरमें डायनके सैनिक सन्तुष्ट होगये होंगे, अब वे इन लोगोंपर छापा मारनेका और प्रयत्न नहीं करेंगे। इसीसे उन्होंने लोगोंको फुसला कर फिर इस बातके लिए राजी किया कि डायन सेनापति न बनाया जाय और यदि वह अपने विदेशी सैनिकों सहित यहाँ आये तो उसे नगरमें प्रवेश ही न करने दिया जाय। उन्होंने लोगोंसे कहा कि आप अपने व्यवहारसे यह मत प्रकट होने दीजिए कि आप उन विदेशी सैनिकोंसे आत्मसम्मान एवं साहसमें किसी प्रकार कम हैं; आपको स्वयं ही अपनी स्वाधीनताकी रक्षा करने और अपनी धन-सम्पत्ति बचानेका प्रयत्न करना चाहिये। इसीसे सर्वसाधारण तथा उनके नेताओंने आदमी भेज कर डायनको आगे बढ़नेसे मना कर दिया, किन्तु नगरके कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियोंने तथा घुड़सवार सेनाने पृथक् रूपसे अपने दूत भेजकर उससे बेधड़क चले आनेकी प्रार्थना की। डायनने अपनी चाल तो कम कर दी, पर यात्रा बन्द नहीं की। उसके विरोधियोंने नगरमें उसका घुसना रोकनेके ख्यालसे रातोंरात सब फाटकोंपर पहरा बैठा दिया। इसी बीचमें निपसियसने बहुसंख्यक आदमियोंके साथ क़िलेमेंसे निकल कर दुबारा आक्रमण किया। इन लोगोंने नगरके प्राचीरका शेषांश भी नष्ट कर दिया और भूखे शेरोंकी तरह सारे शहरपर टूट पड़े। इस बार पुरुषोंकी ही नहीं, वरन् स्त्रियों और बच्चों सबकी निष्ठुर हत्या की गयी, मानो उनकी दृष्टिमें लूटपाटका उतना महत्त्व नहीं था जितना प्रत्येक सामने पड़ जानेवाले व्यक्तिको मार डालनेका था। डायोनीशियसको पुनः सिंहासनारूढ़ होनेकी आशा तो रह नहीं गयी थी और वह सिराक्यूसन लोगोंसे बहुत चिढ़ता भी था, अतः उसने मनमें ठान लिया था कि मेरा राज्य गया तो गया, मैं सिराक्यूसका भी सत्यानाश किये बिना न रहूँगा। इसीसे सैनिकोंने पहलेसे ही यह समझ कर कि डायोनीशियस हमारी सहायता करेगा, प्रत्येक वस्तुको नष्ट करना आरम्भ

कर दिया। पासकी चीजोंमें उन्होंने मशालों और चिरागोंसे आग लगा दी तथा दूरकी वस्तुओंको अग्निबाणोंकी सहायतासे जला डाला। नागरिक लोग व्याकुल होकर चारों तरफ दौड़ने लगे। अग्निकी ज्वालाओंसे संतप्त होकर जो लोग बाहरकी ओर भागे, वे सड़कोंपर पकड़े जाकर क़त्ल कर दिये गये और जो लोग प्राणोंके भयसे मकानोंमें घुस गये उन्हें आगकी लपटोंसे परेशान होकर फिर बाहर निकलना पड़ा। कुछ लोग तो जलते हुए मकानोंके गिर पड़नेसे नीचे दब कर मर गये।

इस नयी विपत्तिसे व्याकुल होकर सर्वसाधारणने पुनः एकमत होकर डायनके आनेके लिए नगरके फाटक खुलवा दिये। शत्रुके सैनिकोंके क़िलेमें लौट जानेकी खबर पाकर डायनने अपनी चाल धीमी कर दी थी, किन्तु सवेरा होते ही कुछ घुड़सवारोंने आकर दुबारा आक्रमणके समाचार उसे सुनाये। पहले जिन लोगोंने उसके आगमनका विरोध किया था, उनमेंसे भी कुछ आदमी उसके पास दौड़े आये और उससे नगरकी रक्षाके लिए शीघ्र चलनेकी प्रार्थना करने लगे। हेराक्लीडीज़ने पहले अपने भाईको, फिर चाचाको भी, सहायताकी प्रार्थना करनेके लिए भेजा और यह सन्देशा भिजवाया कि मैं स्वयं जख्मी हो गया हूँ तथा नगरका अधिकांश भाग या तो जला दिया गया है या अन्य प्रकारसे नष्ट कर डाला गया है। डायनको जब यह दुःख संवाद मिला, तब वह नगरसे कोई आठ मीलकी दूरी पर था। जब उसने अपने सैनिकोंको इस विपत्तिकी बात समझायी और उनसे सच्चे वीरोंकी तरह व्यवहार करनेका अनुरोध किया, तब वे मामूली चालसे चलनेके बजाय फुर्तीसे क़दम बढ़ाने लगे। सैनिकोंकी इस तत्परताके कारण डायन शीघ्र ही नगरकी बाह्य सीमापर जा पहुँचा। उसने यह ख्याल कर तुरन्त कुछ सवारोंको शत्रुपर आक्रमण करनेके लिए भेज दिया कि उन्हें देखते ही नागरिकोंकी हिम्मत बढ़ जायगी। इस बीचमें उसने अपनी समस्त सेनाका और उन नागरिकोंका व्यूहन किया जो आकर सेनामें मिल गये थे। उसने अपनी

सेनाको पृथक् पृथक् सेनानायकोंकी अधीनतामें कई टुकड़ोंमें बाँट दिया और शत्रुपर एक साथ ही कई दिशाओंसे आक्रमण करनेका निश्चय किया।

इस प्रकारकी व्यवस्था कर तथा देवताओंको बलि चढ़ाकर उसने ज्योंहो नगरमें प्रवेश किया, त्योंही लोगोंने उसे अपनी सेना सहित शत्रु-पर आक्रमण करनेके लिए अग्रसर होते देखकर तुमुल हर्षध्वनिके साथ उसका स्वागत किया। वे डायनको अपना उद्धारक एवं कुल-देवता और उसके सैनिकोंको अपने मित्र तथा भाई कहने लगे। उस समय वे लोग अपने प्राणोंका मोह छोड़ कर उसके चारों ओर आ जुटे और सब प्रकारसे उसके जीवनकी रक्षाका ही प्रयत्न करने लगे।

शत्रुकी स्थिति इस समय अधिक अच्छी थी। एक तो विजयी होनेके कारण उसका उत्साह दुगुना हो गया था, दूसरे उसने सिराक्यूसनों द्वारा तैयार की गयी दीवार इत्यादिको नष्ट कर अधिक सुविधाजनक स्थानमें अपनी सेना खड़ी कर रखी थी। किन्तु डायनके सैनिकोंके सामने सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि उन्हें जलते हुए मकानोंकी कता-रोंके बीचमेंसे जाना पड़ता था। वे जिधरसे जाते थे, उधर ही उन्हें आगका सामना करना पड़ता था। जलते हुए मकानोंके पाससे निकलते समय उनके गिर पड़नेकी शंका भी बराबर बनी रहती थी। आगकी लपटों और धुएँके बादलोंको चीरते हुए बड़ी कठिनाईसे वे अपनी कता-रोंकी शृङ्खला अक्षुण्ण रख रहे थे। जब वे शत्रुके पास पहुँचे, तब आगे बढ़नेका रास्ता इतना तङ्ग और ऊबड़-खाबड़ था कि बहुत थोड़े आदमी ही एक साथ आक्रमण कर सकते थे। किन्तु अन्तमें सिराक्यूसन लोगोंके बढ़ावा देने और स्वयं आक्रमण करनेमें शरीक होनेके कारण उन्होंने शीघ्र ही निपसियसके आदमियोंको परास्त कर पीछेकी ओर खदेड़ दिया। बहुतोंने तो भाग कर किलेमें शरण ली। जो लोग वहाँतक नहीं पहुँच सके वे बीचमें ही पकड़ लिये गये और कत्ल कर दिये गये। इस सम-यकी परिस्थिति ऐसी नहीं थी कि इतनी बड़ी सफलता पाकर भी लोग

एक दूसरेके गले मिलकर और परस्पर बधाई देकर अपनी खुशी प्रकट कर सकते। इस समय तो सबको उन मकानोंको बचानेकी फिक्र लगी हुई थी जो अभीतक पूरी तौरसे जल नहीं पाये थे। रात भर कठिन परिश्रम करने पर भी आग भलीभाँति वशमें नहीं की जा सकी।

दूसरे दिन बड़े बड़े व्याख्यान देकर लोगोंको बहकानेवालोंमेंसे एक भी नज़र नहीं आया। अपनेको अपराधी समझ कर वे लोग अपनी जान लेकर पहले ही भाग गये थे। केवल हेराक्लीडीज़ और थीओडोटीज़ ही डायनके पास आये और उन्होंने यह कहते हुए स्वेच्छापूर्वक आत्मसमर्पण कर दिया कि हमने आपके साथ बड़ा अन्याय किया है, किन्तु अब हम प्रार्थना करते हैं कि आप हम लोगोंको क्षमा करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि "आपने तो इतने अच्छे अच्छे कार्य किये हैं कि यदि हमारे समान कृतघ्न मनुष्योंके प्रति आप अपना क्रोध कम कर हृदयकी उदारतासे प्रेरित होकर दयाभाव प्रदर्शित करें तो इससे आपके सुयशकी वृद्धि ही होगी। हम लोग आपके सामने आकर निश्छल भावसे यह स्वीकार करते हैं कि यद्यपि पहले हम आपके शत्रु और प्रतिद्वन्द्वी थे, किन्तु अब हम आपके सद्गुणोंसे प्रभावित होकर आपके वशवर्ती हो गये हैं।" यद्यपि उन्होंने इस तरह अत्यन्त नम्रतापूर्वक क्षमा-प्रार्थना की, फिर भी डाय-नके मित्रोंने उसे उन लोगोंको क्षमा करनेकी सलाह नहीं दी। उन लोगोंकी इच्छा थी कि उन दोनोंको सैनिकोंकी इच्छाके अनुसार उचित दण्ड दिया जाय और लोकप्रिय बननेकी महत्वाकांक्षाका यह रोग ही प्रजातन्त्रसे समूल नष्ट कर दिया जाय। डायनने यह कह कर उन्हें सम-झानेकी चेष्टा की कि जहाँ अन्य सेनापतियोंने प्रायः युद्ध करने एवं हथियार चलानेकी ही शिक्षा पायी है, वहाँ मैंने "एकेडेमी" में रह कर क्रोधको जीतने और ईर्ष्या एवं प्रतियोगिताके वशमें न होनेका विशेष प्रयत्न किया है। इस मार्गका अनुसरण करनेवालेके लिए केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है कि वह अपने मित्रों और हितचिन्तकोंके प्रति दया एवं

कृतज्ञताका व्यवहार करे, वरन् उसे अपना अनिष्ट करनेवालोंके प्रति भी उदार होना चाहिये और उन्हें क्षमा-प्रदान करनेके लिए तैयार रहना चाहिये । मैं संसारको यह दिखला देना चाहता हूँ कि मैं अपनी बड़ाई हेराक्लीडीजसे योग्यता अथवा सामान्य आचार व्यवहारमें बढ़ जानेमें नहीं समझता, वरन् उसे न्यायप्रियता एवं क्षमाशीलतामें परास्त करनेमें समझता हूँ । वास्तवमें इन बातोंमें बढ़ जाना ही सच्चे महत्त्वका सूचक है । मान लिया कि हेराक्लीडीज विश्वासघातक, द्वेषी और नीच है, तो क्या मैं भी उसके प्रति द्वेष बुद्धि एवं क्रोध भाव प्रकट कर अपने चरित्रको कलंकित करूँ ? यद्यपि किसीको हानि पहुँचानेकी अपेक्षा कानूनकी दृष्टिमें उसका बदला लेना अधिक न्यायोचित समझा जाता है, फिर भी यह स्पष्ट है कि दोनों प्रवृत्तियोंका मूल कारण मानसिक दुर्बलता ही है । इसके सिवाय कठिनसे कठिन द्वेष-बुद्धि भी दयालुता एवं सौजन्यसे जीती जा सकती है ।" इसी तरहकी और भी दलीलें पेश कर डायनने हेराक्लीडीज तथा थीओडोटीजको क्षमा कर दिया और उन्हें कैदसे मुक्त कर दिया ।

अब क़िलेका अवरोध पुन प्रारम्भ करनेकी इच्छासे उसने चारों ओर उठायी गयी दीवारके टूटे हुए भागको सुधारनेका निश्चय किया । उसने प्रत्येक सिराक्यूसनको एक एक थूनी काट कर लानेका आदेश दिया । फिर उसने उन्हें आराम करनेके लिए भेज दिया और रात भर अपने आदमियोंसे काम कराता रहा । सबेरा होते होते घेरेकी दीवार (टट्टी) तैयार हो गयी । रात भरमें घेरेकी इतनी तैयारी हुई देख कर शत्रुको और नागरिकोंको बड़ा आश्चर्य हुआ । अब मृत सैनिकोंको दफ़ना कर और रुपया ले लेकर दो हजार कैदियोंको मुक्त कर उसने एक सभा आमन्त्रित की । इसमें हेराक्लीडीजने प्रस्ताव किया कि डायन प्रधान सेनापति नियुक्त कर दिया जाय और उसे स्थलसेना तथा जलसेनापर पूरा अधिकार रहे । सभी अच्छे नागरिकोंको यह बात पसन्द आयी । किन्तु

मल्लाहों और कारीगरों इत्यादिको यह अच्छा नहीं लगा कि हेराक्लीडीज़के हाथसे नौ-सेनापतिका अधिकार छीन लिया जाय, क्योंकि उनका यह विश्वास था कि हेराक्लीडीज़ चाहे और बातोंमें बुरा हो, पर इतना जरूर था कि डायनकी अपेक्षा उसका स्वभाव अन्य नागरिकोंके स्वभावसे अधिक मिलता जुलता था और वह सर्वसाधारणकी इच्छाके अनुसार कार्य करनेमें अधिक तत्पर था। डायनने उनका कहना मान लिया और हेराक्लीडीज़को नौसेनापति बना रहने दिया। किन्तु जब उन्होंने ज़मीनों और मकानोंके पुनर्वितरणके लिए आग्रह किया, तब उसने उनकी बातका जोरोंसे विरोध किया। इस बातसे लाभ उठाकर हेराक्लीडीज़ने मेसीनी पहुँच कर उन सैनिकों और मल्लाहोंको बहकाना शुरू किया जो उसके साथ गये थे। उसने एक व्याख्यान देकर डायनपर यह दोषारोपण किया कि वह सिराक्यूसका सर्वेसर्वा बनना चाहता है; इसके साथ साथ वह निजी तौरपर फेरेक्स नामक स्पार्टनके जरिये डायोनीशियससे संधिकी बातचीत भी कर रहा है। इसका हाल जब लोगोंको मालूम हुआ तो सेनामें राजविद्रोह फैलने लगा। इस समय नगर बड़ी विपत्तिकी अवस्थामें था और वहाँ खाद्य वस्तुओंकी बहुत कमी थी। डायन किंकर्तव्य विमूढ़ सा हो रहा था। क्या उपाय करना चाहिये, यह उसकी समझमें ही नहीं आ रहा था। इधर उसे मित्रोंकी तीव्र आलोचनाओंका भी सामना करना पड़ रहा था, क्योंकि उनका ख्याल था कि डायनने स्वयं ही हेराक्लीडीज़का समर्थन कर उसे इतना ख़तरनाक बननेका मौक़ा दिया था।

फैरेक्स इस समय नीआपोलिसमें पड़ाव डाले हुए पड़ा था। इसलिए डायनने सिराक्यूसन लोगोंके साथ उस ओरको प्रस्थान किया, किन्तु उसका इरादा तबतक युद्ध करनेका नहीं था जबतक इसके लिए कोई अच्छा मौक़ा न मिलता। यह देखकर हेराक्लीडीज़ तथा उसके अन्य साथियोंने यह कहना शुरू किया कि डायन जान बूझकर यु-

छेड़नेमें देर कर रहा है, क्योंकि वह चाहता है कि जितने अधिक समय तक मैं सेनापति बना रह सकूँ उतना ही अच्छा हो। इस मिथ्या कलंक-से बचनेके लिए उसे इच्छा न होते हुए भी युद्ध छेड़ देना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि वह हार गया, यद्यपि उसको कोई विशेष हानि नहीं हुई। पराजयका प्रधान कारण सैनिकोंकी आपसकी फूट थी। अब उसने अपने आदमियोंको पुनः इकट्ठा किया और उनका व्यूहन किया। दुबारा युद्ध करनेकी तैयारी वह कर ही रहा था कि शामको उसे यह खबर मिली कि हेराक्लीडीज अपने जहाज़ी बेड़ेके साथ सिराक्यूसकी ओर बढ़ रहा है और उसकी इच्छा उसको तथा उसके सैनिकोंको बाहर ही रख कर स्वयं नगरपर अधिकार कर लेनेकी है। यह सुनकर तुरन्त ही थोड़ेसे चुने हुए वीर योद्धाओंको लेकर और घोड़ेपर सवार होकर वह अँधेरेमें ही चल पड़ा। रात भरमें कोई सात सौ फर्लांगका रास्ता तै करके दूसरे दिन सबेरे नौ बजेतक वह शहरके फाटकपर जा पहुँचा। यद्यपि हेराक्लीडीज़ने अपनी ओरसे काफी जल्दी की थी, पर वह देरमें पहुँचा। निदान उसे बाहर ही बाहर पुनः समुद्रकी ओर लौटना पड़ा। वह यह सोच ही रहा था कि अब किधर जाना चाहिये, इतनेमें अचानक जीसिलस नामक स्पार्टनसे उसकी भेंट हो गयी। उसने कहा कि मैं सिसिली वालोंका नेतृत्व करनेके लिए लैसीडीमनसे आया हूँ। हेराक्लीडीज़ उससे मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने अपने साथियोंसे उसका परिचय करा दिया। फिर उसने एक दूत भेजकर सिराक्यूसन लोगोंसे कहलाया कि आप लोग इन स्पार्टन महाशयको अपना सेनापति बनाना स्वीकार कर लीजिए। डायनने उत्तर भिजवाया कि हमारे यहाँ सेनापतियोंकी कमी नहीं है और यदि किसी स्पार्टनको ही सेनापति बनानेकी आवश्यकता हो तो मैं स्वयं उस पदको ग्रहण कर सकता हूँ, क्योंकि मैं भी स्पार्टाका ही नागरिक हूँ। जब जीसिलसको यह बात मालूम हुई तब उसने अपना विचार बदल दिया और डायनके पास जाकर हेराक्लीडीज़-

के साथ उसका समझौता करा दिया। उसके कहनेसे हेराक्लीडीजने अनेक बार शपथ खाकर प्रतिज्ञा की कि अब मैं डायनका अनुशासन मानूँगा और उसके खिलाफ कोई कारवाई नहीं करूँगा। जीसिलसने भी डायनके अधिकारकी रक्षा करनेका वादा किया और यह भी विश्वास दिलाया कि यदि हेराक्लीडीज फिर धोखा दे तो मैं स्वयं उसे दण्ड दूँगा।

अब सिराक्यूसन लोगोंने निश्चय किया कि जहाजी बेडेसे कोई काम न लिया जाय, क्योंकि एक तो उसमें खर्च बहुत पडता है, दूसरे उससे हमें कोई लाभ नहीं पहुँचता, बल्कि उसके कारण सेनापतियोंमें आपसमें फूट उत्पन्न होती है। उन लोगोंने किलेका अवरोध करनेके लिए ही ज्यादा जोर दिया और आग्रह किया कि घेरा डालनेके लिए तैयार की जानेवाली दीवार शीघ्र पूरी कर दी जाय। जो लोग किलेके भीतर बन्द थे, उन्होंने जब बाहरसे सहायता मिलनेकी कोई आशा नहीं देखी और जब उनकी खाद्य सामग्री भी खतम होने लगी, तब उनमें बलवा शुरू हो गया। डायोनीशियसके पुत्रने पिताके आगमनकी प्रतीक्षा करते करते अन्तमें निराश होकर आत्मसमर्पण करनेका निश्चय किया। उसने डायनके पास पत्र भेज कर रक्षा करनेवाली सेना तथा गोला बारूद इत्यादि सहित किला उसके सिपुर्द करना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार अपनी माँ और बहिनोंके साथ, पाँच नौकाओंमें अपना सामान इत्यादि लदवा कर, वह अपने पिताके पास जानेके लिए रवाना हो गया। यात्रा सकुशल पूरी हो सके, इसका प्रबन्ध करनेके लिए डायन स्वयं उसे पहुँचाने गया। उसके प्रस्थानका दृश्य देखनेके लिए नगरके प्राय सभी लोग आ जुटे। जो नहीं आ पाये थे, उन्हें भी लोगोंने दौड कर बुला लिया। डायोनीशियसके पुत्रको इस प्रकार नगर छोड कर जाते देख सब लोग बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे कि आजका दिन धन्य है, क्योंकि आजसे सिराक्यूस सचमुच स्वाधीन हो गया। डायोनीशियसका अपने अधिकारोंसे वंचित होकर इस प्रकार राज्यसे निकाला जाना आज भी भाग्य-

विपर्ययकी एक सुप्रसिद्ध घटना समझी जाती है, इसीसे हम इस बातका अनुमान कर सकते हैं कि जो लोग मामूली परिश्रमसे ही इतने शक्तिसम्पन्न निरंकुश शासनसे उद्धार पा गये उन्हें इसकी कितनी खुशी हुई होगी।

जब डायोनीसियसका पुत्र चला गया और डायन क़िलेपर अधिकार करनेके लिए पहुँचा, तब स्त्रियाँ उसके प्रवेश करनेके समयतक अपनेको नहीं रोक सकीं। वे दौड़कर क़िलेके फाटकपर ही उससे आ मिलीं। आगे आगे ऐरिस्टोमैकी थी, उसके पीछे डायनका लड़का था। इन दोनोंके पीछे ऐरीटी थी जो बहुत रो रही थी और मन ही मन बहुत डरी हुई थी। दूसरे आदमीके साथ इतने दिनोंतक रहकर अब मैं पतिके सामने कैसे जाऊँ, इसका निश्चय वह नहीं कर सकती थी। डायन पहले अपनी बहिनसे मिला, फिर उसने अपने पुत्रको गले लगा लिया। इसके बाद ऐरीटीको सामने लाकर ऐरिस्टोमैकीने कहा "डायन, तुम्हारे निर्वासित किये जानेके बाद हम सब लोग विपत्तिमें फँस गये थे और अब तुम्हारे लौटने एवं विजयी होनेसे हम पुनः सुखी हो गये। किन्तु इस बेचारीके दुःखोंका, जिसे मैं अपने साथ लायी हूँ, अभी अन्त नहीं हुआ है। तुम्हारे जीवित रहते हुए ही इस भाग्यहीना नारीको ज़बरन् दूसरेकी पत्नी बनना पड़ा है। इसके भाग्यका निर्णय करना अब तुम्हारे ही हाथ है। यह 'चाचा' कहकर तुम्हारा अभिनन्दन करे या 'पति' कहकर ?" ऐरिस्टोमैकीके इन शब्दोंको सुनकर डायनके नेत्रोंमें आँसू आ गये। उसने बड़े प्रेमके साथ अपनी पत्नीका आलिंगन किया और पुत्रको उसकी गोदमें देकर उसे अपने घर भेज दिया। जहाँ वह सिराक्यूसन लोगोंके हाथ क़िला सौंप देनेके बाद भी रहता रहा।

यद्यपि सब बातोंमें उसे अपनी इच्छाके अनुकूल ही सफलता मिली थी, फिर भी इस समय वह अपने सौभाग्यसे कोई विशेष लाभ नहीं उठाना चाहता था। वह केवल अपने मित्रों और सहायकोंको प्रसन्न करना

चाहता था और अर्थजर्में जो लोग उसके साथ रहते थे तथा जिन सैनिकोंने उसकी अधीनतामें काम किया था, उनके प्रति विशेष रूपसे सम्मान एवं दयाभाव प्रदर्शित करना चाहता था, यहाँ तक कि वह अपनी हैसियतसे भी ज्यादा उदारता दिखलानेकी चेष्टा करता था। वह स्वयं अपना निर्वाह बहुत थोड़ेमें कर लेता था। सब लोगोंको यह देख कर बड़ा आश्चर्य होता था कि जब केवल सिसिली और कारथेज ही नहीं, प्रत्युत सारे ग्रीसमें वह सबसे अधिक समुन्नत समझा जाता था, जब उससे बड़ा और कोई मनुष्य विद्यमान न था, और जब अपनी सफलता एवं वीरताके कारण अन्य कोई व्यक्ति इतना प्रसिद्ध नहीं था, तब भी वह बहुत सादगीसे रहता था। न तो उसने अपने अंगरक्षकों अथवा अनुचरोंकी संख्या बढ़ायी और न भोजन इत्यादिका व्यय ही ज़्यादा होने दिया। डायनको 'एकैडेमी' का ध्यान विशेष रूपसे रहता था। उसका ख्याल था कि वहाँके विद्वानोंका ध्यान किसीके महान् कार्यों अथवा उसके साहस या सौभाग्यकी ओर नहीं जाता; वे केवल इसी बातकी ओर दृष्टि लगाये रहते हैं कि उन्नति प्राप्त करनेके बाद वह कितने संयम एवं कितनी बुद्धिमत्तासे उसका उपभोग करता है, अधिक ऊँचे पदपर पहुँच कर भी वह किस प्रकार समान भावसे व्यवहार करता है। उसने अपने स्वभावकी गम्भीरता अथवा रोबीलेपनमें भी कोई कमी नहीं की, यद्यपि इस समय लोगोंके साथ व्यवहार करनेमें अधिक शिष्टता दिखलाना एवं उन्हें प्रसन्न करनेके लिए थोड़ी सी नम्रतासे काम लेना उसके लिए आवश्यक था। अफलातूनने इस दोषकी ओर उसका ध्यान आकर्षित करते हुए उसे एक पत्रमें लिखा था कि हमेशा अपनी ही इच्छाके अनुसार काम करना उन लोगोंको विशेष शोभा देता है जो एकान्त जीवन व्यतीत करते हों, नहीं तो समाजमें रहते हुए हमें अन्य लोगोंकी इच्छाओंका भी आदर करना पड़ता है। वस्तुतः उसका स्वभाव ही ऐसा था कि वह दूसरोंके साथ बर्ताव करते समय विशेष सौजन्य एवं नम्रता नहीं प्रदर्शित ...

रखता था। इसके सिवाय वह सिराक्यूसन लोगोंकी स्वेच्छाप्रियता और आत्मसंयमभंगकी बढ़ती हुई प्रवृत्तियोंको भी रोकना चाहता था।

अब हेराक्लीडीज़ने पुनः डायनका विरोध करना शुरू किया। जब डायनने उसे सभाका सदस्य बनाना चाहा, तब उसने कहला भेजा कि मैं एक स्वतंत्र नागरिककी हैसियतसे ही जनसभामें अपना मत प्रकट किया करूँगा। इसके बाद उसने डायनके विरुद्ध यह कहना शुरू किया कि उसने किलेका विध्वंस नहीं किया और डायोनीसियसकी कब्र खोदनेसे लोगोंको मना कर दिया। उसने उसपर यह भी दोषारोपण किया कि शासनकार्यमें सहायता देनेके लिए उसने कॉरिन्थसे कुछ लोगोंको बुलवा भेजा और सिराक्यूसन लोगोंके अधिकारकी उपेक्षा की। यह बात किसी अंशमें सत्य भी थी, क्योंकि उसने कॉरिन्थसे कुछ व्यक्तियोंको बुलवाया अवश्य था। उसे आशा थी कि इनकी सहायता लेकर मैं अधिक आसानीसे शासन-व्यवस्थामें वाञ्छित सुधार कर सकूँगा। अनियंत्रित लोकतंत्र शासनको दबाकर वह स्पार्टा तथा क्रीटके ढंगपर एक तरहकी निश्चित शासनप्रणाली स्थापित करना चाहता था जो प्रजातंत्र और एकतंत्र दोनोंसे मिलती जुलती हो और जिसमें प्रधान अधिकार कुलीन वर्गके हाथमें हो। उसने देखा कि कारिन्थियन लोगोंकी शासनव्यवस्था भी कुछ कुछ ऐसी ही थी। वहाँ भी शासनसूत्र एक विशिष्ट वर्गके हाथमें था और राज्यके महत्वपूर्ण प्रश्नोंसे सर्वसाधारणका प्रायः कोई सम्बन्ध नहीं था।

डायन जानता था कि हेराक्लीडीज़ मेरा कट्टर शत्रु है और वह बड़ा लड़ाका तथा उग्र स्वभावका है, इसलिये इस बार फिर जब कुछ लोगोंने उसे मार डालनेकी इच्छा प्रकट की, तब उसने उनका कोई विरोध नहीं किया, यद्यपि अभीतक वह उन्हें ऐसा करनेसे रोकता आया था। इन लोगोंने हेराक्लीडीज़के मकानमें घुस कर उसकी हत्या कर डाली। लोगोंको हेराक्लीडीज़का इस प्रकार मारा जाना बहुत बुरा मालूम हुआ। फिर भी, जब डायनने बड़ी धूमधामसे उसका जनाज़ा निकाला और स्वयं अपने

समस्त सैनिकों सहित मृत शरीरके साथ साथ गया एवं जब उसने सर्व-साधारणके सामने एक भाषण किया, तब यह बात साफ साफ उनकी समझमें आ गयी कि जबतक शासनकार्यमें हेराक्लीडीज़ डायनका प्रति-द्वन्द्वी बना रहता, तबतक नगरमें शान्ति स्थापित करना असम्भव था।

डायनके कैलिपस नामका एक मित्र था। वह एक अथीनियन था जिसके साथ मामूली बातचीतके समय उसका परिचय हो गया। धीरे धीरे यह परिचय घनिष्ठतामें परिणत हो गया। यह मनुष्य प्रत्येक युद्धमें डायनके साथ रहता था और इसकी बड़ी इज़्ज़त की जाती थी। यही उसके मित्रोंमें सबसे आगे था जो सिराक्यूसमें प्रवेश करते समय उसके साथ साथ चल रहे थे। गलेमें एक सुन्दर माला पहना कर इसका विशेष रूपसे सम्मान किया गया था, क्योंकि प्रत्येक युद्धमें इसने बड़ी वीरता दिखलायी थी और बड़ी ख्याति प्राप्त की थी। इसने देखा कि डायनके बड़े बड़े मित्र तो युद्धमें मारे गये और हेराक्लीडीज़की हत्या हो जानेके कारण जनसाधारणका कोई नेता भी अब नहीं रह गया है। सैनिकोंका कृपाभाजन तो यह था ही, अतः इसने अत्यन्त अधम एवं क्षुद्र व्यक्तिकी तरह यह आशा करना शुरू किया कि यदि मैं अपने मित्र-को इस संसारसे हटा दूँ तो मैं सिसिलीका प्रधान सेनापति बन सकता हूँ। कुछ लोगोंका कथन है कि शत्रुने भी इसे डायनकी हत्या करा डालनेके बदलेमें बीस टेलेण्ट देनेका प्रलोभन दिया था। अतः इस अवसर-से लाभ उठाकर इसने कुछ सैनिकोंको बहकाया और डायनके खिलाफ़ एक साजिश खड़ी की। डायनके प्रतिकूल जितनी बातें कैलिपस सैनिकों-से सुनता था अथवा स्वयं गढ़ लेता था, उनकी सूचना उसे नित्य दिया करता था। इससे वह उसका और भी अधिक विश्वासपात्र बन गया। डायनने उसे इजाज़त दे दी थी कि वह चाहे जिससे मिलकर और बहुत सी बातें उसके खिलाफ़ भी कह कर उसके गुप्त शत्रुओं एवं निन्दकोंका पता लगा सकता है। इस प्रकार उसने शीघ्र ही डायनके

विद्रोहियोंकी एक मण्डली बना ली। यदि डायनके पास जाकर कोई उसकी शिकायत करता तो वह यह ख्याल कर उसकी बातोंपर ध्यान नहीं देता था कि कैलिपस मेरे ही आदेशसे ऐसा करता है।

जब यह कुचक्र रचा जा रहा था, तब डायनने एक विलक्षण एवं भयानक दृश्य देखा। शामके वक्त वह कोठेपरके बरामदेमें विचारमग्न अवस्थामें बैठा था, सहसा कोई आवाज सुनकर चौंक उठा। जब उसने सिर घुमाकर देखा तो खम्भोंकी कतारके पीछे सूर्यके उज्वल प्रकाशमें उसे लम्बी सी औरत देख पड़ी जो हाथमें झाड़ू लेकर फर्श बहार रही थी। आश्चर्यान्वित और भयभीत होकर उसने तुरन्त अपने कुछ मित्रोंको बुलवाया और जो कुछ उसने देखा था उसकी चर्चा उनसे की। उसने उनसे अनुरोध किया कि आप लोग रात भर मेरे साथ ही रहिये, न जाने क्यों मेरी तबियत बहुत घबड़ाती है और मुझे भय है कि यदि मैं अकेला रह गया तो वह भीषण छाया फिर मुझे दृष्टिगोचर होगी। कुछ दिनोंके बाद उसका एक मात्र पुत्र, जो अब काफी बड़ा हो गया था, एक मामूली सी घटनामें नाराज होकर मकानकी छतपरसे नीचे कूद पड़ा और उसका प्राणान्त हो गया।

जब डायन पुत्रशोकमें व्याकुल हो रहा था, तब कैलिपस अपने षड्यंत्रका कार्य आगे बढ़ानेमें लगा हुआ था। उसने सिराक्यूसन लोगोंमें यह खबर फैला दी कि पुत्रकी मृत्यु हो जानेके कारण अब डायनने डायोनीसियसके लड़के अपोलोक्रेटीजको, जो उसकी पत्नीका भतीजा है, बुलानेका और उसे अपना उत्तराधिकारी बनानेका निश्चय कर लिया है। अब डायन, उसकी पत्नी तथा बहिनको कैलिपसके कार्योंपर सन्देह होने लगा और उन्हें चारों ओरसे षड्यंत्रकी खबरें मिलने लगीं। डायनका हृदय हेराक्लीडीजकी हत्याके कारण व्यथित तो था ही, क्योंकि यह उसके जीवनके लिए एक बड़े भारी कलंककी बात थी, इसके सिवाय रात दिन और भी कई बातोंकी परेशानीसे उसका मन बड़ा खिन्न हो गया था और वह ख्याल करने लगा

था कि मेरे लिए एक बार नहीं, हजार बार भी मरना ही अच्छा है। शत्रुओंसे हमेशा डरते रहने और मित्रों तकसे सशंक रहनेकी अपेक्षा यह कहीं अधिक अच्छा है कि मैं स्वयं अपने हत्यारेके सामने छाती खोलकर खड़ा हो जाऊँ। किन्तु कैलिपसने जब देखा कि स्त्रियाँ इस साजिशकी रत्ती रत्ती बातका पता लगानेमें व्यस्त हैं, तब वह डर गया। वह उनके पास आया और आँखोंमें आँसू भरकर कहने लगा कि इस साजिशसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है और आप लोग जिस तरह कहें उस तरह मैं आपको अपनी सचाईका विश्वास दिलानेको तैयार हूँ। उनके कहनेसे वह महा शपथ लेनेके लिए उद्यत हो गया। वह प्रोसरपिन देवीके मंदिरमें गया जहाँ उससे कुछ धार्मिक कृत्य करनेको कहा गया। फिर उसे देवीकी बैंगनी पोशाक पहिनायी गयी और हाथमें जलती हुई एक मशाल देकर उससे शपथ करनेको कहा गया। कैलिपसने तुरन्त ही शपथ खाकर यह कह दिया कि षड्यंत्रसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। देवीके प्रति उसके हृदयमें कितनी श्रद्धा थी, यह इसीसे प्रकट है कि वह ठीक उस दिनतक ठहरा रहा जिस दिन उस प्रोसरपिन देवीका उत्सव मनाया जाता है जिसके नामकी सौगन्ध उसने खायी थी और जब वह दिन आ गया तब उसने बिना किसी पशोपेशके डायनकी हत्या करा डाली।

षड्यंत्रमें बहुत लोग शामिल थे। जब डायन अपने कई मित्रोंको एक भोज देने जा रहा था, तब षड्यंत्रकारियोंमेंसे कुछने चारों ओरसे उसका मकान घेर लिया और कुछ खिड़कियों तथा दरवाजोंपर खड़े हो गये। जिन लोगोंको डायनकी हत्या करनेका काम सौंपा गया था, वे केवल अधोवस्त्र पहने हुए, हाथमें तलवारें इत्यादि न लेकर, भीतर घुस गये। जो लोग बाहर खड़े थे, उन्होंने तुरन्त दरवाजे बन्द कर दिये और उन्हें खूब मजबूतीसे पकड़े रहे। घातक एक साथ ही उसपर टूट पड़े और उन्होंने उसे गला घोंट कर मार डालना चाहा। अपने प्रयत्नमें

असफल होते देखकर उन्होंने एक तलवार माँगी, किन्तु दरवाजा खोलने-की हिम्मत किसीकी नहीं हुई। कमरेके भीतर डायनके कई साथी थे, किन्तु प्रत्येक केवल अपनी ही रक्षा करनेका प्रयत्न करता था, प्रत्येकका यह ख्याल था कि डायनको मरने देनेसे मेरे प्राण सुरक्षित रहेंगे। इसीसे किसीने उसकी सहायता करनेका साहस नहीं किया। अन्तमें जब बहुत देर हो गयी, तब लाइकन नामक एक सिराक्यूसन किसी तरह खिड़की-मेंसे एक छोटी सी तलवार घातकोंके हाथमें दे सका। इस प्रकार बलि-पर चढ़ाये जानेवाले पशुकी तरह जिस डायनको वे लोग अर्धमृतक रूप जकड़ कर पकड़े हुए थे और जो आघातोंके कारण सिरसे पैर तक काँप रहा था, उसे अब उन्होंने तलवारकी सहायतासे अनायास ही मार डाला। उसकी बहिन और उसकी पत्नीको, जो गर्भावस्थामें थी, उन्होंने बन्दीगृहमें भेज दिया। वहाँ इस विपदावस्थामें ही उस अभागिनीके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके पालन करनेका, पहरेदारोंको समझा बुझा कर, उन्होंने निश्चय किया।

डायनकी हत्याके बाद कैलिपस खूब प्रसिद्ध हो गया। सिराक्यू-सका शासन पूर्णतया उसके हाथमें आ गया। किन्तु उसका यह वैभव अधिक दिनोंतक न टिक सका। देवताओंने मानो इस अपवादसे बच-नेके लिए कि उसके पापोंकी ओरसे उन्होंने तब अपनी आँखें बन्द कर ली थीं, उसे शीघ्र ही उचित दण्ड दिया। कैटाना नामक नगरपर अधि-कार करनेका प्रयत्न करते समय सिराक्यूस उसके हाथसे निकल गया। फिर मेसेनीपर आक्रमण करते हुए उसके अनेक साथी काट डाले गये, जिनमें डायनके घातक भी थे। जब सिसिलीके किसी भी नगरमें उसे स्थान नहीं मिला, सभीने उसके प्रति घृणा प्रदर्शित की, तब वह इटली जाकर रेजियममें रहने लगा। वहाँ बड़ी बड़ी विपत्तियाँ उठाकर और अपने सैनिकोंका वेतन देनेमें असमर्थ होकर, वह शीघ्र ही मार डाला गया। कहते हैं, दैवसंयोगसे उसकी हत्या भी उसी तलवारसे

की गयी जिससे डायनकी की गयी थी। इस प्रकार कैलिपसको शीघ्र ही अपने पापोंकी सजा मिल गयी ।

जब ऐरिस्टोमैची तथा ऐरीटी बन्दीगृहसे मुक्त कर दी गयीं, तब हिसेटीज़ नामक डायनके एक मित्रने उन्हें अपने घरमें रख लिया। पहले तो ऐसा मालूम होता था कि उनके साथ अच्छा व्यवहार कर वह एक सच्चे मित्रकी तरह अपने कर्त्तव्यका पालन करेगा, किन्तु बादमें वह डायनके शत्रुओंके बहकानेमें आ गया। पेलोपोनीसस भेजनेके बहाने उसने उन्हें जहाजमें बैठा दिया और मल्लाहोंको अलग ले जाकर समझा दिया कि तुम लोग ज्यों ही समुद्रमें पहुँचो त्यों ही इन लोगोंको मार डालना और समुद्रमें फेंक देना। कुछ लोगोंका कहना है कि ये दोनों औरतें, डायनके पुत्र सहित, समुद्रमें जीते जो ही फेंक दी गयी थीं। यह मनुष्य भी अपनी दुष्टताकी सजा पानेसे नहीं बच सका। टिमोलियनके द्वारा पकड़े जाकर उसे भी अपने प्राण खोने पड़े और सिराक्यूसन लोगोंने डायन (की पत्नी तथा बहिन) का बदला लेनेके लिए उसकी दोनों लड़कियोंको भी मार डाला।

१२—मार्कस ब्रूटस ।

मार्कस ब्रूटस उस जूनियस ब्रूटसका वंशज था जिसने तारकिन लोगोंको भगा देने और एकतंत्र शासनका विनाश करनेमें विलक्षण साहस एवं असाधारण दृढ़ता दिखलायी थी। इसीसे उसके संस्मरणार्थ प्राचीन रोमन लोगोंने हाथमें नग्न तलवार लिये हुए उसकी एक पीतलकी मूर्त्ति बनवा कर अपने अपने राजाओंकी मूर्त्तियोंके साथ बृहस्पतिदेवके मन्दिरमें रखवा दी थी। किन्तु जूनियस ब्रूटस बहुत कठोर एवं दुर्दान्त स्वभावका था। उसने

विशेष अध्ययन एवं मनन भी नहीं किया था जिससे उसके चरित्रका यह दोष अंशतः दूर हो जाता। अत्याचारियोंसे उसे इतनी चिढ़ थी और वह उनसे क्रुद्ध होते समय इतना आपेसे बाहर हो जाता था कि एक बार वह अपने लड़कों तकको, उनकी एक साजिशमें शरीक होनेके कारण, फाँसी-पर चढ़ा देनेको तैयार हो गया था। किन्तु जिस ब्रूटसका चरित्र हम यहाँ लिख रहे हैं, उसने दर्शनशास्त्र तथा अन्य विषयोंके अध्ययन द्वारा अपने स्वाभाविक सौजन्यकी और भी वृद्धि कर ली थी। सार्वजनिक कार्योंमें विशेष रूपसे भाग लेनेके कारण उसकी स्वाभाविक शक्तियोंका भी विकास हो गया था। इस प्रकार उसका स्वभाव सदाचार एवं सद्गुणोंकी उन्नतिके सर्वथा उपयुक्त बन गया था। सीज़रके विरुद्ध साज़िश करनेके कारण जो लोग उसके शत्रु बन गये थे, उन्हें तक मुक्तकंठसे स्वीकार करना पड़ा कि यदि उस षड्यंत्रमें किसीका व्यवहार भद्रजनोचित एवं सम्मानपूर्ण कहा जा सकता है, तो वह ब्रूटसका ही है और जो कुछ दुष्टता अथवा नीचता उसमें की गयी, उसका कारण ब्रूटसके सम्बन्धी तथा मित्र कैसि-यसको ही समझना चाहिये। उसकी माता सरवीलिया उस सरवीलियस अहलाके कुटुम्बकी थी, जिसने जब यह देखा कि स्पूरियस मीलियस लोगोंको बलवा करनेके लिए उभाड़ रहा है तथा स्वयं राजा बनना चाहता है, तब बगलमें भाला छिपा कर घरसे निकल पड़ा और एक निजी मामलेके सम्बन्धमें बातचीत करनेके बहाने उसके बिल्कुल निकट जा खड़ा हुआ; फिर ज्यों ही स्पूरियस मीलियसने इसकी बात सुननेके लिए अपना सिर झुकाया त्यों ही इसने अपना भाला उसकी छातीमें घुसेड़ दिया। ब्रूटसके मातृकुलसे सम्बन्ध रखनेवाली इस कथाकी सत्यता तो सभीने स्वीकार की है, किन्तु उसके पितृकुलके सम्बन्धमें लोगोंमें मतभेद है। सीज़रकी हत्या करनेके कारण जो लोग उससे घृणा करते थे, उनका कहना है कि वह उस ब्रूटसका वंशज नहीं था जिसने तारक्विन लोगोंको मार भगाया था, क्योंकि उसके दोनों पुत्रोंके मारे जानेके बाद उसके वंशमें

कोई बच ही नहीं गया था। इसके विरुद्ध पोसीडोनियस नामक तत्त्ववेत्ताने लिखा है कि इतिहासकी खोज करनेसे यह पता चलता है कि यद्यपि उसके दोनों युवक पुत्र मार डाले गये थे, फिर भी उसका एक तीसरा पुत्र, जो उस समय शैशवावस्थामें था, बच गया था और इसीसे वंशमें आगे चल कर मारकस ब्रूटसका प्रादुर्भाव हुआ।

कैटो नामका तत्त्ववेत्ता ब्रूटसकी माता सरवीलियाका भाई था। ब्रूटस अन्य रोमनिवासियोंकी अपेक्षा इसीकी प्रशंसा सबसे अधिक किया करता था और वह इसका अनुकरण करनेकी भी चेष्टा किया करता था। बादमें उसने कैटोकी लड़की पोर्शियाके साथ अपना विवाह भी कर लिया। यद्यपि वह प्रायः सभी तरहके ग्रीक तत्त्ववेत्ताओंके विचारोंसे परिचित था, फिर भी अफलातून तथा उसके अनुयायियोंके प्रति उसकी विशेष श्रद्धा थी। वह एण्टिओकसका भी बड़ा भारी भक्त था, यहाँतक कि उसका भाई ऐरिस्टस उसका मित्र और साथी बनकर उसीके साथ रहता था। यद्यपि विद्वत्ताकी दृष्टिसे ऐरिस्टस अन्य कई दार्शनिकोंकी बराबरी नहीं कर सकता था, फिर भी अपने शान्त स्वभाव एवं आचरण-की दृढ़ताके कारण वह बड़ेसे बड़े दार्शनिकसे टक्कर ले सकता था। ब्रूटस तथा उसके मित्रोंकी चिट्ठियोंसे मालूम होता है कि ऐम्पिलस नामका एक और व्यक्ति उसके साथ रहता था। यह एक प्रसिद्ध वक्ता था। इसने "ब्रूटस" नामकी एक छोटी सी इतिहासकी पुस्तक लिखी थी जिसमें सीज़रकी मृत्युका बड़ा सुन्दर वर्णन किया गया है।

लैटिन भाषाका उसे काफी अभ्यास था। वह उसमें भाषण कर सकता था और मुकदमोंकी पैरवी भी कर सकता था। किन्तु ग्रीक भाषा-में वह प्रायः ऐसे संक्षिप्त वाक्योंका प्रयोग करनेकी चेष्टा किया करता था जिनमें शब्द तो कम हों, पर अर्थकी प्रचुरता हो। उसकी कई चिट्ठियाँ इसी शैलीमें लिखी गयी हैं।

जब वह नवयुवक मात्र था, तब एक बार उसे कैटोके साथ साईप्रस

द्वीपको जाना पड़ा। कैटो वहाँ टालेमीके विरुद्ध भेजा गया था। जब टालेमीने आत्महत्या कर ली, तब कैटोने, न्याय किसी कार्यवश रोड्स द्वीपमें रुक जानेके कारण, कैनीडियस नामके अपने एक मित्रको राजकोषपर अधिकार कर लेने और उसे सुरक्षित रखनेके लिए वहाँ भेज दिया। किन्तु शीघ्र ही उसके सम्बन्धमें कुछ शङ्का होनेके कारण कैटोने ब्रूटसको साईप्रसके लिए तुरन्त प्रस्थान करनेको एक पत्र लिखा। ब्रूटस, जो हालमें ही लम्बी बीमारी खाकर उठा था, इस समय हवा बदलनेके लिए पैम्फीलियामें ठहरा हुआ था। उसने कैटोकी आज्ञाका पालन तो किया, किन्तु उसकी इच्छा ऐसा करनेकी नहीं थी। इसके दो कारण थे। एक तो ऐसा करनेसे कैनाडियसका अपमान होता था, दूसरे वह इस कार्यको क्षुद्र और अपने लिए अनुचित समझता था, क्योंकि वह अभी नवयुवक ही था और अपना अधिकतर समय पुस्तकाध्ययन इत्यादिमें ही बिताता था। फिर भी उसने यह कार्य इतनी अच्छी तरहसे किया कि कैटोने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की।

जब पॉम्पी तथा सीजरने एक दूसरेके विरुद्ध तलवार ग्रहण की और सारे साम्राज्यमें उथल पुथल मच गयी, तब साधारणतया लोगोंका यह विश्वास था कि ब्रूटस सीजरका पक्ष ग्रहण करेगा क्योंकि पॉम्पीने बहुत दिन हुए, उसके पिताकी हत्या करवायी थी। किन्तु उसने ख्याल किया कि अपने निजी भावोंके सामने सार्वजनिक हितको अधिक महत्त्व देना मेरा कर्त्तव्य है, अत पॉम्पीके पक्षको अधिक न्यायपूर्ण समझ कर उसने उसीका समर्थन किया। पहले कभी किसी स्थानपर यदि पॉम्पीसे उसकी भेंट हो जाती तो वह उसका अभिवादन तक न करता था और न उसकी ओर दृष्टिपात ही करता था, क्योंकि अपने पिताके हत्यारेके साथ नाम मात्रका भी सम्पर्क रखना वह अपने लिए कलङ्ककी बात समझता था। किन्तु अब पॉम्पीको अपने देशका सेनापति मानकर वह उसका आज्ञानुवर्ती बन गया। उसे सिलीशिया प्रान्तके शासक सेसटियसका सहायक

बनकर शीघ्र ही वहाँके लिए प्रस्थान करना पड़ा। जब उसने देखा कि यहाँ मुझे देशकी विशेष सेवा करनेका कोई अवसर मिलनेकी संभावना नहीं है और जब उसे यह खबर मिली कि पॉम्पी तथा सीज़र एक दूसरेके बिलकुल पास पहुँच गये हैं और वे लोग शीघ्र ही उस युद्धमें संलग्न होनेवाले हैं जिसपर सारे देशका भविष्य निर्भर है, तब वह स्वयं ही इस कठिन युद्धमें भाग लेनेकी इच्छासे मकदूनिया चला आया। उसे आया देखकर पॉम्पीको इतना आश्चर्य और इतनी प्रसन्नता हुई कि सब लोगोंके सामने उसने कुर्सीपरसे उठकर उसका अभिवादन किया और यह कहते हुए कि ये हमारे पक्षके एक प्रधान पुरुष हैं, उसे अपने गले लगा लिया। जबतक वह शिविरमें रहा, तबतक उस थोड़ेसे समयको छोड़कर जो उसने पॉम्पीकी संगतिमें बिताया, शेष समय वह बराबर पुस्तकें पढ़ने तथा विविध विषयोंके अध्ययनमें लगाता रहा, यहाँ तक कि युद्धके ठीक एक दिन पहलेतक इसमें कोई व्याघात नहीं हुआ। ऐन ग्रीष्म ऋतुके दिन होनेके कारण गरमी बड़ी सख्त थी। पड़ाव एक जलमय भूमिके पास डाला गया था। जो लोग ब्रूटसका तम्बू ला रहे थे वे अभी बहुत दूर थे। इन सब कठिनाइयोंके कारण ब्रूटस बड़ी परेशानीमें था। मध्य दिवस हो जाने पर भी अभीतक न तो उसने उबटन ही लगाया था और न भली भाँति भोजन ही किया था। इतना होते हुए भी जब कि अन्य लोग या तो सो गये थे या यह सोचनेमें लगे हुए थे कि युद्धका परिणाम न जाने क्या हो, तब ब्रूटस पोलीबियसका एक संक्षिप्त संग्रह तैयार करनेमें लगा हुआ था। शामतक वह बराबर इस कार्यमें जुटा रहा।

कहते हैं, सीज़र भी उसे बड़े आदरकी दृष्टिसे देखता था। उसने अपने सेनानायकोंको आज्ञा दे रखी थी कि जहाँतक सम्भव हो, ब्रूटसके प्राणोंकी रक्षा की जाय और यदि वह स्वेच्छासे आत्मसमर्पण कर दे तो सकुशल मेरे पास पहुँचा दिया जाय, किन्तु यदि वह विरोध करे तो उसे चोट पहुँचानेके बजाय भागनेका मौका दिया जाय। लोगोंका विश्वास है

कि सीजरको ब्रूटसके प्राणोंकी रक्षाका जो इतना ख्याल था, उसका कारण ब्रूटसकी माता सरवीलियाके प्रति उसका स्नेहभाव था। ऐसा मालूम होता है कि युवावस्थामें सीजरका उसके साथ घनिष्ट सम्बन्ध था और वह भी सीजरपर विशेष रूपसे अनुरक्त थी। ब्रूटसका जन्म उस समय हुआ था जब इन दोनोंका आपसका प्रेम बहुत ज़ोरोंपर था, अतः सीजरका ख्याल था कि ब्रूटस मेरा ही पुत्र है। कहते हैं कि एक बार जब सिनेट सभामें कैटिलाइनके उस षड्यन्त्रके सम्बन्धमें बहस हो रही थी, जिससे प्रजातंत्रके विनाशकी सम्भावना थी, तब कैटो तथा सीजर दोनों ही खड़े होकर इस सम्बन्धमें किये जानेवाले अन्तिम निर्णयको लेकर परस्पर झगड़ रहे थे। इसी समय बाहरसे कागजका एक छोटासा पुर्जा लाकर किसीने सीजरके हाथमें दिया। सीजरने उसे मनमें ही पढ़कर अपने पास रख लिया। यह देखकर कैटो चिल्ला चिल्ला कर कहने लगा कि देखो, सीजर प्रजातन्त्रके शत्रुओंसे पत्रव्यवहार किया करता है। जब सिनेटके अन्य सदस्योंने भी सीजरके इस पत्रव्यवहारका विरोध करना शुरू किया, तब सीजरने वह पुरजा ज्योंका त्यों कैटोके हाथमें दे दिया। उसने जब उसे पढ़ा तब उसे मालूम हुआ कि यह तो मेरी ही बहिन सरवीलियाका लिखा हुआ प्रेमपत्र है। उसने यह कहकर उसे सीजरके पास ही फेंक दिया कि "ऐ मतवाले सीजर, इसे तुम अपने पास ही रखो।" यह कहकर वह पुनः वादविवादमें लग गया।

फारसेलियाकी प्रसिद्ध लड़ाईमें परास्त होकर जब पाम्पी समुद्रतटकी ओर भाग गया और सीजरकी सेना शिविरपर आक्रमण करने लगी, तब ब्रूटस चुपचाप जलमय भूमिकी तरफसे बाहर निकल गया और रातोरात चलकर लारीसा जा पहुँचा। लारीसासे उसने सीजरको एक पत्र लिखा। उसे सकुशल जानकर सीजरको बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने ब्रूटसको अपने पास बुला लिया और उसे क्षमा कर दिया। इतना ही नहीं, ब्रूटसकी गणना वह अपने प्रधान मित्रोंमें करने लगा। ब्रूटसकी बातचीतमें सीज-

रने ख्याल किया कि पाम्पी सम्भवतः मिस्रदेशकी ओर गया है, अतः उसका पीछा करनेके लिए उसने तुरन्त मिस्रके लिए प्रस्थान कर दिया। किन्तु इसी समय वहाँ पहुँचने पर पाम्पीका प्राणान्त हो गया।

अब ब्रूटसने प्रयत्न कर सीज़र द्वारा अपने मित्र कैसियसको क्षमा करा दिया। उसने लीबियनोंके राजाके पक्षमें भी बड़ी कोशिश की और विशेष अनुनय-विनय कर उसके राज्यका अधिकांश उसीके अधिकारमें रहने देनेके लिए भी सीज़रको राजी कर लिया। ब्रूटस बड़े दृढ़ निश्चय-वाला आदमी था। जो जो आदमी उसके पास जाकर दयाकी प्रार्थना करते थे, उनसे वह सहज ही प्रभावित नहीं होता था। किन्तु जब उचित-अनुचितका ख्याल कर और बुद्धिकी कसौटीपर कस कर किसी बातके सम्बन्धमें वह एक बार अपना निश्चय कर लेता था, तब वह उससे नहीं टलता था और जबतक सफलता नहीं मिल जाती थी, तबतक बराबर उसीपर डटा रहता था। चाटुकारोंकी मिथ्या प्रशंसाका उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था, अतः चाटूक्तियोंके जरिये अन्यायपूर्ण प्रार्थनाओं-की ओर उसका ध्यान आकर्षित नहीं किया जा सकता था। उसका ख्याल था कि चापलूसोंकी चिकनी चुपड़ी बातों एवं अनुचित प्रार्थनाओं द्वारा अभिभूत हो जाना महापुरुषके लिए लज्जाकी बात है, चाहे कुछ लोग उसे नम्रता एवं सङ्कोचशीलता ही क्यों न कहें। वह कहा करता था कि जो लोग किसीकी कोई भी प्रार्थना अस्वीकार नहीं कर सकते, वे अपने यौवनकालमें शायद ही संयमी एवं सदाचारी रहे हों।

जब सीज़र कैटो तथा सिपियोके विरुद्ध युद्ध-यात्रा करनेके विचारसे आफ्रिका जानेकी तैयारी करने लगा, तब उसने आल्प पहाड़के इधरवाले गॉल प्रान्तका शासन ब्रूटसके सिपुर्द कर दिया। यह व्यवस्था उस प्रान्तके लिए बड़ी लाभदायक प्रमाणित हुई। अन्य प्रान्तवाले अपने शासकोंके अत्याचारोंसे अत्यन्त दुःखी थे। उनके साथ ऐसा दुर्व्यवहार होता था मानों वे गुलाम हों अथवा युद्धके कैदी हों। ब्रूटसने अपने सुशासनसे

गाल्यासियोंके वे सब कष्ट दूर कर दिये जो उन्हें पूर्वगामी शासकोंके समयमें उठाने पड़ते थे। अपने सत्कार्योंका श्रेय स्वयं न लेकर ब्रूटसने लोगोंको समझा दिया कि वे सीजरके प्रति ही कृतज्ञता प्रकट करें। सीज़र जब इटली होकर उधरसे निकला, तब उसे यह देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि केवल ब्रूटस ही नहीं, वरन् नगरोंके अन्य लोग भी बड़ी तत्परताके साथ उसका स्वागत करते थे।

इस समय उपन्यायाधीशोंके कई स्थान रिक्त होनेके कारण लोगोंने ख्याल किया कि उनमेंसे सबसे मुख्य अर्थात् नगरके उपन्यायाधीशका पद संभवत ब्रूटस या कैसियसको दिया जायगा। कहते हैं कि यद्यपि ब्रूटस और कैसियस निकट सम्बन्धी थे, फिर भी इस प्रतिद्वन्द्विताके कारण उनमें आपसमें कुछ वैमनस्य सा हो गया था। कुछ लोगोंका ख्याल है कि सीजरने जान बूझ कर उन लोगोंमें यह प्रतिद्वन्द्विता उत्पन्न कर दी थी। उनमेंसे प्रत्येकको बुलाकर उसने निजी तौरसे यह आश्वासन दे दिया था कि मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। इसलिए दोनोंको ही अपनी अपनी सफलताकी पूरी आशा थी और वे इसके लिए बराबर प्रयत्न कर रहे थे। कैसियस तो पार्थियन लोगोंके विरुद्ध वीरतापूर्वक लड़कर पर्याप्त सुयश प्राप्त कर चुका था, किन्तु ब्रूटसको केवल अपने सम्मानित जीवन तथा सौजन्यसे प्राप्त प्रसिद्धिका ही भरोसा था। सीजरने दोनों ओरकी बातें सुन कर मित्रोंसे परामर्श किया और कहा "कैसियसका पक्ष अधिक सबल है, किन्तु हम प्रथम उपन्यायाधीशका पद ब्रूटसको ही देना ठीक समझते हैं।" यद्यपि कैसियसको भी उपन्यायाधीशका अन्य पद दे दिया गया किन्तु उसे पाकर वह उतना सन्तुष्ट नहीं हुआ जितना प्रथम पद न मिलनेके कारण असन्तुष्ट हो गया। इधर सीजर और भी बहुत सी बातोंमें ब्रूटसका कहना मानता था। ब्रूटस यदि चाहता तो सीजरके सब मित्रोंसे बढ़ कर स्थान प्राप्त कर सकता था, उनकी अपेक्षा उसे अधिक अधिकार तो प्राप्त थे ही, किन्तु कैसियसके मित्रोंने धीरे धीरे भड़का कर

उसे सीजरके विरुद्ध कर दिया । यद्यपि प्रतिद्वन्द्विताके कारण उसके मनमें कैसियसके विरुद्ध जो मैल बैठ गया था, वह अभी दूर नहीं हुआ था, फिर भी वह कैसियसके मित्रोंकी बातें बड़े ध्यानसे सुनने लगा था, वे लोग बारम्बार उससे कहा करते थे कि सीजरकी चिकनी चुपड़ी बातोंमें आकर आप आत्मसमर्पण मत कर दीजिए। उसकी कृपाओंसे आप अपनेको बचाते रहिये क्योंकि वह आपकी योग्यता एवं सच्चरित्रके प्रति सम्मान प्रकट करनेके उद्देश्यसे आप पर कृपा नहीं करता, वरन् आपकी शक्ति घटानेके उद्देश्यसे ही ऐसा करता है।

सीजरके मनमें ब्रूटसके प्रति कोई सन्देह उत्पन्न न हुआ हो, ऐसी बात नहीं थी। उसके पास आकर ब्रूटसकी शिकायत करनेवालोंकी भी कमी नहीं थी, किन्तु वह ब्रूटसके महान् चरित्र एवं उसके मित्रोंके कारण डरता था। फिर भी सीजरको उसकी सचाईपर विश्वास था। जब कुछ लोगोंने आकर उसके सामने ब्रूटसकी निन्दा की और कहा कि आप इससे सावधान रहिये, तब अपने शरीरकी ओर सकेत कर सीजरने कहा "क्या आप समझते हैं कि ब्रूटस कुछ दिनतक और सब्र न करेगा, क्योंकि मेरे इस शरीरका विनाश काल तो निकट ही है?" मानो वह अपनी मृत्युके बाद ब्रूटसको ही सबसे अधिक योग्य समझता था जो उसका पद ग्रहण कर सकता था। सचमुच इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि ब्रूटस कुछ समय तक और धैर्य धारण किये रहता तो सीजरकी शक्तिके पराकाष्ठा पर पहुँचनेके बाद शीघ्र ही क्षीण हो जाने पर एवं लोगोंको उसके महत्कार्योंका विस्मरण होते ही वह प्रजातन्त्रका सर्वोच्च व्यक्ति बन सकता था। किन्तु बात यह थी कि कैसियस उसे हमेशा सीजरके विरुद्ध उभाड़ा करता था, क्योंकि वह सीजरसे घृणा करता था। ब्रूटस सीजरके निरंकुश शासनसे चिढ़ता था, किन्तु कैसियसको उसके व्यक्तित्वसे ही घृणा थी। कहते हैं, कैसियस जो सीजरसे चिढ़ता था, उसके कई कारण थे। उनमेंसे एक कारण यह भी था कि सीजरने उसके सिंहोंको पकड़वा कर स्वयं अपने यहाँ

रख लिया था। जब कैरेनसने मेगारा नामक नगर पर अधिकार कर लिया तब वहाँवालोंने यह ख्याल कर इन सिंहोंको पिंजड़ोंमेंसे खोल दिया कि वे शत्रुके आदमियों पर टूट पड़ें और उन्हें नगरके भीतर प्रवेश न करने दें, किन्तु बात उलटी हुई। शत्रुपर आक्रमण करनेके बजाय वे उन्हींपर टूट पड़े और उन्होंने अनेक निःशस्त्र स्त्री पुरुषोंके टुकड़े टुकड़े कर डाले। यह दृश्य देख कर उनके दुश्मनों तकको तरस आता था।

जो लोग यह समझते हैं कि प्रधानतया इसी घटनाके कारण कैसियस सीजरसे द्वेष करने लगा था, वे गलती करते हैं। वह बहुत छोटी उम्रसे ही निरंकुश शासक मात्रसे घृणा करता था। सिलाका पुत्र फास्टस उसी स्कूलमें पढ़ता था जिसमें कैसियस पढ़ता था। एक बार फॉस्टसको बहुतसे लड़कोंके बीचमें अपने पिताके निरंकुश शासनकी प्रशंसाके पुल बाँधते देख कर कैसियससे न रहा गया। उसने उठ कर उसके कानपर दो तीन घूँसे जमा दिये। जब फास्टसके सम्बन्धियोंने इस मामलेकी जाँच करवानी चाही और कैसियसको दण्ड दिलवाना चाहा, तब पाम्पीने उन्हें ऐसा करनेसे रोका। उसने दोनों लड़कोंको अपने सामने बुलाकर स्वयं पूछताछ की। कैसियसने उसके सामने ही पुनः फास्टससे कहा "हाँ, फास्टस, जरा फिरसे तो कहना वे शब्द जिन्हें सुनकर मुझे क्रोध हो आया था, ताकि मैं फिर भी उसी तरह दो चार घूँसे तुम्हारे कानपर जड़ सकूँ।" इसीसे कैसियसके स्वभावकी विशेषताका आभास मिल जाता है।

अनेक अज्ञातनामा नागरिकोंकी चिट्ठियाँ पढ़ पढ़ कर एवं अपने कतिपय निकटस्थ मित्रोंकी प्रार्थनाओंसे प्रेरित होकर ही ब्रूटसने सीजरके विरुद्ध यह साजिश खड़ी की और उसमें दिलचस्पी दिखायी। राजतंत्र शासनका अन्त कर देनेवाले उसके पूर्वज प्राचीन ब्रूटसकी मूर्तिके नीचे लोग प्रायः ये शब्द लिख दिया करते थे "यदि आज भी ऐसा एक ब्रूटस हम लोगोंके बीचमें होता।" अथवा "यदि आज वह ब्रूटस

ीवित होता!" स्वयं ब्रूटसकी अदालतके कमरेमें प्रायः प्रतिदिन
र्चे इस तरहके शब्द लिखे हुए दृष्टिगोचर होते थे—"ब्रूटस, तुम बेख-
र पड़े सो रहे हो।" "या तुम सच्चे ब्रूटस नहीं हो।" किन्तु षड्यंत्रका
ात्कालिक कारण तो सीज़रके वे चापलूस मित्र थे जो व्यर्थ ही तरह
रहके अनेक सम्मान सीज़रके गले मढ़ना चाहते थे और जो रातके
समय उसकी प्रस्तर मूर्तियोंको राजमुकुट पहना दिया करते थे जिसमें
लोग उसे सर्वप्रधान नेता कह कर नहीं, प्रत्युत राजा कहकर अभिवादन
किया करें।

जब कैसियसने लोगोंके पास जा जाकर सीज़रके विरुद्ध रचे जाने-
वाले इस षड्यंत्रमें सम्मिलित होनेकी प्रार्थना की, तब उन्होंने तुरन्त
अपनी स्वीकृति दे दी, किन्तु शर्त यह थी कि षड्यंत्रका प्रधान सञ्चा-
लक ब्रूटस बने। लोगोंका ख्याल था कि षड्यंत्रमें भाग लेनेके लिए आद-
मियोंकी कमी नहीं है, किन्तु इसका सञ्चालन-सूत्र ब्रूटसके सदृश सुप्र-
सिद्ध एवं प्रामाणिक आदमीके हाथमें होना चाहिये ताकि इसे एक
धार्मिक आदेशका स्वरूप प्राप्त हो जाय। वे समझते थे कि यदि ब्रूटसने
इस षड्यंत्रका सञ्चालन-भार स्वीकार नहीं किया तो हम लोगोंको अपने
काममें उतना उत्साह नहीं हो सकता और काम समाप्त हो जाने पर
हम लोग विशेष रूपसे सन्देहभाजन बन जायँगे, क्योंकि लोग समझेंगे
कि यदि हमारा कार्य न्यायानुमोदित एवं सम्मानपूर्ण होता तो ब्रूटस
अवश्य हमारा साथ देता। इन सब बातोंपर मनमें विचार कर कैसियस
ब्रूटससे मिलने गया। आपसमें मनमोटाव होनेके बाद यह पहला ही
अवसर था कि वह ब्रूटसके पास गया। मामूली क्षमायाचना और मेल-
मुहब्बतकी बातचीत हो चुकनेके बाद उसने ब्रूटससे पूछा "क्या आप
मार्चके उत्सवके समय उपस्थित रहेंगे? सुनते हैं, सीज़रके मित्र उस
समय यह प्रस्ताव उपस्थित करनेवाले हैं कि सीज़र राजा बना दिया
जाय।" ब्रूटसने जवाब दिया "मैं तो उपस्थित नहीं रहूँगा।" इसपर

कैसियसने पूछा कि "यदि उन लोगोंने हम लोगोंको आमन्त्रित किया, तब क्या कीजिएगा ?" ब्रूटसने कहा "तब मैं चुपचाप नहीं बैठूँगा। मैं निर्भय होकर विरोध करूँगा और अपने देशकी आजादीके लिए प्राण तक समर्पित कर दूँगा।" तब कैसियसने कुछ अभिमानके साथ कहा "किन्तु ऐसा कौन हतभाग्य रोमन होगा जो प्राण रहते आपको मरने देगा ? ब्रूटस, क्या आप इतनी बात भी नहीं समझते ? अपने न्यायासन-पर जो कुछ लिखा हुआ आप नित्य देखा करते थे, क्या वह मामूली जुलाहों या छोटे छोटे दूकानदारोंका लिखा हुआ होता था ? उन्हें आप रोमके अत्यन्त प्रभावशाली एवं मुख्य नागरिकोंके ही शब्द समझिए। लोग अन्य सार्वजनिक न्यायकर्ताओंसे भले ही खेल तमाशों तथा भोजों इत्यादिकी आशा करते हों, किन्तु आपसे तो उनका यह दावा है कि आप अपने पूर्वजकी ही तरह इस निरंकुश शासनका अन्त करेंगे। यदि आप इस कार्यमें अग्रसर हों तो वे आपके लिये सब कुछ सहनेको तैयार हैं।" इतना कहकर वह ब्रूटससे लिपट गया। अब दोनों परस्पर आलिंगन कर अपने अपने मित्रोंसे परामर्श करनेके लिए विदा हुए।

पाम्पीके एक मित्रका नाम केयस लिगेरिअस था जिसे सीजरने क्षमा कर दिया था, यद्यपि उसने सीजरके विरुद्ध शस्त्र ग्रहण किया था। यह आदमी क्षमा किये जानेसे खुश नहीं हुआ। उसे सीजरकी वह महती शक्ति देख कर ईर्ष्या हुई जिसके कारण उसे क्षमा माँगनेके लिए लाचार होना पड़ा था। वह सीजरसे घृणा करने लगा। ब्रूटससे उसकी मित्रता थी, अतः ब्रूटस उससे मिलनेके लिए गया। उसे रोगशय्यापर पड़ा हुआ देख कर ब्रूटसने कहा "लिगेरिअस भाई, तुमने भी बीमार होनेके लिए यही समय चुना!" यह सुनकर वह टिहुनीके बल उठ कर बैठ गया और उसका हाथ पकड़ कर कहने लगा "मित्र ब्रूटस, यदि तुमने सचमुच किसी महत्त्वपूर्ण कार्यका भार अपने ऊपर लिया है, तो मैं अच्छा हूँ।"

इसके बाद वे लोग जिन जिन मित्रोंका विश्वास कर सकते थे,

उन सबके विचारोंकी टोह लेने लगे। उन्होंने अपना गुप्त मन्तव्य उन्हें बता दिया और उनके ऐसे मित्रोंको भी इस षड्यंत्रमें शामिल कर लिया जो निर्भीक, बहादुर तथा मृत्युकी परवाह न करनेवाले थे। उन्होंने सिसरोपर इसका रहस्य प्रकट नहीं किया, यद्यपि वे उसका पूर्ण विश्वास करते थे और उसे बहुत चाहते भी थे। सिसरो कुछ कुछ हिचकिचानेवाले स्वभावका था। अब वह वृद्ध भी हो गया था और उसकी कर्मेन्द्रियाँ शिथिल पड़ गयी थीं। लोगोंने ख्याल किया कि यदि सिसरोसे सलाह ली गयी और उसने उसके प्रत्येक पहलूपर विचार करना शुरू किया, जैसा कि उसका स्वभाव है, तो संभव है इससे हमारे उत्साह एवं दृढ़ निश्चयको धक्का पहुँचे। इस कार्यको तो जल्दसे जल्द खतम करनेकी आवश्यकता है, ज़्यादा सोच-विचार करनेसे मामला बिगड़ जायगा। उसी प्रकार स्टेटिलियस तथा फेवोनियस नामके अपने दो मित्रोंसे बातचीत करते समय जब ब्रूटसको मालूम हुआ कि वे लोग सम्भवतः षड्यंत्रका विचार पसन्द नहीं करेंगे, तब उसने उन लोगोंसे भी इसकी कोई चर्चा नहीं की। अब दूसरा काम उस दूसरे ब्रूटसको मिलाना था, जिसका पूरा नाम ऐल्बाइनस ब्रूटस था। वह स्वयं तो बहुत साहसी अथवा वीर नहीं था, किन्तु उसके अधीन बहुतसे सुदक्ष मल्लयोद्धा थे जो सार्वजनिक तमाशोंके समय अपना कर्तब दिखाया करते थे। इसके सिवा सीज़रका उसपर बहुत विश्वास था। जब कैसियस तथा लैबियोने इस सम्बन्धमें उससे बातचीत शुरू की, तब उसने कोई उत्तर नहीं दिया, किन्तु बादमें वह स्वयं अकेलेमें ब्रूटससे मिला। जब उसे मालूम हुआ कि ब्रूटस ही इस कुचक्रका मुखिया है, तब उसने तुरन्त उसका साथ देना स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार ब्रूटसके नामके कारण और भी अच्छे अच्छे कई आदमी खुशी खुशी इस योजनामें सम्मिलित होगये। यद्यपि इन लोगोंने सारी बातें गुप्त रखने या एक दूसरेके सम्बन्धकी कोई बात प्रकट न करनेकी परस्पर प्रतिज्ञा नहीं की और न

कोई सौगन्ध खायी, फिर भी प्रत्येक व्यक्तिने इस मामलेकी सारी बातें इतनी गुप्त रखीं कि यद्यपि भविष्यवाणियों और बलिदान आकृतियों द्वारा देवताओंने कई बार इसकी पूर्व सूचना दी, फिर भी किसीका ध्यान इस ओर नहीं जा सका और न किसीको इस षड्यंत्रका पता ही लगा।

अब ब्रूटसने देखा कि रोमके अनेक बड़े बड़े आदमी जो अपने वीरत्व, उच्च वंश एवं साहसके लिए प्रसिद्ध हैं, इस समय मुझपर अवलम्बित हो रहे हैं और मेरे साथ मिल कर उन कठिनाइयोंकी जाँच-पड़ताल कर रहे हैं जिनका सामना हमें संभवतः करना पड़ेगा। अतः जहाँतक उससे बन पड़ता था, वह घरके बाहर बराबर अपने चित्तकी विकलताको छिपाने और अपने विचारोंमें सामंजस्य बनाये रखनेकी चेष्टा करता था। किन्तु घर पर विशेष कर रातके समय वह अपनी उद्विग्नता किसी प्रकार नहीं छिपा सकता था। अत्यन्त चिन्ताग्रस्त होनेके कारण कभी कभी वह सोते सोते चौंक पड़ता था और कभी कभी अपनी कठिनाइयोंके सम्बन्धमें भी भुनभुना उठता था। यह देखकर उसकी पत्नीको इस बातके समझनेमें देर नहीं लगी कि स्वामीको कोई असाधारण मानसिक कष्ट है और उनके सामने आजकल कोई विकट समस्या उपस्थित है। पोर्शिया केटोकी पुत्री थी और ब्रूटसके साथ जब उसका द्वितीय विवाह हुआ, तब उसकी उम्र बहुत छोटी थी। प्रथम पतिसे उसके बिब्यूलस नामका एक पुत्र था। उसे दर्शन-शास्त्रसे विशेष प्रेम था। वह अपने पतिको भी बहुत चाहती थी और साहस भी उसमें खूब था किन्तु उसने अपने मनमें संकल्प कर लिया कि जबतक मैं अपनी कष्ट-सहिष्णुताकी सम्यक् परीक्षा नहीं कर लेती, तब तक मैं अपने पति द्वारा गुप्त रखी गयी बातोंके सम्बन्धमें कोई पूछताछ नहीं करूँगी। उसने अपनी समस्त परिचारिकाओंको कमरेके बाहर कर दिया और एक छोटी सी छुरी निकाल कर उससे जाँघमें लम्बा सा घाव कर लिया। खूनकी धारा बहने लगी और शीघ्र ही जोरोंका दर्द शुरू हो गया, यहाँ तक कि कँपकँपीके साथ ज्वर भी हो आया। यह देखकर

ब्रूटसको बड़ी चिन्ता हुई और वह बहुत दुःखी हुआ। तब सारा कष्ट दृढ़तापूर्वक बरदाश्त करते हुए पोर्शियाने कहा "हे मेरे स्वामी ब्रूटस, पिता कैटोने आपके साथ मेरा विवाह इसलिए किया था कि मैं एक मामूली उपपत्नीकी तरह आपके साथ शयन करने या पासमें बैठ कर वार्तालाप इत्यादि करनेमें ही अपने कर्त्तव्यकी इतिश्री न समझूं, प्रत्युत आपके समस्त सुखों और दुःखोंमें सर्वदा साथ देती हुई आपकी सच्ची सहधर्मिणी बन सकूं। आप हमेशा मेरे सुखदुःखका ख्याल रखते हैं और मुझे इस सम्बन्धमें कोई शिकायत नहीं है। किन्तु मैं आपसे प्रेम करती हूँ, इसका क्या प्रमाण आपको दे सकती हूँ और कैसे आपको सन्तुष्ट कर सकती हूँ, जबतक मैं आपके भीतरी कष्टोंको सहनेमें भी आपका साथ नहीं दे सकती और जबतक आप मुझे उन विषयोंके सम्बन्धमें भी सलाह देने योग्य नहीं समझते जो विशेष गोपनीय हों। मैं यह भली भाँति जानती हूँ कि अनेक स्त्रियाँ इतने दुर्बल स्वभावकी होती हैं कि गोप्य बातोंके सम्बन्धमें उनपर विश्वास नहीं किया जा सकता। किन्तु मैं समझती हूँ कि उच्च वंश तथा शिक्षाके प्रभावसे एवं सम्मानित महापुरुषों की सुसंगतिसे हम लोगोंके स्वभावकी यह त्रुटि सहज ही दूर की जा सकती है। मुझे इस बातका अभिमान है कि मैं कैटोकी पुत्री एवं ब्रूटस-की पत्नी हूँ। इन दोनों उच्च सम्बन्धोंका निर्वाह करने योग्य मैं हूँ या नहीं, इस विषयमें पहले मुझे विश्वास नहीं था, किन्तु अब मैंने अपनी परीक्षा कर ली है और मुझे अपने ऊपर विश्वास है कि मैं कष्टोंका सामना भली भाँति कर सकती हूँ।" ऐसा कह कर उसने उसे अपना घाव दिखा दिया और किस तरह उसने अपनी कष्ट-सहिष्णुताकी परीक्षा ली थी, यह भी उसे समझा दिया। उसके इस व्यवहारसे ब्रूटसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने आकाशकी ओर हाथ उठाकर देवताओंसे प्रार्थना की कि आप लोग इस काममें मेरी सहायता कीजिए ताकि मैं अपनेको पोर्शियाके सदृश पत्नीके योग्य पति प्रमाणित कर सकूँ।

शीघ्र ही व्यवस्थापक सभाकी बैठकके लिए एक दिन नियत किया गया। इस बैठकमें सीज़र भी सम्मिलित होनेवाला था। इन लोगोंने इस अवसरसे लाभ उठाकर इसी समय अपना काम पूरा करनेका निश्चय किया, क्योंकि इस मौकेपर सब लोग यहाँ एकत्र हो सकते थे और किसीको इनपर सन्देह भी न होता। इसके सिवा इन्होंने यह भी सोचा कि इस समय वहाँपर रोमके प्रायः सभी प्रतिष्ठित एवं प्रमुख नागरिक उपस्थित रहेंगे ही, अतः ज्योंही हमलोग अपना काम खतम कर अलग होंगे, त्योंही वे लोग सामने आकर सार्वजनिक स्वतंत्रताकी घोषणा कर सकेंगे। जिस स्थानपर व्यवस्थापक सभाकी बैठक होना तै हुआ था, वह भी दैवयोगसे उनकी मंत्रणाके अनुकूल था। वह स्थान सार्वजनिक खेलघरसे लगा हुआ एक चौड़ा सा बरामदा था जहाँ एक ओर पॉम्पीकी प्रस्तरमूर्त्ति स्थापित थी। यह मूर्त्ति उस समय प्रजातंत्रकी ओरसे बनवायी गयी थी, जब पॉम्पीने नगरके उस भागको उक्त सार्वजनिक खेलघर तथा बरामदों इत्यादिसे अलंकृत करवाया था। मार्चके मध्यमें इसी स्थानपर व्यवस्थापक सभाकी बैठक होनेवाली थी, मानो कोई दैवीशक्ति जानबूझ कर सीज़रको वहाँ घसीटे लिये जा रही थी ताकि वह वहाँ पहुँच कर पाम्पीकी मृत्युका उचित दण्ड पा सके।

ज्योंही उस दिनका प्रातःकाल हुआ, ब्रूटस बगलमें एक छुरा दबा कर, जिसके बारेमें उसकी पत्नीके सिवाय और किसीको कुछ भी विदित नहीं था, घरसे बाहर निकल पड़ा। बाकी सब लोग कैसियसके मकानपर इकट्ठे हुए। तब वहाँसे चलकर सब लोग पाम्पीके नामसे प्रसिद्ध बरामदेमें जा पहुँचे और वहाँ सीज़रके आनेकी प्रतीक्षा करने लगे। इतने भारी षड्यंत्रकी तैयारी कर भी ये लोग इतनी शान्तिसे और ऐसा निश्चिन्त भाव धारण कर अपना काम कर रहे थे कि देखकर आश्चर्य होता था। उन लोगोंमेंसे कई व्यक्ति सार्वजनिक न्यायकर्त्ता थे। वे लोग पूर्ण शान्तिके साथ वादी तथा प्रतिवादी दोनों पक्षके विचार ,सुनते जाते थे और उनकी

दलीलोंमें ऐसी दिलचस्पी ले रहे थे मानो उनके दिमागमें उस समय और कोई बात थी ही नहीं। वे लोग मुकदमोंका फैसला करनेमें भी कोई त्रुटि नहीं होने देते थे और ठीक उसी प्रकार फैसला करते थे मानो उन्होंने पूरे ध्यानके साथ धैर्यपूर्वक सब बातें सुनी हों। जब एक व्यक्तिने ब्रूटस द्वारा किये गये निर्णयको माननेसे इनकार कर दिया और जब उसने विशेष अनुनय विनयके साथ सीजरसे हस्तक्षेप करनेकी प्रार्थना की, तब ब्रूटसने अपने चारों ओर उपस्थित लोगोंकी ओर देखकर कहा "कानूनके अनुसार कारवाई करनेसे सीज़र मुझे नहीं रोकता और न कभी रोकेगा।"

इतना होते हुए भी संयोगवश उस समय ऐसी कई घटनाएँ हुईं जिनसे इन लोगोंके मनमें बड़ी घबराहट उत्पन्न हो गयी। सबसे मुख्य बात तो यह थी कि दिन क़रीब क़रीब समाप्त हो गया, किन्तु सीज़र नहीं आया। उसके आनेमें इतना विलम्ब होते देखकर इन लोगोंको चिन्ता होने लगी कि कहीं उसे साजिशकी खबर तो नहीं लग गयी, यद्यपि वास्तवमें बात ऐसी नहीं थी। सीजरने देवताओंको जो बलि चढ़ायी उसमें कुछ त्रुटि देखकर ज्योतिषियोंने उसे उस दिन बाहर निकलनेसे मना कर दिया था और उसकी पत्नीने भी आग्रह करके बहुत देरतक उसे घरपर रोक रखा। उन लोगोंको परेशानीमें डालनेवाली एक और घटना यह थी। कैस्का नामक षड्यंत्रकारीके पास एक आदमी आया और उसका हाथ पकड़ कर कहने लगा "यद्यपि तुमने यह गुप्त बात मुझसे छिपा रखी थी, पर ब्रूटसने मुझसे सब हाल कह दिया है।" यह सुन कर कैस्का आश्चर्य-चकित होकर उसके मुँहकी ओर देखने लगा। तब आगन्तुकने हँसते हुए कहा "सचमुच यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि तुम सहसा इतने धनवान् हो गये कि ईडिलके पदके लिए भी चुने जा सके।" उसने पहले जो द्व्यर्थक शब्द कहे थे उन्हें सुनकर कैस्का भ्रममें पड़ गया और वह कुचक्र-की कथा स्वीकार करने जा ही रहा था कि इतनेमें उसका दूसरा वाक्य सुनकर सावधान हो गया। थोड़ी देरके बाद पोपीलियस नामक

एक सिनेटरने भारर विशेष उत्सुकतापूर्वक ब्रूटस तथा कैसियसका अभिवादन किया और उनके कानके पास अपना मुहँ ले जाकर धीरेसे ये शब्द कहे "आप जो कुछ करनेवाले हैं उसमें मेरा हृदय आपके साथ है और मैं आपको सलाह देता हूँ कि आप लोग देरी न करें क्योंकि यह बात अब गुप्त नहीं रह गयी है।" यह कह कर वह चला गया। यह जानकर कि मन्त्रणाका भेद बहुत लोगोंको मालूम हो गया है वे लोग बड़ी चिन्तामें पड़ गये। इसी समय ब्रूटसके मकानसे एक आदमी दौड़ा हुआ आया और कहने लगा कि ब्रूटसकी पत्नी मरणासन्न हो रही है। ऐसी भीषण घटना शीघ्र ही घटित होनेवाली है, इस आशंकासे पोर्शिया उद्विग्न हो उठी और चिन्तासे अत्यन्त व्याकुल होनेके कारण वह मकानके भीतर चुपचाप बैठी नहीं रह सकी। ज़रा ज़रा सी आवाज सुनकर वह चौंक पड़ती थी और जो लोग सभा-स्थानकी ओरसे आते हुए देख पड़ते थे उनसे पुनः पुनः पूछती थी कि ब्रूटस इस समय क्या कर रहे हैं। उसने ब्रूटसकी कुशल-क्षेम जाननेके लिए कई दूत भी भेजे। अन्तमें बहुत देर तक प्रतीक्षा करते करते उसकी दुर्बल देहयष्टि इतनी भारी मानसिक उथल पुथल बर्दाश्त नहीं कर सकी। उसके मनमें तरह तरहकी शंकाएँ उठने लगीं और वह अपनेको सँभाल नहीं सकी। वह अपनी परिचारिकाओंके बीचमें बैठी बैठी ही मूर्छित हो गयी, अपने कमरेतक पहुँचनेका अवसर उसे नहीं मिला। उसके चेहरेका रंग जाता रहा और उसकी बोली बन्द हो गयी। यह दशा देखकर उसकी परिचारिकाएँ रोने चिल्लाने लगीं। उनकी आवाज सुनकर अड़ोस-पड़ोसके बहुतसे लोग इकट्ठे हो गये। इन लोगोंने चारों ओर यह खबर उड़ा दी कि पोर्शियाकी मृत्यु हो गयी, किन्तु सौभाग्यसे वह अभी जीवित थी। परिचारिकाओंके प्रयत्नसे वह शीघ्र ही होशमें आ गयी। जब ब्रूटसको पोर्शियाकी इस आकस्मिक व्याधिकी खबर मालूम हुई तब वह बड़ा परेशान हुआ, किन्तु अपने निजके दुःखसे व्याकुल होकर उसने सार्वजनिक हितके कामसे मुँह नहीं मोड़ा।

अब खबर मिली कि सीजर पालकीमें बैठकर आ रहा है। देवताओं को बलि चढ़ाते समय जो अपशकुन हुए थे, उनसे भयभीत होकर उसने बीमारीका बहाना कर उस दिन कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करनेका निश्चय किया था। ज्योंही वह पालकीसे बाहर निकला त्योंही पोपी लियस लीनस, जिसने कुछ ही देर पहले ब्रूटसके कार्यमें सफलताकी इच्छा प्रकट की थी, उसके पास गया और बहुत देरतक उससे बातचीत करता रहा। सीजर खड़े खड़े बहुत ध्यानसे उसकी बातें सुनता रहा। जो लोग षड्यन्त्रमें शामिल थे वे इन लोगोंकी बातचात तो सुन न सके, पर उन्होंने अनुमान किया कि हम लोग जो विश्वासघात करने जा रहे हैं, उसीके सम्बन्धमें सीजरसे बात हो रही है। अब वे लोग पुन बड़े उदास हो गये और उन्होंने परस्पर सकेत कर तै कर लिया कि हम लोग अपने को गिरफ्तार नहीं होने देंगे, वरन् स्वय अपने हाथसे अपना प्राणान्त कर देंगे। अब केसियस तथा और भी कुछ लोगोंने कपड़ोंके भीतर हाथ डालकर अपने अपने खजर निकालनेकी इच्छा की, किन्तु ब्रूटसने इसी समय लीनसके व्यवहारसे ताड लिया कि वह नम्रतापूर्वक विनती कर रहा है, किसीपर दोषारोपण नहीं कर रहा है। ब्रूटसने तुरन्त ही अपने चेहरेपर प्रसन्नताके लक्षण धारण कर लिये और इस प्रकार कैसियस इत्यादिको सूचित कर दिया कि निराश होनेके लिए कोई कारण नहीं है। थोड़ी देरके बाद लीनस सीजरका हाथ चूमकर चुपचाप चला गया। अब यह बिलकुल स्पष्ट हो गया कि वह अपने किसी निजी मामलेके सम्बन्धमें ही सीजरसे बातचीत कर रहा था।

जब सिनेटके सब सदस्य अपने अपने स्थानपर बैठ गये, तब जो लोग शेष रह गये वे सीजरके आसनके आसपास खड़े हो गये, मानो वे उससे कुछ निवेदन करना चाहते हों। कैसियसने पॉम्पीकी प्रस्तरमूर्तिकी ओर मुँह करके उससे सहायता करनेकी प्रार्थना की, मानो वह सजीव हो और उसमें प्रार्थना सुननेकी शक्ति हो। ट्रेबोनियसने एण्टोनीसे बातचीत शुरू

पर दी और उसे दरवाजेपर ही रोक रखा। ज्योंही सीज़रने प्रवेश किया, सारी सभा खड़ी हो गयी। जब वह आसनपर बैठ गया तब वे सब लोग उसके चारों ओर इकट्ठे हो गये। अब उनमेंसे टीलियस सिम्बर नामक एक व्यक्ति सामने आया और उसने अपने भाईको जिसे देश निकालेकी सजा हुई थी, वापस बुलानेकी अनुमतिके लिए प्रार्थना की। उसके साथ के सभी लोगोंने उसकी इस प्रार्थनाका समर्थन किया। उन्होंने सीजरका हाथ पकड़ कर उसके मस्तक एवं वक्षस्थलका चुम्बन किया। सीजरने उनकी प्रार्थना अस्वीकृत कर दी, किन्तु वे लोग नहीं माने। वे उसी प्रकार उसको घेर कर खड़े रहे। तब सीजर क्रोधपूर्वक उठकर खड़ा हो गया। टीलियसने दोनों हाथोंसे उसका चोगा पकड़ कर खींच लिया और सबसे पहले कैस्काने, जो पीछे खड़ा था, अपना खंजर निकाल कर उसके कंधे पर एक हल्का प्रहार किया। सीजरने फुर्तीसे उसका हाथ पकड़ कर और जोरसे डाँटते हुए लैटिनमें कहा "दुर्विनीत कैस्का, तुम यह क्या कर रहे हो?" कैस्काने ग्रीक भाषामें अपने भाईको पुकार कर कहा 'भाई तुरन्त आकर मेरी सहायता करो।' अब बहुतसे आदमियोंको एक साथ ही अपने ऊपर आक्रमण करते देखकर सीजर वहाँसे भाग निकलनेका उपाय सोचने लगा, किन्तु ज्योंही उसने ब्रूटसको भी खंजर लेकर वार करनेके लिए प्रस्तुत देखा त्योंही उसने कैस्काका हाथ छोड़ दिया, जिसे वह अभी तक पकड़े हुए था, और चोगेके भीतर मुँह छिपाकर घातकोंके प्रहार सहने के लिए चुपचाप वहीं बैठ गया। उसपर आक्रमण करनेकी उतावलीमें कई मनुष्योंको चोट आयी। ब्रूटसके हाथमें जख्म हो गया और प्रायः सभीके कपड़े खूनसे सराबोर हो गये।

जब सीजरकी हत्या हो गयी, तब ब्रूटस भाषण करनेकी इच्छासे सब लोगोंके बीचमें आकर खड़ा हो गया। उसने सिनेट-सभाके सदस्योंको भागनेसे मना किया और उन्हें समझा बुझाकर खड़े रहनेके लिए राजी करना चाहा किन्तु वे लोग इतने भयभीत हो गये थे कि वे एक मिनट भी वहाँ

न ठहरे। जिसे जहाँ सूझ पड़ा उसी ओर भाग खड़ा हुआ। चारों ओर बड़ी गड़बड़ी मच गयी। भीड़के मारे दरवाजेसे निकलना मुश्किल हो गया। मज़ा यह कि न तो कोई किसीपर आक्रमण कर रहा था और न कोई किसीका पीछा ही कर रहा था क्योंकि षड्यंत्रकारी तो केवल सीज़रका वध करने और सर्वसाधारणको स्वाधीनताकी घोषणा करनेके लिए आमंत्रित करनेका संकल्प करके आये थे। वास्तवमें ब्रूटसको छोड़कर और सब लोगोंकी इच्छा ऐण्टोनीको भी मार डालनेकी थी। वे लोग उसके उद्धत स्वभावसे चिढ़ते थे और उसे एकतंत्र शासनका हामी समझते थे। इसके सिवा निकट सम्बन्ध होनेके कारण सैनिकोंपर उसका काफी प्रभाव स्थापित हो गया था और इस समय तो सीज़रका सहकारी तथा कौन्सिल बना दिये जानेके कारण उसकी शक्ति और भी बढ़ गयी थी। ब्रूटसने यह कह कर उनके इस प्रस्तावका विरोध किया कि एक तो ऐसा करना अन्याय है, दूसरे मुझे यह भी आशा है कि ऐण्टोनीके स्वभावादिमें उचित परिवर्तन हो सकता है, क्योंकि मैं तो समझता हूँ कि ऐण्टोनीके सदृश योग्य एवं सम्मानित व्यक्ति सीज़रकी हत्या हो जानेके बाद हमारे पवित्र उद्देश्यका महत्त्व समझ कर देशमें पुनः स्वतंत्रताकी स्थापना करनेमें हमारा साथ देनेसे मुँह न मोड़ेगा। इस प्रकार ब्रूटसके प्रयत्नसे ऐण्टोनीके प्राण बच गये। किन्तु जब चारों ओर गड़बड़ी मच गयी, तब ऐण्टोनी एक प्लीबियनका वेश धारण कर वहाँसे भाग गया। ब्रूटस अपने साथियों सहित बृहस्पति देवके मन्दिरकी ओर चला। रास्तेमें ये लोग अपने रक्तरंजित हाथों एवं नंगी तलवारोंका प्रदर्शन करते जाते थे और सार्वजनिक स्वाधीनताकी घोषणा करते जाते थे। चारो ओर चिल्लाहट मची हुई थी और उत्तेजनाके कारण बहुतसे लोग इधरसे उधर दौड़ रहे थे। किन्तु जब अन्य कोई हत्या नहीं की गयी और न किसी तरहकी लूट-पाट ही हुई, तब सिनेट-सभाके सदस्यों तथा अन्य लोगोंका जी ठिकाने हुआ और वे लोग भी साहस कर बृहस्पति देवके मन्दिरकी ओर अग्रसर हुए।

जब सारी लोग इकट्ठे हो गये, तब ब्रूटसने एक भाषण किया जिसे लोगों ने बहुत पसन्द किया और जो राज्यकी तात्कालिक अवस्थाके अनुकूल था। जब लोगोंने उसके भाषणकी प्रशंसा की और उससे नीचे उतर आनेके लिए कहा, तब ब्रूटस तथा उसके साथी उनका विश्वास कर नीचे उतर कर फोरम (विचारालय) में आकर खड़े हो गये। मामूली लोग तो उपस्थित जनतामें मिल गये, किन्तु ब्रूटसके आसपास जो प्रसिद्ध प्रसिद्ध व्यक्ति थे वे उसे चारों ओरसे घेरे हुए "कैपिटल"से उतार कर नीचे ले आये और उसे वक्ताके आसनपर बैठा दिया। ब्रूटसको देखकर सब लोगों के मनमें उसके प्रति आदर भाव उत्पन्न हो गया और वे लोग उसका भाषण सुननेके लिए बिल्कुल शान्त हो गये। जब उसने भाषण किया, तब लोगोंने बड़े ध्यानसे उसे सुना। किन्तु सब लोग उसके कार्यसे सन्तुष्ट नहीं थे, यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया। जब सिन्नाने अपने भाषणमें सीज़रकी निन्दा करनी शुरू की, तब लोग उससे क्रुद्ध हो गये। उनकी उत्तेजना देखकर षड्यंत्रकारी दलके लोगोंने आत्मरक्षाके ख्यालसे पुनः कैपिटलकी शरण ली। वहाँ पहुँच कर ब्रूटसने चारों ओरसे घेरे जानेकी आशंका कर, उन बड़े बड़े लोगोंको अपने पाससे हटा दिया जो उनके साथ साथ वहाँ चले गये थे। उसने ख्याल किया कि जो लोग इस योजनामें सम्मिलित नहीं थे, उन्हें ऐसी विपत्तिमें अपने पास खड़े रहने देना अनुचित है।

किन्तु दूसरे ही दिन धरणी देवीके मन्दिरमें सिनेट सभाकी बैठक हुई। वहाँ एण्टोनी, प्लैङ्कस तथा सिसरो इत्यादिने अपने अपने भाषणोंमें इस बातपर जोर दिया कि देशमें शान्ति भङ्ग न होने पावे और जिन लोगोंने साजिशमें भाग लिया था, वे क्षमा कर दिये जायँ। अन्तमें सभामें निश्चय हुआ कि खतरोंसे इन लोगोंकी रक्षा ही न की जाय, वरन् कौंसलोंको आदेश दे दिया जाय कि वे इस बातपर विचार करें कि इनका किस प्रकार सम्मान किया जाय और इन्हें कौन कौन पद दिये जायँ।

इस निश्चयके बाद सभा भङ्ग हो गयी। जब ऐण्टोनीने अपने पुत्रको प्रतिभू रूपमें ब्रूटसके पास भेज दिया, तब ब्रूटस अपने साथियों समेत कैपिटलसे नीचे उतर आया। सब लोग इकट्ठे हो गये और एक दूसरेका अभिवादन तथा स्वागत करने लगे। ऐण्टोनीने कैसियसको भोजनके लिए आमंत्रित किया और लेपिडसने ब्रूटसको। इसी प्रकार और लोगोंको भी उनके मित्रों अथवा परिचित व्यक्तियोंने निमन्त्रित किया।

दूसरे दिन सवेरा होते ही सिनेट सभाकी बैठक फिर हुई। इसमें ऐण्टोनीको विशेष रूपसे धन्यवाद दिया गया, क्योंकि उसकी चेष्टासे देशमें गृहयुद्ध होते होते रुक गया। इसके बाद ब्रूटस तथा उसके साथियोंके कृत्योंकी प्रशंसा की गयी और उन्हें प्रान्तोंके शासन इत्यादिका अधिकार दिया गया। क्रीटका शासन ब्रूटसके सिपुर्द हुआ तथा आफ्रिकाका कैसियसके, साथ ही एशियाका ट्रेबोनियसके और बिथीनियाका सिम्बरके बाँटे पड़ा। ब्रूटस नामधारी जो एक और व्यक्ति था, उसे पो नदीके आसपासका गालका प्रान्त दिया गया।

अब सीजरके दानपत्र तथा उसकी अन्त्येष्टि क्रियाके प्रश्नपर विचार प्रारम्भ हुआ। ऐण्टोनीने यह इच्छा प्रकट की कि दानपत्र सबके सामने पढ़ा जाय। उसने यह भी प्रस्ताव किया कि सीजरका मृतशरीर यों ही चुपचाप या बिलकुल मामूली आदमीकी तरह न दफना दिया जाय, क्योंकि यदि ऐसा हुआ तो इससे लोगोंकी क्रोधाग्नि और भी भड़क उठेगी। कैसियसने जोरोंसे इस प्रस्तावका विरोध किया, किन्तु ब्रूटसने उसे स्वीकार कर लिया। यह ब्रूटसकी दूसरी गल्ती थी। पहली ग़ल्ती उसने उस समय की थी जब उसने अपने साथियोंको ऐण्टोनीकी हत्या करनेसे मना किया था। उन लोगोंने उसके इस कृत्यकी बड़ी निन्दा की, क्योंकि उसीके कारण षड्यन्त्रका यह बड़ा भारी शत्रु अभीतक जीवित बचा हुआ था। अब सीजरकी अन्त्येष्टि-क्रियाके सम्बन्धमें उसका कहना मानकर ब्रूटसने दूसरी ग़ल्ती कर डाली जिसका कोई प्रतिकार

नहीं था। जब लोगोंको मालूम हुआ कि दानपत्रके अनुसार सीजर प्रत्येक रोम निवासीको पचहत्तर ड्रैक्मा दे गया है और टाइबर नदीके उस पारके अपने कुल बागीचे सर्वसाधारणके लिए अर्पित कर गया है, तब सारे शहरमें उसके लिए एक आश्चर्यजनक प्रेम प्रवाह उमड़ पड़ा और सब लोग उसकी मृत्युपर अफसोस प्रकट करने लगे। जब सीजरका मृतशरीर विचारालय (फोरम) में रखा गया तब देशकी प्रथाके अनुसार ऐण्टोनीने मृतव्यक्तिकी प्रशंसामें एक भाषण किया। अपने शब्दोंसे सर्वसाधारणको प्रभावित होते देख कर उसने प्रत्येक बातको इस ढङ्गसे कहना शुरू किया कि जिससे उनके हृदय और भी द्रवीभूत हो सकें। उसने सीजरके शवपर पड़ा हुआ खूनसे लथपथ कपड़ा खींचकर अलग कर दिया और लोगोंको वे बहुसंख्यक जख्म दिखला दिये जो एक साथ बहुतसे आदमियों द्वारा आक्रमण होनेके कारण लगे थे। अब वहाँ बड़ी गड़बड़ मच गयी। कुछ लोग तो हत्या करनेवालोंको मार डालनेके लिये चिल्लाने लगे और कुछ लोग आसपासकी दूकानोंसे बेंचें तथा कुर्सियाँ छीन छीनकर एक बड़ी सी चिता तैयार करने लगे। फिर सीजरकी लाश उसपर रखकर उन्होंने उसमें आग लगा दी। लपटोंके छूटते ही इधर उधरसे और भी बहुतसे लोग वहाँ बटुर गये। उन्होंने चितामेंसे जलती हुई लकड़ियोंके टुकड़े खींच लिये और तुरन्त सारे शहरमें घूम घूम कर सीजरकी हत्या करनेवालोंके मकान जलानेके उद्देश्यसे चल पड़े। घातकोंके मनमें तो सन्देह हो ही गया था, अत वे इस सम्बन्धमें पहलेसे ही सावधान हो गये थे। फलत वे अनायास इस विपत्तिसे अपनी रक्षा कर सके।

सीजरकी अन्त्येष्टि क्रिया जिस दिन की गयी, उसके ठीक पहलेवाली रातमें सिन्ना नामक एक व्यक्तिने, जो षड्यन्त्रमें शामिल नहीं था बल्कि जो सीजरके मित्रोंमेंसे था, यह स्वप्न देखा कि सीजरने उसे अपने साथ भोजन करनेके लिये आमंत्रित किया, किन्तु उसने जानेसे इनकार कर

दिया; सीज़रने बड़ी उत्सुकताके साथ आग्रह किया और हाथ पकड़ कर उसे एक बहुत गहरी तथा अँधेरी जगहमें ले गया, जहाँ उसे इच्छा न होते हुए भी, अत्यन्त घबराहटके साथ जाना पड़ा। स्वप्न देखनेके बाद रात भर उसे बुखार चढ़ा रहा। फिर भी सवेरा होने पर जब उसने सुना कि लोग सीज़रका शव दफ़नानेको लिये जा रहे हैं, तब उसने ख्याल किया कि ऐसे अवसरपर मेरा उपस्थित न रहना कितनी लज्जाकी बात है। यह सोचकर वह भी कपड़े पहन कर बाहर निकल आया और ठीक उस समय जनाज़ेके पास पहुँचा जब ऐण्टोनीका भाषण सुनकर लोग विशेष रूपसे उत्तेजित हो रहे थे। "सिन्ना" नाम सुनते ही उन्होंने इस बातका अनुसन्धान तो किया नहीं कि यह कौन व्यक्ति है; भ्रमवश उन्होंने यही समझ लिया कि हो न हो यह वही सिन्ना है जिसने थोड़ी ही देर पहले सीज़रकी निन्दा करनेका प्रयत्न किया था। यही ख्याल कर वे उस पर टूट पड़े और उन्होंने उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले।

इस घटनासे तथा ऐण्टोनीने जो परिस्थिति उत्पन्न कर दी थी उससे ब्रूटस और उसके साथी इतने भयभीत हो गये कि अपने प्राणोंकी रक्षाके ख्यालसे कुछ दिनोंके लिए वे लोग नगर छोड़ कर बाहर चले गये। वे लोग एण्टियममें जाकर ठहरे और सोचने लगे कि ज्यों ही जनताका क्रोध शांत हो जायगा त्यों ही हम लोग पुन: लौट चलेंगे। उन्हें आशा थी कि सर्वसाधारणका भाव शीघ्र ही बदल जायगा, क्योंकि उनके कोई खास विचार तो होते नहीं, अत: क्षणिक उत्तेजनाके आवेशमें आ जाना उनके लिये स्वाभाविक है। ऐसी आशा करनेके लिए एक कारण यह भी था कि सिनेट-सभाके सदस्य उनके पक्षमें ही थे। यद्यपि जिन लोगोंने सिन्ना पर आक्रमण कर उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले थे, उनके सम्बन्धमें सिनेट-सभाने कोई कारवाई नहीं की, फिर भी उसने समुचित दण्ड देनेके ख्यालसे खोज खोज कर उन लोगोंको गिरफ्तार कराया जिन्होंने ब्रूटस तथा कैसियसके मित्रोंके मकानोंपर हमला किया था। अब ऐण्टोनीकी

नीतिसे सर्वसाधारणके मनमें भी असन्तोष उत्पन्न होने लगा था । उन्हों· ने देखा कि ऐण्टोनी एक तरहसे अपनेको राजा बनाना चाहता है । वे ब्रूटसके पुनरागमनकी प्रतीक्षा करने लगे । उन्हें आशा थी कि वह उन सार्वजनिक खेलों तथा तमाशोंमें अवश्य उपस्थित होगा जो प्रीटर (उप-न्यायाधीश) होनेके कारण उसकी ओरसे सर्वसाधारणको दिखलाये जायँगे । किन्तु ब्रूटसको खबर लगी कि बहुतसे वृद्ध सैनिक, जिन्होंने सीज़रके सेनापतित्वमें लड़ाइयाँ लड़ी थीं और जिन्हें उसने इनाममें ज़मीन तथा गाँव इत्यादि दिये थे, इन लोगोंपर आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहे हैं और छोटी छोटी टुकड़ियाँ बना कर चुपचाप नगरमें जा छिपे । इसीसे उसने इस समय लौटनेका साहस नहीं किया । उसके उपस्थित न होते हुए भी बहुत रुपया खर्च करके बढ़ियासे बढ़िया खेल लोगोंको दिखलाये गये । ब्रूटसने बहुतसे तरह तरहके जंगली जानवर पाल रखे थे । इनके सम्बन्धमें उसने आज्ञा दे दी थी कि इनमेंसे एक भी मुझे न लौटाया जाय और न रोक कर रखा जाय, सार्वजनिक तमाशोंमें निस्सं· कोच भावसे उनका प्रयोग किया जाय ।

इसी समय रोममें नवयुवक सीज़रके आगमनसे फिर एक महान् परिवर्तन उपस्थित हो गया । यह सीज़रकी भतीजीका लड़का था । सीज़रने उसे गोद लिया था और वसीयतनामेके अनुसार उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया था । जिस समय सीज़रकी हत्या की गयी, उस समय वह अपोलोनियामें विद्याध्ययन कर रहा था । उसकी मृत्युका समाचार पाकर वह तुरन्त रोमको चला आया । अपनेको जनताका कृपा· भाजन बनानेके ख्यालसे उसने सीज़रका नाम धारण करनेके बाद शीघ्र ही वह समस्त रुपया नागरिकोंमें बाँट दिया जो दानपत्रके अनुसार उन्हें मिलना चाहिये था । इस प्रकार वह ऐण्टोनीकी अपेक्षा अधिक लोकप्रिय हो गया । उसने सैनिकोंको भी बहुतसा धन बाँट दिया और उन्हें तरह तरहके उपहार दिये । इस प्रकार सीज़रकी अधीनतामें जिन लोगोंने युद्ध·

कार्य किया था, उनमेंसे अधिकांश उसकी सहायता करनेको तैयार हो गये । सिसरोतक उसके पक्षमें हो गया, क्योंकि वह ऐण्टोनासे घृणा करता था । ब्रूटसको सिसरोका यह व्यवहार इतना बुरा मालूम हुआ कि उसने अपनी चिट्ठियोंमें उसके इस कार्यकी खूब भर्त्सना की। उसने लिखा "मालूम होता है कि किसी भी स्वेच्छाचारी शासक का प्रभुत्व आप स्वीकार कर सकते हैं । आपको भय है तो केवल इतना ही कि वह कोई ऐसा व्यक्ति न हो जो आपसे घृणा करता हो । आप जो बारम्बार सीज़रकी प्रशंसा करते हैं, उससे तो यही सूचित होता है कि आप अमनचैनके इतने पक्षपाती हैं कि उसके लिए गुलामी तकमें रहनेको तैयार हैं । किन्तु हमारे पूर्वज किसीका भी, चाहे वह कितना ही दयालु एवं उदार होता, प्रभुत्व स्वीकार नहीं कर सकते थे । मैं युद्ध करूँगा या शान्त रहूँगा, इसका निश्चय मैंने अभी नहीं किया है । फिर भी, इतना तो ते है कि मैं गुलाम बनना बिलकुल ही पसन्द नहीं कर सकता । मुझे आश्चर्य होता है कि आप गृहकलहके कष्टोंसे तो इतना डरते हैं पर एक सम्मानहीन एवं कलंकमय शान्ति पाकर भी आपके कानपर जूँ नहीं रेंगती । ऐण्टोनीकी स्वेच्छाचारिता दूर करनेके लिए आप जो परिश्रम उठा रहे हैं, उसका परिणाम यही होगा कि अन्तमें ऐण्टोनीके स्थानमें सीज़रकी निरंकुशता स्थापित हो जायगी ।" शुरू शुरूमें ब्रूटसने सिसरोको जो पत्र लिखे थे, उनका भाव यही था ।

इस समय नगरनिवासियोंके दो दल हो गये थे । कुछ लोग तो सीज़रके पक्षमें थे और कुछ ऐण्टोनीके । सैनिक प्रायः उसीका पक्ष ग्रहण करनेको तैयार हो जाते थे जो उन्हें अधिक पुरस्कारका प्रलोभन दे सकता था । यह परिस्थिति देखकर ब्रूटस निराश होगया और उसने इटलीसे बाहर चले जानेका निश्चय कर लिया । वह स्थलमार्गसे ल्यूकेनिया गया और वहाँसे समुद्रतटवर्त्ती इलिया नामक स्थानमें जा पहुँचा । अब यह ठीक समझा गया कि पोर्शियाको रोम लौट जाना चाहिये । ब्रूटससे जुदा

होते समय पोर्शियाको बहुत दुःख हुआ, किन्तु उसने हर तरहसे उसे छिपानेकी कोशिश की। अपनी आन्तरिक वेदनाको भीतर ही दवा रखनेमें वह बहुत कुछ सफल भी हुई, किन्तु इसी समय अचानक उसकी नज़र वहाँ रखी हुई एक तसवीरपर पड़ी। उसमें ग्रीसनिवासी हेक्टरके उस समयका चित्र अंकित था जब वह ग्रीक लोगोंसे युद्ध करनेके लिए जाते समय अपनी पत्नी एण्ड्रोमैचीसे विदा ले रहा था; वह अपने छोटे बच्चेको उसकी गोदमें दे रहा था और वह उसकी ओर स्थिर भावसे देख रही थी। जब पोर्शियाने इस तसवीरकी ओर नज़र डाली, तब उसमें चित्रित दृश्यके साथ अपनी स्थितिकी समानता देखकर वह अपनेको न सँभाल सकी और फूट फूट कर रोने लगी। दिन भरमें कई बार वह उस तसवीरको देखने गयी और उसके सामने खड़ी होकर रोती रही। इस अवसरपर जब ब्रूटसके एक मित्रने होमरके काव्यसे यह पंक्ति पढ़ी जिसमें एण्ड्रोमैची अपने पति हेक्टरसे कहती है "किन्तु प्यारे हेक्टर, तुम मेरे लिए पिताके सदृश हो, तुम्हीं माताके समान हो, तुम्ही मेरे भाई हो और तुम्हीं मेरे प्राणाधार पति हो", तब ब्रूटसने मुसकिरा कर उत्तर दिया, "किंतु भाई, हेक्टरने एंड्रोमैचीको जो यह उत्तर दिया था कि तुम घर बैठकर अपना चर्खा चलाओ और दासियोंपर शासन करो, वैसा उत्तर तो मैं पोर्शियाको नहीं दे सकता, क्योंकि यद्यपि उसका शरीर कोमल है और वह पुरुषोंके सदृश ताकतके काम नहीं कर सकती, फिर भी अपने देशकी भलाई करनेके लिए उसकी आत्मामें उतनी ही शक्ति एवं उतनी ही स्फूर्ति है जितनी हममेंसे किसीमें हो सकती है।" पोर्शियाके पुत्र बिब्यूलस द्वारा लिखित 'ब्रूटसके जीवनवृत्तान्त' नामक पुस्तकमें इस घटनाका उल्लेख किया गया है।

यहाँसे ब्रूटस जहाज़ द्वारा एथेंस पहुँचा। लोगोंने उसका स्वागत करते समय विशेष अनुकूल भावका प्रदर्शन किया जैसा कि उनके द्वारा की गयी जयध्वनि एवं ब्रूटसको प्रदत्त विविध सम्मानोंसे प्रकट होता था।

वहाँ वह एक निजी मित्रके साथ रहता था और दार्शनिक बातोंके अध्ययनमें इस तरह जुट गया था मानो उसे सार्वजनिक कार्योंकी कोई फिकर ही न रह गयी हो। किन्तु इन दिनों भी, दूसरोंके मनमें सन्देह उत्पन्न न होने पावे इस तरह, चुपचाप वह युद्धके लिए तैयारी कर रहा था। उसने इस उद्देश्यसे हेरोस्ट्रेटसको मकदूनिया भेजा कि वह वहाँके सेनापतियोंको अपने पक्षमें कर ले। ब्रूटसने स्वयं प्रयत्न करके उन रोमन नवयुवकोंको भी अपनी ओर मिला लिया था जो उस समय अथेंसमें विद्याध्ययन कर रहे थे। इन नवयुवकोंमें सिसरोका पुत्र भी था, जिसकी प्रशंसा ब्रूटसने स्थान स्थानपर की है। वह कहता है कि चाहे मैं सोता होऊँ, चाहे जागता होऊँ, मैं इस नवयुवककी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता जो ऐसा उत्साही और निरंकुश शासनका इतना कट्टर शत्रु है।

कुछ दिनोंके बाद वह खुलमखुला अपना कार्य करने लगा और सार्वजनिक मामलोंमें भी भाग लेने लगा। जब उसे खबर मिली कि खजानेसे लदे हुए अनेक रोमन जहाज़ एशियासे लौटते हुए इस ओर आनेवाले हैं और उनका सर्वोच्च अफसर मेरा एक मित्र है, तब वह कैरिस्टसके पास उससे मिलनेके लिए गया। ब्रूटसने उसे समझा बुझा कर कुल जहाज़ अपने कब्जेमें कर लिये। इस अवसरपर उसने एक बृहद् भोजका आयोजन किया, क्योंकि दैवयोगसे उसका जन्मदिन भी उसी दिन आ पड़ा था।

जहाजोंका प्रधान अफसर जो द्रव्य अपने साथ इटलीको ले जा रहा था, उसमेंसे ५० करोड मुद्राएँ, विदा होते समय, वह ब्रूटसको देते गया। पाम्पीकी सेनाके वे सैनिक जो अभीतक बचे हुए थे और जो पाम्पीकी पराजयके बाद थेसलीके इधर उधर ही घूम फिर रहे थे, बड़ी प्रसन्नताके साथ उसका पक्ष ग्रहण करनेको तैयार हो गये। इनके सिवा उसने पाँच सौ घुडसवार सिन्नासे भी ले लिये जिन्हें वह डोलाबेलाको लिये जा रहा था। इसके बाद वह जहाजमें बैठकर डेमेट्रिआस पहुँचा और वहाँ उसने बहुतसे अस्त्रशस्त्र तथा अन्य युद्ध सामग्री अपने अधि-

कारमें कर ली। यह युद्ध-सामग्री परलोकगत सीज़रकी आज्ञासे पार्थियाकी लड़ाईके लिए एकत्र की गयी थी और अब ऐन्टोनीकी सहायताके लिए भेजी जानेवाली थी। शीघ्र ही मकदूनिया भी उसके सुपुर्द कर दिया गया। आसपासके कितने ही राजाओं और सरदारोंने आ आकर सहायताका वचन दिया। जब ब्रूटसको यह खबर मिली कि ऐन्टोनीका भाई केयस इटलीसे चलकर उस सेनाको अपने पक्षमें मिलानेके लिए अग्रसर हो रहा है जो डायरेशियम तथा अपोलोनियामें थी और वैटीनियस जिसका सेनापति था, तब उसने निश्चय किया कि मैं पहले ही जाकर उसे अपने अधिकारमें कर लूं। उसके पास जितनी सेना थी, उसे साथमें लेकर वह तुरन्त ही चल पड़ा। उसे बहुत ही ऊबड़-खाबड़ रास्तेसे चलना पड़ा और मार्गमें हिमपात भी बहुत हुआ, फिर भी वह इतनी तेजीसे आगे बढ़ रहा था कि जो लोग अपने साथमें सबेरेकी भोजनसामग्री लिए हुए थे वे उससे बहुत पीछे रह गये। बहुत ज्यादा थक जानेके कारण तथा कठिन शीत पड़नेके कारण वह ब्यूलिमिया नामक रोगसे पीड़ित हो गया। यह एक ऐसी व्याधि है जो बहुत अधिक परिश्रम करनेके बाद मनुष्योंको तथा पशुओंको प्रायः हो जाती है, विशेषकर उन स्थानोंमें जहाँ बर्फ ज्यादा गिरती है।

ब्रूटस बिलकुल पस्त हो गया था। सेनामें किसीके पास कोई चीज़ नहीं थी जो उसे खानेके लिए दी जाती। निदान लाचार होकर उसके नौकरोंको शत्रुकी शरण लेनी पड़ी। शहरके फाटकके पास पहुँच कर उन लोगोंने पहरेदारोंसे अपने स्वामीके लिए कुछ भोजन माँगा। जब उन्हें ब्रूटसकी हालत मालूम हुई तब वे लोग भोजन और पानी लेकर स्वयं उसके पास आये। ब्रूटसको उनके इस कार्यका बराबर ख्याल रहा और जब उसने नगरपर अधिकार कर लिया, तब उसने केवल इन्हींके साथ नहीं वरन् इनके कारण समस्त नगरनिवासियोंके साथ विशेष दयाका व्यवहार किया। इधर जब केयस ऐन्टोनियस अपोलोनिया पहुँच गया, तब

उस स्थानके आसपास जो सैनिक थे उनसे उसने कहला भेजा कि आप लोग आकर मेरे पक्षमें मिल जाइये, किन्तु उसने देखा कि वे सब धड़ाधड़ ब्रूटसकी ओर चले जा रहे हैं और जब उसे यह शंका होने लगी कि खास अपोलोनियाके सैनिक भी उसी तरफ झुक रहे हैं, तब वह उक्त नगर छोड़कर बुथ्रोटम चला आया। इसके पहले उसके तीन सैन्य दलों-को ब्रूटसने रास्तेमें ही काट डाला था। कुछ महत्त्वपूर्ण स्थानोंको लेनेकी व्यर्थ चेष्टा करनेके बाद उसे एक युद्धमें नवयुवक सिसरोके हाथ पराजित होना पड़ा। ब्रूटसने युद्ध-सञ्चालनका भार इसीके सिपुर्द कर दिया था और समय समय पर इससे वह बहुत काम निकालता था। केयस स्वयं अपने अनुयायियोंसे कुछ दूर एक आद्रभूमिमें ब्रूटसके आदमियों द्वारा घिर गया। उसे इस प्रकार अपने अधिकारमें देखकर उसने अपने सैनि-कोंको आक्रमण करनेसे रोक दिया। उसने उन्हें आज्ञा दे दी कि शत्रुके एक भी आदमीकी जान न जाने पावे, क्योंकि थोड़ी देर बाद ही तो ये लोग हमारे पक्षमें आ मिलेंगे। हुआ भी ऐसा ही। शत्रुके सैनिकोंने अपने सेनापति सहित आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार अब ब्रूटसके पास बहुत बड़ी सेना इकट्ठी हो गयी। वह चिरकालतक केयसका समादर करता रहा। उसने उसे अपने पदके अनुरूप चिह्न धारण करनेकी इजाज़त दे दी थी, यद्यपि रोमसे कई मित्रोंने, विशेषकर सिसरोने, उसे यही सलाह दी थी कि केयसको प्राणदण्ड दिया जाय। जब ब्रूटसने देखा कि वह सेनाके कर्मचारियोंको बहका रहा है और सेनामें बलवा कराना चाहता है, तब उसने उसे एक जहाजपर क़ैद कर दिया। केयस-ने जिन सैनिकोंको बहका दिया था वे अपोलोनियाको लौट गये। उनके एक संदेशेके उत्तरमें ब्रूटसने कहा कि रोममें ऐसी प्रथा है कि जो लोग अपराध करते हैं, वे स्वयं अपने सेनापतिके पास आकर क्षमा याचना करते हैं। उन्होंने ऐसा ही किया और ब्रूटसने उन्हें क्षमा भी कर दिया।

जब ब्रूटस एशियामें प्रवेश करने जा रहा था, तब उसे रोममें इस

समय जो परिवर्तन हो रहा था उसकी खबर मिली। यहाँ नवयुवक सीज़र, ऐण्टोनीके विरुद्ध सिनेट-सभाकी सहायता पाकर और उसे इटलीसे बाहर खदेड़ कर, स्वयं बहुत शक्तिशाली हो रहा था। वह कानूनके खिलाफ़ कौन्सलका पद प्राप्त करना चाहता था और एक बहुत बड़ी सेना रखे हुए था जिसकी प्रजातन्त्रको कोई आवश्यकता नहीं थी। जब उसने देखा कि मेरे कार्योंसे असन्तुष्ट होकर सिनेट-सभाके सदस्य देशके बाहर गये हुए ब्रूटसकी ओर आशाभरी दृष्टिसे देख रहे हैं और उन्होंने कई प्रान्तोंका शासनाधिकार भी उसे देनेका निश्चय किया है, तब वह चौकन्ना हो गया। उसने अपने आदमी भेज कर ऐण्टोनीसे कहलाया, "मैं चाहता हूँ कि हम लोगोंमें परस्पर समझौता हो जाय और हम लोग एक दूसरेके मित्र बन जायँ।" इसके बाद शहरके चारों ओर अपनी सेना खड़ी कर उसने अपनेको कौन्सलके पदके लिए निर्वाचित करा लिया, यद्यपि, जैसा कि उसने स्वय अपने जीवन-वृत्तान्तमें लिखा है, इस समय उसकी उम्र बीस वर्षकी भी नहीं थी। कौन्सलके पदपर आरूढ होते ही उसने ब्रूटस तथा उसके साथियोंपर ऐसे आदमी (सीजर) की हत्या करनेका मुकदमा चलाया जो नगरका एक प्रधान व्यक्ति था, जो रोमके सर्वोच्च न्यायाधीशके पदपर कार्य कर चुका था और जिसे अपनी सफाई देनेका कोई भी मौका नहीं दिया गया था। अभियुक्तोंकी ओरसे पैरवी करनेके लिए कोई भी खड़ा नहीं हुआ, अतः न्यायकर्त्ताओंको विवश होकर उनके विरुद्ध फैसला करना पड़ा और उन्हें अपराधी करार देना पड़ा। इसके बाद सीजर, ऐण्टोनी, और लेपिडसमें परस्पर समझौता हो गया। उन्होंने सारे प्रान्त आपसमें बाँट लिये और उन व्यक्तियोंकी एक सूची तैयार की जो वध किये जानेके योग्य समझे गये। इनकी संख्या दो सौ थी। इनमें सिसरो-का भी नाम था जिसका वध कर दिया गया।

ब्रूटस उस समय मकदूनियामें था। जब उसे सिसरोके मारे जाने की खबर मिली, तब उसने लाचार होकर हॉर्टेनसियसके पास आदमी

भेजकर यह आज्ञा दी कि मेरे मित्र सिसरो तथा मेरे सम्बन्धी ब्रूटस, जिसका नाम भी उक्त सूचीमें था, की हत्याओंके बदले तुम भी केयस ऐन्टोनियसका वध करवा डालो। यही कारण था कि जब फिलिपीके युद्धमें ऐन्टोनीने हार्टेनसियसको गिरफ्तार कर लिया, तब उसने अपने भाईकी कब्रपर ही उसे (हार्टेनसियसको) मरवा डाला था। ब्रूटसने सिसरोकी मृत्युके सम्बन्धमें जो कुछ लिखा है, उससे मालूम होता है कि इसका उसे उतना दुःख नहीं था जितना वह इसके कारण लज्जित था। वह कहता है कि मैं रोममें स्थित अपने मित्रोंको दोष दिये बिना नहीं रह सकता। वे लोग अपनी ही कायरताके कारण गुलाम बने हुए हैं। जो लोग इस समय उनपर निरंकुशतापूर्वक शासन कर रहे हैं, उनका इसमें विशेष दोष नहीं है। वे लोग वहाँ उपस्थित थे और खड़े खड़े उन घटनाओंका होना देख रहे थे जिनका वर्णन सुनना भी उनके लिए असह्य होना चाहिये था।

एशियामें अपनी बड़ी भारी सेनाका प्रवेश कराकर ब्रूटसने बाइथीनिया और सिज़ीकसके आसपास एक बेड़ा तैयार करनेकी आज्ञा दी। वह स्वयं स्थल मार्गसे गया। जिन जिन नगरोंमे होकर वह निकलता था, उन्हें अपनी ओर मिलानेका प्रयत्न बराबर करता जाता था और वहाँके राजाओंसे भी मिलता जाता था। उसने सीरियामें स्थित कैसियसके पास यह आदेश भेजा कि तुम फौरन यहाँ चले आओ और मिस्रमें यात्रा करनेका विचार छोड़ दो, क्योंकि यह तो तुम जानते ही हो कि हम लोग स्वयं अपने लिए कोई साम्राज्य स्थापित नहीं करना चाहते, वरन् अपने देशको स्वतंत्र बनानेके उद्देश्यसे ही देश-देशान्तरोंका परिभ्रमण कर रहे हैं और उसी निमित्त हमने एक सेना भी जुटा ली है जिसकी सहायतासे हमें अपने देशके स्वेच्छाचारी शासकोंका विनाश करना है; अतः यदि हम अपने प्रधान उद्देश्यको ध्यानमें रखें तो हमें इटलीसे बहुत दूर नहीं जाना चाहिये, प्रत्युत शीघ्रातिशीघ्र वहाँ पहुँच कर अपने देशभाइयोंको उनके अत्याचारोंसे बचाना चाहिये।

इस आदेशको मानकर कैसियस लौट पड़ा। ब्रूटस उससे मिलनेके लिए गया। स्मरनामें दोनोंकी भेंट हुई। इतने दिनोंके बाद एक दूसरेको देखकर वे बड़े प्रसन्न हुए। अब उन्हें अपनी सफलताका भी विश्वास हो गया, क्योंकि कहाँ तो वे लोग कोई घोर अपराध करनेके कारण निष्कासित व्यक्तियोंकी तरह इटलीसे भागे थे—न तो उनके पास पैसा था, न अस्त्र शस्त्र, और न साथमें कोई सैनिक था, न कोई जहाज ही—और कहाँ वे इतने थोड़े समयके भीतर ही इतने जहाज और इतना रुपया-पैसा तथा पैदल और घुड़सवार सेना एकत्र कर एक दूसरेसे मिल सके कि यदि वे चाहते तो रोम साम्राज्य हस्तगत करनेका भी प्रयत्न कर सकते थे।

कैसियस ब्रूटसकी वैसी ही इज्जत करना चाहता था जैसी ब्रूटस उसकी करता था, किन्तु इस सम्बन्धमें प्रायः ब्रूटस ही आगे बढ़ जाता था। जब कभी ज़रूरत पड़ती थी, तब प्रायः ब्रूटस ही कैसियसके निवास-स्थान पर जाता था, क्योंकि एक तो कैसियस उम्रमें उससे बड़ा था, दूसरे वह ब्रूटससे ज्यादा कमज़ोर भी था। सर्वसाधारण कैसियसको बहुत कुशल योद्धा समझते थे, किन्तु उनका ख्याल था कि वह कठोर एवं क्रोधी स्वभावका है और उसे प्रेमकी अपेक्षा भयसे शासन करना ज्यादा पसन्द है, यद्यपि अपने परिचित व्यक्तियोंके साथ वह बराबर हँसी-मज़ाक किया करता था। किन्तु ब्रूटस अपने सच्चरित्रके कारण ही सर्वसाधारणकी प्रशंसा एवं सम्मानका पात्र बन गया था। उसके मित्र भी इसी कारणसे उसपर विशेष स्नेह करते थे और बड़े बड़े आदमी उसकी प्रशंसा किया करते थे, यहाँतक कि शत्रु भी उससे घृणा नहीं करते थे। उसका स्वभाव बहुत ही अच्छा था, वह बड़े उदार हृदयका आदमी था और क्रोध, सुखवासना तथा लोभसे तो दूर ही रहता था। वह न्याय एवं औचित्यके पक्षसे कभी नहीं हटता था। उसकी प्रसिद्धि तथा लोकप्रियताका एक बड़ा कारण यह था कि लोगोंको उसके उद्देश्योंमें पूर्ण

विश्वास था। लोग यह जानते थे कि पाम्पेके सदृश महान् व्यक्ति भी सीजर पर विजय पानेके बाद सर्वथा कानूनके अनुसार शासन करनेके लिए तैयार न होता, वह भी राज्यका प्रबन्ध अपने हाथमें ले लेता और खुल्लम-खुल्ला राजाकी पदवी ग्रहण न करते हुए भी वस्तुत कौंसल या सर्व-प्रधान नेता या और किसी पदकी आडमें राजा बननेकी ही कोशिश करता। जनताकी धारणा थी कि कैसियसने, जो स्वभावत. क्रोधी एवं लोभी था और जो अपने स्वार्थके कारण प्राय न्यायकी सीमाका भी अतिक्रमण कर बैठता था, यात्रा औ युद्धकी कठिनाइयों तथा जोखिमोंका सामना केवल अपने लिए राज्य प्राप्त करनेकी इच्छासे ही किया है, सर्वसाधारणको स्वतन्त्र बनाना उसका उद्देश्य नहीं हो सकता। इसके पहले भी सिल्ला, मेरियस, कार्बो इत्यादि जिन व्यक्तियोंने रोमकी शान्ति भग की थी, उनका ध्यान भी देशका शासन सूत्र अपने हाथमें कर लेनेकी ओर ही था और उन्होंने बहुत कुछ स्पष्ट भाषामें यह स्वीकार कर लिया था कि वे लोग साम्राज्य प्राप्तिकी आकाक्षासे ही लडाइयाँ लडते थे। किन्तु कहते हैं कि शत्रुओं तकने ब्रूटसपर कभी इस तरहका दोषारोपण नहीं किया। बहुतोंने तो स्वय ऐन्टोनी तकको यह कहते सुना था कि एक ब्रूटस ही ऐसा आदमी है जिसने केवल इसी ख्यालसे सीजरके खिलाफ साजिशमें भाग लिया था कि ऐसा करना देश हितकी दृष्टिसे आवश्यक एव न्यायोचित था, किन्तु और सब लोग तो केवल ईर्ष्या या द्वेषके कारण ही उसके विरोधी बन गये थे। ब्रूटसने स्वय जो कुछ लिखा है उससे स्पष्ट है कि उसे अपनी सैनिक शक्तिका उतना भरोसा नहीं था जितना अपने चरित्र और शीलका था। शत्रुसे युद्ध ठाननेके ठीक पहले उसने ऐटिकसके नाम एक पत्र भेजा था, जिसका आशय यह था—"मेरे तो दोनों हाथमें लड्डू हैं। या तो मैं विजय प्राप्त कर रोम निवासियोंको पुन. स्वतंत्र बना सकूँगा, या प्राण त्याग कर स्वय गुलामीके क्षेत्रसे बहुत दूर हट जाऊँगा।" आगे चलकर वह लिखता है "मार्क ऐन्टोनीको अपनी

मूर्खताके कारण जो दण्ड मिला वह सर्वथा उचित था क्योंकि उसने ब्रूटस, कैसियस तथा केटोको साथ न देकर आक्टेवियसका साथ दिया।"

जिस समय वे स्मरनामें थे तभी ब्रूटसने कैसियस द्वारा संगृहीत कोशका अपना हिस्सा माँगा क्योंकि उसने अपना सारा धन समुद्रपर अधिकार बनाये रखनेके निमित्त जहाजी बेड़ा तैयार करनेमें खर्च कर दिया था; पर कैसियसके मित्रोंने उसे ऐसा करनेसे मना करते हुए कहा कि जिस धनको तुमने किफायतसारीके साथ रद कर जमा किया है, क्या उसे तुम ब्रूटसको इसलिए देना चाहते हो कि उसे वह सैनिकोंमें वितरण कर लोकप्रियता सम्पादित करे? फिर भी कैसियसने सारी रकमका तृतीयांश ब्रूटसको दे दिया। इसके अनन्तर वे पृथक् होकर अपने अपने प्रान्तोंको चले गये। कैसियस रोड्स प्रान्तपर अधिकार कर लेनेपर बड़ी सख्तीसे पेश आया हालाँ कि नगरमें प्रवेश करनेके समय लोगोंके 'प्रभु' तथा 'नरेश' कहकर सम्बोधन करने पर उसने उत्तरमें कहा था—"मैं न तो प्रभु हूँ और न नरेश, बल्कि मैं तो इन दोनोंका अन्त करनेवाला हूँ।" ब्रूटसने लिसियनोंसे धन और जनकी माँग पेश की पर उनके लोकप्रिय नेता नॉक्रेटीजने ब्रूटसका विरोध करनेकी सलाह दी और वे उसके मार्गमें बाधा डालनेके विचारसे कई पहाड़ियोंपर जमकर बैठ गये। ब्रूटसने कुछ अश्वारोहियोंको उनकी ओर भेज दिया। इन्होंने भोजन करते समय ही उनपर एकाएक आक्रमण कर दिया जिससे उनके छ सौ सैनिक खेत रहे। उनके कई छोटे नगर तथा ग्राम अधिकृत कर लेनेके उपरान्त क्षति पूर्ति कराये बिना ही उसने रणबन्दियोंको छोड़ दिया। उसे यह आशा थी कि मैं सद्भाव द्वारा सबको वशवर्ती बना लूँगा। पर वे लोग ज्योंके त्यों तने रहे और उसकी नेकी तथा मानवोचित बर्तावके प्रति घृणा प्रकट करने लगे। अन्तमें अपने सर्वाधिक यौद्धिक प्रवृत्तिवालोंको जंथस नगरमें आश्रय लेनेपर बाध्य कर घेरा डाल दिया। उन्होंने नगरके पाससे बहनेवाली नदीमें डुबकी मारकर और तैरकर भागनेका भी प्रयत्न किया,

पर ये जालमें गिरफ्तार हो जाते थे जो इसी मतलबसे फेंका दिया गया था। जालके सिरेपर घटियाँ बाँध दी गयी थीं जिसमें इस प्रकारका प्रयत्न करनेवालोंकी शीघ्र खबर लग जाय। इसके अनन्तर उन्होंने रातको आक्रमण कर कई अवरोध-यन्त्रोंमें आग लगा दी पर रोमनोंने उन्हें पुन पीछे हटा दिया। उसी समय इतनी तेज हवा चली कि यन्त्रोंकी लपट प्राचीरतक पहुँचने लगी जिससे कई मकानोंमें आग लग गयी। सारे नगरके भस्मीभूत हो जानेकी आशङ्कासे ब्रूटसने अपने सैनिकोंको आग बुझानेमें मदद पहुँचानेकी आज्ञा दी।

लिसियनोंके दिमागमें इस समय एक ऐसा विचित्र खयाल पैदा हुआ जिससे यही समझा जायगा कि वे सबके सब मरनेपर तुले हुए थे। बालक वृद्ध, दास मुक्त, स्त्री पुरुष सभी अवस्था तथा परिस्थितिके लोग उन रोमनोंको बाहर निकालनेका प्रयत्न करने लगे जो आग बुझानेके लिए बाहरसे भीतर चले आये थे और घासपात तथा लकडी आदि सभी प्रकारकी जलनेवाली चीजें इकट्ठी कर सारे नगरमें आग फैलाने लगे। बातकी बातमें अग्नि भयकर लपटके साथ सारे नगरको आत्मसात् करने लगी। यह भयकर दृश्य देखकर ब्रूटसने घोडेपर सवार हो घूम घूमकर उनसे नगरकी रक्षाके लिए प्रार्थना की पर उन्होंने इसपर जरा भी ध्यान न देकर अपना अन्त करने का ही प्रयत्न जारी रखा। वयस्क स्त्री पुरुषोंने ही नहीं बल्कि बालकोंने भी, अग्निमें या शस्त्रों आदिपर कूद कर अपने प्राण दे दिये। नगरके भस्मीभूत हो जाने पर एक औरत मिली जिसने फाँसी लगाकर जान दे दी थी। उसका बच्चा उसके गलेमें बँधा हुआ था और हाथमें मशाल थी जिससे उसने अपने घरमें आग लगायी थी। इस दृश्यका वर्णन सुनकर ब्रूटस रो पडा। उसने जथियनोंको बचानेवाले सैनिकोंको पारितोषिक देने की घोषणा कर दी। कहा जाता है कि सिर्फ डेढ सौ जथियन बचाये जा सके और सो भी इच्छाके विरुद्ध। मालूम होता है दैवने उनके नाशका कोई समय बाँध रखा था क्योंकि उनके पूर्वजोंने भी एक बार फारसवालों

के साथ युद्ध होने पर इसी प्रकार नगर भस्म कर अपना अन्त कर दिया था।

पटेरियन लोगोंको सामना करनेके लिए प्रस्तुत देखकर घेरा डालनेमें ब्रूटसको इस बातकी आशंका हुई कि कहीं ये लोग भी जंथियनोंका अनुकरण न करें। उसने कुछ बन्दी महिलाओंको दण्ड दिये बिना ही मुक्त कर दिया। उन्होंने जाकर अपने पति तथा पुत्रों आदिसे जो उच्च श्रेणीके नागरिक थे कहा कि ब्रूटस बड़ा भलामानस और न्यायी है, आप लोग नगर उसको समर्पित कर दें। इसके अनन्तर आसपासके सभी नगरोंने आत्मसमर्पण कर दिया और ब्रूटसमें इतनी दयालुता एवं सज्जनताकी मात्रा देख पड़ी जितनीकी उन्हें आशा भी न थी। कैसियसने रोड्स वालोंसे उनकी व्यक्तिगत रूपसे जमा की हुई रकमें लेकर आठ हजार टैलेन्ट एकत्र किया और ऊपरसे जनतापर पाँच हजार टैलेन्टका और दण्ड लगाया पर ब्रूटसने लिसियनोंसे मुश्किलसे डेढ़ सौ टैलेन्ट लिया, उन्हें और किसी प्रकारकी क्षति नहीं पहुँचायी। इसके अनन्तर वह आयोनियाकी तरफ चला गया।

सारी युद्ध यात्रामें ब्रूटसने कई अवसरोंपर पुरस्कार तथा दण्ड देनेमें अपनी न्यायनिष्ठाका परिचय दिया। इस स्थलपर मैं केवल एक कार्यका उल्लेख करूँगा क्योंकि इससे स्वयं ब्रूटस तथा सभी नेक रोमन सन्तुष्ट थे। सीज़रसे पराभूत होने पर पॉम्पीने मिस्र-नरेशसे आश्रयके लिए प्रार्थना की थी। मन्त्रियोंमें किसीने स्वागत करनेकी और किसीने आश्रय देनेसे इनकार कर देनेकी राय दी, पर थियोडोटस नामक अलङ्कार-शास्त्रके शिक्षकने इन दोनों बातोंको काटकर उसे मार डालनेकी राय दी।* सीज़रके मिस्र पहुँचने पर कुछ हत्यारोंको प्राणदण्ड दिया गया पर थियोडोटस वहाँसे भाग निकला और किसी प्रकार लुक छिप कर कालयापन करने लगा, निदान एशियाकी यात्रामें ब्रूटसने उसे पकड़ कर मार डाला।

* देखिए पाम्पी, पृष्ठ २५२

इसी समयके लगभग ब्रूटसने कैसियसको सार्डिसमें मिलनेके लिए बुलाया और बहुतसे मित्रोंको लेकर उसकी अगवानी की। पङ्क्तिबद्ध सारी सेनाने दोनोंको "विजयी शासक" (इम्परेटर) कह कर अभिवादन किया। जिस महत्वपूर्ण कार्यमें बड़े बड़े लोग लगे हों, उसमे परस्पर कुछ न कुछ वादविवादका उठ जाना स्वाभाविक ही है। कैसियस और ब्रूटसमें परस्पर कुछ आरोप हुए इसलिये उन्होंने इस विषयपर विचार करनेके निमित्त एक कमरेमें जाकर द्वार बन्द कर लिया। तर्क वितर्क से आरम्भ कर दोनों गर्मागर्मीके साथ आपसमें झगड़ने लगे और अन्तमें फूट फूटकर रोने भी लगे। उनके जो मित्र बाहर खड़े थे, उन्हें इस प्रकारकी आवाज सुनकर कुछ गड़बड़की आशङ्का हुई, पर आज्ञा न होनेके कारण किसीको भीतर प्रवेश करनेका साहस न हुआ। फिर भी मार्कस फेवोनियस नामक एक व्यक्ति, जो बात करनेमें बहुत उच्छृङ्खल था और अण्डबण्ड बोलनेमें ही अपना बड़प्पन समझता था, प्रहरियोंको धक्का देकर भीतर घुस गया और उसने होमरकी यह पङ्क्ति गम्भीरतापूर्वक कही—"मैं हूँ वयोवृद्ध दोनोंसे, कर लो मम शासन स्वीकार।" इसपर कैसियस तो हँस पड़ा पर ब्रूटसने अपशब्द कहते हुए उसे बाहर ढकेल दिया।

इससे सम्प्रति उन लोगोंका आपसका झगड़ना बन्द हो गया और वे पृथक् हो गये। सायङ्काल कैसियसने एक भोज दिया जिसमें ब्रूटसने अपने मित्रोंको आमन्त्रित किया। जब सब लोग बैठ गये तो फेवोनियस भी आ धमका। अनाहूत होनेके कारण ब्रूटसने उसे दस्तरख्वानके एक ओर बैठनेको कहा, फिर भी वह आकर बीचमें ही जम गया।

दूसरे दिन ल्यूशियस पेला नामक एक भूतपूर्व उपशासक (प्रीटर) पर सार्डिसनोंने सार्वजनिक रकम हड़प जानेका दोषारोप किया। ब्रूटसने उसे अपमानित और दण्डित भी किया। यह देखकर कैसियस जल भुन कर खाक हो गया क्योंकि कुछ काल पहले उसने उसी प्रकारके आरोपमें दो व्यक्तियोंको आमतौरसे मुक्त कर अकेलेमें कुछ कह देना ही काफी समझा

और उन्हें अपने पदपर रहने दिया था। कैसियसने ब्रूटसपर ऐसे समयमें जब कि नरमी दिखलानेकी आवश्यकता थी, विधानका कठोरताके साथ पालन करनेका आक्षेप भी किया। इसपर ब्रूटसने सीजरकी हत्याके दिनकी याद दिलाते हुए कहा "सीजर स्वयं लूटमार नहीं करता था, वह लूटमार करनेवालोंका समर्थक था, यदि न्यायकी तरफसे आँख बन्द कर लेना ही अभिप्रेत था तो अपने अनाचारोंको अबाधित रूपसे चलने देनेकी अपेक्षा सीजरके मित्रोंका अत्याचार सहन कर लेना अधिक अच्छा था, क्योंकि उस हालतमें हम लोग सिर्फ कायर समझे जाते, पर अब तो हम अन्यायी ही समझे जायँगे।" इस बातसे ब्रूटसके सिद्धान्तोंका भलीभाँति परिचय मिल जाता है।

एशियासे प्रस्थान करनेके समय उसने एक विचित्र छाया मूर्ति देखी। वह अल्पाहार कर बराबर काममें जुटा रहता था। दिनको तो कभी सोना ही न था, रातको भी कार्य समाप्त किये बिना सोनेका नाम नहीं लेता था। इस समय, युद्धमें प्रवृत्त होनेके कारण, वह रात्रिके भोजनके बाद एक नींद ले चुकने पर युद्ध सम्बन्धी अत्यावश्यक कार्योंकी व्यवस्थामें तीसरे पहरके समयतक, जब कि जनशासक आदि आदेशके लिए आते थे, लगा रहता था। एशियासे जानेके एक रात पहले वह रातमें देर तक अपने खेमेमें अकेले जागता रहा। एक दीपक मन्द प्रकाशसे जल रहा था, सभी सैनिक निद्राकी गोदमें विश्राम कर रहे थे, चारों ओर निस्तब्धता छायी हुई थी और वह किसी विषयके सम्बन्धमें गम्भीरताके साथ कुछ सोच रहा था, तबतक खेमेमें किसीके प्रवेश करनेका उसे भान हुआ। द्वारकी ओर दृष्टिपात करने पर उसने पासमें एक भीमाकार भयङ्कर आकृति देखी। उसने निर्भीकतासे पूछा "तुम मनुष्य हो या देव? मेरे पास किस लिये आये हो?" उस आकृतिने उत्तर दिया "ब्रूटस, मैं तुम्हारा दुर्भाग्य हूँ, मैं तुमसे फिलिपीमें मिलूँगा।" ब्रूटसने जरा भी विचलित न होकर कहा "अच्छा, तुमसे वहीं मिलूँगा।"

आकृतिके अन्तर्धान होनेपर ब्रूटसने नौकरोंसे शुल्म का पूछा तो उन्होंने कहा कि हमने न तो कोई आवाज सुनी है और न किसीको देखा ही है। प्रातःकाल होने पर उसने कैसियससे भी इसकी चर्चा की। कैसियसने, जो एपिक्यूरसके सिद्धान्तोंका अनुयायी था और इस विषयके सम्बन्धमें ब्रूटसके साथ बराबर बहस किया करता था, उससे कहा—"हमारे सम्प्रदायका मत है कि जो कुछ हम देखते हैं, सब सत्य ही नहीं होता। हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ भी भ्रममें डालनेवाली होती हैं। जो भाव ये ग्रहण करती हैं वे इतने परिवर्तनशील होते हैं और ऐसे रूप धारण कर लेते हैं कि प्रकृतिमें उनका मूल रूप दृष्टि-गोचर ही नहीं होता। मनुष्यके मस्तिष्ककी बनावट भी कुछ ऐसी है कि वह तरह तरहके रूपोंकी कल्पना किया करता है। स्वप्नके दर्शनोंसे यह बात भली भाँति प्रमाणित हो जाती है। मस्तिष्ककी गति बराबर जारी रहती है और कल्पना ही वह गति है। शरीरके क्लान्त रहने पर मस्तिष्ककी गति स्थगित या दूसरे मार्गमें प्रवृत्त हो जाती है। सारांश यह कि भूत प्रेतका अस्तित्व सर्वथा असंभव है, यदि हो भी तो उनका मनुष्यका रूप धारण करना तथा हम लोगोंके कार्योंका संचालन करनेमें समर्थ होना बिल्कुल निराधार है। मैं तो चाहता था कि इस प्रकारके भूत पिशाच होते तो हम लोग बेड़ा तथा सेना प्रस्तुत करनेके झंझटसे बरी हो जाते और उन्हींको सुदाकर अपना महत्वपूर्ण कार्य चला लेते।" कैसियसने ब्रूटसको सन्तुष्ट करनेके निमित्त यही दलील पेश की। यात्रा आरंभ करते समय दो उकाब प्रथम दो झंडों पर आकर बैठ गये। सैनिक उनको बराबर खिलाते रहे; वे उनके साथ साथ फिलिपीतक गये, पर युद्ध आरंभ होनेके एक दिन पूर्व ही उड़ गये।

ब्रूटस इस प्रदेशमें अधिकांश स्थानों तथा जातियोंका पहले ही दमन कर चुका था, फिर भी उसने समुद्रके किनारे किनारे इस विचारसे दौरा किया जिसमें कोई सिर उठानेवाला हो तो उसका दमन कर दिया जाय। इस समय सिम्बोलमके पास नारबेनस अपना शिविर डाले हुए था। इन

लोगोंने उसे इस प्रकार घेरा कि उसे अपनी सारी सेना नष्ट कर किसी प्रकार जान लेकर भागना पड़ा। सीज़र अस्वस्थताके कारण बहुत पीछे रह गया था। ऐन्टोनी इतनी फुर्तीसे नारबेनसकी रक्षाके लिए पहुँचा कि ब्रूटसको उसके वहाँ आनेका विश्वास ही नहीं होता था। दस दिन बाद सीज़र वहाँ पहुँचा। उसने ब्रूटसके सामने तथा ऐन्टोनीने कैसियसके सामने अपने डेरे डाल दिये।

दोनों सेनाओंके मध्यमें जो मैदान था वह रोमनोंमें कैम्पी फिलिप्पी नामसे प्रसिद्ध है। इतनी बड़ी रोमन सेनाएँ परस्पर युद्धके लिए कभी प्रस्तुत नहीं हुई थीं। संख्यामें ब्रूटसकी सेना सीज़रकी सेनाकी अपेक्षा कम थी पर साज-सामानमें वह उससे कहीं बढ़ी हुई थी। ब्रूटसने सैनिकोंमें इतना धन वितरण किया था कि उनके हथियार सुवर्ण और रजतके बने हुए थे। उसने और सब बातोंमें अपने सेनानायकोंको किफायत करनेका आदेश दे रखा था पर इस सम्बन्धमें उसका यह ख्याल था कि इस प्रकारकी सम्पत्ति यश कामी सैनिकोंके जोशको बढ़ायेगी और जो लोग धनके लोभी होंगे वे इन कीमती हथियारोंको अपनी प्रधान सम्पत्ति समझते हुए बचाये रखनेके निमित्त युद्धमें अधिक वीरता दिखलायेंगे।

सीज़रने सेनामें शुद्धि-यज्ञ किया और सैनिकोंको बलिप्रदानके निमित्त पाँच पाँच ड्रैकमा और कुछ गल्ला बाँटा। ब्रूटसने सीज़रको नीचा दिखानेके अभिप्रायसे मैदानमें सार्वजनिक यज्ञ किया और बलिप्रदानके निमित्त पशु वितरण करनेके अलावा प्रत्येक सैनिकको पचास ड्रैकमा दिया। सैनिक उसे बहुत मानते और उसके लिए रक्त बहानेको बराबर तैयार रहते थे। कहा जाता है कि यज्ञके समय कैसियसको एक अपशकुन हुआ। बलिदानके अवसरपर जो पुष्पमाला धारण करनेके लिए उसे दी गयी, उसका ऊपरवाला सिरा नीचे था। यह भी कहा जाता है कि धार्मिक जलूसमें विजय प्रतिमा ढोनेवाला व्यक्ति फिसल कर गिर पड़ा जिससे प्रतिमा भी जमीनपर लुढ़क गयी। पड़ावके ऊपर कितने ही शिकारी पक्षी चक्कर

लगाया करते थे और खाइयोंमें मधुमक्खियोंके झुण्ड देख पड़ते थे। ज्योतिषियोंने इन चिन्होंको देख कर उस स्थानको छोड़नेकी राय दे दी। एपिक्यूरियन मतका अनुयायी होते हुए भी कैसियस मूढ़ विश्वाससे प्रभावित होने लगा और उसके सैनिक तो इन अपशकुनोंके कारण बिल्कुल ढीले पड़ गये। इससे कैसियसका विचार इसी युद्धपर दारमदार न रखकर युद्धको और आगे बढ़ानेका हो गया, क्योंकि सैनिकोंकी संख्या कम होते हुए भी रसदकी कोई कमी नहीं थी। पर ब्रूटसको यह बात पसन्द नहीं आयी। वह चाहता था कि युद्धमें शीघ्रातिशीघ्र प्रवृत्त होकर या तो हम अपने देशको स्वतंत्र ही कर लें या युद्धसम्बन्धी कष्टों और भारोंसे दबे हुए व्यक्तियोंको बरी हो कर दें। कई खंडयुद्धोंमें सफलता प्राप्त होते देख उसका मनसूबा और भी बढ़ गया था। कई सैनिकोंके शत्रुपक्षमें चले जाने तथा बहुतोंको एक दूसरेपर सन्देह और आरोप करते हुए देखकर कैसियसके कई मित्र ब्रूटसके ही पक्षमें हो गये। अटेलियस नामका एक व्यक्ति फिर भी युद्ध दूसरे शीतकाल तक स्थगित करनेके लिए जोर देता रहा। ब्रूटसने जब उससे पूछा कि तुम इसमें क्या लाभ देखते हो, तो उसने उत्तर दिया—'यदि और कोई लाभ नहीं तो कमसे कम कुछ अधिक दिनोंतक हम जीवित तो रह सकेंगे।" कैसियस तथा उसके अन्यान्य अफसर इस उत्तरसे बड़े असन्तुष्ट हुए और दूसरे ही दिन युद्ध करनेका निश्चय हो गया।

उस रात ब्रूटस भोजन करते समय बहुत प्रसन्न एवं आशान्वित देख पड़ा और कुछ देरतक अपने मित्रोंके साथ दर्शनशास्त्र पर तर्क कर शयन करने चला गया। लेकिन मेसलके कथनानुसार कैसियसने कुछ चुने हुए आत्मीय जनोंके ही साथ एकान्तमें भोजन किया। उस समय वह अपने स्वभावके प्रतिकूल चिन्ताग्रस्त और मौन था। भोजनके बाद उसने मेसलका हाथ पकड़ कर प्रेमके साथ कहा—"मेसल, तुम मेरे साक्षी रहना। अपने देशकी स्वाधीनताका दारमदार मैं एक ही युद्धपर

पागलोंकी तरह व्यग्र होकर रम रहा हूँ। फिर भी अपने भाग्यका भरोसा कर हमें पुरुषार्थ दिखलाना चाहिये। बिना सब सोचे समझे कार्य आरंभ करते हुए भी अपने भाग्यका अविश्वास करना अनुचित होगा।" मेसल-का कहना है कि ब्रूटससे विदा होते समय ये ही कैसियसके अन्तिम शब्द थे।

दूसरे दिन प्रातःकाल कैसियस तथा ब्रूटसके पडावपर युद्धके संकेत स्वरूप चमकीले लाल वस्त्र लटका दिये गये और जब दोनों सेनाओंके मध्य स्थानमें ये दोनों परस्पर मिले तो कैसियसने ब्रूटससे कहा—"ईश्वर करे, हम लोगोंकी आशा सफल हो और हम लोग अपना शेष जीवन आनन्दके साथ व्यतीत कर सकें। पर मानवजीवन सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ प्रायः अनिश्चित होती हैं और यदि युद्धका परिणाम बुरा हुआ तो हम लोगोंका परस्पर मिलना भी दुस्साध्य ही होगा, ऐसी हालतमें मैं जानना चाहता हूँ कि पलायन और मृत्युके सम्बन्धमें तुम्हारे क्या विचार हैं।" ब्रूटसने उत्तर दिया—"मैं अपनी तरुणावस्थामें, जबकि मैं व्यवहारमें कुशल नहीं था, आत्महत्या करनेके कारण केटोकी निन्दा किया करता था। मेरी समझमें इस प्रकारका कार्य अधार्मिक और भीरुताका है, क्योंकि इसमें ईश्वरने जो मार्ग निर्धारित कर रखा है उससे हटने और दुःखोंका निर्भीकतासे सामना न कर उससे भागकर पिंड छुडानेका प्रयत्न किया जाता है, पर अब मेरे विचार कुछ और हो गये हैं। यदि परिणाम आशाके प्रतिकूल हुआ तो मैं भाग्यकी और आशा न कर जिस स्थितिमें हूँ उसीसे सन्तोष कर, मृत्युका आलिंगन करना पसन्द करूँगा। मैंने सीज़रकी हत्याके ही दिन अपना जीवन मातृभूमिके चरणोंमें अर्पित कर दिया, उसके बादसे मेरा जीवन स्वाधीनता और सम्मानके साथ व्यतीत होता रहा है।" इन शब्दोंको सुनकर कैसियस मुसकुराया और ब्रूटसको गले लगाकर बोला—"इसी संकल्पके साथ हम लोग शत्रुपर आक्रमण करें। यदि हम लोग विजयी न हों तो भी अब डरनेकी कोई बात नहीं

रही।" इसके अनन्तर इन लोगोंने युद्धके सम्बन्धमें अपने मित्रोंसे कुछ मंत्रणा की। ब्रूटसने दाहिने पार्श्वका नेतृत्व ग्रहण करनेकी इच्छा प्रकट की। अनुभव और अवस्थाके विचारसे कैसियसको ही इस स्थानपर होना चाहिये था, फिर भी उसने ब्रूटसकी बात मान ली और मेसलके साथ सभी प्रमुख वीरोंको उसी पार्श्वमें रख दिया। सुन्दर सुन्दर अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित ब्रूटसके अश्वारोही व्यूहबद्ध होकर निकल पड़े और पीछेसे पैदल सेना भी प्रस्तुत हो गयी।

ऐण्टोनीके सैनिक इस समय कैसियसका समुद्रसे सम्बन्ध-विच्छेद करनेके निमित्त खाईं खोदनेमें लगे हुए थे। सीज़र अभी बीमारीकी हालतमें खेमेमें ही पड़ा हुआ था। उसकी सेनाको इस बातका स्वप्नमें भी अनुमान न था कि जमकर लड़ाई होगी। उन लोगोंने यही समझा कि खाईं खोदनेवालोंको परेशान करनेके लिए कोई टुकड़ी आ रही होगी, इसलिए जब उन्होंने खाइयोंसे फौजका शोरगुल सुना तब उन्हें बड़ा विस्मय हुआ। तबतक ब्रूटसने नायकोंके पास युद्धकी आज्ञा भी भेज दी। अधिकांश सैनिक आज्ञा पानेके पूर्व ही शत्रुओंपर टूट पड़े। आक्रमणकी कोई व्यवस्था न होनेके कारण गड़बड़ी मच गयी और पलटनें एक दूसरेसे पृथक् भी हो गयीं। मेसल तथा उसके पीछेकी सेना विशेष रूपसे मारकाट किये बिना ही सीज़रकी सेनाके वामपार्श्वको पारकर सीज़र-के पड़ावपर टूट पड़ी। इसके थोड़ी ही देर पहले सीज़र एक मित्रके स्वप्न के अनुसार अन्यत्र हटा दिया गया था। सैनिकोंने विश्वास कर लिया कि वह मार डाला गया, क्योंकि उसकी पालकीपर जो खाली पड़ी हुई थी कई जगह भालोंसे आघात किया गया था। पड़ावमें खूब मारकाट हुई। दो हजार लैसीडीमोनियन, जो सीज़रकी सहायताके लिए कुछ ही काल पहले आये थे, मार डाले गये। सीज़रकी सेनाके अग्रभागका सामना करनेवाली पलटनोंने शीघ्र ही उसका मुख मोड़ दिया और तीन पलटनोंको तलवारके घाट उतार दिया। विजयकी उमंगमें आकर भागनेवालोंका पीछा करती

हुई थे उनके पड़ावमें आ पहुँचीं। ब्रूटस भी इन्हींके साथ था। शत्रुका पीछा करते हुए दक्षिण पार्श्वके दूर चले जानेके कारण ब्रूटसकी सेनाका वाम पार्श्व बिल्कुल अरक्षित अवस्थामें पड़ गया। शत्रुने इस स्थितिसे लाभ उठानेके विचारसे जोरोंके साथ आक्रमण किया। मध्य दलपर तो इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा—उसने बड़ी दृढ़ताके साथ इस आक्रमणका सामना किया—पर वाम पार्श्वने, जो कैसियसकी अध्यक्षतामें था, पीठ दिखला दी, क्योंकि सैनिक इस समय बिल्कुल अव्यवस्थित हो रहे थे और उन्हें दाहिने पार्श्वका भी कुछ पता नहीं था। शत्रुके सैनिक पीछा करते हुए कैंपतक पहुँच गये। उन्होंने उसे लूटा और विनष्ट भी कर दिया। इस समय उनके दोनों अधिनायकोंमें कोई भी वहाँ मौजूद नहीं था—ऐण्टोनी पहले आक्रमणकी भयंकरतासे बचनेके निमित्त दलदलकी ओर हट गया था और सीजरका कहीं पता ही नहीं था। कुछ सैनिकोंने सीजरकी आकृतिका वर्णन कर और रक्त-रंजित तलवार दिखला कर ब्रूटसको उसके मारे जानेका भी विश्वास दिलानेका प्रयत्न किया। तब तक ब्रूटसके मध्य दलने भी शत्रुओंको पीछे हटा दिया और उनके बहुतसे सैनिकोंको मार डाला। जिस प्रकार उधर कैसियसकी पराजय हुई, उसी प्रकार इधर ब्रूटसकी सर्वत्र विजय हुई। ब्रूटसने समझा कि कैसियस भी मेरी ही तरह विजय लाभ कर रहा है, इससे वह उसकी सहायता करने नहीं गया। कैसियसने भी सहायताकी आशा नहीं की क्योंकि उसने समझा कि ब्रूटस भी मेरी तरह पराजित हो गया। यह एक ऐसी भूल हुई जिससे उनकी बनी बनायी बात चौपट हो गयी। ब्रूटसकी विजयका यह स्पष्ट प्रमाण है कि उसने एक व्यक्तिकी भी जान गँवाये बिना शत्रुओंके कई झंडे आदि छीन लिये। पड़ाव लूट कर लौटते समय कैसियसका सर्वोच्च खेमा तथा चीजें अपने पूर्व रूपमें न देख कर ब्रूटसको बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ लोगोंने जिनकी दृष्टि कुछ तीक्ष्ण थी, ब्रूटससे कहा कि हम लोगोंने कैसियसके शिविरमें कुछ ऐसे चमकते हुए शस्त्र देखे हैं जो रक्षकों

के नहीं हो सकते, फिर भी इतनी पल्टनोंके पराजित होने पर जिस संख्या-में शव होने चाहिए, उतने नहीं हैं। इस बातसे ब्रूटसको कैसियसके दुर्भाग्यकी शंका होने लगी। अतः पीछा करनेवालोंको बुलाकर वह अब कैसियसकी सहायताके लिए आगे बढ़ा। अब कैसियसकी हालत सुनिए।

कैसियस ब्रूटसके सैनिकोंसे रुष्ट होगया था क्योंकि उन्होंने युद्धकी आज्ञा पाये बिना ही आक्रमण कर दिया था। विजय प्राप्त होने पर शेष शत्रुओंको परिवेष्टित करनेका कार्य छोड़कर वे लूटपाट और पीछा करनेमें लग गये, इस बातसे भी उसे बड़ी अप्रसन्नता हुई। प्रतीक्षा करते रहने और बहादुरीके साथ आगे बढ़नेमें विलंब होनेके कारण शत्रु-सेनाके दक्षिण पार्श्वने इनको घेर लिया, जिससे अश्वारोही तेजीके साथ समुद्रकी ओर भाग खड़े हुए और पैदल सेना भी पीठ दिखाने लगी। कैसियसने भागते हुए सैनिकोंको रोकनेकी जी-जानसे कोशिश की। वह एकके हाथसे झंडा छीन कर खड़ा हो गया, पर कोई लाभ नहीं हुआ। यहाँ तक कि उसके अंग-रक्षक भी डटे रहनेका साहस नहीं कर सके। अन्तमें उसको सिर्फ कुछ आदमियोंको लेकर पासकी एक पहाड़ीकी शरण लेनी पड़ी। उसकी दृष्टि क्षीण थी, इस कारण वह और कुछ न देखकर किसी प्रकार शिविरका विनाश देख सका, पर उसके साथियोंने एक अश्वदलको, जिसे ब्रूटसने भेजा था, अपनी ओर आते हुए देखा। कैसियसको विश्वास हुआ कि शत्रु लोग मेरा पीछा करने आ रहे हैं, फिर भी उसने टाइटीनियस नामक साथके एक व्यक्तिको इस सम्बन्धमें दर्याफ्त करनेके लिए भेजा। उसे देखते ही अश्वारोही सैनिक उसे कैसियसका विश्वासपात्र मित्र एवं अनुयायी समझ कर हर्ष मनाते हुए उसका आलिंगन करने लगे। उनमेंसे कुछ घोड़ेसे उतर पड़े और उसे चारों ओरसे घेर कर शोर गुल मचाते हुए आगे बढ़े। यही सबसे भयंकर भूल हुई क्योंकि कैसियसने समझा कि शत्रुओंने टाइटीनियसको पकड़ लिया है। वह उच्च स्वरमें बोल उठा—"जीनेकी इच्छासे प्रेरित होकर मैंने अपनी

आँखोंके सामने अपने मित्रको शत्रुओंके हाथ समर्पित कर दिया है।" इसके बाद वह एक निर्जन खेमेमें अपने एक मुक्त दास पिंडारसको लेकर चला गया। इसी अवसरके लिए उसने इस व्यक्तिको बहुत दिनोंसे रख छोड़ा था। उसने अपना वस्त्र सिरके ऊपर कर लिया और खुली गरदन पिंडारसके आगे झुकाकर उसे पृथक् कर देनेकी आज्ञा दी। उसका कटा हुआ सिर तो पाया गया पर पिंडारसको इसके बाद किसीने नहीं देखा। इससे कुछ लोगोंको सन्देह होता है कि उसने कैसियसकी आज्ञा पाये बिना ही उसका वध कर दिया। कुछ ही कालके अनन्तर कैसियसके साथके लोगोंने टाइटीनियसको अश्वारोहियोंके साथ अपने स्वामीकी ओर तेजीसे जाते देखा। अधिनायककी मृत्यु पर लोगोंको रोते कराहते देखकर उसे अपनी भूलपर बड़ा पश्चात्ताप हुआ। उसने अपने ऊपर देर करनेका दोषारोप करते हुए आत्महत्या कर ली।

कैसियसकी पराजयका निश्चय हो जाने पर ब्रूटस उसकी ओर शीघ्रतासे बढ़ा, पर पड़ावके पास पहुँचनेके पूर्व उसकी मृत्युकी कोई सूचना उसे नहीं मिली। उसकी मृत्युपर शोक प्रकट कर उसने, पड़ावमें अव्यवस्था फैल जानेकी आशंकासे, लाशको दफनानेके लिए थेसस भेज दिया। इसके अनन्तर उसने अपने सैनिकोंको एकत्र कर ढाढ़स बँधाया और उन्हें आवश्यक पदार्थोंसे रहित देखकर प्रत्येकको दो दो हजार ड्रैकमा पुरस्कार देनेका वचन दिया। इस उदारतापूर्ण कार्यसे सैनिक पुनः जोशमें आ गये और उसकी प्रशंसा करने लगे। ब्रूटसको विजयकी पूरी आशा थी क्योंकि उसने सिर्फ थोड़ी सी पल्टनोंके सहारे शत्रु सैनिकोंको परास्त कर दिया था। यदि उसकी पल्टनें लूटमारमें न फँसतीं तो शत्रु पूर्णतः पराभूत हो गये होते। नौकरोंको मिलाकर ब्रूटसके पक्षके आठ हजार आदमी खेत रहे पर मेसलके कथनानुसार शत्रुपक्षके दूने आदमी मारे गये, जिससे ब्रूटसकी अपेक्षा शत्रुओंका दिल अधिक बैठ गया था, पर इसी बीचमें डेमेट्रियस नामक एक व्यक्ति कैसियसकी पोशाक और

तलवार लेकर ऐण्टोनीके पास पहुँच गया जिससे उसका उत्साह इतना बढ़ गया कि वह दूसरे दिन प्रभात होते ही सैनिकोंको व्यूहबद्ध कर युद्धके लिए प्रस्तुत हो गया। ब्रूटसको दोनों शिविरोंमें बड़ी अव्यवस्था देख पड़ी; उसके अपने शिविरमें रणबन्दियोंकी संख्या इतनी अधिक हो गयी थी कि उनपर कड़ा पहरा रहनेके लिए अत्यधिक प्रहरियोंकी आवश्यकता थी और कैसियसके शिविरमें अधिनायकके परिवर्तनके कारण सैनिक बहुत अस्थिर हो रहे थे। इसके साथ ही साथ विजित और विजयी सैनिकोंमें परस्पर कुछ द्वेष और शत्रुताका भी भाव पैदा हो गया था। इस परिस्थितिको देखकर ब्रूटसने युद्धसे परहेज करते हुए सैनिकोंको व्यूहबद्ध रखनेका विचार किया। बन्दियोंमें दासोंकी बहुत बड़ी सख्या थी। इनमेंसे बहुतसे तो सैनिकोंमें मिल गये थे। उनके वध करनेकी आज्ञा दे दी गयी। नागरिकों और मुक्त लोगोंमेंसे कुछको उसने यह कहकर छोड़ दिया कि वे शत्रुके साथ रहकर भी बन्दी सदृश ही रहेंगे, किन्तु यहाँ उसके साथ रहते हुए मुक्त और नागरिक ही समझे जायँगे। अपने मित्रों और अफसरोंको उनसे बदला लेनेपर तुले हुए देखकर ब्रूटसको उन्हें छिपाना या चुपकेसे भगा देना पड़ा। रणबन्दियोंमें वोलमनियस नामक एक नट और सक्यूलियो नामक एक भाँड़ भी था। ब्रूटसने इनकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया पर उसके मित्रोंने उसके सामने इनको पेश कर यह आरोप लगाया कि वे इस हालतमें भी नकल और मज़ाक करनेसे बाज़ नहीं आते। इस समय ब्रूटस कोई और बात सोच रहा था, इस कारण इस आरोपके सम्बन्धमें उसने कुछ नहीं कहा। मेसल कारविनसने यह राय दी कि इनको सरेआम कोड़े लगाकर नंगे बदन शत्रुसेनाके अधिनायकोंके पास भेज दिया जाय जिसमें उनको इस बातका स्पष्ट पता लग जाय कि किस प्रकारके आदमियोंको उन्होंने अपनी युद्धयात्रामें मित्रके तौरपर साथ रखा है। कुछ लोग तो इस विचारपर हँस पड़े पर पबलियस कास्काने, जिसने सीज़रपर पहला वार किया था, ब्रूटससे कहा—'कैसियसको

मृत्युपर शोर मचानेका यह अवसर गर्हित था है। जो लोग उसकी हँसी उड़ाते हैं उनके सम्बन्धमें तुम्हारा जो निर्णय होगा उसीसे इस बातका निश्चय होगा कि उस स्वर्गीय अधिनायकके प्रति तुम कितना सम्मान प्रदर्शन करते हो।' इसपर ब्रूटसने कुछ चिढ़ते हुए कहा—"कास्का, इस सम्बन्धमें मुझसे पूछनेकी आवश्यकता ही क्या है? जो तुम उचित समझो स्वयं कर लो।" ब्रूटसके इस उत्तरको उसकी स्वीकृति मानकर इन दोनोंका वध कर दिया गया।

इसके अनन्तर उसने पूर्व प्रतिज्ञानुसार सैनिकोंको पारितोषिक दिये। बिना आज्ञा पाये युद्धमें अव्यवस्थित रूपसे प्रवृत्त होनेके कारण सैनिकोंको कुछ मीठी फटकार सुना कर उसने उनको आश्वासन दिया कि यदि तुम युद्धमें बहादुरीके साथ लड़े तो मैं थेसालोनिका और लैसीडीमन, ये दो नगर तुम्हारी लूटके लिए छोड़ दूँगा। ब्रूटसके जीवन भरमें यही एक अमार्जनीय कलङ्क नजर आता है। यह सत्य है कि बादमें ऐण्टोनी और सीज़रने सैनिकोंके पारितोषिक-वितरणमें अत्यधिक निर्दयताका परिचय दिया—इटलीके पुराने निवासियोंकी भूमि छीन कर ऐसे व्यक्तियोंको दे दी जिनका कोई हक नहीं होता था, पर उनका यह कार्य उनके साम्राज्यवाद तथा स्वेच्छातन्त्रके सिद्धान्तके सर्वथा अनुकूल था। पर धर्माचरणके लिए प्रसिद्ध ब्रूटसकी बात और थी, क्योंकि वह न्यायके मार्गसे विचलित होकर न तो विजय प्राप्त कर सकता था और न अपनी रक्षा, सो भी खास कर कैसियसकी मृत्युके बाद, क्योंकि उसकी जीवितावस्थामें अगर कोई कठोरताका काम हो जाता था तो सलाह-कारकी हैसियतसे सारा दोष उसीके मत्थे मढ़ा जाता था। तूफानके कारण पोतका पतवार भग्न हो जानेपर नाविक कोई काष्ठ खण्ड लेकर उसके स्थानमें जड़ देते हैं और पहिलेकी तरह काम न निकलनेपर भी किसी तरह काम चलाते रहते हैं। ब्रूटसकी स्थिति भी इस समय ठीक ऐसी ही हो रही थी। ऐसे नाजुक वक्तमें इतनी बड़ी सेनाका सञ्चालन उसे

करना पड़ा था पर इस अवसरके उपयुक्त उसके साथ कोई सेनानायक नहीं था। ऐसी हालतमें उसे लाचार होकर जो उस स्थलपर मौजूद थे उन्हींसे राय लेनी पड़ती थी और तदनुकूल ही उसे कार्य करना पड़ता था। मतलब यह कि उसे ऐसी राय मान लेनी पड़ती थी जिससे कैसियस-के सैनिक काबूमें रखे जा सकें क्योंकि अधिनायकके न होनेपर शिविरमें वे बड़ी धृष्टता और उच्छृंखलता दिखलाते थे, यद्यपि रणभूमिमें अपनी पराजयका स्मरण होते ही कायर बन जाते थे।

सीज़र और ऐण्टोनीकी स्थिति भी अच्छी नहीं थी क्योंकि एक तो उनके पास रसद बहुत ही कम थी, दूसरे उनका पड़ाव निम्न स्थानमें होनेके कारण उनके लिए भीषण ठण्डका मुकाबला करनेकी संभावना थी। उन्हें बाध्य होकर दलदलकी ओर हटना पड़ा था। वर्षा हो जानेके कारण उनके खेमे जल और कीचड़से भर गये थे। अधिक ठण्डक पड़नेके कारण वह जल भी बर्फके रूपमें परिणत हो गया। वे इसी दुरवस्थामें थे, तबतक उन्हें सामुद्रिक युद्धमें पराजित होनेकी सूचना मिली। ब्रूटसके पोतोंने सीज़रके पोतों-को, जो इटलीसे बहुतसे सैनिक ला रहे थे, ऐसी बुरी तरह पराजित किया कि केवल कुछ ही आदमी बच निकले और उन्हें भी किसी प्रकार पोतके पाल और रस्सेका भक्षण कर जीवन-रक्षा करनी पड़ी। ब्रूटसको इस विजयकी सूचना मिलनेके पहले ही वे युद्धमें भिड़ जाना चाहते थे। स्थलयुद्ध और जलयुद्ध दोनों एक ही दिन हुए थे पर सेनानायकोंकी ग़लती या दुर्भाग्यसे इस विजयकी सूचना ब्रूटसको बीस दिनोंतक नहीं मिली। यदि यह सूचना उसे मिल गयी होती तो वह दूसरे युद्धमें प्रवृत्त न होता, क्योंकि उसके पास काफी रसद मौजूद थी और उसका शिविर भी मौकेकी जगहपर था। उसे वहाँ न तो ठण्डकका उतना भय था और न शत्रुओंकी ओरसे कोई खतरा। इन सब बातोंसे उसे विजयकी पूरी आशा थी पर दैवको कुछ और मंजूर था, उसे तो रोम साम्राज्यको कई व्यक्तियोंके शासनमें न रखकर एकके ही शासनमें रखना अभीष्ट

था। युद्धके ठीक एक दिन पहले, संध्या समय, क्लाडियस नामक एक व्यक्तिने, जो शत्रुपक्षसे पृथक् होकर आया था, जलयुद्धमें सीज़रकी पराजयकी बात कही, पर उसकी बातका विश्वास नहीं किया गया। लोगोंने यह समझ कर कि इसने या तो कृपापात्र बननेके लिए यह बात गढ़ ली है या इसे ग़लत खबर मिली है, उसे ब्रूटसके सामने पेश भी नहीं किया।

लोगोंका कहना है कि उस रात वह छायामूर्त्ति अपनी पहली आकृतिमें पुनः ब्रूटसके सामने आयी पर बिना कुछ कहे ही अन्तर्धान हो गयी। पब्लियस वोलमनियस नामक दार्शनिकने, जो आरम्भसे ही ब्रूटसके साथ साथ शस्त्र धारण करता आया था, इसका कहीं उल्लेख नहीं किया है। उसका कथन है कि एक झण्डेके सिरेपर मधुमक्खियोंका झुंड एकत्र हो गया था और एक सेनानायकके हाथसे आप ही आप रोगनगुल पसीनेकी तरह निकलने लगा जो कई बार पोंछ डालनेपर भी बन्द नहीं हुआ; युद्धके थोड़ी ही देर पहले दो उकाब दोनों सेनाओंके मध्य भागमें परस्पर लड़ पड़े। सभी लोग टकटकी लगाकर उनकी ओर देखने लगे। कुछ कालके अनन्तर ब्रूटसकी ओरका उकाब हारकर भाग गया। इथिओपियनवाली बात भी विशेष रूपसे प्रसिद्ध है। पड़ावका द्वार खोलते समय झण्डा बरदारसे इसकी भेंट हो गयी। कुछ सैनिकोंने इसे अपशकुन मानकर उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले।

सैनिकोंको व्यूहबद्ध कर लेनेपर युद्धकी आज्ञा देनेके पूर्व ब्रूटस कुछ देर रुक गया। सेनाकी पंक्तियोंका निरीक्षण करते समय कुछके सम्बन्धमें उसे सन्देह हुआ और कुछ लोगोंकी शिकायत भी उसने सुनी। रंगढंगसे उसे मालूम हो गया कि अश्वदलमें युद्ध करनेका उत्साह नहीं है बल्कि वह इस बातकी प्रतीक्षामें है कि पैदल सेना क्या करती है। इसके अलावा केमुलैटस नामक एक वीर सैनिक ब्रूटसके पाससे होते हुए उसके देखते देखते शत्रुपक्षसे जा मिला। इससे उसके दिलपर गहरी चोट पहुँची। कुछ तो क्रोध और कुछ अन्य सैनिकोंके पक्षत्याग तथा दगाबाजीकी

आशंकासे लगभग तीन बजे वह शत्रुओंकी ओर बढ़ा। ब्रूटसने शत्रुके वामपार्श्वका मुख मोड़ दिया। जब ब्रूटसके वामपार्श्वको आगे बढ़नेका आदेश हुआ तो संख्यामें कम होनेके कारण सैनिकोंने घेर लिये जानेके डरसे अपनी पंक्ति और लम्बी कर दी जिससे वह बहुत पतली हो गयी। फल यह हुआ कि मध्य भाग शत्रुओंका आक्रमण सहन न कर भाग खड़ा हुआ। इसके अनन्तर शत्रुओंने ब्रूटसको चारों ओरसे घेर लिया। इस अवसरपर उसने अपनी वीरता और रणकौशलका बहुत अच्छा परिचय दिया। पर जो बात पहले युद्धमें लाभदायक सिद्ध हुई थी, वही इसमें हानिकारक प्रमाणित हुई। पहले युद्धमें शत्रुकी पराजित सेना बिलकुल नष्ट हो गयी पर कैसियसकी पराजित सेना बहुत कुछ बच रही। इन सैनिकोंने सेनामें संक्रामक रोगकी तरह भय और अव्यवस्था फैला दी। केटोका पुत्र मार्कस इसी स्थलपर अपनी वीरता प्रदर्शित करते हुए वीरगतिको प्राप्त हुआ। न तो वह भागा और न अपने स्थानसे ही हिला-डुला बल्कि बराबर लड़ता रहा और अन्तमें अपना परिचय देते हुए तथा अपने पिताका नाम लेते हुए शत्रुशत्रोंके ढेरपर गिर पड़ा। इस अवसरपर ब्रूटसकी रक्षा करनेमें बहुतेरे वीर सैनिक काम आये।

युद्धस्थलमें ल्यूसिलियस नामक ब्रूटसका एक नेक मित्र था। उसने यह देखकर कि कुछ बर्बर अश्वारोही किसी औरकी ओर कुछ ध्यान न देकर ब्रूटसके पीछे पड़े हुए हैं, अपनी जान जोखिममें डाल कर उन्हें रोकनेका निश्चय किया। उसने अपना नाम ब्रूटस बतला दिया और सीजरके प्रति भय प्रदर्शित कर ऐण्टोनीके पास ले चलनेकी प्रार्थना की। अपनेको परम भाग्यशाली समझते हुए वे उसको खुशी खुशी ऐण्टोनीके पास उसे ले चले और ब्रूटसके पकड़े जानेकी बात एक दूत द्वारा पहले ही ऐण्टोनीके पास कहला भेजी। ऐण्टोनी इससे मिलनेके लिए कुछ आगे चला आया। यह समाचार पाकर और भी बहुतसे लोग उसे देखनेके निमित्त आ गये। कुछ तो उसके भाग्यपर तरस खाते थे और कुछ जीवित

रहनेकी आशासे बर्बरोंका शिकार बननेपर उसे भला बुरा कह रहे थे। निकट आने पर सब लोग रुक गये। ऐण्टोनी सोचने लगा कि मैं ब्रूटससे किस प्रकार मिलूँगा। पास लाये जाने पर ल्यूसिलियसने विश्वासपूर्वक कहा—'ऐण्टोनी' यह निश्चय समझो कि किसी शत्रुने न तो ब्रूटसको पकड़ा है और न उसे जीतेजी पकड़ सकता है। ईश्वर न करे, इस प्रकार धर्मपर भाग्यकी विजय हो! वह चाहे जीवित हो या मृत, किन्तु वह जब पाया जायगा तब ऐसी ही अवस्थामें पाया जायगा जो उसकी मर्यादाके सर्वथा अनुकूल हो। मैं तुम्हारे सैनिकोंको धोखा देकर यहाँ आया हूँ। इसके लिए चाहे तुम जो दण्ड दो, मैं प्रस्तुत हूँ।" ल्यूसिलियसके इन शब्दोंको सुन कर उन लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ, पर ऐण्टोनीने लाने-वालोंकी ओर मुड़कर कहा—"सह-सैनिको, मेरी समझमें ल्यूसिलियसके इस छलसे शायद तुम लोग क्रुद्ध हुए होगे, पर वस्तुतः जिसकी तलाशमें थे उससे अधिक अच्छी चीज तुमने प्राप्त की है। शत्रुकी खोजमें जाकर तुम मेरे मित्रको ले आये हो। यदि तुम ब्रूटसको जीवित लाये होते तो मेरी समझमें नहीं आता कि मैं उसके साथ कैसा बर्ताव करता, पर यह निश्चय है कि ल्यूसिलियस जैसे व्यक्तिका शत्रु होकर रहनेकी अपेक्षा मित्र होकर रहना कहा अधिक अच्छा है।" फिलहाल उसने ल्यूसिलियसको एक मित्रके हवाले कर दिया। उस समयसे वह बराबर उसका सच्चा मित्र बना रहा।

दो चार चुने हुए मित्रों और अफसरोंके साथ कुछ दूर आगे बढ़ने पर ब्रूटस एक झरनेके पास पहुँचा जो खड़ी चट्टानोंके नीचे वृक्षोंके बीचमें से होकर बह रहा था। उसने झरना पार किया और रात्रिके कारण आगे न बढ़नेका निश्चय कर उसी जगह एक चट्टानकी खोहमें बैठ गया। उसने आकाशकी तरफ देखकर, जो तारक मालाओंसे परिपूर्ण था, दो पङ्क्तियोंका उच्चारण किया जिनमेंसे एक यह थी—

'इन बुराइयोंके कर्त्ताको देवराज! दो समुचित दण्ड।'

अब वह युद्धमें काम आये हुए मित्रोंका पृथक् पृथक् नामोच्चारण कर ज़ोरसे रो पड़ा, विशेष कर फ्लेवियस और लेबियोके नामपर, जिनमेंसे एक उसका सहायक और दूसरा इंजीनियरोंका प्रधान था। इसी बीचमें उसका एक मित्र, जिसे प्यास लगी हुई थी, उसे भी तृषित देखकर, शिरस्त्राण लेकर झरनेसे पानी लाने गया। ठीक इसी समय नदीके दूसरे किनारेसे आवाज सुनाई दी, इसपर वोलमनियस ब्रूटसके कवचवाहकको साथ लेकर देखने चला कि यह आवाज़ कैसी है। उन्होंने शीघ्र ही लौटकर पानीके बारेमें दर्याप्त किया तो ब्रूटसने मुसकुराते हुए उत्तर दिया कि सारा पानी समाप्त हो गया, तुम्हारे लिए और आ जायगा। जो व्यक्ति पहले पानी ले आया था वही फिर भेजा गया। वह दुश्मनोंके हाथमें पड़ते पड़ते और चोट खाकर किसी प्रकार प्राण बचाकर वापस आया।

ब्रूटसका अनुमान था कि युद्धमें बहुत कम आदमी काम आये हैं, अतः स्टेटिलियसने शत्रुओंके मध्यमे जाकर शिविरकी हालत देख आनेका भार उठाया। उसने प्रतिज्ञा की कि यदि स्थिति निरापद हुई तो संकेतके तौरपर मशाल दिखला कर लौट आऊँगा। स्टेटिलियसने शिविरमें निरापद पहुँच कर मशाल दिखलायी। बहुत देरतक प्रतीक्षा कर चुकने पर ब्रूटसने कहा 'यदि स्टेटिलियस जीवित रहा तो अवश्य लौटेगा।' पर बात यह हुई कि लौटती बार शत्रुओंने उसे पकड़ कर मार डाला।

रात अधिक जा चुकी थी। ब्रूटसने बैठे बैठे अपना सिर अपने दास क्लाइटसकी ओर झुकाकर उसके कानमें कुछ कहा। क्लाइटस इसका कुछ उत्तर न देकर फूट फूटकर रोने लगा। इसके अनन्तर उसने अपने कवचवाहक डारडेनसको एक तरफ ले जाकर कुछ कहा। अन्तमें उसने वोलमनियससे यूनानी भाषामें अपनी मैत्रीका स्मरण दिलाकर बदनमें तलवार भोंकनेमें सहायता माँगी। उसने तथा औरोंने भी उसकी यह प्रार्थना अस्वीकार कर दी। किसीके यह कहने पर कि हम लोगोंका यहाँ ठहरना अब ठीक नहीं, फौरन भाग चलना चाहिये, ब्रूटसने खड़े होकर कहा "ठीक

है, हम लोगोंको भागना ही चाहिए, पर पैरोंके बल नहीं, हाथोंके बल ।' इसके अनन्तर प्रसन्नतापूर्वक सबसे हाथ मिलाकर उसने कहा "मैं इस बातसे अत्यधिक सन्तुष्ट हूँ कि मेरे सभी मित्र सच्चे प्रमाणित हुए। मैं अपने देशके ही लिहाजसे अपने भाग्यको कोस रहा हूँ। मैं अपनेको केवल पहले ही नहीं, वर्तमान परिस्थितिमें भी विजयी लोगोंकी अपेक्षा अधिक सुखी मानता हूँ। मेरी मृत्युके बाद मेरे धर्माचरणका जो नाम रह जायगा उसे वे अपनी सारी सम्पत्ति और शक्ति लगाकर भी हासिल नहीं कर सकते। पीढ़ी दर पीढ़ी लोग यही कहते जायँगे कि अन्यायी तथा दुष्ट मनुष्योंने नेक और न्यायी मनुष्यका विनाश कर सारा अधिकार अपने हाथमें कर लिया जिसका उन्हें कोई हक न था।" इसके अनन्तर वह सबसे अपने अपने बचावका अनुरोध कर अपने दो तीन घनिष्ठ मित्रोंके साथ वहाँसे हट गया। इनमेंसे एक स्ट्राटो था। अलंकारशास्त्रका अध्ययन करते समय इसके साथ उसका प्रथम परिचय हुआ था। इसको उसने अपने बिलकुल पास खड़ा किया और तलवारकी मूठ दोनों हाथोंमे पकड़ कर उसकी नोकपर गिर कर अपनी जान दे दी। औरोंका कहना है कि ब्रूटसके अनुनय विनय करने पर स्ट्राटो अपना मुख फेरकर तलवार पकड़े रहा और ब्रूटसने झोंकेके साथ उसपर कूदकर जान दे दी।

सीज़रसे मेल हो जाने पर ब्रूटसके मित्र मेसलने स्ट्राटोको सीज़रसे मिलानेके लिए ले जाकर अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे कहा "मेरे परम प्रिय मित्र ब्रूटसकी इसी व्यक्तिने अन्तिम सेवा की थी।" सीजर बड़ी दयालुताके साथ उससे मिला। यह उन यूनानी वीरोंमें था जिन्होंने ऐक्टियममें सीज़रका साथ दिया था। मेसलके बारेमें कहा जाता है कि एक बार सीज़रने उससे कहा कि यद्यपि फिलिपीमें ब्रूटसकी तरफसे लड़ते समय तुम मेरे सबसे भयंकर शत्रु थे, पर ऐक्टियमके युद्धमें तुमने अपनी पूर्ण मैत्रीका परिचय दिया है। इसके उत्तरमें उसने कहा 'सीजर, तुमने मुझे सर्वदा न्यायका ही पक्ष लेते देखा है।'

ब्रूटसका दान मिलने पर ऐण्टोनीने उसपर सबसे कीमती कपड़ा डलवाया। इसे एक आदमीने चुरा लिया। पकड़े जाने पर उसे प्राणदंड दिया गया। ऐण्टोनीने ब्रूटसकी राख उसकी माता सर्वीलियाके पास भेज दी।

उसकी स्त्री पोर्शियाके सम्बन्धमें दार्शनिक निकोलस तथा वलेरियस मैथिमसका कथन है कि वह मरनेके लिए तैयार थी पर उसके मित्र उसे रोके हुए थे और इस सम्बन्धमें वे बराबर सतर्क भी रहते थे। एक दिन उसने जलता हुआ कोयला मुँहमें डालकर मुँह कसकर बन्द कर लिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गयी।

डायन और ब्रूटसकी तुलना

इन दोनों व्यक्तियोंके जीवनके सम्बन्धमें सबसे बड़ी बात यह है कि ये सामान्य स्थितिसे उन्नति कर इस महत्त्वको प्राप्त हुए थे, पर इस सम्बन्धमें डायनका ही पलड़ा भारी पड़ता है, क्योंकि उसका कोई सहायक नहीं था। किन्तु कैसियसने गुणों और सम्मानमें ब्रूटसकी टक्करका न होने पर भी, अपनी वीरता और रणकौशल आदिके द्वारा युद्धमें ब्रूटसको कुछ कम सहायता नहीं पहुँचायी। कुछ लोग तो इस सारे प्रयत्नका मूल कारण उसीको मानते हैं, क्योंकि ब्रूटस स्वेच्छासे इसमें कभी प्रवृत्त ही न होता। पर डायनने युद्धकी सारी तैयारी स्वयं की थी तथा अपने मित्रों और अपने जैसे विचारवाले आदमियोंको भी साथ कर लिया था। उसने ब्रूटसकी तरह युद्धसे ही शक्ति और धनका संग्रह न कर स्वदेशकी स्वाधीनताके लिए अपना सारा धन लगा दिया जो उसके प्रवासमें निर्वाहका एक मात्र साधन था। ब्रूटस तथा कैसियसको अपनी जान लेकर भागना पड़ा था और प्राणदंडकी आज्ञा होनेके कारण उनका पीछा भी किया जा रहा था, इससे कहीं निरापद या शान्तिपूर्वक न रह सकनेके कारण उन्हें शस्त्र ग्रहण करनेपर बाध्य होना पड़ा था, इस युद्धमें आत्मरक्षाका प्रश्न प्रधान और देशकी स्वाधीनताका प्रश्न गौण था। इसके

प्रतिकूल डायन बहुत कुछ निश्चिन्त और सुरक्षित था। निर्वासनकी हालतमें भी निर्वासित करनेवाले अत्याचारीकी अपेक्षा उसका जीवन अधिक सुखमय था। इतना होनेपर भी उसने सिसिलीकी स्वाधीनताके लिए स्वेच्छासे अपने आपको खतरेमें डाल दिया।

फिर, सिसिलीवालोंके डायोनीसियसके पंजेसे और रोमनोंके सीजरके पंजेसे छुटकारा पानेके प्रयत्नमें अन्तर था। डायोनीसियस अपनेको स्वेच्छाचारी स्वीकार करता और सिसिलीवालोंको तरह तरहसे परेशान भी करता रहता था। आरंभमें प्रभुत्व प्राप्त करते समय सीजर भी अपने विरोधियोंके साथ सख्तीसे पेश आया था, पर प्रभुत्व कायम हो जाने पर स्वेच्छाचारिताका सिर्फ नाम ही शेष रह गया था, क्योंकि उसने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे उसपर यह दोष लगाया जा सके। उस समय रोमकी कुछ ऐसी परिस्थिति भी हो गयी थी कि उसका शासनसूत्र एक ही व्यक्तिके हाथमें होना आवश्यक था, ऐसा प्रतीत होता है मानो दैवने रोगग्रस्त साम्राज्यका उपचार करनेके लिए ही सुदक्ष वैद्यके रूपमें सीजरको भेज दिया था। इसीसे जनताको उसकी मृत्युपर बहुत शोक और उसके हत्यारोंपर अत्यधिक क्रोध हुआ था। इसके प्रतिकूल सिराक्यूसनोंने डायनपर डायोनीसियसको भागनेका अवसर देने और पूर्व स्वेच्छाचारीकी समाधिको मटियामेट न करनेका अपराध लगाया था।

यदि इनके सैनिक कार्योंपर विचार किया जाय तो सेनानायककी दृष्टिसे डायन बिल्कुल निर्दोष प्रमाणित होता है। वह सिर्फ अपने ही प्रस्तावोंको कार्यान्वित नहीं करता था बल्कि औरोंकी भूलका भी सुधार किया करता था, पर ब्रूटसने एक ही दावपर सब कुछ बाजी लगा कर और विफल होने पर अपनी स्थिति सुधारनेका कोई उपाय न ढूँढ़ कर बड़ी गलती की। उसने, भाग्यका भरोसा कर, जितना प्रयत्न पाम्पीने किया था उतना भी नहीं किया, सो भी उस स्थितिमें जब कि उसे सेनाका भरोसा और समुद्रपर प्रभुत्व भी प्राप्त था।

ब्रूटसपर सबसे भारी आरोप यह है कि उसने सीजरके प्रति कृतघ्नता दिखलायी । सीजरने ही उसकी रक्षा की थी और उसके कहने पर उसके कई मित्रोंको भी बचाया था। इसके अलावा वह उसे अपना मित्र समझता तथा औरोंकी अपेक्षा उसे अधिक मानता भी था, फिर भी उसीके ऊपर ब्रूटसने अपना हाथ साफ किया । डायनके सम्बन्धमें इस प्रकारकी कोई शिकायत नहीं देख पड़ती । वह जबतक डायोनासियसके परिवारमें था, तबतक उसकी सहायता और उपकार करता रहा पर देशसे निर्वासित हो जाने, स्त्रीके प्रति अपकार और जायदाद जप्त होने पर उसने खुलम खुल्ला युद्ध छेड़ा जो उचित और न्याय्य भी था। यदि इस बातपर दूसरी दृष्टिसे विचार किया जाय तो ब्रूटस आगे बढ़ जाता है। दोनोंका महत्त्व अत्याचार और दुष्टताके प्रति घृणा और विरोध प्रदर्शन करनेमें ही था । ब्रूटसमें यह बात शुद्ध रूपमें पायी जाती है क्योंकि सीजरके साथ उसका व्यक्तिगत झगड़ा नहीं था, उसने देशकी स्वाधीनताके लिए ही अपनेको खतरेमें डाला था । इसके विरुद्ध यदि डायनके प्रति अपकार न हुआ होता तो वह युद्धमें प्रवृत्त ही न होता । अफलातूनके पत्रोंसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह डायोनीसियसके दरबारसे निकाल दिया गया था और इसीके प्रतीकार स्वरूप उसने युद्ध छेड़ा । सार्वजनिक हितके ही विचारसे ब्रूटसको अपने शत्रु पॉम्पीका मित्र बनना पड़ा एवं अपने मित्र सीजरसे शत्रुता करनी पड़ी । न्याय ही उसकी मित्रता या शत्रुताका एक मात्र प्रेरक उद्देश्य था । जबतक डायनपर डायोनीसियसकी कृपा थी तब तक वह उसकी सेवा करता रहा, पर अपमानित होनेके साथ ही उसने क्रोधमें आकर युद्ध छेड़ दिया । वस्तुतः डायनके मित्र उसके इस प्रयत्नसे सन्तुष्ट भी नहीं थे । उन्हें इस बातकी आशंका थी कि स्वेच्छाचारीका अन्त होने पर वह शासनसूत्र अपने हाथमें ले लेगा और प्रजाको फुसलाने के लिए कोई ऐसी उपाधि रख लेगा जो पहलेकी तरह खटकनेवाली न हो। पर ब्रूटसके सम्बन्धमें उसके शत्रुओंने भी स्वीकार किया है कि रोम

साम्राज्यमें पूर्व शासन प्रणाली स्थापित करनेके अलावा आदिसे अंततक उसका और कोई उद्देश्य नहीं रहा।

इन बातोंके सिवा, सीज़रके विरुद्ध जो प्रयत्न किया गया था, उसके सामने डायोनीसियसके विरुद्ध किया गया प्रयत्न बिलकुल नगण्य ठहरता है। डायोनीसियसने अपने अभद्र आचारों, मद्यपान और विलास-प्रियता आदिके कारण अपनेको घृणाका पात्र बना लिया था पर सीजर जैसे प्रतापी, योग्य और शक्तिशाली व्यक्तिको, जिसके नामसे ही पार्थियन और भारतीय राजा काँप उठते थे, दबानेका विचार करना भी भयसे जरा भी विचलित न होनेवाली महान् आत्माका ही काम था। सिसिलीमें डायनको देखनेके साथ ही हजारों आदमी डायोनीसियसके विरुद्ध उसके साथ हो गये, पर दूसरी ओर सीजरकी ख्याति, उसकी मृत्युके बाद भी, उसके मित्रोंको बल प्रदान करती थी। उसका नाम अपनाने मात्रसे एक साधारण लड़का बातकी बातमें रोमका प्रधान बन बैठा और ऐण्टोनीकी शक्तिके विरुद्ध जादूकी तरह इसका उपयोग करने लगा। यह आपत्ति की जा सकती है कि डायनको उस अत्याचारीका अन्त करनेमें कई कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा और ब्रूटसने शस्त्रहीन एवं अरक्षित सीजरका वध किया। पर यही कार्य उसकी नीति और कार्य पटुताका द्योतक सिद्ध होता है क्योंकि इस प्रकारके शक्ति शाली और सर्व प्रकारसे रक्षित व्यक्तिके साथ इस ढंग से पेश आनेके सिवा और कोई उपाय नहीं था। उसने सीजरपर अचानक एकाकी या सिर्फ चन्द आदमियोंको लेकर आक्रमण नहीं किया था। यह षडयन्त्र बहुत दिनोंसे चल रहा था, अनेक व्यक्ति इसमें सम्मिलित थे पर किसीने अपने नायकके प्रति विश्वासघात नहीं किया। इससे यही प्रमाणित होता है कि या तो उसमें शक्ल देखते ही विश्वासयोग्य व्यक्तियोंको पहचान लेनेकी क्षमता थी या उनपर विश्वास कर उसने उन्हें ऐसा बना लिया। पर डायनने या तो पहचाननेमें भूल कर बुरे आदमियोंका विश्वास किया या अपने साथ रखने पर अच्छे आदमियोंको बुरा बना

दिया—ये दोनों ही बातें बुद्धिमान् व्यक्तिके अनुकूल नहीं ठहरतीं। विश्वासघाती व्यक्तियोंको मित्र बनानेके कारण अफलातूनने भी अपने पत्रोंमें उसकी निन्दा की है।

डायनके मार डाले जाने पर कोई व्यक्ति उसकी मृत्युका बदला लेने के लिए नहीं खड़ा हुआ पर शत्रु होकर भी ऐण्टोनीने ब्रूटसकी अन्त्येष्टि क्रिया बड़े सम्मान और ठाटबाटसे की और सीज़रने भी उसका सम्मान अक्षुण्ण बनाये रखा जो निम्नलिखित घटनासे स्पष्ट है। गॉल प्रदेशके मिलन स्थानमें ब्रूटसकी एक पीतलकी प्रतिमा थी जो कलाकी दृष्टिसे बहुत अच्छी थी। बहुत दिनोंके बाद सीज़र उसी ओरसे जा रहा था। प्रतिमाको देख कर वह एकाएक रुक गया और अपने नौकरोंके सामने ही जनशासकों-को बुला कर बोला कि तुम लोगोंने अपने नगरमें मेरे शत्रुको आश्रय देकर राज्य-संघके नियमोंकी अवहेलना की है। पहले तो जन-शासकोंने इस बातसे इनकार किया और सीज़रका अभिप्राय न समझ सकनेके कारण एक दूसरेका मुँह देखने लगे। इस पर सीज़रने प्रतिमाकी ओर घूम कर और भवें संकुचित कर पूछा "क्या वहाँ मेरा शत्रु नहीं खड़ा है?" जनशासक बेतरह घबड़ा गये और इसका कुछ उत्तर न दे सके पर सीज़रने मुसकुराते हुए यह कह कर कि "मुझे इस बातका आनन्द है कि तुम विपत्त मित्रोंका भी साथ नहीं छोड़ते", प्रतिमाको उसी हालतमें बनाये रखनेका आदेश कर दिया।

शुद्धिपत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	२४	मेलानियस	मेलानिपस
६	११	मेजारावालों	मेगारावालों
१०	१६	मारनोज	माइनोज
१९	१६	हिरोडोटस	हिरोडोरस
,,	१७	हियोलिटस	हिपोलिटस
२३	६	सोलक्स	पोलक्स
४३	३	प्लेटिनम	प्लेटिअम
५३	२४	सिनेट लोग	सिनेटर लोग
६८	१०	ओशिआ तक	बीओशिआ तक
७८	२५	भट कर	भेंट कर
१११	६	लुसियस अल्तुनियस	ल्यूशियस अल्बाइनस
१५६	१	उसीके	उसकी
१८७	१६	शासक	विजयी शासक
१९२	२३	फिलियस	फिलिपस
२०८	१३	यासफारेस	वासफोरस
२२६	१५	और सस	और मेसस
२३६	११	मातहदों	मातहतों

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५१	११	लेयॉस	लेजयॉस
२५९	१२	मेडुल्स	मेटेल्स
२७०	२०	कोनिक्स	फीनिक्स
२९७	१९	वादमें बडा	वादमें उसे घडा
,,	१९	बुझ	बुझा
३०१	२४	यूलोकस	यूरीलोक्स
४२९	१९	भोज करते	भोजन करते
४८१	/	लिए त	लिए दूत
४८६	२०	आदमियोंके तहत	आदमियोंको हताहत
४९७	१५	लारिया	इलीरिया
५०४	१३	अनन्तरपर	अन्तरपर
५०८	२२	तुम दुष्टो !	तुम पन्थी !
५३१	१३	आनन्दोप योग	आनन्दोप भोग
५६२	७	यॉनीशियस	डायोनीशियस
६३७	५	मैथिमस	मैक्सिमस

सूचना—थीबीज, केब्रियस, ऐजेसिलॉस, कीरोनिया, फोनीशिया, डेल्फी, रोमुल्स इत्यादि शब्दोंके स्थानमें क्रमश थीब्ज, केनियस, ऐजेसिलेअस, कीरोनिआ, फेनीशिया, डेल्फाइ, रोम्यूलस पढ़िये।

शब्दसूची

इस पुस्तकमे आये हुए विशेष नामोंका उच्चारण "नाइण्टीन्थ सेन्चुरी डिक्शनरी" के अनुसार निम्न प्रकारसे किया जाना चाहिये * —

A

Abydos ऐबाइडास

Acca Larentia आका लारेनशिया

Achilles ऐकिलीज

Actium ऐक्शिअम

Aeacus ईअकस

Aegeus ईज्यूस

Aeginetan एजीनीटन

Aegle एगली

Aeneas ईनीयस

Aeolus ईओलस

Agesilaus ऐजेसिलेअस

Albinus ऐलबाइनस

---

* ग्रीक और लेटिन नामोंका उच्चारण जाननेके कुछ मुख्य नियम ये हैं—

क—ae तथा oe = प्राय· ई

ख—अन्तिम es = ईज (उ० डेमॉक्रेटीज)

ग—अन्तिम i = ई, अन्यत्र प्राय इ

घ—c तथा g का उच्चारण e, i, y, ae, oe के पहले क्रमश· स या ज तथा a, o और u के पहले क या ग होता है (उ० सीऑस, काल्किस .)

ङ—ch = क (प्राय ; उ० ऐण्ड्रोमैकी, कीरोनिआ)

च—शुरूमें x = ज (उ० जर्कसीज)

छ—mn, tm, ps से शुरू होनेवाले शब्दोंमें क्रमश m, t और p का उच्चारण नहीं होता।

Alcibiades अलसीबाइअडीज़
Amisus अमाइसस
Anaxagoras ऐनैक्सैगोरस
Antaeus ऐंटीअस
Antigone ऐण्टिगोनी
Antioch ऐण्टिऑक
Antiochus ऐंटाइओकस
Antiope एण्टाइओपी
Antium ऐंशिअम
Archelaus आर्कीलेअस
Areopegus एरीओपेगस
Arete ऐरीटी
Argive आरजाइव्ह
Ariadne ऐरियडनी
Aristeas ऐरिस्टीयस
Artemisia आर्टीमिशिया
Artemisium आर्टीमिशिअम
Aruns एरंज़
Attalia ऐटलाइया
Attalus ऐटलस
Aulis ऑलिस
Aurelia ऑरीलिया
Aventine ऐवेण्टिन

B

Beroea बेरोआ
Bibulus बिब्यूलस
Boeotia बीओशिआ
Brutus Albinus ब्रूटस ऐल-वाइनस

C

Caedicius सीडीअस
Caepio सीपियो
Callimachus कैलीमेकस
Calpurnia कैलपर्निया
Calpurnius Bibulus कैलपर्नियस बिब्यूलस
Cambyses कैम्बाइसीज़
Caria केरिया
Cassius Scaeva कैसियस स्कीव्हा
Catiline कैटिलाइन
Cato केटो
Ceos सीऑस
Cephisus सेफिसस
Cethegus सेथीगस
Chabrias केब्रियस
Chaeronea कीरोनीआ
Chersonesus करसोनीसस
Cilicia सिलिशिया
Cimon साइमन
Circeii सरसीयाइ
Cleaenatus क्लेईनेटस

Clusium क्लूशिअम
Cnidian नाइडियन
Colchis कालकिस
Corcyra कॉरसाइरा
Curtius कर्शिअस
Cyclades सिक्लडीज़
Cyrene साइरीनी

D

Daedalus डीडलस
Deioneus डीआइओनियस
Deiotarus डीआइओटेरस
Delos डीलास
Delphi डेल्फाई
Demaratus डेमरेटस
Demetrias डेमेट्रिआस
Demetrius डेमीट्रिअस*
Demochares डेमॉकेरीज़
Deucalion ड्यूकेलियन
Dyrrhachium डिरेकिअम

E

Eleusis इल्यूसिस
Empedocles एम्पेडोक्लीज़
Ephialtes एफिअलटीज़
Epirus ईपिरस
Erechtheus ईरेक्थ्यूस
Eretria एरीट्रिया
Euboea यूबीआ
Euripides यूरीपिडीज़
Euterpe यूटर्पी
Eurybiades यूरीबाइअडीज़
Eurydice यूरीडिसी

F

Falerii फैलीरिआइ
Fidenae फिडीनी

G

Gaugamela गॉगमीला
Gedrosia जीड्रोशिया
Getae जीटी
Gnossus नासस
Granicus ग्रैनाइकस

H

Heraclitus हेराक्लाइटस
Hermione हरमाइओनी
Hiero हाइरो
Hortensius हारटेनशियस
Hephaestion हेफेस्टियन

I

Iberia आइबीरिया

---

* पुस्तकमें आये हुए अनेक शब्दोंमें 'इ' के बाद 'अस' आने पर प्राय. "यस" रखा गया है ।

Stephanus स्टेफेनस
Strabo स्ट्रेबो
Stratonice स्ट्रेटोनाइसी
Syracuse सिराक्यूस

T

Tethys टीथिस
Thais थेइस
Thebes थीब्ज
Theodorus थीओडोरस
Theophenes थीओफैनीज
Theseus थीसीअस
Thermopylae थर्मापिली
Thespiae थेस्पिई
Thyrsus थरसस
Tigurini टिग्यूराइनाइ
Timaeus टाइमीअस
Timotheus टिमोथीअस
Troezen ट्रीज़न
Tullus टलस

U

Ulysses यूलिसीज़
Utica यूटिका

V

Veii वीयाइ

X

Xanthippus जेन्थिपस
Xenophon जेनोफन
Xerxes जर्कसीज़

अन्य शब्दोंका ठीक उच्चारण नीचे दिया गया है। जो शब्द 'नाइण्टीन्थ सेञ्चुरी डिक्शनरी' में नहीं मिले, वे कोष्टकके भीतर रखे गये हैं।

A—ऐग्रिण्टस, ऐण्टिगानस, ऐरिस्टोडेमस, ऐमारगॉस, ऐंटिपेटर, (ऐण्टीलस, ऐंटिजेनिडस, ईरोपस, ऐल्सीमस), ऐटिका, आर्गास, ईंप्सिडीज, (ऐक्टी, अपामा, एपोलोनाइडीज, आर्गावार्स्डीज), एड्रोपैटीनी, एरैक्सीज, ऐगायोर्कीज, आर्किडेमस, ऐस्किलस, ईटोलियन, ऐक्सिअस, आर्मीनिया, ऐमैनस, ऐरिस्टोब्यूलस, ऐपोलोनिया, ऐंफीसा, आस्था ईथिओपिया, (ऐरिस्टोक्रेटीज, ईग्रा, ऐगनस, ऐंड्रोनिअस), ऐपमेण्टस, एबेंटी, आमेनोनिअस, ऐडैस्स, ऐसकेनिअस, ईमिलिया, (ऐफिड्नस, ऐफिड्नी, आइडोनिअस, ऐम्यूलिअस, ऐथ्या), ऐंटिमेक्स, (ऐकान,

ऐंटिन्ना, अटकमेना, ऐम्बोटनन), ऐरिस्टाइडीज, अर्थमिअस, अफेटी, (आर्किटेलीज, एरियामेनीज, ऐमिनिअस), ईजिना, ऐण्ड्रास, (ऐण्टी फेटीज, ऐचर्नी, आर्टावेनस, आर्टाविजेस, ऐरिस्टोमैकी, ऐकैडिना), ऐड मीटस, आर्काइटस, ऐरिस्टिपस, (ईजी, ईक्वीअन, अम्बसटस, ऐल्फिअन सिस), ऐलिया, आर्डिया, ऐनीओ, एजिस, ऐगमेमनान, ऑलिस, ऐकि यन, (ऐजेसिपालिस, ऐण्टीकेरीज, आक्सिमम, आर्सिस, ऐकिल्स, ऐम नान) अकारनेनिया, ऐण्टलसिडस, आर्किअस, ऐण्टिस्टिअस, ऑरीलि- अस, ऐफ्रेनिअस, ऐल्वेनिया, आरबीला, ऐलसीअस, ऐपिअस, ऐण्ट्रोनी, ऐरिमिनम, अथमानिया, ऐसीनिअस पोलिओ, ऐमन, ऐरिस्गानसेनस, ऐरिस्टैण्डर, ऐरिस्टन, (ऐण्ड्रोकोटस, अबूल्टीज, ऐंटिजेनीज), आरीडीअस, ऐपियन, आरोलिया, ऐबा (ऐसीलिअस, ऐनिअस), एरियोग्स्टिस, ऐलीशिया, ऐण्डोमेकी।

B—बण्डूनिअम, वायन, ब्रेनस, बेबीलान, व्यूसेफेल्स, (बगोआ), बेमस, विथिनिया, बेलजी, व्यूथ्रोटम।

C—चार्मियन, (सिलीज, सेरुीनी, क्रैटेसिपालिस, क्रियोनाइडीज, सेंश्री), क्रैटरस, कैमेण्डर, कारिन्थ, क्रिओनिमस, कैसेण्ड्री, क्रेटीज, कैटैनीया, सिरेस्टिका, (कॉनस, कारेगस), कार्नीस्टिअस हेप्न्यूस्स, सिसरो, क्यूरियो, क्लोडिअस, साइरस, (साइयेरिस), क्रिओपेट्रा, कैपिटॉल, क्लोडिया, सिडनस, क्लेपसिड्रा, क्रैसस, कैनिडिअस, (कैल वीसिअस, कीलिअस), (कॉनिडस, क्रोमिओन, साइक्रिअस, साइ- क्नस, क्राइडेमस), सेण्टार, कैलीडोनियन, (सरमेनस, सेलर, कॉनसस, सेनिनेन्स), मस्तूमीरिअम, कर्शिअस, केयस ऐसीलिअम, केयस कैसि एनस, सीरीज, कमेरिअम, क्रीओमीडीज, कोटन, कैमिल्स, कारसाइरा, (साइम, कार्पेनाटीज), सेल्टिक, कारमेण्टल, कोटिस, कॉरीनिया, (सिनिस्का, केलिपिडीज), कोनॉन, कैडमीया, क्रीओम्ब्रोम्स, सिना, कार्बो, केंटूयूल्स, कैम्पस मार्टिअस, कैशिअस, कार्सिका, (सिरनस,

टाइन, पेरीक्लीज, फोसिस, प्रोक्यूल्स, फिलाप्ट्रेटस, फोन्टिनेनस, पास्टू मिअस ट्यूबर्टस, (पोलिस, पाटिअम वोमीनिअस, पेनिडस), पिनीनस, फिलिपस, पब्लिअस, (परपेना प्रसैगोरस, पेटीसिअस), पम्पिरिया, पोटीडिया, पारमीनियो, परडिक्स, (प्रोथाइटीज, पेन्स, प्यूसेस्टीन, फोलीस्ट्रेटस, पोलीमेरस, प्रोमेक्स), फोशियन, पेरिन्थस, (फिलिना,फार मेनुसा), पब्लिअस अण्टोनिअस, फारनेसीज, प्रोसरपिन, (पॉपिलिअस)

Q—क्विण्टस वैसिअस, (क्विण्टा), क्विराइट, क्विराइनस

R—रैमनस, रोमेनस, (रोमस, रोमस, रमिनेलिस), रमीलिया, रीमस, (रेजिया, रीफियन), रबिकन, रोक्सेना

S—सेल्यूकस, (सेक्सिअस, स्टिग्गो, स्ट्राटाक्लीज, स्पेंटस), साइ टन, सॉफोक्लीज, सोसिजेनीज, सरवोनिस, सर्जिअस, सेक्सटस, (सिला, स्टेटिएनस), सार्डिनिया, सैमॉसटा, सेमॉस, (साइनिस, सोलन), सिल्विया, सैवाइन, सेक्सटिअससिला, साइमॉनिडीज, सॉलन, (स्टेसि म्रोटस, स्टेसिलेअस, सियायस, सिसिनस, सॉसीईज, साइनेल्स), सल्पिशिअस, सिप्रीडेटीज, (सुद्रिअस, सेट्रिकस, स्फोडियस, स्थेनिस), सरटोरिअस, सिपियो, (स्काटुसा, सेप्टिमिअस, सैल्विअस, सिडीज, सूसा, सिसिमिथ्रीज, सिल्सिस), स्टेसीक्रेटीज, सेरेपिस, स्वीड्राद, सिथिया (सिपन्थर, सेसटिअस, स्युरिअस मीलिअस, सक्यूलियो स्टेटिलिअस)

T—थेसली, टायर, (थोरैक्स, टॉरस), थ्रेस, टारसस, (ट्रेबी-लिअस, ट्रेबोनिअस), टारेंटम, थेमिस्टोक्लीज, (टिटिअस, टीनेरस), टरमेरस, ट्रेट्रापालिस, ट्रेक्सि, (ट्रीजेनियन, थेसीड, थीसिया, टल्लाफस टारचेटिअस, टेराटिअस, तारशिअस, टर्पिअस), टेटिअस, टार्पिया, टेम्पी, टीनोस, थीओक्रेटस, थ्यूसीडिडीज, (टिमॉक्सियन, थर्मी, थीओडोटस, टिमोक्रैटीज, टिमासिथिअस), टसक्यूलम, (टीमिया, टिथ्रौस्टीज, ट्रैलियन, टेस्यूशिअस, तीरीबाजुस), टिसाफरनीज, थीओपाम्पस,

सूचना—स्थानाभावके कारण कुछ स्पष्ट एवं सुप्रचलित शब्द जान-बूझ कर इस सूचीमेंसे निकाल दिये गये हैं।

अनुक्रमणिका

ग

व

श

स

ह